

AGAM SAHITYA RATNAMALA BOOK NO 6

NISHITH SUTRAM

(With Bhashya)

By

STHAVIR PUNGAVA SHRI VISAHGANI MAHATTAR

and Vishesh Churay

By

ACHARYA PRAVAR SHRI JINDAS MAHATTAR

PART IV

UDESHIKA 16-20

Edited By

UPADHAYA KAVI SHRI AMAR CHAND JI MAHARAJ

&

MUNI SHRI KANHAIYA LAL JI MAHARAJ "KAMAL"

Published By

Bhara'iva Vidya Prakashan

Sanmati Gyan Peeth

Delhi

Varanasi

Agra Viraytan, Rajgir

Published by

BHARATIYA VIDYA PRAKASHAN
I U B Jawahar Nagar,
Bungalow Road, DELHI-7

**P Box 108, Kachauri Gali,
VARANASI-1**

© SANMATI GYAN PEETH,
Lohamandi, AGRA
Viraytan, RAJGIR

Second Revised Edition, 1st November, (Sharad Purnima) 1982

PRICE . 600 00
Four Parts (Complete set)

Printed by

DELUX OFFSET
DELHI.

आगम-साहित्य रत्न-मालाया षष्ठ रत्नम्

स्थविर - पुगव श्री विसाहगणि महत्तर-प्रणीत सभाष्य

निशीथ-सूत्रम्

आचार्य-प्रवर श्री जिनदास महत्तर विरचितया

विशेष-चूर्ण्या समलकृतम्

चतुर्थोः विभाग.

उद्देशकाः १६-२०

सम्पादक

उपाध्याय कवि श्री अमरमुनि जी महाराज

तथा

मुनि श्री कन्हैयालाल जी म० "कमल"

प्रकाशक

भारतीय विद्या प्रकाशन

दिल्ली

वाराणसी

सन्मति ज्ञान पीठ,

आगरा

वीरायतन, राजगृह

प्रकाशक

भारतीय विद्या प्रकाशन

● १ यू० बी० जवाहरनगर,
बैंगलो रोड, दिल्ली-७

● पो० बा० १०८, कचौड़ी गली,
वाराणसी-१

© सन्मति ज्ञान-पीठ,

● लोहामण्डी,
आगरा

● वीरायतन,
राजगृह

द्वितीय सशोधित संस्करण, १, नवम्बर (शरद् पूर्णिमा) १९८२

मूल्य रु० ६००-०० (सम्पूर्ण चार भाग)

मुद्रक

डिलक्स आफसेट प्रिंटर्स

दिल्ली

आचार - शास्त्र

के

सतर्क एव सजग मर्मी अध्येताओं

को



—उपाध्याय अमर मुनि

सम्पादकीय

यह निजीयचूर्णि का चतुर्थ खण्ड है, और अब निजीयचूर्णि अपन मे पूर्ण है। इतने बड़े भीमकाय ग्रन्थ का सम्पादन एव प्रकाशन इतनी शीघ्रता के साथ पूर्ण होना, वस्तुतः एक आश्चर्य है। जिस गति से प्रारम्भ मे सम्पादन एव मुद्रण चल रहे थे, यदि वही गति अन्त तक बनी रहती, तो संभव था, इतना विलम्ब भी न होना। परन्तु कुछ ऐसी विघ्न-परम्परा उपस्थित होती रही कि हम चाहते हुए भी नदनुसार कुछ न कर सके।

निजीयचूर्णि अद्यावधि कही भी मुद्रित नहीं हुई है। यह पहला ही मुद्रण है। अतः सम्पादन से सम्बन्धित सभी प्रकार की सतकता रखते हुए भी, हम, और तो क्या, अपनी कल्पना के अनुसार भी सफल नहीं हो सके। कारण यह था कि लिखित पुस्तक-प्रतिया अधिकतर अशुद्ध मिली, और ताडपत्र की प्रति तो उपलब्ध ही न हो सकी। और सबसे बड़ी बात यह भी थी कि इस प्रकार का सम्पादन-कार्य हमारे लिए पहला ही था, जिसके लिए 'सर्गारम्भा हि दोषेण धूमेनाग्निरिपावृता' कहा गया है। अस्तु, सम्पादन मे त्रुटियाँ रही हैं, जो हमारे भी ध्यान मे है, परन्तु, एतदर्थ क्षमायाचना के अनिरिक्त, अब हम अन्य कुछ कर भी तो नहीं सकते।

प्रस्तुत सम्पादन का विद्वज्जगत् मे बड़ा आदर हुआ है। विश्वविद्यालय तथा तत्स्तरीय अन्य सर्वोच्च शिक्षा-संस्थाओं ने अपने पुस्तकालयों के लिए इस ग्रन्थ की प्रतियाँ मँगवाई हैं और अध्ययन के बाद मुक्त भाव से प्रशंसा-पत्र प्रेषित किये हैं। भुवनेश्वर (उड़ीसा) मे, अक्टूबर १९५९ मे आयोजित 'अखिल भारतीय प्राच्य विद्या-परिषद्' (आल इंडिया ओरिएण्टल कान्फ्रेंस) के बीसवें अधिवेशन के प्राकृत एव जैन धर्म विभाग के अध्यक्ष डा० साडेसरा ने भी अपने अध्यक्षीय अभिभाषण मे प्रस्तुत सम्पादन को 'नोध-पात्र' गिना है। विद्वान् मुनिवरो ने भी खूब दिल खोलकर इसे सराहा है। हमे प्रसन्नता है कि हमारा यह नगण्य कार्य, साहित्यिक क्षेत्र मे उल्लेखनीय विशिष्ट स्थान प्राप्त कर सका।

एक बात और भी है। कुछ लोग उक्त प्रकाशन से नाराज भी हुए हैं। क्यों ? इसका उत्तर हम क्या दे। हमारा काम एक प्राचीन ग्रन्थ को, जो अबतक भड़ारों के जीर्ण-शीर्ण हस्त-लेखों की सीमा मे ही प्रायः काल-यापन कर रहा था, मात्र, बाहर प्रकाश मे लाना था, और वह हमने ला दिया। हमारी दृष्टि सु-विशुद्ध रूप से ज्ञानोपासना की रही है। कौन आचार्य हैं ? किस परम्परा के हैं ? उन्होंने क्या लिखा है ? वह आज के युग मे कहाँ तक अनुकूल है या प्रतिकूल ?

और उम युग में भी वह कहाँ तक औचित्य की सीमा में था ? हमारे अपने माम्प्रदायिक पक्षबद्ध मनोवृत्ति के व्यक्तियाँ क्या कहेंगे और क्या नहीं ? उनसे प्रशंसा प्राप्त होगी अथवा निन्दा ? यह सब मोचना साहित्यकार का काम नहीं है । साहित्यकार का काम है, शुद्ध भाव से ज्ञान माधना करना । और वह हमने 'यावद्बुद्धिबलौदय' की है । बस, अपना कार्य पूरा हुआ ।

निशीथ-चूर्णि को हम जैन-साहित्य का, जैन-साहित्य का ही नहीं, भारतीय साहित्य का एक महान् ग्रन्थ मानते हैं । जैन-आचार का यह श्रेष्ठ ग्रन्थ है । आचार-शास्त्र की गुत्थियों का रहस्याद्घाटन, जैसा इस ग्रन्थ में हुआ है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ है । भारतीय इतिहास तथा लोक-संस्कृति की प्रकट एवं अप्रकट विपुल सामग्री का तो एक प्रकार से यह विश्व-कोष ही है । इसके अध्ययन के बिना, निशीथ-सूत्र एवं अन्य छेद-सूत्र कथमपि बुद्धिगम्य नहीं हो सकते, यह हमारा अविचार की भाषा में किया जाने वाला सुनिश्चित दावा है, जो किसी के भी मिथ्या प्रचार से झुठलाया नहीं जा सकता । निशीथ-चूर्णि क्या है, और उसमें ऐसा क्या कुछ है, जो वह पोर्वीय एवं पाश्चात्य, तथैव जैन एवं जैनोत्तर सभी विद्वानों के आकर्षण का केन्द्र बनी हुई है ? इसके लिए प० दलमुखभाई मालवणिया (प्राध्यापक—जैन दर्शन, हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी) की विस्तृत प्रस्तावना 'निशीथ एक अध्ययन' का अवलोकन किया जा सकता है । परिणत जी ने गम्भीर अथच तलस्पर्शी अध्ययन के साथ जो तत्कालीन ऐतिहासिक स्थिति का विश्लेषण किया है, वह विद्वज्जगत् को चकित कर देने वाला है । हम यहाँ इस सम्बन्ध में स्वयं और कुछ लिखकर पुनरुक्ति नहीं करना चाहते ।

यह ठीक है कि चूर्णि एक मध्यकालीन प्राचीन कृति है, एक विशेष संप्रदाय एवं परम्परा से सम्बन्धित है, वह उग्र साध्वी-आचार की अपक्रान्ति के एक विलक्षण मोड़ पर शब्दबद्ध हुई है, उम पर देश एवं काल की बदली हुई परिस्थितियों का भी अनेकविध प्रभाव पड़ा है । अस्तु, चूर्णि की कुछ बातें ऐसी हैं, जो अटपटी सी हैं, जैन धर्म की मूल परम्परा से काफी दूर जा पड़ी हैं । परन्तु इस सबसे क्या ! पाठक को अपनी बुद्धि का उपयोग करना है, हम के नीर-क्षीर-विवेक से काम लेना है । किसी भी छद्मस्थ आचार्य की सभी बातें पूर्ण रूपेण ग्राह्य हों, एवं सर्वप्रकारेण सभी को मान्य हों, यह तो न कभी हुआ है, और न कभी होगा । "पञ्चासमिक्षए धम्म" का उत्तराध्ययनसूत्रीय सन्देश आखिर किस काम आयेगा ! इस सम्बन्ध में हम निशीथचूर्णि के प्रथम भाग की प्रस्तावना (सन् १९५७) में पहले से ही पाठकों को सतर्क रहने के लिए, वह भी काफी स्पष्टता के साथ, लिख चुके हैं । अस्तु हम समझते हैं, फिर भी जो लोग चूर्णि की तदुपगीन कुछ अटपटी बातों को ही अग्रस्थान देकर अनर्गल अपप्रचार कर रहे हैं, वे अपने कलुषित अहं का ही कुप्रदर्शन कर रहे हैं । यदि कोई गुलाब के मोहक एवं मुवासित पुष्प में केवल कांटे ही देखता है, यदि कोई निर्मल चन्द्र में मात्र कलक के ही दगन करता है, तो यह उसके 'दोषदृष्टिपर मन' का ही दोष कहा जायगा, और क्या ?

हाँ, तो गुण ग्रहण के भाव में निशीथ-चूर्णि का अध्ययन करना चाहिए । आचार्य जिनदाम ने साधक के मानसिक जगत् की सूक्ष्मताओं का, उतार-चढ़ावों का बड़ी कुशलता के साथ चित्रण किया है । आचार की कठोर, कठोरतर एवं कठोरतम चर्या को अग्रस्थान देते हुए उन्होंने विभिन्न परिस्थितियों में दुर्बल साधक को, कथञ्चित् अपवाद प्ररूपणा के द्वारा, सर्वथा

अपभ्रष्ट होने से संरक्षण भी दिया है। आखिर 'जीवन्नरो भद्रशतान पश्येत्' के यथार्थवादी मिद्धान्त को कोई कैसे सहमा अपदस्थ कर सकता है ? साधना और जीवन का प्रामाणिक विश्लेषण करने की दिशा में, चूर्णि, एक महत्त्वपूर्ण उपादेय सामग्री प्रस्तुत करती है। कुछेक प्रतिकूल बातों को छोड़कर, दोष ममस्त ग्रन्थ सूत्रार्थ की गभीर एवं उच्चतर विपुल सामग्री से अटा पडा है। आखिर, २० x ३० अठपेजी १६७३ पृष्ठों के महाग्रन्थ की अमूल्य चिन्तन सामग्री में, कुछेक प्रतिकूल बातों की कल्पित भीति से वंचित रहना, विचारमूढता नहीं तो और क्या है ? 'अल्पस्य हेतोर्वहु हातुमिच्छन्, विचार-मूढ प्रतिभासि मे त्वम्।' अस्तु, आशा है आज का चिन्तनशील तटस्थ साधक, अपनी तत्त्वसम्राहिणी प्रतिभा के उज्ज्वल प्रकाश में, मारा-सार का ठीक मूल्यांकन करके, स्वपर की समय-साधना को निरन्तर उज्ज्वल से उज्ज्वलतर बनायेगा।

मुनि श्री अखिलेशचन्द्र जी का, प्रस्तुत सम्पादन-कार्य में, प्रारम्भ से ही उत्साहवर्द्धक सहयोग रहा है। उनकी व्यवस्था-बुद्धि के द्वारा, समय-समय पर काफी सुविधाएँ उपलब्ध हुई हैं। अस्तु, उनकी मधुर स्मृति का समुल्लेख, यहाँ हमारे लिए आनन्द की वस्तु है।

महावीर-दीक्षा-कान्याणक,
मार्गशिर कृ० दशमी, बीराब्द २४८६

—उपाध्याय अमरमुनि
—मुनि कन्हैयालाल

विषयानुक्रम

षोडश उद्देशक

अवसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	पन्द्रहवे तथा सोलहवे उद्देशक का सम्बन्ध	५०६५	१
१	सागारिक शय्या का निषेध		१-२६
	सागारिक शय्या की व्याख्या	५०६६	१
	सागारिक शय्या के भेद	५०६७	१
	सागारिक पद के निक्षेप	५०६८	१
	द्रव्य-निक्षेप	५०६९-५११२	२-४
	द्रव्य सागारिक के रूप, आभरण-विधि, वस्त्र, अलङ्कार, भोजन, गन्ध, आतोद्य, नाट्य, नाटक, गीत आदि प्रकार, उनका स्वरूप तथा तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त	५०६९-५१०२	२
	द्रव्यसागारिक वाले उपाश्रय में निवास करने से लगने वाले दोषों का वर्णन	५१०३-५११२	३-४
	भाव निक्षेप	५११३-५०२७	५-२६
	भाव सागारिक का स्वरूप	५११३-५११४	५
	जनसाधारण, कौटुम्बिक और दण्डिक के स्वामित्व वाले भाव सागारिक अर्थात् दिव्य, मनुष्य और त्रियञ्च सम्बन्धी रूप = प्रतिमा तथा रूप-सहगत का स्वरूप और उसके प्रकार	५११५	५
	दिव्य प्रतिमा का स्वरूप	५११६-५१६५	५-१६
	दिव्य प्रतिमा के प्रकार	५११७-५११८	५-६
	दिव्य प्रतिमा वाले उपाश्रय में निवास करने से स्थान और प्रतिसेवना-निमित्तक लगने वाले प्रायश्चित्त और तत्सम्बन्धी प्रश्नोत्तर	५११९-५१३६	६-१०
	दिव्य प्रतिमा-युक्त उपाश्रय में निवास करने से लगने वाले आज्ञाभङ्ग आदि दोष और उनकी व्याख्या । आज्ञाभङ्ग पर गुस्तर दण्ड देने वाले चन्द्रगुप्त मौर्य का दृष्टान्त	५१३७-५१४३	१०-११

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	देवतादि के सान्निध्यवाली दिव्य प्रतिमाओं से युक्त उपाश्रय में रहने से देवता की ओर से की जाने वाली परीक्षा, प्रत्यनीकता तथा भोगेच्छा के निमित्त से होने वाली चेष्टाएँ और तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त	५१४४-५१५३	११-१३
	देवता के सान्निध्यवाली प्रतिमाओं के प्रकार	५१५४	१३
	प्रतिमाओं के सान्निध्यकारी देवता के सुखविज्ञप्य, सुखमोच्य आदि चार प्रकार और तत्सम्बन्धी अकरनंगम, रत्नदेवता आदि के उदाहरण	५१५५-५१५८	१३-१४
	जनसाधारण, कौटुम्बिक तथा दण्डिक के स्वामित्व वाली दिव्य स्त्री-प्रतिमाओं, प्रतिमा ही नहीं उनकी स्त्रियो, और तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्तों की गुरुता, लघुता और उसके कारण	५१५९-५१६५	१५-१६
	मनुष्य-प्रतिमा का स्वरूप	५१६६-५१७६	१६-१६
	जनसाधारण आदि के स्वामित्ववाली मनुष्य-प्रतिमाओं के जघन्य, मध्यम आदि प्रकार और उक्त प्रतिमाओं वाले उपाश्रय में रहने से लगने वाले दोष और तद्विषयक प्रायश्चित्त	५१६६-५१७६	१६-१८
	मनुष्य-स्त्री के सुखविज्ञप्य-सुखमोच्य आदि चार प्रकार, उनके उदाहरण, दोष, प्रायश्चित्त और तत्सम्बन्धी गुरुता-लघुता आदि	५१७७-५१७९	१९
	तिर्यञ्च प्रतिमा का स्वरूप	५१८०-५१८२	१९-२२
	जनसाधारण, कौटुम्बिक तथा दण्डिक के स्वामित्ववाली तिर्यञ्च प्रतिमाओं के जघन्य, मध्यम आदि प्रकार और उक्त प्रतिमा वाले उपाश्रय में रहने से लगने वाले दोष एवं उनके प्रायश्चित्त	५१८०-५१८६	१९-२१
	तिर्यञ्च स्त्री के सुखविज्ञप्य-सुखमोच्य आदि चार प्रकार और तत्सम्बन्धी उदाहरण	५१८०-५१८२	२१-२२
	निग्रन्थियों के लिए द्विव्यादि स्त्री प्रतिमा के स्थान में पुरुष-प्रतिमा की सूचना और कुक्कुरसेवी स्त्री का दृष्टान्त	५१८३	२२
	सागारिक शय्या-सम्बन्धी अपवाद और तद्विषयक चिलिमिलिका, निशिजागरण आदि यतना	५१८४-५१८६	२२-२३
	सागारिक शय्या का सामान्य वर्णन करने के अनन्तर श्रमण-श्रमणी के विभाग से विशेष वर्णन की प्रतिज्ञा	५१८७	२३
	श्रमणों को स्त्री-उपाश्रय में तथा श्रमणियों को पुरुष उपाश्रय में रहने का निषेध एवं सजातीय उपाश्रय में रहने का विधान	५१८८	२३
	सूत्र-रचना-विषयक शङ्का और उसका समाधान	५१८९-५२०२	२३-२४
	निर्ग्रन्थ-विषयक सागारिक सूत्र की विस्तृत व्याख्या	५२०३-५२२२	२४-२८

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	सविकार पुरुष तथा नपु मक का स्वरूप, उसके मध्यस्थ आदि चार प्रकार, तत्सम्बन्धित उपाश्रय मे रहने से समय-विराघनादि दोष और उनका प्रायश्चित्त । यदि कारगवश तथाकथित सागारिक उपाश्रय में रहा ही पडे तो तत्सम्बन्धी यतना और अपवाद	५२०३-५२२२	२४-२८
	निग्रन्थियो के लिए भी सागारिक शय्या सूत्र-सम्बन्धी निग्रन्थपरक व्याख्या को ही यत्किंचित् परिवर्तन के साथ जान लेने की सूचना	५२२३-५२२७	२८-३६
२	सोदक (जलसयुक्त शय्या का निषेध		२६-५७
	सोदक शय्या की व्याख्या	५२२८	२६
	जल के शीत, उष्ण और प्रासुक अप्रासुक विषयक चार भङ्ग और तत्सम्बन्धित उपाश्रय मे रहने से अगीतार्थ को प्रायश्चित्त	५२२९	२६
	द्रव्य, क्षेत्र आदि के भेद से प्रासुक की व्याख्या	५२३०	३०
	उत्सर्ग तथा अपवाद सम्बन्धी विस्तृत चर्चा	५२३१-५२५०	३०-३४
	अगीताथ विषयक गङ्गा समाधान, उत्सर्ग-सूत्र, अपवादसूत्र आदि छह प्रकार के सूत्रों तथा देश सूत्र आदि चार प्रकार के सूत्रों का सोदाहरण स्वरूप	५२३१-५२४३	३०-३४
	औत्सर्गिक तथा आपवादिक सूत्रों के विषय और उनके स्वस्थान	५२४४-५२४५	३४
	प्रश्नोत्तरी के द्वारा उत्सर्ग और अपवाद का रहस्योद्घाटन	५२४६-५२५०	३४-३५
	अनुज्ञापना आदि त्रिविध यतना का स्वरूप	५२५१-५३०८	३५-४६
	त्रिविध यतना-विषयक अगीतार्थ की अज्ञानता	५२५१	३५
	अगीताथ-विषयक अनुज्ञापना-अयतना का स्वरूप	५२५२-५२५६	३५-३७
	अगीतार्थ-विषयक स्वपक्ष अयतना का स्वरूप	५२६०-५२७१	३७-३६
	अगीतार्थ-विषयक परपक्ष-अयतना का स्वरूप	५२७२-५२८२	३६-४१
	गीतार्थ-विषयक अनुज्ञापना यतना का स्वरूप	५२८३-५२८७	४१-४२
	गीतार्थ-विषयक स्वपक्ष यतना का स्वरूप	५२८८-५२९६	४२-४४
	गीताथ-विषयक परपक्ष-यतना का स्वरूप	५२९७-५३०८	४४-४६
	[जागरिका पर वत्स-नरेश की भगिनी जयन्ती श्राविका का उदाहरण, गाथा ५३०६]		
	दकतीर की विस्तृत व्याख्या	५३०९-५३५१	४६-५७
	दकतीर पर स्थानादि, यूपकवास और आतापना करने से प्रायश्चित्त	५३०९-५३१०	४६
	दकतीर की सीमा के सम्बन्ध मे प्रचलित सात आदेशों (मतों) का उल्लेख और उनमे से प्रामाणिक आदेशों का निर्णय	५३११-५३१२	४६-४७
	जलाशय के किनारे खडे होने, बैठने, सोने और स्वाध्याय आदि करने से लगने वाले अधिकरण आदि दोष एवं उनका स्वरूप	५३१३-५३२४	४७-५०

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	जलाशय के निकट स्थान, निषीदन आदि दस स्थानों के सम्बन्ध में सामान्य प्रायश्चित्त	५३०४	४०
	निद्रा, निद्रानिद्रा, प्रचला, प्रचला-प्रचला का स्वरूप	५३०६	४१
	दकतीर के सपातिम तथा असपातिम नामक दो भेद, उक्त दकतीर द्वय पर स्थान एवं निषीदन आदि दस स्थानों को सेवन करने वाले आचार्य, उपाध्याय आदि पाँच निर्ग्रन्थी, तथैव प्रवर्तिनी, अभिवेका आदि पाँच निर्ग्रन्थियों के लिए प्रायश्चित्त-विषयक विभिन्न आदेश	५३२७-५३३७	४१-४३
	यूपक-स्वरूप और तद्विषयक प्रायश्चित्त	५३३८-५३४१	४४
	दकतीर पर आतापना लेने से लगने वाले दोष	५३४२-५३४५	४५
	दकतीर, यूपक तथा आतापना-विषयक अपवाद एवं यतना	५३४६-५३५१	४६-४७
३	साग्नि (अग्निमसहित) गय्या का निषेध		४७-४५
	साग्नि शय्या के भेद-प्रभेद	५३५२-५३५३	४७
	उत्सर्ग और अपवाद विषयक विस्तृत चर्चा	५३५४-५३७३	४७-५६
	अनुज्ञापना आदि त्रिविध यतना	५३७४	५६
	ज्योतिष्युक्त उपाश्रय में निवास करने से लगने वाले दोषों का अप्रतिलेखनादि पतनान्त पदों द्वारा निरूपण, तद्विषयक प्रायश्चित्त, अपवाद एवं तत्सम्बन्धी यतना	५३७५-५४०३	५६-६४
	[प्रसङ्गवशात् पणितशाला आदि छह शालाओं का निरूपण, गाथा ५३६०-६१]		६१
	दोषक के प्रकार, तदयुक्त उपाश्रय में रहने से लगने वाले दोषों का प्रतिमादहनादि पदों द्वारा निरूपण, तद्विषयक प्रायश्चित्त, अपवाद और यतना	५४०४-५४०६	६४-६५
४-७	सचित्त तथा सचित्त प्रतिष्ठित इक्षु के भोजन एवं विदशन का निषेध	५४१०	६५
८-११	इक्षु के सचित्त तथा सचित्त प्रतिष्ठित विभिन्न विभागों के भोजन एवं विदशन का निषेध		६५
	इक्षु के अन्तरिक्ष आदि विभिन्न विभागों की व्याख्या	५४११-५४१२	६५-६६
१२-१३	अरण्य आदि में जाते-आते लोगों से अशनादि लेने का निषेध		६६
	वन-यात्रा के हेतु जाते-आते यात्रियों से अशनादि लेने से दोष तथा अशिवादि अपवाद	५४१३-५४१६	६६-६७
१४	वसुरातिक (सयमी) को अवसुरातिक (असयमी) कहने का निषेध		६७-७२

सूत्रमसूत्रा	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	मूलसूत्रगत वसुरानि या वुमिराति शब्द की विभिन्न नियुक्तियाँ, वसुराति के प्रति असदगुणोद्भावन के कारण, सविग्नो की असविग्नो द्वारा की जाने वाली अवहेलना और उसका प्रतिवाद, तथा प्रस्तुत निषेध का अपवाद	५४२०-५४४१	६७-७०
१५	अवसुरातिक को वसुरातिक कहने का निषेध	५४४२-५४४६	७२-७३
१६	वसुरातिक गण से अवसुरातिक गण में मक्रमण का निषेध		७३-१००
	काल की दृष्टि में उपसम्पदा के तीन प्रकार	५४५१-५४५३	७३
	गच्छवाम के गुण और उनकी व्याख्या	५४५४-५४५७	७४
	ज्ञान दशनादि की अभिवृद्धि के लिए गणान्तरोपसम्पदा की स्वीकृति	५४५८	७४
	ज्ञानार्थ उपसम्पदा	५४५९-५४६०	७४-८७
	सूत्र, अर्थ आदि के ज्ञानार्थ की जाने वाली उपसम्पदा और उसके भीत आदि आठ अतिचार, उनका स्वरूप एवं तत्सम्बन्धी प्रायश्चित्त	५४६१-५४७०	७५-७७
	निष्कारण प्रतिषेधक आदि के निकट उपसम्पदा स्वीकार करने की विधि	५४७३-५४७४	७७
	अप्रतिषेधक आदि में सम्बन्धित अपवाद	५४७५-५४८०	७७-७८
	व्यक्त तथा अव्यक्त शिष्यो का स्वरूप, उन्हें उपसम्पदा लेने के लिए साथ में अन्य साधु को भेजने के सम्बन्ध में प्रतीच्छनीय आचार्य एवं मूलाचार्य-सम्बन्धी आभाव्य एवं अनाभाव्य का विभाग	५४८१-५४८६	७८-८०
	आचार्य-उपाध्याय आदि की आज्ञा के बिना उपसम्पदा स्वीकार करने वाले शिष्य एवं प्रतीच्छक आचार्य को प्रायश्चित्त और आज्ञा न देने के कारण	५४८७-५४९१	८०-८१
	ज्ञानार्थ उपसम्पदा की विधि	५४९२-५४९२	८१-८७
	दर्शनार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	५४९३-५४९८	८७-८८
	चारित्रार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	५४९९-५५००	८८-९२
	निग्रन्थी-विषयक ज्ञानादि उपसम्पदा	५५०१-५५०२	९२
	मभोगार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	५५०३-५५०७	९२-९६
	आचार्य-उपाध्यायार्थ उपसम्पदा और उसकी विधि	५५०८-५५१३	९६-१००
१७-२५	कलह के कारण मघ से निष्क्रान्त भिक्षुओं के साथ अशनादि, वस्त्रादि, वसति एवं स्वाध्याय के दानादान का निषेध		१००-१०५

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	अपक्रमण के प्रकार, बहुरतादि सात निह्वो का परिचय, निह्वो के साथ अशनादि दानादान सम्बन्धी प्रायश्चित्त और अपवाद	५५६४-५६१३	१०१-१०५
२६	आहारादि की दृष्टि से सुलभ जनपदों के रहते अनन्त दिन गमनीय अध्वा के विहार का निषेध		१०४-१०५
	मूलसूत्रगत 'विह' शब्द का अर्थ और अध्वा के प्रकार	५८३४-५८४	१०५
	दिन अथवा रात्रि में गमन और रात्रि विषयक मायता के सम्बन्ध में दो आदेश	५८३६	१०६
	रात्रि में भाररूप अध्वगमन से होने वाले दोषों का वर्णन और तत्सम्बन्धी अपवाद	५८३७-५८५४	१०६-१०८
	पन्थ के छिन्नादि दो प्रकार और तद्वगमन की विधि	५८५५-५८५६	१०८
	रात्रि में पथरूप अध्वगमन से लगने वाले आत्मविराधना आदि दोषों का स्वरूप तथा अध्वोपयोगी उपकरण न रखने से होने वाले दोष	५८५७-५८५८	१०८-१०९
	अध्वगमन-सम्बन्धी अपवाद के कारण, अध्वोपयोगी उपकरणों का संग्रह तथा योग्य साथवाह की शोच	५८५९-५८६७	१०९-११०
	भण्डो, वह्निक आदि पाच प्रकार के साथ और उनके साथ जाने की विधि	५८६८-५८६९	११०
	साथ और साथवाह आदि कैसे हैं ? साथ की खाद्य सामग्री और षडव डालने आदि की क्या व्यवस्था है ? इत्यादि बातों के सम्बन्ध में उचित जानकारी प्राप्त करने की विधि	५८६९-५८७०	११०-११२
	आठ प्रकार के साथवाह और आठ ही प्रकार के अति आत्रिक= साथ-व्यवस्थापक	५८७१	११२
	अध्वगमन-विषयक ५१२० भङ्ग	५८७२-५८७६	११२-११३
	साथवाह से सहयात्रा की आज्ञा प्राप्त करने की विधि, और भिक्षा आदि से सम्बन्धित यतना	५८७७-५८८२	११३-११५
	अध्वगमनोपयोगी अध्व-कल्प का स्वरूप	५८८३-५८८८	११५-११६
	अध्वकल्प और आधार्कमिक की सदोषता निर्दोषता के सम्बन्ध में शका-समाधानादि	५८८९-५८९४	११६-११७
	अध्वगमन विषयक स्वापद, स्तेन, अशिव, बुभिक्ष आदि व्याघात और तत्सम्बन्धी यतनाओं की सविस्तर विवेचना	५८९५-५९२६	११७-१२४
२७	सुलभ जनपदों के रहते विरूप, दस्यु और अनार्य आदि प्रदेशों में विहार करने का निषेध		१२४-१२५
	विरूप, प्रत्यत, अनार्य आदि की व्याख्या	५९२७-५९२८	१२५
	आय आयसक्रम आदि सक्रमण-सम्बन्धी चतुर्भङ्गी	५९२९-५९३१	१२५

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	लिङ्ग पम्बन्धी आर्य-अनाय व्यवहार और तद्विषयक चतुर्भङ्गी	५७३२	१२५
	आय-क्षेत्र की सीमा	५७३३	१२५
	आय क्षेत्र में विहार करने के हेतु	५७३४-५७३८	१२५-१२६
	अनायदेश-गमनविषयक चतुर्गुण प्रायश्चित्त के सम्बन्ध में शङ्का-समाधान	५७३६	१२६
	आय क्षेत्र से बाहर विहार करने से लगने वाले दोष और इस सम्बन्ध में स्कन्दकाव्या का दृष्टान्त	५७४०-५७४३	१२७-१२८
	ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य आदि की सुरक्षा एवं अभिवृद्धि के लिए आय-क्षेत्र की सीमा (गा० ५७३३) से बाहर विहार करने की अनुज्ञा और इस सम्बन्ध में सम्प्रति राजा के द्वारा प्रत्यत देशों में किये गये धम प्रचार का उल्लेख	५७४४-५७४८	१२८-१३१
२८-३३	जुगुप्सित कुलो में अशनादि, वस्त्रादि, वसति तथा स्वाध्याय का निषेध		१३१-१३३
	जुगुप्सा के प्रकार, जुगुप्सित कुलो में अशन-वस्त्रादिग्रहण एवं स्वाध्याय से होने वाले दोष अपवाद और तत्सम्बन्धी यतना	५७५६-५७६४	१३२-१३३
३४-३६	पृथ्वी, सस्तारक और आकाश (ऊँचाई) पर अशनादि रखने का निषेध		१३३-१३४
	पृथ्वी, सस्तारक आदि पर अशनादि निक्षेप से होने वाले दोष, अपवाद और यतना	५७६५-५७७०	१३३-१३४
३७-३८	अन्यतीर्थी तथा गृहस्थों के साथ एक पात्र तथा एक पक्ति में भोजन करने का निषेध		१३४-१३६
	अन्यतीर्थी तथा गृहस्थों के भेदानुभेद, उनके साथ भोजन करने से दोष, प्रायश्चित्त और अपवाद	५७७१-५७८०	१३४-१३६
३९	आचार्य तथा उपाध्याय के शय्या-सस्तारक को पैर से मघट्टित कर देने पर बिना क्षमा माँगे चले जाने का निषेध	५७८१-५७८४	१३७
४०	प्रमाणातिरिक्त और गणनातिरिक्त उपधि रखने का निषेध		१३८-१६०
	उपधि के भेद-प्रभेद	५७८५	१३८
	उपधि के प्रमाणादि की सूचक द्वार-गाथा	५७८६	१३८
	१ प्रमाण-द्वार	५७८७-५८१२	१३८-१४२
	जिन कल्पिक और स्थविर कल्पिक की पात्र सम्बन्धित उपधि की संख्या	५७८७	१३८

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	जिन कल्पिक की शरीर-सम्बन्धित उपधि की संख्या	५७८८	१३८
	जिन-कल्पिक की जघन्य, मध्यम एवं उत्कृष्ट उपधि की संख्या और उसका प्रमाण (कल्प, पात्रक-बन्ध और रजस्त्राण का नाप)	५७८९-५७९३	१३८-१३९
	गच्छवासियो के कल्प का प्रमाण और उसका कारण	५७९४-५७९५	१३९
	ग्रीष्म, शिशिर तथा वर्षा ऋतु ग्रन्थित पटलको की संख्या और उसका प्रमाण	५७९६-५७९८	१४०
	रजोहरण का स्वरूप और उसका प्रमाण	५८००-५८०२	१४०
	मस्तारक, उत्तरपट्ट, चोलपट्ट, मुखवस्त्रिका, गोच्छग, पात्र प्रत्युपेक्षणिका और पात्रस्थापन का प्रमाण	५८०३-५८०६	१४०-१४१
	हीनाधिक वस्त्र को लेकर एक-दूसरे की निन्दा न करने का आदेश	५८०७	१४१
	कल्प के गुण और उसका उत्सर्ग एवं अपवाद की दृष्टि से प्रमाण	५८०८-५८१०	१४१-१४२
२	हीनातिरिक्त द्वार	५८१३	१४२
	कम या अधिक उपधि रखने से होने वाले दोष		
३	परिकर्म-द्वार	५८१४-५८१५	१४२
	वस्त्र परिकर्म-विषयक सकारण अकारण पद के साथ विधि-अविधि पद की चतुर्भङ्गी, तथा विधि परिकर्म और अविधि परिकर्म का स्वरूप		
४	विभूषा-द्वार	५८१६-५८१६	१४३
	विभूषा-निमित्तक उपधि-प्रक्षालन करने वाले को प्रायश्चित्त और उसके कारण		
५	मूर्च्छा-द्वार	५८२०-५८२१	१४४
	मूर्च्छा से उपधि रखने वाले को दोष और प्रायश्चित्त		
	पात्र विषयक विधि	५८२२-५८२५	१४४-१४७
	पात्र के प्रमाण आदि की सूचक द्वार गाथा	५८२२-५८२३	१४४
१	प्रमाणातिरेक-हीनदोष द्वार	५८२४-५८२६	१४४-१४७
	शास्त्रोक्त दो पात्र से अधिक तथा विहित प्रमाण में बड़े पात्र रखने से होने वाले दोष और प्रायश्चित्त	५८२४-५८२७	१४४-१४५
	शास्त्रोक्त संख्या से कम तथा विहित प्रमाण से छोटे पात्र रखने से होने वाले दोष और प्रायश्चित्त	५८२८-५८३६	१४५-१४७
	पात्र का प्रमाण (नाप)	५८३७-५८३९	१४७
२	अपवाद-द्वार	५८४०-५८४५	१४७-१४८

मूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	संख्या से अधिक या कम, और प्रमाण से बड़े या छोटे पात्र रखने का अपवाद		
३	लक्षणाऽलक्षण द्वार पात्र के सुलक्षण तथा अपलक्षण, तद्विषयक गुण दोष एवं प्रायश्चित्त	५८४६-५८५१	१४८-१४९
४	त्रिविधोपधि द्वार पात्र के तुम्बा आदि तथा यथाकृत आदि तीन प्रकार और उनके लेने का क्रम	५८५२	१४९
५	विपर्यस्त द्वार पात्र-ग्रहण के क्रम को भग करने से होने वाले दोष एवं प्रायश्चित्त	५८५३	१४९
६	क द्वार पात्र की याचना करने वाले अधिकारी निर्ग्रन्थ का स्वरूप	५८५४	१५०
७	पौरुषी द्वार पात्र की याचना का समय	५८५५	१५०
८	काल-द्वार कितने दिनों तक पात्र की याचना करनी चाहिए ?	५८५६-५८५७	१५०
९	आकर द्वार पात्र-प्राप्ति के योग्य स्थान और तत्सम्बन्धी विधि	५८५८-५८६१	१५०-१५१
१०	चाउल द्वार तन्दुल-घावन, तथा उष्णोदक आदि से भावित कल्पनीय पात्र, और उसके ग्रहण की विधि	५८६२-५८६७	१५१-१५३
११	जघन्य यतना द्वार पात्र-ग्रहण विषयक जघन्य यतना	५८६८-५८७४	१५३-१५४
१२-१३	चोदक तथा असति अशिव द्वार जघन्य यतना-विषयक शका-समाधान	५८७५-५८७७	१५४-१५५
१४	प्रमाण-उपयोग-छेदन द्वार प्रमाण-युक्त पात्र के न मिलने पर उपलब्ध पात्र के छेदन का विधान	५८७८-५८८३	१५५-१५६
१५	मुख प्रमाण द्वार पात्र-मुख के तीन भेद और उनका प्रमाण	५८८४-५८८५	१५६-१५७
	मात्रक-विषयक विधि	५८८६-५९०१	१५७-१६०

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	मात्रक के ग्रहण का विधान	५८८६-५८८७	१५७
	मात्रक न लेने से होने वाले दोषों की द्वार-गाथा	५८८८	१५७
	१ अग्रहणो वारत्रक द्वार	५८८९-५८९०	१५८
	मात्रक न रखने से लगने वाले दोष और वारत्रक का दृष्टान्त		
	२ प्रमाण-द्वार	५८९१-५८९३	१५८-१५९
	मात्रक का प्रमाण और इस सम्बन्ध में तीन आदेश		
	३-४ हीनद्वार-अधिकद्वार	५८९४-५८९६	१५९
	शास्त्र-विहित प्रमाण से छोटा या बड़ा मात्रक रखने से दोष		
	५-६ शोधि, अपवाद, परिभोग, ग्रहण तथा		
	द्वितीय पद द्वार	५८९७-५८९९	१५९-१६०
	आचार्य बाल, वृद्ध, तपस्वी एवं रोगी आदि के लिए मात्रक		
	का ग्रहण, तथा निष्कारण स्वयं मात्रक का उपयोग करने पर		
	प्रायश्चित्त आदि ।		
	मात्रक के लेप की विधि	५९००	१६०
	पाणि-प्रतिग्रही आदि जिन कल्पिक, परिहार-विशुद्धि,		
	आहालन्दिक, स्थविर कल्पिक तथा निर्ग्रन्थियों का उपधि-विभाग	५९०१	१६१
४१-४५	सचित्त, सस्निग्ध तथा जीव-प्रतिष्ठित आदि पृथ्वी पर		
	उच्चार-प्रस्रवण करने का निषेध		१६१-१६२
४६-४८	जीव-प्रतिष्ठित शिला आदि पर उच्चार-प्रस्रवण करने		
	का निषेध		१६२
४९-५१	धूना आदि, कुण्ड आदि, प्राकार आदि पर उच्चार-		
	प्रस्रवण करने का निषेध		१६२
	सूत्रोक्त-विशेषण-विशिष्ट पृथ्वी आदि पर उच्चार-प्रस्रवण		
	करने के दोष और अपवाद	५९०२-५९०३	१६२-१६३
	छोटे-बड़े आताम्रो के उल्लेख के साथ चूर्णिकार का अपना परिचय		१६३

सप्तदश उद्देशक

	षोडश और सप्तदश उद्देशक का सम्बन्ध	५९०४	१६५
१-२	कौतूहल से त्रस प्राणियों को बाधने तथा छोड़ने		
	का निषेध	५९०५-५९०६	१६५-१६६
३-५	कौतूहल से तृणमाला, मुजमाला आदि मालाओं के		
	निर्माण, एवं धारण आदि का निषेध	५९१०-५९११	१६६
६-८	कौतूहल से लौह आदि धातुओं के निर्माण एवं धारण		
	आदि का निषेध	५९१२-५९१३	१६६-१६७

सूत्रमख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
६-११	कौतूहल से हार, अर्थहार आदि के निर्माण एवं धारण आदि का निषेध	५६१४-५६१५	१६७
१०-१४	कौतूहल से अजिन, कम्बल आदि के निर्माण एवं धारण आदि का निषेध	५६१६-५६१७	१६८
१५-६७	निर्ग्रन्थी को निर्ग्रन्थ के पाद, काय, व्रण आदि का अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ से प्रमार्जन, परिमर्दन, उद्धर्तन एवं प्रक्षालन आदि करने का निषेध	५६१८-५६३०	१६९-१७६
६८-१२०	निर्ग्रन्थ को निर्ग्रन्थी के पाद, काय, व्रण आदि का अन्यतीर्थी तथा गृहस्थ से प्रमार्जन, परिमर्दन, उद्धर्तन तथा प्रक्षालन आदि कराने का निषेध	५६३१	१७६-१८७
१२१	सदृश निर्ग्रन्थ को उपाश्रय में विद्यमान स्थान न देने वाले निर्ग्रन्थ को प्रायश्चित्त		१८७-१९०
	सदृशता की व्याख्या	५६३२	१८७
	दशविध स्थित कल्प	५६३३	१८७
	स्थापना-कल्प के दो प्रकार और उत्तरगुण-कल्प	५६३४-५६३५	१८८
	सदृश का आदेशान्तर, स्थान न देने पर प्रायश्चित्त, तथा निर्ग्रन्थ के आगमन के कारण	५६३६-५६३८	१८८
	वसति से बाहर रहने में दोष तथा वसति-दान के अपवाद, यतना आदि	५६३९-५६४७	१८९-१९०
१२२	सदृश निर्ग्रन्थी को उपाश्रय में विद्यमान स्थान न देने वाली निर्ग्रन्थी को प्रायश्चित्त	५६४८	१९१
१२३	माला-हृत अशनादि लेने का निषेध		१९१
	मालाहृत के उद्भव, अथ आदि भेद-प्रभेद, दोष, प्रायश्चित्त तथा अपवाद	५६४९-१९५३	१९१
१२४	कुशूल आदि में रखे हुए, फलन कठिनता से ऊँचे नीचे होकर दिये जाने वाले अशनादि का निषेध	५६५४	१९१-१९२
१२५	मृत्तिका से लित, फलतः भेदन करके दिये जाने वाले अशनादि का निषेध	५६५५-५६५७	१९२
१२६-१२९	पृथ्वी, जल, अग्नि और वनस्पति पर रखे हुए अशनादि का निषेध		१९२-१९३
	पृथ्वी आदि और निक्षिप्त के प्रकार, दोष, शका-समाधान, अपवाद और तद्विषयक यतना	५६५८-५६६४	१९३-१९४

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
१३०-१३१	सूर्य आदि से शीतल करके दिये जाने वाले अत्यन्त ऊष्ण तथा उष्णोष्ण (गर्मागरम) अशनादि का निषेध	५६६५-५६६८	१६४
१३२	पूर्ण रूप से शस्त्र-परिणत होकर अचित्त न हुए, इस प्रकार के उत्स्वेदिम आदि जल का निषेध		१६५-१६६
	उत्स्वेदिम आदि की व्याख्या, जल की अचित्तता के परिज्ञान के सम्बन्ध में शङ्का-समाधान, अपवाद आदि	५६६६-५६७६	१६५-१६६
१३३	अपने आचार्य-योग्य लक्षणों के कथन का निषेध		१६७-१६८
	आचार्य के लक्षण, लक्षण-कथन से होने वाले दोष आदि	५६७७-५६८६	१६७-१६८
१३४	गायन-वादन-नृत्य आदि करने का निषेध	५६८७-५६९३	१६९-२००
१३५-१५०	भेरी आदि, वीणा आदि, ताल आदि, वप्र आदि के शब्द सुनने की अभिलाषा का निषेध	५६९४-५६९६	२००-२०३
१५१	लौकिक तथा पारलौकिक आदि विविध रूपों में आमक्ति रखन का निषेध		२०३

अष्टादश उद्देशक

	सप्तदश और अष्टादश उद्देशक का सम्बन्ध	५६९७	२०५
१	विना प्रयोजन नाव पर चढ़ने का निषेध	५६९८-६०००	२०५
२-५	नाव के खरीदने आदि का निषेध	६००१-६००६	२०६-२०७
६-७	स्थल से जल में और जल से स्थल में नाव के खींचने का निषेध		२०७
८-९	नाव में से जल को उलीचने और कीचड़ में से फँसी नाव को बाहर निकालने का निषेध	६०१०	२०८
१०	नाव में पानी भरता देख छिद्र को हस्तादि से बन्द करने का निषेध		२०८
११	दूरस्थ नाव को अभीष्ट स्थान पर मँगाने का निषेध		२०८
१२-१३	ऊर्ध्वगामिनी आदि तथा योजनगामिनी आदि नाव में बैठने का निषेध	६०११	२०८
१४-१६	नाव को खींचने, खेने, निकालने और जलरिक्त करने आदि का निषेध		२०८-२११
	उत्तिङ्ग आदि की व्याख्या तथा अपवाद, आचार्य आदि एवं निर्ग्रन्थी को पूर्वापर रूप से नौका द्वारा पार उतारने का क्रम	६०१२-६०२३	२०८-२११

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
२०-२३	नौका-स्थित लोगो से अश्वनादि ग्रहण करने का निषेध	६०२४-६०२६	२१२-२१३
२४-७४	वस्त्र खरीदने आदि का निषेध (चतुर्दश उद्देशक के पात्र प्रकरण के ममान)	६०२७	२१३-२१८

एकोनविंशतितम उद्देशक

अष्टादश और एकोनविंशतितम उद्देशक का सम्बन्ध	६०२८-६०३६	२१६
१-७ विकट के खरीदने आदि का निषेध और ग्लानापवाद	६०३०-६०४३	२१६-२२४
८ चार सव्याओ में स्वाध्याय का निषेध	६०४४-६०४८	२२४-२२५
६-१० सध्या आदि में कालिक श्रुत एव दृष्टिवाद के क्रम से ३ तथा ७ से अधिक प्रश्न पूछने का निषेध	६०४६-६०६३	२२५-२२६
११-१२ इन्द्र महोत्सवादि चार महामहोत्सवों और ग्रीष्म-कालीन आदि महाप्रतिपदाओं में स्वाध्याय का निषेध	६०६४-६०६८	२२६-२२७
१३ पौरुषी स्वाध्याय के अतिक्रमण का निषेध		२२७
१४ स्वाध्याय-काल में स्वाध्याय न करने पर प्रायश्चित्त	६०७०-६०७३	२२७-२२८
१५ अस्वाध्याय में स्वाध्याय करने का निषेध		२२८-२४६
अस्वाध्याय के भेद-प्रभेद	६०७४	२२८
अस्वाध्याय में स्वाध्याय करने पर दण्ड और इस सम्बन्ध में राजा का दृष्टान्त	६०७४-६०७८	२२८
सयमघाती अस्वाध्याय	६०७६-६०८४	२२८-२३१
औत्पातिक अस्वाध्याय	६०८५-६०८७	२३१-२३२
दिव्यकृत अस्वाध्याय	६०८८-६०९३	२३२-२३३
विग्रह सम्बन्धी अस्वाध्याय	६०९४-६०९८	२३३-२३४
शरीर-सम्बन्धी अस्वाध्याय	६०९९-६११७	२३४-२३६
काल-प्रतिलेखना सम्बन्धी शङ्का-समाधान तथा अपवाद आदि	६११८-६१६४	२३६-२४६
१६ म्वगरीर-समुत्थ अस्वाध्याय में स्वयं स्वाध्याय करने का निषेध	६१६५-६१७६	२४६-२४१
१७ पहले के समयसरणों का वाचन किये बिना अग्रिम समयसरणों के वाचन का निषेध	६१८०-६१८३	२४२
१८ नव ब्रह्मचर्य (आचारारण) का वाचन किये बिना उत्तर या उत्तम श्रुत (छेद सूत्र आदि) के वाचन का निषेध		२४२-२४५
उत्तम श्रुत की व्याख्या, आर्यरक्षित के द्वारा युगानुसार अनुयोगों का पृथक्करण, अनुयोगों का क्रम, दोष तथा अपवाद	६१८४-६१९८	२४३-२४५

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
१६	अपात्र (अयोग्य) को वाचना देने का निषेध		२४५
२०	पात्र को वाचना न देने पर प्रायश्चित्त		२४५
२१	क्रम से अध्ययन न करने वाले को वाचना देने का निषेध		२४५
२२	क्रमशः अध्ययन करने वाले को वाचना न देने पर प्रायश्चित्त		२४५-२६२
	तिन्तणिक आदि अपात्र तथा अहृष्टभाव आदि अव्यक्त की विस्तृत व्याख्या, दोष एवं अपवाद	६१६८-६२३६	२४५-२६२
२३-२६	अव्यक्त तथा अप्राप्त को वाचना देने का निषेध और व्यक्त तथा प्राप्त को वाचना न देने पर प्रायश्चित्त		२६२-२६३
	व्यक्त और अव्यक्त की परिभाषा, अप्राप्त-सम्बन्धी चतुसङ्गी, दोष तथा अपवाद	६२३७-६२४३	२६२-२६३
२७	दो समान गुणवाले अध्येताओं में से एक को अध्ययन कराने और दूसरे को अध्ययन न कराने की भेद बुद्धि का निषेध	६२४४-६२४६	२६३-२६४
२८	आचाय तथा उपाध्याय द्वारा अदत्त वाणी के ग्रहण का निषेध		२६५-२६६
	वाणी के भेद, अदत्त वाणी-ग्रहण के कारण, तपस्तेन आदि, भावस्तेन के सम्बन्ध में गाविन्द वाचक का उदाहरण, दोष तथा अपवाद	६२५०-६२५७	२६५-२६६
२९-४०	अन्यतीर्थी, गृहस्थ, पार्श्वस्थ तथा कुशील आदि के साथ वाचना के दानाऽऽदान व्यवहार का निषेध		२६६-२६६
	अन्यतीर्थी आदि को वाचना देने-लेने पर प्रायश्चित्त, वाचना के देने लेने से दोष, स्वपाषण्डी और अन्यपाषण्डी की व्याख्या, अपवाद और तद्विषयक यतना	६२५८-६२७१	२६६-२६६

विंशतितम उद्देशक

एकोनविंशतितम और विंशतितम उद्देशक का सम्बन्ध	६२७२	२७१
१ मासिक परिहार स्थान के दोषों को परिबुद्धित तथा अपरिबुद्धित आलोचना के भेद से प्रायश्चित्त		२७१-३०४
भिक्षु-पद के निक्षेप और तत्सम्बन्धी शङ्का-समाधान	६२७३-६२८१	२७२-२७४
मास पद के निक्षेप और नक्षत्रादि मासों का प्रमाण	६२८२-६२९१	२७४-२७६
परिहार पद के निक्षेप	६२९२-६२९५	२७६-२८०
स्थान-पद के निक्षेप	६२९६-६३०२	२८०-२८२

सूत्रमख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	प्रतिमेवना के भेद-प्रभेद और तद्विषयक शङ्का-समाधान	६३०३-६३०८	२८२-२८३
	शल्योद्धरण के लिए आलोचना और उसके तीन प्रकार	६३०६-६३११	२८३-२८४
	विहारालोचना	६३१२-६३२२	२८४-२८६
	उपसम्पदालोचना	६३२३-६३७६	२८६-३००
	अपराधालोचना	६३७७-६३६०	३००-३०२
	माया-मद मुक्त आलोचना के गुण	६३६१-६३६२	३०३
	आलोचनाह के दो प्रकार-आगम व्यवहारी और श्रुत-व्यवहारी	६३६३-६३६५	३०३-३०४
	मायावी आलोचक को अश्व और दण्डिक के दृष्टान्तों द्वारा उद्बोधनादि	६३६६-६३६८	३०४-३०५
२-६	द्विमासिक आदि परिहार-स्थान के दोषी को परिकुञ्चित तथा अपरिकुञ्चित आलोचना के भेद से प्रायश्चित्त		३०५-३०७
	द्विमासादि परिकुञ्चित आलोचना के विषय में यथाक्रम कुञ्चित तापस, शल्य, मालाकार आदि के उदाहरण तथा छ मास से अधिक तप प्रायश्चित्त न देने का हेतु	६३६६	३०५-३०७
७-१२	अनेक बार मासिक आदि परिहार-स्थान सेवन करने वाले को परिकुञ्चित एवं अपरिकुञ्चित आलोचना के भेद से प्रायश्चित्त		३०८-३१३
	एक बार और अनेक बार के दोषी को समान प्रायश्चित्त देने के सम्बन्ध में शङ्का-समाधान तथा रासभ-मूल्य, कोष्ठगार एवं खल्वाट के उदाहरण	६४००-६४१७	३०८-३१३
१३	मासिक आदि परिहार स्थानों के प्रायश्चित्त का सयोगसूत्र		३१३-३१४
	सयोग-सूत्र के सम्बन्ध में शङ्का-समाधान	६४१८-६४१६	३१३-३१४
१४	बहुग मासिक आदि परिहार-स्थानों के प्रायश्चित्त का सयोग-सूत्र		३१४-३६०
	सयोग-सूत्रों के अन्य प्रकार, उनकी रचना-विधि, और तत्सम्बन्धी शङ्का-समाधान	६४२०-६४२६	३१४-३१८
	१ स्थापना-सचय द्वार	६४२७-६४६८	३१८-३३०
	स्थापना तथा आरोपणा की व्याख्या और उनके प्रकार आदि		
	२ राशि द्वार	६४६३-६४६५	३३०
	प्रायश्चित्त-राशि की उत्पत्ति के असयम स्थान		
	३ मान द्वार	६४६६	३३०-३३१
	विभिन्न तीर्थङ्करो की अपेक्षा से प्रायश्चित्त के मान (प्रमाण) की विविधता		
	४ प्रभु द्वार	६४६७-६४६८	३३१

सूत्रसंख्या	विषय	गाथाङ्क	पृष्ठाङ्क
	प्रायश्चित्त-दान के योग्य अधिकारी		
५	कियान् द्वारा	६४६६-६५६६	३३१-३३८
	प्रायश्चित्तों की गणना तथा कृत्स्न और अकृत्स्न आरोपण		
	अतिक्रमादि के सम्बन्ध में विचार चर्चा	६४६७-६५६८	३३८-३३९
	नवम पूर्व से निशीथ का उद्धार	६५००	३३९
	अनेक दोषों की शुद्धि के लिए एक प्रायश्चित्त देने का हेतु, इस सम्बन्ध में छूट-कुट आदि के उदाहरण तथा अन्य आवश्यक शङ्का-समाधान	६५०१-६५०६	३३९-३४६
	मूल व्रतातिचार तथा उत्तर गुणातिचार-सम्बन्धी चर्चा	६५०७-६५३५	३४६-३४८
	प्रायश्चित्त वहन करने वालों के भेद-प्रभेद	६५३६-६५७४	३४९-३६०
१५-१६	चातुर्मासिक, सातिरेक चातुर्मासिक आदि आलोचना सूत्र		३६०-३६७
	आलोचक के गुण एवं दोष तथा आलोचना-विधि	६५७५-६५८३	३६१-३६७
१७-२०	चातुर्मासिक, सातिरेक चातुर्मासिक आदि आरोपणा-सूत्र		३६७-३८६
	परिहार तप और शुद्ध तप की विवेचना	६५८४-६६०४	३६९-३७४
	वैयावृत्य के तीन प्रकार तथा आचाय के गुण	६६०५-६६१५	३७४-३७७
	आरोपणा के भेद-प्रभेद तथा आलोचना की चतुर्भङ्गी	६६१६-६६४७	३७७-३८७
२१-५३	प्रायश्चित्त स्वरूप तप वहन करते हुए बीच में लगे दोषों का प्रायश्चित्त		३८७-४११
	निशीथ के निर्माता विशाखागरी की प्रशस्ति		३८५
	प्रायश्चित्त वहन करने वालों के कृत करणादि भेद-प्रभेद	६६४८-६६६५	३८६-४०१
	निशीथ कल्प के श्रद्धान कल्प आदि चार प्रकार	६६६६-६६७६	४०१-४०४
	प्रायश्चित्त-प्रदान के हेतु	६६७७-६६७९	४०४
	दशविध प्रायश्चित्तों का ऐतिहासिक काल-क्रम	६६८०	४०४
	ओषनिष्पन्न तथा विस्तार निष्पन्न के भेद से प्रायश्चित्त के दो प्रकार	६६८१-६६८२	४०५
	उत्सग और अपवाद के आचरण की विधि, अथवा छेद-मूत्रों में प्रतिसूत्र-प्रतिषेध, अपवाद आदि चतुर्विध अनुयोग-विधि	६६८३-६६८८	४०५-४०६
	अनुयोगघर की ओर से स्वगौरव का परिहार	६६८९	४०६
	निशीथ-सूत्र के अनेकविध अर्थाधिकार	६७००-६७०१	४०६-४१०
	निशीथ सूत्र के अधिकारी और अनधिकारी	६७०२-६७०३	४१०
	निशीथ-चूर्णिकार की स्वनामोल्लेखपूर्वक प्रशस्ति		४११
	निशीथ-चूर्णिकार के विशतिरतम उद्देशक की संस्कृत में सुबोधा व्याख्या		४१३-४४३

परिशिष्ट

१	प्रथम परिशिष्ट भाष्यगाथा-सूची	४४७-५३५
२	द्वितीय परिशिष्ट उद्धृत गायानि के प्रमाण	५३६-५४१
३	तृतीय परिशिष्ट प्रमाणत्वेन निर्दिष्ट ग्रन्थ	५४२-५४४
४	चतुर्थ परिशिष्ट भाष्य-वृत्त्यन्तर्गत दृष्टान्त	५४५-५५१
५	पञ्चम परिशिष्ट विशेष नामो की विभागश अनुक्रमणिका	५५२-५७०
६	षष्ठ परिशिष्ट सुभाषित-सुधासार	५७१-५७२

“अपक्षपातेन यदर्थनिर्णयस्,
तदेव धर्मः परमो मनीषिणाम् ।”

— विना किसी पक्ष-पात के यथार्थ
सत्य का निर्णय करना ही,
विद्वानों का परम धर्म है ।



निशीथ-सूत्रम्

[भाष्य-सहितम्]

आचार्यप्रवर श्री जिनदासमहत्तर-विरचितया

विशेषचूर्ण्य समलंकृतम्

विंशतितमोद्देशकस्य सुबोधारण्यया संस्कृत-व्याख्यया सहितञ्च

चतुर्थो विभागः

उद्देशकाः १६-२०

ण वि किंचि अणुण्णायं, पडिसिद्धं वा वि जिणवरिंदेहि ।
एसा तेसिं आणा, कज्जे सच्चेण होयव्व ॥ ५२४८ ॥
दोसा जेण निरुंभति, जेण खिज्जति पुव्वक्कम्माई ।
सो सो मोक्खोवाञ्चो, रोगावत्थासु समणं व ॥ ५२५० ॥

—भाष्यकार ।

षोडश उद्देशकः

उक्त पचदशमोद्देशक । इदानी षोडश प्रारभ्यते, तत्राय सम्बन्ध -

देहविभूसा बंभस्स अगुत्ती उज्जलोवहित्तं च ।

सागारिते य (वि) वसतो, बंभस्स विराहणाजोगो ॥५०६५॥

पचदशमुद्देशगे देहविभूसाकरण उज्जलोवधिधारण च णिसिद्ध, मा बभवयस्स अगुत्ती, पसगतो मा बभवयस्स विराहणा भविस्मति । इहावि सोलसमुद्देशगे मा अगुत्ती बभविराहणा वा, भतो सागारिय-
वमहिणिसेहो कज्जति । एस सम्बन्धो ॥५०६५॥

एतेण सम्बन्धेणागयस्स सोलसमुद्देशगस्स इम पढम सुत्त -

जे भिक्खू सागारियसेज्जं अणुपविसइ, अणुपविसतं वा सातिज्जति ॥१॥

सह आगारीहि सागारिया, जो त गेहति वसहि तस्स आणादी दोसा, चउलहु व से पच्छित्त ॥

सन्नासुत्तं सागारियं ति जहि मेहुणुब्भवो होइ ।

जत्थित्थी पुरिसा वा, वसन्ति सुत्तं तु सट्ठाणे ॥५०६६॥

ज सुत्ते 'सागारिय' ति एसा सामयिकीसज्ञा । जत्थ वसहीए ठियाण मेहुणुब्भवो भवति सा
सागारिया, तत्थ चउगुरुगा ।

अथवा - जत्थ इत्थिपुरिसा जसति सा सागारिका, इत्थिसागारिगे चउगुरुगा सुत्तणिवातो ।
“सट्ठाणि” ति जा पुरिससागारिया, णिग्गथीण पुरिससागारिगे चउगुरुगा । सेस तहेव ॥५०६६॥
एस सुत्तत्थो ।

इमो णिज्जुत्तिवित्थरो -

सागारिया उ सेज्जा, ओहे य विभागओ उ दुविहाओ ।

ठाण-पडिसेवणाए, दुविहा पुण योहओ होति ॥५०६७॥

सागारिया सेज्जा दुविहा - ओहेण विभागओ य । ओहेण पुण दुविधा - ठाणातो पडिसेवणातो अ ।
एतेसु पच्छित्त भण्णिहि ॥५०६७॥

सागारियणिक्खेवो, चउन्विहो होइ आणुपुक्वीए ।

णामं ठवणा दविए, भावे य चउन्विहो भेदो ॥५०६८॥

सागारिगणिक्लेवो णामठवणादिगो चउव्विधो कायव्वो । स पश्चाधेन कृतश्चतुर्विध । दव्वे
आगमओ, णो आगमओ य ॥५०६८॥

णो आगमओ जाणग-भविद्यव्वइरित्त दव्वसागारिय इम -

रूवं आभरणविही, वत्थालकारभोयणे गंधे ।

आओज्ज णट्ट णाडग, गीए सयणे य दव्वम्मि ॥५०६९॥

“रूव”ति अस्य व्याख्या -

जं कट्टकम्ममादिसु, रूवं सट्ठाणे तं भवे दव्वं ।

जं वा जीवविमुक्कं, विसरिम्मरूवं तु भायम्मि ॥५१००॥

रूव णाम ज कट्टचित्तलेपकम्म वा पुरिसरूव कथ, अहवा - जीवावप्पमुक्क पुरिससरीर त
“सट्ठाणे” ति शिग्गथाण पुरिसरूव दव्वसागारिय, जे इत्थीसगीरा त भावसागारिय । एतेसु चेव कट्टकम्ममादिसु
ज इत्थीरूव त निग्गथीण दव्वसागारिय, जे पुण पुरिसरूवा त तामि भावसागारिय । आभरणा कडगादी ज
पुरिसजोग्गा ते शिग्गथाण दव्वे, जे पुण इत्थिजोग्गा ते भावे । इत्थीण इत्थिजोग्गा दव्वे, पुरिसजोग्गा
भावे ॥५१००॥

वत्थादि अलकार चउव्विह । भोयण असणादिय चउव्विह । कोट्टुगपुडगादी गद्या अणेगविहा ।
आउज्ज चउव्विह - तत वितत घण भुसिर । णट्ट चउव्विह - अचिय रिभिय आरभड भसाल ति ।

अहवा इम ^२णट्ट -

णट्टं होति अगीयं, गीयजुयं णाडयं तु तं होड ।

आहरणादी पुरिसोवभोग दव्वं तु सट्ठाणे ॥५१०१॥

गीतेण विराहत णट्ट, गीतेण जुत्त णाडग । गीय चउव्विह-ततिसम तालसम ^३गहसम नयसम च ।
सयणिउज पल्लकादि बहुप्पगार । “दव्वे” ति दव्वसागारियमेवमुद्धिद भोयण गधन्व-आओज्ज-सयणाणि ।
उभयपक्खे वि सरिसत्तणतो गियमा दव्वसागारिय चेव, सेसाणि दन्वभावेसु भाणियव्वाणि । सरिसे दव्वसागारिय,
विसरिसे भावसागारिय ॥५१०१॥

एतेसु इम पच्छित्त -

एक्केक्कम्मि य ठाणे, भोयणवज्जाण चउलहू होति ।

चउगुरुग भोयणम्मी, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥५१०२॥

रूवादिदव्वसागारियप्पगारेसु एक्केक्कम्मि ठाणे ठायमाणस्स भोयण वज्जेत्ता सेसेसु चउलहुगा,
भोयण चउगुरु । केसि च आयरियाण - अलकारवत्थेसु वि चउगुरुगा, आणादिया य दोसा भवति ।

चोदक आह - सव्वे ते साहू, कह ते दोसे करेज्ज ?

उच्यते -

को जाणति "केरिसओ, कस्स व माहप्पता समत्थत्ते ।

धिदुब्बला उ केई, डेवेति पुणो अगारिजणं ॥५१०३॥

छउमत्थो को जाणइ णाणादेसियाण कस्स केरिसो भावो, इत्थिपरिस्सहे उदिणो कस्स वा माहप्पता, महतो अप्पा माहप्पता । अहवा - माहप्पता प्रगावो । त च माहप्प पभाव वा समत्थता चित्तिज्जति । सामत्थ धितो, सारीरा सत्ती । इदियणिग्गह प्रति ब्रह्मव्रतपरिपालने वा कस्स किं माहात्म्यमिति । एयम्मि वि अपरिण्णाए सागारियवसधीए ठियाण तत्थ जे धितिदुब्बला ते रुवादीहिं अक्खित्ता विगयसजमधुरा अगारिदुण "डेवेति" - परिभज्जीत्यथ ॥५१०३॥

ते य सजया पुब्बावत्था इमेरिसा होज्जा -

केइत्थ भुत्तभोई, अभुत्तभोई य केइ निक्खंता ।

रमणिज्ज लोइयं ति य, अम्हं पेयारिसं आसी ॥५१०४॥

भुत्ताभुत्ता दो वि भणति - रमणिज्जो लोइओ धम्मो । जे भुत्तभोगी ते भणति - अम्हं पि गिहासमे ठियाण एरिस खाणपाणादिक आसि ॥५१०४॥

किं च -

एरिमओ उवभोगो, अम्हं वि आसि (त्ति) ण्ह एण्हि उज्जन्त्ता ।

दुक्कर करेमो भुत्ते, कोउगमितरस्स ते दट्ठुं ॥५१०५॥

"उवभोगो" ति ण्हाणवत्थाभरणगधमल्लाणुलेवणधूवणवासतबोलादियाण पुव्व आसी । इण्हि इदाणि, उज्जन्त्ता प्रावत्येन, मल्लिणसरीरा लद्धसुहासादा अमहे सुदुक्कर सहामो, एव भुत्तभोगी चितयति । "इतर"ति अभुत्तभोगी, त त रुवादि दट्ठु कोउअ करेज्जा ॥५१०५॥

सति कोउएण दोण्ह वि, परिहेज्ज लएज्ज वा वि आभरण ।

अण्णेसिं उवभोगं, करेज्ज वाएज्ज उड्डाहो ॥५१०६॥

"सति" ति पुव्वरयादियाण सरण भुत्तभोगिणो, इयरस्स कोउअ । एते दोणि वि असुभभावुप्पणा वत्थे वा परिहेज्ज, आभरण वा "लएज्ज" ति अप्पणो आभरेज्ज, अण्णेसिं वा वत्थादियाण उवभोग करेज्ज, वाएज्ज वा आतोउज्ज । असजतो वा सजन आयरियादि दट्ठु उड्डाह करेज्ज ॥५१०६॥

किं च -

तच्चित्ता तल्लेसा, भिक्खा-सज्झायमुक्कतत्तीया ।

विकहा-विसुत्तियमणा, गमणुस्सुग उस्सुगब्भूया ॥५१०७॥

त इत्थीमादी रूव दट्ठु तदगावयवसरूवचित्तण चित्त, तदगपरिभोगज्जभवसाओ लेसा (भिक्खा) सज्झायादिसज्जमजोगकरणमुक्कतत्ती णिव्वावारादित्यथ । वायिगजोगेण सज्जमाराहणी कहा, तव्विवक्खभूता विकहा । कुसलमगघारणोदीग्गेण सज्जमसासविद्धि(?)करेत्ता सो वस्तमना ततो विगहाविसोत्तियमणा भवति । एव

१ को किरिसो, इति बृहत्कल्पे गा० २४५५ ।

इत्थिमादिरूवसमागमतो उदिण्णमोहाण त्थीरिभोपुस्सुयभूताण गमणे ओत्सुक्य भवति । अभिप्रेतायं त्वरित सम्प्रापण ओत्सुक्यमित्यर्थः ॥५१०७॥

सुट्ठु कयं आभरणं, विणासियं ण वि य जाणसि तुमं पि ।

मुच्छुद्धाहो गंधे, विसोत्तिया गीयसदेसु ॥५१०८॥

रूढ आभरण वा दट्ठ एगो भणाति - “सुट्ठु” ति लट्ठ कय ।

वित्तिओ त भणाति - “एत विणासिय, भविसेसणू तुम, ण जाणसि किं चि” ।

एव उत्तरोत्तरेण अधिकरण भवति, प्रशसतो वा रागो इतरस्स दोसो । “मुच्छ” ति मुच्छ वा करेज्ज । मुच्छाओ वा सपरिगहो होज्जा ।

गण्हेत्ति चदणादिणा विलित्ते घुविने वा अप्पाणे उड्डाहो भवति । आतोज्ज-गीयसदादिएसु विसोत्तिया भवति ॥५१०८॥

किं च -

णिच्चं पि दव्वकरणं, अवहितहिययस्स गीयसदेसु ।

पडिलेहण सज्जाए, आवासग भुंज वेरत्ती ॥५१०९॥

णिच्चमिति तीए वसहीए सव्वकालगीतादिसद्देहिं अवधियमणस्स पडिलेहणादिकरण सव्वेसि सज्जमजोगाण दव्वकरण भवति ॥५१०९॥

ते सीदिउमारद्धा, सज्जमजोगेहि वसहिदोसेणं ।

गलति जतुं तप्पंतं, एव चरित्तं मुणेयव्वं ॥५११०॥

वेसि एव वसहिदोसेण सीअताण चरित्तहाणी ।

कह ?, उच्यते । इमो दिट्ठतो -

जहा जउ अग्निगा तप्पत गलति एव जहुत्तसज्जमजोगस्स अकरणतातो चरित्त गलति, ॥५११०॥

वसहिदोसेण जो इत्थिमादीविसयोवभोगभावो असुभो उप्पण्णो -

‘तण्णिकखंता केई, पुणो वि सम्मेलणाइदोसेणं ।

वच्चंति संभरंता, भेत्तूण चरित्तपागारं ॥५१११॥

तस्मान्निकखता त वा परित्यज्य नि क्रान्ता तण्णिकखता केचिन्न सर्वे । सेस कठ ।

एगम्मि दोसु तीसु व, ओहावंतेसु तत्थ आयरिओ ।

मूलं अणवट्ठप्पो, पावति पारंचियं ठाणं ॥५११२॥

वसहिकएण दोसेण जइ एक्को उण्णिकखमिति तो आयरियस्स मूल, दोसु अणवट्ठो, तिसु पारंचियः । जस्स वा वसेण तत्थ ठिता तस्स वा एय पच्छित्त ॥५११२॥ दव्वसागारिय गत ।

१ उण्णि - , इति बृहत्कल्पे गा० २४६३ ।

इदार्णि भावसागारिय -

‘अट्टारसविहमबंभं, भावउ ओरालियं च दिव्वं च ।

मणवयणकायगच्छण, भावम्मि य रूवसंजुत्तं ॥५११३॥

एय दव्वसागारिय भणतेण भावसागारियपि एत्थेव भणिय, तद्वावि वित्थरतो पुणो भणति - त भावसागारिय अट्टारसविह अबभ । तस्स मूलभेदा दो - ओरालियं च दिव्वं च । तत्थ ओरालियं नवविह इम - ओरालियं कामभोगा मणसा गच्छति, गच्छावेति, गच्छत अणुजाणति । एव वायाए वि । काएण वि । एते तिणिं तिया णव । एव दिव्वेण वि णव । एते दो णवगा अट्टारस । एय अट्टारसविह अबभ भावसागारिय ॥५११३॥

“भावम्मि य रूवसंजुत्तं” ति अस्य व्याख्या -

अहव अबंभं जत्तो, भावो रूवा सहगयातो वा ।

भूसण-जीवजुत्तं वा, सहगय तव्वज्जियं रूवं ॥५११४॥

अबभभावो जत्तो उप्पज्जइ त च रूव रूवसंजुत्तं वा, कारणे कज्जोवयाराओ, त चेव भावतो अबभ ।

अहवा - उदिण्णभावो ज पडिसेवति त च रूव वा होज्ज, रूवसहगतं वा । तत्थ ज इत्थीसरीर सचेयण भूसणसंजुत्तं त रूवसहगतं ।

अहवा - अणाभरणं पि जीवजुत्तं त रूवसहगतं भणति, “तव्वज्जियं रूवं” ति सचेयण इत्थीसरीर भूमणवज्जियं रूवं भणति, अचेयणं वा रूवं भणति ॥५११४॥

तं पुण रूवं तिविहं, दिव्वं माणुस्सगं च तेरिच्छ ।

तत्थ उ दिव्वं तिविहं, जहण्णयं मज्झिमुक्कोसं ॥५११५॥ कठा

दिव्वे इमे मूलभेदा -

पडिमेतरं तु दुविहं, सपरिग्गहं एककमेक्कगं तिविहं ।

पायावच्च-कुडुंबिय-डंडियपरिग्गहं चेव ॥५११६॥

पडिमाजुयं त दुविहं - सण्णिहितं असण्णिहितं वा । “इतरं” ति - देहजुयं त पि सचेयणं अचेयणं वा । पुणो एककेक्कं सपरिग्गहं अपरिग्गहं वा । ज सपरिग्गहं त तिविविहं परिग्गहितं । पच्छद्दं कठं ॥५११६॥

दिव्वं जहण्णादिगं तिविधं इम -

वाणंतरीयं जहण्णं, भवणती जोइमं च मज्झिमं ।

वेमाणियमुक्कोसं, पगयं पुण ताण पडिमासु ॥५११७॥

वाणमतरं जहण्णं, भवणवासिं जोइसियं च मज्झिमं, वेमाणियं उक्कोसं । “हं पडिमासुतेण अधिकारो जेण वसह्विसोही अधिकया ॥५११७॥

१ अट्टारसविहअबभ इति बृहत्कल्पे गा० १४६५ । २ गा० ५११२ ।

अहवा - पडिमाजुएण जहण्णादिया इमे भेदा -

कट्ठे पोत्थे चित्ते, जहण्णयं मज्झिमं च दंतम्मि ।

सेलम्मि य उक्कोमं, जं वा स्वातो णिप्फणं ॥५११८॥

जा दिव्वपडिमा कट्ठे पोत्थे लेप्पगे वित्तकम्मे वा जा कीरड एय जहण्णय, अनिष्टस्वशात्तात् । जा पूण हस्तिदत्ते कीरति मा मज्झिमा, जेण मुभत्तग्गरिसा, अत्रापि हीरमभव । मणिमोलादिमु जा कीरड मा उक्कोमा, मुकुमालफरिसत्तणतो अहीरत्तणतो य ।

अथवा - ज विरूव कय त जहण्ण । ज मज्झिमरूव त मज्झिम । ज पूण सुख कय त उक्कोमय ॥५११८॥ सव्वोहतो पडिमाजुए ठायमाणस्स चउलहु ।

ओहविभागे इम -

ठाण-पडिमेवणाए, तिविहे दुविहं तु होड पच्छित्तं ।

लहुगा तिण्णि विमिट्ठा, अपरिग्गहे ठायमाणस्स ॥५११९॥

“तिविध” ति - दिव्वमाणुमतेरिच्छे दुविध पच्छित्त - ठाणपच्छित्त पडिमेवणापच्छित्त च । एव अन्यनिम्बण काउ । एय चेव पुव्वद्ध । अण्णहा भाणियव्व - “तिविधे” ति जहण्णमज्झिमुक्कोमे दुविह पच्छित्त - ठाणओ पडिमेवणाया य । तत्थ पडिमेवणाओ ताव ठाप । ठायतस्स इम - लहुगा, तिण्णि विमिट्ठा, दिव्व पडिमाजुए अमण्हिए जहन्ने चउलहुया उभयलहु, मज्झिमे लहुगा चेव कालगुरु, उक्कोमे लहुगा चेव तवगुरु ।

अहवा - “तिविधे दुविध तु” - तिविध जहण्णगादी, त सण्हियामण्हितेण दुविह ।

अहवा - पडिमेवणाए त चेव जहण्णादिक तिविध । दिट्ठादिट्ठेण दुविध ॥५११९॥

विभागे ओहपच्छित्त इम -

चत्तारि य उग्घाया, पढमे वितियम्मि ते अणुग्घाता ।

छम्मासा उग्घाता, उक्कोसे ठायमाणस्स ॥५१२०॥

पढमे ति जहण्णे, तत्थ उग्घाय ति चउलहु । वितिय मज्झिम तत्थ अणुग्घाय ति चउगुरु । उक्कोसे छम्मासा, उग्घाय ति छल्लहु । एय ठायमाणस्स एयस्स इमा उच्चारणविधी - जहण्णे पायावच्चपरिग्गहिते ठाति ड्ढु । मज्झिमए पातावच्चपरिग्गहिते ठाति ड्ढु । उक्कोसे पातावच्चपरिग्गहिते ठाति फुं ॥५१२०॥

इदाणि एते पच्छित्ता विमोमज्जजनि -

पायावच्चपरिग्गहे, दोहि वि लहु होति एते पच्छित्ता ।

कालगुरु कोडुवे, डडियपारिग्गहे तवसा ॥५१२१॥

जे एते पायावच्चपरिग्गहिते जहण्णए मज्झिमए उक्कोसे य ठायमाणस्स चउलहु चउगुरु छल्लहुआ पच्छित्ता भगिता । एते कालेण वि तवेण वि लहुमा गायव्वा ।

कोटुवियपरिग्गहिते एते चेव तिण्णि पच्छित्ता कालगुरु तवलहुआ ।

डडियपरिग्राहिते एते चैव तिणि पच्छित्ता काललहुआ तवगुरुआ । जम्हा जहण्णादिविभागेण कत सण्णिहितामण्हितेण ण विमेषियच्च, तम्हा विभागे ओहो गओ ॥५१२१॥

इदानीं विभागपच्छित्त - तत्त्व एयाणि चैव जहण्णमज्झिमुक्कोमाणि असण्णिहियसण्णिहियभिण्णा छट्ठाणा भवति ।

ताहे भण्णति -

चत्तारि य उग्घाया, पढमे वितियम्मि ते अणुग्घाया ।

ततियम्मि य एमेवा, चउत्थे छम्मास उग्घाता ॥५१२२॥

जहण्णेण असण्णिहिय पढम ठाण, सण्णिहिय वितिय ठाण ।

मज्झिमे असण्णिहिय तइयट्ठाण, सण्णिहिय चउत्थ ।

उक्कोमेण असण्णिहिय पचम, सण्णिहिय छट्ठ ।

जहण्णए असण्णिहिए पायावच्चपरिग्राहिते ठाति चउलहुय, सण्णिहिए चउगुरु । मज्झिमए अमण्णिहिए “एमेव” ति - चउगुरुया, सण्णिहिए छल्लहुगा ॥५१२२॥

पंचमगम्मि वि एवं, छट्ठे छम्मास होतऽणुग्घाया ।

असन्निहिते सन्निहिते, एस विही ठायमाणस्स ॥५१२३॥

उक्कोसए असण्णिहिए पायावच्चपरिग्राहिते ठाति एमेव ति छल्लहुगा, सण्णिहिए छगुरु । एसो ठाणपच्छित्तस्स विधी भणितो ॥५१२३॥

पायावच्चपरिग्राह, दोहि वि लहु होति एते पच्छित्ता ।

कालगुरुं कोडुवे, डडियपारिग्राहे तवसा ॥५१२४॥

पायावच्चे उमयलहु, कोटुविए कालगुरु, डडिए तवगुरु । सेस पूर्ववत् ॥५१२४॥

ठाणपच्छित्त चैव वितियादेसतो भण्णति -

अहवा भिक्खुस्सेयं, जहण्णगाइम्मि ठाणपच्छित्तं ।

गणिणो उवरिं छेदो, मूलायरिए हसति हेट्ठा ॥५१२५॥

ज एय जहण्णगादी असन्निहियसन्निहियभेदेण चउलहुगादि - छगुरुगावसाण एय भिक्खुस्स भणिय । “गणि” ति उवज्झाओ, तस्स चउगुरुगादी छेदे ठायति । आयरियस्स छल्लहुगादी मूले ठायति । इह चारणाविकप्पे जहा उवरिपद वड्ढति तहा हेट्ठापद हस्सति । ॥५१२५॥

पढमिल्लुगम्मि ठाणे, दोहि वि लहुगा तवेण कालेणं ।

वितियम्मि य कालगुरु, तवगुरुगा होंति तइयम्मि ॥५१२६॥

इह पढमिल्लुग पागतित ठाण, वितिय कोटुव, ततित दडिय । सेस पूर्ववत् ॥५१२६॥ एय ठायनस्स पच्छित्त भणिय ।

इदानीं पडिसेवतस्स पच्छित्त भण्णति -

चत्तारि छच्च लहु गुरु, छम्मासिय छेद लहुग गुरुगो तु ।

मूलं जहण्णगम्मी, सेवते पसज्जणं मोचुं ॥५१२७॥

पायावच्चपरिगृहे जहण्णे असण्हिए अदिट्ठे ङ्का । दिट्ठे ङ्का । सण्हित्ते अदिट्ठे ङ्का । दिट्ठे फुं ।
कोट्ठियपरिगृहे जहण्णे असण्हिए — अदिट्ठे फुं । दिट्ठे फां । सण्हित्ते अदिट्ठे फां । दिट्ठे
छम्मासिनो लहुनो छेदो ।

डडियपरिगृहे जहण्णे असण्हित्ते अदिट्ठे छम्मासिओ लहुच्छेदो । दिट्ठे छम्मासिओ गुरु छेदो ।
सण्हिए अदिट्ठे छम्मासिनो गुरु छेदो । दिट्ठे मूल ।

एय जहण्णपद असुयतेण उदिण्णमोहत्तणतो पडिम पडिसेवतस्स पच्छित्त भणिय पसज्जणा मोत्तु
पसज्जणा णाम दिट्ठे सका भोइगादी, अयवा — गेण्हण कड्डुणादी ॥५१२७॥

चउगुरुग छच्च लहु गुरु, छम्मासियछेदो लहुग गुरुगो य ।

मूल अणवट्ठप्पो, मज्झिमए पसज्जणा मोत्तु ॥५१२८॥

मज्झिमे वि एव चेव चारणविधी, णवर — चउगुरुगाओ आढत्ते — अणवट्ठे ठाति ॥५१२८॥

तवछेदो लहु गुरुगो, छम्मासिओ मूल सेवमाणस्स ।

अणवट्ठप्पो पारचिओ य उक्कोस विण्णवणे ॥५१२९॥

उक्कोसे वि एव चेव चारणविधी, णवर — चउगुरुगाओ (छल्लहुगातो) आढत्त पारचित्ते
ठाति । विण्णवणत्ति पडिसेवणा पत्थणा वा, ॥५१२९॥

इमेण कमेण चारण करतेण आलावो कायव्वो —

पायावच्चपरिगृह, जहण्ण सन्निहित तह असन्निहिते ।

अदिट्ठ दिट्ठ सेवति, आलावो एस सव्वत्थ ॥५१३०॥ कठा

अण्णे चारणिय एव करेति — जहण्णे पायावच्चपरिगृहे असण्हित्ते सण्हित्ते अदिट्ठ दिट्ठ
त्ति, एय पायावच्चपय अचयतेण मज्झिमुक्कोसा वि चारियव्वा । पच्छित्त चउलहुगादि मूलावसाण ते चेव ।
एय कोट्ठिय पि चउगुरुगादि अणवट्ठप्पावसाण । डडिय पि छल्लहुगादि पारचियावसाण । एत्थ पायावच्च
जहण्ण कोट्ठ मज्झिम डडिय उक्कोस भाणियव्व, उभयहा वि चारिज्जत अविस्स ॥५१३०॥

चोदगो भणति —

जम्हा पढमे मूलं, वितिए अणवट्ठ ततिय पारंची ।

तम्हा ठायंतस्सा, मूलं अणवट्ठ पारंची ॥५१३१॥

“पढमे” ति — जहण्णे चउलहुगातो आढत्त मूले ठाति, मज्झिमे चउगुरुगातो आढत्त अणवट्ठे ठाति,
उक्कोसे छल्लहुगातो आढत्त पारचिए ठाति । जइ एव पडिमेवमाणस्स पायच्छित्त भवति तम्हा ठायतस्सेव
पारचिय भवतु । अथवा — ठाणपच्छित्त वि मूलाणवट्ठपारचिया भवतु । कि कारण ? अवश्यमेव प्रसजना
प्रतीत्य मूलानवस्थाप्यपारचिकान् प्राप्स्यन्ति ॥५१३१॥

आयरिओ भणइ —

पडिसेवणाए एवं, पसज्जणा होति तत्थ एक्केक्के ।

चरिमपदे चरिमपदं, तं पि य आणादिणिप्पणं ॥५१३२॥

“पडिसेवणाए” ति - पडिसेवतस्स अतियाराणुरूवा मूलाणवट्टपारचिया एव समवति ।

जति पुण ठितो ण चेव पडिसेवति तो कह एते भवतु ? ॥५१३२॥

जति पुण सव्वो वि ठितो, सेवेज्जा होज्ज चरिमपच्छित्तं ।

तम्हा पसंगरहितं, जं सेवति तं ण सेसाइं ॥५१३३॥

जति णियमो होज्ज सव्वो ठायतो पडिसेवेज्जा तो जुज्जइ त तुम भणसि, जेण पुण ण सव्वो ठायतो पडिसेवति तेण कारणेण पसंगरहितं ज ठाण सेवति तत्थेव पायच्छित्तं भवति ॥५१३३॥

“पसज्जणा सत्थं होति एक्केक्क” ति एक्केक्कातो पायच्छित्तठाणातो पसज्जणा भवति ।

कह ? उच्यते - त साधु तत्थं ठिय दट्ठु अविरयओ को वि तस्सेव सक करेज्जा - “णूर्णं पडिमेवणाणिमित्तेण एस एत्थं ठिओ,” ताहे दिट्ठे सका भोतिगादो भेदा भवति ।

अह पसंग इच्छसि तो इमो पसंगो “चरिमपदे चरिमपद” ति अस्य व्याख्या -

अदिट्ठातो दिट्ठं, चरिमं तहि संकमादि जा चरिमं ।

अहव ण चरिमाऽऽरोवण, ततो वि पुण पावती चरिमं ॥५१३४॥

चारणियाए कज्जमाणीए अदिट्ठदिट्ठिं अदिट्ठपदातो ज दिट्ठपदं त चरिमपदं भणति, ततो चरिमपदातो सका भोतिगादिपदेहि विभासाए जाव चरिम पारचियं च पावति ।

स्यान् मति - “अथ दृष्टं कथं सका ? , ननु नि शक्तिमेव । उच्यते - दूरेण गच्छतो दिट्ठं वि अविभाविते सका, अहवा - आसण्णो वि ईसि अद्विच्छं णिरिक्खणेण सका भवति ।

अहवा - “चरिमपदे चरिमपद” मणति । असण्णित्तपदातो सण्णित्तपदं चरिमपदं ति । तत्थं सण्णित्तपदातो पडिमा खित्तमादी करेज्जा, परितावणमादिपदेहि चरिम पावेज्जा । अहव ण चरिमाऽऽरोवणं ति तृतीय प्रकार - जहणे चरिम मूलं, मज्झिमे चरिम अणवट्ठो, उक्कोसे चरिम पारचियं । ततो एक्केक्कतातो चरिमपदातो सकादिपदेहि चरिम पारचियं पावइ ॥५१३४॥

“अतः पि य आणादिनिष्फण” ति अस्य व्याख्या -

अहवा आणादिविराहणाओ एक्केक्कियाओ चरिमपदं ।

पावति तेण उ णियमा, पच्छित्तधरा अतिपसंगो ॥५१३५॥

अहवा - आणाणवत्थमिच्छित्तविराहणाणं चउण्हं पयाणं विराहणापदं चरिमं, सा विराहणा दुविहा - आय-सज्जमेसु । तत्थं एक्केक्कातो त चरिमपदं निष्फज्जइ ।

कह ? उच्यते - तस्सामिणा दिट्ठे पताविए आयाए परितावणादि चरिम पावति, सज्जमे भग्गे पुण सठवणे - छक्कायं चउसु गाहा । एव चरिम पावति । जम्हा पसंगओ बहुविहं भवति तम्हा पसंगरहितं ज चेव आसेवितं त चेव दायव्वं । ठायमाणस्स ठाणपच्छित्तं चेव, पडिसेवमाणस्स पडिमेवणापच्छित्तं - न पसंगमित्यर्थं । ॥५१३५॥

णत्थि खलु अपच्छित्ती, एव ण य दाणि कोइ मुंचेज्जा ।

कारि-अकारी समता, एवं मति राग-दोसा य ॥५१३६॥

एव नास्ति कश्चिदप्रायश्चित्ती, न वा कश्चिदसेवमानोऽपि कमन्धान्मुच्यते, जो वि पडिसेवति तस्स वि त, जो वि ण पडिसेवति तस्स वि त । एव कारि अकारिममभावता भवति । एव प्रायश्चित्तसभवे मति राग दोससम्भवो य भवति ॥५१३६॥

“त पि य आणादिणफण्ण” पुनरप्यस्यैव पदस्य व्याख्या -

मुरियादी आणाए, अणवत्थ परपराए थिरकरण ।

मिच्छत्तं संकादी, पमज्जणा जाव चरिमपदं ॥५१३७॥

सर्वमेव पच्छित्त आणादिपदहि णिफज्जति, अवराहपदे पवत्ततो तित्थकराणाभग करेति तत्थ से चउगुरु, आणाभगे मुरियदिट्ठतो कज्जति ।

तम्मि चेव काले अणवत्थपदे वट्ठति तत्थ से ड्ढ । अणवत्थतो य परपरेण सजमवोच्छेदो भवति ।

तम्मि चेव काले देसेण मिच्छत्तमावेवति, परस्स वा मिच्छत्त जणेति, थिर वा करेति, तत्थ से ड्ढ ।

अवराहपदे पुण वट्ठ तो विराहणापद वट्ठति चेव तत्थ परस्स सक जणेति जहेय मास तहण्ण पि ।

अहव सकामोद्दगादी पसज्जणा चउलहुगादी जाव चरिम पद पावति ॥५१३७॥

एत्थ चोदक आह -

अवराहे लहुगतरो, किं णु हु आणाए गुस्तरो दंडो ।

आणाए च्चिय चरण, तव्वंगे किं न भग्गं तु ॥५१३८॥

चोदगो भणति - “अवराहपदे चउलहु पच्छित्त आणाभगे चउगुरु दिट्ठ । एव कह भवति, णु अवराहपदे गुस्तरेण भवियव्व” ?

आयरियो आह - “आणाए च्चिय” पच्छद । परमत्थओ आणाए च्चिय चरण ठिय, आणा दुवालसग गणिपिडग ति काउ, तव्वतिक्कमे तव्वंगे किं ण भग्गं भवति ? किं च लोडया वि आणाए भगे गुस्तरे डड करेति (पवत्तति) ।

एत्थ दिट्ठतो मुरियादि । मुरिय ति मोरपोमगवसो चउगुत्तो । आदिग्गहणानो अण्णे रायाणो । ते आणाभगे गुरुतर डड पवत्तेति । एव अम्ह वि आणा बलिया ॥५१३८॥

इम णिदरिसण -

भत्तमदानमडंते, आणट्ठवणं च्छेत्तु वसवती ।

गविसण पत्त दरिसिते, पुरिसवति सवालडहणं च ॥५१३९॥

चउगुत्तो मोरपोसगो ति जे अभिजाणति खत्तिया ते तस्म आण परिभवति ।

चाणक्कस्स चित्ता-आणाहीणो केरिसो राया ? कह आणातिक्को होज्ज ? ति । तस्स य चाणक्कस्स कप्पडियत्ते अडतस्स एगम्मि गामे भत्त न लद्ध । तत्थ य गामे बहू अवा वसा य । तस्स य गामस्स पडिणिविट्ठेण आणट्ठवणमित्त लिहिय पेसिय इमेरिस “आआन् छित्वा वशाना

वृत्ति शीघ्र कार्ये” ति । तेहि य गामेयगेहि दुल्लिहिय ति काउ वसे छेत्तु अबाण वती कता । गवेसाविया चाणक्केण - “कि कत ?” ति । आगतो, उवालद्धा, एते वसा रोधगादिमु उवउज्जति, कीस भे छिण्णा ?, दसिय लेहचीरिय - “अण्ण सदिट्ठ अण्ण चेव करेहि” ति डडपत्ता । ततो तस्स गामस्स सबालवुद्धेहि पुरिसेहि अधोसिरेहि वनि काउ सो गामो सब्बो दड्ढो । अण्णे भणति - सबालवुद्धा परिमा तीए वतीए छोटु दड्ढा ॥५१३६॥

एगमरणं तु लोए, आणति वा उत्तरे अणंताड ।

अवराहरक्खण्डा, तेणाणा उत्तरे बलिया ॥५१४०॥

लोइयआणाइक्कमे (एगमरण) । लोयुत्तरे पुण आणाइक्कमे अणेगाति जम्ममरणाइ पावति । अण्ण च अतिचाररक्खण्डा चेव आणा बलिया, आणाअणतिकमे य अइयाराइक्कमो रक्खितो चेव भवति ॥५१४०॥

“अणवत्थ” ति अस्य व्याख्या -

अणवत्थाए पसंगो, मिच्छत्ते संकमादिया दोसा ।

दुविहा विराहणा पुण, तहिय पुण संजमे इणमो ॥५१४१॥ कठा

अणट्ठाडंडो विकहा, वक्खेव निसोत्तियाए सत्तिकरण ।

आलिंणणादिदोसा, असण्णिहिं ठायमाणस्स ॥५१४२॥

अकारणे डडो अणट्ठाडंडो, सो - दब्बे भवे य । दब्बे अकारणे अवरद्ध रायकुल डडेति । भावडडो णाणादीण हाणी ॥५१४२॥

“विकहाए” वक्खाण -

सुट्ठु कया अह पडिमा, विणासिया ण वि य जाणसि तुमं ति ।

इति विकहादधिकरणं, आलिंणणे भंग भदितरा ॥५१४३॥ कठा

अलिंणणे कज्जमाणे कयादि हत्थादियाण भंगो हवेज्जा, तत्थ सपरिगहे भदपताइ दोसा हवेज्जा, वक्खेवो त पेक्खनस्स, उल्लाव च करेतस्स सुनत्थपनिवथो ।

विमोनिया दब्बे भवे य । दब्बे सारणिपाणीय वहत तृणमादिणा रुद्ध, अण्णतो कासारादिमु गच्छति, ततो सस्सहाणी भवति । भावे णाणादीण, आगमस्स विसोत्तियाए चरित्तस्स विणासो भवति ।

सत्तिकरणं ति भुत्तभोगीण, अशुत्तभोगीण कोउअ ।

अथ कोइ मोहादएण आलिगेज्ज, आलिगता भज्जेज्जा, अण्णिहिं सपरिगहे भदपतादोसा, उच्छाक्कम्मदोसा य, पतो तत्थ गेहणादी करेज्ज । एते असण्णिहिते ठायमाणस्स दोसा ॥५१४३॥

इमे य मण्णिहिं -

वीममा पडिणीयट्ठया व भोगत्थिणी व सन्निहिया ।

काणच्छी उक्कपण, आलाव णिमंतण पलोमे ॥५१४४॥

स ण्हिया तिहिं कारणेहि साधु पलोहज्जा - वीमसट्ठया पडिणीयट्ठयाए भोगत्थिणी वा ।

तत्थ वीमसाए—“किं एस सक्केति खोभेउ ण व” त्ति पडिमाए अणुपविसित्ता काणञ्छी करेज्ज, थणक्कप (उक्कपण) वा करेज्ज, आलाव वा करेज्ज—हे अमुग णाम ! कुसल ते, निमनण वा करेज्ज—मए सम सामि ! भोगा भुजसु एवमादिएहि पलोभेजा । अहवा - पलोभेति थणक्कखोरुअट्ठप्प-दसिएहि, कडक्कखिच्चिकारणिरिक्खितेहि ॥५१४४॥

काणच्छिमाइएहिं, खोभियद्धाति तम्मि भदा तु ।

णासति इतरो मोहं, सुवण्णकारेण दिट्ठतो ॥५१४५॥

जाहे काणच्छिमादिएहिं आगारेहिं खोभितो ताहे गिण्हामि त्ति उद्धातितो, ताहे सा देवता भदा णासेति, इतरो णाम सो खोभियसाधु तीए अहसण गताए सम्मोह गतो पडितो त दट्ठुमिच्छति । कत्तो गयासि ?, विलवति, पणविज्जतो वि पणवण ण गेण्हति । जहा अणगसेणसुवण्णगारो ॥५१४५॥ एसा भद्विमसा ।

इदाणि “पडिणीयट्ठताए” त्ति —

वीमंसा पडिणीता, विहरिसणञ्खित्तमाइणो दोसा ।

असंपत्ती संपत्ती, लग्गस्स य कड्डणादीणि ॥५१४६॥

पडिणीया वि काणच्छिमातिएहिं वीमसेउ, एत्थ वीमसा णाम केवला, जाहे खुभिमो घातितो गिण्हामि त्ति ताहे सा पडिणीया “असपत्ति” त्ति जाव ण चेव गेण्हति हत्थादिणा ताव विहरिसण विक्कतरूप दशयति ।

अहवा—विहरिसण अलगमेव लोगो लग्ग पासति, खित्तमादि वा करेज्ज, मारेज्ज वा ।

अघवा—सा पडिणीया पडिभोगसपत्ति काउ तत्थेव लाएज्ज स्वानादिवत्, पडिणीयदेवतापद्मोगसो चेव लेप्पगसामिणा अण्णेण वा दिट्ठे गेण्हणकड्डणादिया दोसा करेज्ज ॥५१४६॥

पंता उ असंपत्ती, तहेव मारेज्ज खित्तमादी वा ।

संपत्तीइ वि लाएतु, कड्डणमादीणि कारेज्ज ॥५१४७॥ गताथा

इदाणि भोगत्थिणी —

भोगत्थिणी विगते, कोउयम्मि खित्तादि दित्तचित्तं वा ।

दट्ठूण व सेवतं, देउलसामी करेज्ज इमं ॥५१४८॥

भोगत्थिणी देवता काणच्छिमादिएहिं उवलोभेता खुभिएण सह भोगे भुजित्ता विगयभोगकोतुका मा अण्णाए सह भोगे भुजउ त्ति खित्तादिचित्त करेज्जा । अहवा—तीए सह सेवण करेत्त दट्ठूण देउलसामी अहाभावेण इम करेज्ज ॥५१४८॥

तं चेव गिट्ठवेत्ती, बंधण णिच्छुभण कडगमदो य ।

आयरिए गच्छंमि य, कुल गण संघे य पत्थारो ॥५१४९॥

त सेवत दट्ठु कुद्धो गिट्ठिवेत्ति त्ति — मारेज्जा, पभू वा सय बधिज्जा, अप्पभू वि पभुणा बधाविज्जा । अघवा — वसधी गाम नगर देस रज्जाओ वा णिच्छुभेज्जा । ‘कडगो’ त्ति खघावारो । जहा सो

परविसयमोद्गणो एगस्स रण्णो अभिणिवेसेण अकारिणो वि गामणगरादि सव्वे विणासेइ, एव एगेण कयमकज्ज सव्वो बालवुड्ढादी जो जत्थ दीसइ सो तत्थ मारिज्जति । एस कडगमद्दो !

अथवा - इमो कडगमद्दो, सह तेण कारिणा, मोत्तु वा त कारि (ण), जो आयरिओ गच्छो वा कुल गणो वा त वावादेति, तत्थ वा ठाणे जो सघो त वावादेति ॥५१४६॥

अथवा इम कुज्जा -

गेण्हणे गुरुगा छम्मास कडुणे छेदो होति ववहारे ।

पच्छाकडम्मि मूलं, उड्डहण-विरुगणे णवमं ॥५१५०॥

पडिसेवते गहिते ङ्कु । हत्थे वत्थे वा घेत्तु कड्डिते णीते रायकुल फू । तेण परिकड्डिते फ्रा । ववहारे छेदो । पच्छाकडो ति-जितो मूल । उड्डाहे कते विरु गिते वा अणवट्टो भवति ॥५१५०॥

उद्दवण णिव्विसए, एगमणे पदोस पारंची ।

अणवट्टप्पो दोसु य, दोसु य पारंचिओ होति ॥५१५१॥

उद्दविते णिव्विसए वा कते एगमणेगेसु वा पदोसे कते सो पडिसेवगो पारचिय पावति । उड्डहण विरु गण एतेसु दोसु अणवट्टो भवति, णिव्विसतोद्दवणेसु दोसु पदेसु पारचिय ॥५१५१॥

अथवा - पदुट्टो इम कुज्जा -

एयस्स णत्थि दोसो, अपरिक्खितदिक्खगस्स अह दोमो ।

इति पंतो णिव्विसए, उद्दवण विरुगणं व करे ॥५१५२॥

एयस्स ति पडिमेवगस्स ण दोसो, जो अपरिक्खित दिक्खेति तस्स एस दोसो, इति एव चित्तेउ पतो आयरिय णिव्विसय करेज्जा, उद्दवेज्ज वा, कण्ण णास-णयणुग्घायण वा करेज्ज, एय विरुक्कण विरुक्कण ॥५१५२॥

अथवा सण्णिहिते इमे दोसा -

तत्थेव य पडिबंधो, अदिट्ठ गमणादि वा अणेंतीए ।

एते अण्णे य तहिं, दोमाओ होंति सण्णिहए ॥५१५३॥

तत्थेव पडिमाए पडिबन्ध करेज्जा, अदिट्ठे ति - लेप्पगसामिणा अदिट्ठे वि इमे दोसा भवति ।

अथवा - सा वाणमन्तरी विगयकोउगा णागच्छति, तीए अणेंतीए सो पडिगमणादी करेज्ज ॥५१५३॥

ताओ पुण सण्णिहियपडिमाओ इमम्मि होज्जा -

कट्ठे पोत्ते चित्ते, दंतकम्मे य सेलकम्मे य ।

दिट्ठिप्पत्ते रूवे, खित्तचिच्चस्स भंसणया ॥५१५४॥

पुव्वद्ध कठ । दिट्ठिणा पत्त रूव दृष्टमित्यथ । तेण रूवेण खित्त चित्त जस्स सो खित्तचित्तो, तस्स खित्तचित्तस्स पमत्तत्तणओ चारित्ताओ जीवियाओ वा अ सो भवति ॥५१५४॥

तासि पुण सण्णिहियाण देवयाण विण्णवण पडुच्च इमो पगारो भावो होज्जा -

सुहविण्णप्पा सुहमोइया य सुहविण्णप्पा य होति दुहमोया ।

दुहविण्णप्पा य सुहा, दुहविण्णप्पा य दुहमोया ॥५१५५॥

एतीए गाहाए चउभगो गाहतो ॥५१५५॥

तत्थ पढमभगे इम उदाहरण -

सोपारयम्मि णयरे, रण्णा किर मग्गिओ य णिगमकरो ।

अकरो त्ति मरणधम्मो, बालतवे धुत्तसंजोगो ॥५१५६॥

सोपारयम्मि णगरे णेगमो त्ति वाणियजणे वसति । ताण य पच कुडु बियसयाणि वसति ।

तत्थ य राया मनिणा बुग्गाहितो - 'एने रूवगरर मग्गिज्जति ।'

रण्णा मग्गिता । ते य 'अकरो' त्ति पुत्ताणुपुत्तिओ करो भविस्सई, ण देमो ।

रण्णा भणिया - 'जति ण देह, तो इमम्मि गिहे अग्गिपवेस करेह' । ततो तेहि मरण-धम्मो ववमितो । 'ण य णाम करपवत्ति करेमो', सव्वे अग्गि पविट्ठा । ॥५१५६॥

पंचमयभोगि अगणी, अपरिग्गह सालभंजि मिंदूरे ।

तुह मज्झ धुत्तपुत्ताड अवण्णे विज्जखीलणता ॥५१५७॥

तेसि पच महिलसताइ, ताणि वि अग्गि पविट्ठाणि । ताओ य बालनवेण पच वि सयाइ अपरिग्गहिया जाता । तेहि य णिगमेहि तम्मि चेव णगरे मिंदूर सभावर कारिय । तत्थ पच सालभजिता सता । ते तेहि देवतेहि य परिग्गहिता ।

ताओ य देवताओ ण कोइ देवो इच्छइ, ताहे धुत्तेहि सह सपलगाओ । ते धुत्ता तस्सववे भडण काउमाडत्ता, एमा ण तुह मज्झ, इतरो वि भणाति - मज्झ ण तुह । जा य जेण धुत्तेण सह अच्छइ सा तस्स सव्व पुव्वभव साहति ।

ततो ते भणति - हरे । अमुगणामधेया एम तुज्झ माता भणिणि वा इदाणि अमुगेण सह सपलगा, ता य एगम्मि पीनि ण वधति जो जो पडिहानि तेण सह अच्छति । त च मोउ अयसो त्ति काउ विज्जावानिएण खीलावियानो ॥५१५७॥ गतो पढम भगो ।

इदाणि तिण्णि वि भगा एगगाहाए वक्खाणेति -

बितियम्मि रयणदेवय, तइए भंगम्मि सुइयविज्जातो ।

'गोरी-गंधारीया, दुहविण्णप्पा य दुहमोया ॥५१५८॥

बितियभगे रयणदेवता उदाहरण । अप्पड्डियत्तणतो कामाउरत्तणओ य सा सुहविण्णवणा, सव्वसुहसपायत्तणओ य सा दुहमोया ।

तनियभगे सुइयविज्जाओ भवति - ताओ य णिच्च सुइसमायारत्तणओ सव्वसुइदव्वपडि-
सेवणतो महिद्धियत्तणओ य दुहविण्णप्पाओ, तेसि उग्गत्तणतो णिच्च दुग्गणुवत्तणओ य छेहे य
सावायत्तणओ सुहमोया ।

चउत्थभगे गोरि-गधारीओ मातगविज्जाओ साहणकाले लोगगरहियत्तणतो दुहविण्ण-
वणाओ, जहिट्टकामसपायत्तणओ य दुहमोया ॥५१५८॥ एव चउत्थभगो वक्खाओ ।

इदाणि तिविधपरिग्गहे गुरु लाघव भण्णति -

तिण्ह वि कतरो गुरुओ, पागतिय कुडुंवि डडिए चेव ।

माहम अममिक्ख भए, इतरे पडिपक्ख पशुराया ॥५१५९॥

सीसो पुच्छति - “पायावच्च कुडुबिय डडियपरिग्गहाण कथं गुरुतरो दोसो, कथं वा
अपत्तरो ?” एत्थं य भयणा भण्णति - पागतिय गुरुतर, कोडुबिय-डडिय लहुतर ।

कह ? उच्यते - सो मुखत्तणेण साहसकारी अममिक्खियकारी य, अणीसरत्तणओ य भय ण
भवति । एव सो पागतिओ मारण पि ववसेज्जा ।

“इयरे” ति कोडुबिय डडिया, ते पागतितस्स पडिपक्खभूतो ।

कह ? उच्यते - ते साहसकारी ण भवति, असमिक्खियकारी य ण भवति, पन्ना भवति, भयं च
तस्मिं भवति । ५१५९॥

इम -

ईसरियत्ता रज्जा, व भंमए मंतुपहरणा रिसओ ।

तेण समिक्खियकारी, अण्णा वि य सिं बहू अत्थि ॥५१६०॥

मन्तु कोवो । एते रिसओ कोवपहरणा भवति, रुट्ठा य मा म रज्जाओ ईसरत्तणओ य भसेहिति,
अतो ते समिक्खियकारी भवति । अण्णं च तेसि अण्णाओ वि बहू पडिमाओ अत्थि, अतो तेसु अणादरा ॥५१६०॥
(अत्रोच्यते) -

अह्वा - “पत्थरो” ति अस्य व्याख्या -

पत्थारदोमरारी, णिवावराओ य बहुजणे फुमड ।

पागतिओ पुणं तम्म व निवस्स व भया ण पडिक्कुज्जा ॥५१६१॥

डडियकोडुबिओ गुरुतरो, पागतितो लहुतरो । राया पहू, सो एगस्स अत्थस्स रुट्ठो सधे पत्थार
करज्जा, रायावकारो य बहुजणे फुमति, तेण सो गुरुतरो । पागतियावराहो पुणं बहुजणे ण फुमड, अण्णं च -
पागतिता “तस्स” ति माहुस्स “भया” णिवस्स भया पच्चवकार ण कुरेति, एतेण कारणेण संगतितो
लहुतरो ॥५१६१॥

किं च -

अवि य हु कम्मदण्णा, ण य गुत्ती तेसि णेव दारिड्ढा ।

तेण कयं पि ण णज्जति, इतरत्थं धुवो भवे दोसो ॥५१६२॥

ते पागतिता खेते खलादिषु कम्मक्खणिया पडिमाण उदत ण बहुति, तेण तत्थ कतो वि अवराहो ण णज्जति, ण य तेसि सतिवासु देवद्रोणोसु रक्खवालो भवति, ण वा दाग्पालो भवति । इतरत्थ ति राय-कुडुबिएसु ध्वो दोसो भवइ ॥५१६२॥

तुल्ले मेहुणभावे, णाणत्ताऽऽरोवणा य एमेव ।

जेण णिवे पत्थारो, रागो वि य वत्थुमासज्ज ॥५१६३॥

पागतिय-कुडुबिय डडिएसु तुल्ले मेहुणभावे अवराहणाणत्तणओ चेव पायच्छित्ते णाणत्त । पायावच्च-परिग्गहातो काडुबियपरिग्गहे कालगुरुणा, डडियपरिग्गहे तवगुरुणा भणित्ता । अण्ण च कोडुबिय डडिएसु पत्थारदोसतो अधिकतर पच्छित्त ।

अह्वा — वत्थुविसेसओ रागविसेसो, रागविसेसओ पच्छित्तविसेसो भवइ ॥५१६३॥

जतो भणगति —

जतिभागगया मत्ता, रागादीणं तहा चयो कम्मे ।

रागादिविधुरता वि हु, पायं वत्थूण विहुरत्ता ॥५१६४॥

जारिसी रागभागमात्रा मदा मध्या तीव्रा वा तारिसी मात्रा कमबन्धो भवति ।

अह्वा — जावतिया रागविसेसा तावतिग्ग कम्मानुभागविसेसा भवति — तुल्या इत्यय ।

तेण भण्णति — जतिय भाग गता रागमात्रा । मात्राशब्द परिमाणवाचक । तन्मात्र कमबन्धो भवतीत्यय । ' रागाइ विहुरया वि हु' — रागादिविधुरता नाम त्रिषमत्व । हु शब्दो यस्मादर्थे । यत्समुत्थो राग प्रतिमादिके तस्य यस्मात् प्रतिमादिवस्तुविधुरता तस्माद्रागादिविधुरत्व भवति ॥५१६४॥

अयमन्यप्रकार विधुरत्वप्रदर्शने —

रण्णो य इत्थिया खलु, संपत्तीकारणम्मि पारंची ।

अमच्छी अणवट्ठप्पो, मूलं पुण पागयजणम्मि ॥५१६५॥

रण्णो जा इत्थी तीए सह मेहुणसपत्ती, एतेण मेहुणसपत्तिकारणेण पारचिय पायच्छित्त । अमच्छिए अणवट्ठो । पागतिए मूल । एय पच्छिने णाणत्त वत्थुणाणत्ताओ चेव भणिय ॥५१६५॥ दिठ्ठ गय ।

इदाणि माणुस्स भण्णइ —

माणुस्सगं पि तिविहं, जहण्णयं मज्झिमं च उक्कोसं ।

पायावच्च कुडुबिय, दंडिगपारिग्गहं चेव ॥५१६६॥

जहणादिग तिविध पुणो एक्केक्क पायावच्चातिपरिग्गहे भाणियव्व ।

उक्कोस माउ-भज्जा, मज्झं पुण भइणि-धूयमादीओ ।

खरियादी य जहण्णा, पगयं सचि (जि) तेतरे देहे ॥५१६७॥

माता अप्पणो अगम्मा, अणस्स य त ण देति, अतो तीए सह ज मेहुणे तिव्वरागज्झवसाण उप्पज्जति त उक्कोस ।

भज्ज अणस्स ण देति अतो तम्मि मुच्छित्तो उक्कोस ।

मिहुणकाने भगिणी गम्मा । सेसकाले भगिणी, धूया य सव्वकाल अण्णो अगम्मा, अण्णस्स तातो देति ति अतो ताहिं सह ज मेहुण त मज्झिम ।

खरिगादिसु मव्वजणसामण्णासु ण तिव्वाभिणिबेसो, अतो त जहण्ण । इह माणुस्सदेहजुएण अधिकारो, ण पडिमासु । त देह दुविष - सचैयणमचेयण वा ॥५१६७॥

सामण्णतो देहजुए ठायतस्स इम -

पढमिल्लुगम्मि ठाणे, चउरो मासा हवंतऽणुग्घाता ।

छम्मामा उग्घाया, बितिए ततिए भवे छेदो ॥५१६८॥

पढमिल्लुग ति जहण्ण, पायावच्चपरिग्गहितो जहण्णे ठाति ङ्क ।

बितिए ति मज्झिमे पायावच्चपरिग्गहे ठाति फु ।

ततिय ति उक्कोस पायावच्चपरिग्गहे उक्कोसे ठाति छेदो ॥५१६८॥

ण भणिय कोविव छेदो, अनत्तज्ज्ञापनार्थमिदमुच्यते -

पढमस्स ततियठाणे, छम्मासुग्घाइओ भवे छेदो ।

चउमासो छम्मामो, बितिए ततिए अणुग्घातो ॥५१६९॥

एत्थ पढमट्ठाण पायावच्चपरिग्गहे, तस्स ततिय ठाण उक्कोसय, तत्थ जो सो छेदो सो छम्मामसितो उग्घानितो णायवो । ‘चउमासो’ पच्छद्द अनयोस्तृतीयस्थानानुवतनादिदमुच्यते ।

बितिए ति कोटुवे उक्कोसे कोटुवपरिग्गहे चउगुरुओ छेदो ।

ततिए ति डडियपरिग्गहे गुरुओ छम्मामिओ छेदो । अर्थादापन्न कोटुवे जहण्णए मज्झिमए य ज चेव पायावच्चे, एव चेव डडिए वि जहण्णमज्झिमे ॥५१६९॥

पढमिल्लुगम्मि तवारिह, दोहि वि लहु होति एए पच्छित्ता ।

वितियम्मि य कालगुरु, तवगुरुगा होंति ततियम्मि ॥५१७०॥

पढमिल्लुग गाम पायावच्चपरिग्गहे दोणि आदिल्ला तवारिहा, ते दो वि लहुया ।

वितिए ति कोडुविए जे तवारिहा दोणि आइल्ला ते कालगुरु तवलहु ।

ततिए ति डडियपरिग्गहिए जे आदिल्ला दोणि तवारिहा ते काललहु तवगुरु ॥५१७०॥

एय ठाणपच्छित्त । मणुएसु गत ।

इदार्णि पडिसेवणापच्छित्त -

चतुगुरुगा छगुरुगा, छेदो मूलं जहण्णए होति ।

छगुरुगा छेद मूल, अणवट्ठप्पो य मज्झिमए ॥५१७१॥

१ प्रथम नाम जवन्य मानुष्यरूप, तत्र प्राजापत्यपरिगृहीतादौ भेदत्रयेऽपि तिष्ठतश्चत्वारोऽनुद्धाता मासाः पुरव इत्यथ ।

द्वितीय - मध्यम, तत्रापि त्रिष्वपि भेदेषु षण्मासा अनुद्धाता ।

तृतीय - उत्कृष्ट, तत्र भेदत्रयेऽपि तिष्ठतश्छेदो भवेत्, बृहत्कल्पे गा० २५१८ । २ ऽणुग्घाया, इति बृहत्कल्पे गा० २५१८ ।

छेदो मूलं च तद्वा, अणवद्वृत्त्यो य होति पारंची ।
 एवं दिट्ठमदिट्ठे, सेवते पसज्जण मोत्तुं ॥५१७२॥

पायावच्चपरिग्गहे जहण्णे अदिट्ठे ० ० । दिट्ठे ० ० ० ।

कोटबिण परिग्गहे जहण्णे अदिट्ठे ० ० ० । दिट्ठे छेदो ।

डडियपरिग्गहे जहण्णे अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूल ।

पायावच्चपरिग्गहे मज्झिमे अदिट्ठे छग्गुरुगा । दिट्ठे छेदो ।

कोडुबियपरिग्गहे मज्झिमे अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूल ।

डडियपरिग्गहे मज्झिमे अदिट्ठे मूल । दिट्ठे अणवद्वृत्त्यो ।

पायावच्चपरिग्गहे उक्कोसए अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूल ।

कुडुबियपरिग्गहे उक्कोसए अदिट्ठे मूल । दिट्ठे अणवद्वृत्त्यो ।

डडियपरिग्गहे उक्कोसए अदिट्ठे अणवद्वृत्त्यो । दिट्ठे पारचिय ।

अह्वा - पायावच्चे जहण्णमज्झिमुक्कोसे अदिट्ठदिट्ठेसु चउगुरुगादि मूले ठायति ।

कोडुबिए जहण्णादिगे छग्गुरुगादि अणवद्वृत्त्यो ठायति ।

डडियपरिग्गहे जहण्णादिगे छेदादि पारचिए ठाति ॥५१७२॥

चोदगाह -

जम्हा पढमे मूलं, वित्तिए अणवद्वृत्त्यो ततिय पारंची ।

तम्हा ठायंतस्सा, मूलं अणवद्वृत्त्यो पारंची ॥५१७३॥ पूर्ववत्

आचार्य आह -

पडिसेवणाए एवं, पसज्जणा होति तत्थ एक्केक्के ।

चरिमपदे चरिमपदं, तं चिय आणादिणिप्फण्णं ॥५१७४॥ पूर्ववत्

ते चेव तत्थ दोसा, मोरियआणाए जे भणित पुच्चिं ।

आलिगणादि मोत्तुं, माणुस्से सेवमाणस्स ॥५१७५॥

ते चेव पुच्चभणिता अणवत्यादिगा दोसा भवति । “तत्थ” ति माणुस्से ।

चोदगेण चोदित - “कीस आणाए गुरुनरो डडो ?” आयरिएण मोरियआणाए दिट्ठत काउ तित्थकराणा गुरुतरी कता । एव जहा पुच्च भणिय तद्वा भाणियच्च ।

दिव्वे लेप्पगे आलिगणभगदोसा ते मोत्तु सेसा दोसा माणुस सेवमाणस्स सव्वे ते चेव भाणियच्चा

॥५१७५॥

इदमेव फुडतरमाह -

आलिगंते हत्थादिभंजणे जे तु पच्छक्कम्मादी ।

ते इह णत्थि इमे पुण, णक्खादिविच्छेयणे सूया ॥५१७६॥

लेप्पग मालिगतस्स जे हत्थादिभगे पच्छकम्मादिया दोसा भवति ते इह देहजुते ण भवति । इमे देहजुण दोसा भवति—इत्थी कामानुरत्तणओ णहेहि ता छिदेज्ज, दतेहि वा छिदेज्ज, तेहि सो सूइज्जत्ति सपक्षेण वा परपक्षेण वा जहा एस सेवगो त्ति ॥५१७६॥

माणसीसु वि इमे चउरो विकप्पा—

सुहविण्णप्पा सुहमोइया य सुहविण्णप्पा य होंति दुहमोया ।

दुहविण्णप्पा य सुहा, दुहविण्णप्पा य दुहमोया ॥५१७७॥

भगवउक्क कठ ।

चउसु वि भगेमु जहक्कम्म इमे उदाहरणा—

खरिया महिड्डिगणिया, अंतपुुरिया य रायमाया य ।

उभयं सुहविण्णवणे, सुमोय दोहि पि य दुहाओ ॥५१७८॥

खग्गिया मव्वजणमामण्ण ति सुहविण्णवणा, परिपेलवसुहलवासादत्तणतो सुहमोया पटमभगिन्ना ।

महिड्डिगणिया वि गणियत्तणतो चेव सुहविण्णप्पा जोव्वणरूवविबभमरूवादिभावजुत्तणतो य भाववक्खवक्कारिणि त्ति दुहमोया विनियमगिन्ली ।

नतियभगे अंतपुुरिया । नत्य दुप्पवेस भय च, अतो दुहविण्णवणा, अवायवहुलत्तणओ सुहमोया ।

चउत्थे भगे गणो माता । सा मुरक्खिया भय च सव्वस्स य गुरुठाणे पूयणिज्जति दुहविण्णवणा, मव्वसुहमपायकारिणी अवाए य रक्खति जम्हा तेण दुहमोया । पच्छद्वे ण एते चेव जहक्कम्म चउगे भगा गहिया ॥५१७९॥

चोदगो पुच्छइ—

तिण्ह वि कतरो गुरुओ, पागति य कुडुवि डंडिए चेव ।

साहस अममिक्खमए, इत् / पडिपक्ख पभु राया ॥५१८०॥

कठा पूववत् । गन माणुस्सग ।

इदाणि तेरिच्छ—

तेरिच्छ पि य तिविहं, जहण्णयं मज्झिमं च उक्कोस ।

पायावच्च कुडुविय, दंडियपारिग्गहं चेव ॥५१८०॥

जहण्णादिग तिविव, एककेक्क पायावच्चादितिपरिग्गहिय भागियव्व ।

अतिग अमिला जहण्णा, खरि महिसी मज्झिमा वल्लवमादी ।

गोणि कणेरुक्कोसं, पगतं सजितेतरे देहे ॥५१८१॥

इह दव्वावेक्खतो जहण्णमज्झिमुक्कोसगा ।

अथवा — अक्षयमिलासु गिरपायत्तणतो सुहपावणियामु ण तिव्वज्जन्तसाओ अतो जहण्ण ।
 खरि-महिसिमादियासु सावयामु जो परिभोगज्जन्तसाओ स तिव्वतरो अतो मज्झिम ।
 गोणि कणेरु, कणेरु त्ति हत्थिणी, लोगगरहियसावयामु जो अज्जन्तसाओ तिव्वतमो अतो उक्कोस ।
 फग्गिसओ वा विमेषो भाणियव्वो । तिरियाण वि पडिमासु णाधिकारो, देहेण अधिकारो । त
 देह दुविच — मचेयण अचेयण वा ॥५१८१॥

सामण्णतो देहजुए इम पच्छित्त ठायमाणस्स —

चत्तारि य उग्घाया, जहण्णिण मज्झिमे अणुग्घाया ।

छम्मामा उग्घाया, उक्कोसे ठायमाणस्स ॥५१८२॥

पायावच्चपरिग्गहे जहण्णए ठाति ० ० । मज्झिमए ० ० । उक्कोसए फु । एव चेन
 कोडुबिए डिए य ॥५१८२॥

इमो विसेमो —

पढमिल्लुगम्मि ठाणे, दोहि वि लहुगा तवेण कालेणं ।

वितियम्मि य कालगुरु, तवगुरुगा होति तइयम्मि ॥५१८३॥

पढमिल्लुग ठाण पागतित, वितिय ठाण कोडुबिय, ततिय डडिय, सेस कठ । ठाणपच्छित्त गत
 तिरिएसु ।

इदाणि तिरिएसु पडिमेवणापच्छित्त —

चउरो लहुगा गुरुगा, छेदो मूल जहण्णए होति ।

चउगुरुग छेद मूलं, अणवट्टप्पो य मज्झिमए ॥५१८४॥

छेदो मूलं च तहा, अणवट्टप्पो य होइ पारंची ।

एवं दिट्ठमदिट्ठे, मेवंते पसज्जणं मोत्तुं ॥५१८५॥

पायावच्चपरिग्गहे जहण्णए अदिट्ठे पडिसेवतस्स ड्ढ । दिट्ठे ड्ढा ।

कोडुबियपरिग्गहे जहण्णए पडिसेवतस्स अदिट्ठे चउगुरु । दिट्ठे सेवतस्स छेदो ।

डडिए जहण्णए अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूल ।

पायावच्चपरिग्गहे मज्झिमए अदिट्ठे ण्का । दिट्ठे छेदो ।

कोडुबिए मज्झिमए य अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूल ।

डडियपरिग्गहे मज्झिमपरिग्गहे अदिट्ठे मूल । दिट्ठे अणवट्टो ।

पायावच्चपरिग्गहे उक्कोसे अदिट्ठे छेदो । दिट्ठे मूल ।

कोडुबिए उक्कोसे अदिट्ठे मूल । दिट्ठे अणवट्टो ।

डडिए उक्कोसे अदिट्ठे अणवट्टो । दिट्ठे पारचिय । एय पच्छित्त पसगविरहिय भाणिय ॥५१८५॥

चोदगाह -

जम्हा पढमे मूलं, वितिए अणवट्ट तइय पारंची ।
तम्हा ठायतम्सा, मूलं अणवट्ट पारंची ॥५१८६॥ कठा

आचार्याह -

पडिमेवणाए एवं, पमज्जणा तत्थ होड एक्केक्के ।
चरिमपदे चरिमपदं, तं पि य आणादिणिप्फणं ॥५१८७॥ कठा
ते चेव तत्थ दोसा, मोरियआणाए जे भणित पुच्चिं ।
आलवणादी मोत्तुं, तेरिच्छे सेवमाणस्स ॥५१८८॥

पूर्ववत् पुर्ववत् कठ । म णुसित्थीसु जहा आलवणविम्भमा भवति तहा तिरिक्खीसु णत्थि । अतो ते
आलवणादि तिरिक्खीसु मात्तु, नेमा आयमजमविराहणादिदोसा सव्वे सभवति ॥५१८८॥

जह हाम-खेड्ड-आकार-विम्भमा होति मणुयइत्थीसु ।
आलावा य बहुविहा, ते णत्थि तिरिक्खइत्थीसु ॥५१८९॥ कठा

विणवण इमो चउभगो -

सुहविणप्पा सुहमोइया य, सुहविणप्पा य होति दुहमोया ।
दुहविणप्पा य सुहा, दुहविणप्पा य दुहमोया ॥५१९०॥

चउभगरयणा कठा कायव्वा ॥५१९०॥

चउभगे जहमख इमे उदाहरणा -

अमिलादी उभयसुहा, अरहण्णगमादिमक्कडि दुमोया ।
गोणादि ततियभंगे, उभयदुहा सीहि-वग्घीओ ॥५१९१॥

पढमभगे सुहगहणे निरपायत्वात् सुहविणवणा, लोगगरहिय अप्पत्वाच्च सुहमोया ।

वितियभगे वाणरिमादी रिउकाले कामातुरत्तणतो सुहविणप्पा, ताओ चेव जदा
अणुरत्ताओ तदा दुहमोया । एत्थ दिट्ठतो अरहण्णगो ।

तनियभगे गोणादियाओ सपक्खे वि दुक्ख समागम इच्छति, किमग पुण मणुए । अतो
दुहविणवणा, लोगगरहियत्तणतो सुहमोया ।

चरिमभगे सीहिमादियाओ जीवियतकरीओ तेण दुहविणप्पाओ, ताओ चेव जया अणुर-
त्ताओ अणुबध ण सुयति ति दुहमोया ॥५१९१॥

चोदगो पुच्छति - “को एरिसो अमुभो भावो हुज्जा, जो तिरिक्खजोणीओ लोगगरहियाओ
आमेवेज्जा” ?

आयरिओ आह -

जति ता मणप्फतीसु, मेहुणसन्नं तु पावती पुरिसो ।

जीवितदोच्चा जहिय, किं पुण सेमासु जातीसु ॥५१६२॥

सब्बे जे ण्हारा ते सणप्फया भण्णति इह सीही वेत्तव्वा । जइ ताव सीहीसु जीविततकरीसु पुग्गिमा मेहुण पावति किं पुण सेमासु अमिलादिजातिमु त्ति ।

पन्थ दिट्ठतो - एकहा सीही खुडुलिया चेव गहिता, सा ववणत्था चेव जोव्वण पत्ता । रिनुकाले मेहुणत्थी, मज्झिपुरिस अलभनी अहावत्तीतो एक्केण पुरिसेण सागारियठाणे छिक्का, मा य चाडु काउमाढत्ता, मा य तेण अप्पमागारिण पडिसेविता । तत्थ तेसि दोण्ह वि ममारानुभावतो अणुरागो जानो । तेण मा ववणा मुक्का । सा त पुरिस वेत्तु पलाना अडवि पविट्ठा । त पुग्गिम गुहाए छोटु आणेउ पोग्गले देति । सो वि त पडिमेवति ॥५१६२॥ एय पुरिसाण भणिय ।

इदाणि सजतीण भण्णड -

एमेव गमो णियमा, णिग्गंथीणं पि होति नायव्वो ।

पुरिमपडिमाओ तासि, साणम्मि य जं च अणुरागो ॥५१६३॥

सजतीण वि एमेव सब्ब दट्ठव्व, णवर - नेप्पगे दिव्वपुरिमपडिमाओ । माणुसे मणुयपुरिसा । तेरिच्छे तिरियपुरिसा य दट्ठव्वा ।

तेरिच्छे साणदिट्ठतो य कायव्वो -

एक्का अगारी अवाउडा काइय बोसिरन्ती विरहे साणेण दिट्ठा । सो य साणो पुच्छ 'लोलनो चाडु करेनो उच्चासणाए अत्तीणो । मा अगारी चित्तेइ - "पेच्छामि एस किं करेति" त्ति । सा तस्स पुरनो सागारिय अभिमुह काउ हत्थेहि जाणुएहि य अधोमुही ठिता । तेण सा पडिसेविता । तीए अगारोए तत्थेव साणे अणुरागो जानो । एव मिग्ग-छगल-वाणरादी वि अगारि अभिलसति । जम्हा एवमादि दोसा तम्हा सागारिण वसियव्व ॥५१६३॥

इम वितियपद -

अद्धानिग्गयादी, तिक्खुत्तो मग्गिउण असतीए ।

गीयत्था जयणाए, वसंति तो दव्वसागरिण ॥५१६४॥

अद्धानिग्गय त्ति अद्धानप्रतिपन्ना तिक्खुत्तो तन्नि वारा अण्ण सुद्ध वसंहि मग्गिय । "असति त्ति अलभता ताहे दव्वसागारियवसधीए जयणाए वसति ।

का य जयणा ?, गीयसद्दाइसु उच्चेण सद्देण सज्झाय करेति, भाणलद्धी वा भाण भायति ॥५१६४॥

इमो भावसागारियस्स अववातो -

अद्धानिग्गयादी, वासे सावयमए व तेणमए ।

आवरिया तिविहे वी, वमंति जतणाए गीयत्था ॥५१६५॥

अतो गामादीण सुद्ववसहिं अलभता बाहिं गामस्स निवसति । इमेहिं कारणेहिं — वास वासति, अह्वं — बाहिं सीहमादिवायवभय, सरीगेवहितेणगभय वा, ताहे अतो चेव भावसागारिए वसति । तत्थ निविधा वि पडिमाग्गा दिव्वा माण्सा तिरिया य वत्थमादिएहिं आवरेति, अतरे वा कडगचिलिमिलि दति । एव गीयत्था जयणाए वसता सुज्झति ॥५१६५॥

बहुधा दव्वभावसागारियसभवे इम भण्णति —

जहि अप्पतरा दोसा, आभरणादीण दूरतो य मिगा ।

चिलिमिणि णिमि जागरण, गीते सज्झाया-भ्राणादी ॥५१६६॥

अपपन्नदोमे गीयत्था ठयति, आभरणाउज्जभत्तादीण य अगीयत्था दूरतो ठविज्जति, त दिस अग्गा ठयति, अनरे वा कडगचिलिमिलि देति रातो य जागरण करति, गीयत्था इत्थिमादिगीतादिसद्दु य मज्झ य ऋति, भ्राण वा भ्रायति ॥५१६६॥

एमा खलु ओहेणं, वसही सागारिया समक्खाया ।

एत्तो उ विभागेणं, दोण्ह वि वग्गाण वोच्छामि ॥५१६७॥

ज पुरिमइत्थीण सामणतो अविभागेण अक्खाय एस ओहो भण्णइ । सेस कठ ।

इमो कप्पसुत्ते (प्रयमोद्देशके सूत्र २६, २७, २८, २९) विभागो भणितो —

णो कप्पइ णिग्गथाण इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए ।

कप्पइ णिग्गथाण पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए ।

णो कप्पति णिग्गथीण पुरिससागारिए उवस्सए वत्थए ।

कप्पइ णिग्गथीण इत्थिसागारिए उवस्सए वत्थए ॥५१६८॥

एसेव सुत्तक्कमो इमो भणितो —

समणाणं इत्थीसुं, ण कप्पति कप्पती य पुरिसेसुं ।

समणीणं पुरिमेसु, ण कप्पति कप्पती थीसुं ॥५१६९॥ कठा

इत्थीसागारिए उवस्सयम्मि सव्वेव इत्थिगा होती ।

देवी मणुय तिरिक्खी, सव्वेव पसज्जणा तत्थ ॥५१७०॥

जाए इत्थीए सागारिए उवस्सए ण कप्पइ वसिउ सा इत्थी भाणियव्वा, अतो भण्णति — सव्वेव इत्थिया हाइ जा हेट्ठा णतरसुत्ते भणित्ता, ता य देवी मणुस्सी तिरिच्छी । एतासु ठियस्स त चेव पच्छित्त, ते चेव आयसज्जमविराहुणादोसा, सव्वेव पसज्जणापसज्जणपच्छित्त, त चेव ज पुव्वसुत्ते भणिय ॥५१७१॥

चोदगाह—

जति सव्वेव य इत्थी, सोही य पसज्जणा य सव्वेव ।

सुत्त तु किमारद्धं, चोदग ! सुण कारणं एत्थं ॥५२००॥

जइ सव्व चेव त ज पुव्वसुत्ते भणिय, तो किमिह पुण इत्थसागारियसुत्तसमारभो ?

आचार्य आह - हे चोदग ! एत्थ कारण सुणसु -

पुव्वभणितं तु जं एत्थ, भण्णती तत्थ कारणं अत्थि ।

पडिमेहे अणुण्णा, कारणविमेमोदलंभो वा ॥५२०१॥

पुव्वद्ध कठ । जे पुव्व अणुजाणतेण अत्था भणिता ते चेवऽथे पडिमेवतो भणइ, ण दोसो ।

अहवा - जे पुव्व पडिसेवतो अत्था भणिता, ते चेव अणुण्ण करोतो दसेति, ण दोसो ।

अहवा - “कारण” ति हेउ दरिसतो भणाति, ण दोसो ।

अहवा - विसेमोवल्लभ वा दरिसता पुव्वभणिय भणाति, ण दोसो ॥५२०१॥

कि च -

ओहे मव्वणिसेहो, सरिसाणुण्णा विभागसुत्तेसु ।

जयणाहेतु भेदो, तह मज्झत्थादयो वा वि ॥५२०२॥

आहमुत्ते सामण्णतो सव्व चेव णिसिद्ध, विभागमुत्ते पुण सपव्वे अणुण्णा, जहा पूरिसाण पुसिसमागारिए कप्पनि इत्थीण इत्थीमु कप्पइ ।

अहवा - जयणा जहा पुरिमेसु इत्थीसु वा कता त दरिसतेण विभागसुत्ते भेदो कनो ।

अहवा - पुरिमेसु इत्थीसु य मज्झत्थादया विसेसा दसेहामि त्ति विभागसुत्तसमारभो ।

अधवा - अणतग्गुत्ते सागारिय अत्थमो भणिय । इह पुण त चेव सुत्तेण णियमेति, विमे - रावतमा वा इमा पुरिम नपुमग इत्थीसु ॥५२०२॥

तत्थ पुरिमेसु इम -

पुरिसमागारिए उवस्सयम्मि चउरो मामा हवंति उग्घाया ।

ते वि य पुरिसा दुविहा, सविकारा निव्विकारा य ॥५२०३॥

जह पुरिसमागारिए उवस्सए ठाति तो चउल्लङ्घअ । ते य पुरिसा दुविघा - सविकारा निव्विकारा य ॥५२०३॥

तत्थ सविकारा इमे -

रूवं आभरणविहिं, वत्था-ऽलंकार-भोयणे गधे ।

आओज्ज णट्टु णाडग, गीए य मणोरमे सुणिया ॥५२०४॥

तत्थ रूव उद्धतनस्मानजघास्वेदकरणहृदतवालसठावणादिय, आभरणवत्थाणि वा णाणादेसियाणि विविहाणि पट्टित्ति, आभरणमल्लादिणा वा अलकरणेण अलकरोति, भोयण वा विभवेण विसिट्ठ भुजति, मज्जादि वा पिवति, चदनकुकुमकोट्टुपुडादीहिं वा गर्वोह अप्पाण आलिपेति, वासेति वा, धूवेति वा, तयादि वा चउल्लङ्घमाउज्ज वादेति, णच्चति वा, णाडग णाडेति, मणोहारि वा मणोरम गेय करोति, रूवादि वा दट्ठु गधे य मणोहरे अग्घाएत्ता गीयादिए य सहे सुणित्ता जत्थ गधो तत्थ रसो वि । एवमादिएहिं इदियऽथहिं भुत्तभोगिणो सत्तिकरण, अभुत्तभोगिणो कोतुअ, पडिगमणादयो दोसा ॥५२०४॥

१ चउरो लहुगा य दोस आणादी, इति बुहत्कल्पे गा० २५५६ ।

एतेसु ठायमाणस्स इम पच्छित्त -

एक्केक्कम्मि य ठाणे, चउरो मासा हवन्ति उग्घाया ।

आणाइणो य दोसा, विराहणा संजमाऽऽताए ॥५२०५॥

एतेसु खवआभरणादिसु एक्केक्के ठायमाणस्स चउलहुया ॥५२०५॥

एव ता सविगारे, णिव्वीगारे इमे भवे दोसा ।

संसदे ण विवुद्धे, अहिगरणं सुत्तपरिहाणी ॥५२०६॥

पुव्वद्ध कठ । स'षूण सञ्ज यमहेण आवस्सियणिमीहियसद्ध ण रातो सुत्तादि बुज्जेज्जा ततो अधिकरण भवति । अ' अधिकरणभया सुत्तत्थपरिसीओ ण करेति तो सुत्तत्थपरिहाणी भवति ।

अह्वा - 'अधिकरणे' ति - स'षू काइयादि णिप्फिद्धता पविसता वा आवडेज्ज वा पवडेज्ज वा णिमीहियादिसद्धेण वा गिहत्था विवुद्धा रोस करेज्जा, ततो अधिकरण उत्तरत्तरतो भवेज्ज । अधिकरणेण वा पिट्ठापिट्ठि करेज्ज । ततो आयविराहणा सुत्तापरिहाणी य भवति ॥५२०६॥

अघवा - "अधिकरणे" ति पदस्य इमा व्याख्या -

आउज्जोवण वणिए, अगणि कुडुवि कुक्कम्म कुम्मरिए ।

तेणे मालागारे, उब्भामग पंथिए जंते ॥५२०७॥

जम्हा एने दोसा तम्हा एएसु पुरिसेसु वि ण ठायव्व ॥५२०७॥

चोदगो भणति -

एवं सुत्त अफलं सुत्तणिवातो उ असति वसहीए ।

गीयत्था जयणाए, वसन्ति तो पुरिससागरिए ॥५२०८॥

आयरिओ भणति - सुत्तणिवाओ विसुद्धवसहीए असइ पुरिसाण ज पुरिससागारिय त दव्वमागारिय, नत्थ गीयत्था जयणाए वसति ॥५२०८॥

ते वि य पुरिमा दुविहा, सन्नी य असन्निओ य बोधव्वा ।

मज्झत्थाऽऽभरणपिया, कंदप्पा काहिया चेव ॥५२०९॥

ते पुरिमा दुविहा - असण्णिओ सण्णिओ य । जे सण्णिओ ते चउव्विहा - मज्झत्था आभरणपिया कदप्पिया काहिया य । ॥५२०९॥

इमे आभरणपिया -

आभरणपिए जाणसु, अलंकरंते उ केसमादीणि ।

सइरहसिय-प्पललिया, सरीरकुइणो उ कंदप्पा ॥५२१०॥

पुव्वद्ध कठ । इमे कदप्पिया - "सइर" पच्छद्ध । सइर ति शुभिरनिवार्यमाणा स्वेच्छया हसति, अनेकक्रीडासु अदोलकादिदप्पललिया चेइणो इव अणेगसरीरकिरियाओ करंतो कदप्पा भवति ॥५२१०॥

इमे य काहिया -

अक्खातिगा उ अक्खाणगाणि गीयाणि छलियकव्वाणि ।

कहयंता उ कहाओ, तिमसुत्था काहिया होति ॥५२११॥

तरगवतीमादिअक्खातियाओ अक्खाणगा घुत्तक्खाणगा, पदाणि ध्रुवगादियाणि कहिति । जे तेमि वण्णा सेतुमादिया छलियकव्वा, वसुदेवचरियचेडगादिकहाओ, घम्मत्यकामेसु य अण्णाओ वि कहाओ कट्ठा काहिया भवति ॥५२११॥

एएमि तिहं पी, जे उ विगाराण बाहिरा पुरिसा ।

वेरग्गरुई णिहुया, णिसग्गाहिरिमं तु मज्झत्था ॥५२१२॥

वेरग्ग रुच्चति जेसि ते वेरु (२) गरुई, करचरणिदिएसु जे सत्था अच्छति ते णिहुया, निसग्गो नाम स्वभाव द्विरिम जे सलज्जा इत्यय । एवविहा मज्झत्था ॥५२१२॥

पुणो एतेसि इमो भेदो -

एक्केक्का ते तिविहा, थेरा तह मज्झिमा य तरुणा य ।

एवं सन्नी बारस, बारस अस्मण्णिणो होंति ॥५२१३॥

मज्झत्था तिविधा - थेरा मज्झिमा तरुणा । एव आभरणपिया वि कदपिया वि क हिया वि तिविधा । एव एते बारसविधा सण्णिणो । एव असण्णिो वि बारसविधा कायव्वा ॥५२१३॥

पुरिससागारियस्स अलभे, कदाति णपु सगसागारिओ उवस्सओ लभेज्जा, तत्थ वि इमो भेदो -

एमेव बारसविहो, पुरिस-णपुंमाण सण्णिणं भेदो ।

अस्सण्णीण वि एवं, पडिसेवग अपडिसेवीणं ॥५२१४॥

एमेवअवधारणे, जहा पुरिसाण भेदो बारसविहो तहा सण्णीण असण्णीण च णपुसमाण बारसभेदा कायव्वा ।

ते सव्वे वि समासतो दुविधा दटुव्वा - इत्थिणेवत्थिगा पुरिसणेवत्थिगा य ।

जे पुरिसणेवत्था ते दुविधा - पडिमेवी य अपडिसेवी य ।

जे इत्थिणेवत्थिया ते णियमा पडिमेवी ॥५२१४॥

एव विभागेसु विभत्तेसु इम पच्छिन्न भण्णति -

काहीया तरुणसुं, चउसु वि चउगुरुग ठायमाणानं ।

सेसेसु वि चउलहुगा, समणानं पुरिसवग्गम्मि ॥५२१५॥

सण्णीण एक्को काहियतरुणो असण्णीण वि एक्को, एते दोण्णि । जे पुरिसणपुसा पुरिसणेवत्थ अपडिसेवगा तेसु वि सण्णिभेदे एक्को काहियतरुणो तेसु चे । असण्णिभेदे वि एक्को, एते वि दो । एते दो दुआ चउरो । एतेसु चउसु काहियतरुणसु ठायमाणान पत्तेय चउगुरुगा, सेसेसु चीयालीसाए भेदेसु ठायमाणान पत्तेय चउलहुग । एय पच्छिन्न पुरिसवग्गे भणिय णिककारणओ ठायमाणान ।

कारणे पुण इयाए विधीए ठायमाणा सुज्झति - “असति वसहीए” त्ति ॥५११५॥

सण्णीसु पढमवग्गे, असति असण्णीसु पढमवग्गम्मि ।

तेण परं सण्णीसुं, कमेण अस्सन्निसुं चेव ॥५२१६॥

सण्णीण पढमवग्गे मज्झत्था ते तिविधा, तत्थ पढम थेरेसु ठाति, थेरासति मज्झिमेसु, तेससति तरुणेषु ठाइ ।

सण्णीण पढमवग्गासति ताहे असण्णीण पढमवग्गे थेर मज्झिम-तरुणेषु कमेण ठाति ।

तेसि असतीए सण्णीण बितियवग्गे थेर-मज्झिम-तरुणेषु ठायति । तेसि असइ सण्णीसु चेव तइयवग्गे थेर-मज्झिम-तरुणेषु ठायति ।

तेमि असइ सण्णीसु चेव काहिएसु थेर-मज्झिमेसु ठायति ।

ताहे असति सण्णीण असण्णीसु बितियवग्गाओ कमेण एव चेव जाव काहिय-मज्झिमाण असतीए ताहे सन्नीसु काहिय तरुणेषु ठायति, ते पण्णविज्जति जेण कहाओ ण कहेति ।

तेसि असति असण्णीसु वि काहिय-तरुणेषु ठायति, ते वि पण्णविज्जति ॥५२१६॥ पुरिसेसु एय पच्छित्त ठायव्व, जयणा य भणिया ।

इदाणि णपु सगेसु भण्णति-

जह चेव य पुरिसेसु, सोही तह चेव पुरिसवेसेसु ।

तेरासिएसु सुविहित, पडिसेवगअपडिसेवीसु ॥५२१७॥

जह चेव पुरिसेसु सोधी भणिता तह चेव णपुसेसु पुरिसवेमणेवत्थेसु अपडिसेवगेसु पडिसेवगेसु वा भाणियव्वा । ठायव्वे वि जयणाविधी तह चेव भाणियव्वा ॥५२१७॥

जह कारणम्मि पुरिसे, तह कारणे इत्थियासु वि वसंति ।

अद्दाण-वाम-सावय-तेणेसु वि कारणे वसंति ॥५२१८॥

जह पुरिससागारिगे कारणेण ठाइ तहेव कारण अवलबिऊग इत्थिसागारिए वि जयणाए ठायति वसतीत्यर्थ । अद्दाणादिणिग्गया सुद्धवसहि अप्पतरदोसवसहि वा तिव्वुत्ते मग्गिउ अवलभता इत्थिसागारिए वसति । इमेहि कारणेहि पडिबद्ध वास पडइ, बाहि वा सावयभय, उवविसरीरतेणभय वा । इत्थिसागारिए वि बारस भेदा जहा पुरिसेसु । असण्णित्थीसु वि बारस, इत्थिवेसणप्सेसु सण्णीसु वि बारस, तेसु चेव असण्णीसु वि बारस ॥५२१८॥

इम पच्छित्त -

काहीता तरुणीसुं, चउसु वि मूलं ठायमाणं ।

सेसासु वि चउगुरुगा, समणाणं इत्थिवग्गम्मि ॥५२१९॥

सण्णिकाहिकतरुणी, असण्णिकाहिकतरुणी, इत्थिवेसणपमसण्णिकाधिकतरुणी, सा चेव असण्णिका-हिकतरुणी, एयासु चउसु वि जइ ठायति तो मूल । सेसासु सण्णि-असण्णिसु वा बीसाए इत्थीसु चउगुरुगा । एय समणाण इत्थिवग्गे ठायताण पच्छित्त ॥५२१९॥

जह चेव य इत्थीसु, सोही तह चेव इत्थिवेसेसु ।

तेरासिएसु सुविहिय, ते पुण णियमा उ पडिमेवी ॥५२२०॥

जहा समणाण इत्थीसु ठायमाणान साधी भणिया तह चेव इत्थिवेसेसु णप्सगेषु ठायमाण सोही भाणियन्वा, जेण ते णियमा पडिमेवी । ५२२०॥

इमा नामु ठायवे जयणाविधी -

एमेव होड इत्थी, वारम सण्णी तहेव अस्सण्णी ।

मण्णीसु पढमवग्गे, अमति अमण्णीसु पढममि ॥५२२१॥

जहा पुरिसेसु भेदा एव इत्थीसु वि सण्णीसु वारम भेदा, असण्णीसु वि वारम । एयासु ठायवे जयणा "मण्णीसु पढमवग्गे" ति, मज्झिमेसु धेरमज्झिमनरुणीसु, अमति तेमि अमण्णीसु । पढमवग्गे अमति तेमि मण्णीसु नितियवग्गे । अमति तेमि अमण्णीसु नितियवग्गे ॥५२२१॥

एव एककेक्क तिग, वोच्चत्थगमेण होड विण्णेयं ।

मोत्तूण चरिम सण्णी, एमेन नपुंसएहिं पि ॥५२२२॥

आहरणप्पियाण असण्णीण अमति सण्णीसु कदप्पियासु ततियवग्गे ठाति ।

तेमि अमति असण्णीसु कदप्पियासु, तेमि असति सण्णीसु काहियासु धेरमज्झिमासु ।

तेमि असति असण्णीसु काहियासु धेरमज्झिमासु । ततो मण्णीसु तरुणीसु । ततो असण्णीसु तरुणीसु । एवमेव इत्थियपुत्तेसु वि ठायवे जयणा भाणियन्वा ॥५२२२॥ एस पुरिमाण पुरिसेसु इत्थीसु य सोही ठायवे जयणा भणित्ता ।

इदाणि इत्थीण पुरिसेसु य सोही ठायवे जयणा भणति -

एसेव गमो णियमा, णिग्गंथीणं पि होड णायव्वो ।

जइ तेसि इत्थियाओ, तह तासि पुमा मुणेयव्वा ॥५२२३॥

पुव्वद्ध कठ । जहा तेमि पुरिमाण इत्थीओ गुरुगाओ तहा तेमि इत्थियाण पुरिसा गुरुगा मुणेयव्वा ॥५२२३॥

इत्थियाण इम सपक्खे पच्छित्त -

काहीतातरुणीसु, चउसु वि चउगुरुग ठायमाणीण ।

सेसासु वि चउलहुगा, समणीण इत्थिवग्गम्मि ॥५२२४॥

पुव्वत्त कठ । णवर - इत्थियाओ भाणियन्वाओ ॥५२२४॥

इम पुरिसेसु ठायमाणीण पच्छित्त -

काहीगातरुणेसुं, चउसु वि मूलं तु ठायमाणीणं ।

सेसेसु वि चउगुरुगा, समणीणं पुरिसवग्गम्मि ॥५२२५॥

पुव्वत्त कठ । णवर - इत्थियाओ पुरिसेसु वत्तव्वा ॥५२२५॥

अथवा - इमो अण्णो पायच्छित्तादेमो, सण्णीसु बारससु असण्णीसु य बारससु -

थेरातितिविह अथवा पंचग पण्णरस मासलहुओ य ।

छेदो मज्झन्थादिसु, काधिगतरणेसु चउलहुगा ॥५२२६॥

मज्झन्थे थेरे पच्च राडदिया छेदो ।

मज्झन्थे मज्झिमे पण्णरस राडदिया छेदो ।

मज्झन्थे तण्णे मामलहु छेदो । एव आभरणकदप्पेसु वि, काहिएसु वि थेरमज्झिमेसु एव चेव,
णवर - काट्ठिगतरणेसु चउलहुछेदो । असण्णीण वि बारस विकप्पे एव चेव ॥५२२६॥

सण्णीसु असण्णीसु, पुरिस-णपुसेसु एव साहूणं ।

एयामुं चिय थीमु, गुरुगो समणीण विवरीओ ॥५२२७॥

सण्णिसमणीण विकप्पेसु चउवीसा पुरिसणपुसेसु, एव चेव इत्थीसु वि, एयामु चेव चउवीसभेदासु
इत्थिवेसवारीसु य णपुससु चउवीसविकप्पेसु एव चेव छेदो एव चेव दायव्वा, णवर - गुरुओ कायन्वो ।
“समणीण विवरीओ” ति समणीण समणीपक्खे जहा पुरिमाण पुरिसपक्खे, तासि पुरिसपक्खे जहा पुरिसाण
इत्थिपक्खे ॥५२२७॥

जे भिक्खू मउदगं सेज्ज उवागच्छइ, उवागच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

मह उदण सउदया, उपेत्य गच्छति उपागच्छति, साइज्जणा दुविहा - अणुमोयणा कारावणा य,
निसु वि ॥ ० ० ॥

अह सउदगा उ सेज्जा, जत्थ दगं जा य दगसमीवम्मि ।

एयामि पत्तेयं, दोणं पि परूवण वोच्छ । ॥५२२८॥

अथेत्यय निपात, सागारिय अणतरभेदप्रदर्शने वा निपतति । “जत्थ दग” ति पाणियवर
प्रपादि, जाए वा मेज्जाए उदग समीवे वपाति । जा उदगसमीवे सा चिट्ठउ ताव जत्थ उदग त ताव परूवेमि
॥५२२८॥

जत्थ णाणाविहा उदया अच्छति इमे -

मीतोदे उसिणोदे, फासुमफासुगे य चउभगो ।

ठायते लहु लहुगा, कोस अगीयत्थसुत्तं तु ॥५२२९॥

सीतोदग फासुय, सीतोदग अफासुय ।

उसिणोदग फासुय, उसिणोदग अफासुय ।

पढमभगे उसिणोदग सीतीभूत चाउलोदगादि वा, बितियभगे सच्चित्तोदग चेव ।

तलियभगे उसिणोदग उव्वत्तडड चउत्थभगे तावोदगादि ।

पढमतलियभगे ठायतरस मासलहु । बितियचउत्थेसु चउलहु ।

एय कम्म पच्छित्तं ?

आयरिओ भणइ - एय अगीयस्स पच्छित्त ॥५२२९॥

फासुगस्स इम वक्खाण -

सीतिनरफासु चउहा, दव्वे संसङ्गमीसगं खेचे ।

कालतो पोरिमि परतो, वण्णादी परिणतं भावे ॥५२३०॥

ज सीतोदग फासुय, “इयर” ति ज च उण्होदग फासुय, त चउव्विह - दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ य ।

दव्वओ ज गारमसमट्टे भायणे झूड, सीतोदग त नेण गोरसेण परिणामित दव्वतो फासुय ।

खेत्तओ ज कूवतलागाइसु ठिय मधुर लवणेण मीसिज्जति लवण वा मधुरेण ।

कालतो ज इध्मण झूडे पहरमेत्तेण फासुग भवति ।

ज वण्णगघरसफरिसविप्परिणय भावतो ज (त) फासुय वुत्त ॥५२३०॥

“जो ‘अगीयत्थो भिक्खू ठाति तस्स एय पच्छित्त’ ।

एत्थ चोदगो चोएति -

णत्थि अगीयत्थो वा, सुत्ते गीओ व कोइ णिदिट्ठो ।

जा पुण एगाणुणा, सा सेच्छा कारणं किं वा ॥५२३१॥

“गीतो अगीतो वा सुत्ते ण भणतो । ज पुण एगस्स गीयत्थपक्खस्स अणुणा करेह, अगीयपक्खस्स पडिसेह करेह, एस (एत्थ) तुज्झ चैव स्वेच्छा, ण तित्थगरभणिय ।

अघवा - किं वा कारण, ज गीयस्म अणुणा, अगीयस्स पडिसेहो ॥५२३१॥

आयरिओ भणति -

एतारिसम्मि वासो, ण कप्पती जति वि सुत्तणिदिट्ठो ।

अव्वोकडो उ भणितो, आयरिओ उवेहती अत्थं ॥५२३२॥

पुव्वद कठ । जम्हा य अगीतो कारण अकारण वा जयण अजयण वा ण याणति तेण अगीते पच्छित्त । अण्ण च सुत्ते अत्थो अव्वगडो भणिओ त्ति, अविमेषितो, त अविमिदु अत्थ आयरिओ “उवेहति” उत्प्रेक्षते विशेषयतीत्यर्थं । जहा एगातो पिडाओ कुलानो अणणे घडादिरूवे घडेति एव आयरिओ एगाओ सुत्ताओ अणणे अत्थविगप्पे दमेति ।

अघवा - जहा अघगारे अप्पगासिते सता वि घडादिया ण दिसति एव सुत्ते अत्थविसेसा, ते य आयरियपदीवेण जदि पगासिता भवति तदा उवलम्भति ॥५२३२॥

किं च -

जं जह सुत्ते भणियं, तहेव तं जति विचारणा णत्थि ।

किं कालियाणुओगो, दिट्ठो दिट्ठिप्पहाणेहिं ॥५२३३॥

जति सुत्ताभिहिते विचारणा ण कज्जति तो कालियसुत्तस्स अणुप्रोगपोरिणीकरण किं दिट्ठं दिट्ठिप्पहाणेहिं ? दिट्ठिप्पहाणा जिणा गणहरा वा । अतो अणुप्रोगकरणओ णज्जति - जहा सुत्ते बहू अत्थपदा, ते य आयरिएण निगदिता ति ॥५२३३॥

किं च -

उस्सग्गसुयं किंची, किंची अववाइयं मुणेयव्व ।

तदुभयसुत्तं किंची, सुत्तस्स गमा मुणेयव्वा ॥५२३४॥

किं चि उस्सग्गसुत्त । किं चि अववादसुत्त । किं चि तदुभयसुत्त । त दुविह, त जहा - उस्सग्गव-
वादिय, अववादुस्सग्गिय । एत सुत्तगमा - सूत्रप्रकारा इत्यथ ।

अथवा - सुत्तगमा द्विरभिहितो गम, त जहा - उस्सग्गुस्सग्गिय अववादाववादिय चेति ।

एते वि छ सुत्तप्पगारा आयरिएण बोधिता णज्जति ॥५२३४॥

इमो वा सुत्ते अत्थपडिबधो भवति -

‘णेगेसु एगगहणं, सलोम णिल्लोम अकसिणे अजिणे ।

विहिभिण्णस्स य गहणे, अववादुस्सग्गियं सुत्तं ॥५२३५॥

इमो अणानुपव्वीए एतेमि सुत्ताण अत्थो दसिज्जनि - “विधिभिण्णस्स य” पच्छद । “कप्पति
णिग्गथीण पक्के तालपलबे भिण्णे पडिग्गाहित्तए से वि य विधिभिण्णे, णो चेव ण अविधिभिण्णे,”
अववादेण गहणे पत्ते ज अविधिभिण्णस्स पडिसेह करेइ, एस अववादे उस्सग्गो ॥५२३५॥

अववादानुण्णाय कह पुणो पडिसिज्जति १,

अतो भण्णति -

उस्सग्गठिई सुद्धं, जम्हा दव्वं विवज्जयं लहइ ।

ण य तं होइ विरुद्धं, एमेव इमं पि पासामो ॥५२३६॥

ठाण ठिती, उस्सग्गस्स ठिई उस्सग्गठिई - उत्सगस्थानमित्यर्थ । उस्सग्गठाणेषु ज चेव दव्व
कप्पति त चेव दव्व असत्तरणे जम्हा विवज्जय लभति । “विवज्जतो” विवरीयता - असुद्धमित्यर्थ । त
अमुद्ध गुणकरेति धेप्पत ण विरुद्ध भवति । “एमेव इमं पि पासामो” त्ति अववातअणुण्णाए अविधिभिण्णे
दोसदमण जतो भवति, तेण पुणो पडिसेहो कज्जइ - ण दोष इत्यर्थ ॥५२३६॥

उस्सग्गे गोयस्मी, णिसिज्जकप्पाज्जवायओ तिण्हं ।

मंसं दल मा अट्ठिं, अववाउस्सग्गियं सुत्तं ॥५२३७॥

इम उस्सग्गसूत्र - “णो कप्पति णिग्गथाण वा णिग्गथीण वा अतरगिहसि आसइत्तए वा
जाव काउस्सग्ग वा ठाण ठातित्तए वा” ।

अह्वा - “गोयरग्गपविट्ठो उ, ण णिसीएज्ज कत्थति ।

कह च ण पवधिज्जा, चिट्ठित्ता ण व सजए” ।

इम अववादिक - “अथ पुण एव जाणेज्जा - जुण्णे वाहिण तवस्सि दुब्बले किलते
मुच्छेज्ज वा पवडेज्जवा एव ण्ह कप्पति अतरगिहसि आसइत्तए वा जाव उस्सग्गठाण ठातित्तए” ।

अहवा - 'निष्हमण्णतरागस्स, णिमेज्जा जस्स कप्पति ।

जराए अभिभूयस्स, वाहिगम्स तवस्सिणो ॥६०॥

इम अववादुस्सगिय - "बहुअट्टिय पोगल अगिमिस्स वा बहुकटय ।" एव अववादतो गिण्हतो भणानि - "मम दल मा अट्टिय" ति ॥५२३७॥

अथवा -

णो कप्पति वाऽभिण्णं, अववाएणं तु कप्पती भिण्णं ।

कप्पड पक्कं भिण्णं, विहीय अववायउस्सगं ॥५२३८॥

"णो कप्पति णिग्गयाण वा णिग्गथीण वा आमे तालपलबे अभिण्णे पडिग्गाहित्ते" (बृह० उ० १ सू० १) एव न्स्सगिय । "कप्पति णिग्गयाण वा णिग्गथीण वा आमे तालपलबे भिण्णे पडिग्गाहित्ते", (बृह० उ० १ सू० २) एव अववादिय । पच्छद्ध कठ ।

पूर्वोक्त इम उस्सगाववाइय - "णो कप्पति णिग्गयाण वा णिग्गथीण वा रातो वा विद्याले वा सेज्जासथाए पडिग्गाहित्ते, ॥ णण्णत्थेगेण पुव्वपडिलेहिण्ण सेज्जासथाएण" । (बृह० उ० ३ सू० ४२, ४३)

इम उस्सगुस्सगिय । "जे भिक्खू असण वा पाण वा, खाइम वा, साइम वा (ङ्क) पडमाए पोरिसाए पडिग्गाहेत्ता पच्छिदम पोरिसि उवानिणावेति उवानिणावेन वा सातिज्जति, से य आहच्च उवानिणाविने मिया जो त भुजति भुजत वा सातिज्जति ।" (बृह० उ० ४ सू० १६)

इम अववादाववादिय । जेसु अववादो सुत्तेसु निबद्धा तेसु चेव सुत्तेसु अत्यतो पुणा अणुणा पवत्तति, ते अववादाववादिय । मुत्ता, जतो सा विनियानुणा मुत्तयाणुगता इति ।

इदार्णि विनियमाहाए पुव्वद्धस्स इम वक्खाण -

अणगेसु मुत्तयेसु वेत्तवेसु एगस्स अत्थस्स गहण करेति, जहा जत्थ सुत्ते पाणातिवातविरतिग्गहण तत्थ सेसा महव्ववया अत्यतो दट्ठ्वा । एव कसायइदियआसवेसु वि भागियव्व ।

इमे पत्तेयसुत्ता -

णो कप्पति णिग्गयाण अलोमाइ चम्माइ धारित्ते वा परिहृत्ते वा । ()

कप्प णिग्गयाण सलोमाइ चम्माइ धारित्ते वा परिहृत्ते वा । (बृह० उ० ३ सू० ४)

णो कप्पति णिग्गथीण सलोमाइ चम्माइ धारित्ते वा परिहृत्ते वा । (बृह० उ० ३ सू० ३)

कप्पति णिग्गथीण अलोमाइ चम्माइ धारित्ते वा परिहृत्ते वा । ()

इम सामणसुत्ता ।

णो कप्पति णिग्गयाण वा णिग्गथीण वा कसिणाइ चम्माइ धारित्ते वा परिहृत्ते वा ।

कप्पति णिग्गयाण वा णिग्गथीण वा अकसिणाइ चम्माइ धारित्ते वा परिहृत्ते वा ।

(बृह० उ० ३ सू० ५-६) ॥५२३८॥

कि चान्यत् -

कत्थइ देसग्गहणं, कत्थइ भण्णंति निरवसेसाइं ।

उक्कम-कमजुत्ताइं, कारणवसतो निउत्ताइं ॥५२३९॥

अस्य व्याख्या -

देसग्गहणे बीएहि सइया मूलमाइणो होंति ।

कोहाति अणिग्गहिया, सिंचति भवं निरवसेसं ॥५२४०॥

क्वचित् सूत्रे देगग्रहणं करोति, जहा कप्पस्स पढमसुत्ते पलवग्गहणातो सेसवणस्सइमेदा मूलं कद खघ-तया साह-प्पसाह-पत्त पुप्फ-वीया य गहिया । बीयग्गहणातो वा सेसा दट्टुवा ।

इमं पिरवसेसग्गहणं -

“*कोहो य माणो य अणिग्गहिया, माया य लोभो य विवड्डुमाणा ।

चत्तारि एते कसिणा कसाया, सिंचति मूलाइ पुण्णवस्स ।” (दश० ८, ४०) ॥५२४०॥

क्वचित् सूत्राणि उत्क्रमेण कृतानि क्वचित् क्रमेण जहा -

मत्थपरिण्णा उक्कमो, गोयरपिडेसणा कमेणं तु ।

ज पि य उक्कमकरणं, त पऽहिणवधम्ममायट्ठा ॥५२४१॥

मत्थपरिण्णऽऽभ्युपगच्छति - तेजकायस्म उवरि वाउक्कायो भवति, सो य न तत्थ भणितो, नसाणुवरि भणितो, दुअट्ठेयत्वात् । ज त उक्कमकरणं न अहिणवस्स मेहम्म धम्मप्रतिपत्तिकारणा वाउकातिग-जीवन्वप्रतिपत्तिकारणा वा इत्यर्थः ।

“गोयरपिडेसणा कमेण” ति तत्थ गोयरातिमे अभिग्गहविसेसतो जाणियत्वा भवति, तजहा - पेला, अद्धपेला, गोमुत्तिया पयगवीहिया, अनोमवुक्का वट्ठा, बाहिं सवुक्का वट्ठा, गतुपच्चागया, उक्खित्तचरगा, उक्खित्तणिकित्तचरगा ।

इमाओ सत्त पिडेसणाओ - असमट्ठा, नसट्ठा, उद्धडा, अप्पलेवा, उवग्गहिया, पग्गहिया, उज्झियवम्मिया य ।

दायगो अससट्ठेहिं हत्थमत्तेहिं देति ति अससट्ठायगो ।

ससट्ठेहिं हत्थमत्तेहिं देति ति समट्ठा ।

जत्थ उवक्खडिय मायण तातो उद्धरिय अग्गदिमु, एस उद्धडा ।

जस्स दिज्जमाणस्स दव्वस्स णिप्फाव चणगादिगस्स लेवो ण भवति, सा अप्पलेवा ।

ज परिवेसणे परिवेसणाए परस्स कडुच्छुतादिणा उवग्गहिय - आणियति वुत्तं भवति, तेण ज त पडिसिद्धं त तहुक्खित्तं चैव साधुस्स देइ । एसा उवग्गहिया ।

ज असणादिण भोत्तुकामेण कसादिभायणे गहिय भुजामि ति अससट्ठित्ते चैव साधू आगतो त चैव देति, एस पग्गहिया ।

ज असणादिगं गिही उज्झिउकामो साहू य उवट्ठितो त तस्स देति, ण य त कोइ अण्णो दुपदावी अभिलसति, एसा उज्झियधम्मिया ॥५२४१॥

बीएहि कंदमादी, वि सइया तेहि सव्ववणकायो ।

भोमातिका वणेण तु, सभेदमारोवणा भणिता ॥५२४२॥

कस्मिन्वि सुने वीयग्गहणं कत्तं, तेण वीयग्गहणेण मूलकदादिया सूइता, तेहि सव्वो परित्तानो सभेदो वणस्सइकाओ मूत्तिता, तेण वणस्सतिगा भोमादिया पच्च काया मूत्तिता, एव सप्रसेदा आरोगणा केमुइ सुत्तेमु भाणियव्वा ॥५२४२॥

किं च -

जत्थ तु देमग्गहणं, तत्थ उ सेमाणि मूइयवसेण ।

मोत्तूण अहीमारं, अणुओगधरा पभासंति ॥५२४३॥

पुव्वद्ध गनार्थं । कस्मिन्वि सुने अणुओगधरा अधिगत अत्थ मोत्तूण मुत्ताणुपायिप्पसगागयसत्थ ताव भगति । एव विचिन्ता मुत्ता, विचिन्ता य सुत्तत्थो ण णजति जाव सूरिणा ण पागडिओ ॥५२४३॥

उम्मग्गेणं भणिताणि जाणि अदवायओ य जाणि भरे ।

कारणजाएण मुणी ! सव्वाणि वि जाणियव्वाणि ॥५२४४॥

उम्मग्गेण भणिताणि जाणि सुत्ताणि अववादेण य जाणि सुत्ताणि भणिताणि, “कारणजातेण मुणि” त्ति पडिसिद्धस्स आयरणहेऊ कारण, “जाय” ति उप्पण, “मुणि” त्ति आमनणे, सव्वाणि वि जाणियव्वाणीति ।

कह ? उच्यते - अववायसुत्तेसुस्सग्गे अत्थतो भणितो अववादकारणे सुत्तणिबधो, उस्सग्गसुत्तस्स उम्मग्गसुत्ते णिवधो, अत्थतो कारणजाते अणुण्णा अतो सव्वसुत्तेसु उस्सग्गे अववादो य दिट्ठो ।

अतो भणति - ‘कारणजातेण मुणी ! सव्वाणि वि जाणियव्वाणि “सूत्राणीत्यर्थः । ते य उम्मग्गज्ज-वादा गुरुणा बोधना णज्जति । ते य जाणिऊण अप्पण्णो ठाणे समायरति । अजाणिए पुण ते कह समायरति ?,’ ॥५२४४॥

अववादट्ठाणे पत्ते -

उम्मग्गेण णिसिद्धाणि जाणि दव्वाणि संथरे मुणिणो ।

कारणजाए जाते, सव्वाणि वि ताणि कप्पंति ॥५२४५॥

जाणि सत्थरमाणस्स उस्सग्गेण दव्वाणि णिसिद्धाणि ताणि चेव दव्वाणि अववायकारणजाते “जाय” सहो प्रकारवाची वित्तिओ ‘जाय’ सहो उप्पणवाची, अन्यतमे कारणप्रकारे उत्तन्ने इत्ययं । जाणि उस्सग्गे पडिसिद्धाणि उप्पण्णे कारणे सव्वाणि वि ताणि कप्पंति ण दोसो ॥५२४५॥

चोदगाह -

जं पुव्वं पडिसिद्धं, जति तं तस्सेव कप्पती भुज्जो ।

एवं होयणवत्था. ण य तित्थं णेव सच्चं तु ॥५२४६॥

सुत्तत्थस्स अणवत्था भवति, चरणकरणस्स वा अणवत्थओ य तित्थं ण भवति, पडिसिद्धमणुजाण-तस्स सव्व ण भवति ॥५२४६॥

उम्मत्तवायसरिसं, खु दंसणं न वि य कप्पकप्पं तु ।

अह ते एवं सिद्धी, न होज्ज सिद्धी उ कस्सेवं ॥५२४७॥

“पुष्पावरविरुद्धं तु न पावह उम्मतवचनवत्”, “इमं कप्प, इमं अकप्प” एयं अण्णहा पावति जतो अकप्प पि कप्प भवति । जड एव तुज्झ अभिप्पेयत्वसिद्धी भवति तो चरगादियाण वि अप्पणो अभिप्पेयत्वसिद्धी भवेज्ज ॥५२४७॥

आचार्य आह - सुणेहि एत्थ णिच्छियऽत्थ -

ण वि किं चि अणुण्णायं, पडिसिद्धं वा वि जिणवरिंदेहि ।

एसा तेमिं आणा, कज्जे सच्चेण होयव्वं ॥५२४८॥

णिककारणे अकप्पणिज्ज ण किं चि अणुण्णाय, अववायकारणे उप्पण्णे अकप्पणिज्ज ण किं चि पडिमिद्धं, णिच्छियववहारतो एस तित्थकराणा, ‘कज्जे सच्चेण भवियव्वं’ कज्ज ति अववादकारण, तेण जति अकप्प पडिसेवति तथावि सच्चो भवति, सच्चो नि सजमो ॥५२४८॥

अह्वा -

कज्जं णाणादीयं, उस्सग्गववायओ भवे सच्चं ।

त तह ममायरंतो, त सफल होइ सच्चं पि ॥५२४९॥

कज्ज ति णाण-दसण चरणा । त जहा जहा उस्सप्पति तहा तहा ममायरतस्स सजमो भवति स्यात् ॥५२४९॥

कथं सजमो भवति -

दोमा जेण निरुंभंति, जेण खिज्जति पुव्वकम्माइं ।

सो सो मोक्खोवाओ, रोगावत्थासु समणं व ॥५२५०॥

उस्सग्गे उस्सग्ग, अववादे अववादं करेतस्स रागादिया दोसा निरुंभति, पुव्वोवचियकम्मा य खिज्जति, एव जो जो साधुस्स दोसनिरुवकम्मखवणे किमियाजोगो सो सो सव्वो मोक्खोवातो ।

इमो दिट्ठो - “रोगावत्थासु समणं व”, रोगावत्था रोगप्रकारा, तेसि रोगाण प्रशमन अपत्थ पडिमिज्जति, जेण य प्रशमति न तस्स दिज्जति ।

अथवा - कस्स नि रोगिस्स णिसेहो कज्जति, कस्स वि पुणो तमेव अणुण्णवति ।

एव कम्मरोगखवणे वि समत्थस्स अकप्पपडिसेहो कज्जति । असत्थरस्स पुण तमेव अणुण्णवति ।

हे चोदक । ज त तुम्हे भणिय - सुत्ते अगीतो गीतो वा नत्थि कोइ भणितो त, एयं सुत्ते गीयादीया पक्कयातो विण्णया ॥५२५०॥

अग्गीतस्स ण कप्पति, तिविहं जयणं तु सो न जानाति ।

अणुण्णवणाइ जयणं, सपक्ख-परपक्खजयणं च ॥५२५१॥

चोदको भणति - “अगीयस्स किं कारणं ण कप्पति ?

आयरिओ भणइ - “तिविहं जयणं” ति जेण सो न याणइ ।

पुणो चोदगो भणति - “कयरा मा तिविहा जयणा” ?

आयरिओ भणइ - अणुण्णावणजयणा सपक्खजयणा परपक्खजयणा य ।

चोदको भणति - “सुत्ते पडिए अगीतो कहं जयणं न जानति ?”

आयरिओ भणति - हे चोदक ! आयरिसहाया सन्वागमा भवति जेण पडिज्जति ॥५२५१॥

णिउणो खलु मुत्तत्थो, न ह् सुक्को अपडिबोहितो नाउं ।

ते सुणह तत्थ दोसा, जे तेसि तर्हि वसताणं ॥५२५२॥

णिउणो त्ति सुहुमो मुत्तत्थो, सो य आयरिएण पडिबोहितो णज्जति, अण्णह ण णज्जति, जे अगीयत्थाण तर्हि वसताण दोसा ते भण्णमाणे सुणसु ॥५२५२॥

अग्गीया खलु साहु, णवरं दोसा गुणे अजाणंता ।

रमणिज्जभिक्षु गामे, ठायती उदगसालाए ॥५२५३॥

अगीयसाधू साधुकिरियाए जुत्ता णवर - सदोसणिहोस-वसहिअणुणवणे दोसगुणे ण याणति, अजयणाए अणुणवणे दोसा, जयणाणुणवणाए य गुणा । सदोमाए य कारणे ठिया जयण काउ ण याणति जे य तत्थ दोसा उप्पज्जति ॥५२५३॥

“रमणिज्ज” पच्छद्ध अस्य व्याख्या -

रमणिज्जभिक्षु गामो, ठायामो इहेव वमहि भोमेह ।

उदगघराणुणवणा, जति रक्खह देमि तो भंते ! ॥५२५४॥

अगीयत्थगच्छो दूइज्जतो एगत्थ गामे बाहि ठितो, भिक्षा हिडिया पभूता इट्ठा य लद्धा, ताहे भणति - “एस रमणिज्जो गामो, भिक्षा य अत्थि, अत्थेव मासक्कविहारेणऽच्छिहामो, वसहि भोमेह वम्मकहि” ति । तेहि उदगसाला विट्ठा, त अणुणवेत्ता उदगघरसामिणा भणिता - “जति उदग घर वा रक्खिस्सह तो भे देमि” ति ॥५२५४॥

किं च ते गिहत्था भणति -

वसहीरक्खणवग्गा, कम्मं ण करेमो णेव पवसामो ।

णिच्चिता होह तुमं, अम्हे रत्ति पि जग्गामो ॥५२५५॥

“उदयघरादिरक्खवावडा अम्हे किसिमादि कम्म पि ण करेमो, ण य आमत्तणादिमु गामतर पि पवसामो” । ताहे अगीयत्था भणति - “णिच्चितो होहि तुम, अम्हे रत्ति पि जग्गिस्सामो” ॥५२५५॥

इमा वि अणुणवणे अविधी चेव -

जोत्तिस निमित्तमादी, छंदं गणियं च अम्ह साहित्था ।

अक्खरमादि व डिंभे, गाहेस्सह अजतणा सुणणे ॥५२५६॥

जति अणुणविज्जते वसहिंसामी भणति - ‘जति जोइस निमित्त द्ध गणिय वा अम्ह कहेस्सह, “डिंभ”-त्ति डिंभरूव त अक्खरे गाहिस्सह आर्दसद्दातो अण्ण वा किं चि पावसुत्त वागरणादि ।’

एत्थ साधू जति पडिसुणेति - “कहेस्सामो सिक्खावेस्सामो वा” तो अणुणवणे अजयणा कया भवति ॥५२५६॥

अजयणाऽणुणवणाए ठियाण इमे दोसा -

अणुणवण अजयणाए, पउत्थसागारिए घरे चेव ।

तेसि पि य चीयत्तं, सागारियवाज्जयं जात ॥५२५७॥

अस्य पूर्वार्धस्य व्याख्या -

तेसु ठितेसु पउत्थो, अञ्छंतो वा वि ण वहती तत्ति ।

जड वि य पविसितुकामो, तह वि य ण चएति अतिगतु ॥५२५८॥

“नेतु” ति - अगोयत्थेसु अजयणाऽणुणवणाए ठियाण “उदगादिघर सजता रक्खति” ति सागारिगो गिच्चितो पवमइ, घरे वा अञ्छतो उदगादिभयणाण वात्तार ण वहति, “तन्नि पि” - सजयाण “चियत्त” - ज अह तेण सागारिणो पागच्छते ।

अट्टवा - जे सजता उदगरसकोउया तेसि चियत्त, अट्टवा - सो पविमिउकामो तह वि न सक्केइ तत्थ पविसिउ ॥५२५८॥

केण कारणेण ? अनो भण्णनि -

सथारएहि य तहिं, समंततो आत्तिकिण वितिकिणं ।

मागारिओ ण इंती, दोसे य तहिं ण जाणाति ॥५२५९॥

अतिकिण आकीर्णं परिवाडोए, वितिकिण विप्रकीर्णं अणाणुपुक्वीरु, अडुवियडु ति बुत्त भवति एतेण कारणेण सो सेज्जातरो ण पविसति । तेसु उदगभायणेसु जे सेवणादिदोसा ने ण याणति ॥५२५९॥ अणुणवण ति गता ।

इदाणि सपक्खे जयणा -

ते तत्थ सण्णिविट्ठा, गहिता मंथारगा जहिच्छाए ।

णाणादेमी साहू, कम्मति चिता समुप्पण्णा ॥५२६०॥

“सण्णिविट्ठ” ति ठिता ‘जहिच्छ’ ति जहा इच्छति, णो गणावच्छेइएण दिण्णा अहारातिणियाए ।

॥५२६०॥

तत्थ कस्स ति साधुस्स इमा चिता उप्पण्णा -

अणुभूता उदगरमा, णवरं मोत्तणिमेमि उदगाणं ।

काहामि कोउहल्लं, पासुत्तेसुं ममारद्धो ॥५२६१॥

“केरिमो उदगरसो” ति कोतुअ, त कोउआणकूल काहामो ति सो मुत्तेसु साधुसु ममारद्धो पाउ ॥५२६१॥

इमे उदगे -

धारोदए महासलिलजले संभारिते च दव्वेहि ।

तण्हाइयस्स व सती, दिया व राओ व उप्पज्जे ॥५२६२॥

शरोऽयं जहा मत्तं शरादिषु, मशसलिलोदगं गगानिधुमादीनि दर्व्वेष्टि वा सभारिय,
स्पर्शदिपाणियवासंगं वामिय, एवमादिउदगेषु तण्हाइयस्स अभिलामो भवति, पुब्बाणुभूतेण वा सती सभरणा
भवति, अण्णुभूतेण वा कोउणं सती भवति ॥५२२॥

ताहे सतीए उप्पण्णाए अप्पणो हिययपच्चक्ख भण्णति -

उहरा कहासु सुणिमो इमं खु त विमलमीतल तोयं ।

विगतस्म वि णत्थि रमो, इति सेवति धारतोयादी ॥५२६३॥

“इहरे” ति - अपच्चक्ख मुनिमेतोवल्लद, “इमं” ति पच्चक्ख, ज पि अम्हे उण्हादगादि
विगतजीव पिवामो तस्म वि मत्तोवहयस्म अण्णहानुतस्स रमो णत्थि, इति एव चित्ते उ धारोदगादि सेवइ
॥५२६३॥

तम्मि पडिमेविते इमे दोसा -

गिगयम्मि कोउहल्ले, छट्ठवयविराहणं ति पडिगमणं ।

वेधाणम ओवाणे, गिलाण-मेहेण वा दिट्ठो ॥५२६४॥

तम्मि उदगे शमेविए विगते उदगस्सकाउए छट्ठ रानोभोगविरति वय भग्ग, तम्मि भग्गे
उमयण वि भग्गे, ताहु “भग्गयता मि” ति स गिट् पडिगमणं करेज्ज, वेधाणस वा करेज्ज, विहारामो वा
ओवाणं करेज्ज, गिलाण मेहेण वा अभिणववस्मेग दिट्ठो त पडिमवतो ॥५२६४॥

ताहे गिलाणो इमं कुज्जा -

तण्हातिओ गिलाणो, तं दिस्म पिएज्ज जा विराहणया ।

एमेव मेहमादो, पियति अप्पच्चओ वा मि ॥५२६५॥

त दट्ठु पिवत गिलाणा वि निमिनो पिवेज्ज, अतिमितो वा कोउए पिवेज्जा । तेण पीएण
अण्णयग जा अण्णमादादिविराहणं तण्णिप्पण पच्चित्रं तस्स माधुस्स भवति । अह उदाति तो चरिम । एव
मेहेण वि दिट्ठे सेहो वि पिवेज्जा, मेहस्म वा अपच्चअ भवेज्ज, जहेय मोस तहण्ण पिय ॥५२६५॥

अहवा -

उड्डाहं च करेज्जा, विपरिणामो व होज्ज मेहस्स ।

गेण्हंतेण व तेणं, खडित भिण्णे व विट्ठे वा ॥५२६६॥

सो वा सेहो अण्णमण्णस्स अक्खतो उड्डाह करेज्जा ।

अहवा - सेहो अयाणतो भणेज्ज - “एस तेणो आहरेड” ति उड्डाह करेज्जा, त वा दट्ठु सेहो
विपरिणमेज्ज, विपरिणतो मम्मत्त चरणं लिगं वा छड्ढेज्ज । अगिलाणसाधुणा गिलाणेण वा सेहेण वा एतेसि
अण्णतरेण उदगं गेण्हतेण त उदगभायण खडिय भिण्णं वा वेहो से वा कतो ॥५२६६॥

अधवा -

फेडितमुदा तेणं, कज्जे मागारियस्स अतिगमणं ।

केण डमं तेणेहि, तेणाणं आगमो कत्तो ॥५२६७॥

मुद्रियस्म वा मुद्रा फेडिया, अप्पणो य कउजेण मागारितो “अटगतो” ति पविट्ठो तेण दिट्ठ ।
दिट्ठे भगानि — केण इम खडिय ? भिण्ण वा ?

माह भगति — तेणेहि ।

ताह मागारितो भणइ — “तेणण आगमो कह जातो ? जो अम्हेहि ण गातो” ॥५२६७॥

ताह मागारिण चित्तेण अवधाति — “एतेहि चेव उदग पीन भायण वा खडिय भिण्ण वा ।”
तस्य मा भट्ठो हवेज्ज पतो वा ।

भट्ठो इम भणेज्जा —

इहरह वि ताव अम्हं, भिक्खं च बलिं च गेण्हह ण किंचि ।

एण्हि खु तारिओ मि, गेण्हह छंदेण जेणऽट्ठो ॥५२६८॥

एय उदगराट्ठण मानु “इहरह वि” ति चरगादिमामण भिक्खग्गहणकाले ज ^१कुटुबप्पगत ततो
भिक्ख अरह घणे ण हिडइ, ज वा देवताण वलीकय ततो उव्विय पि ण गेण्हह, इण्हि पुण उदगग्गहणेन
अणुग्गहो कतो, मसाराना य तारिना । एतथ जेण भे अण्णेण वि अट्ठो त पि तुम्भे छंदेण अप्पणो इच्छाए
एज्जत्तिय गेण्हह ॥५२६८॥

इम भट्ठपत्तेमु पच्छिन्न —

लहुगा अणुग्गहम्मी, अप्पत्तिय धम्मकंचुगे गुरुगा ।

कडुग फरुमं भणंते, छम्मासो करभरे छेओ ॥५२६९॥

जति भट्ठो “अणुग्गह” ति भणेज्ज तो चउलहु । पतो अप्पत्तिय करेज्जा ।

अपत्तिओ वा इम भणेज्ज — “एते धम्मकचुगविट्ठा एगलेस्सा लाग मुसति”, एतथ से चउगुरु ।
कटुगवयण फरुसवयण वा भणति छसुरुगा । रायकरभरेहि भग्गाण समणकरो वोढवो ति भणते छेदो
भवति ॥५२६९॥

मूल मएज्झएमुं, अणवट्ठप्पो तिए चउक्केसु ।

रच्छा महापहेसु य, पावति पारंचिय ठाण ॥५२७०॥

^२सड्ढका समासियगा, तहि उदग तेणिय ति एतथ मूल, तिगे चउक्के वा पसरिते “तेणगा वा
एते” अणवट्ठो, महापहेसु सेमरत्थासु य तेणिय नि य सुए पारंचिय ॥५२७०॥

“कटुगफरुस” पच्छद्धस्म इम वक्खाण —

चोरो त्ति कडु दुव्वोडिओ त्ति फरुसं हतो सि पव्वावी ।

समणकरो वोढवो, जाते मे करभरहताणं ॥५२७१॥

कडा । सपक्खजयणा एमा गता ।

*परपक्खजयणा इमा —

परपक्खम्मि य जयणा, दारे पिहितम्मि चउलहु होंति ।

पिहिणे वि होति लहुगा, जं ते तसपाणवातो य ॥५२७२॥

^१ कुटुबपागवय, इत्यपि पाठ । ^२ सएज्झया=प्रातिवेक्षिका । ३ गा० ५२६६ । ४ गा० ५२५१ ।

मणुयगोणादी असजतो सज्वो परपक्खो माणियव्वो, आवत्तणपेढियाए जीववरोवणभया जति दार न पिहति तो चउलहु । अह पिहेति नहावि आवत्तणपेढियाजते मचारयलूयाउहेहिगमादीण य तसाण घातो भवति, एत्थ वि चउलहु तसणिप्फण च ॥५२७२॥

अपिहिते इमे दोसा -

गोणे य माणमादी, वारणे लहुगा य जं च अहिकरणं ।

खरए य तेणए या, गुरुगा य पदोमतो ज च ॥५२७३॥

दुबारे अपिहिते गोणादी पविसेज्जा ते जति वारेति तो चउलहु । सो य वारितो वच्चतो अधिकरण जेण हरितादि भलेहिति, तणिप्फण अतराय च से कय ।

अहवा - 'खरए' ति तस्सेव सतिओ दासो दामी वा तेणगा वा पविसेज्जा, ते जति वारेति तो चउगुरुगा, ते वारिया ममाणा पदुहा ज छोभग परितावणादि काहिति तणिप्फण पावति ॥५२७३॥

तेसि अवारणे लहुगा, गोसे सागारियस्स मिट्ठम्मि ।

लहुगा य ज च जत्तो, असिट्ठे संकापदं जं च ॥५२७४॥

गोण साण खर खरिय-तेणगा य जति ण वारेति तो पत्तेय ङ्क । ते य अवारिता उदग पिएज्जा, हरेज्जा वा, भायणादि वा विणामेज्जा । गोमे ति पच्चूमे जइ सागारियस्स साहेति "अमुगेण अमुगीए वा अमुगेण वा तेणेण राओ उदग पीत्ति" ति चउलहुगा । कहिते सो रुट्ठो दुवक्खरियादीण ज परितावणादि काहीति, "जतो" ति बधणघायण विसेसा तो तणिप्फण सव्व पावइ । अह ण कहिति तो वि चउलहुगा । साधू य गट्ठे सकेज्जा, सकाए चउलहु । निस्सकिने चउगुरु । अणुग्गहादि वा भट्पतदोसा हवेज्ज, 'ज च' पदुट्ठो णिच्छुअणादि करेज्ज ॥५२७४॥

गोणादियाण सव्वेसि वारणे इमे दोसा -

तिरियनिवारण अभिहणण मारण जीवघातो नासंते ।

खरिया छोभ विसाऽगणि, खरए पंतावणादीया ॥५२७५॥

सव्वे वि गोणादी तिरिया णिवारिज्जता सिगादिणा आहुणेज्ज, तत्थ परितावणादि जाव मरण भवे, सो वा णिवारितो जीवघात करोतो वच्चेज्जा । खरिया य णिवारिता छोभग देख - "एस मे समणे पत्थेति", विसगरादि वा देख, वसहि वा अगणिणा भामेज्ज । खरगो वि पदुट्ठो पंतावणादि करेज्ज, भायणाणि वा विणामेज्ज, सेज्जातर वा पंतावेज्ज ॥५२७५॥

तेणगा इमेहि कारणेहि उदग हरेज्जा-

आसण्णो य छणूसवो, कज्जं पि य तारिसेण उदएण ।

तेणाण य आगमणं, अच्छह तुण्हिक्कगा तेण ॥५२७६॥

आसण्णे छणे ऊमवे वा, छणो जत्थ विसिट्ठ भत्तपाण उवसाहिज्जति, ऊसवो जत्थ त च उवसाधिज्जति, जणो य अलकिय विभूसितो उज्जाणादिसु मित्तादिजणपरिवुडो खज्जादिणा उवललति । तम्मि छणे ऊसवे वा तारिसेण उदगेण अवस्स कज्ज ।

तस्मि य अप्पणो गिहे अविज्जमाणे उदगतेणट्ठाए आगता तेणा । ताहे अगीता भणति - “तेणा आगता, अच्छह भते । तुण्हिक्का, ण कप्पति कहेतु अय तेणो, अय उवचरए” ति । अथवा - तेणा आगता मज्जहि दिट्ठा । ते तेणगा भणति - “तुण्हिक्का अच्छह, मा भे उद्विस्सामो” ॥५२७६॥

उच्छवच्छणेषु संभारितं दगं ति मितरोगितट्ठा वा ।

दोहल-कुतूहलेण व, हरंति पडिसेवियादीया ॥५२७७॥

तेषु छगूपवेषु तिमिया पीयणट्ठाए उदग वासवासिय कप्पूरपाडलावासिय वा चउपचमूलसभारकय वा रोगियस्सट्ठाए अत्रहरति, कुविणोए वा दोहलट्ठाए, कोउगेण वा केग्सो एयस्स साओ ? ति, पडिसेविता अण व अत्रहरति ॥५२७७॥

गहित च तेहि उदगं, घेतूण गता जतो सि गंतव्वं ।

सागारितो उ भणती, सउणो वि य रक्खती नेड्डं ॥५२७८॥

तेणगा घेतु उदग गता जत्थ गतव्व । अप्पणो य कज्जेण सागारिओ पभाए आगतो । मुद्दाभेद दट्ठ भणति - “अज्जो ! सउणो वि, “नेड्ड” ति गिह, सो वि ताव अप्पणो गिह रक्खति, तुम्हेहि इम ण रक्खिय” ॥५२७८॥

दगभाण्णे दट्ठुं, सजलं व हितं दगं च परिसडितं ।

केण हिय ? तेणेहिं, असिट्ठ भदेतर इमे तू ॥५२७९॥

अहवा - जलेण भरिय भायण दग च परिसडिय । तत्थ दट्ठु सागारिओ पुच्छति - केण हिय ।

साह भणति - तेणेहिंति । तत्थ जति तेणग वण्णरूवेण कहेति तो बधणादिया दोसा, “असिट्ठ” ति अकहिते भद्दोसा “इतरे” ति पतदोसा य इमे ॥५२७९॥

लहुगा अणुगहम्मि, अप्पत्तिथम्मकंचुगे गुरुगा ।

कडुग-फल्मं भणते, छम्मासो करभरे छेओ ॥५२८०॥ पूर्ववत्

मल सएज्झएमुं, अणवट्ठप्पो तिए चउक्केसु ।

रच्छ-महापहेसु य, पावति पारंचिय ठाणं ॥५२८१॥ पूर्ववत्

एगमणेगे छेदो, दिय रातो विणास-गरहमादीया ।

ज पाविहिंति विहणिग्गतादि वसहिं अलभमाणा ॥५२८२॥

पूर्ववत् । एगस्स साधुस्स अगेगाण वा वोच्छेद करेज्जा । अहवा - तद्वस्स अगेगाण वा ।

जति दिवसतो णिच्छुभेज्जा ० ०, रातो वा ० ० । अण्ण वा वसहिं अलभता तेणसावयाविहिं विणास पाविज्जति, लागेण वा गरहिज्जति । एते तेणग ति । ततो य णिच्छूडा विह पडिवण्णा ज सीउण्टुप्पिवासपरीसहमादी तेणसावयादीहि वा वसहिं अलभता ज पावेति तण्णिप्फण पावेति ।

अथवा - तस्स दोसेण अणो विह णिग्गतादिया वसहिं अलभता ज पाविहिंति तण्णिप्फण पावति । एव अकहिज्जते तेणे दोसा । अथ तेण कहेज्ज - ज ते तेणगाण काहिंति तेणगा वा तस्स साधुस्स वा ज काहिंति ॥५२८२॥ एते अगीयत्थस्स दोसा ।

इदाणि गियन्थस्म विवी भण्णइ -

गीयत्थस्स वि एव, णिक्कारण कारणे अजतणाए ।

कारणे कडजोगिस्स उ, कप्पति वि तिचिहाए जयणाए ॥५२८३॥

गीयत्थो वि जो निक्कारणे उदगसालाए ठाति, कारणे वा ठिनो जयण ण करेति । कडजोगी गीयत्थो ।
तिनिधा जयणा - अणुणवणजयणा सपक्खजयणा परपक्खजयणा य ॥५२८३॥

निक्कारणम्मि दोसा, पडिवंधे कारणम्मि णिहोसा ।

ते चेव अजयणाए, पुणो वि मो पावती दोसे ॥५२८४॥

नइ निक्कारणे उदगपडिवद्धाए वसहीए ठाति तो ते चेव पुव्वभणिता दोसा भवति । कारणे पुण
ते चेव ता पावति जे अजयणट्टिनाण ॥५२८४॥

कि पुण त कारण ? इम -

अद्धानाणिग्गयादी, तिक्खुत्तो मग्गिऊण असतीए ।

गीयत्था जयणाए, यमंति तो उदगमालाए ॥५२८५॥

विसुद्धवसहीए असति मेम कठ ॥५२८५॥

तत्थ य अणुणवणाए जति वसहिसामी भणेज्ज - “जति अम्हं किं चिं जोतिमानि कहेस्महं
ना म वमहिं दमो ।”

तत्थ सावृहि वत्तव्व -

न वि जोतिमं न गणियं, न चऽक्खरे न वि य किं चिं रक्खामो ।

अप्पस्सगा असुणगा, भायणखंभोवसा वमिमो ॥५२८६॥

जोतिमाति ण निक्खवेमो, ण वा जाणामो ति वत्तव्व, जहा भायणखंभं कुड्ढादिया तुज्झ सुत्थदुत्थेमु
वावारं ग वहति एव अम्हे विसामो । जति ते किंचिं वज्जविवत्ति पेच्छामो त पेच्छता वि अप्पस्सगा इह
अच्छामो । जइ वा कोइ भणेज्जा - इम मेज्जातरम्मं वहेज्जहं, असुणं वा सुणावेहं, तत्थ वि अम्हे असुणगा
॥५२८६॥

णिक्कारणम्मि एव, कारणदुल्लभे भणतिमं वससा ।

अम्हे ठियल्लगं च्चिय, अहापवत्तं वहहं तुब्भे ॥५२८७॥

उत्सग्गेण एव ठायति । असिबोमादिदुब्भिककारणेषु अण्णतो अगच्छता तत्थ य सुद्धवसही दुल्लभा
ताहे उदगसालाए ठायता इम भणति साधारणवयण वससा “अम्हे ता ठियचित्ता, तुम्हे पुण ज अहापवत्तं
वावारवहणं दिवसदेवसियं त वहहे चेव ॥५२८७॥ गया अणुणवणजयणा ।

इमा सपक्खजयणा -

आम ति अब्भुवगाए, भिक्ख-वियारादि णिग्गय मिएसुं ।

भणति गुरु सागरियं, कत्थुदगं जाणणट्टाए ॥५२८८॥

सागारिणेण अन्धुवगय - ' गिरुवगारी होउ अच्छह ति, अहापवत्त वावार वहिस्सामो ' ति, ताहं नत्थ ठिया, इहरा ण ठायति । तत्थ ठियाण इमा विही - जाहे सव्वे भिग। भिक्खादिणिग्गता भवति ताहे गुरु उदगजाणणट्ठा अण्णावदेमेण सागारियस्म पुरना ॥५२८८॥

इम भणति -

चउम्ल पचमूला, तालोदाणं च तावतोयाण ।

दिट्ठभए मन्निचिया, अण्णादेमे कुटुवोण ॥५२८९॥

चउहि पचहि वा अण्णतमेहि सुरहिमूलेहि पाणट्ठा सभारकड तालोद तोसलीए तावोदग गयगिहे ॥५२८९॥

एवं च भणितमेत्तम्मि कारणे मो भणाति आयरिए ।

अत्थि मसं मन्निचिया, पंच्छह णाणाविहे उदए ॥५२९०॥

जाहे एव भणिगे गुन्णा ताहे कमपने व्हणकारणे सेज्जातरा पच्छट्ठेण भणति - "पत्थभोयणे तावादग, पत्थ तालोदग ' एव तेण सव्व कहिता ॥५२९०॥

ते य गुरुगा -

उवलक्खिया य उदगा, मंथाराण जहाविही गहणं ।

जो जस्म उ पाओग्गो, मो तस्म तहि तु दायव्वो ॥५२९१॥

ताहे मथारगाण अहाराइणियाए विट्ठिगहणे पत्ते वि त मामायारि भेतु गुग्गो अण्णत्ति य तत्थ करति, जो जम्म जम्मि ठाणे जोगो सथारगो तस्म तहि ठाण देति ॥५२९१॥

तत्थिमो विही -

निक्खम-पवेसवज्जण, दूरे य अभाविता उ उदगस्म ।

उदयंतेण परिणता, चिलिमिणि राइदिय असुण्णं ॥५२९२॥

सागारियस्म उदगादिगहणट्ठा पविसमाणम्म गिक्खमण-पवेसो वज्जेयव्वो । उदगभायणाण य अभाविया अगीया अतिपरिणामग मदवम्मा य दूरतो ठविज्जति । जे पुण धम्मसद्धिया थिरचित्ता ते उदगभायणाग ठाणे थ अतरे कडगो चिलिमिली वा दिज्जति । गीयत्थारिणामगेहि य दियारातो य असुण्ण कज्जति ॥५२९२॥

ते तत्थ सन्निविट्ठा, गहिता संथारगा विधीपुव्वं ।

जागरमाण वमंती, सपक्खजयणाए गीयत्था ॥५२९३॥

जहा तत्थ दोसो ण भवति तहा सथारगा वेत्तव्वा, एसेव तत्थ विधी । सपक्ख रक्खता तत्थ गीयत्था सदा मजागरा सुवति ॥५२९३॥

अथवा -

ठाणं वा ठायती, णिसेज्ज अहया मजागरे सुवति ।

बहुसो अभिद्वंते, वयणमिण वायणं देमि ॥५२९४॥

जो वा ददसंघयणो अत्यचित्तगो सो ठाणं ठाति, णिसण्णो वा भायमाणो चिट्ठइ ।

अथवा - गीयत्थो कृतकेन सव्वेसिं पुरतो भणति - “संदिसह भंते ! सव्वराइयं उस्सगं करेस्सामि ।”
पच्छा मुत्तेसु सुवति, अण्णदिणं अण्णो संदिसावेति । एवं रक्खंति । वसभा वा सजागरा सुवंति, जति तत्थ
दगाभिलासी दगभायणतेण आमच्छति तत्थ तहा गुरवो वसभा वा संजीहारं करेति, जहा सो पडिणीयत्त ति ।

अथ सो पुणो पुणो अभिद्ववति ताहे गुरू सामण्णतो वयणं भणाति - “उट्ठेह भंते ! वायणं देमि ।”
तं वा भणाइ “अज्जो ! वायणं वा ते देमि” ॥५२६४॥

फिडितं च दगट्ठिं वा, जतणा वारेंति ण तु फुडं वेति ।

मा तं सोच्छति अण्णो, णित्थक्कोऽकज्ज गमणं वा ॥५२६५॥

फुडं रक्खं ण भणति, मा तं अण्णो सोउं अण्णोसिं कहेत्सति ।

पच्छा सव्वेहिं णाते गुरुणा वा फुडं भणिते णित्थक्को णिल्लज्जो भवति ।

पच्छा णिल्लज्जीभूतो अकज्जं पि करेति, णातो मि ति लज्जितो वा पडिगमणादीणि करेज्जा
॥५२६५॥

“जयणाए वारेंति” ति अस्य व्याख्या -

दारं न होति एत्तो, निदामत्ताणि पुच्छ अच्छीणि ।

भण जं च संक्रितं ते, गेण्हह वेरत्तियं भंते ! ॥५२६६॥

कंठा । सपक्खजयणा गता ।

इमा परपक्खजयणा -

परपक्खम्मि वि दारं, ठयंति जयणाए दो वि वारेंति ।

तहवि य अठायमाणे, उवेह पुट्ठा व साहंति ॥५२६७॥

परपक्खेसु दारं ठयंति इमाए जयणाए -

पेहपमज्जणसणियं, उवओगं काउं दारे घट्टेंति ।

तिरिय णर दोण्णि एते, खर-खरि त्थि-पुं णिसिट्ठितरे ॥५२६८॥

चक्खुणा पेहिउं रयोहरणेण पमज्जंति, अचक्खुविसए वा उवओगं काउं ।

अथवा - सचक्खुविसए वि उवओगकरणं ण विरुज्झति । एवं च सणियं जहा जीवविराधणा ण
भवति तहा जयणाए दारं ठयंति ।

अहवा - “जयणाए दो वि वारेंति” तिरिया णरा य एते दोण्णि ।

अहवा - दोण्णि - दासो दासी य, अहवा - दोण्णि - इत्थो पुरिसो य ।

अहवा - दोण्णि “निसिट्ठितर” ति जेसि पवेसोऽणुणात्तो ते निसिट्ठा, णाणुणात्तो पवेसो जेसि
ते इतर ति ।

अहवा - अककतियतेणा णिसट्ठा इतरे अणिसट्ठा, उवरि वक्खाणिज्जमाणा, जयणाए । तथा य ऋत्तायमाणेसु “उवेह” ति तुण्हक्को अचछति । सागारिणा वा पुट्ठो - “केणुदग गीय?” ति ताहे साहेति “अमुणेण अमुगीए वा” ॥५२६८॥

गेण्हंतेसु य दोसु वि, वयणमिणं तत्थ वेति गीयत्था ।

बहुग च णेसि उदग, किं पययं होहिती कळ्ळं ॥५२६९॥

इत्थिपुत्तिमादिमु दोसु वि गेण्हंतेसु गुरुमादी गीयत्था इम वयण (भणति) पच्छद्व कठ ॥५२६९॥
तेणगेसु इमा विही -

नीमट्ठेसु उवेहं, मत्थेणं तासिता तु तुसिणीया ।

बहुसो य भणति महिलं, जह त वयण मुणति अन्नो ॥५३००॥

तेणा दुविधा - णिमट्ठतेणा अणिमट्ठतेणा य । णिसट्ठा अककतिया बला अनहरति जहा पभवो ।
तेसु आगनेसु उवेह कण्डे, तुण्हक्को अचछइ ।

अहवा - खग्गादिणा मत्थेण तासिता - तुण्हक्का अचछह मा मे मारेम ।

अह महिला उदग णेति तत्थ इम वयण - “बहुसो य पच्छद्व” ॥५३००॥

अम्य व्याख्या -

साहूणं वसहीए, रत्ति महिला ण कप्पती एंती ।

बहुगं च नेसि उदगं, किं पाहुणगा वियाले य ॥५३०१॥

तेणेसु णिमट्ठेसु पुच्चा-उवररत्तिमल्लियंतेसु ।

तेणुदयरक्खणट्ठा, वयणमिम वेति गीयत्था ॥५३०२॥

“तेणे” ति उदग जे तेणेति, तेमि रक्खणट्ठा गीयत्था उच्चमट्ठेण इम भणति ॥५३०२॥

जागरह णरा ! णिच्च, जागरमाणस्स वट्ठती बुद्धी ।

जो सुवतिंण सो सुहितो, जो जग्गति सो सया सुहितो ॥५३०३॥ कठा

सुवति सुवंतस्स सुय, संकियखलिय भवे पमनस्स ।

जागरमाणस्स मुय, थिरपरिचियप्पमत्तस्स ॥५३०४॥

“सुवति” ति नश्यतीत्यथ । अहवा - निद्राप्रमत्तस्य मुत्तत्था सकिता भवति खलांत वा, णो दरदरस्स आगच्छति, सभरणेण आगच्छति, नागच्छति वेत्यथ । विगहादीहिं वा पमत्तस्स सुय अथिर भवति ॥५३०४॥

सुवइ य अजगरभूतो, सुयं पि से णासती अमयभूयं ।

होहिती गोणभूयो, मुय पि णट्ठे अमयभूये ॥५३०५॥

अयगरस्स किल महती निद्रा भवति, जेण जहा निच्चित्तो सुवइ ।

किं चान्यत् -

जागरिता धम्मीणं, आधम्मीणं च सुत्तगा सेया ।

वच्छाहिवभगिणीए, अकहिंसु जिणो जयंतीए ॥५३०६॥

वच्छज्जणवए कोमवी णगरी, तस्स अहिबो सत्ताणितो राया, तस्म भग्गिणी जयती ।
 तीए भगव वट्ठमाणो पुच्छिओ । 'धम्मियाण कि सुत्तया, सेया ? जागरिया सेया ?
 भगवया वागरिय - "धम्मियाण जागरिया सेया, णो सुत्तया । अयम्मियाण सुत्तया सेया,
 णो जागरिया ।"

"अकहिमु" ति अतीते एव कहियवान् ॥५३०६॥

कि चान्यत् -

णालस्मेण सम सोक्खं, ण विज्जा सह णिदया ।

ण वेरग्गं समत्तेण, णारंभेण दयालुया ॥५३०७॥ कठा

तामेतूण अवहिते, अवडेएहि व गोमे माहेति ।

जाणते वि य तेण, माहति न वण्ण-रूवेहि ॥५३०८॥

अवकनियतेगेहि सत्त्वेण तासेउ, अणक्कतिएहि वा अवइएहि य, एव अण्णयरप्पगारेण हरिते,
 "गोमि" ति पच्चूने सेज्जातरस्म कहेति, जनि वि ते णामाएण जाणति तद्वावि त ण कहेति, अकहिज्जते
 वा जति पच्चगिरा भवति तां कहेति ॥५३०९॥ "म उदग" ति सेज्जा गत्ता ।

इदानी उदगमीवे सा भण्ड -

इति मउदगा तु एमा, उदगममीवस्मि तिण्णिमे भेदा ।

एक्केक्क चिट्ठणादी, आहारुच्चार-भाणादी ॥५३०९॥

जा सा उदगममीवे तस्स तिणि भेदा, तेषु तिसु भेदेषु एक्केक्के चिट्ठणादिया किरियविसेमा
 करेउज्ज ॥५३०९॥

ते य इमे तिणि भेदा -

दगतीरचिट्ठणादी, जूवग आतावणा य बोधव्वा ।

लहुगो लहुगा लहुगा, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥५३१०॥

चिट्ठणादिया दस वि पदा एक्क पद । जूवग ति बितिय । आयावणं ति ततिय । चिट्ठणादि दस
 वि उदगसमीव करेतस्स पत्तेय मासलहु । जूवगे वसहिं गेण्हति ड्क । आतवेति ड्क । जूवग वा सकमेण
 गच्छति ड्क । तिसु वि ठाणेषु पत्तेय आणादिया दोसा भवति ॥५३१०॥

दगतीर दगासण्ण दगवभास ति वा एगट्ठ । तस्स पमाणे इमे आएस -

णयणे पूरे दिट्ठे, तडि सिंचण वीइमेव पुट्ठे य ।

आगच्छते आरण्ण, गाम पसु मणुय इत्थीओ ॥५३११॥

चोदगो भण्ड - "अह दगतीर भणामि, उदगागरातो जत्थ णिज्जति उदग त उदगतीर" ?

आयरिओ भणति - दूर पि णज्जति उदग, तम्हा ण होइ त उदगतीर ।

तो जत्तिय णदीपूरेण अक्कमइ त उदगतीर ।

अथवा - जहि ठिएहि जल दीसइ, अथवा - णरीए तडी उदगतीर ।

अथवा - जहि ठिनो जलट्टिएण सिचिज्जइ सिंगगादिणा त जलतीर ।

अथवा - जावत्तिय वीति (चि) ओ कुमति, अथवा - जावत्तिय जनेण पुट्ट त दगतीर” ।

आयरिओ भणइ - ‘ ण होइ एय दगतीर ।’

दगतीरलक्खण इम भणति - आरणा गामेयगा वा दगट्ठिओ आगच्छमाणा पसु मणुस्सा इत्थिगाग्रो ना साधु दगतीरट्ठिय दट्ठु श्वकति - णियत्तति वा जत्तो त उदगतीर ॥५३११॥

पुणरवि आयरिओ भणति -

मिचण-वीथी-पुट्टा, दगतीरं हांड ण पुण तम्मत्तं ।

ओयरिउत्तरितुमणा, जहि दिस्स तर्मति तं तीरं ॥५३१२

णयणादियाण सत्तण्ह आदेमाण चरिमा तिण्णि मिचण, वीति पुट्टो य, एते णियमा दगतीर । सेसा भयणिज्जा । इम अथमिचरि दगतीर - आरणा गामेयगा वा तिरिया वा मणुस्सा वा दगट्ठिओ आरिउत्तमाणा पड वा उत्तरितुमणा जलचरा वा जहि टिय साधु दट्ठूण चिट्ठति, त्रसति वा त दगतीर भवति ॥५३१२॥

दगतीरे चिट्ठणादिमु इमे दोमा -

अधिकरणमतराए, छेदण उस्साम अणहियासे य ।

आणा मिचण जल-थल-सहचरपाणाण वित्तामो ॥५३१३॥

दगतीर - चिट्ठरम्म अधिकरण भवति, बहूण य अत्राय करेति । “छेदण” ति - साधुस्म चरा, जे उट्ठिर-ओ मा जा पि वट्ठति ‘ उस्सामे’ ति - उस्सामविशुक्कपोभगना जले निवडति । जल वा खेमेत । दगतीरे ठिनो वा तिमिनो विन्दिदुत्तवने अणवियामो जल पिवेज्जा । तिक्थकराणाभगो य । दगतीरे टिय वा पट्ठुणा पणिणिययाए कानि म्बिचिच । दगतीरट्ठियो य जल-थल-सहचराण वित्ताम करेति ॥५३१३॥

अधिकरण’ ति अस्म्य व्याख्या -

दट्ठण वा णियत्तण, अभिहणणं वा वि अण्णतूहेणं ।

गामा-SSरणपसूण, जा जहि आरोवणा भणिया ॥५३१४

“दट्ठण वा नियत्तण” ति अस्य व्याख्या -

पडिपहणियत्तमाणम्मि अंतरागं (यं) च तिमरणे चरिमं ।

सिग्घगति तन्निमित्तं, अभिघातो काय-आताए ॥५३१५

गामेयगा अरणवासिणो वा, गामेयगा ताव ठप्पा । आरणा तिसिया तित्थाहिमुहा एता दगतीरे त साधु दट्ठूण पडिपहेण गच्छतेसु अधिकरण, छक्काए य वहेति, उदग च अपाउ जति ते पडिपहेण

गच्छति तो अन्तराय भवति, चमद्वातो परितावणादी दोसा, एगम्मि परिताविते छेदो, दोसु मूल, तिसु अणवट्टो ।^१

अह एकक तिसाए मरइ तो मूल, दोसु अणवट्टो, तिसु पारचिय ।

“अभिहणण वा वि” अस्य व्याख्या — “स्त्रिवगति” पच्छद्व, “तण्णिमित” ति — न साधु दट्ठु णिता मिग्गनी अण्ण अण्णोण वा यमिवायति, छक्काए वा घाएति, साहुस्स वा दित्ता वाघात, करेज्जा, तिसिया वा अणघियामत्तणनो साहु णोल्लेउ अभिहणेउ गच्छेज्जा ॥५३१५॥

“अण्णतूहेण” ति अस्य व्याख्या —

अतड-पवातो सो च्चेव य मग्गो अपरिभुत्त हरितादी ।

ओवड कूडे मगरा, जदि घोट्टे तसा य दुहतो वि ॥५३१६॥

तत्थ ित साधु दट्ठु ‘अतड’ ति अतित्थ अणोनार तण ओयरेज्जा । तत्थ छिण्णटके प्रपाते आयविराहणा से ह्वेज्ज ।

अह्वा — सो चेन अहिणवो मग्गो पयट्ठज्ज, तत्थ अपरिभुत्ते अणाणुपुब्बीए छक्काया विराहिज्जेज्ज । “ओवड” ति — खड्ढादीते पडेज्ज, अतित्थे वा कूडेण वेप्पेज्ज, अतित्थे वा जलमोइण्णो मगरातिणा सावयेण खज्जेज्ज । साधुनिमित्त तित्थेण अनित्थेण वा ओयरित्ता अतमे आउक्काए जति सो घोट्टे करेइ ततिया चउलहुगा, अचित्ते आउक्काए जइ वेदिये ग्रमति तो छल्लहुग, तेइदिए छग्गुग्ग, चउरिदिए छेदो, पचेदिए एक्कम्मि मूल, दोसु अणवट्टो, तिसु पारचिय । ‘दुहतो वि’ ति — जत्थ आउक्काओ सचित्तो मतसो य तत्थ दो वि पच्छिता भवति, चउरिदिएसु चउसु पारचिय, तेइदिएसु पचसु पारचिय, वेदिएसु छसु पारचिय ॥५३१६॥ एते ताव आरण्णगाण दोसा भणिता ।

इदाणि गामेयगाण दोमा भण्णति —

गामेय कुच्छियमकुच्छिते य एक्केक्क दुट्ठुदुट्ठा य ।

दुट्ठा जह आरण्णा, दुगुछित्त^२दुगुछिता नेया ॥५३१७॥

ने गामेयगा तिरिया दुविधा — दुगुछिता अदुगुछिता य । दुगुछिता गद्भातो, अदुगुछिता गवादी । दुगुछिता दुट्ठा अदुट्ठा य । अदुगुछिया वि एव । जे दुगुछिता अदुगुछिता वा दुट्ठा ते दोवि जहा आरण्णा भणिता तहा भाणियव्वा ॥५३१७॥

जे अदुगु छिता अदुट्ठा तेसु नत्थ दोसा जहासभव भाणियव्वा,

जे ते दुगु छिया अदुट्ठा तेसु इमे दोसा —

भुत्तेयरदोस कुच्छिते, पडिणीए छोभ गेण्हादीया ।

आरण्णसणुय-थीसु वि, ते चेव णियत्तणादीया ॥५३१८॥

तिरियन्तो महासहिता दुगुछिताले, जेण गिहिका भुत्ता तस्स त दट्ठु सत्तिकरण, “इतरे” ति — जेण भुत्ता तस्स त दट्ठु कोअ अवति, कुच्छियासु वा आसण्णठियासु पडिणीतो कोइ छोभ देज्ज — “मए

१ चतुषु परितापितेषु पाराच्चिक, इति ब्र० वृ० गा० २३८६ । २ गा० ५३१४ । ३ गा० ५३१४ । ४ उवग, इति पूनासत्कताडपत्रप्रतो । ५ अन्ननित्येण, इत्यपि पाठ । ६ गा० ५३१४ । ७ दुगुछिता इत्यपि पाठ ।

एस समणगो महासद्दिय पडिसेवतो विट्ठो", तत्थ वि गेण्हणादिया दोसा । एव गामारण्णतिरिएसु दोसा भणिता । जा य जल्य काए आरोवणा भणिता सा सव्वा उवउजित्तूण भाणियव्वा ॥ एते तिरियाण दोसा भणिता ।

इदाणि मणुस्साण "आरण्णमणुय" पच्छद्व ।

मणुया दुविधा — आरण्णगा गामेयगा य । तत्थ आरण्णयाण पुरिसाण य इत्थियाण य ते चेव गियत्तणादिया दोसा जे तिरियाण भणिता ॥५३१८॥

इमे य अण्णे दोसा —

पाव अवाउडातो, सबरादीतो तहेव गित्थक्का ।

आरियपुरिस कुतूहल, आतुभयपुलिद आसुवधो ॥५३१९॥

पुव्वद्व कठ । गित्थक्का गिल्लजा । तातो साधु दट्ठूण आरियपुरिसो त्ति काउ पुलिदियादिअणा-
रिया कोउएण साधुसमीव एज्जतामो दट्ठु आयपरवभयसमुत्था दोसा भवेज्ज । मेहुणपुलिदो वा त इत्थिय
साधुसगासमागत दट्ठु ईसायतो रुढो "आमु" सिग्घ मारेज्ज ॥५३१९॥

थी-पुरिसअणायारे, खोभो सागारियं ति वा पहणे ।

गामित्थी-पुरिसेसु वि, ते विय दोसा इमे चउण्णे ॥५३२०॥

अधवा — सो पुलिदपुरिसो पुलिदयाए सह अणायार आयरेज्ज, तत्थ भुत्ताभुत्ताण सतिकरणकोउएहि
चित्तजोहो हवेज्ज । खुमि ए य वित्ते पडिगमणादिया दोसा ।

अहवा — सो पुलिदतो अणायारमायरिउकामो सागारिय ति काउ साधु पहणेज्जा मारेज्ज वा ।
एते आरण्णयाण दोसा । गामेयकपुरिसइत्थीण वि एते चेव दोसा, इमे य अण्णे दोसा ॥५३२०॥

चंकमण गिल्लेवण, चिट्ठित्ता चेव तम्मि तूहम्मि ।

अच्छंते संकापद, मज्जण दट्ठुं सतीकरणं ॥५३२१॥

"चकमणे" ति अस्य व्याख्या —

अणत्थ व चंकमती, मज्जण अणत्थ वा वि वोसिरती ।

कोनाली चंकमणे, परकूलातो वि तत्थेति ॥५३२२॥

कोइ अणत्थ चकमतो साधु दगतीरे दट्ठु तत्थेति एत्थ साधुसमीवे चेव चकमण करेरसामि,
किं चि पुच्छिस्सामि वा बोल्नालाव सकहाए अच्छिस्सामि, साधु वा दगतीरे चकमत दट्ठु गिही अण्णयाणाओ
तत्थेइ अह पि एत्थेव चकमित्स, सो य अयगोलसमो विभासा ।

अहवा — तत्थ दगतीरे चकमण करेस्सामीति आगतो तत्थ साधु दट्ठूण वित्तेति — "जामि
इतो ठाणातो अणत्थ चकमण करेस्सामी" ति गच्छति, गच्छते अधिकरण । "अगिल्लेवण" ति अस्य
व्याख्या — "अमज्जण अणत्थ वा वि वोसिरति" । सण्ण वोसिरित्तु अणत्थ गिल्लेवेउकामो साधु दट्ठ
साहुसमीवे एउ निल्लेवेइ । एव मज्जणपि, मज्जण ति ण्हाण ।

अहवा — तत्थ निल्लेविउ कामो साहु दट्ठु अणत्थ गत्तु गिल्लेवेति एव मज्जण सण्णवोसिरण पि ।

१ गा० ५३२४ । २ आयमण इत्यपि पाठ । ३ समीवे, इत्यपि पाठ । ४ गा० ५३२१ ।
५ आयमण इत्यपि पाठ । ६ गा० ५३२२ ।

“चिद्विना चेव तम्मि तूहम्मि” अस्य व्याख्या - “कोनाली” पच्छद्व । गतुकामो सागारिगो साधु दगतीरे दट्ठु तम्मि चेव “तूहम्मि” नि तित्थे चिट्ठति ।

अहवा - परकूलातो वि साधुसमीव एति । “कोनालि” ति गोटी । गोटीए स धुणा सह बोल्लालाव-सकहेण चक्रमण करोतो अचिच्छस्स, तत्थ साधुसलावणिमित्त अचछतो छक्काए वधति ॥५३२२॥

“अचछत्ते सकापद” ति अस्य व्याख्या -

दग-मेहुणसंकाए, लहुगा गुरुगा य मूल णीसंके ।

दगतूर कुचवीरग, पवंस वेसादलंकारे ॥५३२३॥

दगतीरे साधु अचछत्त दट्ठु कोइ सकेज्जा - कि उदगट्ठा अचछति । अह कि सगारदिण्णतो ? तत्थ दगसकाए चउलहु, णिस्सके चउगुरु । मेहुणसकाए चउगुरु, णिस्सकित्ते मूल ।

“अमज्जण दट्ठु सतीकरण” ति अस्य व्याख्या - “दगतूर” पच्छद्व । कोत्ति सविगार मज्जति, दगतूर करोतो एरिस जल अफालेति जेण मुरवसट्ठो भवति । एव पडह-पणव-भेरिमादिया सट्ठा करोति ।

अधवा - कुचवीरगेण जल आहिडति । कुचवीरगो सगडपक्खसारिच्छ जलजाण कज्जति । सुगध-दव्वेहि य आघसमाण केसवत्थमल्लआभरणालकारेण य आभरेते दट्ठु भुत्तमोगिसतिकरण, इयराण कोउय भवइ । पडिगमणादी दोसा ॥५३२३॥ एते पुरिसेसु दोसा ।

इमे इत्थीसु-

मज्जण-पहाणट्ठाणेसु अचछती इत्थिणं ति गहणादी ।

एमेव कुच्छित्तेतर-इत्थीसविसेस मिहुणेसु ॥५३२४॥

इत्थीओ दुविहा - अदुगुछिता दुगुछिता य । तत्थ अदुगुछिता बभणी खत्तिया वेमि सुदी य । दुगुछिता सभोइयदुअक्खरियाओ, अहवा णडवरुडादियाओ असभोइयइत्थिआओ । एताओ वि दुविधाओ - सपरिग्गहा अपरिग्गहाओ य । एत्थ सपरिग्गहित्थियाण वसताइसु अणत्थ ऊसवे विभवेण जा जलक्रीडा समज्जण, मलडाहोवसमकरणमेत्त पहाण, जलवहणपहेसु वा अणोसु वा णिल्लेवणट्ठाणेसु इत्थीण अचछत्तस्स आयपरोभय-ससुत्था दोसा ।

अधवा - तस्मि णाययो पासित्ता जत्थअह इत्थीओ मज्जणादी वरेति तत्थ सो समणो परिभव - कामेमाणो अचछति, दुट्ठो ति काउ गेण्णवादयो दोसा । जाओ पुण अपरिग्गहाओ कुच्छिया इयर ति अकुच्छिया व इत्थीओ तासु वि एव चेव आयपरोभयससुत्था दोसा । “मिहुण” ति जे सइत्थिया पुरिसा तेसु मिहुणक्रीडासु क्रीडतेसु सविसेसतरा दोसा भवति ॥५३२४॥

जम्हा दगसमीवे एवमादिया दोसा तम्हा चिद्विनादिया पदा इमे तत्थ णो कुज्जा -

चिद्वण णिसिय तुयट्ठे, निहा पयला तहेव सज्झाए ।

आणाऽऽहारवियारे, काउस्सगो य मामलहुं ॥५३२५॥

उद्धट्ठितो चिट्ठइ, णिसीयण उवविट्ठो चिट्ठइ, तुयट्ठो णिव्वणो अचछति ॥५३२५॥

पयलणिह्राण इम वक्खाण -

सुहपडिवोहो णिदा, दुहपडिवोहो य णिद-णिदा य ।

पयला होति ठियस्सा, पयलापयला उ चंक्रमतो ॥५३२६॥

वायणादि पत्रविहो मज्झाग्रो । “१भाणि” ति घम्मसुक्के भायति, आहार वो ओहमेति, “वियारे” ति उच्चारपासवण करेति, अभिभवस्म काउत्सग वा करेति । एतेमु ताव दसस पदेसु अक्सिद्र असंभायारि-णिप्फण्य मासलहु ॥५३२६॥

इदाणि विभागग्रो पच्छित्त वण्णेउकामो अणाणुपुठ्वीचारणियपदसगह चारणियावकप्पसु च ज पच्छित्त त भणामि -

मंपाडमे असंपाडमे य अदिट्ठे तहेव दिट्ठे य ।

पणगं लहु गुरु लहुगा गुरुग अहालंद पोरिसी अधिका ॥५३२७॥

त दगतीर दुविह मपातिमसपातिम वा ।

एतेमि इमा विभामा -

जलजाओ असंपातिम, मंपाडम सेमगा उ पचेदी ।

अहवा विहंगवज्जा, होति असंपाडमा मेसा ॥५३२८॥

अण्णठाणातो आगतु जे जले जलचरा वा थलचरा वा पचेदिया मपतति ते सपाडमा, जे पुण जलचरा वा तत्रस्था एव ते असपातिम ।

अहवा - खहचरा आगत्य जले सपतति सपाडमा । सेसा विहंगवज्जा थलचरा सव्वे असपाडमा । एतेहि मपाडमसपातिमेहि जुत्त दुविध दगतीर । एयम्भि दुविधे दगतीरे तेहि सपातिमेहि दिट्ठो अच्छति अदिट्ठो वा । ज त अच्छति काल तस्सिमे विभागा - अधालद पोरिसि ।

अधिग च पोरिसि लदमिति कालन्तस्य व्याख्या - तरुणित्थीए उदउल्लो करो जावतिएण कालेण सुक्कनि जहणो लदकालो । उक्कोसेण पुव्वकोडी । सेसो मज्झो ।

अहवा - जहणो सो चेव, उक्कोसो “अलद” ति जहालद, जहा जस्स जुत्त, जहा - पडिमा-पडिवण्णाण अहालदियाण य पचराइदिया, परिहारविसुद्धियाण जिणकप्पियाण णिवकारणओ य गच्छवासीण वा उडुबढे मास, वासासु चउमास, अज्जाण उडुबढे दुमास, मज्झिमाण पुव्वकोडी, । एत्थ जहणेण अहालद-कालेण अधिकारो ॥५३२८॥

इदाणि सपानि-असपाति-अधालदियादिसु अदिट्ठ-दिट्ठेसु य पच्छित्त भणति -

असंपाति अहालंदे, अदिट्ठे पंच दिट्ठ मामो उ ।

पोरिसि अदिट्ठ दिट्ठे, लहु गुरु अहि गुरुग लहुगा य ॥५३२९॥

असपातिमे अहालद अदिट्ठे अच्छति पच राइदिया । दिट्ठे अच्छइ मासलहु ।

असपाडमेसु पोरिसि अदिट्ठे अच्छइ मामलहु । दिट्ठे मासगुरू ।

अधिय पोरिसि अदिट्टे अच्छति मासगुरु । दिट्टे चउलहुग ।

सपाइमेनु अहालद अदिट्टे मासलहु । दिट्टे मासगुरु ।

पोरिसि अदिट्टे मासगुरु । दिट्टे चउलहुग ।

अधिय पोरिसि अदिट्टे चउलहु । दिट्टे चउगुरु ॥५३२६॥

संपातिमे वि एव, मासादी णवरि ठाति चउगुरुए ।

भिक्षु वसहाभिमेगे, आयरिए दिसेमिता अहवा ॥५३३०॥

पुव्वद गतार्थ । एव ओहिय गय ।

अथवा — एव चेव भिक्षुस्म वसभस्म अभिमेगस्म आयरियस्म य विपेमिय दिज्जति । भिक्षुस्म उभयलहु, वसभस्म कालगुरु, अभिमेगस्म तवगुरु आयरियस्म, उभयगुरु । एम वित्तिओ आदेमो ॥५३३०॥

अहवा भिक्षुस्सेवं, वममे लहुगाति ठाति छल्लहुगे ।

अभिसेगे गुरुगादी, छगुरु लहुगादि छेदंतं ॥५३३१॥

भिक्षुस्स एय ज वुत्त । वसभस्म असपाइम-मपाइम-अघालदपोरिसि-अधिय-अदिट्टेदिट्टेसु पुव्व चारणियविहीते मासलहुगाओ आढत्त छल्लहुग ठायति ।

उवज्झायस्स असपाइमेसु मासगुरुगाओ आढत्त छल्लहुग ठायति, संपातिमेसु चउलहुगातो आढत्त छगुरुए ठायति ।

आयरियस्स चउलहुगाओ आढत्त छेदे ठायति । एम तत्तिओ पगागे ॥५३३१॥

अहवा पंचण्हं मंजतीण समणाण चेव पंचण्हं ।

पणगादी आरद्धा, णेयव्वा जाव चरिमं तु ॥५३३२॥

पच सज्जतीओ इमा—खुड्डी, थेरी, भिक्षुणी, अभिसेगि, पवत्तिणी चेव । समणाण वि एते चेव पच भेदा । “पणगादि जाव चरिम” ति ॥५३३२॥

इमे पच्छित्ताणा —

पण दस पण्णर वीसा, पणवीसा मास चउर छन्चेव ।

लहुगुरुगा सव्वेते, लदादि असंप-संपदिसुं ॥५३३३॥

पणगादि जाव छम्मासो सव्वे एते लहुगुरुभेदभिण्णा सोलम भवति । छेदो मूल अणवट्टो पारचिय च एने चउरो, सव्वे वीस ठाणा । अहालदादिया तिण्णि पदा, असपाइमा दो पदा, अदिट्टेदिट्टा य दो पदा, चिट्ठणादिया य दसपदा ॥५३३३॥

इदार्णि चारणिया कज्जति —

पणगादि असपादिमं, संपातिमदिट्टमेव दिट्टे य ।

चउगुरुगे ठाति खुड्डी, सेसाणं वुड्ढि एक्केक्कं ॥५३३४॥

खुड्डी चिट्ठि असपाइमे अहालद काल अदिट्टे पचराइदिय, लहुया । दिट्टे पच राइदिया गुरुया ।

खुड्डी चिट्ठि असपातिमे पोरिसि अदिट्टे पच राइदिया गुरुया । दिट्टे वस राइदिया लहुया ।

खुडो चिट्ठइ असपाइमे अघिय पोरिसि अदिट्टे दसराइदिया लहुया । दिट्टे दस राइदिया गुरया ।
एय असपाइमे भणिय ।

सपाइमे पुण पचराइदिणहि गुरुएहि आढत्त पण्णरमराइदिणहि लहुए ठाति ।

एय चिट्ठनीए भणिय गिमीयनीए पचराइदिणहि गुरुएहि आढत्त पण्णरसहि गुरुहि ठाति ।

नुअट्टनीए असपाणिम-मपातिमेहि दममु राइदिणमु लहुएमु आढत्त वीसाए राइदिणहि लहुएहि ठाति ।

गिदायनीए वीसाए गुरुहि ठाति ।

*पयलायतीए पणुवीसाए लहुएहि ठाति ।

मज्झाए करेतीए पणुवीसाए राइदिणहि गुरुएहि ठाति ।

भाए भायनीए मासलहुए ठाति ।

आहार आहारतीए मासगुरुए ठाति ।

वियार करेतीए चउलहुए ठाति ।

काउस्ममा वरेतीए चउगुरुए ठाति ।

एय खुडोए भणिय । थेरमादियाण हेट्टा एक्क पद हुसेज्जा उवरि एक्क वड्ढेज्जा ॥५३३४॥

छल्लहुगे ठाति थेरी, भिक्खुणि छग्गुरुग छेदो गणिणीए ।

मूलं पवित्तिणी पुण, जहभिक्खुणि खुडुए एवं ॥५३३५॥

थेरीए गुरुपणगातो आढत्त छल्लहुगे ठाति ।

भिक्खुणीए दमण्ह राइदियाण लहुयाण आढत्त छग्गुरुए ठाति ।

अभिसेयाए दमण्ह इदियाण गुरुआण आढत्त छेदे ठाति ।

पवित्तिणीए पण्णरस लहुगा आढत्त मूले ठायति । एव सजतीण भणिय ।

इदागि सजयाण भण्णति - तत्थ अतिदेसो कीरति ।

जहा भिक्खुणी भगिता तहा खुडो भाणियव्वो ।

जहा गणिणी भणिया तहा भिक्खु भाणियव्वो ।

उवज्झायस्स गुरुएहि पण्णरसहि आढत्त अणवट्टे ठाति ।

आयरिओ वीसाए लहुएहि राइदिणहि आढत्त पारचिए ठाति ॥५३३५॥

गणिणिसरिसो उ थेरो, पवत्तिणीसरिसओ भवे भिक्खु ।

अट्ठोक्कंती एवं, सपदं सपदं गणि-गुरुणं ॥५३३६॥

गतार्था । गणिस्स सपद अणवट्टु गुरुस्स सपद पारचिय ॥५३३६॥

एमेव चिट्ठणादिसु, सव्वेसु पदेसु जाव उस्सग्गो ।

पच्छित्ते आएसा, एक्केक्कपदम्मि चत्तारि ॥५३३७॥

चिट्टणादिपदे असपातिमसपानिमे य अदिट्टु-दिट्ठेसु चउरो पच्छित्ता भवति । एव गिणीयणादिसु वि एक्केक्के चउरो पच्छित्ता भवति ।

अहवा - चिट्टणादिमु एक्केक्के चउरो आदेसा इमे - एक ओहिय, बितिय त चेव कालविसेसित्, नतिय छेदत पच्छित्त, चउय ^१महत्तल पच्छित्त ॥५३३७॥ सम्मत्त दगतीर त्ति दार ।

अधुता ^२जुवकम्यावमर प्राप्त । तत्थ गाहा -

मकम जुवे अचले, चले य लहुगो य होति लहुगा य ।

तम्मि वि मो चेव गमो, नवरि गिलाणे इमं होति ॥५३३८॥

जुवय णाम विट्टु (बीउ) पाणियपरिक्खित्त । तत्थ पुण देउलिया घर वा होज्ज, तत्थ वमत्ति गेण्हति चउतहागा, एय वयहिगहणगिप्फण । त जुवय मकमेण जलेण वा गम्मइ ।

सकमो दुविहो - चलो अचलो य । अचलेण जाति मासलहु ।

चलो दुविहो - सपच्चवाओ अपच्चव,ओ य । गिप्पच्चवाएण जइ जाति तो चउलहु सपच्चवाएण जाति चउगुरु । जलेण वि सपच्चवाएण गच्छति चउगुरु । गिप्पच्चवाए चउलहु । “तम्मि वि सच्चेव” पच्छद्व - तम्मि वि जुवते सच्चेव वत्तव्या जा उदगतीरण भणित्ता । ^३अधिकरण अतराए” त्ति एत्तओ आठन जाव “^४एक्केक्कपदम्मि चत्तारि” त्ति, णवरि - इमे दोसा अब्भहिता गिलाण पडुच्च ॥५३३८॥

दट्ठण व मतिकरण, ओभासण विरहिते व आतियण ।

परितावण चउगुरुगा, अकप्प पडिसेव मूलदुग ॥५३३९॥

गिलाणस्स उदा दट्ठु “सतिकरण” त्ति एरिमी मनी उपज्जति पियामि त्ति । ताहे ओभासइ । जइ दिज्जति तो सजमविराहणा । अह ण दिज्जति तो गिलाणा परिच्छतो, विरहिय साडूहि अण्णेहि य ताहे आदिगज्ज । जति सल्लेणे आदियति ता चउलहु । अहाऽकप्प पडिमेवति “दुग” पि गिहिल्लेणे अण्णतित्थिय-ल्लेणे वा तो मूल ।

अहवा - आदिए आउक्कायणिप्फण चउलहुअ । तसेसु य तसणिप्फण णणियव्व । पच्चिदिप्पु त्तिमु चरिम, तेण वा अगत्थेण परितावणादिणिप्फण ।

अह ओभासेतस्स ण देति असजमो त्ति काउ तत्थ अणागाढादिणिप्फण ।

अह उदात्तितो चरिम जणो य भणइ - “अहो ! णिरणुकपा मणत्तस्स वि ण देति” ।

अहवा - अकप्प पडिसेवतो ओहावेज्ज - एगो मूल, दोसु अण्णद्व, त्तिमु वरिम ॥५३३९॥

आउक्काएलहुगा, पूतरगादीतमेसु जा चरिमं ।

जे गेल्लणे दोसा, धित्तिदुब्बल-सेहे ते चेव ॥५३४०॥

एत्थ कायणिप्फण पच्छित्त भाणियव्व ।

उक्काय चउसु लहुगा, परिच्छ लहुगा य गुरुगमाहरणे ।

संधट्ठण परितावण, लहुगुरुगऽतिवायतो मूल ॥५३४१॥

कटा । जे गिलाणदोसा भणिता ते धितिदुब्बले वि दोसा, सेहे वि तच्चेव दोसा ॥५३४१॥
ज्वगेत्ति गय ।

इदाणि “आयावणा -

आतावण तह चेव उ, णवरि डमं तत्थ होति नाणत्तं ।

मज्जण-सिचण-परिणाम-वित्ति तह देवता पंता ॥५३४२॥

जदि दगसमीवे आयावेति तत्थ तह चेव अधिकरणादि दोसा । जे उदगतीरे भणिया जे जूवगे भणिया सभवति ते सन्ने अविमेसेण भाणियव्वा । दगसमीवे आयावेतस्स चउलहु । आयावणाए इमे अब्भहिया ‘मज्जण सिचण परिणाम वित्तिदेवतापत्तं’ त्ति ॥५३४२॥ मज्जण-सिचणपरिणामा एते तिणि पदा जुगव एवकगाहाए वक्काणेति ।

मज्जति व भिंचंति व, पडिणीयऽणुकपया व ण कोई ।

तण्हणपरिणतस्म व, परिणामो ण्हाण-पियणेमु ॥५३४३॥

त दगतीरातावग मज्जति ण्हवति पडिणीयत्तणतो, धम्मतो पयावणेण सिचति त सिगच्छडाहि अजलीहि वा, त पि अणुकपया पडिणीयतया वा कश्चित् अहभद्र प्रत्यनीको वा एव करेति ।

अहवा - नत्स दगतीरातावगस्स “तण्हपरिणतोमि” त्ति तिसिओ उण्हपरिणतो धम्मतो, एयावत्थ-भूयस्स धम्मियम्म ण्हाणपरिणामो उपपज्जति, तिसियस्स पियणपरिणामो त्ति ॥५३४३॥ दारा तिसि गता ।

“वित्ति” अस्य व्याख्या -

आउट्टुजणे मरुगाण अदाणे खरि-तिरिक्खिओभादी ।

पच्चक्ख देवपूयण, खरियाचरणं च खित्तादी ॥५३४४॥

पुव्वद्वस्स दमा विभासा -

आतावण साहुस्स, अणुकंपतस्स कुणति गामो तु ।

मरुगाणं च पदोसा, पडिणीयाणं च संका उ ॥५३४५॥

तस्स साहुस्स दगतीरे आयावेतस्स आउट्टो सो गामजणो अणुकपतो य पारणमदिणे गत्तादिय सविमेष देति, - “इमो पच्चक्खदेवो त्ति किं अहं अन्नेसि मरुगादीण दिन्नेण होहिंति, एयस्स दिण्ण महफल” त्ति । ताहे मरुगादि अदिज्जते पदोस गता । “खरि” त्ति दुवक्खरिता, “तिरिक्खी” महासहियादि, एयासु “छाभगे” त्ति अयम देति, - “एस सजतो दुवक्खरिय पग्ग्भुजति, तिरिक्खिय वा” ।

अहवा - दुवक्खरिय दाणसगहिय काउ महाजणमज्जे बोलावेति, महासहिय वा तत्थ सजतसमीवे नेउ सजयवेसेण गिण्हति, सजय च अप्पसागारिय ठवेति, अन्ने य बोल करेति - “एस सजतो एरिसो” त्ति । तत्थ जे पडिणीया तेसि सका भवति ड्ढ । निस्सकिए मूल । अघवा - जे पडिणीया ते सकति कीस एसो तित्थठाणे आयावेति, किं तेणट्ठेण, किं ताव मेहुणट्ठेण । “वित्ति” गत ।

इदाणि “तह देवता पता” अस्य व्याख्या - “पच्चक्खदेव” पच्छद्व । जत्थ आयावेति तस्स समीवे देवता जत्थ जणो पुव्व पूयापरो आसीत्, साहु आयावेत दट्ठ इमो पच्चक्खदेवो त्ति साहुस्स

१ गा० ५३१० । २ ऽऽ ता प क, इत्थपि पाठ । ३ गा० ५३४२ । ४ गा० ५३४८ । ५ गा० ५३४२ ।
६ गा० ५३४८ ।

पूय काउमारद्वो न देवताए, सा देवया जहा मरुगा पट्टा तहा दुवक्खरिग-तिरिक्खिसु करेज्ज, अहवा — सा दवना माहुक्ख आवरेत्ता अन्न च तम्स पडिक्ख करेत्ता दुवक्खरिग तिरिक्खी वा परिभुजत लोगस्स दसेत्ति । अहवा — खित्तिचिनादिग करेज्ज । अन्नाओ वा अकप्पपडित्तेवणा अकिरियाओ दरिसेज्ज । जम्हा तत्थ एत्तिया दोमा तम्हा तत्थ दगतीरे न ठाएज्जा ॥५३४५॥

वीयपए ठाएज्ज वि दगतीरे —

पढमे गिलाणकारण, वितिए वसही य असति ठाएज्जा ।

रातिणियकज्जकारण, ततिए बितियपयजयणाए ॥५३४६॥

“पढम” ति दगतीर, तत्थ गिलाणकारणेण ठाएज्जा । “बितिय” ति जुवग तत्थ ठायज्जा वमखिनिमित्त । “ततिय” ति — आयावणा, “राइणित्” ति कुलगणसघकज्ज तेण राइणो कज्ज हवेज्ज, एने-तिन्निवि बितियपदा ॥५३४६॥

कह पुण गिलाणट्ठा दगतीराए ठाएज्जा ? —

विज्ज-दवियट्ठाए, णिज्जतो गिलाणो असति वसतीए ।

जोग्गाए वा असती, चिट्ठे दगतीरणोतारे ॥५३४७॥

वेज्जस्स सगास निज्जतो, ओसट्ठा वा [“असति”] अन्नत्थ निज्जनो, अन्नत्थ नत्थि वसधी दगतीरे य अत्थि ताहे तत्थ ठाएज्ज, गिलाणजोगा वा वसही अन्नत्थ नत्थि । अहवा — वीममणट्ठा दगतीराए मुहुत्तमेन ओयारिज्जइ तत्थ वि मणुयतिरियाण ओयरणमगे नोताग्ज्जति ॥५३४७॥

तत्थ ठियाण इमा जयणा —

उदगतेण चिलिमिणी, पडिचरए मोत्तु सेस अणत्थ ।

पडिचर पडिमंलीणा, करेज्ज सव्वाणि वि पदाणि ॥५३४८॥

उदगतेण चिलिमिणी कडगो वा दिज्जइ, जे गिलाणपडियरगा ते पर तत्थ अच्छति सेमा अन्नत्थ अच्छति । पडियरगा वि पडिमंलीणा अच्छति जहा अमपातिसपातिनाण सत्ताण सत्तासो न भवति । एव ठिया सव्वाणि वि चिट्ठणादिपदाणि करेज्ज ॥५३४८॥ पढमे त्ति गत ।

इदाणि बितिय ति —

अद्धानिग्गयादी, संकम अप्पावहुं असुणं तु ।

गेलण्ण-सेहभावे संसट्ठसिणं व (सु) निव्ववियं ॥५३४९॥

अद्धानिग्गयादी दोसा साहुणो अन्नाए वसहिए सति जुवगे ठायति । तत्थ जति सकमेण गमण, नेसु सकमेसु अप्पावहुअ, जो एणाओ अचलो अपरिसाडी णिप्पच्चवातो य तेण गतव्व, अण्णेसु वि जो बहुणुणो तेण गतव्व । दियाःराओ य वसही असुणा कायव्वा । तत्थ य ठियाण जति गिलाणस्म सेहस्स वा पाणिय पियामो त्ति असुओ भावो उप्पज्जति ताहे त पणविज्जति, तहावि अट्ठिते भावे ताहे संसट्ठपाणग उसिणोदव वा “सुणिव्ववित” ति सुसीयल काउ दिज्जति, अण्ण वा फासुग ॥५३४९॥ जुवगजयणा गता ।

इदानीं 'रातिगियकज्जति -

उल्लोयण णिग्गमणे, ससहातो दगसमीव आतावे ।

उभयदतो जोगज्जे, कज्जे आउट्ट पुच्छणया ॥५३५०॥

चेतियाण वा तद्द्वविणासे वा सजतिकारणे वा अणम्मि वा कम्हि य कज्जे रायाहीणे, सो य राया त कज्ज ण करेति, सय दुग्गाहितो वा, तस्साउट्टणाणिमित्त दगतीरे आतावेज्ज । त च दगतीर रण्णो ओलोयणठिय णिग्गमणवेहे वा । तत्थ य आतावेतो ससहाओ आतावेति उभयदतो धितिसघयणेहि । तिरियाण जो अवतरणपहो मणुयाण य पहाणादिभोगट्टाण त च वज्जेउ आतावेइ । कज्जे त महातवज्जुत दट्ठु अल्लिएज्ज, राया आउट्टो य पुच्छेज्जा - 'किं कज्ज आयावेसि ? अह ते कज्ज करेमि, भोगे वा पयच्छामि, वरेहि वा वर जण ते अट्ठो' । ताहे भणाति साहू - 'ण मे कज्ज वरेहि, इय सवकज्ज करेहि' ॥५३५०॥

इमेरिसो सो य सहाओ -

भावित करण सहायो, उत्तर-सिंचणपहे य मोत्तूण ।

मज्जणगाइणिवारण, ण हिंडति पुप्फ वारेति ॥५३५१॥

धम्म प्रति भावितो, ईसत्ये धणुवेदादि कयकरणे सजमकरणे वा कयकरणे, ससमयपरसमयगहियऽत्यत्तणओ उत्तरसमत्यो, अप्पणो वि एरिसो चेव । सो य सहाओ जति कोइ अणुकूलपडिणीयत्तणेण सिंचति वा मज्जति वा पुफाणि वा आलएति तो त वारेति । तम्मि गामे णगरे वा सो आयावगो भिक्ख ण हिंडइ, मा मरुगादि पट्ठुा विसगरादि देज्ज ॥५३५१॥

जे भिक्खू सागणियसेज्जं अणुप्पविसइ, अणुप्पविसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

सह अगणिणा सागणिया ।

सागणिया तू सेजा, होति सजोती य सप्पदीवा य ।

एतेसिं दोण्हं पी, पत्तेय-परुवणं वोच्छं ॥५३५२॥

सागणियसेज्जा दुविधा - जोती दीवो वा । पुणो एक्केक्का दुविधा - असव्वराती सव्वराती य । असव्वरातीए दीवे मासलहु । सेसेसु तिसु विकप्पेसु चउलहुगा पत्तेय ॥ ३५२॥

दुविहा य होति जोई, असव्वराई य सव्वरादी य ।

ठायंतगाण लहुगा, कीस अगीयत्थ सुत्तं तु ॥५३५३॥

“जोई” ति उद्दिश्यत । सेस कठ ।

चोदगाह -

अणत्थि अगीयत्थो वा, सुत्ते गीओ य कोति णिदिट्ठो ।

जा पुण एगाणुणा, सा सेच्छा कारणं किं वा ॥५३५४॥

आयरिणह -

एयारिसम्मि वासो, ण कप्पती जति वि मुत्तणिदिट्ठो ।
 अव्वोक्कडो उ भणितो, आयरिओ उवेहती अत्थं ॥५३५५॥
 जं जह सुत्ते भणियं, तहेव तं जति वियारणा णत्थि ।
 किं कालियाणुओगो, दिट्ठो दिट्ठि प्पहाणेहिं ॥५३५६॥
 उस्सग्गसुतं किंची, किंची अववाइय मुणेयव्वं ।
 तदुभयसुत्तं किंची, सुत्तस्स गमा मुणेयव्वा ॥५३५७॥
 णेगेसु एगगहणं, सलोम-णिल्लोम अकसिणे अजिणे ।
 विहिभिण्णस्स य गहणे, अववाउस्सग्गिय सुत्तं ॥५३५८॥
 उस्सग्गठिई सुद्धं, जम्हा दव्वं विवज्जय लहइ ।
 न य तं होइ विरुद्धं, एमेव इम पि पासामो ॥५३५९॥
 उस्सग्गे गोयरम्मी, णिसिज्जऽकप्पाववायओ निण्हं ।
 मंसं दल मा अट्ठिं, अववाउस्सग्गियं सुत्तं ॥५३६०॥
 णो कप्पति वाऽभिण्णं, अववाएणं तु कप्पती भिण्णं ।
 कप्पइ पक्कं भिण्णं, विहीय अववायउस्सग्गं ॥५३६१॥
 कत्थति देसग्गहणं, कत्थइ भण्णंति निरवसेसाइ ।
 उक्कमकमजुत्ताइं, कारणवसतो णिउत्ताइं ॥५३६२॥
 देसग्गहणे बीए, हि सुइया मूलमाइणो होति ।
 कोहाति अणिग्गहिया, सिंचंति भवं निरवसेसं ॥५३६३॥
 सत्थपरिण्णा उक्कमे, गोयरपिंडेसणा कमेणं तु ।
 जं पि य उक्कम्पकरण, तं पिऽभिनववग्गममातट्ठा ॥५३६४॥
 बीएहि कंदमादी, विसुइया तेहि सव्ववणकायो ।
 भोमातिका वणेण तु, समेदमारोवणा भणिता ॥५३६५॥
 जत्थ उ देसग्गहणं, तत्थ उ सेसाणि सुइयवसेणं ।
 मोत्तूण अहीकारं, अणुओगधरा पभासेति ॥५३६६॥
 उस्सग्गेणं भणिताणि जाणि अववादओ य जाणि भवे ।
 कारणजाएण सुणी !, सव्वाणि वि जाणियव्वाणि ॥५३६७॥

उस्सग्गेण णिसिद्धाणि जाणि दव्वाणि संथरे मुण्णिणो ।
कारणनाए जाते, सव्वाणि वि ताणि कप्पति ॥५३६८॥

चोदगाह -

जं पुव्वं पडिमिद्धं, जति तं तस्सेव कप्पती भुज्जो ।
एवं होयऽणवत्था, ण य तित्थं णेव मच्चं तु ॥५३६९॥
उम्मत्तवायसरिस, खु दसणं न वि य कप्पऽकप्प तु ।
अह ते एव सिद्धी, न होज्ज सिद्धी उ कस्सेवं ॥५३७०॥

आयरिओ -

ण वि किं चि अणुण्णायं, पडिसिद्धं वा वि जिणवरिंदेहिं ।
एसा तेसि आणा, कज्जे सच्चेण होयव्वं ॥५३७१॥
कज्ज णाणादीयं, उस्सग्गववायओ भवे सच्चं ।
तं तह समायरतो, तं सफलं होइ सच्चं पि ॥५३७२॥
दोसा जेण णिरुंभति, जेण खिज्जंति पुव्वकम्माइं ।
सो सो मोक्खोवाओ, रोगावत्थासु समण व ॥५३७३॥
अग्गीतस्स ण कप्पति, तिविहं जयणं तु सो ण जाणाति ।
अणुण्वणाइजयणं, सपक्ख-परपक्खजयणं च ॥५३७४॥
णिउणो खलु सुत्तथो, न हु सक्को अपडिबोहितो नाउं ।
ते सुणह तत्थ दोमा, जे तेसिं तहिं वसंताणं ॥५३७५॥
अग्गीया खलु साहू, णवरं दोसा गुणे अजाणंता ।
रमणिज्ज भिक्खु गामे, ठायंती जोइसालाए ॥५३७६॥

एत्ततो (५३५४) आढत जाव 'अग्गीया' गाह (५३७६) ।

एयाओ सव्वाओ गाहाओ जहा उदगसालाए भणिता तहा भाणियव्वा ।

सजोइवसघीए ठियाण इमे दोसा -

पडिमाए भामियाए, उड्ढाहो तणाणि वा तहिं होज्जा ।

साणादि वालणा लाली, मूसए खंभतणाईं पलिप्पेज्जा ॥५३७७॥

तेण ज्रोतिषा पडिमा भामिज्जेज्जा, तत्थ उड्ढाहो एतेहिं पडिणीयताए णारायणादिपडिमा
भामिता, तत्थ गेण्हादी दोसा ।

सथारगादिकया वा तणा पलिवेज्ज ।

साणेण वा उम्मुए चालिए पलीवण होज्ज ।

जत्य पदीवो तत्य मूसगो “लाल” ति वट्टी त कट्टि, तत्य खभो पलिप्पइ गिवेसणाणि वा पलिप्पति ॥५३७७॥ बितिय० गाहा (५१५८) अट्ठाणनिग्गया० गाहा (५१६४) ॥५३७८॥ ॥५३७९॥ कट्ठाया पूर्ववत् ।

सजोतिवमहीए दव्वतो ठायतस्स इमे दोसा पच्छित्त च -

^१उवकरणे^२पडिलेहा, ^३पमज्जणा^४वास पोरिसि मणे य ।

णिक्खमणे य पवेसो, आवडणे चेव पडणे य ॥५३८०॥

चउण्ह दाराण इम वक्खाण -

पेह पमज्जण वासए, अग्गी ताणि अकुव्वतो जा परिहाणी ।

पोरिसिभंगे अभंगे, मजोती होति मणे तु रति अरति वा ॥५३८१॥

जति उवगरण ण पडिलेहेइ, ‘मा छेदणेहि अगणिसघट्टो भविस्सइ’ ति तो मासलहु उवधिणिप्फण वा । ते य अपडिलेहुनस्स सजमपरिहाणी भवति । अह पडिलेहेति तो छेदणेहि अगणिकायसघट्टो भवति, तत्य चउलहु । सुतपोरिसि ण करेति मामलहु, अत्थपोरिसि ण करेति मासगुरु, सुत णासेइ चउलहु, अत्थ णासेति चउगुरु । मण्ण य जइ जोइसालाए रती भवति “सजोतीए सुह अच्छिजइ” तो चउगुरु, अह अरती उप्पजइ, जोतीए दोस भणइ तो चउलहु ॥५३८१॥

^१आवासए ति अस्य व्याख्या -

जति उस्सग्गे ण कुणति, ततिमासा सव्वअकरणे लहुगा ।

वंदण-थुती अकरणे, मासो संडासगादिसु य ॥५३८२॥

“जोति” ति काउ जत्तिया का उस्सग्गा ण करेति तत्तिया मासलहु । सव्व आवस्सय ण करेति चउलहुगा । अह सजोइयाए आवस्सय करेति तहावि जत्तिया उस्सग्गा करेति अगणिविराहण ति काउ तत्तिया चउलहुया । सव्वम्मि चउलहुग चेव । अगणि ति काउ वदणय न देति, थुतीतो ण देति, सडासय ण पमज्जति उवसता, तिसु वि पत्तेय मासलहु । अह करेति तह वि मासलहु । छेदणगेहि य अगणिविराहणाए चउलहु ॥५३८२॥

^२णिक्खमणे य पच्छद्व अस्य व्याख्या -

आगस्मिया णिसीहिय, पमज्ज आसज्ज अकरणे इम तु ।

पणग पणगं लहु लहु, आवडणे लहुग जं चऽण्णं ॥५३८३॥

णिक्खमना आवासिय ण करेति तो पणग, पविसता णिसीहिय ण करेति तो पणग चेव । अघवा-पविसता णिता वा ण पमज्जति, वमहिं वा ण पमज्जति तो मायलहु अह पमज्जति तो मासलहु, पमज्जतस्स य छेदणेहि अगणिविराहणे चउलहु । आसज्ज ण करेति मासलहु । ^३आवडण ति उम्मुग्रादिसु पखलणा तत्य चउलहु । ‘ज चऽन’ ति अणागाढपरितावणणिप्फण ॥५३८३॥

अघवा - “^४ज चऽऽण्ण” ति -

सेहस्स विसीयणता, ओसक्कऽहिसक्क अण्णाहिं नयणं ।

विज्जविज्जण तुयट्ठण, अहवा वि भवे पलीवणता ॥५३८४॥

मेहो कोइ सीयतो विसीएज तेण वा उज्जालिते जइ अण्णो तप्पइ तो चउलहु। जत्तिया वारा हत्था परावत्तेइ तावेइ वा अण्ण वा गाय तत्तिया चउलहुगा। “ओसक्केइ” त्ति उस्सारेइ उम्मुय “अहिसक्केइ” त्ति अगणि तेण उत्तुअत्ति, सुयतो जग्गतो वा त अगणि अण्णत्थ गेति, सुयतो वा जत्ति विउम्भावत्ति-एएसु सव्वेसु पत्तेय चउलहुआ पयावमाणस्म पमादेण पलिप्पेज्जा ॥५३८४॥

तत्थिम पच्छित्त -

गाउय दुगुणादुगुणं, बत्तीसं जोयणाइ चरिमपदं ।

चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥५३८५॥

जइ गाउय डज्झति तो ० ० । अद्धजोयण डज्झति ० ० । जायण ० ० ० । दोहि जोयणेहि ० ० ० । चउहि जोयणेहि छेदो । अट्ठहि मूल । सोलसहि अणवट्ठो । बत्तीसाए चरिम ॥५३८५॥

गोणे य साणमादी, वारणे लहुगा य जं च अहिकरणं ।

लहुगा अवारणम्मि, खंभतणाइं पलीवेज्जा ॥५३८६॥

अह गोणसाणे वारेति मा पलीवण करेहि त्ति तो चउलहुगा । वारिया य हरिताथी विराहेत्ता वच्चति, अधिकण तत्थ वि चउलहु, कायणिप्फण वा । अह ण वारेति तत्थ खंभ तणादि वा पलीवेज्जा ॥५३८६॥

तत्थ वि -

गाउय दुगुणादुगुण, बत्तीसं जोयणाइ चरिमपद ।

चत्तारि छच्च लहु गुरु, छेदो मूलं तह दुगं च ॥५३८७॥ पुव्वव

जम्हा एते दोसा तम्हा णो जोतिसालाए ठाएज्जा, कारणे ठायति -

अद्धानिगतादी, तिव्वसुत्तो मग्गिऊण असत्तीए ।

गीयत्था जयणाए, वसति तो जोतिसालाए ॥५३८८॥

पुव्ववणितो अववातो गाममज्जे जा जोतिसाला देवकुल वा । इमो कुम्भकारसालाए अववादो, जेण कुम्भकारस्म पचसालाओ भणिया,

इमाओ -

पणिया य भंडसाला, कम्मे पयणे य वग्घरणसाला ।

इंधणसाला गुरुगा, सेसासु वि होति चउलहुगा ॥५३८९॥

एतेसि इमा विभासा -

कोलालियावणा खलु, पणिराला भंडसाल जहिं भंडं ।

कुंभारसाल कम्मे, पयणे वासासु आवातो ॥५३९०॥

तोसलिए वग्घरणा, अग्गीकुंडं तहिं जलति णिच्चं ।

तत्थ सयंवरहेउं, चेडा चेडी य छुब्भंति ॥५३९१॥

पणियसाला जत्थ भायणाणि विक्केति, वाणिय कुम्भकारो वा एसा पणियसाला ।

भडसाला जहिं भायणाणि सगोवियाणि अच्छति ।

कम्मसाला जत्थ कम्म करेति कुम्भकारो ।

पयणसाला जहिं पच्चति भायणाणि ।

इधणसाला जत्थ तण करिसभारा अच्छति ।

वग्धारणसाला तोसलिविसए गाममज्जे साला कीरइ । तत्थ अगणिकुड णिचवमेव अच्छति सयवरणिमित । तत्थ य बहवे चेडा एक्का य सयवरा चेडी पविसिज्जति, जो से चेडीए भावति त वरेति । एयासु सव्वासु इम पच्छित ङ्क । ॥५३६१॥

णवर -

इधणसाला गुरुगा, आलिचे तत्थ णासिउं दुक्ख ।

दुविहविराहणा झुमिरे, सेसा अगणी उ सागरियं ॥५३६२॥

पुव्वद्ध कठ । अण्ण च इधणसालाए झुसिर तत्थ दुविधा विराधणा - आयविराहणाए चउगुरुगा, सजमविराधणाए तत्थ सवट्टादिक ज आवज्जति त पावति । सेसासु पणियसालादिमु सागारिय पयणसालाए पुण अगणिदोसो ॥५३६२॥

एयासु अववादेण ठायतम्म डमो कमो -

पढमं तु भंडमाला, तहिं सागारि णत्थि उभयकाले वि ।

कम्माऽऽपणि णिसि णत्थी, सेसकमेणिधण जाव ॥५३६३॥

अण्णाए वसहीए असति पढम भडसालाए ठाति, तत्थ उभयकाले वि सागारिय नत्थि । उभय-
वालो - दिया रातो य । ततो पच्छा कम्मसालाए । ततो पच्छा पणियसालाए ।

अहवा - कम्मपणियसालाण कमो णत्थि, तुल्लदोसत्तणतो, । सेसेसु पयण वग्धारण-इधणाइसु घसति कमेण ठाएज्जा ॥५३६३॥

ते तत्थ सन्नविट्ठा, गहिता संथारगा विही पुब्बं ।

जागरमाणवसंती, सपक्खजयणाए गीयत्था ॥५३६४॥ कठथा

तत्थ वसताण इमा जयणा -

पासे तणाण सोहण, ओसक्कऽहिसक्क अन्नहिं नयणं ।

संवरणा लिपणया, छुक्कार णिवारणोकड्डी ॥५३६५॥

पुरातना गाथा । अगणिकायस्स पासे तणाणि विसोहिज्जति अक्कतियतेणेषु वा ओसक्कज्जति, ग्लोवणभएण वा अक्कतियतेणेषु वा उत्सक्कज्जति, गिलाणट्टा सावयभएण वा अट्ठाणे वा विवित्तासीय व तेण अइसक्कावेज्जा वि, अण्णाहि वा सोउमणो नेज्जा, बाहिं वा ठवेज्जा, कते वा कज्जे छारेण सवरिज्जति, मक्कमइ ति वुत्त भवति मल्लगेण वा, अहाउअ पालेत्ता विज्झाहिति । खमो छगणादिणा वा लिप्पति । गिलवणभया साणो गोणो तेणो वा तत्थ छुत्ति हडि ति वा भन्नइ, तह वि अटता वारिज्जति, सहसा वा लिप्ते तत्थतो उक्कट्ठिज्जति णेव । तणाणि वा, कडमो वा उदम घूलोहिं वा विज्झविज्जति, पाल वा कज्जति ५३६५॥

सजोनिवसहीए उवकरण-पडिलेहुणादिदारेसु इम जयण करेति—

कडओ व चिलिमिली वा, असती सभए व बाहि जं अंतं ।

ठागामति सभयम्मि व, विज्झायज्जणिम्मि पेहंति ॥५३६६॥

जोतोए अतरे कडओ कज्जति, चिलिमिली वा । अपति कडगचिलिमिलीए वा जति य उवहितेगग-
भय अत्थि ताहे अतोवही बाहि पडिलेहिज्जति, अहवा — बाहि पि तेणगभय ठागो वा णत्थि ताहे विज्झाए
अगणिम्मि पेहति ॥५३६६॥

णिता ण पमज्जंति, भूगा वा संतु वंदणगहीणं ।

पोरिमि वाहि मणेण व, सेहाण व देति अणुसट्ठि ॥५३६७॥

णिता विसता वा ण पमज्जति, आवासग वाइयजोग विरहिय भूग करेति, वारसावत्तवदण
ण दिति, पोरिमि सुत्तत्थाण बाहि करिंति । अह बाहि ठागो णत्थि ताहे “मणे” ति मणसा अणुपेहति ।
जत्थ सेहो अणो वा उदिते राग गच्छति तत्थ अणुसट्ठि दति गीयत्था ॥५३६७॥

आवास वाहि अमती, ठित वंदण विगड जतण थुतिहीण ।

सुत्तत्थ वाहियंतो, चिलिमिणि काउण व सरंति ॥५३६८॥

गताथा । बाहि असति ठागस्म जो जहिं ठिओ सो तहिं चेव ठिओ पडिक्कमति वदणहीण ।
विगडणा आलोयणा, त जयणाते करेति । धूईतो मणसा कडति । सुत्तत्थ बाहि गयत्थ जोतिअतरेवि चिलिमिलि
काउ अतो चेव सुत्तत्थे सरति ॥५३६८॥

इमा अणुसट्ठो सेहादीण —

नाणुज्जीया साहू, दव्वुज्जोयम्मि मा हु सज्जित्था ।

जस्म वि न एति निदा, स पाउया णिमोलियं गिम्हे ॥५३६९॥

मज्जति ति रज्जते । जस्म वि सजोतिए णिदा ण एइ सोवि पाउओ सुवति । अह गिम्हे धम्मो सो
अच्छोणि णिमिल्लेति जाव सुवति ॥५३६९॥

भूगा विसति णिति व, उम्मुगमादी कताइ अख्खिंता ।

सेहा य जोइ दूरे, जग्गंती जा धरति जोती ॥५४००॥

भूगा विसति प्रविशति । भूगति णिसोहिय ण करेति णितो आवस्सिय ण करेति, आवट्टणादिभया
अगणिसवट्टणभया उम्मुगादि ण च्छिवेति, सेहे अगीता अपरिणता णिद्धमा य जोनीए दूरे ठविज्जति, जे य
गीता वमभा ते जग्गति जाव सो जोति धरति ॥५४००॥

अहवा —

विहिणिग्गतादि अतिनिदपेन्नितो गीओ सक्किउं सुवति ।

सावयभय उस्सक्कण, तेणभए होति भयणा उ ॥५४०१॥

अद्धानविवित्ता वा, परकड असती सयं तु जालंति ।

सल्लादी व तवेउं, कयकज्जे छारअक्कमणं ॥५४०२॥

विहिण्गगतो आत अतीवनिद्रातितो वा ताहे ओसक्किउ सुवति, गीयत्यो सीहसावयादिभए वा ओसक्कति, तेणभए य भयणा, अक्कतिएसु विज्झावेति, इयण्णेषु ण विज्झावेति ।

अद्धाने विविन्ना मुसिता सीतेण वा अभिभूता ताहे जो परकडो अगणी तत्थ विसीतति, परकडस्स असति सय जालेति, सूलादिसु कज्ज काउ छारेण अक्कमति णिव्वेति वा ॥५४०२॥

सावयभए आणिति व, सोउमणा वा वि बाहि णीणति ।

बाहि पलीवणभया, छारे तस्सासति णिव्वावे ॥५४०३॥

अण्णतो वि आणेंति, वसहीतो बाहि गेति । सेस कठ ॥५४०३॥ जोति त्ति गत ।

इदाणि ^१दीवो -

दुविहो य होति दीवो, असव्वराती य सव्वराती य ।

ठायंते लहु लहुगा, करीम अगीतत्थसुत्त तु ॥५४०४॥

^२एततो आढत्त सव्व भाणियव्व ।

“^३णत्थि अगीतत्थो वा” गाहा (५२५४) “एयारिसम्मि” गाहा (५३५५) “ज जह गाहा (५३५६) “उत्सग्गसुय” गाहा (५३५७) जाव ते “तत्थ सन्नविट्ठा” गाहा (५३६४) ।

पडिमाभासण ओरुभणं, लिपणा दीवगस्स ओरुभणं ।

उव्वत्तण परियत्तण, छुक्कारण वारणोक्कट्ठी ॥५४०५॥

जत्थ पडिमाभासणभय होजा तत्थ तओ ओगासाओ पडिमा फेडिज्जति, जति सक्कति फेडेत्तु । अह ण सक्केति तो दीवतो फेडिज्जति, खभकडणकुड्डाणि य लिप्पति । अहवा - सकलदीवगो ण सक्कति उत्तारेउ ताहे वत्ती उवत्तिज्जति, णिपोलिज्जति वा साणगोणादि वा छुक्कारिज्जति, पविसता वा साणगोणादी वारिज्जति, बही वा ओक्कट्ठिज्जति, तेण्णेषु वा उत्सक्किज्जति, सप्पादिभए वा ॥५४०५॥

संकलदीवे वत्ती, उव्वत्ते पीलए य मा डज्जे ।

रुतेण व तं तेन्लं, घेत्तूण दिया विगिंचंति ॥५४०६॥ कठा

पासे तणाण सोहण, अहिमक्कोसक्क अण्णहिं णयणं ।

आगाढकारणम्मि, ओसक्कऽहिसक्कणं कुज्जा ॥५४०७॥

दीवगस्स जे पासे तणा, दीवग वा अहिसक्केति । “ओसक्कति” त्ति उत्सक्केति वा अण्णहिं वा गेति । ज त उत्सक्कण ओसक्कण करेंति त आगाढे करेंति, णो अणागाढे ॥५४०७॥

मज्जे व देउलादी, बाहिं व ठियाण होति अतिगमणं ।

जे तत्थ सेहदोसा, ते इह आगाढजतणाए ॥५४०८॥

अधवा - ते साधु विद्याले आगता देउले ठातेज्ज, मज्जे वा गामदेउल तद्विवसतो सागारियाउल यएवि आगता तत्थ दिवसतो ण ठायति, बाहिं अच्छति, विसरिएण्णु सागारिएण्णु सभाए पविसति,

१ गा० ५३५२ । २ भाष्ये गृहीत्वात् । ३ अत्र सर्वासु यत्र यत्रोदगसालादि तत्र जोडसालादि उपयुज्य इतव्य भाष्यवचनात् ।

बाहिं वासे तेगमावयादिभय जाणिऊण तत्थ सजोतियाए सालाए सदीवए वा जे सेहादिदोसा पुक्खुत्ता ते इह कारणे आगढे जयणाए कायव्वा ॥५४०८॥

तत्थ जति कहि वि पलिवेज्जा तो इमा जयणा -

अण्णाते तुमिणीया, णाते दट्ठूण करण सविउलं ।

बाहिं च देउलादी, संमहा आगय खरंटो ॥५४०९॥

जति केणइ ण णाता 'एत्थ सजया ठिय' ति तो तुमिणीया णासति । अथ णाया लोणेण तो पलित्ठ टट्ठ महता सहेण सविउल बोल करेति ताव जाव जत्थ बहुजणो मिलिओ, ताहे बहुजणस्स पुरओ भणति- "केणति पावेण पनीवण कत, तुम्भेहिं चेव पलीवित 'समणा दुक्कतु' ति, 'अग्ग च सब्ब उवकरण एत्थ दट्ठ', एव ते खरटिया ण किंचि उल्लवेति "अ (तु) म्हेहिं पलीवित" ति । जत्थ वि बाहिं गामस्स देउल तत्थ वि एव चेव, अथवा - देउलातो बाहिं णिग्गनु ससद् कज्जति ॥५४०९॥

जे भिक्खू सचित्तं उच्छुं भुजइ, भुंजंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥४॥

जे भिक्खू सचित्तं उच्छुं विडसइ, विडसंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥५॥

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं उच्छुं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥६॥

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं उच्छुं विडसइ, विडसंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥७॥

"भुजति ज भुक्खत्तो, लीला पुण विडसण ति णायव्वा ।

जीवजुत सच्चित्त, अच्चित्त सचेयण पतिट्ठ ।"

एतेसि चेव चउण्ह सुत्ताण इमो अतिदेसो -

सच्चित्तव्रफलेहिं, पण्णरसे जो गमो समक्खातो ।

सो चेव णिरवसेमो, सोलममे होति इक्खुम्मि ॥५४१०॥ कठा

आणादिया दोसा चउलहु पच्छित्त ।

इमे उच्छुविभागसुत्ता -

जे भिक्खू सचित्तं अंतरुच्छुयं वा उच्छुखंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा

उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

जे भिक्खू सचित्तं अंतरुच्छुयं वा उच्छुखंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा

उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा विडसइ, विडसंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं अंतरुच्छुयं वा उच्छुखंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा

उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

जे भिक्खू सचित्तपइट्ठियं अंतरुच्छुयं वा उच्छुखंडियं वा उच्छुचोयगं वा उच्छुमेरगं वा

उच्छुसालगं वा उच्छुडालगं वा विडसइ, विडसंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥११॥

पव्वसहितं तु खंडं, तव्वज्जिय अंतरुच्छयं होइ ।

डगलं चक्कलिछेदो, मोयं पुण छल्लिपरिहीणं ॥५४११॥

पेरु उभयो पव्वदेससहितखंड पव्व, उभयो पेरुरहिय अंतरुच्छय, चक्कलिछेदछिण डगल भण्णति, मोय अम्भतरो गीरो ॥५४११॥

चोयं तु होति हीरो, सगलं पुण तस्म बाहिरा छल्ली ।

काणं पुण डुक्कं वा, इतरजुतं तप्पड्डं तु ॥५४१२॥

वसहीरसहितो चोय भण्णति, सगल बाहिरी छल्ली भण्णति, पुणकाणिय अगारइय वा वुत्तय, सियालादीहि वा खइय, उवरि मुक्क, इयर ति सचित्त तम्मि सचित्तविभागे पतिट्टिय सचित्तपतिट्टित्त भण्णति ॥५४१२॥

जे भिक्खु आरण्णमाणं वण्णंधाण अडविजत्तासंपइ 'ट्टिताण
अमणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

जे भिक्खु आरण्णमाणं वण्णंधाण अडविजत्ताओ पडिनियत्ताण
असणं वा ताणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेतं वा साइज्जति ॥सू०॥१३॥

अरण्ण गच्छतीति आरण्णा, वण धावतीति वण्णधा, आरण्य वणार्थाय धावतीत्यथ । तैसि जत्तापट्टियाण जो असणादी गेण्हति जत्तापडिनियत्ताण असणादिसं खउरादि वा जो गेण्हति तस्स आगादी दोसा, चउलहु च पच्छित्त ।

तणकड्डहारगादी, आरण्ण वणंधगा उ विण्णेया ।
अडविं पविसंताण, णियत्तमाणान तत्तो य ॥५४१३॥

आदिसद्दातो पुप्फफलमूलकदादीण, तैसि वण्णधाण अडविं पविसंताण ज सबल पकत्त, तत्तो णियत्ताण ज किंच ३धुण्णादि । सेस कठ ॥५४१३॥

तण-कड्ड-पुप्फ-फल-मूल-कंद-पत्तादिहारगा चेव ।
पत्थयणं वच्चंता, करेति पविसंति तस्सेसं ॥५४१४॥

तणादिहारगा अडविं पविसंता अप्पणो प-थयण करेति, सेस उव्वरिय सिद्ध ।

अडवी पविसंताणं, अहवा तत्तो य पडिनियत्ताणं ।
जे भिक्खु असणादी, पडिच्छते आणमादीणि ॥५४१५॥ कठा

इमे दोसा -

पच्छाकम्ममत्तिंते, णियट्ठमाणे वि बंधवा तेसिं ।

अच्छिज्जा णु तदा सा, तद्व्वे अण्णदव्वे य ॥५४१६॥

अडविपविसतेण ज सबल कण त साधूण द तु पच्छा अण्णो अण्ण करेति । सण्णियट्ठाण वि ण वेत्तव्व, तेनि वधवा तद्व्वे अण्णदव्वे वा कतासा अच्छिज्जा । तद् व चेव ज घरातो णीत, अण्णदव्व ज अडविए कदच्चुण्णादि उपपज्जति ॥५४१६॥

पत्थयण दाउ इम करेति -

कम्मं कीतं पामिच्चियं च अच्छेज्ज अगहण दिगिंछा ।

कंदादीण व घातं, करेति पंचिदियाणं च ॥५४१७॥

अण्णो 'कम्म' ति अण्ण करेति, अण्णो वा किणाति, 'पामिच्च' ति उच्छिज्ज गेण्हति, अण्णोसि वा अच्छिज्जति, अह ण गेण्हति पत्थयण तो दिगिचति, छुहाए ज अणागाढादि परिताविज्जति, अहवा - भुक्खितो कदादि गेण्हति, अत्थ परित्ताणतण्णिप्फण्ण ।

अधवा - भुक्खितो ज लावगनित्तिरादि घातिस्सति, परित्तावणादिणिप्फण्ण तिसु चग्मि ॥५४१७॥

अरणातो णिग्गच्छमाणो जो गेण्हति तस्स इमे दोसा -

चुण्णखउरादि दाउं, कप्पट्ठग देह कोव जह गोवो ।

चड्डण अण्णे व वए, खउरादि वप्सखडे भोयी ॥५४१८॥

चुण्णो वदरादियाण, खोग्गखदिग्गमादियाण खउरो, भत्तसेस वा साधूण दाउ कप्पट्ठिण्हि पुत्तण्तुभत्ति-जगादिण्हि अण्णहि य तदासा अच्छमाणेहि जातिज्जमाणा - "देह णे कदे मूले चुण्णखउरभत्तसेस वा", ते भणति - "दिण्णा अम्हहि साधूण" एव भणते ते पण्णा रुण्ण करेताणि ताणि दट्ठूण पदोस गच्छेज्ज, जहा गोवो पिड-णिज्जुत्तीए । एतेसु वा चड्डु तमु अडवीमु अण्ण वा आणेति खउरादि "भोइ" ति भारिया तीए सह असखड भवति, अनरायदामा य । जम्हा एवमादि दामा तम्हा वण पविसताण णिताण वा ण वेत्तव्व ॥५४१८॥

भवे कारण -

अमिवे ओमोयरिए, गयदुट्ठे भए व गेलण्णे ।

अट्ठाण रोहए वा, जयणागण्ण तु गीयत्थे ॥५४१९॥

जयण ति पणयपग्गिहाणीण जाट चउलहु पत्ता ताहे मावसेस गेण्हति ॥५४१९॥

जे भिक्खू वमुराडय अवमुराडय वयइ, वयतं वा साहिज्जति ॥सू०॥१३॥

वमूणि ग्यणाणि, तेसु गतो वमुराती, अधवा - गतो दीप्तिमाभ्राजते वा शोभत इत्यर्थ, त त्रिवरीष जा भणति तम्म चउलहु ।

डमा णिज्जुत्ती -

वसुमं ति व वमिमं ति व, वसति व वुमिमं व पज्जया चरणे ।

तेसु गतो वुमिराती, अवुमिमि रतो अवुसिराती ॥५४२०॥

वसु ति रयणा, ते दुवित्रा-दब्बे भावे य । दब्बे मणिरयणादिया, भावे णाणादिया । इह भाववसूहि अधिकारो । नागि जस्स अत्थि सो वसुग ति भण्णति ।

अथवा - इदियाणि जस्स वने वट्टति सो वसिम भण्णति ।

अथवा - णाणदमणवरित्तोसु जो वग्नि गिच्चकाल सो वम (वुमिम) ति रातिणिमो भण्णति ।

अहवा - वुत्तुम्वति पाप अन्यपदायाख्यात, चारित्र वा वुमिम ति वुच्चनि । वसति वा चारित्ते वसुरातो भण्णति ।

अहवा - “पज्जया चरणे” ति एत चारित्तियस्स पज्जता एगट्ठिता इत्थं । एम वुसिरादी भण्णति, पडिपक्खे अबुसिराती ॥५८२०॥

अहवा -

बुमि मविग्गो भणितो, अबुसि अमंविग्ग ते तु वोच्चत्थं ।

जे भिक्खु वएज्जा ही, सो पावति आणमाढीणि ॥५४२१॥

कठा । वोच्च थ ति वुमिरातिय अबुमिगतित भणति ङ्का ॥५४२१॥

एतय पढम वुमिरानिय अबुसिरातिय भण्णति इमेहि कारणेहि -

रोमेण पडिनिवेसेण वा वि अकयन्नु मिच्छभावेणं ।

संतगुणे छाएत्ता, भामंति अगुण असंते उ ॥५४२२॥

कोइ कस्सति कारणे अकारणे वा रुद्धे, पडिनिवेसण एसो पूतिजइ अह ण पूइज्जामि, एवमादिभिभासा । अकयणुयाए एतेण तस्म उवयारो वओ ताह मा एयस्स पडिउवयारो कायव्वो होहिइ ति, मिच्छाभावेण मिच्छत्तेण उद्दिण्णं । मेम कठ ॥५४२२॥

असविग्गा सविग्गाजण इमेण आलवणेण हीलति -

धीरपुरिमपरिहाणी, नाउणं मंदघम्मिया केई ।

हीलंति विहरमाणं, मंविग्गजणं अबुद्धीतो ॥५४२३॥

के पुण धीरपुरिसा ?, इमे -

केवल-मणोहि-चोइस-दस-णवपुव्वीहि विरहिए एण्हि ।

सुद्धमसुद्धं चरणं, को जाणति कस्स भावं च ॥५४२४॥

एने सपइ णत्थि, जति सपइ एते होतो तो जाणता असीदताण चरण सुद्ध इयरेसि असुद्ध, केवलमादिणो णाउ पडिचोयता पच्छित्त च जहारुह देता चित्तति अगमतरगो वि एरिसो चेव भावो, ण य एगतेण बाहिरकरणजुतो अभयतरकरणयुक्तो भवति ।

कह ? उच्यते - जेण विवजतो दीसति, जहा उदायिमारयस्स पसण्णचदस्स य । बाहिर अग्निसुद्धो वि भरहो विसुद्धो चेव ॥५४२४॥

बाहिरकरणेण समं, अभिभतरयं करेति अमुणेतो ।

णेगंता तं च भवे, विवज्जओ दिस्सते जेणं ॥५४२५॥

जति वा णिरतीचारा, हवेज्ज तव्वज्जिया य सुज्जेज्जा ।

ण य होति णिगतिचारा, संघयणघितीण दोव्वल्ला ॥५४२६॥

साम्यकाल जति णिरतिचारा हवेज्ज अहवा - तव्वज्जिया णाम ओहिणणादीहि वज्जिते जइ चरित्तमुद्धी हवेज्ज ना जुत्त वत्तु - इमे विसुद्धचरणा, इमे अविमुद्धचरणा । संघयणघितीण दुव्वल्लनगतो 'य - पच्छिन्न करेति ॥५४२६॥

संघयण-घित्तदुव्वल्लत्तगतो चेव इमं च प्रोसण्णा भणति -

को वा तहा समत्थो, जह तेहि कयं तु धीरपुरिमिहं ।

जहमत्ती पुण कीरति, [जहा] पइण्णा हवइ एवं ॥५४२७॥

धीरपुरिमा नित्यकरादी जहासत्ति ए कीरति एव भणमाणे दढा पइण्णा भवति, अनलिय च भवति जो एव भणति । जो पुण अण्णहा वदति अण्णहा य वरति, तस्स सच्चपइण्णा ण भवति ॥५४२७॥

आयरिओ भणति -

मव्वेमि एगचरणं मरण मोयावगं दुहसयाणं ।

मा रागदोसवमगा, अप्पणो सरण पलीवेह ॥५४२८॥

सव्वेहि भवतिद्वयाण चरणं च सररीरणसाण दुक्खाण विमोक्खणकर, तं तुव्वे सय सीयमाणा अप्पणो चरित्तेण रागागुणा उज्जयचरणाण चरणदोसमावण्णा मा भणह - "चरणं गत्थि, मा जत्थेव वसह तं चेव सरण पलीवेह णामहंत्यथ" ॥५४२८॥

किं च -

सत्तुण्णासाणा खलु, परपरिवाओ य होति अलिय च ।

धम्मे य अबहुमाणो, साधुपदोसे य संसारो ॥५४२९॥

चरणं गत्थि त्ति एव भणतेहि ३साधुहि सत्तुण्णासाणो कतो भवति पवयणस्स परिभवो कतो भवति, अनियवयगं च भवति, चरणधम्मे पलीवेज्जते चरणधम्मे य अबहुमाणो कतो भवति, साधुणं य पदोसो कतो भवति, साधुपदोसे य णियमा संसारो बुद्धितो भवति ॥५४२९॥

किं च -

खय उवसम मीसं पि य, जिणकाले वि तिविहं भवे चरण ।

मिस्सामो च्चिय पावति, खयउवसमं च णण्णत्तो ॥५४३०॥

तित्थकरकाले वि तिविहं चरित्ति - खत्थिय उवसमिय खमोवसमिय च । तम्मि वि तित्थकरकाले मिस्सानो चेव चरित्तानो खत्थिय उवसमिय वा चरित्ति पावति, नान्यस्मात् । बहुतरा य चरित्तविसेसा खमोवसमभावे भवति ॥५४३०॥

किं च तीर्थकाले वि

अइयारो वि हु चरणे, ठितस्स मिस्से ण दोसु इत्तरेसु ।

वत्थातुरदिट्ठता, पच्छिस्सेणं स तु विसुज्जो ॥५४३१॥

‘इयरेसु’ ति खतिए उवसमिए य । जहा वृत्य खारादीहिं सुज्झति, आतुरस्स वा रोगो विरेयणओमहपन्नोहिं सोहिज्जति, तथा साधुस्स भिस्सचरणादिअइयारो पच्छित्तं सुज्झति ॥५४३१॥

ज च भणिय - “अतिसयरहिंएहिं सुद्धासुद्धचरण ण णज्जति भावो” ।

तत्थ भण्णति -

दुविहं चैव पमाणं, पच्चक्खं चैव तह परोक्खं च ।

ओधाति तिहा पढमं, अणुमाणोवम्मसुत्तितर ॥५४३२॥

ओहि मणपज्जव केवल च एय तिविध पच्चक्ख । धूमादग्निज्ञानमनुमान । यथा गौस्तथा गवय औपम्य । सुत्तमिति आगम । इयरति एय तिविध परोक्ख ॥५४३२॥

सुद्धमसुद्धं चरणं, जहा उ जाणंति ओहिणाणादी ।

आगारेहि मणं पि व, जाणति तहेतरा भावं ॥५४३३॥

पुब्बद्ध कठ । जहा परस्स भमुहणंति (भमुहाणण) बाहिरागारेहिं अतरगतो मणो णज्जति तथा “इयर” ति परोक्खणाणी आलोयणाविहाण सोउ पुज्जावरबाहियाहिं गिराहिं आचरणेहिं य जाणति चरित्त सुद्धासुद्ध भाव च सुद्धेतर ॥५४३३॥

चोदगाह - “जइ आगारेण भावो णज्जति तो उदात्तिमारदिण कि ण णातो ?”

आचार्याह -

कामं जिणपच्चक्खो, गूढाचाराण दुम्मणो भावो ।

तहएवि य परोक्खसुद्धी, जुत्तस्स व पण्णवीसाए ॥५४३४॥

काममिति अनुमितार्थे । जइ वि जे उदायिमारगादि गूढायारा तेसि छउमत्थेण दुवख उवलभति भावो, सो जिणाण पुण पच्चक्खो, तहावि परोक्खणाणी आगमाणुसारेण चरित्तसुद्धिं करेति चैव ।

कह ?, उच्यते - “जुत्तस्स व” ति जहा सुत्तोवउत्तो “मीसजायज्जोयरो एगो” ति पण्णरस उगमदोसा, दस एसणादोसा, एते पण्णवीस जहासुयाणुसारेण मोहनो चरण सोहेति, तथा सुत्ताणुसारेण पच्छित्तं देवो करतो य चरित्त सोधेति ॥५४३४॥

अणुज्जतचरणो इमेहिं कज्जेहिं होज्ज -

होज्ज हु वसणप्पत्तो, सरीरदोब्बल्लताए असमत्थो ।

चरण-करणे असुद्धे, सुद्धं मगं परूवेज्जा ॥५४३५॥

वसण आवती मज्जगीतादित वा, १ तम्मि ण उज्जमति, अहवा - सरीरदुब्बल्लतणतो असमत्थो सज्झायपडिसेहणादिकिरिय काउ अकप्पियादिपडिसेहण च । अथवा - सरीरदोब्बला असमत्था अदधम्ममा एवमादिकारणेहिं चरणकरण से अविमुद्ध, तहावि अप्पाण गरिहतो सुद्ध साहुमग्ग परूवेत्तो आराधगो भवति ॥५४३५॥

इमो चेव अत्थो भण्णति -

ओमण्णो वि विहारे, कम्मं सिद्धिलेति सुलभञ्चोही य ।

चरणकरणं विसुद्धं, उववूहेतो परूवेतो ॥५४३६॥

कथा । जो पुण ओसण्णो होउ ओसण्णमग्ग उववूहइ, सुद्ध चरणकरणमग्ग गूहति इमेहि कारणेहि ।

इम च से दुल्लभबोहिअत्त फल -

परियायपूयहेतुं, ओसण्णाणं च आणुवत्तीए ।

चरणकरणं णिगूहति, तं दुल्लभबोहियं जाणे ॥५४३७॥ कथा ।

अहवा -

गुणसयमहस्सकलियं, गुणुत्तरतरं च अभिलसंताणं ।

चरणकरणाभिलासी, गुणुत्तरतरं तु सो लहति ॥५४३८॥

गुणाण मत्त गुणसत्त, गुणसयाण महस्सा गुणमयमहस्सा, छदोभगभया सकारस्स हुस्सता कता, ते य अट्टारमसीलगसहस्सा, तेहि कलिय जुत्त सखिय वा । किं त ? चारित्त जो त पससति । किं च गुणश्चासी उत्तर च गुणोत्तर, अहवा - अन्येऽपि गुणा सन्ति क्षमादयस्तेषा उत्तर त च गुणोत्तर सरागचारित्त, गुणुत्तरतर पुण अहक्खाय चारित्त भण्णति, त च जे अभिलसति, ते उज्जयचरणा इत्यथ । ते य उववूहते जो ओसण्णो अप्पणा य उज्जयचरणो होहति चरणकरणाभिलासी भण्णति स एववादी गुणुत्तरतर लभति अहक्खाय-चारित्रित्थिय । अहवा - गुणुत्तर भवत्थकेवलिसुह, गुणुत्तरतर पुण मोक्खसुह भण्णति, त लभति ॥५४३८॥

जो पुणोसण्णो -

जिणवयणभासितेणं, गुणुत्तरतरं तु सो वियाणित्ता ।

चरणकरणाभिधाती, गुणुत्तरतरं तु सो हणति ॥५४३९॥

गुणुत्तरतर चारित्र सावु वा अप्पणा य चरणकरणोवधाते वट्टति । अहवा - चरणकरणस्स जत्ताण वा निदापरोवधाय करेइ, स एववादी गुणुत्तर वा चारित्र मोक्खसुह वा हणति ण लब्भइ त्ति, जेण सो दीहससारित्तण णिवत्तेति ॥५४३९॥

जो ओसण्ण ओमण्णमग्ग वा उववूहति -

सो होती पडिणीतो, पंचण्हं अप्पणो अहितिओ य ।

सुहसीलवियत्ताण, नाणे चरणे य मोक्खे य ॥५४४०॥

पच पासत्थावि सुहसीला विहारलिगा ओधाविउकामा अवियत्ता अगीयत्था णाणचरणमोक्खस्स य एनेसि स वेसि पडिणीतो भवति ॥५४४०॥

इमेहि पुण कारणेहि ओसण्ण ओसण्णमग्ग वा उववूहेज्जा -

वितियपदमणप्पज्जे, वएज्ज अविकोविए वि अप्पज्जे ।

जाणंते वा वि पुणो, भयसा तच्चाति गच्छद्वा ॥५४४१॥

राया सिय भोसण्णाणुवत्तियो भया भणेज्जा । तत्त्वादि त्ति कश्चिद् वादी ब्रूयात् — “तपस्विन
अतपस्विन ब्रूवत पाप भवतीति न प्रनिज्ञा”, तत्प्रतिपातकरणे वुसिरातिय अबुसिरातिय भणेज्ज, दुब्बिक्खादिसु
वा भोसण्णभाविएसु खेत्तेसु अच्छत्तो भोसण्णाणुवत्तियो गच्छपरिपालणट्ठा भणेज्ज ॥५५४१॥

जे भिक्खु अबुसिराइयं वुसिराइयं वयइ, वयंत वा सातिज्जति ॥५०॥१४॥

एमेव वित्तियमुत्ते, अबुमीगातिं वएज्ज वुसिराति ।

कह पुण वएज्ज सोऊण अबुसिरातिं तु वुसिरातिं ॥५४४२॥कठा

एगचरिं मन्न्ता, सयं च तेसु य पदेसु वट्ठंता ।

सगदोसद्धायणट्ठा, केइ पमंमंति णिद्धम्मे ॥५४४३॥

कोइ पासत्थादीण एगवारिय भणति — ‘एस सुदरो, एयस्स एगगिणो ण केणइ सह रागदोसा
उप्पज्जति”, मो वि अप्पणा गच्छपजग्भगो तम्मि चेव ठाणे वट्ठति, सो य अप्पणिज्जदोसे छाएउकामा न
पासत्थादि एगचारि णिद्धम्म पमसति ॥५४४३॥

इम च भणति —

दुक्करय खु जहुत्तं, जहुत्तवाटुट्ठियावि सीदंति ।

एम नितिओ हु मग्गो, जहसत्तीए चरणमुट्ठी ॥५४४४॥कठा

एव भणते इमे दोसा —

अब्भक्खाण णिस्मकया य अस्संजमंमि य थिरत्तं ।

अप्पा मो अवि चत्तो, अवणवातो य तित्थस्स ॥५४४५॥

असतभावुब्भावण अब्भक्खाण, अबुसिरातिय वुमिरातिय भणति, सो य मीततो पसमिज्जमाण
णिस्सको भवति, मदधम्माण वि असज्जे थिरीकरण करेति, अप्पण च उम्मगपससणाते अप्पणो य उम्मगपहितो
चत्तो, तित्थस्स य अन्यपदार्थेन अवणवाद कृतो भवति ॥५४४५॥

कि च —

जो जत्थ होइ भग्गो, ओवामं सो परस्म अविदंतो ।

गंतु तत्थउचएंतो, इम पहाणं ति घोसेति ॥५४४६॥

अद्धाणगदिट्ठेण ओसण्णो उवसघारेयव्वो, मेस कठ ॥५४४६॥

कि च —

पुव्वगयकालियसुए, संतामंतेहि केइ खोभेति ।

ओसण्णचरणकरणा, इमं पहाणं ति घोसेति ॥५४४७॥

पुव्वगयकालियसुयनिबधपच्चयतो सीदति,

तत्थ कालियसुते इमेरिसो आलावगो —

“बहुमोहो वि य ण पुव्व विहरेत्ता पच्छा मवुडे काल करेज्जा, कि आराहए विराहए
गोयमा । आराहए, णो विराहए” । ()

एव पुष्पगण वि जे के वि आलावगा ते उच्चरिता । पर खोभति, अप्पणा खोभति — सीदतीत्यर्थ ।
ने य ओसणचरणकरणा “इम” ति अप्पणो चरिय पहाण घोसंति ॥५४४७॥

इमेमि पुरतो —

अबहुस्सुए अगीयत्थे, तरुणे मंदधम्मिए ।

परियारपूयहेऊ, सम्मोहेऊं निरुंभंति ॥५४४८॥

जेण आयापगणो ण भातितो एस अबहुस्सुतो, जेण आवस्सगादियाण अत्थो ण सुतो सो
अगीयत्थो, सोलसवरिसाण आढवेत्तु जाव न चत्तालीसवरिसो एस तरुणो, असविग्गो मदधम्मो, एते पुरिसे
विपरिणामेति, अप्पणो परिवारहेऊ, एतेहि य परिवारितो लोयस्स पूयणिज्जो होह, कालियदिट्ठिवाए
भणितेहि, अहवा — अभणिएहि वा सम्मोहेऊ अप्पणो पासे णिरु भति — धरतीत्यर्थ । अघवा — जो एव
पणवेति सो चेव अबहुस्सुओ अगीयत्थो वा तरुणो मदधम्मो वा । सेस कठ ॥५४४८॥

जत्तो चुतो विहारा, तं चेव पसंसए सुलभबोही ।

ओसणविहारं पुण, पसंसए दीहसंसारी ॥५४४९॥

जत्तो चुतो विहारा, सविग्गविहारातो बुओ त पससति जो सो सुलभबोही । जो पुण ओसण-
विहार पससति सो दीहसंसारी भवति ॥५४४९॥

बित्थियपदमणप्पज्जे, वएज्ज अबिकोविए व अप्पज्जे ।

जाणंते वा वि पुणो, भयसा तच्चादिगच्छट्ठा ॥५४५०॥ पूर्ववत्

जे भिक्खु वुसिरातियगणातो अबुसिराइयं गणं संकमइ, संकमंतं वा साइजइ ॥५४५१॥

वुसिरातियागणातो, जे भिक्खु संकमे अबुसिरातिं ।

वुसिरातिया वुसिं वा, सो पावति आणमादीणि ॥५४५१॥

वुसिरातियातो वुसिराइय चउमगो कायव्वो । चउत्थमगो अवत्थु । ततियमगे अणुणा ।
पढम तितिएसु सकमो पडिसिद्धो । पढमे सकमतस्स मासलहु । बित्थिए चउलहु ।

चोदगाह — “चुत्त बित्थिए पडिसेहो, पढममगे कि पडिसेहो” ?

आचार्याह — तत्थ णिक्कारणे पडिसेहो, कारणे पुणो पढममगे उवसपद करेति ॥५४५१॥

सा य उवसपया काल पडुच्च तिविहा इमा —

छम्मासे उवसंपद, जहण्ण बारससमा उ मज्झिमिया ।

आवकहा उक्कोसे, पडिच्छसीसे तु जाजीवं ॥५४५२॥

उवसपदा तिविहा — जहण्णा मज्झिमा उक्कोसा । जहण्णा छम्मासे मज्झिमा बारसवरिसे,
उक्कोसा जावज्जीव । एव पडिच्छगस्म सीसस्स एगविहो चेव जावज्जीव आयरिमो ण मोत्तव्वो ॥५४५२॥

छम्मासे अपूरंतो, गुरुवा बारससमा चउल्लहुगा ।

तेण वरं मात्थियं तु, भणितं पुण आरत्तो कज्जे ॥५४५३॥

जेण पडिच्छगेण छम्मासिया उवसपया कया सो जति छम्मासे अपूरित्ता जाति तस्स चउगुरुगा ।

जेण बारसवरिसा क्या ते अपूर्णिता जाइ चउलह । जेण जावज्जीव उवसपदा कता सो जाइ तस्स मामलहु । छण्ह मासान परेण गिक्कारणे गच्छत्तम्म मामलहु ।

जेण बारससमा उवसपदा क्या तस्स वि छम्मामे अपूरेतस्स चउगुहगा चेव । बारससमानो परेण गिक्कारणे मामलहु ।

जेण जावज्जीवोवसपया क्या तस्स छम्मामे अपूरेतस्स चउगुहगा चव, तम्मव बारससमाआ चउनहुगा ॥५४५३॥ एस सोही गच्छतो णितस्स भणितो ।

गच्छे पुण वसतम्म इमे गुणा -

भीतावामो रतीधम्म^१, अणायतणवज्जणं^३ ।

णिग्गहो य कसायाणं, एयं धीराण सामणं ॥५४५४॥

“भीतावामो” त्ति अस्य व्याख्या -

आयरियादीण भया, पच्छित्तमया ण मेवति अकज्जं ।

वेयावच्चउज्झयणेसु सज्जते तदुवयोगेणं ॥५४५५॥ कठ

पुव्वद्ध कठ । रतीधम्म^२ अस्य व्याख्या -

“वेयावच्च” पच्छद्ध । आयरियादीण वेयावच्च करेति । अज्झयणं ति सज्झाय करेति । तदुवओगो सुत्तत्थोवओगो, तेण सुत्तत्थोवओगेण वेयावच्चउज्झयणेसु रज्जति - रतिं करेइ त्ति वुत्त भवइ ।

अह्वा - तदुवओगो अप्पणो आयरिय दीहि य भण्णमणो वेयावच्चउज्झयणादिसु रज्जति ॥५४५५॥

“अणायतणवज्जण” त्ति अस्य व्याख्या -

एगो इत्थीगम्मो, तेणादिभया य अल्लियपगारे ।

कोहादी व उदिण्णे, परिणिव्वावेति से अण्णे ॥५४५६॥ कठ

“कसायणिग्गहो” अस्य व्याख्या - कोहादी पच्छद्ध । गच्छवासे वसतस्स अण्णे य आयरियादी परिणिव्वावेति सकसाए । गच्छवासे वसतेण एय वीरसासणे धीर-सासणे वा ज भणिय त आराहिय भवति ॥५४५६॥

इमे य अण्णे गच्छवासे वसतस्स गुणा -

णाणस्स होइ भागी, थिरयरतो दंसणे चरित्ते य ।

धण्णा आवकहाए, गुरुकुलवामं न मुचंति ॥५४५७॥

जम्हा गच्छवासे वसतस्स एवमादी गुणा तम्हा गिक्कारणे सविमोण सविमोसु वि सकमो ण कायव्वो ॥५४५७॥

कारणे पुण करेज्ज ते य इमे कारणा -

णाणद्ध दंसणद्धा, चरितद्धा एवमाइसंकमणं ।

संभोगद्धा व पुणो, आयरियद्धा व णातव्वं ॥५४५८॥

पाणट्टं त्ति अस्य व्याख्या -

सुत्तस्स व अत्थस्स व, उभयस्स व कारणा तु संकमणं ।

वीसज्जियस्स गमणं, भीओ य णियत्तई कोई ॥५४५६॥

पुब्बद्ध कठ । तेण अप्पणो आयरियाण ज सुत्त अत्थि त गहिय, अत्थि य से सत्ती अण्ण पि वेत्तु, ताहे जत्थ अत्थि अधिगमुत्त सविग्गेसु तत्थ सकमइ विमज्जितो आयरिएण, अविस्ज्जिएण ण गतव्व । अइ गच्छति तो चउलहुगा । विमज्जितो य इमे पदे आयग्गेज्जा जइ तेमि आयरियाण कक्खडचरिय सोउ कोति भीओ णियत्तेज्ज तो पणम ॥५४५६॥

चित्तेतो वइगादी, गामे वा संखडी अपडिसेहो ।

सीसपडिच्छग परिसा, पिसुगादायरियपेसविओ ॥५४६०॥

पणमं च भिण्णमासो, मासो लहुगो य सेसए इमं तु ।

संखडि सेह गुरुगा, पेसविओमि त्ति मासगुरुं ॥५४६१॥

पडिसेहगस्स लहुगा, परिमिल्ले छ तु चरिमओ सुद्धो ।

तेसि पि होति लहुगा, ज वाऽऽभव्वं तु ण लभंति ॥५४६२॥

एतेसि तिण्ह वि गाहाण अत्थो सह पच्छित्तेण मणगति -

चित्तेति-कि वच्चामि ण वच्चामि तत्थ अण्णत्थ वा चित्तेति भिण्णमासो (पणम) । वच्चतो वा वदयादिमु ^१पडिवज्जति, दधिखीरट्ठा उज्जत्तति वा मासलहु । आदिसद्दातो सण्णीसु वा दाणसड्डेसु भइसु मा दीह वा गोयर करेज्ज, अपत्त वा देसकाल पडिच्छेज्ज, सद्दादाणियगामे वा पडिवज्जति सव्वेसेतेसु पत्तेय मासलहु ।

सखडीए वा पडिवज्जति चउगुरुगा, पडिसेवगस्स वा पासे अतरा चिट्ठेज्ज तत्थ य तेसि पविसताण चउलहुगा, सेहेण सह चउगुरुगा, गहिओवकरणउवधिणिप्फण ।

पडिसेहगस्स पडिसेहत्तण करेतस्स चउलहु, मेहट्ठा करेतस्स चउगुरुगा ।

“सीसपडिच्छा” त्ति सो पडिसेहगो सीसपडिच्छए वावारेति तम्मि आगते णिउण ^२सुत्त पुच्छेज्ज, परिसिल्लस्स वा पासे अतरा पविसेज्जा तेसि तत्थ चउलहुगा, सह सेहेण चउगुरुगा, उवकरणे उवहिणिप्फण । परिसिल्लत्तग करेतस्स अप्पणो छल्लहुगा । पिसुया मकुणण वा भया णियत्तात्, अण्णतो वा गच्छति मासलहु ।

अहवा - तत्थ सपत्तो भणइ “आयरिएणाह तुज्ज समीव अमुगसुत्तत्थणिमित पेसविओ”, एव भणतस्स चउगुरु । “चरिमो” त्ति जो भणति - “अहं आयरियविसज्जितो तुज्ज समीवमागतो” सो सुद्धो । “तेसि पि होति लहुगो” त्ति अण्ण अभिघारेउ अण्ण वदतस्स चउलहु, पडिच्छनस्स वि चउलहु, ज च सचित्ताचित्त कि चि त तेण लभति, जत्थ पट्टवितो जो ^३पुव्वधारिउ तस्स त आभव्व ॥५४२२॥

एय चेव अत्थ सिद्धसेणखमासमणो वक्खाणेति ।

“भीमो णियत्तइ” नि अम्य व्याख्या -

मंमाहगस्स सोतुं, पडिपथियमाइयस्स वा भीमो ।

आचरणा तत्थ खरा, सयं च नाउं पडिनियत्तो ॥५४६३॥

मसाहय ण्णवच्चगो । सेस कठ्य ।

“चित्तेतो” ति अस्य व्याख्या -

पुव्वं चित्तेयव्वं, णिग्गतो चित्तेति किं णु हु करेमि ।

वच्चामि णियत्तामि व, तहिं व अण्णत्थ वा गच्छे ॥५४६४॥

जाव ण णिग्गच्छति आयरिय वा ण पुच्छति ताव सुचितिय कायव्व, सेस कठ ॥५४६४॥

“वइयगामसखडिमादिसु” इमा व्याख्या -

उव्वत्तणमप्पत्ते, लहुगो खद्वे भुत्तम्मि होति चउलहुगा ।

निमट्ट सुवण्ण लहुगो, संखडि गुरुगा य जं चऽण्णं ॥५४६५॥

पयातो वइयमादिमो उव्वत्तति । अप्पत्त वा वेल पडिक्खति । ‘ज चऽण्ण’ ति सखडो हत्येण हत्ये सघट्टियपु वे, पाएण वा पाए अक्कतपुव्वे, सीसेण वा सीसे आउडियपुव्वे सजमविराहणा वा भायणभगो वा भवति । रेस गतार्थ कठ्य ॥५४६५॥

इदाणि “पडिसेह सीसपडिच्छग” अस्य व्याख्या -

अमुगत्यऽमुओ वच्चति, मेहावी तस्स कट्ठणट्ठाए ।

अण्णगामे पथे, उवस्सए वा वि वावारे ॥५४६६॥

अभिलावसुदुपुच्छा, रोल्लेणं मा हु ते विणासेज्जा ।

इति कट्ठंते लहुगा, जति सेहट्ठाए तो गुरुगा ॥५४६७॥

अक्खर-वज्जणसुद्ध, मं पुच्छह तम्मि आगए संते ।

घोसेहि य परिसुद्ध, पुच्छह णिउणे य सुत्तथे ॥५४६८॥

को ति आयरिमो विमुदसुत्तयो फुडवियडवज्जणाभिलावी अपडिसेवितो वि पडिसेहगो चेव भावतो लब्धमिति, तेण ष सुय जहा अमुगत्य अमुगो माहू मेहावी, अमुगसुत्तणिमित्त गच्छति, तेणवि चितिय मा म अतिक्कमेउ, तस्स कट्ठणट्ठाए “उड्डावणक करेति, उवरिएण अण्णगामेण गच्छनस्स पथे वा अप्पणो वा उवस्सए सीसे पडिच्छए य वावारेति, जण्णिमित्त सो वच्चति तम्मि आगते - “त तुब्बे परियट्ठेह, अहिलाव-सुद्ध अत्थ च गुणेज्जह, अत्थ च मे पुच्छिज्जह, ते एव णिक्काएति, पुणो पणो मा ते रोल्लेण विणासेज्जह त्ति, अण्ण पि सुय अक्खरवज्जणयोसुद्ध पडेज्जह, तम्मि आगते अण्ण पि णिउणे सुत्तथे पुच्छेज्जह” एव कट्ठिए चउलहु, सेहट्ठा कट्ठिए चउरु ॥५४६८॥ पविसत्तस्स वि एव चेव ।

इदानीं 'परिसिल्लस्स व्याख्या -

पाउतमपाउता घट्ट मट्ट लोय खुर विविहवेसधरा ।

परिसिल्लस्स तु परिसा, थलिए व ण किंचि वारेति ॥५४६६॥

तत्थ पवेसे लह्मगा, सच्चित्ते चउगुरुं च नायव्व ।

उवहिणिप्फणं पि य, अचित्त देते य गिण्हंते ॥५४७०॥

परिसिल्लो सव्वस्स सबिगामविग्गस्स परिसणिमित्तं सगहं करेति । घट्टा फेणादिणा जघाधो, तेल्लेण केसे सगीर वा मट्टेति, थलि त्ति देवद्रोणी । सेस कठ ॥५४७०॥

इदानीं "अपिमुन गुरुहि पेसितो मि" त्ति एतेसि व्याख्या -

ढिंकुण-पिसुगादि तहिं, सोउ नातु व सन्नियत्तंते ।

अमुग सुतत्थनिमित्ते, तुज्झंति गुरुहि पेसवितो ॥५४७१॥ कठथा

चोदगाह - "गुरुहिं पेसिओ मि त्ति भणतस्स को दोसो" ?

आचार्याह -

आणाए जिणवराणं, न हु बलियतरा उ आयरियआणा ।

जिणआणाए परिभवो, एव गव्वो अविणओ य ॥५४७२॥

त्रिणिदेहिं चैव भणिय णिहोसो विधिमागतो पडिच्छियव्वो त्ति, णो आयरियाणुवत्तोए पडिच्छियव्वो, जिणआणा य पराभविता भवति, पेसतस्स उवसगज्जतस्स पडिच्छित्तस्स वि तिहिं वि गव्वो भवति, तित्थकराण सुयस्स य अविणओ कओ भवति ॥५४७२॥

जो ज अभिधारेउ पट्ठितो तत्थ जो अच्चासगेण गतो सो सुद्धो -

अण्णं अभिधारेतुं, पडिसेह परिसिल्ल अण्णं वा ।

पविसेते कुलातिगुरु, पच्चित्तादि च से हातुं ॥५४७३॥

जो पुण अण्ण अभिधारेउ अपडिसेहगस्स पडिसेहगस्स परिसिल्लस्स अण्णस्स वा पासे पविसति पच्छा कुलगणसधयेरेहिं णातो तो ज तेण सच्चित्तात्तितादि उवणीय त से हरति ॥५४७३॥

ते दोवुगलभित्ता, अभिधारिज्जंति देति तं थेरा ।

घट्टण वियारणं ति य, पुच्छा विप्फालणेगट्टा ॥५४७४॥

कीस तुम अण्ण अभिधारेत्ता एत्थ ठितो जेण य पडिच्छित्तो ? सो वि भणति - "अकिं ते एस पडिच्छित्तो ?" त सच्चित्तादिग थेरा जो पुव्वअभिधारितो तस्स विसज्जति । सेस कठ ॥५४७४॥

घट्टेउं सच्चित्तं, एसा आरोवणा य अविहीए ।

वितियपदममंविग्गे, जयणाए कयम्मि तो सुद्धो ॥५४७५॥

“घट्टण” त्ति पुच्छा, जइ निक्कारणे तत्थ ठितो तो सच्चित्तादी हरेज्ज, पच्छित्त च से अविधिपदे दिज्जति णिक्कारणे त्ति वुत्त भवति ।

पडिमेहगम्स अववाओ भणति - “वित्तियपद” पच्छद्व । ज सो अभिघारेति सो असविग्गे ताह जयणाए पडिसेह करति ।

का जयणा ? , पढम सर्व्वेहि भणावेति, मा नत्थ वच्चाहि, पच्छा अप्पणो वि भणावेज्ज, पुव्वुत्तेण वा सीसपडिच्छगवावारणपयोगेण घरेज्जा, ण दोसो । एव करेतो कारणे पुज्झति, णवर - ज तत्थ सच्चित्ताचित्त मव्व पुव्वाभिघारियस्स पयट्टेयव्व ॥५४७४॥

इदमेवत्थ भणति -

अभिघारेते पासत्थमादिणो तं च जइ सुतं अत्थि ।

जे अ पडिसेहदोमा, ते कुव्वंता हि णिदोसो ॥५४७५॥

ज सो सुत अभिलभति, जइ सुत अत्थि तो पडिमेहत्तण करेतस्स वि जे दोसा भणिया ते ण भवति ॥५४७६॥

जं पुण सच्चित्तादी, तं तेसि देंति ण वि सयं गेण्हे ।

वित्तिय चित्तूण पेसे, जावत्तियं वा असंथरणे ॥५४७७॥

पुव्वद्व कठ । ज वत्थादिग अचित्त त कारणे अप्पणा विमूरेतो असिवादिकारणेहि अण्ण अलभतो ण पेसेति जावत्तिय उवउज्जति, जेण असंथरण वा तावत्तिय गेण्हति, सेस विसज्जेति, अह्वा - सव्व पि ण विसज्जेति ॥५४७८॥

कारणे इमो सच्चित्तस्स अववातो -

णाऊण य वोच्छेयं, पुव्वगए कालियाणुओगे य ।

सयमेव दिसाबंधं, करेज्ज तेसि ण पेसेज्जा ॥५४७९॥

जो तेण सेहो आणितो सो परममेहावी, अप्पणो गच्छे णत्थि को वि आयरियपदजोगो, ज च से पुव्वगत कालियसुय च तस्स गाहगो णत्थि, ताहे तेसि वोच्छेद जाणिऊण त्थ सेह अप्पणो सीस णिबधइ, ण पुव्वाभिघारियस्स पट्टवेइ ॥५४८०॥

इदार्णि परिसिल्ले अववादो भणति -

असहाओ परिसिल्लत्तणं पि कुज्जा उ मंदधम्मेषु ।

पप्प व काल-ऽद्धाणे, सच्चित्तादी वि गिण्हेज्जा ॥५४८१॥

असहायो आयरियो पलिसिल्लत्तण पि करेइ त स वेग्ग असविग्ग वा सहाय गेण्हति ।

सिस्सा वा मदधम्मा गुरुस्स बावार ण बहति, ताहे अण्ण सहाय गेण्हति ।

सङ्गा वा मदधम्मा गुरुणो जोगा ण देति ताहे लद्धिसपण्ण परिगेण्हति ।

दुष्प्रवृत्तादिकाले वा अद्वाण वा पविसतो - एवमादिकारणेहि परिमिल्लत्तण करेतो सुद्धो ।
सचित्ताचित्त पुण पेसेति ण पेसेति वा, पुव्वभणियकारणेहि ॥५४७६॥

जो सो अभिघारेतो वच्चति तस्म अववादो भण्णति -

असिवादिकारणेहि, कालगतं वा वि सो व्व इतरो तु ।

पडिसेहे परिसिल्ले, अण्ण व विसिज्ज चितियपदे ॥५४८०॥

जत्थ गतुकामो तत्थ असिवा अतरा वा, अहवा - जो अभिघारेतो आयरिमो सो कालगतो,
'इयो' ति जा सो पहावितो साधू पडिसेहपरिसिल्ले अण्णस्स वा आयरियस्स पास पविसेज्ज, चितियपदेण
ण दोसो ॥५४८०॥ एय अविसेसित्त भणिय ।

इम 'आभव्वाणाभव्व विसेसिय भण्णति -

वच्चंतो वि य दुविहो, वत्तमवत्तस्स मग्गणा होति ।

वत्तम्मि खेत्तवज्जं, अव्वत्तेणं पि तं जाव ॥५४८१॥

पुव्वद्वस्स इमा विभासा -

सुअ अव्वत्तो अगीओ, वएण जो सोलसण्ह आरेणं ।

तव्विवरीतो वत्तो, वत्तमवत्ते च चउभंगो ॥५४८२॥

सुएण वि अव्वत्तो वएण अ अव्वत्तो चउभंगो कायव्वो । सुएण अगीयो अव्वत्तो । वएण जो सोलसण्ह
बासाण आरतो । तव्विवरीतो वत्तो जाणियव्वो । सो पुण वच्चतो ससहाओ वच्चति असहाओ वा ॥५४८२॥

वत्तस्स वि दायव्वो, पट्टप्पमाणे सहाओ किमु इतरे ।

खेत्तविवज्जं अव्वंतिएसु जं लब्भति पुरिल्ले ॥५४८३॥

आयरिण पट्टप्पमाणेसु साहुसु वत्तस्स वि सहाओ दायव्वो अव्वस्स, किमग पुण अवत्ते ।

"वत्तम्मि खेत्तवज्जम्मि" अस्य व्याख्या - "खेत्तविवज्ज" पच्छद्व । वत्तो अव्वत्तो वा
अव्वतिया मे सहाया तेणेव सह गतुकामो परखेत मात्तु ज सो य लब्भति त सव्व पुरिमस्स अभिघारेतस्स
आभवति, परखेत ज पुण लद्ध त खेतियस्स आभवति ॥५४८३॥

जति णेतु एतुमाणा, जं ते मग्गिल्ल वत्तपुरिमस्स ।

नियमव्वत्तसहाओ, णेउ णियत्तति ज सो य ॥५४८४॥

अह ते सहाया त णेउ पराणेत्ता पडियागतुकामा ज ते सहाया लब्भति त मग्गिल्लस्स अप्पण्णिज्ज
आयरियस्स आभवति । सो पुण वच्चतो अप्पणा जति वत्तो तो ज सो लब्भति त पुरिमस्स अभिघारिज्जतस्स
देति । "अव्वत्तेणं पि जाव" ति अस्य व्याख्या - अव्वत्तो पुण नियमा सहायो भवति, तस्स सहाया
जे ते य णेतु णियत्तितुकामो ज सो ते य लभति त सव्व पुव्विल्लायरियस्स आभवति ॥५४८४॥

वितियं अपट्टप्पंते, ण देज्ज वत्तस्स सो सहाओ तु ।

वइयाइ अपडिवज्जं तगस्स उवही विसुद्धो उ ॥५४८५॥

बिनिम ति अववादतो, आयरिभो अपहुप्तेमु सहाय न देज्जा, सो य अप्पणा सुब-वएसु वत्तो, तस्म वड्ढादिमु अप्पडिवज्जनस्म उवहीए वाधानो ण भवति, अह वड्ढादिमु पडिवज्जइ तो तण्णिक्कण्ण, उवक्कण्णोवघायट्ठानुमु व वट्ठतस्म उवही उवहम्मति ॥५४८२॥

एगे तू वच्चंते, उग्गहवज्जं तु लभति सच्चिचं ।

वच्चतो उ गिलाणो, अंतरा उवहिमग्गणा होति ॥५४८६॥

जो वत्तो एगागी गच्छति सो जति अण्णस्स आयरियस्स जो उग्गहो त वज्जेउ अणोग्गहखेत्ते किञ्चि लभति त सव्व अभिधारिज्जने देति । अहवा - एगागी वच्चतो दो तिण्णि वा आयरिए अभिधारेज्ज, तस्म य अंतरा गेलण्ण होज्ज, जे अभिधारिता तेहि आयरिएहि मुय जहा अम्हे धारता साधू यतो गिलाणो जाओ ॥५४८६॥

आयरिय दोणिण आगत, एक्के एक्के व णागए गुरुगा ।

न य लभती सच्चिचं, कालगए विप्परिणए य ॥५४८७॥

जे ते अभिधारिता ने जति सव्वे आगता तो तेण ज अतराले लद्ध न तेमि सव्वेसि साधारण ।

अह तत्थ एगो आगतो अवसेमा णागता । जे नागया तसि चउगुरु, त सचित्ताचित्त ण लम्भति । जो गतो गवेसगो तस्स त सव्व आभव्वति । कालगते वि एव चेव ।

अह गिलाणो वि विप्परिणमो जस्म सो ण लभति, ज पुण अभिधारिज्जते लद्ध पच्छा विपरिणतो ज विपरिणते भावे लद्ध त लभति, विप्परिणए भावे ज लद्ध त ण लभति ॥५४८७॥ एसा सुप्रभिधारणे आभवतमग्गणा भणिया ।

इमा अण्णा वाताहडमग्गणा भण्णति -

पंथमहायमसड्ढो, धम्म सोऊण पव्वयामि ति ।

खेत्ते य बाहि परिणत, सहियं पुण मग्गणा इणमो ॥५४८८॥

एक्को कारणितो विहरति, तस्स पथे असडो वाताहडो सहाओ मिलितो, सो य तस्स साहुस्स पासे धम्म सुजेता असुणेता वा पव्वयामि ति परिणामो जातो - “दिक्खेह म” ति । सो परिणामो जति साधुपरिग्गहियखेत्तस्स अनो जातो तो सो सेहो खेतियस्स आभवति, अह बाहि खेत्तस्स अपरिग्गहे खेत्ते परिणामो होज्ज तो तस्सेव साहुस्स आभव्वो ॥५४८८॥

खित्तिम्मि खेत्तियस्सा, खेत्तबहिं परिणते पुरिन्लस्स ।

अंतरपरिणयविप्परिणए य कायव्व मग्गयता ॥५४८९॥

पुव्वद्ध गतार्थ । णवर - “पुरिन्लस्स” ति साधो पूर्वाचार्यस्तेत्यर्थ । एव अंतरा पव्वज्जापरिणामो पुण विपरिणामो, एव जत्थ अवट्ठितो परिणामो जाओ सो पमाण - खेत्ते खित्तियस्स, अखेत्ते तस्सेव । जो पुण सम्महिट्ठी तस्म जइ दसणपज्जातो णत्थि तो इच्छा, दसणपज्जायअच्छिणो जेण सम्मन गाहितो तस्म भवति । ॥५४८९॥

एस विहं तु विसज्जिते, अविसज्जि लहुगमामग्गणापुच्छा ।

तेसिं पि होति लहुगा, जं वाग्गभव्वं च ण लभति ॥५४९०॥

अविसर्जितो जइ सीसो गच्छइ ङ्क, पडिच्छगो जइ जाइ तो चउलहुगा ।

अह विसर्जितो दोच्च वार अणापुच्छाए गच्छइ, सीसो पडिच्छओ वा तो मासलहु, तेसि पि पडिच्छनाण चउलहुगा, ज च सचित्तादिग त ते पडिच्छनगा ण लभति ॥५४९०॥

आयरिओ पुण इमेहि कारणेहि ण विसर्जेति -

परिवार-पूयहेउं, अविसर्जंते अमत्तदोसा वा ।

अणुलोमेण गमेज्जा, दुक्खं खु विसर्ज्जिउं गुरुणो ॥५४९१॥

अप्पणो परिवारणिमित्त बहूहि वा परिवारितो पूयणिज्जो भविरस, मम सीसो अणस्स पास गच्छति त्ति णेहममत्तेण वा ण विसर्जेति । पच्छद्व कठ । जम्हा अविसर्ज्जिते सोही ण भवति, ण य सो गुरु पडिच्छइ तम्हा पुच्छियव्व ॥५४९१॥

सा य आपुच्छा दुविहा - अविधी विधी य । अविधियापुच्छणे त चेव पच्छित्त ज अपुच्छिए । विधिपुच्छाए पुण सुद्धो ।

सा इमा विधी -

नाणम्मि तिणिण पक्खा, आयरिय-उवज्झाय-सेसमाणं तु ।

एक्केक्के पंच दिवसो, अहवा पक्खेण एक्केक्कं ॥५४९२॥

णाणमिस्सेण जतो तिणिण पक्खे आपुच्छ करेति, तस्थ आयरिय आपुच्छति पच दिणा, जति ण विसर्जेति तो उवज्झाय पचदिणे, जति सो वि ण विसर्जेति तो गच्छ पचदिणे पुणो आयरियउवज्झायगच्छ च पचपचदिणे, पुणो एते चेव पचपचदिणे, एव एक्केक्के पक्खो भवति, एव तिणिण पक्खा । अहवा - अणुबद्ध आयरियपक्ख, पच्छा उवज्झाय, पच्छा गच्छपक्ख, एव वा तिणिण पक्खा । एव जति ण विसर्ज्जितो तो अविसर्ज्जितो चेव गच्छति ॥५४९२॥

एतविहिमागत तू, पडिच्छ अपडिच्छणमि भवे लहुगा ।

अहवा इमेहि आगत, एगादि पडिच्छए गुरुगा ॥५४९३॥ कठ

अह एगादिकारणेहि आगत पडिच्छति तो चउगुरुगा ॥५४९३॥

एगे अपरिणए या, अप्पाहारं य थेरए ।

गिलाणे बहुरोगे य, मदधम्मं य पाहुडे ॥५४९४॥

एगादि आयरिय छड्ढेत्ता आगतो । अपरिणता वा सेहा, आहारवत्थपादादियाण अकप्पिया तेसि सहिय आयरिय छड्ढेत्ता आगत । अप्पाहारो आयरितो त चेव पुच्छित्ता सुत्तत्थे वायण देवि, त मोत्तुमागतो । थेर गिलाण आयरिय छड्ढेत्ता आगतो । बहुरोगी णाम जो चिरकाल बहूहि वा रोगेहि अभिभूतो त छड्ढेत्ता आगतो । अहवा - सीसो गुरु वा मदधम्मा, तस्स गुणे ण सामायारी पडिपूरेति त “छड्ढेत्ता” आगतो । “पाहुडे” ति आयरिएण सह कलहेत्ता आगतो ॥५४९४॥

एतारिसं विउसज्ज, विप्पवासो ण कप्पती ।

सीस-पडिच्छा-ऽऽयरिए, पायच्छित्तं विहिज्जति ॥५४९५॥ कठ

सिस्सस्स पडिच्छास्स आयरियस्स य तिण्ह वि पच्छित्तं भण्णति -

एगे गिलाणपाहुड, तिण्ह वि गुरुगा तु सीसमादीणं ।

सेसे सीसे गुरुगा, लहुगपडिच्छे य गुरुसरिं ॥५४६६॥

एगे गिलाणे पाहुडे य तिसु वि दारेसु तिण्ह वि सीमपडिच्छगायरियाणं पत्तेयं गुरुगा भवति, सेसा जे अपरिणयादी दारा तेसु सीसस्स चउगुरुगा, तेसु चेव पडिच्छयस्स चउलहुगा, गुरुसरिं ति जइ सीसं पडिच्छइ तो चउगुरुगा, अह पडिच्छं तो चउलहुगा ॥५४६६॥

‘णाणट्ठा तिणिण पक्खे आपुच्छियव्वं तस्स इमो अववातो -

वितियपदमसंविग्गे, संविग्गे वा वि कारणाऽऽगाढे ।

नाऊण तस्स भावं, कप्पति गमणं चऽणापुच्छा ॥५४६७॥

आयरियादीसु असंविग्गीभूतेसु णापुच्छिज्जा वि । अहवा - संविग्गेसु आयरियादिसु अप्पणो से किंचि इत्यिमादियं चरित्तविणासकारणं आगाढं उप्पणं ताहे अणापुच्छिए वि गच्छति । ‘मा एस गच्छति (ति) गुरुमादियाण वा भावे णाते अणाते अणापुच्छाए वि गच्छति ॥५४६७॥

अविसज्जिएण ण गंतव्वं ति एयस्स अववादो -

अज्झयणं वोच्छिज्जति, तस्स य गहणम्मि अत्थि सामत्थं ।

ण य वितरंति चिरेण वि, णातुं अविसज्जितो गच्छे ॥५४६८॥ कंथा

एवं अविसज्जिओ गच्छति, ण दोसो । अविधिमागतो आयरिएण ण पडिच्छियव्वो ति ।

एयस्स अववादो -

णाऊण य वोच्छेयं, पुव्वगए कालियाणुओगे य ।

मुत्तत्थजाणतो खलु, अविहीय वि आगतं वाए ॥५४६९॥

अणापुच्छविसज्जियं वइयादिपडिबज्जतं वा अविधिमागतं वोच्छेदादिकारणे अवलंबिऊण पडिच्छति चेदेति वा ण दोसो ॥५४६९॥

‘जो तेण आगंतुणेण सेहो आणितो तस्स अभिघारियस्स अणाभव्वो, सो तेण ण गेण्ह-यव्वो’ ति एयस्स अववादो इमो -

णाऊण य वोच्छेयं, पुव्वगए कालियाणुओगे य ।

मुत्तत्थजाणगस्स तु, कारणजाते दिसाबंधो ॥५५००॥

चोदक आह - ‘अणिबद्धो कि ण वाइज्जति’ ?

आचार्य आह - अणिबद्धो गच्छइ स गुरुहि वातिज्जइ, कालसभावदोसेण वा समत्तीकृतं वाएति, अतो दिसाबंधो अणुणातो ।

जो य सो णिबज्जइ सो इमो -

ससहायअवत्तेण, खेत्ते वि उवड्डियं तु सच्चित्तं ।

दलयंतु नानुबंधति, उभयममत्तद्वया तं वा ॥५५०१॥

अव्वत्तेण ससहायेण वत्तेण वा अमहाएण परखेत्ते उवद्धितो सच्चित्तो सो खेत्तियाण आभव्वो तहावि त दलयति परममेहाविण गुरुपदजोग्ग च, अप्पणो य सो गच्छे आयरियजोग्गो णत्थि त्ति ताहे तस्स अप्पणो दिसावघ करेति । “उभय” ति सज्जा मज्जीओ य । अहवा — तस्स मगच्छिल्लगाण य परोप्पर ममीकारकरण भवति, अम्ह सज्जतिउ त्ति, “त व” ति जो पडिच्छगो आगतो त वा णिवघइ । जो सो सेहो पडिच्छगो आगतो त वा णिवघइ ॥५५०१॥

जो सो सेहो पडिच्छगो वा णिवद्धो सो तत्थ णिम्मातो —

आयरिए कालगते, परियट्ठति सो गणं सयं चेव ।

चोदेति व अपढंते, इमा तु तहि मग्गणा होति ॥५५०२॥

आयरिए कालगए सो त गच्छ ण मुयइ, एत्थ गच्छस्स णिवद्धायरियस्स ववहारो भण्णति, सो त मयमेव गण परियट्ठेइ, सो य गच्छो ण पढति, अपढनो य तेण चोदेयव्वो, जति चोदिया वि ण पढति तो इमो आभवतमग्गणा ॥५५०२॥

माहारणं तु पढमे, वितिए खेत्तम्मि ततिए सुहदुक्खं ।

अणहिज्जंते सेमे, हवंति एक्कारस विभागा ॥५५०३॥

कालगयस्स जाव पढमवरिम नाव गच्छस्स जो सो ठिनो आयरिओ एतेसि दोण्ह वि साधारण सचित्तादि सामान्यमित्यर्थे ।

वितिए वरिसे — ज खेत्तोवसपण्णनो लभति त ते अपढता लभति ।

ततिए वरिसे — ज सुहदुक्खोवसपण्णतो लभति त ते लभति ।

चउत्थे वरिसे — कालगतायरियसीसा अणहिज्जता ण किं चि लभति, सब्व पडिच्छगायरियस्स भवति ॥५५०३॥

सीसो पुच्छइ — “किं खेत्तोवसपण्णओ सुहदुक्खिओ वा लभइ ?” ति ।

उच्यते —

णातीवग्गं दुविहं, मित्ता य वयंसगा य खेत्तम्मि ।

पुरपच्छसंथुता वा, सुहदुक्ख चउत्थए सव्वं ॥५५०४॥

दुविष णातीवग्ग — पुव्वमथुता पच्छासथुता य । सहजायगादि मित्ता, पुव्वुप्पणा वयसगा, एते सब्वे खेत्तोवसपण्णतो लभति, सुहदुक्खोतो पुण पुरपच्छमथुता एव केवला भवति । जे पुण अहिज्जति तेसि एक्कारस विभागा । तस्स य कालगयायरियस्स चउत्थिओ गणो — पडिच्छया सिस्सा सिस्सिणीओ पडिच्छिणीओ य । एतेसि ज तेण आयरिएण जीवतेण उद्दिट्ठ त पुव्वुद्दिट्ठ भण्णति, ज पुण तेण पडिच्छगायरिएण उद्दिट्ठ त पच्छुद्दिट्ठ भण्णति ॥५५०४॥

खेत्तोवसंपयाए, बावीसं संथुया य मित्ता य ।

सुहदुक्खमित्तवज्जा, चउत्थए णालबद्धा य ॥५५०५॥

पुव्वुद्धिट्ठं तस्स उ, पच्छुद्धिट्ठं पवाततंतस्स ।

संवच्छरम्मि पढमे, पडिच्छए जं तु सच्चित्तं ॥५५०६॥

अ जीवनेण आयरिण पडिच्छगस्स उद्धिट्ठं न चेव पढनम्म पढमवरिमे ज सच्चित्ताचित्तं लब्धमिति तं सव्वं “तस्स” ति जेण उद्धिट्ठं तस्स आभव्व । एस एक्को विभागो । अहं इमेण उद्धिट्ठं पडिच्छगस्स पढमवरिमे तो ज सच्चित्ताचित्तं लब्धमिति न सव्वं वा देतस्स । एस बित्तियो विभागो ॥५५०६॥

वित्तियवरिमे -

पुव्वं पच्छुद्धिट्ठे, पडिच्छए जं तु होइ सच्चित्तं ।

संवच्छरम्मि वित्तिण, तं मव्वं पवाययतस्स ॥५५०७॥

पडिच्छगो वित्तियवरिसे पुव्वुद्धिट्ठं वा पच्छुद्धिट्ठं वा पढउ ज तस्स सच्चित्ताचित्तं सव्वं वाएतस्स । एस तत्तिओ विभागो ॥५५०७॥

इदाणि सीसस्स भण्णति -

पुव्वं पच्छुद्धिट्ठं, सीसम्मो ज तु होइ सच्चित्तं ।

संवच्छरम्मि पढमे, तं मव्वं गुरुस्स आभवति ॥५५०८॥

सीसस्स पढमवरिसे कालगतायरिण च उद्धिट्ठं इमेण वा पडिच्छगारिण उद्धिट्ठं पढतस्स ज सच्चित्ताचित्तं तं सव्वं कालगतस्स गुरुस्स आभवति । एस चउत्थो विभागो ॥५५०८॥

सीसस्स वित्तिण वरिसे -

पुव्वुद्धिट्ठंतस्स उ, पच्छुद्धिट्ठं पवाययतस्स ।

संवच्छरम्मि वित्तिण, सीसम्मी जं तु सच्चित्तं ॥५५०९॥

जहा पडिच्छगस्स पढमवरिसे दो आदेसा तथा सीसस्स वित्तियवरिसे दो आदेसा भाणियव्वा । एत्थ पव्व-छट्ठं विभागा सीसस्स वित्तियवरिसे ॥५५०९॥

पुव्वं पच्छुद्धिट्ठं, सीसम्मी ज तु होति सच्चित्तं ।

संवच्छरम्मि तइए, तं सव्वं पवाययतस्स ॥५५१०॥ (ङ्क)

जहा पडिच्छास्स वित्तियवरिसे तथा सीसस्स तत्तियवरिसे । एस सत्तमो विभागो ॥५५१०॥

इदाणि सिस्सिणी पढम-वित्तियसवच्छरेसु भाणियव्वा पडिच्छगतुल्ला -

पुव्वुद्धिट्ठंतस्सा, पच्छुद्धिट्ठं पवाययतस्स ।

संवच्छरम्मि पढमे, सिस्सिणिण जं तु सच्चित्तं ॥५५११॥

पुव्वं पच्छुद्धिट्ठं, सीसिणिण जं तु होति सच्चित्तं ।

संवच्छरम्मि वित्तिण, तं सव्वं पवाययतस्स ॥५५१२॥

तत्थ तिणिण विभागा पुव्विल्लेसु जुत्ता दस विभागा ।

इदार्णि पडिच्छगा -

पुव्वं पच्छुद्दिट्ठं, पडिच्छए जं तु होति सच्चित्तं ।

संवच्छरम्मि पढमे, तं सव्वं पवाययतस्स ॥५५१३॥

पडिच्छगाए पढमे चेव सवच्छरे आयरिएण वा उद्दिट्ठ इमेण वा उद्दिट्ठ पढउ ज से सच्चित्तादि त सव्व वाएतो गेण्हति, एते एक्कारस विभागा ॥५५१३॥ एसो विभागे ओहो, इमो विभागेण पुण अण्णो आदेसो भण्णइ अहवा - एसो विधि जो सो सेहो अण्णो णिबद्धो तस्स भणितो ।

जो पुण सो पाडिच्छगो णिबद्धो तस्सिमो विधी -

सो तिविहो होज - कुलिच्चो गणिच्चो, सधिच्चो वा होज ।

संवच्छराणि तिणिण उ, सीसम्मि पडिच्छए उ तद्विसं ।

एवं कुले गणे या, संवच्छर संघे छम्मासा ॥५५१४॥

जइ सो एगकुलिच्चो तो तिणिण वरिसे सच्चित्तादि सिस्साण ण गेण्हति, पडिच्छगाण पुण जद्विस चेव आयरिमो कालगमो तद्विस चेव गेण्हति, एव कुलिच्चवए भणिय ।

अह सो एगगणिच्चो तो सवत्सर सिस्साण सच्चित्तादि ण गेण्हति । जो य कुलगणिच्चो [ण] भवति सो गियमा सधिच्चो । सो सधिच्चो छम्मासे सिस्साण सच्चित्तादि ण गेण्हति, ते पडिच्छगायरिएण तत्थ गच्छे तिणिण वरिसा अवस्स अच्छियव्व, परेण इच्छा ॥५५१४॥

तत्थेव य निम्माए, अणिग्गते णिग्गते इमा मेरा ।

सकुले तिणिण तिगाई, गणे दुगं वच्छरं संघे ॥५५१५॥

तत्थेव पडिच्छगायरियस्स समीवे तम्मि अणिग्गए जति कोति तम्मि गच्छे णिम्मातो तो सुदर ।

अह ण निम्माओ सो य तिण्ह वरिसाण परतो णिग्गतो, अहवा - एस अम्ह सच्चित्तादि हरति त्ति ते वा णिग्गता तेसि इमा मेरा -

सकुले समवाय काउ कुले थेरेसु वा उवट्ठायति ताहे तेसि कुल वायणायरिय देति, वारएण वा वाएति कुल, तिणिण तिया णववरिसे वाएति ण य सच्चित्तादि गेण्हति, जइ णिम्मातो विहरइ ततो सुदर ।

अह एक्को वि ण निम्मातो ततो पर सच्चित्तादि गेण्हति, ताहे सगणे उवट्ठाति गणो वायणायरिय देति, सो वि दोणिण वरिसे वातेति, ण य सच्चित्तादि गेण्हति, जति निम्मातो एक्को वि तो विहरतु, अणि म्माते संघे उवट्ठायति, सधो वायणायरिय देति, सो य वरिस वाएति, ण य सच्चित्तादि गेण्हति, निम्माए विहरतु । एते बारस वरिसा ॥५५१५॥

अह एतेसि एक्को वि निम्मातो, कह पुण एवतिएण कालेण निम्माति ?

उच्यते -

ओमाडिकारणेहि व, दुम्मेहत्तेण वा ण निम्माओ ।

काऊण कुलसमायं, कुल थेरे वा उवट्ठंति ॥५५१६॥

ओमसिवदुब्बिक्खमाइण्हि अडतो न निम्मातो दुम्मेहत्तणेण वा, ताहे पुणो कुलादिमु कुलादिथेरेसु वा उवट्ठायति तेणेव कमेण, एते वि बारस वरिसे । दो बारस चउव्वीस । जति एक्को वि निम्मातो

विहरतु, ग्रह न निम्मातो तो पुणो कुलाबिसु तेणेंव कमेण उवट्ठायति, एते वि बारस वरिसे, सब्बे छत्तीस जाता । एव जति छत्तीसाए वरिसेहि निम्मातो तो सुदर, ग्रह न निम्मातो ताहे अण्ण परममेहाविण पत्त उवादाय पव्वावेत्ता उवसपज्जति ॥५५१६॥

सा य उवसपदा एतारिसे ठाणे -

पव्वज्जएगपक्खिय, उवसंपद पंचहा मए ठाणे ।

छत्तीसाऽतिक्कते, उवसंपद पत्तुवादाय ॥५५१७॥

पच्छद गतार्थ ।

पुव्वदस्स इमा विभासा, “पव्वज्ज एगपक्खी” इमे -

गुरुसज्झिलए सज्झति ए य गुरुगुरु गुरुस्स वा नत्तु ।

अहवा कुलिच्चओ ऊ पव्वज्जा एगपक्खी उ ॥५५१८॥

पितृव्य, भ्राता, पितामह, पौत्रक - भ्रातृव्य इत्यर्थ । अहवा - एगकुलिच्चए तेसि एक्का सव्वा सामाचारी, सुतेण एगपक्खितो बस्स एगवायणिय सुत्त ॥

पव्वज्जाए सुएण य, चउभंगुवसंपया कमेणं तु ।

पुव्वाहियविस्सरिए, पढमासति तइयभंगो उ ॥५५१९॥

पुव्वदभणियक्कमेण उवसपदा पढमततियभंगेसु त्ति, जम्हा तेसु पुव्वाहित विस्सरिय पुणो उज्जुयारे ओसक्कइ ।

चोदकाह - “साहम्मियवच्छल्लयाए सब्बस्सेव कायव्व, कि कुलातिविभागेण उवट्ठवण कत्त” ? उच्यते -

सव्वस्स वि कातव्वं, निच्छयओ किं कुलं व अकुलं वा ।

कालसभावममत्ते, गारवलज्जाए काहिति ॥५५२०॥ कठा

“उवसपद पंचविध” त्ति अस्य व्याख्या -

सुतसुहदुक्खे खेत्ते, मग्गे विणए य होति बोधव्वे ।

उवसंपया उ एसा, पंचविहा देसिता सुत्ते ॥५५२१॥

उवसपदासु इमो आभवतववहारो -

सुत्तम्मि णालबद्धा, णातीबद्धा व दुविहमिच्चादी ।

खेत्ते सुहदुक्खे पुण, पुव्वसंधुय मग्गदिट्ठादी ॥५५२२॥

सुतोवसपदा दुविधा - पढते अभिघारेते य । दुविधाए वि सुतोवसपदाए छ णालबद्धा इमे - माता पिता भ्राता भगिणी पुत्तो धूता ।

एतेसि परावि सोलस इमे -

माउम्माता पिता भ्राता भगिणी, एव पिउणो वि चउरो, भाउपुत्तो धूया य, एव भगिणी पुत्त-
धूयाण वि दो दो, एते सोलस, छ सोलस य बावीस, एते णालबद्धा, सुत्तोवसपण्णो लभति । खेत्तोवसपण्णो
बावीस पुव्वपच्छसधुया य मित्ता य लभति । सुहदुक्खी पुण बावीस पुव्वपच्छसधुया य लभति । मग्गोवस-
पण्णता एते सब्बे लभति दिट्ठा भट्ठा य लभति । विण्णोवसपदाते सब्ब लभति, णवर - विणयाणरिहस्स ण
वदणाविणय पउज्जति ।

“सगे ठाण” ति - पव ज्जाए सुतेण य जो एगपक्खी पढम तत्थ य उवसपज्जति, पच्छा कुलेण
सुएण य जो एगपक्खी, पच्छा सुएण य जो एगपक्खी, पच्छा सुएण गणेण य जो एगपक्खी, तस्स वि
पच्छा बितियभगेसु, पच्छा चउत्थभगे, एव उवसपदाते ठायति ।

अहवा - “सट्ठाणे” ति - सुत्तत्थिस्स जस्स सुय अत्थि त सट्ठाण एव सुहदुक्खिस्स जत्थ
वेयावच्चकरा अत्थि, खेत्तोवसपदत्थिस्स जस्स वत्थमत्तादिय अत्थि, मग्गोवसपदत्थिस्स जत्थ मग्ग अत्थि,
विणयोवसपदत्थिस्स जत्थ विणयकरण जुज्जति । एते सट्ठाणा एतेसु उवसपदा ॥५५२२॥ णाणट्ठोवसपदा गता ।

इदाणि दसणट्ठा भण्णति ।

क् वा दसणट्ठा गम्मति ? उच्यते -

कालियपुव्वभते वा, णिम्माओ जदि य अत्थि से सत्ती ।

दंसणदीवगहेउं, गच्छइ अहवा इमेहिं तू ॥५५२३॥

कालियसुत्तं पुव्वगयसुते वा ज वा जम्मि काले पतरति सुत्त तम्मि सुत्तत्थतदुमएसु णिम्मातो ताहे
जइ मे दसणदीवगेसु गहणधारणसत्ती अत्थि ताहे अप्पणो परस्स य दरिसण दीवगति दीप्ता करोति हेतु
कारण तानि दर्शनविशेषनानीत्यथ । अहवा - इमेहिं कारणेहिं गच्छति ॥५५२३॥

भिक्षुगा जहि देसे, बोडिय-थलि निण्हएहि ससग्गी ।

तेमि पण्णवणं असहमाणे वीसज्जिते गमणं ॥५५२४॥

जत्थ गामे णगरे देसे वा भिक्षुग-बोडिय-निण्हगण वा थली तत्थ ते आयरिया ठिता, तेहिं सदि
आयरियससग्गी - प्रीतिरित्यथ । ते य भिक्षुमादी अप्पणो सिद्धत पण्णवेंति सो य आयरियो तेसि दक्खिण्ण
तुण्हक्को अच्छति ॥५५२३॥

लोगे वि य परिवाओ, भिक्षुयमादी य गाढ चमढेंति ।

विप्परिणमंति सेहा, ओमामिज्जति सट्ठा य ॥५५२५॥

एते भिक्षुमादी जाणगा, इमे पुण ओदणमुडा, ते य भिक्षुमादी अम्ह पक्ख गाढ चमढेंति,
सेह सट्ठा य विपरिणमति, भणति य - एते सेयभिक्षु धम्मवादिणो, जइ सामत्थ अत्थि ण तो अम्ह
उत्तर देनु, एव सपक्खेसु सट्ठा ओहाविज्जति, ॥५५२५॥

अह तेहिं भिक्षुगमाइहिं थलीए वट्ठो गिबद्धो -

रसगिद्धो य थलीए, परतित्थियतज्जणं असहमाणो ।

गमणं बहुस्सुयत्तं, आयमणं वादिपरिसाओ ॥५५२६॥

सो य आयरियो रसगिद्धो गोउलपिडहृतो, सति वि सामत्ये भण्णमाणो वि ण किं चि उत्तर देति, एवमादि तेसि परतिस्थियाण पण्णवणतज्जण असहमाणो सिस्सो आयरिए विधीए पुच्छति, जाहे विसज्जितो ताहे विहिणा ग्रभो, सो य सुणेत्ता बहुस्सुग्रो जाग्रो आगमण, आगतेण य पुव्व चायरिया दट्ठवा, अण्वसहीए सो ठाड, जे तत्थ पडिया वादिपरिस च गेण्हति, ते परिजियायत्ते करेति, ते रण्णो महाजणस्स वा पुरतो गिरुत्तरे करेति ॥५५२६॥

वादपरायणकुविया, जति पडिसेहेति साहु लड्डं च ।

अह चिरणुगतो अम्हं, मा से पवत्त परिहवेह ॥५५२७॥

वादकरणे जिता कुविया जइ ने त आयरियस्स निबध पडिसेहेति तो सुदर, अहवा - तत्थ कोइ तुट्ठो भणिज्ज - “एयस्स को दोसो ? एस अम्ह चिरणुगतो, पुव्ववत्त वट्ठय मा परिहवेह” ॥५५२७॥

ओहे वत्त अवत्ते, आभव्वे जो गमो तु गाणट्ठा ।

सो चेव दंसणट्ठा, पच्चागते हो इमो वण्णो ॥५५२८॥

ओहविभागे नाणट्ठा सजयस्स वत्तस्स अवत्तस्स य जो सचित्तादियाण आभव्वाणाभव्वगमो भणिग्रो सो चेव असेसो दंसणट्ठा गच्छतस्स भवति, पच्चागते कते वादे जितेसु भिक्खुगादिसु आयरिए भणति-गीह एतत्तो तुग्गे ॥५५२८॥

जइ एव भण्णमाणो णीति तो इमा विधी -

कातूण य पणामं, छेदसुतस्स ददाहि पडिपुच्छं ।

अण्णत्थ वसहि जग्गण, तेसिं च निवेयणं काउं ॥५५२९॥

आयरियस्स पादे पणमित्ता भणति - “छेदसुयस्स ददाहि पडिपुच्छं” ति, अस्य व्याख्या -

सहं च हेउसत्थं, चऽहिज्जिओ छेदसुत्त णड्डं मे ।

एत्थ य मा असुयत्था, सुणेज्ज तो अण्णहि वसिमो ॥५५३०॥

सहे ति व्याकरण, हेतुसत्थ अक्खपादादि, एवमादि अहिज्जतो छेदसुत्त णिसीहादि णट्ठ सुत्तग्रो अत्थग्रो तड्डग्रो वा, तस्स मे पडिपुच्छ देह ।

“अण्णत्थ वसहि” ति अस्य व्याख्या - “एत्थ य” पच्छद्व । “एत्थ बहुवसहीए असुयत्था सेहा अगीता अपरिणामगा य, मा ते सुणेज्जा तो अण्वसहीए ठामो, एव ववएसेण णीणेति, ॥५५३०॥

अहवा - वसहीग्रो खेतग्रो वा णो इच्छइ णिगत्तु ।

“अजग्गण तेसिं णिवेदण” ति अस्य व्याख्या -

खेत्तारक्खिनिवेयण, इतरे पुव्वं तु गाहिता समणा ।

जग्गविओ सो य चिरं, जह णिज्जंतो ण चेतeti ॥५५३१॥

आरक्खिणो ति दड्ढासिणो, तस्स णिवेदिज्जति - “अम्ह मदो पभू अत्थि, त अमहे रयणीए वेज्जमूल नेहामो ति तुग्गे मा किं चि अणेज्जह”, इतरे य अगीता समणा ते गमिया - “अमहे आयरिय एव

णेहामो तुम्हे भा बोल करेज्जहं ।” “जग्गण” ति सो य आयरिओ रामो किञ्चि भक्खाइगादि कहाविज्जति मुचिर जेण णिसुदुत्तो णिज्जतो ण किञ्चि वेदति, ताहे सयारगे छोहूण णेति, अहं चेतेति विलवति वा ताहे “खित्तचित्तो” ति लोगस्स कहेयव्व ॥५५३१॥

णिण्हयसंसग्गीए, बहुसो भण्णंतुवेह सो भणति ।

तुह किं ति वत्ति वच्चसु, गता-SSगते णीणितो विहिणा ॥५५३२॥

अहं बोडियाण णिण्हयाण वा ससग्गी तेण ण गच्छति, बहुसो वि भणतो उवेहति - तुण्हिक्को अच्छति । अहंवा भणेज्ज - “जति ह णिण्हवगमसग्गीए अच्छामि तो तुब्भ किं दुक्खति ?, वच्चह तुब्भे जतो भे गतव्व, अहं ण गच्छामि”, एत्थ वि सिस्सेण सिक्खणगतागतेण णिण्हगादि जेउ आयरिओ विहिणा णीणियव्वो ॥५५३२॥

एसा विही विसज्जिते, अविसज्जिए लहुग गुरुगमासो य ।

लहुगुरुग पडिच्छंते, आगतमविही इमो तु विही ॥५५३३॥

पडिच्छगस्स चउलहुअ, सीसस्स चउगुरुगा, दोच्च आपुच्छणे मासो, अणापुच्छे आगय जइ पडिच्छग पडिच्छइ तो चउलहु, अहं सीस तो चउगुरुगा, एव अविहिमागयस्स पच्छित्त ।

इमा विही भणति ॥५५३३॥

दंसणपक्खे आयरिओवज्जाए चेव सेसगाणं च ।

एक्केक्के पंचदिणे, अहंवा पक्खेण सव्वे वि ॥५५३४॥

दसणमावगाण सत्थाण सिक्खगस्स गच्छनस्स पक्ख आपुच्छणकालो, तत्थ आयरिय पंचदिणे, सेसा पंचदिणा । “अहंवा - “पक्खेण सव्वे” ति बितियादसो, दिणे दिण सव्वे पुच्छति जाव पक्खो पुण्णो ॥५५३४॥

एतविहिमागतं तू, पडिच्छ अपडिच्छणे भवे लहुगा ।

अहंवा इमेहि आगत, एगादिपडिच्छए गुरुगा ॥५५३५॥

एगे अपरिणए या, अप्याहारे य थेरए ।

गिलाणे बहुरोगे य, मंदधम्मे य पाहुडे ॥५५३६॥

एतारिसे विओमेज्ज, विप्पवासो न कप्पती ।

सीसे आयरिए या, पायच्छित्तं विहिज्जती ॥५५३७॥

बितियपदमसंविग्गे, संविग्गे चेव कारणागादे ।

णाऊण तस्स भावं, होति तु गमणं अणापुच्छा ॥५५३८॥ गताथो

दसणट्ठा गय ।

इदाणि चरित्तट्ठा -

चरित्तट्ठा देस दुविहा, एसणदोसा य इत्थिदोसा य ।

गच्छम्मि विसीयंते, आतसम्भत्थेहि दोसेहि ॥५५३९॥

चरितद्रुगमण दुविह — देसदोसेहि आयसमुत्थदोसेहि य । देस-दोसा दुविधा — एसणदोसा, इत्थिदोसा य । आयसमुत्था दुविहा — गुरुदोसा, गच्छदोसा य ।

तत्थ गच्छे जति आयसमुत्थेहि चक्कवालममारिवितहकरणेहि सीएज तत्थ पक्ख आपुच्छतो अच्छति, परतो गच्छइ ॥५५३६॥

इमे सजमोवघायदोसा, एतेसु उवदेसो — न गतव्व —

जहियं एसणदोसा, पुरक्कम्मादी ण तत्थ गंतव्वं ।

उदयपउरो व देसो, जहि तं चरियादिसंकिण्णो ॥५५४०॥

उदयप्रचुर सिधुविषयवत्, परिव्राजिका कापालिका तच्चण्णगी भगवी च एवमादिचरगादीहि जो आइण्णो विसमो त पि ण गतव्व ॥५५४०॥

अह सजमविसए असिवादी कारणा होज्ज ताहे असजमखेत पविट्ठा —

असिवादीहि गया पुण, तक्कज्जसमाणिया ततो णिति ।

आयरिए अणिते पुण, आपुच्छित्तु अप्पणा नेति ॥५५४१॥

आदिसद्गतो दुब्बिक्खपरचक्कादिया । “तक्कज्जसमाणिय” ति तम्मि सजमखेत जया ते असिवादिया फिट्ठा ताहे तो असजमखित्ताओ णिगतव्व । जइ आयरिओ केणइ पडिदधेण सोयतो वा णणिग्गच्छति तो जो एगा दो बहू वा असीदता ते आयरिय विधीए पुच्छित्ता अप्पणा णिग्गच्छति ॥५५४१॥

णिग्गच्छणे इमा विधी —

दो मासे एसणाए, इत्थिं वज्जेज्ज अट्ठ दिवसाणि ।

आतसमुत्थे दोसे, आगाढे एगदिवसं तु ॥५५४२॥

जत्थ एसणादोसा तत्थ जयणाए अणेसणिज्ज गिण्हतो वि दो मासे, आयरिय आपुच्छते वि उदक्खति सहसा ण परिच्चयति,

अह ^१इत्थिसयज्जिक्कादि उवसमोति, अप्पणो य दढ चित्त, तो अट्ठदिवसे आपुच्छति । तप्परतो अणितेसु अप्पणा णिग्गच्छति ।

अह — इत्थीए अप्पणा अज्झोववण्णो तो एरिसे आयसमुत्थे आगाढे दोसे एगदिवस पुच्छित्ता अणितेसु वितियदिवसे अप्पणा णीनेति ॥५५४२॥

सेज्जायरमादि सएज्जिकया व अउत्थदोस उभए वा ।

आपुच्छति सणिहितं, सण्णातिगतो व तत्तो उ ॥५५४३॥

अह अप्पणा सेज्जातरीए सएज्जिकाए वा अतीव अज्झोववण्णो । “उभयए” वत्ति परोप्परओ तो जति सो आयरितो सणिहितो आपुच्छति, असणिहिते पडिस्सयगओ सण्णादिभूमिगओ वा अहा — सणिहित साधु पुच्छित्ता ततो चेव गच्छति ॥५५४३॥

एयविहिमागयं तू, पडिच्छ अपडिच्छणे भवे लहुगा ।

अहवा इमेहि आगत, एगादिपडिच्छणे गुरुगा ॥५५४४॥ पूर्ववत्

एगे अपरिणते या, अप्पाहारे य थेरए ।

गिलाणे बहुरोगे य, मदधम्मं य पाहुडे ॥५५४५॥ पूर्ववत्

एतारिसं विओसज्ज, विप्पवासो ण कप्पति ।

सीसे आयरिए या, पायच्छित्तं विहिज्जती ॥५५४६॥ पूर्ववत्

भवे कारण ण पुच्छिज्जा वि -

वितियपदमसंविग्गे, संविग्गे चेव कारणागाढे ।

नाऊण तस्स भावं, अप्पणो भावं चऽणापुच्छा ॥५५४७॥

आयरियादी असविग्गा होज्ज, सविग्गा वा कारण आगाढ अहिडक्कादि भवलज्जिता ण पुच्छेज्ज, तस्स वा भाव जाणति, सुचिरेण वि ण विसज्जेति, अप्पणो वा भाव जाणति - “अम्ह अच्छतो अवस्स सि (सी) दामि”, एवमादिकारणेहि अणापुच्छिता वच्चेज्जा चरित्तद्वा ५५४७॥

अह गुरु इत्यिदोसेहि सीएज्जा -

सेज्जायरकप्पट्ठी, चरित्तवणाए अभिगया खरिया ।

सारूविओ गिहत्यो, सो वि उवाएण हरियव्वे ॥५५४८॥

सेज्जायरस्स भूणिगा जोव्वणकप्पे ठिया, कप्पट्ठिय पट्टुच्च आयरिएण चरित्त ठविय - त पडिसेवतीत्यय । अहवा - दुवक्खरिगा अभिगता सम्महिट्ठी त वा पडिसेवेति, अहवा - अभिगते ति - आसक्ता, सो पुण आयरिओ चरित्तवज्जितो वेसधारी वा बाहिकरणजुत्तो होज्जा । लिंगी वा सारूविगो वा सिद्धपुत्तो वा गिहत्यो वा होज्ज ।

लिंगधारी लिंगी ।

बाहिरम्भतकरणवज्जितो सारूवी ।

मुडो सुविकलवासधारी कच्छ ण बधति अबभचारी अभज्जगो सिक्ख हिड्ड ।

जो पुण मुडी ससिहो सुक्कबरधरो समज्जगो सो सिद्धपुत्तो, एयणायरविकप्पे ठितो ।

“उवाएण हरियव्वो” पुव्व गुरु अणुकूल भणति - इमाओ खेताओ वच्चाओ, जदा णेच्छति ताहे जत्य सा पडिबद्धो सा पणविज्जति “एसो बहूण आहारो, एय विसज्जेहि, तुम किंच मा महामोहकम्म पगरेहि” । जति सा ठिया सो सुदर, अह ण ठाति तो सा विज्जमतणमितेहि पाउट्टिज्जति वसीकज्जति वा, असति विज्जादियाण अत्य दाउ मोएति, गुरु य एगते व भणमाणो सम्बहा अणिच्छतो पुव्वकमेण राओ हरियव्वो ॥५५४८॥

सम्बद्धा आयरिए अर्णिते अप्पणा ततो गेति अणेगा एगो वा ।

जा एगस्स विधी सा अणेगाण वि दट्ठवा -

एगे तू वच्चंते, उग्गहवज्जं तु लभति सच्चित्तं ।

चरित्तट्ठ जो तु गेति सच्चित्तं णऽप्पिणे जाव ॥५५४६॥

जो साहू वत्तो एगाणितो वच्चति सो परोवग्गहवज्ज सच्चित्तादि ज लभति त अप्पणो 'समग्गिल्लस्म वा गुरुस्म, चरित्तस्स वा 'स्वपोरुषलक्षणचरित्तट्ठा पुण जो सहाओ गेति तत्थ सच्चित्तादि गेतस्स ज सच्चिनादि त जाव ण समप्पेति ताव पूर्वाचार्यस्य अव्वत्तसहाए वि ण लभति पुरिल्लो, जदा पुण उवसपण्णो समप्पितो वा तदा लभति, तत्कालाओ वा चरित्तपरिचालणा ॥५५४६॥

एसेव गणावच्छे, तिविहो उ गमो उ होति गाणादी ।

आयरिय-उवज्झाए, एसेव य णवरि ते वत्ता ॥५५५०॥

जहा साधुस्स भणिय तहा गणावच्छेदयस्स तिविधो गमो गाणदसणचरित्तट्ठा गच्छतस्म, एव आयरिउवज्झायाण वि । णवर - ते णियमा वत्ता भवति ॥५५५०॥

एसेव गमो नियमा, निग्गंथीणं पि होइ नायव्वो ।

गाणट्ठं जो तु गेती, सच्चित्तं नऽप्पणिज्जा वा ॥५५५१॥

णवर - ताओ णियमा सहायाओ जो पुण तातो गेति सच्चित्तादी तस्स, समप्पियासु वाण्तस्स ॥५५५१॥

को पुण तातो गेति ?

पंचण्हं एगतरे, उग्गहवज्जं तु लभति सच्चित्तं ।

आपुच्छ अट्ठ पक्खे, इत्थीवग्गेण संविग्गे ॥५५५२॥

सज्जतीतो गाणट्ठा गेति आयरिय उवज्झाओ वा पबित्ती गणी वा थेरो वा, एएसि पचण्ह अणतरो गितो उग्गहवज्ज सच्चित्तादि लभति । इत्थी पुण गाणट्ठा वच्चती अट्ठपक्खे आपुच्छति आयरिय उवज्झाय वसभ गच्छ वा । एव सज्जतिवग्गे वि चउरो इत्थीओ सत्थेण णेयव्वाओ, संविग्गे गीयत्थो परिणयवयो गेति । चरित्तट्ठा गय ॥५५५२॥

तिण्हट्ठा संकमणं, एयं संभोइएसु जं भणितं ।

तेसऽसति अण्णसंभोइए वि वच्चेज्ज तिण्हट्ठा ॥५५५३॥

गाणातिगिगस्सट्ठा एय सकमण संभोइएसु भणिय, संभोइयाण असती अण्णसंभोइएसु वि गाणातिगिगस्सट्ठा सकमति ॥५५५३॥

अहवा - संभोगट्ठा सकमति -

संभोगा अवि हु तिहि, कारणेहिं तत्थ चरणे इमो भेदो ।

संकमचउक्कमंगो, पढमे गच्छम्मि सीदंते ॥५५५४॥

१ सेससिस्सस्स, इत्थपि पाठ । २ लक्षणस्स अट्ठा चरित्त ट्ठा, इत्थपि पाठ ।

सभोगो वि तिण्हडा इच्छिज्जइ, त तहा णाणस्स दसणस्स चरित्तस्स । णाणदंसणट्ठा जस्स उवसपण्णो तस्मि सीयते ततो णिग्गमो भाणियव्वो, जहा अप्पणो गच्छाम्मो । चरित्तट्ठा पुण जस्स उवसपण्णो तस्स चरण प्रति सीदतेसु इमो चउव्विहो विगप्पो ।

कह पुण सकमति ?, चउभगे ।

इमो चउभगो -

गच्छो सीदति, णो आयरिम्मो । णो गच्छो, आयरिम्मो ।

गच्छो वि, आयरिम्मो वि । णो गच्छो, णो आयरिम्मो ।

पढमे गच्छो सीदति ॥५५५५॥

सो पुण इमेहि सीदति -

पडिलेह दियतुयट्ठण, णिक्खवणाऽऽयाण विणय सज्झाते ।

आलोय-ठवण-भत्तट्ठ-भास-पडलग-सेज्जातरादीसु ॥५५५५॥

पडिलेहणा काले ण पडिलेहेति, [ण] पडिलेहेति वा विवच्चासेण, [वा] ऊणात्तिरित्तमादिदोसेहि वा पडिलेहेति । गुरुपरिणगिलाणसेहाण वा न पडिलेहेति । निक्कारणे वा दिया तुयट्ठति । णिक्खवणे आदाणे वा ण पडिलेहेति, ण पमज्जति, सत्तभगा । विणय ग्रहारिह ण पयुजति । सज्झाए सुत्तत्थपोरिसीम्मो अ ण करेति, अकाले असज्झाए वा करेति । पक्खियादिसु आलोयण ण पवजति, भत्तादि वा ण आलोएति, दोसेहि वा आलोएति, सखडिण वा भत्त आलोएति-णिरव्वत्तीत्यर्थ । ठवणकुलाणि वा ण ठवति, ठविएसु अणापुच्छाए विसंति भत्तट्ठ । मडलीए ण भुजति बीसु भुजति, दोसेहि वा भुजति, गुरुणो वा अणालोणेण भुजति । अगारभासगदिहि भासति, सावज्ज भासति । पडलेहि आणिय अभिहड भुजति । सेज्जायरपिड वा भुजति । आदिग्गहणेण उग्गमउप्पादणेसणादोसेहि य गेण्हति ॥५५५५॥

एवमादिएहि गच्छ सीदत -

चोदावेति गुरुण व, सीदंतं गणं सयं व चोदेति ।

आयरियं सीदंतं, सयं गणेणं व चोदावे ॥५५५६॥

गच्छो सीयतो गुरुणा चोइज्जति अप्पणा वा चोएति, जे वा तहि ण सीदति ते वा चोएति । बीयभगे आयरिय सीदत सत वा चोएति, गणो वा त आयरिय चोएति ततियभगे ॥५५५६॥

दोणिं वि विसीयमाणे, सयं च जे वा तहि ण सीदंति ।

ठाणं ठाणासज्जतु, अणुलोमादीहि चोदावे ॥५५५७॥

दोणिं वि जत्थ गच्छो आयरिम्मो य सीदति तत्थ य सय चोएति । जे वा तहि ण सीयति तेहि चोदावेति । 'ठाण ठाणासज्ज' ति आयरिय उवज्जाय पवत्ति येर गणावच्छ भिक्खु-सुट्ठा य ग्रहवा खर-मज्झ-मउय कूराऽकूरा वा जस्स जारिसी अरुहा चोदणा जो वा जहा चोदण गेण्हति सो तहा चोदेयव्वो ॥५५५७॥

अजमाण भाणवेंतो, अयाणमाप्पस्स पक्ख उक्कोसो ।

लज्जाए पंच तिणिं व, तुह किं ति व परिणते विवेगो ॥५५५८॥

गच्छ सीदत, आयरिय वा उभय वा सीदत सय चोदेंतो अणोहिं वा चोयावेंतो अच्छति । जत्थ ण जाणति जहा एते भणमाणा वि णो उज्जमिउकामा तत्थ उक्कोसेण पक्ख अच्छति गुरु पुण सीदत लज्जाए गारवेण वा जाणतो वि पक्व तिणिण वा दिवसे अभणतोवि सुद्धो ।

अह चोदिज्जतो गच्छो गुरु वा उभय वा भणज्जा — “तुम्ह कि दुक्खति ? जइ अम्हे सीदामो, अम्हे चेव दोगति जाईहामो”, एवभावपरिणए विवेगो गच्छस्स गुरुस्स उभयस्स व कज्जति । अन्द गण गच्छइ । सो पुण एगो अणेगा वा असविग्गणातो सविग्गण सकमेति । एव चउभगो ॥५५५८॥

गीयत्थविहारातो, संविग्गा दोणिण एज्ज अण्णतरे ।

आलोइयम्मि सुद्धा, तिविहुवधीमग्गणा णवरिं ॥५५५९॥

गीयत्थगहणातो उज्जयविहारी गहितो, ततो उज्जयविहारातो सविग्गा, दोणिण एज्ज ॥५५५९॥

“अण्णतरे” ति अस्य व्याख्या —

गीयमगीतागीते, अप्पडिबन्धे ण होति उवघातो ।

अग्गीयस्स वि एवं, जेण सुया ओहणिज्जुत्ती ॥५५६०॥

जइ एगो सो गीओ अगीओ वा, अह दुगादी होज्ज ते गीता अगीता वा मिसा वा, जति एगो गीतो वइयादिसु अप्पडिबज्जतो वक्खति तो उवधिउवघातो ण भवति, जो वि अगीतो जहण्णे जेण सुत, ओहणिज्जुत्ती तस्स वि अप्पडिउज्जत्तस्स उवही ण उवहम्मति ॥५५६०॥

गीयाण व मीसाण व, दोण्ह वयताण वइग्गमादीसु ।

पडिबज्जताण पि हु, उवहि ण हम्मे ण वा-ऽऽरुवणा ॥५५६१॥

दोण्ह गीताण त्रिमिस्साण वा दोण्ह जइ वि वतियादिसु पडिबज्जति सेससामायारिं करेति तेस्मि उवही ण उवहम्मति ण वा पच्छित्त भवति । भणियविवज्जते उवधिउवघातो चित्तिज्जो । एव सविग्गविहारातो एगो अणेगा वा विहीए मागता, जप्पभित्ति गणातो फडिया ततो आढवेत्तु आलोयणा दायव्वा, ततो सुद्धा ॥५५६१॥

“तिविघउवहीमग्गणा णवरिं” ति अस्य व्याख्या —

आगंतु अहाकडयं, वत्थव्व अहाकडस्स असती य ।

मेलेति मज्झिमेहि, मा गारवकारणमगीए ॥५५६२॥

“तिविहो” ति अहाकडो अप्पपरिकम्मो बहुपरिकम्मो य । एव वत्थव्वाण वि तिविधो, अहाकड अहाकडेहिं मेलिज्जति, इतरे वि दो एव । वत्थव्वाण अहाकडा णत्थि ताहे आगतुगा अघाकडा वत्थव्वग-मज्झिमेहिं मेलिज्जति, मा सो आगतु अगीयत्थो गारव करेस्सति “ममेव उवधी उक्कोसतरो” ति ॥५५६२॥

गीयत्थे ण मेलिज्जति, जो पुण गीओ वि गारवं कुण्ह ।

तस्सुवही मेलिज्जइ, अहिगरण अपच्चओ इहरा ॥५५६३॥

गीयत्यो जइ अगारवी बत्थव्वअहाकडअसतीते तहावि अहाकडपरिभोगेण भुजति, अहं सेषाण
अण्णाण वा पुरमो भणति ।

“ममोवही उक्कोसो, तुद्धं उवही असुद्धो” एव भणतो वारिज्जति । जइ ठितो तो सुदर, अहं
ठाति, ताहे अण्णोवहिसमो कज्जति ।

“इहरे” ति अमेलिज्जतो अगीयसेहाण अप्पच्चयो किं अम्हेहितो एस उज्जमततरो जेण उवधि
उक्कोसपरिभोगेण भुजति । “ममोवही उक्कोसो” ति इतरे असहमाणा अधिकरणं करेज्जा, तम्हा मेलिज्जति
॥५५६६॥

एव खलु संविग्गे, सविग्गे संकमं करेमाणे ।

सविग्गमसविग्गे, -ऽमंविग्गे या वि संविग्गे ॥५५६४॥

पुव्वद्धे पढमभगो गतो, पच्छद्धे वितियं ततियभगा ।

तत्थ वितियभगसकमे इमे दोसा -

सीहगुहं वग्घगुहं, उदहिं व पलित्तगं व जो पविसे ।

असिवं ओमोयरियं, धुवं मे अप्पा परिच्चत्तो ॥५५६५॥

जो सविग्गे असविग्गेसु सकमति तस्स ड्ढ, आणादिया य दोसा, सेम कठ ॥५५६५॥

चरण-करणपरिहीणे, पासत्थे जो उ पविसए समणो ।

जयमाणए य जहितु, जो ठाणे परिच्चए तिणिण ॥५५६६॥

ओसणादी सीहगुहादिसठाणा, सीहगुहादिपत्रेसे एगमवि य मरणं पावति । जो पुण पासत्थादी
अतीति सो अणेगाइ जाइव्व मरियव्वाइ पावति ॥५५६६॥

एमेव अहाछंदे, कुमील ओसण्णमेव संसत्ते ।

जं तिणिण परिच्चयती, णाणं तह दंसण चरित्तं ॥५५६७॥

कत्था । गतो वितियभगो ।

पंचण्हं एगतरे, संविग्गे संकमं करेमाणे ।

आलोइए विवेगो, दोसु असंविग्गे सच्छंदो ॥५५६८॥

पंचविहो असविग्गे - पासत्थो ओसणो कुसीलो ससत्तो अहाछंदो । एतेसि अण्णयरो सविग्गेसु
सकमेज्जा, सो सविग्गमज्जगतो सतो आलोयणं देति, अविमुद्धोवधिस्स विवेगं करेति, अण्णो मे विसुद्धोवधी
दिज्जति । “दोसु” ति असविग्गे असविग्गेसु सकमं करेति एस चउत्थभगो । एस “सच्छंदो” इच्छा से
“अविधि” ति काउ अवत्थुं चेव ॥५५६८॥

पंचगतरे गीए, आरुभिय वदे जतंत एमाणे ।

जं उवहिं उप्पाए, संभोइय सेसमुज्झंति ॥५५६९॥

पंचण्ह पासत्थादियाण एगतरो एतो जइ गीयत्यो आयरियं अधिधारेउ तहिं चेव महव्वयउच्चारण
काउ आगतव्व । विधीए अपडिबज्झतो आगच्छमाणो पथे ज उवकरणं उप्पाएतो एति त सव्वं सभोतित ।

“सैतो” ति जो पासत्थोवधी अबिसुद्धो तं परिट्ठवेंति, जो पुण अणीयत्थो तस्स वते आयरितो देति, उवधी से पुराणो अहिण्वुप्पातितो वा से सत्त्वो परिठविज्जति आलोइए ज आवण्णो त से पच्छित्त देज्जति ॥५५६६॥

पासत्थादिसु इम आलोयणाविघाण -

पासत्थादीमुडिते, आलोयण होति दिक्खपमिति तु ।

सविग्ग पुराणे पुण, जप्पिमिति चेव ओसण्णो ॥५५७०॥

अच्चतपासत्थो जो तस्स पव्वज्जादी आलोयणा । जो पुण पच्छा पासत्थो जातो सो जतो पासत्थो जातो ततो कालतो आढवेत्तु आलोयण देति । एय अहाछदवज्जाण । अहाछदा जाहे पडिक्कमति ताहे तस्स ड्ढ । अवसेस तहेव ॥५५७०॥ एव सभोगट्ठा गयं ।

इमो आयरियट्ठा णियमो भण्णति -

आयरिओ वि हु तिहि कारणेहि णाणट्ठ दंसणचरित्ते ।

णाणे महकप्पसुत, दंसणजुत्ता इमं चरणे ॥५५७१॥

आयरियादि णाणनिमित्त उवसरज्जति । अहवा - “णाणे महाकप्पसुय” ति -

नाणे महकप्पसुयं, सीसत्ता केइ उवगते देइ ।

तस्सड्ढ उडिसिज्जा, सेच्छा खलु सा ण जिणआणा ॥५५७२॥

केसि चि आयरियाण कुले गणे वा महाकप्पसुय अत्थि । तेहि गणसठ्ठिती कया - “जो अन्ह आवकहियसीसत्ताए उवट्ठाइ तस्स महाकप्पसुय दायव्व, णो अणस्स” । अणतो गणे विज्जमाणे अविज्जमाणे वा ‘महाकप्पसुत उडिट्ठे आयरिए तम्म गहिए सो पुरिल्लाण चेव, ण वाएतस्म, जेण तेसि सा सेच्छा । न जिणगणहरेहि भणिय - “आवकहियसीसत्ताए उवगयस्सेव सुव देवमिति” ॥५५७२॥

दसणट्ठा -

विज्जा-मंत-णिमित्ते, हेतूसत्थट्ठ दंसणट्ठाए ।

चरितट्ठा पुव्वगमो, अहव इमे होंति आएसा ॥५५७३॥

हेतुसत्थ-गोविषणिज्जुत्तादियट्ठा उवसरज्जति ।

चरितट्ठा इमो आदेसो -

आयरिय-उवज्झाए, ओसण्णोहाविते व कालगते ।

ओसण्ण छव्विहे खलु, वत्तमवत्तस्स भग्गणता ॥५५७४॥

आयरिओ ओसण्णो जातो, ओधासितो वा गिहत्थो जगतो, कालगतो वा । जति ओसण्णो तो छण्ह अणतरो - पासत्थो, ओसण्णो, कुसीलो, ससत्तो, णीतितो, अहाच्छदो य । जो य तस्स सीसो आयरियपदे जोग्गो सो वत्तो अवत्तो वा ॥५५७४॥

१ सुवट्ठा अडिट्ठे, इत्थपि पाठ ।

वत्तो खलु गीयत्ये, अन्वत्तवएण अहवऽगीयत्ये ।

वत्तिच्छ सार पेसण, अहवा सण्णे सयं गमणं ॥५५७५॥

वत्तो वएण, सुएण वत्तो गीयत्यो । एस पढमभगो ।

वत्तो वएण, सुएण अवत्तो । एम अत्यतो बितियभगो ।

अन्वत्तो वएण, सुएण वत्तो । एस अत्यतो ततियभगो ।

अन्वत्तो वएण अहवा अगीयत्ये त्ति । एस चउत्थो भगो ।

पढमभगित्तो जो वत्तो तस्स इच्छा गण सारेति वा ण वा । अहवा - तस्स इच्छा अण्ण आयरिय उद्दिंसइ वा ण वा, जाव ण उद्दिंसति ताव गण सारवेति । अहवा - त आयरिय दूरन्थ “सारेति” त्ति - चोदेति सावुसघाडगपेसणेण । अह आसण्णे सो य आयरितो तो सयमेव गतु चोदेति ॥५५७५॥

चोदणे इम कालपरिमाण -

एगाह पणग पक्खे, चउमासे वरिस जत्थ वा मिलती ।

चोयति चोयावेति य, अणिच्छे वट्टावए सयं तु ॥५५७६॥

अप्पणा चोदेति, सगच्छ-परगच्छिच्चेहि वा चोतावेति, सव्वहा अणिच्छे समत्थो सयमेव गण वट्टावेति ॥५५७६॥

अहवा -

अण्णं च उद्दिंसावे, पतावणट्टा ण संगहट्टाए ।

जति णाम गारवेण वि, सुएज्जऽणिच्छे सयं ठाति ॥५५७७॥

ण गच्छस्स सगहोवग्गहणमित्त आयरिय उद्दिंसति, प्रातावणट्टा उद्दिंसति ।

तत्थ गतो भणति - “अह अण्ण वा आयरिय उद्दिंसावेमि, जइ तुब्बे एत्ततो ठाणातो ण उवरमह” ।

सो बितेति “मए जीवते अण्ण आयरिय पडिवज्जति, मुयामि पासत्यत्तण”, जइउवरतो तो सुदर । सव्वहा तम्मि अणिच्छे जइ समत्थो तो अप्पणा गच्छाविबो ठाति ॥५५७७॥ गतो पढमभगो ।

इमो बितियभगो -

सुतवत्तो वयवत्तो, भणति गणं ते ण सारिउ सत्तो ।

सगणं सारेहे तं, अण्णं व वयामो आयरियं ॥५५७८॥

असमत्थो अप्पणो गच्छ वट्टावेउ सो त आयरिय ताव भणति - “अह असमत्थो गच्छ वट्टावेउं तुम्हे चेव इमे सीसा, अह च अण्णेसि सिस्सो होहामि”, अहवा - “एते य अह च अण्ण आयरिय वयामो उद्दिंसामो” इत्यर्थं ॥५५७८॥

आयरिय उवज्झाए, अणिच्छंते अप्पणा य असमत्थो ।

तिथसंवच्छरमद्धं, कुल्लगणसंघे दिसावंधो ॥५५७९॥

एव पि भणिओ आयरिओ उवज्झाओ वा जाहे ण इच्छति सजमे ठाउ, गणाहिवत्ते वा अप्पणो य असमत्थो य, ताहे कुलिच्च आयरिय उद्दिंसति निणिण वामे । ताहे तर्हि ठितो त परिसारेति चोदेति य । तिण्ह वरिमाण परओ ज सच्चित्ताच्चिन सो कुलिच्चायरिओ हरति ताहे गणिच्च उद्दिंसावेति वरिस, तनो सधिच्च छम्मासे उद्दिंसावेति ॥५५७८॥

कुलातो गण, गणातो वा सव सकमतो आयरिय इम भणानि -

सच्चित्तादि हरति णे, कुलं पि णेच्छामो जं कुलं तुज्झं ।

वच्चासो अण्णगण, मंघं च तुमं जति ण ठासि ॥५५८०॥

एव भणते जति अब्भुद्धितो तो सुदर ॥५५८०॥

एव पि अठायंते, तावेतुं अद्धपचमे वरिसे ।

सयमेव धरेति गणं, अणुलोमेणं व ण सारे ॥५५८१॥

अद्धपचमवरिसोवरि वएण वत्तीभूतो समत्थो सयमेव गण धारेति, ठिओ वि त आयरिय अणुलोमेहि सारेति ॥५५८१॥

अह्वा - वितियभगिल्लो कुलगणसधेसु नो उवसपज्जति ।

कह ? उच्यते -

अहव जदि अत्थि थेरा, सत्ता परिउट्ठिऊण तं गच्छं ।

दुहओ दत्तसरिसओ, तस्स उ गमओ मुण्येयव्वो ॥५५८२॥

सुयवत्तो अप्पणा सुत्तथपोरिसीतो देति, गीयत्था थेरा गच्छति परियट्ठति, एस पढमभगतुल्लो चेव भवति । “गमो” ति पढमभगप्रकार एव, एसो वि आयरिय सारेति तावेति य ॥५५८२॥ गतो वितियभगो ।

इमो ततियभगो -

वत्तवओ उ अग्गीओ, जति थेरा तत्थ केति गीयत्था ।

तेसतिए पढतो, चोदे तेसऽसति अण्णत्थ ॥५५८३॥

वत्तवयत्तणेण गण रक्खेति चोदयति असति थेराण गीयत्थाण अण्णमायरिय पव्वज्जसुएण एगदक्खिय सह गणेण उवसपज्जति ।

अह्वा - ततियभगिल्लो जइ अग्गीअत्थत्तणओ गण परियट्ठिउ असमत्थो थेरा य से गीयत्था तेसतिए पढति, अण्णे य थेरा गच्छपरियट्ठणे कुसला ते गण परियट्ठति, एरिसो वि णो अण्णस्स उवसपज्जति, असति थेराण उवसपज्जति ॥५५८३॥ गतो ततियभगो ।

इमो चउत्थभगो -

जो पुण उभयावचो, वड्ढावग असति तो उ उद्दिंसति ।

सव्वे वि उद्दिंसंता, मोत्तूणभिमे तु उद्दिंसती ॥५५८४॥

जति थेरा पाढेतया अत्थि गण च वट्ठावतया तो एसो वि ण उद्दिसति, अण्ण च वट्ठावगयेराण पुण
असति उद्दिसति ॥५५८॥

सव्वे वि आयरिय उद्दिसना इमेरिसे आयरिय मोत्तु उद्दिसति -

संविग्गमगीयत्थं, असंविग्गं खलु तहेव गीयत्थं ।

असंविग्गमगीयत्थं, उद्दिसमाणम्स चउगुरुगा ॥५५८॥

तिविष पि उद्दिसनस्स चउगुरुगा, अहवा - काल तव-उमएहिं गुरुगा कायव्वा ॥५५८॥

एतेसु उद्दिहेसु य अणाउट्ट तस्स इम कालगत पच्छित्त -

सत्तरत्तं तवो होति, ततो छेतो पहावती ।

छेदेण छिण्णपरिभाए, ततो मूलं तओ दुगं ॥५५८॥

सत्तदिवसे चउगुरुग । अण्णे सत्तदिवसे छल्लहु । अण्णे सत्तदिणे छग्गुरु । अण्णे सत्तदिणे छेदो ।
मूल एकदिण, अणवट्ट एकदिण । एककतीमइने दिणे पारचिय ।

अहवा - दितितो इमो आदेसो-एककीस दिवमे तवो पूर्ववत् । तवोवरि सत्तदिवसे चउगुरु छेदो ।
अण्णे सत्तदिवसे छल्लहुछेदो । अण्णे सत्तदिवसे छगुरुछेदो, ततो मूलऽणवट्टपारचिया पणयालीसइमे दिवसे ।

अहवा - छेदे ततितो आदेसो - पणगादि सत्त सत्त दिणेहिं णेयव्वो, एत्थ छत्तोमुत्तरसत्तदिवसे
पारचिय च पार्वति । जम्हा एते दोसा तम्हा सविग्गो गीयत्थो उद्दिसियव्वो ॥५५८॥

छट्ठाणविरहियं वा, संविग्गं वा वि वयति गीयत्थं ।

चउरो वि अणुग्वाया, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥५५८॥

एय पि सविग्गगीयत्थ छट्ठाणविरहय । जति मामक काहिय पासणिय सपसारिय उद्दिसावेति तो
चउगुरुगा आणादिया दोसा ॥५५८॥

छट्ठाणा जा णितिओ तच्चिरहियकाहिगादिया चउरो ।

ते वि य उद्दिसमाणो, छट्ठाणगताण जे दोसा ॥५५८॥

गतार्था । एत्थ वि सत्तरत्तादिनवच्छेदविसेसा य सव्वे भाणियव्वा ।

एतस्स इमो अव्वानो - गीयत्थस्स सविग्गस्स असति गीयत्थ असविग्ग पव्वज्जसुतेण
एगपविस्सय उद्दिसति, एव कुलगणसविच्चय पि, एवपि ता ओसणो गतो ॥५५८॥

ओहावित-कालगते, जाविच्छा ता तह उद्दिसावेति ।

अव्वत्ते तिविहे वी, निपमा पुण संगहट्ठाए ॥५५८॥

जो ओहाविनो सो सारूवितो लिगत्थो गिहत्थो वा, सो विऽण्णेण गवेसियव्वो, अप्पसागारिय च
विण्णवियव्वो, जाहे णेच्छति अप्पणा य अण्ण आयरिय इच्छति ताहे उद्दिसावेति । “अव्वत्तो तिविहो”
पढमभगवज्जा ततो भगा, अहवा - तिविहो अव्वत्तो तिविहे वि कुले गण सवे य उद्दिसावेति । एतेसि दोहं वि
पगाराण उद्दिसावेंतो णियमा सगहणमित्त उद्दिसावेति । कालगए वि एस चेव विही, णवर - चोदण तावणा
अत्थि ॥५५८॥

वत्तम्मि जो गमो खलु, गणवच्छे सो गमो उ आयरिए ।

णिक्खिवणे तम्मि चत्ता, जमुद्दिसे तम्मि ते पच्छा ॥५५६०॥

जो वतस्स भिवलुस्स गमो सो गमा गणावच्छेए आयरियाण । इम णाणत्त - जइ णाण दसण-
णिमित्त गच्छति अप्पणो य से आयरिओ सविग्गो तस्स पासे णिक्खिविउ गच्छ अप्पबित्तो ततितो वा गच्छति ।

अह से अप्पणो आयरिओ असविग्गो तो ते साधू जनि तस्स पासि णिक्खिविउ गच्छति तो नेण ते
चत्ता भवति, तम्हा ण णिक्खियव्वा णेयव्व । तेण ते जेण तेण पगारेण ते य वेत्तु जत्थ गतो तत्थ पढम
अप्पाण णिक्खिवति, पच्छा भणति - “जहा भे अह, तहा भे इमे वि” । “तम्मि ते पच्छा” तस्स सिस्सा
भवति ॥५५६०॥

णिक्खिवणा अप्पाणो परे य संतेसु तम्म ते देति ।

संघाडगं असंते, सो वि ण वावारऽणापुच्छा ॥५५६१॥

जदा अप्पा परो य णिक्खित्तो तदा तस्स वि आयरियस्स किं वा जाया ?, जति से सति ति
अप्पणो य सहाया पटुप्पति ताहे तेण तस्स चेव दायव्वा, असतेसु संघाडग एव देति, अवसेसा अप्पणा गेण्हति । अह
सव्वहा असहातो सव्वे वि गेण्हति, तेण वि से कायव्व, तस्स गुरुस्स अणापुच्छाए सो ते ण वावारेति ॥५५६१॥

आयरिय गिहिभूय ओसण्ण वा जत्थ पेच्छति तत्थिम भणति -

ओहावित्त-उस्सण्णे, भणति अणाहओ विणा वयं तुब्भे ।

कमसीसमसागरिए, दुप्पडियरगं जतो तिण्हं ॥५५६२॥

पुव्वद्ध कठ । ओसण्णस्स पुव्वगुरुस्स कम पादा सिरेण तेसु णिवडति असागारिए ।

सीसो भणति - “तस्स असजयस्स कह चल्णेसु णिवडिज्जइ” ।

आयरिओ भणति - “दुप्पडियरय जतो तिण्हं” दुक्ख उवकारिस्स पच्चुवकारो किज्जति,
त जहा - माता पिउणो, सामिस्स, शम्मायरियस्स । अतो तस्स पादेसु वि पडिज्जति, ण दोसो ॥५५६२॥

कि च -

जो जेण जम्मि ठाणम्मि, ठाविओ दंसणे व चरणे वा ।

सो तं तओ चुयं तम्मि चेव कातं भवे निरिणो ॥५५६३॥

सो सीसो तेण आयरिएण णाणादिसु ठविओ, इदाणि सो आयरिओ ततो णाणादिभावाओ चुतो,
त चुअ सो सीसो तेसु चेव णाणादिसु ठवेंतो णिरण्णो भवति ॥५५६३॥

जे भिक्खु वुग्गहवक्कंताणं असण वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देइ,

देतं वा साइज्जइ ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खु वुग्गहवक्कंताणं अमणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिच्छइ,

पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खु वुग्गहवक्कंताणं वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा देइ,

देतं वा साइज्जइ ॥सू०॥१८॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं वत्थं वा पडिग्गहं वा कंवलं वा पायपुंछणं वा
पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं वसहिं देइ, देंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं वसहिं पडिच्छइ,
पडिच्छत वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताण वमहिं अणुपदिसइ,
अणुपविमतं वा साइज्जइ ॥सू०॥२२॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं सज्झायं देइ, देंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू वुग्गहवक्कंताणं मज्झायं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥२४॥

मन्वे मुत्ता भाणियव्वा -

वुग्गहवक्कंताणं, जे भिक्खू असणमादि देज्जाहि ।

चउलहुग अट्टहा पुण, णियमा हि इमं अवक्कमणं ॥५५६४॥

वुग्गहो कलहो, त काउ अवक्कमति । एकग्गहणा तज्जातीयग्गहणमिति वचनात् अट्टहि ठाणेहि
गणाओ अवक्कमणे पण्यते -

अब्भुज्जत ओहाणे, एक्केक्क-दुभेद होज्जऽवक्कमणं ।

णाणादिकारणं वा, वुग्गहो वा इहं पगतं ॥५५६५॥

अब्भुज्जय दुविध - अब्भुज्जतमरणेण अब्भुज्जयविहारेण वा । ओहाण दुविध - विहारोधावणेण
लिगोधावणेण वा, णाणट्ठा आदिग्गहणातो दसणचरित्तट्ठा य वुग्गहेण वा । एते उच्चारितसरिस ति काउ इह
वुग्गहेण पगत, वुग्गहण वक्कता । वुग्गहो ति कलहो ति वा मडण ति वा विवादो ति वा एगट्ठ ॥५५६५॥

के पुण ते वुग्गहवक्कता ?, इमे सत्त -

बहुरयपदेस अव्वत्त समुच्छा दुग तिग अबद्धिया चेव ।

सत्तेते णिण्हगा खलु, वुग्गहो होत वक्कंता ॥५५६६॥

जेट्ठा सुदंसण जमालिऽणोज्ज सावत्थि-तिंदुगुज्जाणे ।

पंचसया य सहस्रं, ढंकेण जमालि मोत्तूणं ॥५५६७॥

रायगिहे गुणसिलए, वसु चोदसपुच्चि तीसगुत्ताओ ।

आमलकप्पा णगरी, मित्तसिरी कूर पिउडाई ॥५५६८॥

सेयविपोत्तासाढे, जोगे तद्विद्वसहियसल्ले य ।

सोधम्म-णलिणिगुम्मे, रायगिहे मुरियबलमदे ॥५५६९॥

मिहिलाए लच्छिघरे, महगिरि कोडिण आममित्ते य ।
 नेउणियणुप्पवाए, रायगिहे खंडरक्खा य ॥५६००॥
 नदिखेडजणवउल्लुग, महगिरि धणगुत्त अज्जगंगे य ।
 किरिया दो रायगिहे, महातवो तीरमणिणाए ॥५६०१॥
 पुरिमंतरंजि भूयगिह, बलमिरि सिरिगुत्त रोहगुत्ते य ।
 परिवायपोट्टुमाले घोमणपडिसेहणा वादे ॥५६०२॥
 विच्छु य सप्पे मूमग, मिगी वराही य काग पोयाई ।
 एयाहि विज्जाहिं, मो य परिच्चायगो कुसलो ॥५६०३॥
 मोरी नउली धिराली, वग्घी मिही य उल्लुगि ओवाइ ।
 एयाओ विज्जाओ, गिण्ह परिच्चाय महणीओ ॥५६०४॥
 मिरिगुत्तेणं छल्लुगो छम्मास विकड्डिऊण वाए जिओ ।
 आहरण कुत्तिआवण, चोयालसएण पुच्छाण ॥५६०५॥
 वाए पराजिओ मो, निव्विसओ कारिओ नरिंदेण ।
 घोसावियं च नयरे, जयइ जिणो वद्धमाणो त्ति ॥५६०६॥
 दसउर-नगरुच्छुघरे, अज्जरक्खिय पूसमित्तितियगं च ।
 गोट्टा माहिल नवमट्टमेसु, पुच्छाय विंभस्म ॥५६०७॥
 पुट्टो जहा अबद्धो, कंचुट्णं कंचुओ समन्नेड ।
 एवं पुट्टमवद्धं, जीवं कम्मं समन्नेइ ॥५६०८॥
 रहवीरपुर नगरं, दीवगमुज्जाणमज्जकण्हे य ।
 भिवभूइस्सुवहिम्मि, पुच्छा थेराण कहणा य ॥५६०९॥
 उहाए पणत्तं, बोडिय-सिवभूइ उत्तराहि इमं ।
 मिच्छादंमणमिणमो, रहवीरपुरे समुप्पण ॥५६१०॥
 चांदस वामाणि तया, जिणेण उप्पाडियस्म नाणस्म ।
 तो बहुरयाण डिट्ठी, सावत्थीए ममुप्पन्ना ॥५६११॥
 सोलम वामाणि तया, जिणेण उप्पाडियस्म नाणस्म ।
 जिवपएमियदिट्ठी, तो उममपूर समुप्पण्णा ॥५६१२॥
 चोदा दो वाममया, तइया मिद्धिं गयस्म वीरस्म ।
 तो अव्वत्तय दिट्ठी, मे रविआए समुप्पण्णा ॥५६१३॥

वीसा दो वाससया, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।
 सामुच्छेइयदिट्ठी, मिहिलपुरीए समुप्पन्ना ॥५६१४॥
 अट्टावीसा दो वामसया, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।
 दो किरियाणं दिट्ठी, उल्लुगतीरे समुप्पन्ना ॥५६१५॥
 पंचमया चोयाला, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।
 पुरिमंतरजियाए, तेराभियदिट्ठि उप्पन्ना ॥५६१६॥
 छव्वाससयाइं नवुत्तराईं, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।
 तो बोडियाण दिट्ठी, रहवीरपुरे समुप्पन्ना ॥५६१७॥
 चोदस सोलस वासा, चोद्दावीसुत्तरा य दोन्नि सया ।
 अट्टावीसा य दुवे, पचेव सया य चोआला ॥५६१८॥
 पंचसया चुलमीया, तइया सिद्धिं गयस्स वीरस्स ।
 तो अबद्धियादिट्ठी, दसउरणयरे समुप्पन्ना ॥५६१९॥
 बोडियसिवभूइओ, बोडियलिंगस्स होइ उप्पत्ती ।
 कोडिन्न कोट्ट वीरा, परंपरा फासमुप्पन्ना ॥५६२०॥
 पंचसया चुलमीओ, छच्चेव सया नवुत्तरा हुंति ।
 नाणुप्पत्तीए दुवे, उप्पन्ना निव्वुए सेसा ॥५६२१॥
 मावत्थी उमभपुर, सेअम्बिआ मिहिल उल्लुगतीरं ।
 पुरिमंतरजि दसपुर रहवीरपुरं च नयराईं ॥५६२२॥
 मत्तेया दिट्ठीओ, जाइ-जरा-मरण-गम्भ-वसहीणं ।
 मूलं संसारस्स उ, हवंति निग्गथरूवेणं ॥५६२३॥
 मोत्तुण एत्थ एककं, सेसाणं जावजीविया दिट्ठी ।
 एककेक्कस्स य एत्तो, दो दो दोसा मुणेयव्वा ॥५६२४॥

बहुरयादी जाव बोडिया -

एएसिं तु परूवण, पुव्विं जा वन्निया उ विहिमुत्ते ।
 म च्चेव णिरवसेसा, इहमुद्देमम्मि नायव्वा ॥५६२५॥

एनेमि परूवणा कायव्वा “विहिमुत्ते” ति जहा आवस्सगे सामाइय-णिज्जुत्तीए ॥५६२५॥

एतेसिं असणादी, वत्थादी वसहि-वायणादीणि ।

जे देज्ज पडिच्छेज्ज व, सो पावति आणमादीणि ॥५६२६॥

१-“५६०३”-“५६२४” परिमिता सर्वा खलु गाथा पुनासत्कमूलभाष्यप्रतौ मात्र प्रथमपदोल्लेख-
 रूपेणैव सकेतिता आसन्, अतोऽस्माभिरावश्यक-सामायिकनिर्युक्तिरत पूर्णकृता ।

तेसिं प्रसणादि दैते पच्छित्त सव्वपदेसु चउलहु, अत्थे चउयुत्त, आणादिया य दोमा, अणवत्थपसगा
अण्णो वि दाहिति, सङ्गाण वि मिच्छन्त जणेति ॥५२६॥

दाणग्गहणे मंवांसओ य वायणं पडिच्छणादी य ।

मरिसं पभासमाणा, जुत्तिमुवण्णेण ववहरंति ॥५६२७॥

“दाणे” त्ति अस्य व्याख्या -

गव्वेण ते उदिण्णा, अण्णे वा देंने दट्ठू भासंति ।

नूण एते पहाणा, विमादि ससग्गिए गच्छे ॥५६२८॥

अम्ह एते प्रसणादि देंनि गव्व करेज्ज, तेण गव्वेण उदिण्णेण पलावा भवेज्ज । अण्णो वा दिज्जत
दट्ठु भणेज्ज - “णूण एते चेव पहाणा” । तेसिं वा किं वि अह्माभावेण गेलण्ण होज्ज, त गेज्ज - “एतेहि
किं पि विसादि दिण्ण”, एत्थ गेण्हण कट्ठुणादिया दोसा । एव दाणमसग्गीए अग्गीयमेहादिया चोदिता तेसु चेव
वएज्जा ॥५६२८॥

“अहणे त्ति अस्य व्याख्या -

तेसिं पडिच्छणे आणा, उग्गममविसुद्ध आभिओगं वा ।

पडिणीयया व देज्जा, बहुआगमियस्स विसमादी ॥५६२९॥

तेसिं हत्थातो भत्तादि पडिच्छन्तस्स तित्थकराणानिक्कमो, उग्गमादि अमुद्ध परिभुज्जति, वसीकरण
वा देज्ज ‘अम्ह एते पडिक्कखो’ त्ति पडिणीयत्तणे । अह्वा - एस बहु आगमिउ त्ति विसादि देज्ज ।

एगवसहिंसवासेण सेहा गिद्धम्मा सीदति, तेसिं वा चरिय गेण्हति ।

सुय वायग पडिच्छणादिसु वि समग्गिमादिदोमा ।

जुत्तिमुवण्णदिट्ठुणेण वा सरिस चरणकरण कहेतो सेहादी हरंति । जम्हा एवमादि दोमा तम्हा
णो किं वि तेसिं देजा, पडिच्छेज्ज वा, ण वा सवसेजा । एव मकरेण पुव्वभणिया दोमा परिहरिया भवति ।
॥५६२९॥

भवे कारण -

असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।

अद्धान रोहए वा, अयाणमाणे वि चित्थियपदं ॥५६३०॥

असिवाधिकारणेहि तेसिं दिज्जति पडिच्छन्ति वा ॥५६३०॥

इम गेलण्णे -

गेलण्ण मे कीरति, न कीरती एव तुब्भ भणियम्मि ।

एस गिलाणो एत्थं, गवेसणा णिण्हओ मो य ॥५६३१॥

एतद्य गामे साधू गच्छता भगिता - “तुव्वं गिलाणस्स किं वेयावच्च कीरइ, न कीरइ वा” ।

साधू भणति - “किं वा ते” ।

गिहो भणइ - “एस गिलाणो तुव्वमनियो” ।

एतय गामे साधूणा पविसिउ गविट्ठो जाव णिण्हतो सो ॥५६३१॥

जणपुरतो फासुएणं, अप्फासुयमग्गणे असमणो उ ।

पणवणपडिक्कामण, अविसेमित णिण्हए वा वि ॥५६३२॥

जणममक्ख उग्गमुप्पादणेमणासुद्धच्छेण करेति, जाहे सुद्ध ण लभति सोय असुद्ध मग्गति ताहे लोगस्स पुरओ उस्सग पणवेति भणति य - “एस असमणो” ।

त पि भणति - “जति तुम णिण्हदिट्ठोओ पडिक्कमसि पासत्थादित्तणओ वा तो ते सव्वहा करेमो” ।
तहा य पणवेति जहा सो तट्ठाणाओ पडिक्कमनि । अह्वा - जत्थ साधूण णिण्हगाण य विसो ण जज्ज किंचि ॥५६३२॥

दुक्खं खु निरणुक्कां, लोए अदेते य होति उड्ढाहो ।

मारुवम्मि य दिस्मति, दिज्जति तेणेवमादीसु ॥५६३३॥

जइ वि सो ओसणो निण्हओ वा तहावि अकज्जते निरणुक्कया भवति, सा य दुक्ख कज्जइ, लोगो य तत्थ उड्ढाह करेति - “जइ वि पव्वजाए एरिस अणाहत्तण ण परोप्पर कतोवकारियाओ अल पव्वजाए,” मारूप मरिस लिग दीमति, एवमादि कारणेहिं करोतो सुद्धो ॥५६३३॥

जे भिक्खु विहं अणेगाहगमणिज्जं सति लाढे विहाराए संथरमाणेसु जणवएसु

विहारपडियाए अभिमधारेइ, अभिसंधारेतं वा साइज्जइ ॥सू०॥२५॥

“जे” ति - णिहेसे, भिक्खू पुव्ववणिगतो । विह णाम अट्ठाण अणेगेहिं अहेहिं ज गम्मति त अणे-गाहगमणिज्ज, अहो णाम दिवसो । अह्वा - अणेगेहिं अहेहिं गमणिज्ज अणेगाहगमणिज्ज ।

अकारणेय गमण पडिसिद्ध ।

किं कारण गमण पडिसेहेति ? जम्हा एतय गम्ममाणे अणेगा सजमाताए दोसा पसज्जति । जस्मि त्रिसए गुणा तत्रणियमसजमसज्जायमादिया त विसय, “लाढे” ति - स हू, जम्हा उग्गमुप्पादणेमणासुद्धेण आहारोवधिणा सजमभारवहणट्ठयाए अप्पणो सरीरग लाढेतीति लाढो, विहारायेति । दप्पेण देसदसणाए बिहरति । “मथरमाणसु जणवएसु” ति आहारोवहिवसहिमादिएहिं सुलभेहिं जणवए, त जणवय विहाय पव्वज्जए तस्म पव्वज्जतो सुद्ध सुद्धेण वि गच्छमाणस्स चउलह । एस सुत्तथो ।

इमो णिज्जुत्ति-वित्थरो -

विहमट्ठाणं भणितं. णेगा य अहा अणेगदिवसा तु ।

सति पुण विज्जंतम्मी, लाढे पुण साहुणो अक्खा ॥५६३४॥

गयत्या । विह णाम अट्ठा ।

अट्ठाणं पि य दुविहं, पंथो मग्गो य होइ नायव्वो ।

पंथम्मि णत्थि किंची, मग्ग सगामो तु गुरु आणा ॥५६३५॥

त दुविध - पथो मग्गो य । पुणो पथो दुविहो - छिण्णो अछिण्णो य । छिण्णे णत्थि किच्चि,
सुण्ण सन्व । अछिण्णे पल्लवइता वा अत्थि । गामाणुगामि मग्गो । पथे चउगुरुगा, मग्गे चउलहु आणादिया
य दोसा ॥५६३॥

त पुण गमेज्ज दिवा, रत्तिं वा पंथं गमणमग्गे वा ।

रत्तिं आदेसदुग, दोसु वि गुरुगा य आणादी ॥५६३६॥

त पंथ मग्ग वा दिवसग्गो वा राग्गो गच्छति । राइसहे आदेसदुग - सक्काराती, सक्कावगमो वा राती ।

कह ? उच्यते - सक्का जेण रायति सोमति दिप्पति तेण सक्काराती । सक्कावगमो वियालो ।
अहवा - सक्कावगमो राती ।

कह ? उच्यते - जम्हा सक्कावगमे चार पाग्हागिया रमति तेण सक्कावगमो राती । सक्काए
जम्हा एते विरमति तेण सक्का विक्कालो । पथ मग्ग वा जइ रातीए विगाले वा गच्छइ तो चउगुरुगा
॥५६३६॥

तत्थ मग्गे ताव इमे दोसा -

मिच्छते उड्डाहो, विराहणं होति सजमाताए ।

इरियाति संजमम्मी, छक्काय अचक्खुविसयम्मी ॥५६३७॥

“मिच्छते उड्डाहो” दोण्ह विभासा -

किं मण्णे णिसिगमणं, जाती ण सोहेंति वा कहं इरियं ।

जतिवेसेण व तेणा, अडंति गहणादि उड्डाहो ॥५६३८॥

इहलोयचत्तकज्जाण परलोयकज्जुज्जाण किं गतो गमण ? किं मण्णे दुट्ठचित्ता एते होज्जा ? कह वा
इरिय मोहनि इरिउवउत्ता वा जति ? जहा एय असच्च तहा अण्ण पि मिच्छत जणेज्जा, जइवेमेण वा तेण
त्ति काउ रातो अडना गहिया कङ्कणववहारादिसु पदेसु उड्डाहो ॥५६३८॥

“विराहण सजमाताए” एसा विभासा -

संजमविराहणाए, महव्वया तत्थ पढमे छक्काया ।

बितिए अतेण तेणे, तइए अदिन्नं तु कंदादी ॥५६३९॥

संजमविराहणा दुविधा - मूलगुणे उत्तरगुणे य । मूलगुणे पचमहव्वया, पढमे य महव्वए छक्काय
विराहण करेनि, बितिए महव्वए अनेण तेणमिति भासेज्जा, ततिए महव्वए कदादि अदिण्णा गेण्हेज्ज ॥५६३९॥

अहवा -

दियदिन्ने वि सच्चित्ते, जिणतेणं किमुत सव्वरीविसए ।

जेसिं च ते सरीरा, अविदिण्णा तेहि जीवेहिं ॥५६४०॥

सच्चित्त जिणेहिं णाणुणाय तेण दिवमतो वि तेण, रात्री रातो वा अदिण्ण, अहवा - जेसिं ते
कदादिया सरीरा जीवाण तेहिं वा अदिण्ण ति तेण ॥५६४०॥

पंचमे अणेसणादी, छट्टे कप्पो व पढम बितिया वा ।

भगवत्तो त्ति मि जाओ, अपरिणओ मेहुण पि वए ॥५६४१॥

पंचमे त्ति वते अणेसणिज्ज गेण्हनस्स परिग्गहो भवति, छट्टे त्ति रातीभोग्गणे अट्ठाण कप्प भुजतस्स रातीभोग्गणभगो भवति । पढमो त्ति-बुहापरीसहो बितिओ पिवासापरीसहो तेहि आतुरो रात्ति भुजेज्ज वा पिएज्ज वा, एगव्रतभगे सव्ववयभगो त्ति काउ मेधुण पि सेवेज्जा । अहुवा - अपरिणतो अबुद्धधम्मत्तणओ दिया रातो मत्थे वच्चमाणे काइयानिमित्त उसक्को अगारी त्ति काइ उसक्का, अप्पसागारिए त पडिसेवेज्ज ॥५६४१॥

१ इरिया इति अस्य व्याख्या -

रीयादसोधि रत्तिं, भासाए उच्चमहवाहरणं ।

ण य आदानुस्मग्गे, सोहए काया य ठाणादि ॥५६४२॥

राओ इरियासमिद् न सोहेद् । भासासमिद् वि असमिआ पयाइविप्पणट्ठे उच्चमहेण वाहरेज्जा । एमणाममिति ण सभवति, रातो दिवसतो वा अट्ठाण पढमवितियपरीसहाउरो एसण पेलेज्जा । आदानणिकखेवममितीए ठाणणिसीदणाणि वा करेतो रातो ण मोहेति । काइयादिगरिट्ठवण पि करेतो थडित्थ पि ण सोहेति ॥५६४२॥ एसा सव्वा सज्जमविराहणा ।

इमा आयविराहणा -

वाले तेणे तह सावए य विसमे य खाणु कंटे य ।

अकम्हा भय आतसमुत्थं रत्तिं मग्गे भवे दोसा ॥५६४३॥

सप्पादी वाला तेसु डसिज्जति, उवकरणसरीरतेणा ते उवकरण सजत वा हरेज्जा, सीहादिसावए खज्जति, विसमे पडियस्स अण्णतरगा य विराहणा हवेज्जा, खाणुकटए वा वि सप्पो हवेज्जा, अकम्माद् भय अहेतुक भवति, राओ मग्गे वि एते दोसा, किमुत पये ॥५६४३॥

इम वितियपद -

कप्पति तु गिलाणट्ठा, रत्तिं मग्गो तहेव संभाए ।

पंथो य पुव्वदिट्ठो, आरक्खिओ पुव्वभणितो य ॥५६४४॥

आरक्खिओ त्ति दडवासिग्गे, पुव्वामेव भण्णति अम्हे गिलाणादिकारणेण रातो गमिस्सामो, मा किंचि छल काहिंसि । अणुण्णाते गच्छति, सेस कठ ॥५६४४॥ मग्ग त्ति गत ।

इदार्णि पथो भण्णति -

दुविहो य होइ पथो, छिण्णद्वाणतरं अछिण्णं च ।

छिण्णे ण होइ किंची, अछिण्णे पल्लीहि वइगाहि ॥५६४५॥

इमो विधी -

छिण्णेण अछिण्णेण व, रत्तिं गुरूमा तु दिवसतो लहुगा ।

उद्दरे पवज्जण, सुद्धपदे मेवती जं च ॥५६४६॥

उद्दरे जइ अद्वाण पक्वजति तत्थ सुद्धसुद्धेण वि गच्छमाणस्म एय पक्खित्त, ज च अकप्पादि किं
वि सवति त म्बव पावति ॥२६४६॥

इमा आयविराहणा -

वात खलु वात कंटग, आवडणं विमम-खाणु-कटेसु ।

बाले सावय तेणे, एसाइ होति आयाए ॥५६४७॥

खलुगा जाणुगादिसघाणा वातेण वेप्पति, चम्मकटगो वातकटगो अहवा 'शुद्धिमी हड्डाशुद्धिमी
वा कायकटगो वा । सेस कथ्य ॥५६४७॥ एसा आयविराहणा ।

इमा मजमविराहणा -

छक्कायाण विराहण, उवगरणं बालवुडूसेहा य ।

पढमेण व वितिएण व, सावय तेणे य मेच्छे य ॥५६४८॥

अथडिलेसु पुर्वविमादिछण्ह कायाण सघटणादिविराहण करति, बालवुडूसेहा पढमविनियपरीमहेहि
परिताविज्जति, साधू उज्झिउ सावओ सावएण वा खज्जेज्जा । तेणेगेहि मेच्छेहि वा उवकरण भुडुगादि वा
हीरेज्जा ॥५६४८॥

२ उवकरण त्ति एयस्स इम वक्खाण -

उवगरण-गेण्हणे भार-वेदणे तेणगम्म अधिकरण ।

रीयादि अणुवओगो, गोम्मिय भरवाह उड्डाहो ॥५६४९॥

नदिपडिगह अद्वाणक्का दुल्लिगमादिपथोवकरण च जइ गिण्हति तो भारण वेयणा भवति,
अविहडण्फडा य तेणगगम्मा भवति, तेणेगेहि वा उवकरणे गहिए अधिकरण, भारवक्ता य इययउत्ता ण
भवति, बहूवक्का वा गोमिएहि वेप्पति, गोमिया य चितति उल्लावेति य - "अहो ! बहुलोभा भारवहा
य" एव उड्डाहो भवे । अहवा - एतदोमभया उवकरण उज्झति तो ज नेण उवकरणेण विणा विराहण पावति
त्मावज्जति ॥५६४९॥

इम पथोवकरण -

चम्मकरग मत्थादी, दुल्लिगक्कप्पे य चिलिमिलिऽग्गहणे ।

तम विपरिणमुड्डाहो, कंदादिवहो य कुच्छा य ॥५६५०॥

जइ चम्मकरगेण वेप्पति सत्यकोसग वा, "दुल्लिग" वा गिहत्थलिगोवकरण अण्णपासडिय-
लिगोवकरण वा, 'कप्प' ति अद्वाणकप्प चिनिमिप्पि ति, एतेमि अगहणे इमे दोसा जहामस्स पच्छद भणिया ।
चम्मकरग अगहणे तसविराहणा, पिप्पलमुलिया गोरस पोत्तगादि अगहणे सहमादियाण विप्परिणामो
भवति, पिप्पलगादिमेत्थेण पुण पल्ले विकरणे काउ आगिज्जति, दुल्लिगेण विणा रातो गेण्हताण पिसियादि
वा उड्डाहो भवति । अद्वाणकप्पेण विणा कदादियाण छण्ह वा कायाण विराहणा भवति, चिलिमिलिय
विणा मडलीए भुज्जताण जणो दुगच्छति ॥५६५०॥

पथजोगोवकरण अगहणे अजयकरणे य इमे दोसा -

अपरिणामगमरणं, अतिपरिणामा य होति णित्यक्का ।

णिग्गत गहणे चोदित, भणंति तइया कहं कप्पे ॥५६५१॥

“अकम्पिय” नि गाड अपरिणामगो ण गेण्हति, अगेण्हणे मरति । अद्वाणे अकम्पियगहण दट्ठु
अतिपरिणामा ‘णित्यक्का’ णित्तज्जा भवति, अद्वाणानो गिग्गया अकप्प गेण्हता चोदिता — ‘मा गेण्हह त्ति, ण
वट्ठुत्ति” ते पडिभणति — ‘ततिया अद्वाणे क्ह कप्प’ ॥५६५१॥

काउडीए विणा इमे दोसा —

तेणभयोदककज्जे, रत्ति सिग्घगति दूरगमणे य ।

वहणावहणे दोसा, वालादी मल्लविद्धे य ॥५६५२॥

तेगमया रातो सिग्घ गतव, उदगगिमित्त जहा मरुविसए रातो सिग्घ दूर च गतव्व । तत्थ
कावोडीए बालवुड्ढा अमह सल्लविद्धा उवकरण च वाढव्व, अह ण वहनि तो एने परिचत्ता भवति । उवकरण
नि छट्ठेयव्व । अह्वा — “तेण” ति तणभए डडच्चिलिमिली घेप्पति । अकप्पणिज्जकज्जे परतित्थियउवकरण ।
उदगकज्जे चम्मकरा, उदगकज्जे च वुल्लिगगहण उदगगहणद्वया दातमहण । रातो सिग्घगतिगमणे
तलियमाहण । दूर गन्तु मत्थो ठाडस्सति तत्थ वालादिमल्लविद्धवहणद्वया कावोडी । सल्लुद्धरणादिगिमित्त
सत्थकोमा घेपाड । एवमादिउवकरण वहतो भात्तादिया दोसा, अवहुत्तस्स आयसजमविराधणादिया दोसा,
तन्हा, णित्तकप्पे, अद्वाण या पवज्जज्ज ॥५६५३॥

कारणे पवज्जति तत्थ इमो कमो —

विनियपदं गम्ममाणे, मग्गे असतीए पंथजयणाए ।

पडिपुच्छिउण गमणं, अछिण्णपल्लीहि वतियाहिं ॥५६५३॥

पढम मग्गेण गतव्व । असति मग्गम्म जणव्व पुच्छिउण अछिण्णपयेण पल्लिवनिगादीहिं गतव्व,
तत्ता डिग्गी ॥५६५३॥

इमेहि कारणहि पथेण गम्मनि —

अमिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व आगाढे ।

गेल्लण उत्तिमट्ठे, णाणे तह दसण चरित्ते ॥५६५४॥

अण्णत्तर या आगाट, जहा — सुवम्ममासिगणत्तरम्म मासकप्पे असपुण्णे रायगिहे णगरे
तणकट्ठारागो दमगो पव्वडत्तो । त भिक्ख हिडत तोगो भणति—“तणकट्ठारगो” त्ति । तस्स असहण,
सुधम्मम्म अभयाऽऽपुच्छण ।

अभयम्म पुच्छा, कहण “मेहस्स सागारिय” ति, निकोडिपरिच्चागो विभासा —

एएहि कारणेहिं, आगाढेहिं तु गम्ममाणेहिं ।

उवगरण पुव्वपडिलेहिएण सत्थेण गतव्वं ॥५६५५॥

पयजोगोवक्क रणपडिलेहा गहण, अह पुव्व सत्थ पडिलेहेउ सुद्धेण तेण सह गमण ॥५६५५॥

अमिवे अगम्ममाणे, गुरुगा दुविहा विराहणा नियमा ।

तन्हा खलु गतव्वं, विहिणा जो वणिआो हेट्ठा ॥५६५६॥

दुविहा विराहणा — आय-सजमेसु । अह्वा — अप्पमो परस्स य । हेट्ठा ओहणिज्जुत्तीए जो गमो
भाणतो, मेसा वि ओमोदरियादमो जहेव ओहणिज्जुत्तीए तहा भाणियव्वा ॥५६५६॥

उवगरण पुव्वभणितं, अप्पडिलेहेते चउगुरु आणा ।

ओमाण पथ सत्थिय, अतियत्ति अप्पपत्थयणे ॥५६५७॥

उवकरण चम्मकरगादी, ज वा वक्खमाण त अणेण्हमाणस्स सत्थ वाऽपडिलेहतस्स चउगुरुगा । अपडिलेहीए दोसा भवति ओमाण पेल्लिओ व होज्जा, सत्थवाहो अतियत्ती पासत्थो वा पतो होज्ज, सत्थो वा अप्पपत्थयणो अप्पसबलो होज्ज, अण्णे वा पत्थिया तत्थ पता होज्ज । तम्हा एय्होसपरिहणत्थ पडिलेहियव्वो सत्थो ॥५६५७॥

सो केरिसो सत्थपडिलेहगो -

रागदोसविमुक्को, सत्थं पडिलेहे सो उ पचविहो ।

भंडी वहिलग भरवह, ओदरिय कप्पडिय सत्थो ५६५८॥

सो सत्थो पचविहो - भडि त्ति गडी, वहिलगा उट्टबलिहादी, भारवहा पोट्टलिया वाहगा, उदरिया णाम जहिं गता तहिं चैव रुवगादी छोढु ममुद्दिसति पच्छा गम्मति, अहवा - गहियसबला उदरिया, कप्पडिया भिक्खायरा ॥५६५८॥

रागदोसिए इमे दोसा -

गंतव्वदेसरागी, असत्थ सत्थं करेति जे दोसा ।

इयरो सत्थमसत्थं, करेति अच्छंति जे दोसा ॥५५५९॥

जस्स गतव्वे रागो सो जति सत्थपडिलेहगो सो असत्थ पि सत्थ करेज्जा, तेण कुसत्थेण गच्छनाण जे दोमा तमावज्जति । “इयरे” ति जो गतव्वो दोसी सो सुज्झमाणमत्थ पि असत्थ करेति, तत्थ असिवादिसु अच्छनाण जे दोसा ते पावति ॥५६५९॥

उप्परिवाडी गुरुगा, तिसु कंजिमादि संभवो होज्जा ।

परिवहणं दोसु भवे, बालादी सल्ल-गेलण्णे ॥५६६०॥

भडीसु विज्जमाणामु जइ बहिलगेसु गच्छति तो चउगुरुगा, एव सेसेसु वि । आदिल्लेसु तिसु कजियमादिपाणगसभवो होज्ज, दोसु भडिबहिलगेसु परिवहण होज्ज ।

केसि परिवहण ? उच्यते - बालादीण, आविसद्दगहणेण बुद्धाण दुब्बलाण खयकियाण य सल्ल-विद्धान गिलाणाण य ॥५६६०॥ सत्थ पडिलेहति तम्हा सत्थो पडिलेहियव्वो ।

सत्थे इम पडिलेहियव्व -

सत्थ च सत्थवाहं, सत्थविहाण च आदियत्तं च ।

दव्वं खेत्त कालं, भावोमाण च पडिलेहे ॥५६६१॥

पुव्वद्धस्स इमा वक्खा -

सत्थे त्ति पंचमेदा, सत्थाहा अट्ठ आतियत्तीया ।

सत्थस्स विहाणं पुण, गणिमाति चउव्विहेक्केक्कं ॥५६६२॥

मत्स्वस्स पच भेदा - भडीमादि । सत्यवाहो अट्टविहो । आइयत्तिया ि अट्टविहा उवरि भणिहिति । सत्यविहाण पूण गणिमादि चउव्विह, गणिम पूगफलादि, धरिम ज तुलाए दिज्जति खडसक्करादि, मेज्ज वृत्ततट्टुलादि, पारिच्छ रयणमोत्तियादि । “एक्केक्के” ति वहिलगेसु वि एय चउव्विह । भारवहेसु वि एव चउव्विह । उदरियकप्पडिएसु त भड चउव्विह भाणियव्व ॥५६६२॥

दव्वादि चउक्क च पांडलेहेज्ज, तत्थ दव्वे -

अणुरंगादी जाणे, गुंठादी वाहणे अणुण्णवणे ।

धम्मो त्ति व भत्ती य व, बालादि अणिच्छे पडिकुट्टं ॥५६६३॥

अणुरंगा णाम धसिओ । जाणा सगडिगातो वा वाहणा । गुठादी - गुठो घोडगो, आदिसद्दातो अस्सो उट्ठो हत्थो वा । ते अणुण्णविज्जति - जइ अम्ह कोइ बालो आदिसद्दाओ वुड्ढो दुब्बलो गिलाणो वा गतु ण सक्केज्जा सो तुब्भेहि चडावेयव्वो, जइ अणुजाणति धम्मेण तो तेहि सम सुद्ध गमण । अह मुल्लेण विणा णेच्छति तो त ि अक्खुवगच्छिज्जति । अह मुल्लेण वि णेच्छति तो तेहि सम पडिकुट्ट गमण, ण तेहि सम गम्मति ॥५६६३॥

किं च इमेरिसभडभरितो इच्छिज्जति सत्थो -

दंतिक्क-गोर-तेल्ले, गुल-सप्पिण्णमातिभडभरितासु ।

अंतरवाघातम्मि उ, दंतेतिधरा उ किं देउ ॥५६६४॥

भोदग-साग-वट्टिमादी दत्तज्जय बहुविह दतिक्क ।

अह्वा - तट्टुला दतिकका, सव्व वा दत्तज्जय दतिकक । गोर त्ति गोघूमा । तहा तेल्लगुलसप्पि-
णाणाविघाण य धण्णाण भडीओ जइ भरियातो तो सो दव्वतो सुद्धो ।

किं कारण ? अतरा वाघाए उप्पण्णे त अप्पणा खति अम्हाण वि देति । “इहरह” ति जइ कुकुम करपूरिय - तगर पत्तचोय हिंशु सखलोयमादी अखज्जदव्वभरिए अतरा वाघाते सबले णिट्ठिए किं दितु, तम्हा एरिसभरिए ण गतव्व ॥५६६४॥

अतरा वाघातो इमो -

वासेण णदीपूरेण वा वि तेणभय हत्थि रोहे वा ।

खोभो जत्थ व गम्मति, असिव एमादि वाघातो ॥५६६५॥

अतरा गाढ वासमारद्ध, चउमासवाहिणी वा महानदी पूरेण आगता, अगगतो वा चोरभय, डुद्धहत्थिणा वा पथो रुद्धो जत्थ वा सत्थो गतुकामो तत्थ रोहगो, रज्जखोभो वा तत्थ, असिव वा तत्थ, एवमादिकज्जेसु अतरा सण्णिवेस काउ सत्थो अच्छते ॥५६६५॥ एव दव्वतो पडिलेहा ।

इमा खेत्त-काल-भावेसु -

खेत्तं जं बालादी, अपरिस्संता वतंति अद्धानं ।

काले जो पुव्वण्हे, भावे सपक्ख-परपक्खणादिणो ॥५६६६॥

जत्तिय खेत बालवुड्ढादिगच्छो अपग्निश्चातो गच्छति तत्तिय जति मत्थो जानि नो खेतमो मुद्धो ।
कालो जो उदयवेलाए पत्थिते पञ्चण्हे ठाति सो कालनो मुद्धो । भावे जो सपक्ख-परपक्खभिक्षायायेहि
आणाउण्णो सो भावमो मुद्धो ॥५६६६॥

एकमेकको सो दुविहो, मुद्धो ओमाणपेल्लितो चेव ।

मिच्छत्तपरिग्गहितो, गमणाऽऽदियणे य ठाणे य ॥५६६७॥

“एकमेकको” ति भडिबहिलादिमत्थो दुविहो—मुद्धो अमुद्धा य । मुद्धो अणोमाणो, ओमाणपेल्लिओ
अमुद्धो । सयवाहा आनियत्ती वा जे वा तत्थ अप्पहाणा एते मिच्छद्दिट्ठी । एतेहि सो सत्थो परिग्गहिता
होज्ज ॥५६६७॥

ओमाणपेल्लिओ इमेहि होज्ज —

समणा समणि सपक्खो, परपक्खो लिंणिणो गिहत्था य ।

आता मंजमदोमा, अमती य सपक्खवज्जेणं ॥५६६८॥

पुव्वक कठ । बहूनु सपक्ख-परपक्खभिक्षायायेसु अप्पक्खताग आयाविराहणा, कदादिग्गहे वा
मज्जमविराहणा । अणोमाणस अमतीते सपक्खोमाण वज्जिता परपक्खोमाणेण गन्ध, तत्थ जणा भिक्षुगहणे
विसेस जाणति ॥५६६८॥

“गमणे” ति अस्य व्याख्या —

गमणे जो जुत्तगती, वडगापल्लीहि वा अछिण्णेण ।

थडिल्ल तत्थ भवे, भिक्षुगहणे य वमही य ॥५६६९॥

जुत्तगती गाम मिदुगती — न गीत्र गच्छतीत्यथ । अत्रिण्णपहे गइयपल्लीमादीहि वा गच्छति,
तत्थ थडिल्ल भवति, वडयपल्लीहि य भिक्षु लभइ, वसडो य लभति ॥५६६९॥

‘आदियणे’ ति अस्य व्याख्या —

आतियणे भोत्तणं, ण चलति अवरण्हे तेण गतव्वं ।

तेण पर भयणा उ, ठाणे थडिल्लठायासु ॥५६७०॥

आतियण ति जो भुजणवेलाए ठाति, भोत्तण य अवरण्हे जो ण चलति तेण गतव्व । तेण पर भयणे
ति भयणा गाम जइ अवरण्हे भोत्तु चलण तत्थ जइ सव्व सम या गतु तो मुद्धो, अह ण सक्केति तो अमुद्धो,
ण तेण गतव्व । ठाणे ति जो सत्थो सण्णिवेसथडिल्लेसु ठाति सो मुद्धो, अथडिल्ले ठाति अमुद्धो ॥५६७०॥

ज वुत्त सत्थहा अट्ट आनियत्ती य अस्य व्याख्या —

पुराणसावग सम्मद्दिट्ठि अहामह दाणसड्ढे य ।

अणभिग्गहिते मिच्छे, अभिग्गहिते अण्णत्तिथी य ॥५६७१॥

पुराणो, गहिताणुव्वतो सावगो, अविरयसम्मद्दिट्ठी, अहामहगो, दाणसड्ढो, अणभिग्गहियमिच्छो
अभिग्गहियमिच्छद्दिट्ठी, अण्णत्तिथिओ य, एते सत्थाहिवा अट्ट । आनियत्तिया वि एते चेव अट्ट ॥५६७१॥

अद्वाण पडुच्च भगदमणत्थ भण्णति -

मत्थपणए य सुद्धे, य पेळिल्ले कालऽकालगम-भोजी ।

कालमकालट्ठाई, मत्थाहऽट्ठाऽऽदियत्ती वा ॥५६७२॥

मत्थपणग नि पच मत्था, एय गुणकारपय, ते य सत्था मुद्धा ।

कह् ? उच्यते - सपक्व परपक्वतोमाणमपेल्लियं ति, कालमकाले गमण, कालमकाले भोजण कालमकालगमिवसो ठाई ति थडिलमथडिलठाई । एते चउरं सपडिपक्खा मोलमभगकरणपया । अट्ठ सत्थवाहा अनियत्ति ने दो वि गुणकारपया - एत्थ काले गच्छइ, काले भुजइ, काले निवेसइ, थडिले ठाई-एए सुद्धपया, पडिपक्वे अनुद्धा । मत्थवाहादिया पडमा चउरं नियमा भद्दा, पच्छिमा चउरं भयणिजा भवति, अइयत्ती वि ॥५६७२॥ एसा भद्दाहुकया गाहा, एहीअ अत्थओ सोलम भगा उत्तरभगा, उत्तरभगविगप्पा य मन्वे सूतिया ।

जनो भण्णति -

एतेमिं च पयाण, भयणाए मयाइ एगयणं तु ।

वीमं च गमा णेया, एत्तो य मयग्गमो जतणा ॥५६७३॥

मत्थपणगपद, चउरं य मोलमभगपदा, अट्ठ सत्थवाहा, आदियन्ति अट्ठ पदा य, एतेसि पदाण मज्जे भयण ति भगा, एतेमिं एक्कावणमया भवति वीमं च भगा । एत्थ सत्थेसु मुद्धासुद्धेसु मत्थवाहाइयत्तमु य भट्ठपनेसु मत्थवाहुविताए सयगेहि जयणा भवति ॥५६७३॥

एमेवत्थो फुडो कज्जति -

कालुट्ठाई कालनिवेसी, ठाणट्ठाई कालभोई य ।

उग्गयऽणत्थमियथंडिल मज्झण्ह थरंत सरे वा ॥५६७४॥

कालुट्ठाती उग्गए आइच्चे दिवमतो जा गच्छन्ति, कालनिवेसी जे अणत्थमिए आदिच्चे थक्कति, ठाणट्ठाती थडिल्ले थक्कइ, कालभाती जो मज्झण्ह भुजइ, अणत्थमिए वा ॥५६७४॥

एतेमिं तु पयाण, भयणा मोलमविहा तु कायव्वा ।

मत्थपणएण गुणिता, अमीति भगा उ नायव्वा ॥५६७५॥

एतेमिं चउण्ह पयाण इमेण विहिगा मोलम भगा कायव्वा - कालुट्ठाती कालनिवेसी ठाणट्ठाती कानभोती (१), एव सपडिपक्खेसु मोलम भगा कायव्वा । एते मोलम भगा सत्थपणएण गुणिता असीति भगा भवति ॥५६७५॥

मत्थाहऽट्ठगुणिता, असीति चत्ताल छस्मया होंति ।

ते आइयत्तिगुणिता, मत एक्कावण वीसऽहिया ॥५६७६॥

असीति अट्ठेहि सत्थाहिर्वेह गुणिया छस्मता चत्ताला भवति । ते अट्ठेहि अतिप्रतिएहि गुणिता एक्कावण मतः वीसा (५१२०) भवति । एत्थ अण्णयणे सत्थे भगविगप्पे वा मुद्धे आगतु आयरियाण आलोएनि मत्थपडिलेह्वा ॥५६७६॥

इदाणि अणुणवणा भणति -

दोण्ह वि चियत्ते गमणं, एगस्मऽचियत्ते होति भयणा उ ।

अप्पत्ताण णिमित्तं, पत्त मत्थम्मि परिसाओ ॥५६७७॥

जत्थ एगो सत्थवाहो तत्थ त अणुणवेति जे य अहप्पवाणा पुरिसा ते वि अणुणवेति जत्थ दो सत्थाधिवा तत्थ दोऽवि अणुणवेति, दोण्ह वि चियत्ते गमण । अह एगस्स अचियत्त तो भयणा, जति पेल्लगस्स चियत्त तो गम्मति अह पल्लगस्स अचियत्त तो ण गम्मति । पथिता वा आव ण मिलति मत्थे ताव सउणादि-
णिमित्तं नेण्हति, सत्थे पुण पत्ता सत्थस्स चेव सउणेण गच्छति । अण्ण च सत्थपत्ता निणिण परिसा करेति -
पुरतो मिगपरिसा, मज्जे सोहपरिसा, पिट्ठो वमभपरिसा ॥५६७७॥

दोण्ह वि त्ति अस्य व्याख्या -

दोण्ह वि समागता मत्थिओ व जस्स व वसेण गम्मति ऊ ।

अणुणवणे गुरुगा, एमेव य एगतरपंते ॥५६७८॥

‘दोण्ह’ वि सत्थो सत्थवाहा य, एते दो वि समागता समग अणुणवेति । अहवा - सत्थवाह जस्स य वसेण गम्मइ एते दो वि समागते समग अणुणवेति । अहवा - सत्थाहिवा चेव एकक अणुणवे । एव जइ णो अणुणवेति तो चउगुरुगा, जति दाणिण अहिवा ते दा वि पेल्लगा तत्थ एकक अणुणवेति, एत्थ वि चउ-
गुरुगा । एगतरे वा पने पेल्लगे जइ गच्छति तत्थ एमेव चउगुरुगा ॥५६७८॥

जो वा वि पेल्लिओ तं, भणति तुह बाहुल्लायसंगहिया ।

त्रच्चाभाऽणुगगहो त्ति य, गमणं इहरा गुरु आणा ॥५६७९॥

सत्थावि सत्थ वा जो वा तम्मि सत्थ पेल्लगे त भणति - जति अणुजाणह अम्ह तो तुब्भेहि
सम तुह बाहुल्लायट्ठिता सम वच्चाभो ।

जइ सा भणेज - ‘अणुगगहा’ ततो गम्मति । अह तुण्हिक्को अच्छति भणइ वा - ‘मा गच्छह’
जइ गच्छति तो चउगुरुग, आणादिया य दोसा ॥५६७९॥

जति सत्थस्स अचियत्ते सत्थाहिवस्स वा अन्नस्स वा पेल्लगस्स अचियत्ते गम्मति तो
इमे दोसा -

पडिमेहण णिच्छुभणं, उवकरणं बालमाति वा हारे ।

अतियत्ति गोम्मएहि व, उड्डुज्जंते (उद्धुज्जंते) ण वारंति ॥५६८०॥

अडविमज्जे गयाण भत्ताण पडिसेहेज, सत्थातो वा णिच्छुमेज्ज, उवकरण वा बाल वा अण्णेण
हरावेज, अतियत्तिएहि ‘गोमिय’ त्ति गो (या) णइल्लया तेहि उद्धुज्जंते न वारंति ॥५६८०॥

ते पता भद्गा वा -

भट्ठगवयणे गमणं, भिक्खे भत्तट्ठणाए वसहीए ।

थंडिल्लासति मत्तग, वसभा य पदेम वोसिरणं ॥५६८१॥

अणुणविए भद्गवयणे गम्मति, इम भद्गवयण - ज तुब्भेहि सदिसह त मे सव्व पडिपावेस्स मिद्धत्थपुप्फावि सिरट्ठिना मे पीड ण करेह । एव भणते गतव्व ॥५६८१॥

पुव्वभणितो व जयणा, भिक्खे भत्तट्ठ वसहि थंडिल्ले ।

सच्चवेव य होति ड्हं, णाणत्तं णवरि कप्पम्मि ॥५६८२॥

पुव्व भणिता सवट्ठमुत्ते थंडिल्लस्स असति मत्तगेसु वोसिरित्तु वहति जाव थडिल, एव वसभा जयति । थडिलमत्तगासति घम्माघम्मागासप्पदेसेसु वासिरति । इह कप्पे णाणत्त ॥५६८२॥

तस्सिमो विही-

अग्गहणे कप्पम्स उ, गुरुणा दुविहा विराहणा नियमा ।

पुरिसद्धाण सत्थ, णाऊण ण वा वि गिण्हेज्जा ॥५६८३॥

जति छिण्णे अचिद्धणे वा पथे अद्धानकप्प ण गेण्हति तो चउगुरुणा, भत्तादिअलभे खुहियस्स अयविराहणा, खुहत्तो वा कदादी रे ण्हेज्ज सज्जमविराहणा । अहवा - सव्वे जइ सघयण-धिति बलिया पुरिसा अद्धान वा जति एगदेवसिय दो देवसिय वा, सत्थ ति - जति सत्थे अत्थि भिक्ख पभूय धुवलभो भद्गो सत्थगो कालभोईय कालट्ठाती य एवमादिणा णातु छिण्णद्धाने वि ण गेण्हेज्ज ॥५६८३॥

सो पुण अद्धानकप्पो केरिसो वेत्तव्वो -

मक्कर-घय-गुलमीसा, खज्जूर अगंथिमा य तम्मीसा ।

मत्तुअ पिण्णाओ वा, घय-गुलमिस्से खरेणं वा ॥५६८४॥

सक्कराए घण य, सक्कराभावे गुलेण वा घएण वा, एतेहि मिस्सिया अगंथिमा वेप्पति । अगंथिमा णाम कयलया ।

अण्णे भणति - मग्गट्ठविमण फलाण कयलकप्पमाणाओ पेडीओ एकम्मि डाले बहुक्किओ भवति ताणि फलाणि खडाखडीण कयाणि वेप्पति, तेसि असति खज्जुरा घयगुलमिस्सा घिप्पति, एतेसि असनीए मत्तुआ घयगुलमिस्सा वेप्पति, अमनि घयस्स खरमण्डुगुलमिस्सो पिण्णाओ वेत्तव्वो ॥५६८४॥

एतेमि इमो गुणो -

थोवा वि हणंति खुहं, ण य तण्ह करेति एते खज्जंता ।

सुक्खोदणोवसल्लंभे, समितिम दंतिक्क चुण्णं वा ॥५६८५॥

पुव्वद कठ । एरिमअद्धानकप्पस्म अलभे “सुक्खोदणो” - सुक्खकूरो ‘समितिम’ सुक्खमडगा, “दतिक्क” - अण्णेगागार खज्ज । अहवा - दतिक्क चुण्णो तदुल्लोटी दतिक्कगहणेण तदुल्लुण्णो, चुण्णगह णानो खज्जचूरी, एम दतिक्कचुण्णो खज्जचूरी वा घयगुलेण मिस्मिज्जति, मा समज्जहिंति । जति सुद्ध लभति तो अद्धानकप्प ण भुजति, जतिण वा ऊण सुद्ध तत्तिय अद्धानकप्प भुजति, अणुवट्ठावियाण वा दिज्जति अद्धानकप्पो ॥५६८५॥

इम च गिण्हति-

तिविहाऽऽमयभेमज्जे, वणभेमज्जे य मप्पि-महु-पट्टे ।

सुद्धाऽमति तिपरिए, जा कम्मं णाउमद्धानं ॥५६८६॥

वात-पित्त-मिभ्रवमहानो मण्डितानियाण वा रोगातकाण भेसजा ओसहा वण ओसहाणि य गेण्हति, वणभगडा य घनमहु, वणवगडा य खीरपट्ट गेण्हति । सव्व पेय सुद्ध मणियव्व, असति सुद्धस्स तिपरियजयणाए पण्यपरिहाणीण जाव अहाकम्म वि गेण्हति, पमाणो अद्यागकप्प थोव बहु वा अद्याण जाउ गेण्हति, गच्छप्रमाण वा न।उ ॥५६८६॥

ममए सरभेदादी, लिगविवेगं च कानु गीतत्था ।

खरकम्मिया व होउ, करेति गुत्ति उभयवग्गे ॥५६८७॥

जत्थ सभय तत्थ वसभा सरभेयवणभेयकारिगुलियाहि अप्पणो अण्णारिस सरवणभेद काउ, अहवा-रयोहरण दि दव्वलिग मोत्तु गिट्ठिलिग काउ जहा ग णज्जति एते सजय ति खरकम्मिया व मत्तद्धपरियरा जहासभवगहियाउघा होउ माहमाहुगोउभयवग्गे गुत्तिरक्ख वरति ॥५६८७॥

किं च —

जे पुव्वं उव्वगरणा, गहिता अद्याण पविसमाणेहि ।

जं जं जोग्गं जत्थ उ, अद्याणे तस्स परिभोगो ॥५६८८॥

पुव्वद्ध कठ । ज जोग्ग — जत्थ उदगगलणकाले चम्मकरगो, वहणकाले कानोडी उट्ठा, भिक्खाय-रियकाले सिक्कगा, विकरणकाले दिप्पलगो, एवमादि ॥५६८८॥

सुखोदणो समितिमा, कंजुमिणोदेहि उण्हविय भुजे ।

मूलुत्तरे विभामा, जतितूर्ण णिग्गते विवेगो ॥५६८९॥

जो सुखोदणो गहितो, जे य समितिमादी खरा, एते उगोदणेशेण कजिएण वा उण्हे गाहेत्ता सूईकरेत्ता भोत्तवा । “मूलुत्तरे विभाम” ति अद्याणकप्पो मूलगुणोवघातो, अहाकम्म उत्तरगुणोवघातो ।

किं अद्याणकप्प भुजउ ? अह अहाकम्म लवभमाण भुजउ ?, अत्रोच्यते—“एत्थ दो आदेसा, जम्हा कप्पो मूलगुणघातो, अहाकम्म उत्तरगुणघातो, तम्हा कम्म लहुतर भोत्तव्व । जम्हा आहाकम्मे छण्हुवघातो, कप्पो पुण फालुओ । एत्थ वर कप्पो, ण कम्म” ॥५६८९॥

चोदगाह — ‘जो कप्पो आहाकम्मओ तत्थ कह दुदोसदुद्धो’ ?

आचार्य आह —

काम कम्म पि सो कप्पो, णिमिं च परिवामितो ।

तहावि खलु मो सेयो, ण य कम्म दिणे दिणे ॥५६९०॥

सवथा वर अद्याणकप्प एव, न चाहाकम्म, दिने दिने बहुसत्त्वोपघातित्वात् ॥५६९०॥

आहाकम्मं मडं घातो, सय पुव्वहते मिया ।

जे ते तु कम्ममिच्छंति, निग्धीणा ते ण मे मता ॥५६९१॥

अद्याणकप्पे ज आहाकम्म तत्र पूर्वर्ते सकृदेव जीवोवघात (जे पुण) अद्याणकप्प मूलगुणा ण भजति । “उत्तरगुणो ति” जे पुण आवाकम्म भजति दिने दिने ते अत्यन्तनिष्ठुणा सत्त्वेषु, न ते मम सम्मता सयमायत्तन प्रति ।

“जतिऊण णिग्गए विवेगो” त्ति एव अद्धाने जत्तिता जाहे अद्धानातो णिग्गता ताहे अभुत्त
भुत्तुद्धनिय वा अद्धानकप्प विवेगो त्ति परिट्ठवेत्ति ॥५६९१॥ भद्गवयणे त्ति गय ।

इदाणि “भिक्षित्ति” दारस्स कोति विससो भण्णति -

कालुट्ठादीमादिसु, भंगेसु जतंति बितियभंगादी ।

लिंगविवेगोऽवकंते, चुडलीओ मग्गओ अभए ॥५६९२॥

कालुट्ठानी कालनिवेसी, ठाणठाती कालभोती ।

एत्थ पढमभगे सुद्धो । एत्थ भगजयणा णत्थि ।

बितियमगादिसु जयति-तत्थ बितियभगे अकालभोती, तत्थ सलिंगविवेग काउ राओ परलिगेण
णिग्गति ।

तत्थि-वउत्थभगेसु अ ठाणट्ठाती तत्थ जयति, ज गोणादीहि अवकतट्ठाण आसि तहिं ठायति ।
वउत्थभगे लिंगविवेगेण भत्तादि गेण्हति, गोणादिअवकते य ठायति ।

पचमादिभगेसु चउसु “चुडली” सयारभूमादिसु बिलादि जोइउ ठायति ।

णवमादिसोलसतेसु अट्ठभगेसु अकालट्ठातीसु रातो गमणमगातो “अभए” त्ति जति वच्चताण
‘मग्गतो’ त्ति पच्छतो अभय तो पच्छतो ठिता जयति । एसा भगजयणा ॥५६९२॥

पुवं भणिता जतणा, भिक्षे भत्तट्ठ वसहि थंडिल्ले ।

सच्चेव य होति इहं, जयणा ततियम्मि भंगम्मि ॥५६९३॥

सवट्ठसुत्तमादिसु बहुसो भणिया जयणा ।

अह्वा - णवगणिवेसे जहा भिक्षगहण तहा कायव्व भत्तट्ठाण, अकालठातिस्स निब्भए पुरतो
गनु समुद्दिस्सि, जेण समुद्दिट्ठे सत्थो अब्भोत, वसहिमज्जे सत्थस्स गिण्हति, अथडिल्ले मत्तएसु जयति, मत्तगासत्ति
पदेसेसु वि । अह्वा - ततियभगे अथडिलाइम्मि सच्चेव जयणा जा सवट्ठसुत्ते सवित्थरा भणिया ॥५६९३॥

सावय अण्णट्ठकडे, अट्ठा सयमेव जोति जतणाए ।

गोउलविउव्वणाए, आसासपरंपरा सुद्धो ॥५६९४॥

सावय त्ति अद्धाने जति सावयभय होज्ज तो अण्णेहिं सत्थिल्लएहिं जा अप्पणट्ठा कया अगणी
तमत्थियति, तस्स य असति अण्णत्थकड अगणि वेत्तूण फासुयदारएहिं जालति, अट्ठे त्ति जा सत्थिल्लगेहिं
सजयट्ठाए कडा त सेवति, परकडअसति त्ति सयमेव अगणि अहरुत्तरेण जणति जोइजइणाए त्ति - कते कज्जे
जोइसालभणियजयणाए विज्जवेत्तीत्यर्थ ॥५६९४॥

“गोउल” यश्चार्ध, अस्य व्याख्या -

मावय-तेण-परद्धे, सत्थे फिडिता ततो जति हवेज्जा ।

अंतिमवइया वेटिय, नियड्ढणय गोउलं कहणा ॥५६९५॥

अतरा महाडवीए सिंघादिसावयतेणेहि वा सत्या परद्धो सव्वो दिसोदिसि णट्ठो, साधू वि एकतो णट्ठा, सत्थाओ फिडिया ण किं वि सत्थिल्लय पस्सति, पथ च अजाणमाणा भीमाडवि पवज्जेज्जा । तत्थ वसभा गणिपुरीया सेसा सव्वत्थामेण गच्छस्सव्वण करेति जयणाए ताह दिसाभागमपुणेता सबालवुड्ढुगच्छस्स रक्खणट्ठा । बणदेवताए उस्सया करेति, सा आगपिया दिसिभाग पथ वा कट्ठज्ज, सम्महिट्ठिदवता वा अण्णोवदेसतो बइयाओ विउव्वति, ते साधू त बइय पासित्ता आसमिया, ते साधू ताए देवताए गोउलपरपरएण ताव नीया जाव जणवय पत्ता ताहे सा देवता अतिमवइयाए जाव उव्वगरणवेटिय विस्सरावेइ, तीए भट्ठा साहुणो णियत्ता गोउल न पेच्छति, वेटिय धेत्तु पडिगया । गुरुणो कहेति — नरिय सा वइयत्ति, नाय जहा देवयाए कय ति, एत्थ सुद्धा चेव । नत्थि पच्छित्त ॥५६६५॥

भंडी-बहिलग-भरवाहिएसु एसा व वणिण्या जतणा ।

ओदरिय विवित्तेसु, जयणा इमा तत्थ नायव्वा ॥५६६६॥

विचित्ता कण्डिया, अहवा-विवित्ता-मुसित्ता, सेस कठ ।

ओदरिए पत्थयणा, एसति पत्थयण तेसि कंदमूलफला ।

अग्गहणम्मि य रज्जू, वल्लेति गहणं तु जयणाए ॥५६६७॥

भडिबहिलगभरवहाण असति आगाढे रायदुट्ठादिकज्जे उदरिगादिमु वि सह गम्मेज्ज । तत्थ ओदरिगेहि सह गम्ममाणे अट्ठाणकप्पादि ओदरिगादीण वि पत्थयणासति जाहे ते ओदरिया पत्थयण-खीणा, ताहे तेमि पत्थयण कदमूलफलादि, साहूण ते च्चेव होज्ज ॥५६६८॥

“अग्गहणम्मि” पच्छद्ध, अस्य व्याख्या —

कदादि अभुंजते, अपरिणते सत्थियाण कहयति ।

पुच्छा वेहासे पुण, दुक्खिहरा खाइतुं पुरतो ॥५६६८॥

तत्थ जे अपरिणया ते णेच्छति कदादि भुजिउ, ताहे वसभा तेसि सत्थिल्लाण कहेति ।

ते वसभा सत्थिल्लए भणति — एते तहा बोहावेह, जहा खायति ।

ताहे ते सत्थिल्लया रज्जूओ वलति, अपरिणता पुच्छति । अपरिणयाण वा पुरतो साह पुच्छति — किं एयाहिं रज्जूहिं ?,

ताहे ते सत्थिल्लया भणति — अम्हे एककणावारुडा । अम्हे कदादि ण खाइत, अम्हे एताहिं वेहाणसे उल्लबेहामो, इहरा तेसि पुरओ दुक्ख खायामो ॥५६६९॥

इहरा वि मरति एसो, अम्हे खायामो सो वि तु भएणं ।

कंदादि कज्जगहणे, इमा उ जतणा तहिं होति ॥५६६९॥

सो कदादि अस्सायतो इह अडवीए अबस्स चेव मरइ तम्हा त मारेत्ता अम्हे सुह चेव खायामो । सो य अपरिणओ एय सोआ भया खायति, एवमादिकज्जे कदादिगहणे इमा जयणा ॥५६६९॥

फासुगजोणि •• गाहा	॥५७००॥
बद्धट्टिए वि एवं •• गाहा	॥५७०१॥
एमेव होइ •• गाहा	॥५७०२॥
साहारण • गाहा	॥५७०३॥
तुवरे •• गाहा	॥५७०४॥
पासदण • गाहा	॥५७०५॥

‘एवं छ गाहाओ भाणियवो ।

एयाओ जहा पलबसूत्रे, पूर्ववत् । असिवे त्ति गत ।

इदाणि ओमे त्ति -

ओमे एसण सोही, पजहति परितावितो दिग्गिछाए ।

अलभंते वि य मरणं, अममाही तित्थवोच्छेदो ॥५७०६॥

ओमे अद्धान पवजियव्व ओमे अच्छनो दिग्गिछाए परिताविओ एसण पजहति । अहवा — अलभतो भत्तपाण मरति, असमाही वा भवति, असमाहिमरणेण वा णाराधइ, अण्णोणमरतेसु य तित्थवोच्छेओ भवति, एते अगमणे दोसा ॥५७००॥

गमणे इमा पथजयणा -

ओमोयरियागमणे, मग्गे असती य पथजयणाए ।

परिपुच्छिऊण गमणं चतुव्विहं रायदुट्ठं तु ॥५७०७॥

जया ओमे गम्मति तदा पुव्व मग्गेण गतव्व, असति मग्गस्स पथेण, तत्थे वि पुव्व अच्छिण्णे, पच्छा छिण्णेण । गमणे विही सच्चेव जो असिवे । ओमे त्ति गत ।

इदाणि “रायदुट्ठे”, त चउव्विह वक्खमाण ॥५७०७॥

१ पुनासत्कमूलभाष्यपुस्तकादर्शे, टाइपअक्षितपुस्तकादर्शं च “फासुग जोणि गाहा” त आरभ्य “एवं छ गाहाओ भाणियव्वाओ” इत्यन्त पाठ उपरिनिदिष्टरूपेण भाष्ये समुपलभ्यते । किन्तु कूर्णिकारेण “एयाओ जहा प्रलबसूत्रे पूर्ववत्” इति सूचना विहिता, तदनुसारेण प्रलम्बसूत्राधिकारे तु गाथात्रयमेव, न तु गाथा षट्कम् । ता खलु तिस्रो गाथास्त्वेता —

फासुग जोणि परित्ते, एगट्ठि अबद्ध भिण्णाभिण्णे य ।

बद्धट्टिए वि एवं, एमेव य होति बहुवीए ॥३४६७॥

एमेव होति उवरि, बद्धट्टिय तह होति बहुवीए ।

साहारणस्स भावा, आदीए बहुगुण ज च ॥३४६८॥

तुवरे फले य पत्ते, रुक्ख-सिला-तुण्य-मङ्गणादीसु ।

पासदणे पवाते, आयवतत्ते वहे अवहे ॥३४७०॥

भाषाज्वलोकनेन स्फुट प्रतिभाति — यत् “बद्धट्टिए वि एवं” ५७०१, साहारण ५७०३, पासदण ५७०५, अङ्कमिता गाथा “फासुगजोणि” ५७००, “एमेवहोइ” ५७०२, “तुवरे” ५७०४, अङ्कमितायां गाथानामुत्तरांशरूपा एव ।

सो पुण राया कहं पदुटो ? अत उच्यते -

ओरोहधरिसणाए, अम्भरहियसेहदिव्खणाए य ।

अहिमर अणिट्टदरिसण, वुग्गाहण वा अणायारे ॥५७०८॥

ओरोहओ अंतेपुरं, तं लिगत्थमादिणा केणइ आचरिसियं ।

अहवा - तस्स रण्णो अम्भरहिओ सि आसण्णो कोइ सेहो दिव्खितो । अहवा - साधुवेसेण अहिमरा पविट्ठा ।

अहवा - स्वभावेण कोइ साधु अणिट्ठो, अणिट्ठं वा साधुदंसणं मण्णति, मंतिमादीण वा वुग्गा-
हितो, वाए वा जितो, संजओ वा अगारीए समं अणायारं पडिसेवंतो दिट्ठो ॥५७०८॥

एवमादिकारणेहि पदुटो इमं कुज्जा -

णिव्विसओत्ति य पदमो, वित्तिओ मा देह भत्त-पाणं से ।

तत्तिओ उवकरणहरो, जीविय-चरित्तस्स वा भेदो ॥५७०९॥

जेण रण्णा णिव्विसया आणत्ता तत्थ जत्ति ण गच्छति तो चउत्तुगं, अण्णं च आणाइक्कमे कज्जमाणे
राया गाढयरं रुस्सति । एते पदमभेदे दोसा ॥५७०९॥

गुरुमा आणालोवे, बलियतरं कुप्पे पदमए दोसा ।

गेण्हंत-देंतदोसा, वित्तिए चरिमे दुविधमेतो ॥५७१०॥

जेण रण्णा रुट्ठेणं गाम-गगरादिसु भत्तपाणं वारितं तत्थ देंताण गेण्हंताण वि दोसा, एते वित्ति
दोसा । तत्तिए उवकरणहरो तत्थ वि एते चेव । चरिमो सि चउत्तो तत्थ दुविधभेददोसो जीवियभेदं वा
करेज्ज, चरणमेयं वा । जम्हा अच्छंताण एवमादी दोसा तम्हा गंतव्वं ॥५७१०॥

णिव्विसयाण ताण तिविहं गमणं इमं -

सच्छंदेण य गमणं, भिक्खे भत्तट्ठणा य वसहीए ।

दारे ठिओ रुंभति, एगत्थ ठिओ व आणावे ॥५७११॥

“सच्छंदेण य गमणं भिक्खे” अस्य व्याख्या -

सच्छंदेण सयं वा, गमणं सत्थेण वा वि पुव्वुत्तं ।

तत्थुग्गमात्तिसुद्धं, असंथरे वा पणमहाणी ॥५७१२॥

सच्छंदगमणं अण्णो इच्छाए, सयं ति विणा सत्थेण वा गच्छति, तं च गमणं पुव्वुत्तं इहेव
असिवद्दारे ओहणिज्जुतीए वा । तत्थ सच्छंदगमणे उग्गमादिसुद्धं भत्तपाणं गेण्हंतो अच्छत्तु, सुद्धासति वा
असंथरे पणगपरिहाणीए जयंता गेण्हंति ।

“दारे व ठिउ” त्तिऽप्यस्स विभासा - णिव्विसयमाणत्तेसु मा एत्थेव जणवदे णिलुक्का
अच्छिहिति, ताहे पुरिसे साहज्जे देति ।

ते पुरिसा भिक्खुगहणकाले भणति - “तुम्हे पविसह गाम णगर वा भिक्खु हिडित्ता ततो चेव भोत्तु मागच्छह, इह चेव दारद्विता उद्दिक्खामो ।” ते तत्थ ठिया जो जो साधू एति त त च णिरु भति जाव सव्व मिलिया ।

अह्वा - ते रायपुरिसा एगत्थ सभाए देउले वा ठिता भणति - तुम्हे भिक्खु हिडित्ता इह आणेह, अम्ह समीवे भुजह त्ति ॥५७१२॥

तिण्हेगतरे गमणं, एसणमादीसु होइ जइत्तव्वं ।

भत्तट्ट ण थंडिल्ले, असति सोही व जा जत्थ ॥५७१३॥

“तिण्हेगयर” त्ति - मच्छदगमण एक्को, दारे रु भति बित्तिओ, इह आणेह त्ति तत्तिओ, एयणयरप्पगारेण गच्छमाणा एसणा । आदिसद्दातो उग्गमुप्पायणा य । तेसु विसुद्ध भत्तवाण गेण्हति, भत्तट्ट दोसु बिहिणा करेति । रायपुरिससमीवद्वित्तु भयणा । थंडिल्लसामायारी ण हावेति, रायपुरिससमीवद्वित्तुहि वा कुरुकुय करेति । सच्छद वसमाणा वमहिंसामायारि न परिहावति ।

अह् रायपुरिसा भणेज्ज - “अम्ह समीवे वसियत्त्व ।” तत्थ वि जहा विरोहतो ण हावेति । भत्तादिमुद्धत्स अमति पणमपरिहाणीए विसोवि अविसोवीए जयतस्स जा जत्थ अप्पतरदोमकोडी त गेण्हति ॥५७१३॥

जे भणिया भद्वाहुकयाए गाहाए सच्छदगमणाइया निण्णि पगारा, ते चेव सिद्धसेणखमा समणेहि फुडतरा करेतेहि इमे भणित्ता -

सच्छदेण उ एक्कं, वितियं अण्णत्थ भोत्तिहं मिलह ।

तत्तिओ घेत्तुं भिक्खं, इह भुजह तीसु वी जतणा ॥५७१४॥

तिसु वि पगारेसु गच्छन्ता तिसु वि उग्गमुप्पायगेसणासु जतति, ससति ण हावेति । शेष गतार्थम् ॥५७१४॥

अह्वा - कोइ कम्मघणक्कखडो स्वचिनेनिकुतिवचनानुमानपरमविजुम्भादिद कुर्यात् -

सवितिज्जए व मुंचति, आणावेत्तुं च चोल्लए देंति ।

अम्हुग्गमाइसुद्धं, अणुसट्ठि अणिच्छ जं अंतं ॥५७१५॥

सावूण भिक्खु हिडिताण रायपुरिसवितिज्जते जइ उत्तसत्ता अणेसणिज्ज पि गिण्हावेति तत्थ ते पणवेयञ्जा - अम्ह उग्गमातिमुद्ध घेप्पति । अह्वा - एगत्थ णिरु मिउ चोल्लए आणावेक्क देंति “एय भुजह” त्ति ।

ताहे सो रायपुरिसो भणति - “अम्हे उग्गमाइ सुद्ध भुजेमो, ण कप्पइ एय ।” एव भणिओ जइ उस्सकलइ ताहे भिक्खु हिडति, अणिच्छे अणुसट्ठो, घम्मकहालद्धो तो घम्म कहेति, णिमित्तेण वा प्राउट्ठिज्जति, मतत्रोएण वा वलीकज्जति, असति अणिच्छे य ज चोल्लगेसु आणीय तत्थ ज अतपत्त त भुजति ॥५७१५॥

अह्वा -

पुव्वं व उवक्खडियं, खीरादी वा अणिच्छे जं देति ।

कमठग भुत्ते सन्ना, कुरुकुयदुविहेण वि दवेणं ॥५७१६॥

सो रायपुरिसो भणति - 'ज पुव्वरद्ध त अम्ह चोल्लगेसु आणिज्जउ, दहिखीरादि वा आणाविज्जउ ।'

अहवा - चोल्लगेसु ज पुव्वरद्ध दहिखीरादि व भजति, जइ पुव्वरद्ध दहिखीरादि वा नेच्छति आणावेत्तु ताहे सुद्धमसुद्ध वा ज सो देति त भजति ।

इमा भत्तट्टजयणा - कमढगेसु सतर भजति, गिहिभायगेसु वा । सण्ण व वोसिरित्ता फासुयमट्टियाए बहुदवेण य कुरकुय करेति, दुविषेण वि दवेण अचित्तेण य सचित्तेण वि, पुव्व मीसेण पच्छा ववहारसचित्तेण ।

“असति सोधी य जा जत्थ” ति एय पद अण्णहा भण्णानि - जति जयणा सभवे अजयणं ण करति, विसुद्धाहारे वा लम्भते असुद्ध भत्तट्ट, थडिल्लविहि वा ण करेति, तो जा जत्थ सोही तमावज्जति । णिव्विसय त्ति गय ।

^३इदाणि बित्तिओ “मा देह भत्तपाण” ति अत्रोच्यते -

बित्तिए वि होति जयणा, भत्ते पाणे अलम्भमाणे वि ।

दोसीण तक्क पिंडी, एसणमादीसु जइय्वं ॥५७१७॥

पुव्वद्ध कठ । जाव जणो ण सचरति ताव साणुवेलाए दोसीण तक्क वा गेण्हति भिक्खवेलाए वा वायसपिंडीओ गेण्हति, ततो एसणाए जे अप्पतरा दोमा ततो उप्पायणाए ततो उग्गमेण अण्णतरदोसेसु जयति ॥५७१७॥

अहवा - इमा जयणा -

पुराणादि पण्णवेउं, णिसिं पि गीयत्थे होइ गहणं तु ।

अग्गीते दिवा गहणं, सुण्णघरे ओमरादीसु ॥५७१८॥

पुराणो सावगो वा गहियाणुव्वतो खेयणो पण्णविज्जति । सो पण्णविज्जो देवकुले बलिलक्खेण ठावेइ, त दिवा धेप्पइ, तारिस्स असइ गीयत्थेसु रातो वि धेप्पति । अग्गीएसु दिवा गहणं, देवकुले सुण्णघरे वसतघरे वा अक्खणलक्खेण ओमराईसु ठविय ॥५७१८॥

उम्मर कोट्टिंभेसु य, देवकुले वा णिवेदणं रण्णो ।

कयकरणे करणं वा, असती णदी दुविधदव्वे ॥५७१९॥

“कोट्टिंभे” ति - जत्थ गोभत्त दिज्जति तत्थ गाभन्नलक्खेण ठविय गेण्हति, जाव उवसामिज्जति राया ताव एव जयणजुत्ता अच्छति । जति सब्बहा उवसामिज्जनो णोवसमति ताहे जो सज्जा कयकरणो ईसत्थे सो त बंधेउ सासेति, विज्जाबलेण वा सासेति, विउव्विणिड्ढिसपण्णो वा सासेति । जाहे कयकरणादियाण असति ताहे “नदि” ति णदी हरिसो, एसो तुट्टी, जेण दुविधदव्वेण भवति त गेण्हति । दुविधदव्व फासुयमफासुग वा, परित्तमणत वा, असण्णिहि सण्णिहि वा, एसणिज्ज अण्णसण्णिज्ज वा । एवमादिभत्तपाण पडिसेव त्ति ॥५७१९॥ मा देह भत्तपाणति गय ।

इदाणि ^३उवकरणहरे ति -

तत्तिए वि होति जयणा, वत्थे पादे अलम्भमाणम्मि ।

उच्छुद्ध विप्पइण्णे, एसणमादीसु जतियव्वं ॥५७२०॥

रणा पडिसिद्ध मा एतेसि कोइ देज्ज । एव वत्थपादेसु अलम्भमाणेसु इमा जयणा - ज वेवकुत्तादिसु कप्पडिएसु उच्छुद्ध त गिण्हति, विप्पइण्ण ज उक्कुत्तादिसु ठित एसणादिसु वा जतति पूर्ववत् ॥५७२०॥

हितसेसमाणा असती, तण अगणी सिक्कणा य वागा य ।

पेहुण-चम्मगगहणे, भत्तं च पलास पाणिसु वा ॥५७२१॥

रणा रुट्ठेण सधूण उवकरण हरित, सेस ति अण्ण णत्थि, ताहे सीताभिभूता तणाणि गेण्हेज्जा, अगणि गेण्हेज्ज, अगणि वा सेवेज्ज । पत्तगबधाभावे सिक्कगहियादे काउ हि (डे) ज्ज, सन्नादि प (व) कतया पाउरणा गेण्हेज्ज, पेहुण ति मोरगमया पिच्छया रयहरणट्ठाणे करेज्ज, पत्थरण पाउरण वा जह बोडियाण, चम्मय वा पत्थरणपाउरण गेण्हेज्ज, पलासपत्तिमादिसु भत्त गेण्हेज्ज, अहुवा - भत्त कुडगादिसु गेण्हेज्जा पलासपत्तेसु वा भुजेज्ज । पाणीसु वा गहण भुजण वा ॥५७२१॥

असती य लिंगकरणं, पण्णवणट्ठा सयं व गहणट्ठा ।

आगाढकारणम्मि, जहेव हंसादिणं गहणं ॥५७२२॥

असति रणोवसमस्स, उवकरणस्स वा असति, ताहे परलिंग करेति । ज रणो अणुमत तेण लिंगेण ठिता ससमय-परसमयविदू वसभा रायाण पण्वेति - उवसामेतीत्यर्थं । तेन वा परलिंगेन ठिता उवकरण स्वयमेव गृह्णन्ति, एय चेव आगाढ । अण्णम्मि वा आगाढे जहेव हसमादितेत्ताण गहण दिट्ठु तहा इह पि आगाढ कारणे वत्थ पत्तादियाण गहण कायव्व । ओयोवण-तालुगवाडमादि एहि अन्येन वाहि सप्रयोगेनेत्यर्थं ॥५७२२॥ उवकरणहडे ति गय ।

इदाणि भेदे ति -

दुविहम्मि भेरवम्मि, विज्जणिमित्ते य चुण्ण देवीए ।

सेट्ठिम्मि अमच्चम्मि य, एसणमादीसु जइयव्वं ॥५७२३॥

मेरव भयानक, त दुविह जीवियाओ चारित्ताओ वा ववरोवेति त रायाण पट्ठु विज्जादीहि वसीकरेज्जा, णिमित्तेण वा आउट्टिज्जति, चुण्णेहि वा आघसमादीहि वसीकज्जति । “देवी य” ति जा य तस्स महादेवी इट्ठा सा वा विज्जादीहि आउट्टिज्जति, अहुवा - खतगो खतिगा वा से जो वा रणो अणुवकमणिज्जो, जइ तेहि भण्णतो ठितं सुदर ।

अह ण ठाति ताहे सेट्ठि भण्णति, अमच्च वा, जइ ते उवसमेज्जा । अहुवा - जाव उवसमइ ताव सेट्ठि-अमच्चण अवगह्णे अच्छति, जो वा रणो अणुवकमणिज्जो तस्स वा घरे अच्छति, एसणादिसु जयति पूर्ववत् । पासजण (पासडगण) वा उवट्ठावेज्जा, जइ णाम ते उवसामेज्ज अण्णज्जाहि अणुसासणादीहि ॥५७२३॥

आगाढे अण्णलिंगं, कालक्खेवो बहिं निगमणं वा ।

कतकरणे करणं वा, पच्छायण थावरादीसु ॥५७२४॥

अणुवसमेते एरिसे आगाढकारणे अण्णलिंग करेति, तेण परलिंगेण तत्थेव कालक्खेव करेति, अण्णज्जमाणा विसयउर वा गच्छति, जाहे सव्वहा उवसामेउ ण तीरइ ताहे “कयकरणे करण व” ति सहस्स-जोही त सासेज्ज, अह त पि णत्थि ताहे “पच्छादणथावरादीसु” ति जाव पसादिज्जति ताव रुक्खगहणेसु

अप्याण पच्छादेति, पउमसग्गदिसु वा लिक्किया अर्च्छति, अहवा — दिया एत्तेसु निलुक्कया अर्च्छति, राओ वच्चति । एव रायदुट्ठे जयति ॥५७२४॥

इदाणि भयादिदारा —

बोहिग-मेच्छादिभए, एमेव य गम्ममाण जयणाए ।

दोण्हड्ढा य गिलाणे, णाणादट्ठा व गम्मंते ॥५७२५॥

“भय” ति बोहियभय, बोहिगा मालवादिमेच्छा, ते पव्वयमालेसु ठिया माणुसाणि हरति । तेसि भया गम्ममाणे एव चेव गमण, जयणा य जहा अमिवादिमु । भयमेवागाड । अहवा — किंचि उप्पत्तियमागाड, जहा मातापितिसण्णाययेण सदिट्ठ — “इम कुल पव्वज्जमव्वुवगच्छनि जति तुम आगच्छसि” अहवा — “णागच्छसि तो विप्परिणमति अण्णम्मि वा सामणे पव्वयति” एरिसे वा गतव्व । गेलणवेज्जस्स वा ओसहाण य । उत्तिमट्ठे य पडियरगो विसोहिकामो वा ।

णाणदमणेसु सुत्तणिमित्त । अहवा — अत्यस्म । अहवा — उभयस्स । चरित्तट्ठा पुव्वभणिय । एवमादिकारणेसु पुव्व भग्गेण, पच्छा अर्च्छणपयेण, ततो छिण्णपयेण ॥५७२५॥

एत्थ एक्केक्के असिवादिकारणे —

एगापण्ण व सतावीसं च ठाण णिग्गमा णेया ।

एतो एक्केक्कम्मिं, मयग्गसो होड जयणा उ ॥५७२६॥ पूर्ववत्

जे भिक्खु विरूवरूवाइं दसुयायणाइ अणारियाड मिलक्खुइं पच्चंतियाइं सति लाढे विहाराए संथरमाणेसु जणवएसु विहारपडियाए अभिसंधारेड, अभिसंधारेत वा सातिज्जति ॥२६॥

इमो सुत्तत्थो —

सग-जवणादिविरूवा, छ्वीसद्वतवासि पच्चंता ।

कम्माणज्जमणारिय, दमणेहि दसंति तेण दसू ॥५७२७॥

सग जवणादिअण्णण्वेमभासादिट्ठिता विविधरूवा विरूवा मगहादियाण अट्ठछ्वीसाए आरिय-जणवयाण, तेसि अण्णतर ठिया जे अणारिया ते पच्चतिया, आरुट्ठा दतेहि दसति तेण दसू, तेसि आयतणा विसओ पल्लिमादी वा । हिसादिअकज्जकम्मकारिणो अणायरिया ॥५७२७॥

मिल्लक्खुऽव्वत्तभासी, संथरणिज्जा उ जणवया सगुणा ।

आहारोवहिसेज्जा, मंथारुच्चारसज्जाए ॥५७२८॥

मिलक्खु जे अव्वत्त अफुड भासति ते मिलक्खु । जहा दट्ठा तदा दुक्ख सण्णविज्जति दुस्सण्णया । दुक्ख चरणकरणजातमाताउत्तिए धम्मे पण्णविज्जति दुप्पणवणिज्जा, रातो सव्वादरेण भुजति अकालपरिमोगिणो, रातो चेव पडिबुज्झति अकालपडिबोही, सद्धम्मे दुक्ख बुज्झति ति दुप्पडिबोहीणि । सति विज्जमाणे “लाढे”

ति साधुणो अक्खा, सगुणा जणवया सथरणिज्जा भवति । ते पुण गुणा आहारो उवही सेज्जा सथारगो, अण्णो य बहुविहो । उवघो सतत अविरोद्धो लभमति, उच्चारपामवणभूमीओ य सति, सज्झायो सुज्झति । “विहाराए” ति दप्पेण णो असिवादिकारणे, तस्स चउलहु अणादिया य दोमा ॥५७२८॥

इमो णिज्जुत्तिवित्थारो -

आरियमणारिएसु, चउक्कभयणा तु संकमे होति ।

पढमतिए अणुण्णा, त्रितियचउत्थाऽणुण्णाया ॥५७२९॥

आरित्तातो जणवयाओ आरिय जणवय सकमइ, एव चउभगो कायव्वो, सेम कठ ॥५७२९॥

आरिय-आरियसंकम अद्धल्लवीमं हवति सेसा तु ।

आरियमणारियसंकम, बोधिगमादी मुणेतव्वा ॥५७३०॥

अद्धल्लवीसाए जणवयाण अण्णतराओ अण्णतर चेव आरिय मकमति तस्स पढमभगो, आरियातो अण्णयरबोहिगविसय सकमनस्स बित्तिओ ॥५७३०॥

अणारियारियसंकम, अंधादमिला य होति णायव्वा ।

अणारियअणारियसंकम, सग-जवणादी मुणेतव्वा ॥५७३१॥

अधदमिलादिविसयाओ आरियविसय सकमतस्स तइओ, अणारियातो मगविसयाओ अणारिय चेव जवणविसय सकमतस्स चउत्थो । एस खित्त पडुच्च चउभगो भणितो ॥५७३१॥

इम लिग पडुच्च भणति -

भिक्खुसरक्खे तावस, चरगे कावाल गारलिगं च ।

एते अणारिया खलु, अज्जं आयारभंडेणं ॥५७३२॥

भिक्खूमादी अणारिया लिगा, “अज्ज” ति आरिय, त पुण आयारभंडय रयोहरण मुहपोत्तिया चोलपट्टकप्पा य पडिग्गहो समत्तो य ।

आयारभंडग एत्थ वि चउभगो कायव्वो ।

आरियलिगाओ आरियलिग एस पढमभगो । एत्थ थेरकप्पातो जिणकप्पातिसु सकम करेति । बित्तिओ कारणिओ, ततिए भिक्खुमादि उवसतां, चउत्थे भिक्खुमादी सरक्खादीसु ।

अहवा चउभगो - आरिओ आरियलिग सकमति भावणा कायव्वा ।

अहवा चउभगो - आरिएण लिगेण आरियविसय सकमति भावणा कायव्वा । जो आरिएण वि लिगेण अणारियविसय मकमति, एत्थ मुत्तगिवातो । सेम विक्खेणट्ठा भणिय ॥५७३२॥

को पुण आरिओ, को वा अणारिओ ?

अतो भणति -

मगहा कोसंबीया, धूणाविसओ कुणालविसओ य ।

एसा विहारभूमी, पत्ता वा आरियं खेत्तं ॥५७३३॥

पुञ्चेण मगहविमओ, दक्खिणेण कोसबी, अवरणे यूगाविसओ, उत्तरेण कुणालाविसओ । एतेसि मज्झ
आरिय, परतो अणारिय ॥५७३३॥

आरियविसय विहरताण के गुणा, अतो भण्णति -

समणगुणविदुऽत्थ जणो, सुलभो उवही सतंत अविरुद्धो ।

आरियविसयम्मि गुणा, णाण-चरण-गच्छवुद्धी य ॥५७३४॥

समणाण गुणा समणगुणा । के गुणा ?, मूलगुण-उत्तरगुणा । पचमहव्वया मूलगुणा, उग्गमुष्णदेसणा
अट्टारसखीलसहस्साणि य उत्तरगुणा । “विद ज्ञाने” अमणगुणविदु ।

कश्चासो ?, उच्यते - जनसुलभो उवही ओहिओ उवगहिओ य ।

अम्मिन् तन्ने - अविरुद्धो एसणिज्जो लब्धमिति, एवमादि गुणा आरिएसु । किं च णाणदमण-
चरित्ताण विद्वी, नास्ति व्याघात, गच्छवुद्धी य तत्थ पव्वज्जति सिक्खापदाणि य गिह्णति ॥५७३४॥

इम च आरिए जणे भवति -

जम्मण-णिकस्समणेसु य, तित्थकगणं करेति महिमाओ ।

भवणवति-वाणमंतर- जोतिस-वेमाणिया देवा ॥५७३५॥

त दट्ठु भव्वा विवुज्जति युव्वयति य, चिरपव्वइया वि थिरतरा भवति ॥५७३५॥

तित्थकरा इम धर्मोपदेशादिक आरिए जणे करेति -

उप्पग्गे णाणवरे, तम्मि अणंते पहीणकम्माणो ।

तो उवदिसंति धम्म, जगजीवहियाय तित्थगरा ॥५७३६॥

इमो समोसरणातिसओ -

लोगच्छेरयभूयं, उप्पयण निवयणं च देवाण ।

संसयवागरणाणि य, पुच्छति तहि जिणवरिंदे ॥५७३७॥

सण्णो बहु जुगव ससए पुच्छति, तेसि चेव जिणो जुगव चेव वागरण करेति, तेहि आरियजणवए
जिणवरिंदे पुच्छति ॥५७३७॥

एत्थ किर सन्नि सावग, जाणंति अभिग्गहे सुविहिताणं ।

एएहिं कारणेहिं, बहि गमणे होतऽणुग्घाता ॥५७३८॥

एत्थ किर आरियजणवए, “किर” त्ति परोक्खवयण, अविरयसम्महिद्धी सण्णो गहियाणुव्वतो
पावगो एते जाणति “अभिग्गहे” त्ति आहारोवधिसेज्जागहणविहाण, त जाणता तथा देंति । अहवा -
अभिग्गहो दव्वखेतकालभावैहिं त जाणता तहेव पडिपूरेति । जम्हा एते गुणा आरियजणवए तम्हा “बहि”
ति अणारियविसय गच्छताण चउगुणा ॥५७३८॥

चोदगाह -

सुत्तस्स विसवादो, सुत्तनिवातो इहं तु संकप्पे ।

चत्तारि छच्च लहुगुरु, मट्ठाणं चेव आवण्णे ॥५७३९॥

इह सोलसमुद्दे सगे चउलहुगाऽधिकारो - तुम च अणारियविसयसकमे चउगुरु देसि, अतो सुतविसवातो ।

आयरिओ भणइ - तुम सुतणिवात ण याणसि । इह सुतणिवातो मणसकप्पे चउलहु, पदभेदे चउगुरु, पथमोइणोस् छल्लहु, अणारियविसयपत्तेसु छग्गुरु, सजमायविराहणाए सट्ठाण । तत्थ सजमविराहणाए “छक्काय चउसु लहु” गाहा भावणिज्जा । आयविराहणाए चउगुरु परित्तावणाई वा ॥५७३६॥

आणादिणो य दोसा, विराहणा खंदएण दिट्ठंतो !

एवं ततियविरोहो, पडुच्चकालं तु पणवणा ॥५७४०॥

आयविराहणाए खदगो दिट्ठतो -

दोच्चेण आगतो खंदएण वाए पराजिओ कुवित्तो ।

खंदगदिक्खा पुच्छा णिवारणाऽऽराध तव्वज्जा ॥५७४१॥

चपा णाम णगरी, तत्थ खदगो राया । तस्स भगिणी पुरदरजसा उत्तरापथे 'कु भा-कारकडे णगरे डडगिस्स रण्णो दिण्णा ।

तस्स पुरोहिओ मरुगो पालगो, सो य अकिरियदिट्ठी । अणया सो दूओ आगतो चप । खदगस्स पुरतो जिणसाहुअवण करेति । खदगेण वादे जिओ, कुविओ, गओ स-णगर । खदगस्स वह चित्तंतो अच्छइ ।

खदगो वि पुत्त रज्जे ठवित्ता मुणिसुव्वयसामिआतिए पचसयपरिवारो पव्वतित्तो अधीय-सुयस्स गच्छो अणुणाओ ।

अणया भगिणी दिच्छामि त्ति जिण पुच्छति । सोवस्सग्ग से कहिय ।

पुणो पुच्छति - “आराहगो ण व ?” त्ति ।

कहिय जिणेण - तुम मोत्तु आराहगा सेसा । गतो णिवारिज्जतोऽवि ॥५७४१॥

सुतो पालगेण आगच्छमाणो -

उज्जाणाऽऽउह णूमेण, णिवक्कहणं कोव जंतयं पुवं ।

बंध चिरिक्क णिदाणे, कंबलदाणे रजोहरणं ॥५७४२॥

पालगेण अग्गुज्जाणे पचसया आयुहाण ठविया । साहवो आगया तत्थ ठिता । पुरदरजसा दिट्ठा, खदगो कबलरयणेण पडिलाभितो । तत्थ णिसिज्जाओ कयाओ ।

पालगेण राया बुग्गाहितो । एस परिसहपराजिओ आगओ तुम मारेउं रज्ज अहिट्ठेहेति ।

कह णज्जति ?, आयुधा दसिया ।

कुविओ राया, पालगो भणितो - मारेहि त्ति । तेण इक्खुजत कय ।

खदगेण भणिय - ‘म पुव्व मारेहि ।’ जतसमीवे खमे बधिउ ठविओ, साहु पीलिउ रुहिरचिरिक्काहि खदगो भरितो । खुडुगो आयरिय विलवनो, सो वि आराहगो । खदगेण णियाण कत ॥५७४२॥

अग्निकुमारुवातो, चिंता देवीए चिन्ह रयहरणं ।

खिज्जण सपरिसदिक्खा, जिण साहर वात डाहो य ॥५७४३॥

अग्निकुमारेसु उववण्णो ।

पुरदरजमाए देवीए चिंता उववण्णा वट्ठति “साधुणो पाणगपढमालियाणिमित्त पागच्छति किं होज्ज” ? एत्थनरे खदगेण “सण्ण” त्ति — मकुलिकारूव काउ रयहरण रहिगलित्त पुरदरजमा-पुरतो पाडिय, दिट्ठ, सहसा अक्कद करेती उट्ठिया, भणिओ राया — पाव । विणट्ठो सि विणट्ठो सि ।

सा तेण खदगेण सपरिवारा मुणिमुव्वयस्म समीव णीया दिक्खिया । खदगेण सव्वट्ठ गवाय विउव्वित्ता रायाण सबलवाहण पुर च म कोहाविट्ठो बारसजोयण खेत णिडुहति । अज्ज वि डङ्गारण त्ति भण्णति ॥५७४३॥

जम्हा एवमादी दोसा तम्हा आरियातो अणारिय ण गतव्व ।

चोदगाह — “एव ततियविरोहो त्ति — एव वक्खाणिज्जते ज गाहासुत्ते ततियभगो अणुण्णाओ, त विरुज्जन्ति ।

जइ अणारिएमु गमो णत्थि वम्मो वा, तो भिक्खुस्स अणारियाओ आरिएसु प्रागमो कह ?,

आयरिओ भणइ — “सुत्ते पणीयणकाल पडुच्च पढमभग । ततियभगो पुग आगओ मानियमुत्तयेण सपइरायकुल पडुच्च पण्णविज्जति ।

एत्थ सपटस्स उप्पत्ती —

कोमंवाऽऽहारकए, अज्जसुहत्थीण दमगपव्वज्जा ।

अव्वत्तेणं सामाइएण रण्णो घरे जातो ॥५७४४॥

कोमबीए णगरीए अज्जमहागिरी अज्जसुहत्थी य दोवि ममोमढा । तथा य ^३अवीयकाले साधूज्जणो य हिडमाणो फव्वति ।

तत्थ एगेण दमएण ते दिट्ठा । ताहे सो भत्त जायति ।

तेहि भणिय — अम्ह आयरिया जाणति ।

ताहे सो आगओ आयरियमगाम । आयरिया उवउत्ता, तेहि णात — “एस पवयणउवग्गहे वट्ठिहिति” त्ति । ताहे भणिओ — जति पव्वयमि तो दिज्ज भत्त ।

सो भणइ — पव्वयामि त्ति । ताहे आहारकते सो दमगो पव्वावितो । सामाइय से कय, ते अतिसमुट्ठिओ । सो य तेण कालगओ । सो य तस्स अव्वत्तसामाइयस्म भावेण कुणालकुमारस्स अव्वस्म रण्णो पुत्तो जातो ।

को कुणालो ? कह वा अओ ? त्ति —

पाडलिपुत्ते असोगसिरी राया, तस्स पुत्तो कुणालो । तस्स कुमारस्स भुत्ती उज्जेणी दिण्णा । सो य अट्ठवरिसो, रण्णा लेहो विसज्जितो — शीघ्रमवीयता कुमार । असवत्तियलेहे रण्णो उट्ठितस्स माइमव तीए कत “अवीयता कुमार” । सयमेव तत्तमलागाए अच्छी अजिया । सुत रण्णा । गामो

मे दिण्णो । गधव्वकलासिक्खण । पुत्तस्स रज्जत्थी आगमो पाडलिपुत्त । असोगसिरिणो जवणियत्त-
रितो गधव्व करेति, आउटो राया, मग्गसु ज ते अभिच्छित्त ॥५७४४॥

तेण भणिय -

चंदगुत्तपपुत्तो य, बिंदुमारस्स णत्तुओ ।

असोगसिरिणो पुत्तो, अंधो जायति कागिणि ॥५७४५॥

उवउत्तो राया, णातो कि ते अधस्स कागिणीए ? कागिणी=रज्ज ।

तेण भणिय - पुत्तस्स मे कज्ज । सपति पुत्तो वि त्ति । आणेहि त पेच्छामो, आणियो,
मवड्डिमो, दिण्ण रज्ज । सव्वे पच्चता विसया तेण उयविया विक्कतो रज्ज भु जइ ॥५७४५॥

अणया -

अज्जसुहत्थाऽऽगमण, दट्ठु सरणं च पुच्छणा कहणं ।

पावयणम्मि य भत्ती, तो जाया संपतीरणो ॥५७४६॥

उज्जेणीए समोसरणे अणुजाणे रहपुरतो रायगणे बहुस्सिस्परिवारो आलोयणठितेण
रणा अज्जसुहत्थी आलोइओ, न दट्ठूण जानी सभरिया, आगतो गुरुसमीव ।

धम्म सोउ पुच्छति - अह मे कहि चि दिट्ठपुव्वो ?, पुच्छति य - इमस्स धम्मस्स कि
फल ?, गुरुणाऽभिहित सग्गो मोक्खो वा ।

पुणो पुच्छइ - इमस्स सामाइयस्स कि फल ?,

गुरू भणइ - अक्खत्तस्स सामाइयस्स रज्ज फल । सो सभतो भणाति सच्च ।

ताहे सुहत्थी उवउज्जिऊण भणति - “दिट्ठिल्लओ त्ति ।” सव्व से परिकहिय । ताहे सो
पवयणभत्तो परमसावगो जानो ॥५७४६॥

जवमज्झ मुरियवमो, दारे वणि-विवणि दाणसंभोगो ।

तमपाणपडिक्कमओ, पभावओ समणसव्वस्स ॥५७४७॥

चदगुत्तातो बिंदुसारो महत्तनरो, ततो असोगसिरी महत्तनरो, ततो सपत्ती सव्वमहतो,
ततो हाणी, एव मुरियवसो जवागारो, मच्चे सपइ - आसो ।

“दारे” ति अस्य व्याख्या -

उदरियमओ चउसुवि, दारेसु महाणसे स कारेति ।

णिताऽऽणिते भोयण, पुच्छा सेसे अयुत्ते य ॥५७४८॥

पुव्वभवे ओदरिओ त्ति पिडोलगो आसि, त सभरित्ता णगरस्स चउसु वि दारेसु सत्त-
कारमहाणसे कारवेति, णितो पविसतो वा जो इच्छइ सो सव्वो भु जति, ज सेस उव्वरति त
महाणसियाण आभवति ।

ताहे राया ते महाणसिए पुच्छति - ज सेस तेण तुम्हे किं करेह ?,
ते भणति - घरे उवउज्जति ॥५७४६॥

ताहे राया भणति - ज सेस - अमुत्त त तुम्हे -

साहूण देह एयं, अह मे दाहेमि तत्तिय मोल्लं ।

णेच्छंति घरे घेत्तुं, समणा मम रायपिंडो चि ॥५७४६॥

एव महाणसिता भणिता देति साधूण ।

“विणि-विवणि-दाणि” ति अस्य व्याख्या -

एमेव तेल्ल-गोलिय, -पूवीय-मोरंड दूसिए चेव ।

जं देह तस्स मोल्लं, दलामि पुच्छा य महागिरिणो ॥५७५०॥

वणिति - जे णिच्चट्टिता ववहरति, “विवणी” ति -जे विणा आवणेण उब्भट्टिता वाणिज्ज करेति ।

अहवा - विवणि नि अवाणियगा ।

रणा भणिया - तेल्लविविकणा साधूण तेल्ल देज्जह, अह मे मोल्ल दाहामि । एव
“गो (कु) लिय ति” महियविककया, पूवलिकादि पूविगा, तिलमोदगा मोरडविककया, वत्थाणि य
दोसिया । पच्छद्व कठ ।

“सभोगो” ति एव पभूते किमिच्छए लब्धमाणे महागिरी अज्जसुहत्थी पुच्छति -
अज्जो ! जाणसु, मा अणेसणा होज्जा ॥५७५०॥

ताहे -

अज्जसुहत्थि ममत्ते, अणुरायाधम्मतो जणो देति ।

संभोग वीसुकरणं, तक्खण आउंटण-णियत्ती ॥५७५१॥

अज्जसुहत्थी जाणतो वि अणेसण अप्पणो सीसममत्तेण भणइ - अणुराया धम्माओ जणो
जात ति - रायाणमणुवत्तए जणो, जहा राया भइओ तहा जणो वि, राजानुवर्तितो धर्मश्च
भविष्यतीत्यतो जनो ददाति” । एव भणतो महागिरिणा अज्जसुहत्थीण सह सभोगो वीसु कओ,
विसभोगकरणमित्यर्थ ।

ताहे अज्जसुहत्थी चित्तेइ - “मए अणेसणा भुत्त” ति, तक्खणमेव आउंटो समुत्तो,
अकप्पसेवणाओ य णियत्ती ॥५७५१॥

सो रायाऽवन्तिवती, समणाणं सावओ सुविहियाणं ।

पच्चंतियरायाणो, सव्वे सदाविता तेणं ॥५७५२॥ कळ

अवतीजणवए उज्जेणीणगरी -

कहितो तेसिं धम्मो, वित्थरतो ग्राहिता च सम्मत्तं ।

अप्पाहियाय बहुसो, समणाणं सावगा होइ ॥५७५३॥ कळ

अणुयाणे अणुयासी, पुष्फारुहणाइ उक्खिरणाई ।

पूर्यं च चेतियाणं, ते वि सरज्जेसु कारेति ॥५७५४॥

अणुजाण रहजत्ता, तेसु सो राया अणुजाणति, भड्चडगसहितो रहेण सह हिडति, रहेसु पुष्फारुहण करेति, रहगतो य विविधफले खज्जगे य कवडुगवत्थमादी य उक्खिरणे करेति, अन्नेमि च चेइयघरट्टियाण चेइया पूय करेति, ते वि रायाणो एव चैव सरज्जेसु कारावेति ॥५७५४॥

इम च ते पच्चतियरायाणो भणति -

जति मं जाणह सामिं, समणाणं पणमथा सुविहियाणं ।

दच्चेण मे ण कज्जं, एयं खु पियं कुणह मज्झं ॥५७५५॥

गच्छह सरज्जेसु, एव करेह ति ॥५७५५॥

वीसज्जिता य तेणं, गमणं धोमावणं सरज्जेसु ।

साहूण सुहविहारा, जाया पच्चंतिया देसा ॥५७५६॥

तेण सपइणा रणा विसज्जिता, सरज्जाणि गतु अमाघात घोसति, चेइयघरे य करति, रहजाणे य । अवदमिलकुडक्कमरहट्टा एते पच्चतिया, सपतिकालातो आरब्भ सुहविहारा जाता ।

सपतिणा साधू भणिया - गच्छह एते पच्चतियविसए, विबोहेना हिडह ।

ततो साधूहि भणिय - एते ण किंचि साधूण कप्पाकप्प एसण वा जाणति, कह वहरामो ? ॥५७५६॥

ताहे तेण सपतिणा -

समणभडभावितेसुं, तेसुं रज्जेसु एसणादीहिं ।

साहू सुह पविहरिता, तेणं चिय भद्दगा ते उ ॥५७५७॥

समणवेसधारी भडा विसज्जिया बहू, ते जहा साधूण कप्पाकप्प तहा तं दरिसतेहि एसणसुद्ध च भिक्खग्गहण करेतेहि जाहे सो जणो भावितो ताहे साधू पविट्ठा, तेसिं सुहविहार जात, ते य भद्दया तप्पभिई जाया ॥५७५७॥

उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणो, स पत्थिवो णिज्जितसत्तुसेणो ।

समंततो साहुसुहप्पयारे, अकासि अंधे दमिले य घोरे ॥५७५८॥

उदिण्णा सजायबला, के ते ?, जोहा, तेहिं आउलो-बहवस्ते इत्यर्थ । तेण उदिण्णाउलत्तेण सिद्धा सेणा जस्स सो उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणो । उदिण्णजोहाउलसिद्धसेणत्तणतो चैव विपक्खभूता सत्तुसेणा ते निज्जिया जेण स पत्थिवो णिज्जियसत्तुसेणो सो अंधविडाईसु अकासि कृतवान् सुहविहारमित्यर्थ ॥५७५८॥

जे भिक्खु दुगुंछियकुलेसु असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिग्गाहेइ,

पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खू दुग्गुल्लियकुलेसु वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछण वा
पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खू दुग्गुल्लियकुलेसु वसहि पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू॥२९॥

जे भिक्खू दुग्गुल्लियकुलेसु सज्झायं उदिसइ, उदिसंतं वा सातिज्जति ॥सू॥३०॥

जे भिक्खू दुग्गुल्लियकुलेसु सज्झायं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खू दुग्गुल्लियकुलेसु सज्झायं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू॥३२॥

चउलहु, तेसि इमो भेदो सरूव च -

दुविहा दुग्गुल्लिया खलु, इत्तरिया होंति आवकहिया य ।

एएसिं णाणत्तं, वोच्छामि अहाणुपुव्वीए ॥५७५६॥

‘इत्तरिय’ ति -

सूयगमतगकुलाइं, इत्तरिया जे य होंति निज्जूढा ।

जे जन्थ जुंगिता खलु, ते होंति य आवकहिया तु ॥५७६०॥

इत्तरियत्ति सुत्तणिज्जूढा - जे ठप्पा कया ! सलागपडिय ति आवकहिगा, जे जत्थविसए जात्यादि-
जुंगिता जहा दक्खिणावहे लोहकारकल्लाला, लाडेसु णडवरु डचम्मकारादि । एते आवकहिया ॥५७६०॥

इमे य दोसा -

तेसु असणवत्थादी, वसही वा अहव वायणादीणि ।

जे भिक्खू गोण्हेज्जा, विसेज्ज कुज्जा व आणादी ॥५७६१॥

असणवत्थादियाण गहण, वसहीए वा विसेज्ज पविसनि, वायणादिसज्झाय कुज्जा, तस्स आणादिया
दोसा ॥५७६१॥

अयसो पवयणहाणी, विप्परिणामो तहेव कुच्छा य ।

तेसिं वि होति संका, सव्वे एयारिसा मण्णे ॥५७६२॥

सवसाधवो नीचेत्यादि अयस, अभोज्जसपवक न कश्चित् प्रव्रजतीति एव परिहाणी, अभोज्जेसु
भक्तादिगहण दृष्ट्वा धर्माभिमुखा पूवप्रतिपन्नगा वा विपरिणमते, श्रवकादिसमाना इति जुगुप्सा, जेसु वि
गोण्हेइ तेसिं वि सका - सव्वे एयलिगघारिणो एते “एतारिस” ति अम्हे सरिसा ॥५७६२॥

इमो अववादो -

असिवे ओमोयरिए, रायदुङ्गे भए व गेल्लण्णे ।

अद्धाण रोहए वा, अयाणमाणे वि वितियपदं ॥५७६३॥

एतेहि असिवादिएहि कारणेहि जया वेप्पति तदा पणगपरिहाणीए ॥५७६३॥

जाहे चउलहु पत्तो ताहे इमाए जयणाए गेण्हति -

अण्णत्थ ठवावेउं, लिंगविवेगं च काउ पविसेज्जा ।

काऊण व उवयोगं, अदिट्ठे मत्ताति संवरितो ॥५७६४॥

सो दुग्धितो असणवत्थादी अण्णसागारिय अण्णत्थ सुण्णधरादिमु ठवाविज्जति, तस्मि गते पच्छा गेण्हति । अहुवा - रओहरणादिउवकरण अण्णत्थ ठवेतु सरक्खादिपरलिग काउ जहा अयमादिदोसा ण भवति तथा पविसिउ गेण्हति । अहुवा - मज्झण्हादी विअणकाले दिगाबलोयण काउ अण्णेण अदिस्सतो मत्तय पत्त वा वासकप्पमादिणा सुट्ठु आवरेत्ता पविसति गेण्हइ य, वत्थादिय पि जहा अविमुद्ध तथा गेण्हति, वसहि अण्णत्थ अलभतो बाहि सावयतेणभण्णु वसहि गेण्हैज्ज, जहा ण णज्जति तथा वसति । सज्झाय ण करेति । रायडुद्धा-दिसु अभिगमो अण्णसागारिए सज्झायभाणधम्मकहादी वि करेज्ज ॥५७६४॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुढवीए णिक्खिवड,
णिक्खिवंतं वा सातिज्जति ॥३३॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा संथारए णिक्खिवड,
णिक्खिवंतं वा सातिज्जति ॥३४॥

जे भिक्खू असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वेहासे णिक्खिवड
णिक्खिवंतं वा सातिज्जति ॥३५॥

पुढवि-तण-वत्थमातिसु, संथारे तह य होइ वेहासे ।

जे भिक्खू णिक्खिवती, सो पावति आणमादीणि ॥५७६५॥

पुढविगण्हातो उव्वट्ठादिभेदा दट्ठवा, दम्भादितणसथारए वा, वत्थे, वत्थसथारए वा, कबलादिफलहसथारए वा, वेहामे वा दोरणेण उल्लभेइ, एवमादिपगाराण अण्णयरेण जो णिक्खिवड तस्स चउलहु, तस्स आणादिया य दोसा सजमायविराहणा य ॥५७६५॥

तत्थ सजमे -

तक्कंतपरोप्परओ, पलोडुल्लिण्णे य भेद कायवहो ।

अहि-मूसलाल-विच्छुय, संचयदोसा पसंगो वा ॥५७६६॥

सुणे भत्तपाणे चउरिदियाओ घरकोइलातो तक्केनि, त पि मज्जारा, एव तक्कंतपरपरो डेप्पत वातादिक्सेण वा पलोडुति छक्कायविराहणा, आयपरिहाणी य वेहासट्ठित मूसगादिछिण्णे भायणभेदो छक्कायवहो वा आयपरिहाणी य । एसा सजमविराहणा ।

इमा आयविराहणा -

अहिस्स मूसगम्स वा उस्सिषमाणस्स लाला पडेज्ज, णीससतो वा विस मुचेज्ज, विच्छुगाइ वा पडेज्ज, विम वा मुचेज्ज, जे वा सणिहिस्सचए दोसा तत्थ वि णिविस्सते ते चेव दोसा, पसगतो सणिहि पि टुवेज्जा ॥५७६६॥

किं च जो भत्तपाण णिक्खिवइ -

सो समणसुविहियाणं, कप्पाओ अविचितो ति णायव्वो ।

दसरातम्मि य पुण्णे, सो उवही उवहतो होति ॥५७६७॥

समणकप्पो तम्मि अवगओ अपगत समणकप्पातो वा अवचिओ, एव णिक्खेवत्तस्स दसराते गते जम्मि पादे ज भत्तादि णिक्खिवइ त उवहत होइ, जो य उवही णिक्खित्ता अच्छइ दसगाइ अपडिलेहिउ सोवि उवहतो भवति ॥५७६७॥

ओबद्धपीढफल्यं, तु मजय ठविय भत्तपाणं तु ।

सुविहियकप्पावचितं, सेयत्थि विवज्जए साहू ॥५७६८॥

सयारगादियाण बधे जो पक्खस्स ण मुवति सो बद्धो णिक्खित्तभत्तपाणा य जो सो सुविहियकप्पातो अवगता, जो सेयत्थी साधु तेण वज्जेयव्वो, ण तेण सह समोगो कायव्वो ॥५७६८॥

इमो अववाओ -

वितियपय गेलण्णे, रोहग अद्धाण उत्तिमट्टे वा ।

एतेहि कारणेहिं, जयणाए णिक्खिवे भिक्खू ॥५७६९॥

गिलाणकज्जवावडो णिक्खिवति, रोहमे वा सकुडवसहोए वेहासे करेति, अद्धाणे वा सागारिए भुजमाणो उत्तिमट्टपवणास्स वा करणज्ज करंतो णिक्खिवति ॥५७६९॥

एवमादिकारणेहिं णिक्खिवतो इमाए जयणाए णिक्खिवति -

दूरगमणे णिसिं वा, वेहासे इहरहा तु संधारे ।

भूमीए ठवेज्ज व ण, घणवंध अभिक्ख उवओगो ॥५७७०॥

दूर गतुकामो णिमिं वा ज परिवान्तिज्जति त वेहासे दारयेण णिक्खिवति “इहरहा” ति आसण्णे गतुकामो आसण्णे वा किंचि लोयमादिकाउकामो तत्थ संधारे भूमीए वा ठवेति, वकारो विगप्पे, णकारो पादपूरण । त पि ठवेनो घण चीरेण वघइ, पिपीलिंगभया छगणादीहिं वा लिपइ, अभिक्खण च उवयोग करेति ॥५७७०॥

जे भिक्खू अण्णतित्थीहिं वा गारत्थीहिं वा सद्धिं भुंजइ, भुंजंतं वा सातिज्जति ॥३६॥

जे भिक्खू अण्णतित्थीहिं वा गारत्थीहिं वा सद्धिं आवेदिय परिवेदिय भुजइ,

भुजंतं वा मातिज्जति ॥सू०॥३७॥

अण्णउत्थिया तच्चल्लियादि बभणा, खत्तिया गारत्था, तेहिं सद्धिं एगभायणे भोगण एगदु-तिदिसि-द्वितेसु आवेदित, सव्वविदिसिद्वितेसु परिवेदित, अहवा - आइ मयादया वेष्टित । दिसिविदिसासु विच्छिण्ण द्वितेसु परिवेष्टित । अहवा - एगपतीए समता ठिएसु आवेष्टित, दुगातिसु पतीसु समता परिद्वियासु परिवेष्टित ।

गिहि अण्णतित्थिएहिं व, सद्धिं परिवेदीए व तम्मज्जे

जे भिक्खू असणादी, भुंजेज्जा आणमादीणि ॥५७७१॥

अण्णउत्थिएहिं सम भुजति अण्णउत्थियाण वा मज्जे ठितो परिवेदितो भुजति, आणादिया दोसा, मोहमो चउलहु पच्छित्त ॥५७७१॥

विभागतो इम -

पुव्वं पच्छा संशुय, असोयवाई य सोयवादी य ।

लहुगा चउ जमलपदे, चरिमपदे दोहि वी गुरुगा ॥५७७२॥

पुव्वसथुया असोय-सोयवाति य, पच्छासथुया असोय-सोय ति । एतेसु चउसु पदेसु लहुगा चउगे ति, जमलपद वि कालतवेहिं विसेसिज्ज ति जाव चरिमपद । पच्छासथुतो सोयवादी तत्थ चउलहुग त कालतवेहिं दोहि वि गुरुग भवति ॥५७७२॥

थीसुं ते चिय गुरुगा, छल्लहुगा होंति अण्णतिथीसु ।

परउत्थिणि छग्गुरुगा, पुव्वावरसमणि सत्तऽट्ठ ॥५७७३॥

एयासु चेव इत्थीसु पुरपच्छअसोयसोयासु चउगुरुगा कालतवेहिं विसेसिता । एतेसु चेव अण्णतिथियपुरिसेसु चउसु छल्लहुगा कालतविसिट्ठा । एयासु चेव परतिथिणीसु छग्गुरुगा । पुव्वसथुयासु समणीसु छेदो, अवर ति पच्छसथुयासु समणीसु अट्ठम ति मूल ॥५७७३॥

अयमपर कल्प -

अहवा वि णालबद्धे, अणुव्वओवासए व चउलहुगा ।

एयासु चिय थीसुं, णालसम्मे य चउगुरुगा ॥५७७४॥

णालबद्धेण पुरिसेण अणालबद्धेण य गहिलाणुव्वतो वा सावणेण, एतेसु दोसु वि चउलहुगा । एयासु चिय दोसु इत्थीसु णालबद्धे य अविरयसम्महिट्ठिम्मि एतेसु वि चउगुरुगा ॥५७७४॥

अण्णालदंसणिथिसु, छल्लहु पुरिसे य दिट्ठआभट्ठे ।

दिट्ठिथि पुम अदिट्ठे, मेहुणि भोती य छग्गुरुगा ॥५७७५॥

इत्थीसु अणालबद्धासु अविरयसम्महिट्ठीसु दिट्ठाभट्ठेसु पुरिसेसु एतेसु दोसु वि छल्लहुगा, इत्थीसु दिट्ठाभट्ठासु पुरिसेसु अ अदिट्ठाभट्ठेसु 'मेहुणि ति माउलपिउत्सयघाता, भोइय ति पुव्वभज्जा, एतेसु चउसु वि छग्गुरुगा ॥५७७५॥

अद्विट्ठाभट्ठासु थीसुं संभोगसंजती छेदो ।

अमण्णसंजतीए मूलं थीफाससबधो ॥५७७६॥

इत्थीसु अदिट्ठाभट्ठासु संभोइय संजतीसु य एयासु दोसु वि छेदो, अमण्ण ति असंभोइय-संजतीसु मूल, इत्थीहिं सह भूजतस्स फासे सबधो, आयपरोभयदोसा, दिट्ठे सकातिया य दोसा, जर्जत संजतिसतितो समुद्देशो तो चउलहु अधिकरण वा ॥५७७६॥

पुव्वं पच्छाकम्मे, एगतरदुगंल उड्डुड्डाहो ।

अण्णोणामयगहणं खद्धगहणे य अचियत्तं ॥५७७७॥

१ मेहुणि मामाकी तथा भूआ की लडकी तथा साली (पत्नी की बहिन) ।

पुत्रैरुन्म सजतेण सह भोयव्व हृत्यपादादिसुइ करेइ, सजतो भुजिस्सइ त्ति अधिकतर रधावेति । पच्छाकम्म “कोवि एसो” त्ति सन्नलण्हाण करेज्ज, पच्छित्त वा पडिवज्जेज्ज, सजतेण वा भुत्ते अपहुप्पते अण्ण पि रधिज्जा, सजतो गिही वा गगतरो लुगुल्ल करेज्ज, विलिगभावेण वा उड्ड करेज्जा, अण्णेण दिट्ठे उड्डाहो भवति, कामादिरोगो वा सकसेज्ज, अधिकतरसद्धण वा अचियत्त भवेज्ज ॥५७७७॥

एव तु भुजमाण, तेहि सद्धि तु वणिणता दोसा ।

परिवारितमज्झगते, भुज्जन्ते लहुग दोस इमे ॥५७७८॥

परिवारितो जति भुजइ तो चउलहु ॥५७७८॥

इमे य दोसा -

परिवारियमज्झगते, भुज्जन्ते सव्व होंति चउलहुगा ।

गिहिमत्तचड्डगादिसु, कुरुकुयदोसा य उड्डाहो ॥५७७९॥

मज्झे ठिनो जणस्स परिवारिओ जइ भुजइ, अहवा - समता परिवारिओ दोण्ह तिण्ह वा जइ मज्झगओ भुजइ, सव्वप्पगारेहि चउलहु, गिहिभायणे य ण भुजियव्व तत्थ भुजतो आयाराओ भस्सइ ।

“कसेसु कसपाएसु” - सिलोगो ।

मत्तगचड्डगादिसु य भुजतस्स उड्डाहो भवति, कजियदवेण य उड्डाहो, इयरेण आउक्कार्यावराहणा, बहुदवेण य कुरुकुयकरणेण उप्पिलावणादि दोसा, जम्हा एवमादिदोसा तम्हा एतेहि सद्धि परिवेदिण वा ण भुजियव्व ॥५७७९॥

वितियपद मेहसाहारणे य गेलण्ण रायदुट्ठे य ।

आहार तेण अद्धाण रोहए भयलंभे तत्थेव ॥५७८०॥

पुव्वसथुतो पच्छासथुतो वा पुव्व एगभायणो आसी से तस्स णेहेण आगतो जति ण भुजति तो विपरिणमति, अतो मेहेण सम भुजति, परिवेदितोवि तेमागगु मा एतेसि सका भविस्सति - “कि एस अप्पसागारिय समुद्दिसति त्ति अम्हे बाहि करेति” बाहिभाव गच्छे अतो परिवेदिनो भुजति । साहारण वा लद्ध त ण चेव भुजियव्व, अह कक्खड ओम ताहे वेत्तु वीसु भुजति, अह दाया न देइ, ते वा न देति, ताहे तेहि चेव सद्धि परिवुडो वा भुजति ।

गिलाणो वा वेज्जस्स पुरतो समुद्दिमेज्जा, जयणाए कुरुकुय करेज्जा ।

रायदुट्ठे रायपुरिसेहि गिज्जतो तेहि पग्गिवेदिनो भुजेज्जा ।

आहारतेणगेसु तेमि परओ भुजेज्ज ।

अद्धाणतेणसावयभया सत्थस्स मज्जे चेव भुजति ।

रोहणे सव्वेसि एक्का वमही होज्जा, बोहिगादिभए जगेण सह कदराइसु अच्छति, तत्थ तेसि पुरतो समुद्दिसेज्ज ।

ओमे कहिचि सत्तागारे तत्थेव भुजताण लब्भति, भायणेसु ण लब्भति तत्थेव भुजेज्जा ।

सत्तागारिए एक्को परिवेसण करे चड्डगाइसु सतर समुजति, णाउ दुविहदवेण कुरुकुय करेइ सव्वेसु जहासभए । एस जयणा ॥५७८०॥

जे भिक्खु आयरिय-उवज्झमायाणं सेज्जासथारग पाएण संघट्टेत्ता हत्थेणं
अणुणुणवेत्ता धारयमाणो गच्छति, गच्छंतं वा सातिज्जइ॥सू०॥३८॥

आचार्य एव उपाध्याय आयरिय-उवज्झाओ भणति, केसिचि आयरिओ केसिचि आयरिअ-
उवज्झातो । अह्वा - जहा आयरियस्स तहा उवज्झायस्स वि न सघट्टेज्जति । पातो सव्वाऽफरिसि त्ति
अविणो । हत्थेण अणुणुणवति - न हत्तेन स्पृष्ट्वा नमस्कारयति मिथ्यादुष्कृतं च न भाषते, तस्स चउलहु ।

मेज्जासथारगहणानो इमे वि गहिया -

आहार उवहि देह, गुरुणो संघट्टियाण पादेहि ।

जे भिक्खु ण खामेति, सो पावति आणमादीणि ॥५७८१॥

आहारे त्ति - जत्थ मत्तगे भत्त वारित, उवहि त्ति - कप्पादी, सेस कठ ॥५७८१॥

कह पुण सघट्टेति ?, भणति -

पविसंते णिक्खमंते, य चंक्रमंते व वावरंते वा ।

चेट्टणिवण्णाऽऽउंटण, पसारयंते व संघट्टे ॥५७८२॥

पये वा चक्रमतो विस्सामणाविवावार करंता, सेस कठ ॥५७८२॥

चोदगाह - “उत आहारउवघिदेहस्स य अघट्टण । सथारगभूमी कि ण सघट्टिज्जति ? को वा उव
वरणातिसघट्टिएमु दोमो ?

आचार्य आह -

कमरेणु अबहुमाणो, अविणय परितावणा य हत्थादी ।

संथारग्गहणमआ, उच्छुवणस्सेव वति रक्खा ॥५७८३॥

कमेसु त्ति पदेसु जा रेणू सा सथारगभूमीए परिसडति, उवकरणे वा लम्माति, अबहुमाणो अविणओ
य सघट्टिए कओ, अणु च उच्छुवणे रक्खियव्वे वति रक्खति - ण भजण देति, तस्स रक्खणे उच्छुवण
रक्खित चेव, एव सथारगस्स असघट्टणे गुरुस्स देहातिया दूरातो चेव परिहरिता । सजमायविराहणा य,
आयरिय च अवमणत्तेण सजमो विराहिओ ।

कह ? जेण तम्मि चेव णाणदसणचरित्ताणि अधीणाणि -

“जे यावि मदे त्ति गुरु ०” वृत्त ।

आयविराहणा - जाए देवयाए आयरिया परिगहिता सा विराहेज्ज, अणो वा कोइ आयरिय
पक्खितो साधू उट्टेज्जा, तत्थ असखडादी दोसा ॥५७८३॥

वित्तियपदमणप्पज्जे, ण खमे अविक्कोविते व अप्पज्जे ।

खित्तादोसणं वा, खामे आउट्टिया वा वि ॥५७८४॥

अणप्पज्जो सेडो वा अजाणतो ण खामेनि, आयरिय वा खितादिचित्त सारवेंतो दित्तचित्त वा
उवेच्च सघट्टेज्जा, ओसण वा “म एए ओसणमिति परिभवति” त्ति उज्जमेज्जा, एव आउट्टियाए वि सघट्टेज्जा
पच्छा एमावेइ ॥५७८४॥

जे भिक्खु पमाणाइरित्तं वा गणणाडरित्तं वा उवहिं धरेइ,
धरेंतं वा सातिज्जति ॥५०॥३६॥

गणणाए पमाणेण य, हीणतिरित्तं व जो धरेज्जाहि ।

ओहोवग्गह उवही, सो पावति आणमादीणि ॥५७८५॥

उवधी दुविहो — ओहोवही उवग्गहितो य । एक्केक्कां तिविहो — जहणो मज्झिमो उवकामो य ।
तत्थ एक्केक्के गणणापमाण पमाणपमाण च, त हीण अधिक वा जो धरेति । तत्थ ओहोओ — सुत्तभणिय
चउलह । विभागतो — अण्णअत्थेण उवधिणिप्फण भारभयपरितावणादी दोसा, जम्हा एते दोसा तम्हा ण हीणा-
तिरित्तं धरेयव्व ॥५७८५॥

जिण-थेराण गणणातिपमाणेण जाणणत्थ भण्णति —

दव्वप्पमाणगणणाइरंग परिकम्म विभूसणा य मुच्छा य ।

उवहिम्स य पमाण, जिणथेर अधक्कमं वोच्छ ॥५७८६॥

जिणथेराण इम पायणिज्जोगपमाण —

पत्तं पत्तावंधो पायट्ठवण च पायक्केसरिया ।

पडलाइ रयत्ताण, च गुच्छओ पायनिज्जोगो ॥५७८७॥ कळ्या

इम जिणकप्पियाण मरीरोवहिप्पमाण —

तिण्णेव य पच्छागा, रयहरणं चेव होइ मुहपोत्ती ।

एमो दुवालस विहो, उवही जिणकप्पियाणं तु ॥५७८८॥ कळ्या

इम जहणमज्झिमुक्कोसाण कप्पाण य पमाण —

चत्तारि उ उक्कोसा, मज्झिमगा जहणगा वि चत्तारि ।

कप्पाणं तु पमाणं, संडासो दो य रयणीओ ॥५७८९॥

सडासो त्ति कुडडो, रयणि त्ति दो हत्था, एय दीहत्तणेण, वित्थरेण दिवडु रयणि । अहवा —
जिणकप्पियाण कप्पपरिमाण दीहत्तणेण सडासो वित्थारेण दोणि रयणीओ, एस आदेसो वक्खमाणो ॥५७८९॥

इम पत्तगवधस्स पमाणप्पमाण —

पत्तावधपमाणं, भाणपमाणेण होइ कायव्वं ।

जह गंठिम्मि कयम्मी, कोणा चउरंगुला होंति ॥५७९०॥

ज च समचउरस तस्स जा बाहिरतो परिही तेण भायणप्पमाणेण पत्तगवधो कायव्वो, ज पुण
विसम तस्स जा परिही महत्तरी तेणप्पमाणेण पत्तगवधो कायव्वो, अहवा — गठीए कयाए जहा पत्तगवध
कणा चउरंगुला भवति — गठीए अतिरित्ता भवतीत्यथ ॥५७९०॥

इम रयताणस्स पमाणप्पमाण —

रयताणपमाण भाणपमाणेण होइ निप्फणं ।

पायाहिणं करतं, मज्जे चउरंगुलं कमइ ॥५७९१॥

मज्झि त्ति - मुहताओ मुहाओ जहा दो वि अता चउरगुल कमति एय रयताणप्पमाण ॥५७९१॥

अहवा - जिणकप्पियस्स कप्पप्पमाण इम -

अवरो वि य आएसो, संडासो सोत्थिए निवण्णे य ।

जं खंडियं ददं तं, छम्मासे दुब्बलं इयरं ॥५७९२॥

आदेसो त्ति - प्रकार । सडासो त्ति कप्पाण दीहप्पमाण, एय जाणुसडासगातो आढत्त पुत्ते पडिच्छादेनो जाव बध एय दीहत्तण । सोत्थिए त्ति - दो वि बोधव्वकणो दोहिं वि हत्थेहिं धेत्तु दो वि बाहुमीसे पावति ।

कह ? उच्यते - दाहिणेग वाम बाहुसीस, एव शोण्ह वि कलादीण हृदयपदेसे सोत्थियागारो भवति । एय कप्पाण बोधव्व ॥५७९२॥

एत्थ आएसेण इम कारण -

संडामखिड्डेण हिमाइ एति, गुत्ता अगुत्ता वि य तस्स सेज्जा ।

हत्थेहि तो गेण्हिय दो वि कण्णे, काऊण खंधे सुवई व भाई ॥५७९३॥

जिणकप्पियाण गुत्ता अगुत्ता वा सेज्जा होज्जा, ताए सेज्जाए उक्कुडुअणिविट्ठस्स सडासखिड्डे सु अही हिमवातो वा आगच्छेज्ज, तस्स रक्खणट्ठाते, तेण कारणेण एस पाउरणविही, कप्पाण एय पमाण भणिय - “दो वि कण्णे” ति दो वि वत्थस्स कण्णे धेत्तु गिवण्णो गिसण्णो वा सुवति भायति वा । सो पुण उक्कुडुतो चेव अच्छइ प्रायां जगति य ।

केई भणति - उक्कुडुओ चेव गिटाइओ सुवइ ईसिमेत्त ततियजामे ।

सो पुण केरिस्स वत्थ गेण्हति ? ज “खडिय” ति छिण्ण ज एक्कातो पासाउ, त च ज छम्मास वरति जहण्णेण त दढ गेण्हति, “इयर” ति ज छम्मास ण वरति त दुब्बल ण गेण्हति ॥५७९३॥ एय गच्छणिग्गयाण पमाण गत ।

इदाणि गच्छवासीण प्रमाण प्रमाण-प्रमाण च भणन्ति -

कप्पा आतपमाणा, अट्ठाइज्जा उ वित्थडा हत्थे ।

एवं मज्झिम माण, उक्कोसं होंति चत्तारि ॥५७९४॥

उक्कोसेण चत्तारि हत्था दीहत्तणेण एय पमाण अणुगहत्थ थेराण भवति, पुहुत्ते वि छ अगुत्ता समाधिवा कज्जति ॥५७९४॥

मज्झिमुक्कोसएसु दोमु वि पमाणेसु इम कारण -

संकुचित तरुण आतप्पमाण सुवणे ण सीतसंफासो ।

दुहतो पेल्लण थेरे, अणुचिय पाणादिरक्खा य ॥५७९५॥

तरुणभिक्षू बलवतो, सो सकुचियपाओ सुवति, जेण कारणेण तस्स ण सीतस्पर्शो भवति तेण तस्स कप्पा आयप्पमाणा । जो पुण थेरो सो खीणबलो ण सक्केति सकुचियपादो सुविउ तेण तस्स अहियप्पमाणा

कप्पा कप्पति । “पेल्लण” ति अक्कमण “डुहओ” ति – सिरपादातेसु दोसु अ पासेसु एव तस्स सीत ण भवति । सेहस्स वि अणुच्चिए सुवणविहिम्मि एव वेव कप्पाण पमाण कज्जति । अवि य पाणदया कया भवति, न मङ्गकप्पुत्था बीडात्ती पविसतीति ॥५७६१॥

इम पडलाण गणणप्पमाण –

तिविधम्मि कालछेदे, तिविधा पडलाओ होंति पादस्स ।

गिम्ह-सिसिर-वासामु, उक्कोसा मज्झिमा जहण्णा ॥५७६६॥

बे दढा ते उक्कोसा, दढदुब्बला मज्झिमा, दुब्बला जहण्णा, सेस कठ ।

गिम्हासु तिण्णि पडला, चउरो हेमति पंच वासासु ।

उक्कोसगा उ एए, एत्तो पुण मज्झिमे वोच्छं ॥५७६७॥

गिम्हासु चउ पडला, पंच य हेमति छच्च वासासु ।

एए खलु मज्झिमा य, एत्तो उ जहन्नओ वुच्छ ॥५७६८॥

गिम्हासु पंच पडला, छप्पुण हेमति सत्त वासासु ।

तिविहंमि कालछेए, पायावरणा भवे पडला ॥५७६९॥

तिन्नि वि गाहाओ कठाओ कायव्वाओ ।

इम रयोहरण –

घणं मूले थिरं मज्जे, अगगे मद्दवजुत्तयं ।

एगगियं अम्भुसिरं, पोरायामं तिपामियं ॥५८००॥

हत्थगहपदेसे मूल भण्णति, तत्थ घण वेढिज्जति, मज्झति रयहरणपट्टगो सो य दढो, गम्भगो वा मज्झतो दढो, अग्गा दसाओ ताओ मद्दवाओ कायव्वाओ, एगगिय दुगादिखड न भवति, अम्भुसिर ति रोमबहुल न भवति, वेढिय अमुदुपव्वधेत्त तिभागे तज्जायदोरेण बद्ध तिपासिय ॥५८००॥

भण्णति –

अप्पोल्लं मिउपम्हं, पडिपुणं हत्थपूरिमं ।

तिपरियल्लमणिस्सिट्ठं, रयहरणं धारए एगं ॥५८०१॥

अप्पोल्ल-अम्भुसिरमित्थयं, मृदुदसा, पडिपुण प्रमाणत बत्तीसगुल सह णिसेज्जाए, हत्थपूरिम-णिसेज्जाए तिपरियल वेढिज्जति, “अणिसह” ति उगगहा अफिट्ट धरिज्जति ॥५८०१॥

उण्णिय उट्ठियं वावि, कंबलं पायपुच्छणं ।

रयणिप्पमाणमित्तं, कुज्जा पोरपरिग्गहं ॥५८०२॥

उण्णिय कबल उट्ठियकबल वा पायपुच्छण भवति । रयणि ति हत्थो, तप्पमाणो पट्टगो ॥५८०२॥

संथारुत्तरपट्टो, अट्टाइज्जा य आयया हत्था ।

दोण्हपि य वित्थारो, हत्थो चउरंगुलं चेव ॥५८०३॥

उण्णिओ सथारपट्टगो, खामिओ तप्पमाणो उत्तरपट्टगो, सेस क्ख्य ॥५८०२॥

इमो चोलपट्टगो -

दुगुणो चउग्गुणो वा, हत्थो चउरंस चोलपट्टो य ।

थेरजुवाणाण्डा, सण्हे थूलंमि य विभासा ॥५८०४॥

ददो जो मो दीहत्तणेण दो हत्था वित्थारेण हत्थो सो दुगुणो कतो समचउरसो भवति, जो दद-
दुब्बलो मो दीहत्तणेण चउरो हत्था, सो वि चउग्गुणो कथो हत्थमेत्तो चउरसो भवति, एगुण ति गणणप्पमाणे,
उण्णिआ एगा णिसिज्जा पमाणप्पमाणेन हस्तप्रमाणा तप्पमाणा चेव तस्म अतो पच्छादणा खोमिया णिसेज्जा
॥५८०४॥

चउरंगुलं वितत्थी, एय मुहणंतगस्स उ पमाणं ।

वीओवि य आएमो, मुहप्पमाणेण निप्फन्नं ॥५८०५॥

वितियप्पमाण विकण्णकोणगह्य णासिगमुह पच्छादेति जहा किकाडियाए गठी भवति ॥५८०५॥

गोच्छयपादट्टवण, पडिलेहणिया य होइ णायव्वा ।

तिण्हं पि उ पमाणं, वितत्थि चउरंगुलं चेव ॥५८०६॥ क्ख्या

जो वि दुवत्थ तिवत्थो, एगेण अचेलतो व संथरती ।

ण ह्नु ते खिमंति परं, सव्वेण वि तिण्णि घेत्तव्वा ॥५८०७॥

जिणकप्पियाण गहण, थेरकप्पियाण परिभोग प्रति, जो एगेण सथरति मो एग गेण्हति परिभुजति वा ।
जो दोहि सथरति मो दो गेण्हति परिभुजति वा, एव तत्तिओ वि ।

जिणकप्पिओ वा अचेलो जो सथरति सो अचेलो चेव अण्हति, एस अभिग्गह्विसेसो भणिओ ।
एतेण अभिग्गह्विसेसट्ठिएण अधिकतरवत्थो ण हीलियव्वो ।

कि कारण ? जम्हा जिणाण एसआणा, * वेण वि तिण्णि कप्पा घेत्तव्वा ।

थेरकप्पियाण जइ अपाउएण सथरति तहा॥व तिण्णि कप्पा णियमा घेत्तव्वा ॥५८०७॥

कप्पाण इमो गुणो -

अप्पा असंथरंतो, निवारिओ होति तिहि उ वत्थेहिं ।

णिण्हति गुरू विदिण्णे पगासपडिलेहणे सत्त ॥५८०८॥

सीतादिणा असथरतस्स त असथरण वत्थपरिभोगेण निवारित भवति । ते य वत्थे गुरुणा आयरिएण
दिण्णे गेण्हति, पगासपडिलेहण ति अचोरहरणिज्जे, उक्कोसेण सत्त गेण्हति ॥५८०८॥

इम उस्सगतो, अववादिय च प्रमाण -

तिण्णि कसिणे जहण्णे, पंच य दढदुब्बला य गेण्हज्जा ।

सत्त य परिजुणाइं, एय उक्कोसयं गहणं ॥५८०९॥

कमिण त्ति वण्णानो जुत्तप्पमाणा घग्गमसिणा, जेहि सविया अतरितो न दीसइ तारिसा, जहण्णेण तिण्णि गेण्हति । पच दहदुब्बले, परिजुणो सत्ता गेण्हइ ॥५८०६॥

भिण्ण गणणजुत्तं, पमाण-इंगाल-धम्मपरिसुद्धं ।

उवहिं धारए भिक्खू, जो गणचित्तं न चित्तेइ ॥५८१०॥

भिण्ण त्ति प्रदस सगल न भवति, गणणप्पमाणेण पमाणप्पमाणेण य जुत्त गेण्हइ । इगानो त्ति रागो, धूमो त्ति दोसा, तेहि परिसुद्ध - न तहिं परिभुजतीत्यथ ॥५८१०॥ जो सामण्णभिक्खू तस्मेय वत्थप्पमाण भणिय ।

जो पुण गणचित्तगो गणावच्छेदगादि तस्सिम पमाण -

गणचित्तगस्म एत्तो, उक्कोसो मज्झिमो जहण्णो य ।

सव्वो वि होइ उवही, उवग्गहकरो महा (ज) णस्स ॥५८११॥

गणचित्तगो गणावच्छेदगो तस्स जहणमज्झिमुक्कोसो सव्वो वि ओहितो उवग्गहितो वा, महाजणो गच्छो ॥५८११॥

आलवणे विमुद्धे, दुग्गुणो तिग्गुणो चउग्गुणो वा वि ।

सव्वो वि होइ उवही, उवग्गहकरो महाणस्स ॥५८१२॥

आलवति ज त आलवण, 'त' दुविध - दव्वे रज्जुमादो, भावे णाणादी । इह पुण भावे दुल्लभ-वत्थादिदेवे तत्थ जो गणचित्तगो सो दुग्गुण पडोयार तिग्गुण वा चउग्गुण वा, अहुवा - जो अतिरित्तो ओहितो उवग्गहितो सव्वो गणचित्तगस्स परिग्गहो भवति, महाजणो त्ति गच्छो तस्स आवतिकाले उवग्गहकरो भविस्सइ ॥५८१२॥ गणणप्पमाणेत्ति गय ।

इदार्धा अइरेगहीणे त्ति -

पेहा-अपेहकता दोसा, भारो अहिकरणमेव अतिरित्ते ।

एते हवन्ति दोसा, कज्जविवत्ती य हीणम्मि ॥५८१३॥

अतिरेग पडिलेहतस्स सुत्तादिपलिमथो, अपेहतस्स उवहिणप्फण, अपरिभोगे अनुपभोगत्वात् अधिकरण भवति, हीणे पुण कज्जविवत्ति विणासो भवति ॥५८१३॥ हीणाइरित्ते त्ति गय ।

इदार्धा परिकम्मणे त्ति -

परिकम्मणे चउभगो, कारण विही वित्तिओ कारणे अविही ।

णिककारणम्मि य विही, चउत्थो निक्कारणे अविही ॥५८१४॥

कारण अणुण विहिणा, सुद्धो सेसेसु मासिया तिण्णि ।

तव-कालेहि विमिद्धा, अते गुरुगा य दोहि पि ॥५८१५॥

सुद्धो कारणे विहीए एस पढमभगो, एत्थ अणुणो त्ति परिकम्मे त्ति सुद्धो त्ति ण पच्छित्त । सेसेसु त्ति सु भगेसु पत्तेय मासलहु । वित्तिभगे कालयुत्त । तत्तिभगे तवयुत्त । अतिल्लो चउत्थभगो तत्थ तवकालेहि

दोहि वि गुरु । परिकम्मणति वा सिव्वणति वा एगट्ठ । एगसरा डडी उव्वट्ठणि घग्गरसिव्वणि य एसा अविही,
भम्मकटगदुसरिणा य विही ॥५८११॥

इदार्णि “विभूस” त्ति -

उदाहडा जे हरियाहडीए, परेहि धोतादिपदा उ वत्थे ।

भूसाणिमित्तं खलु ते करेते, उग्घातिता वत्थ सवित्थरा उ ॥५८१६॥

“उदाहड” त्ति भणिया “हरिया हडिया” सुत्ते । परेहि त्ति तेणगेहि जे धोताती पदा कता ते जति
अण्णणा विभूमावडियाए करेति त जहा धोवति वा, रयति वा, घट्टेति वा, मट्ट वा करेति, ^३विवरित्तरगेहि
वा रयति तस्म चउलहु । सवित्थरग्गट्ठणातो धोतादिपदे करेतस्स जा आयविराहणा तासु ज पच्छित्त त च
भवति ॥५८१६॥

विभूस करेतस्स इमो अभिप्पाओ -

मलेण वत्थं बहुणा उ वत्थं, उज्झाड्यो हं चिमिणा भवामि ।

हं तस्म धोवम्मि करेमि तत्ति, वरं ण जोगो मलिणाण जोगो ॥५८१७॥

मलिन वत्थ तेन वाऽह विरूपो दृश्ये, यस्माद्विरूपोऽह दृश्ये तस्मात्तस्य वस्त्रस्य धोतव्ये “तत्ति”
त्ति - जेण त धोवति गोमुत्तातिणा त उदाहरामि, “वर ण जोगो” त्ति - वर मे अवत्थगस्स कप्पति
अच्छिउ, ण य मलिणेहि वत्थेहि सह सजोगो ॥५८१७॥ कारणे पुणो धोवतो सुद्धो ।

चोदगो भणाति - णणु धोवतस्स । “विभूसा इत्थीससग्गो” सिलोगो ।

आयरिओ भणइ -

कामं विभूसा खलु लोभदोसो, तहावि त पाहुणतो ण दोसो ।

मा हीलणिज्जो इमिणा भविस्सं, पुव्विड्डिमादी इय संजती वि ॥५८१८॥

काम चोदगामिण्यायस्स अणुमयत्थे, खलु अवधारणे, जा एसा विभूसा - एस लोभ एवेत्थयं, तहावि
त वत्थ “सुविभूसित कारणे काऊण पाउरणे ण दोसो भवति ।

रायाइड्डिम जो इड्डि विहाय पव्वइओ सो चित्तेति - “मा इमस्स अबुहुजणस्स इहलोकपडि-
बद्धस्स इमेहि मलिणवत्थेहि हीलणिज्जो भविस्सामि त्ति । एम सावसत्तो जेण त तारिस विभूति परिचज्ज
इम अवत्थ पत्तो “किमण तवेण पाविहित्ति” त्ति, एव सजती वि हिड्डइ अच्छति वा णिच्च पडरपडपाउआ
॥५८१८॥

ण तस्स वत्थादिसु कोड संगो, रज्जं तणं चेव जहाय तेण ।

जो सो उव्वज्झाड्य वत्थसंगो, त गारवा मो ण चएइ मोत्तु ॥५८१९॥

जो सो इड्डिम पव्वतितो ण तस्स वत्थादिसु कोड संगो त्ति वा बध्ण नि वा एगट्ठ । कह णज्जति
जहा संगो णत्थि ?, उच्यते—जतो तेण रज्ज बहुगुण तुणमिव जड । सेस कठ ॥५८१९॥ विभूसत्ति गय ।

१ गा० ५७८६ । २ बुहत्कल्पे सू० ४५ । ३ विचित्त । इत्यपि पाठ । ४ दशवै० अ० ८ गा० ५७ ।
५ सूईभूय इत्यपि पाठ । ६ किमणेण इत्यपि पाठ ।

इदानीं मुच्छति -

महद्वणे अप्पघणे व वत्थे, मुच्छिज्जती जो अविविचभावो ।

सड पि नो भुंजइ मा हु म्मिज्जे, वारेति वण्णं कमिणा दुगा दो ॥५८२०॥

बहुमुल्ल अप्पमोल्ल वा अविविचभावा लो अविमुदभावा, अविवित्तो - लोहिल्लमित्यर्थ । त पहाणवत्थ ण सय भुजति, जो अण्ण वारेइ परिभुजत तस्स पच्छित्त "कसिणा दुगा दो" त्ति, कमिण त्ति सपुण्णा, दुगा दा चउरो - चउगुरुमित्यर्थ ॥५८२०॥

वत्थे इमाणि मुच्छाकारणाणि -

देसिल्लगं पम्हजय मणुण्णं, चिरायणं दाड सिणेहतो वा ।

लब्भं च अण्ण पि इमपभावा, मुच्छिज्जती एव भिसं कुसत्तो ॥५८२१॥

देसिल्लग जहा पोडववनक, पम्हजुग जहा पूरुवुदपावारगो सण्ह थूल सदेस-परदेस वा, मणस्स ज रुच्चइ त मणुण्ण, चिरायण अययियपरपरागय, दाइति विकारार्थे जेण वा त दिण्ण तस्स सिणेहतो ण परिभुजति, इमेण वा अच्छतेण एयपभावाओ अण्ण पि लब्भामो एव मुच्छाए ण परिभुजति, एव त्ति एव "भिस" अत्यर्थं कुत्तित सत्त्व यस्य भवति स कुसत्त्वो अल्पसत्त्व इत्यर्थ, एव भिस कुसत्त्वा लोभ करोतीत्यर्थ ॥५८२१॥ वत्थे त्ति गत ।

इदानीं पाय भणामि, तस्स इमाणि दाराणि -

द्वप्पमाण^१अतिरेग^२ हीण^३दोसा तहेव अववादे ।

लक्खणमलक्खण^४ तिविह^५ उवहि^६ वोच्चत्थ^७ आणादी ॥५८२२॥

को पोरिसीए^८ काले^९, आकर^{१०} चाउल^{११} जहण्ण^{१२} जयणाए^{१३} ।

चोदग^{१४} असती^{१५} असिव^{१६}, प्पमाणउवओग^{१७} छेदण^{१८} सुहे य ॥५८२३॥

पमाणाइरेगघरणे, चउरो मासा हवति उग्घाया ।

आणादिणो य दोसा, विराहणा संजमा-SSयाए ॥५८२४॥

द्रव्यपात्र, तस्य दुविध प्रमाण - गणणप्पमाण पमाणप्पमाण च । दुविहस्स वि पमाणस्स अतिरेगघरणे चउलहुगा । सेस कथय ।

गणणाते पमाणेण व, गणणाते ममत्तओ पडिग्गहओ ।

पल्लिमंथ भरुडुडुग, अतिप्पमाणे इमे दोसा ॥५८२५॥

दुविह पमाण तत्त्व गणणप्पमाणेण दो पादा - पडिग्गहो मत्तगो य । अह एत्तो तिगादिअतिरित्त वरेति तो परिक्कम्मण रगण पडिलेहणादिसु सुत्तत्थपल्लिमथो अद्धाने बहत्तो भारो उद्दकच्च जनहास्यो भवति - 'अहो ! भारवाहिता इमे' ॥५८२५॥

*दुष्पमाणाइरित्ते वि इमे दोसा -

भारेण वेयणाते, अभिहणमादी ण पेहए दोसा ।

रीयादि संजमम्मि य, छक्काया भाणभेदम्मि ॥५८२६॥

भारो भवति, भारक्कनस्स य वेयणा भवति, वेयणाए य अद्वितो गोणहत्थिमाइ ण पस्सति, ते अभिहणेज्जा, वडसालक्खाणुमाइ वा न पेहइ, इरिवउत्तो वा न भवइ, अणुवउत्तो वा छक्काए विराहेज्ज, अणुवउत्तो वा भायणभेय करेज्जा । ॥५८२६॥

इमे "अइरेगदोसा । "अइरेग" ति पमाणप्पमाणातो -

भाणऽप्पमाणगहणे, भुंजण गेल्लणऽभुंज उज्झिमिता ।

एसणपेल्लण भेदो, हाणि अडंते दुविध दोसा ॥५८२७॥

भाजन अप्रमाण - भाणऽप्पमाणति त, अतिबुद्धि गेण्हति । तम्मि भरिए जइ सव्व भुजति तो हा(तो)देज्ज वा मारेज्ज वा गेल्ल वा कुब्जा अह ण भुजति तो उज्झिमिता अहिकरणादी दोसा । भायण भरेमि ति अलब्धमाण एसण पेलिता भरेति, भरिए अतिभारेण पच्चुप्पिडित्ता भज्जति, भायणेण विणा अप्पणो कज्जपरिहाणी, भायणट्ठा अडतस्स भायणभूमीजतस्स दुविह ति - आयसजमविराहणा दोसा भवति ॥५८२७॥

हीणदोसस्ति अस्य व्याख्या -

हीणप्पमाणधरणे, चउरो मासा हवंति उग्धाता ।

आणादिया य दोसा, विराहणा संजमा-ऽऽयाए ॥५८२८॥

ज पडिग्गहगमत्तगप्पमाण भणिय ततो जति हीण धरेति ततो पडिग्गहगे चउलहु, मत्तगे मासलहु ॥५८२८॥

किं चान्यत् -

ऊणेण ण पूरिस्मं, आकंठा तेण गेण्हती उभयं ।

मा लेवकडं ति ततो, तत्थुवओगं न भूमीए ॥५८२९॥

ऊणेण ति प्रमाणतो एतेण भरिएण वि ण पूरेस्सति ण सथरिस्सति ताहे कण्णाकणि भरेति, उभय ति कूर कुसण च, अहुवा - भत्त पाण वा । तम्मि अतिभरिए मा पत्तबघो लेवाडिस्सति ति - तदुवओगेण भूमीए उवओग न करेति ॥५८२९॥

अणुवत्तन्स य इमे दोसा -

खाणू कटग विसमे, अभिहणमादी ण पेहती दोसा ।

रीया पगलित तेणग, भायणभेदे य छक्काया ॥५८३०॥

अणुवउत्तो खाणूणा दुक्खाविज्जति, कटगेण वा विज्जति, विसमे वा पडति, गवादिणा वा अभिहणति । एसा आयविराहणा । रीयादी सजमविराहणा कथ्या ॥५८३०॥

अहवा इमे दोसा —

‘हीणप्पमाणधरणे, चउरो मासा हवन्ति उग्घाया ।

आणादिया य दोसा, विराहणा संजमायाए ॥५८३१॥ कठ्या

गुरुमाइयाण अदाणे इम पच्छित्त —

गुरु पाहुणए दुब्बल, बाले बुद्धे गिलाण सेहे य ।

लाभा-ऽऽलामऽद्दाणे, अणुकंपा लाभवोच्छेदो ॥५८३२॥

गुरुगा य गुरु-गिलाणे, पाहुण-खम्मए य चउलहू होंति ।

सेहम्मि य मासगुरु, दुब्बल जुव (य) ले य मासलहुं ॥५८३३॥ कठ्या

गुरुमादियाण इमा विभासा —

अप्प-परपरिच्चाओ, गुरुमादीण तु अदेत-देतस्स ।

अपरिच्छित्ते य दोसा, वोच्छेदो णिज्जराऽलामो ॥५८३४॥

डहरभायणभरिय गुरुमादियाण जति देति तो अप्पा चत्तो, अह ण देति तो गुरुमातिया परिचत्ता ।
दुब्बलो सभावतो रोगतो वा न तराति हिडिउ तस्स दायव्व ।

“२लाभाऽऽलोभ” त्ति अस्य व्याख्या — “अपरिच्छित्ते य दोसा”, जस्स हीणप्पमाण भायण सो खेतपडिलेहगो पयट्ठितो स तेण खुडुलगेण भाणेण किह लाभ परिकखउ, ताहे जे अपरिक्खित्ते खेतो दोसा, ते मदपरिक्खिए वि गच्छस्स य आगयस्स अलभते ज असथरण जा य परिहाणी सा सव्वा खुडुलभाणग्गाहिणी भवति, अद्दाणे वा पवण्णाण सखडी होज्जा तत्थ पज्जत्तियलामे लब्भमाणे कहिं गेण्हउ ? त भायण थेवेण जेव भरिय ।

अहवा — “३अणुकपलामवोच्छेतो” त्ति — छिण्णद्दाणे वा कोइ अणुकपाए वा ज ज अडिज्जति त भायण भरेति, तत्थ गच्छसाधारणकर भायण उड्डेयव्व, हीणभायणे पुण अडिज्जते लाभस्स वोच्छेदो णिज्जराए य अलामो भवति ।

अहवा — सट्ठाणेऽपि घयादिदब्बे लब्भमाणे खुडुलभायणेण लाभवोच्छेद करेज्ज निज्जगाए वा अलाम पावेज्ज ॥५८३४॥

इमे य डहरभायणे दोसा —

लेवकडे वोसट्ठे, सुक्के लग्गेज्ज कोडिए सिहरे ।

एते हवन्ति दोसा, डहरे भाणे य उड्डाहो ॥५८३५॥

तेण अतीव पाहुडिय ताहे तेण वोसट्ठ, तेण अतिपलोट्टमाणेण लेवाडिज्जति । अहवा — मा थेव भत्त देहीति, ताहे सुक्कस्स चप्पाचप्प भरेऽ, त च सुक्क भत्त लग्गेज्ज अजिण हवेज्ज । कोडिय त्ति चप्पिय चपिज्जत वा भजेज्ज, सुक्कभत्तस्स वा सिहर करेतो भरेज्ज, त जणो दट्टु भणति — अहो ! असत्तुडा । पच्छद्द कठ ॥५८३५॥

ध्रुवणाऽध्रुवणे दोसा, वोसट्टते य काय आतुसिणे ।

सुक्खे लग्गाऽजीरग कोडित सिंह भेद उट्ठाहो ॥५८३६॥

वोसट्टतेण ज लेवाडित त जति धोवति तो उन्भावणादी दोसा, अह ण धोवति तो रातीभोयणभगे ।
अहवा - वोसट्टे पगलते पुढवादी छक्कायविराधणा ।

अहवा - वोसट्टते उसिणेण दड्ढे आयविराहणा, पच्छद गतार्थं । चप्पिज्जते उस्सिहरभरिणे
य बहि कोड ति उट्ठाहो, जम्हा एवमादी दोसा तम्हा जुत्तप्पमाण पाद घेतव्व ॥५८३६॥

केरिस पुण त जुत्तप्पमाण १, अत उच्यते -

तिणिण विहत्थी चउरंगुलं च भाण मज्झिमप्पमाणं ।

एतो हीण जहण्णं, अतिरेगतर तु उक्कोसं ॥५८३७॥

उक्कोसतिसामासे, दुगाउअट्ठाणमागओ साहू ।

चउरंगुलउणं भायणं तु पज्जत्तियं हेट्ठा ॥५८३८॥

एयं चेव पमाणं, सविसेसतरं अणुग्गहपवत्तं ।

कंतारे दुब्भिकखे, रोहगमादीसु भतियव्वं ॥५८३९॥

एयाओ जहा पट्मुहेसगे तहेव ॥५८३९॥

“अववाय” ति अस्य व्याख्या -

१ २ ३ ४ ५
अण्णाणे गारवे लुद्धे, असंपत्ती य जाणए ।

लहुओ लहुया गुरुगा, चउत्थ सुद्धे उ जाणओ ॥५८४०॥

पच्छा अववाय भणीहामि, जइ इमेहि धरेति तो इम पच्छित्त पच्छदगहिय जहसख - अण्णाणेण
भासलहु, गारवेण चउलहु, लुद्धस्स चउगुरुगा । असंपत्ती जाणगे दो वि सुद्धा ॥५८४०॥

नत्थ अण्णाणस्स वक्खाण -

हीणा-ऽतिरेगदोमे, अयाणमाणो उ धरति हीण-ऽहियं ।

पगतीए थोवभोई, सति लाभे वा करेतोमं ॥५८४१॥

पुव्वद कठ । इम गारवस्स वक्खाण - पगतीए पच्छद, पगती स्वभावो य, स्वभावतो चेव
थोवभोई । अहवा - लभते वि ओम करेति, वर मे थोवासि ति जणवातो भविस्सइ ॥५८४१॥

इस्सरनिकखंतो वा, आयरिओ वा वि एस डहरेणं ।

अतिगारवेण ओम, अतिप्पमाणं इमेहि तु ॥५८४२॥

ईसरो को वि एस जेण डहरेण भायणेण भिक्ख हिडइ, आयरियत्ते ण गारवेण वा डहुरभायण
गेप्पुत्ति ॥५८४२॥

अतिप्पमाण इमेण गारवेण धरेइ -

अणिगूहियबलविरिओ, वेयावच्चं करेइ अह समणो ।

बाहुबल च अती से, पससकामी महल्लेणं ॥५८४३॥

महल्लभायणेण वेयावच्चं करेइ - एव मे तावू पससिस्सति, अहवा - साहुजणो वा भणिस्सइ -
“एयस्स विसिट्ठ बाहुबल जेण महल्लेण भायणेण भिक्ख हिडइ” ॥५८४३॥

^१लुद्धस्स व्याख्या -

अतं न होइ देयं, थोवासी एस देह से सुद्धं ।

उक्कोसस्स व लभे, कहि घेच्छ महल्ल लोभेणं ॥५८४४॥

खुडलगभायणे गहिए घरगणे वि ठित दट्ठु घरसामी भणति - “एयस्स अतपतभत्त ण देय” ।

अहवा भणेज्ज - “एस थोवासी, जेण एस खुडुलएण गेण्हति” ।

अहवा भणेज्ज - “एयस्स सुद्ध देह” । “सुद्ध” ति उक्कोस, ^२शाल्योदनपदमदोच्चगादी सुद्धो चेव ।

महल्ल इमेण कारणेण गेण्हति - “उक्कोम लब्भमाण पभूत सामण्य वा समुदाणिय लब्भमाण कत्थ गेण्हिस्सामि” ति एव लुद्धत्तणेण महल्ल गेण्हति ॥५८४४॥

“अमपत्ति” दार चउत्थ, तस्स इम वक्खाण -

जुत्तपमाणस्सऽसती, हिण-ऽतिरित्तं चउत्थो धारेति ।

लक्खणजुतहीण-ऽहिय, नंदी गच्छड्डता चरिमो ॥५८४५॥

पुव्वद कठ । “^४जाणगे” ति अस्य व्याख्या - लक्खणपच्छद, ज लक्खणजुत्त त जाणगो हीण वा अहिय वा धरेति, जाणादिगच्छवृद्धिनिमित्त ।

अहवा - गच्छस्स उवग्गहकर णदीभायण, “चरिमो” नि जाणगो सो धरेति न दोसो ॥५८४५॥
अववाए ति गय ।

इदाणि “लक्खणमलक्खणे” ति दार -

वट्ठं समचउरंसं, होति थिरं थावरं च वण्णं च ।

हुंड वायाइद्धं, भिन्नं च अधारणिज्जाइं ॥५८४६॥

वृत्ताकृति उच्छिन्नकुक्षिपरिधितुल्य चतुरम दृढ स्थिर स्यावर अप्रतिहारिक एतेहि गुणहि जुत्त घण्ण । अहवा - अण्णेहि वि वण्णादिगुणहि ज जुत्त त घण्ण, एय लक्खणजुत्त ।

इम अलक्खण - विसमसठिय हुड अणिप्फण तुप्पडय वाताइद्ध ज च भिण्ण, एते अलक्खण ॥५८४६॥

संठियम्मि भवे लाभो, पतिट्ठा सुपतिट्ठिते ।

निव्वणे कित्तिमारोग्गं, वण्णड्ढे णाणसपया ॥५८४७॥

१ गा० ५८४० द्वा० ३ । २ व्यञ्जनादि । ३ गा० ५८४० द्वा० ४ । ४ गा० ५८४० द्वा० ५ ।
५ गा० ५८२० द्वा० ५ ।

हुंढे चरित्तभेदो, सबलमि य चित्तविब्भम जाणे ।
 दुप्पुते खीलसंठाणे, गणे य चरणे य नो ठाणं ॥५८४८॥
 पउमुप्पले अकुसले, सव्वणे वणमाइसे ।
 अंतो बहिं व दड्ढे, मरणं तत्थ निदिसे ॥५८४९॥

सुसठाणसठिए भत्तादि लाभो भवति, ज फुल्लगबधेण सुपइट्ठिय तेण चरण गणे आयरियादिपदे वा सुप्पतिट्ठितो भवति । जस्स पातस्स वणो नत्थि तेण पातेण गिब्वणो भवति, किन्ती जसो य भवति, 'आरोग्ग' च से भवति । पवालसण्णिभेण वण्णेण ज अड्ढु ति जुत्त तेण णाण भवति । ज हुड तेण चरित्तविराहणा भवति, मूलुत्तरचरित्ताइयारा भवति । सबल चित्तविचित्त तेण चित्तविब्भमो खित्तादिचित्तो भवति । पुष्पग मूले न सुपइट्ठिय दुप्पुत कोप्परागार खीलसठिय, एरिसे गणे चरणे वा ण थिरो भवति । अहवा — हिंडो चेव अच्चति ।

अंतो बहिं व दड्ढे, पुप्फगं भिण्णे य चउगुरु होंति ।
 इयरब्भिण्णे लहुगा, हुंडादिसु सत्तसु लहुओ ॥५८५०॥
 हुंड सबले सव्वण, दुप्पुत वातिद्ववण्ण हीणे य ।
 कीलगसठाणे वि य, हुंडाई होंति सत्तेते ॥५८५१॥

ज अंतो बहिं वा दड्ढ तत्थ मरण गेलण्ण वा त गेण्हते चउगुरु । पुप्फगमज्जे णाभिभिण्णे एव चेव । इयर ति — ज अण्णकुक्षिमादिसु भिण्ण तत्थ चउलहु । हुंडे वाताइडे दुप्पुते खीलसठाणे अक्खण्डे सबले सव्वणे एतेसु मामलहु ॥५८५१॥ लक्खणमलक्खण त्ति गत ।

इदाणि "२तिविह उवहि" ति —

तिविहं च होति पादं, अहाकडं अप्प-सपरिकम्मं च ।
 पुव्वमहाकडगहणे, तस्सअसति कमेण दोष्णितरं ॥५८५२॥

तिविह पाद — लाउय दास्य मट्ठियापाय च । पुणो एककेवक तिविह — अहाकड अप्पपरिकम्म बहुपरिकम्म च । गहणकाले पुव्व अहाकड गेण्हियव्व, तस्स असति अप्पपरिकम्म, तस्स असति बहुपरिकम्म ५८५२॥

इदाणि "३वोच्चत्थ" ति —

तिविहे परूवितम्मि, वोच्चत्थे गहण लहुग आणादी ।
 छेदण-भेदण करणे, जा जहि आरोवणा भणिया ॥५८५३॥

जो एस अहाकडाइगो गहणकमो भणिओ, एयाओ ज वोच्चत्थ विवरीय गेण्हति ।

अहाकडस्स जोग अकाउ जो अप्पपरिकम्म बहुपरिकम्म वा गेण्हति तस्स चउलहु, अन्न च ज सपरिकम्मे पांदे वि छेयण-भेयण त करेंतस्स जा य छेयण-भेयणादिगा आयविराहणा सजमत्तिराधणा वा पढमुदेसगे भणिया, सच्चेव इह अपरितेसा सहारोवणाए भाणियव्वा ॥५८५३॥

वितियद्धारगाहा आर्दद्वारे १कोत्ति अस्य व्याख्या -

को गेण्हति गीयत्थो, असतीए पादकप्पिओ जो उ ।

उस्सग्ग-उववातेहिं, कहिज्जती पादगहणं से ॥५८५४॥

को पाद गेण्हति ? जो गीयत्थो सो गेण्हति । गीयत्थस्म असत्ति जेण पादेसणा सुत्तत्थो गहिओ सो पायकप्पितो गेण्हति । तस्स वि असति जो मेहावी तस्स पादेसणा उस्सग्गववाएहिं कहिज्जति, सो वा गेण्हति ॥५८५४॥

इदाणि 'पोरिसि' ति -

हुंदादि एगबंधे, सुत्तत्थे करेतो मग्गणं कुज्जा ।

दुग्ग-तिगबधे सुत्तं, तिणहुवरिं दो वि वज्जेज्जा ॥५८५५॥

ज हुंदादि सदातो दुप्पुत खोलमठिय सबल एगबध च, एताणि परिभुजतो सुत्तत्थ करेतो अहाकडादि मग्गेज्ज । जइ पुण दुग्गबधण तिगबधण वा पाद से, तो सुत्तपोरिसि काउ अत्थपोरिसि वज्जेत्ता मग्गति ।

अह पाद से तिगबधणाओ उवरिं षउसु ठाणसु बद्ध, एरिसे पाद दो वि सुत्तत्थपोरिसीओ वग्गेत्ता आदिच्चुदयाओ चैव आढवेत्ता मग्गति ॥५८५५॥ पोरिसि ति गय ।

इदाणि "काले" ति दार ।

अहाकडादियाण क केत्तिय मग्गियव्व ?

चत्तारि अहाकडए, दो मासा हुंति अप्पपरिकम्मे ।

तेण परिमग्गिउणं, असती गहणं सपरिकम्मे ॥५८५६॥

चत्तारि मासा अहाकड मग्गियव्व, नउहिं मासेहिं पुणोहिं तस्स अलाभे अणो दो मासा अप्पपरिकम्म मग्गति, तेण परिमग्गिउण ति अहाकडकालाओ परत अप्पपरिकम्म एनिय काल मग्गति, एते छम्मासे वितियस्स वि अलभे ताहे सपरिकम्म मग्गियव्व ॥५८५६॥

केच्चिर काल ?, अत उच्यते -

पणयालीमं दिवसे, मग्गित्ता जा ण लब्भते ततियं ।

तेण परेण ण गेण्हति, मा पक्खेणं रउज्जेज्जा ॥५८५७॥

पणयालीस दिवसे बहुपरिम्म गेण्हति, ततो पर न गेण्हति, जेण पण्णरसेहिं दिवमेहिं वरिसाकालो भां त्सति । मा तेण पक्खकालेण परिकम्मण रग्गण रोहवण च न परिवारिज्जति ॥५८५७॥ काले ति गत ।

इदाणि "आकरे" ति । अहाकड कहि मग्गियव्व ?, अत उच्यते -

कुत्तीय-मिद्ध-णिण्हग, पवज्जुवासादिस अहाकडयं ।

कुत्तियवज्ज वितियं, आगरमादीसु वा दो वि ॥५८५८॥

कुत्तियावणे मगति, सिद्ध ति सिद्धपुत्तो जो पव्वतिउकामो कते उवकरणे वाघाओ उप्पण्णो ताहे न पडिग्गहादि साधूण देज्जा, णिण्हयस्स वा, एव च समणस्स वा पामे लब्धमिति ।

समणोवासओ वा पडिम करेउ घर पच्चागओ पडिग्गहा साधूण देज्ज, अहाकड एतेषु स्थानेषु प्राप्यते ।

अपपरिकम्म कतरेषु प्राप्यते ?, अत्रोच्यते “कुत्तियवज्ज बितिय” — कुत्तियावण वज्जेउ सिद्धपुत्ता-दिनु अपपरिकम्म लब्धमिति । अहवा — ‘आगरमादीसु वा दो वि’ ति अपपरिकम्म ॥५८५८॥

कानि च तानि आगरमादीनि स्थानानि ? अतस्तेषां प्रदर्शनार्थं उच्यते —

आगर गदी कुडंगे, वाहे तेणे य भिक्ख जंत विही ।

कत कारित व कीर्तं, जति कप्पति तु धिप्पति अज्जो ! ॥५८५९॥

आगराइताण इम वक्खाण —

आगर पल्लीमादी, णिच्चुदग-गदी कुडंग ओसरणं ।

वाहं तेणे भिक्खे, जते परिभोगऽससत्त ॥५८६०॥

आगरो भिल्लपल्ली भिल्लकोट्ट वा, ‘नदि’ ति जेसु गामनगरतरेसु नदीओ लाउएहिं सतरिज्जति णिच्चोदगातो, तासि चैव गदीण कूलेसु जे वच्छकुडगा तेसु वा विज्जति तुबीओ, वाहतेणपल्लीसु वा, अहवा — वाहतेणा अडवि गच्छता लाउए उदग वेतु गच्छति, भिक्खट्ठा भिक्खयरो लाउय गेण्हेज्ज, गुलजतसालादिसु वा उम्मिचगट्ठा भत्तनेल्लादिठावणट्ठा वा लाउय गेण्हेज्जा । एतेसु आगरादिसु ज लब्धमिति त विबीए गेण्हति, अण्ण च ज एतेसु चैव परिभुजमाण त गेण्हति, जेण त अससत्त भवति ॥५८६०॥

आगरादिसु ओभट्ट पुच्छियं च “कस्सेय, कस्सट्ठा वा कय” ति ।

स पुच्छितो भणाति — “कय कारिपच्छद ” अस्य व्याख्या —

तुम्भट्ठाए कतमिणं, अन्नस्सट्ठाए अहव सट्ठाए ।

जो घेच्छति व तदट्ठा, एमेव य कीय-पामिच्चे ॥५८६१॥

तुम्भट्ठाए कय वा, तुम्भट्ठाए वा कारित्, अण्णस्स वा साहुस्स भिक्खतरस्स वा अट्ठाए कय ।

अहवा — सट्ठाए ति अप्पणो अट्ठाए, अहवा — जो चैव गेण्हति तस्सट्ठाए कय जावतिगमित्यथ । अहाकम्मे भणिय एव कीयगडपामिच्चादिसु वि भाणियव्व । अण्णे वि उग्गमदोसा जहासभव सोहेयव्वा, एसणदोसा य । ज सुद त वेप्पइ, असुद त वज्जेयव्व ॥५८६१॥ आगर ति गय ।

इदाणि “श्चाउले” ति —

चाउल उण्होदग तुवर क्रूर फुसणे तहेव तक्के य ।

जं होति भावितं कप्पती तु भइयव्व तं सेसं ॥५८६२॥

चाउलसोषण तुवरो कुसुभगोदगादी भइयव्व ॥५८६२॥

‘सेसति अस्य व्याख्या -

सीतोदगभावितं अविगते तु सीतोदएण गेण्हंति ।

मज्ज-वस-तेल्ल-सप्पी, -महुमातीभावियं भडतं ॥५८६३॥

परिणए पुण सीतोदगे गेण्हति, मज्जादिएसु जति निक्खारेउ सक्कति तो वेप्पइ, इयरहा न वेप्पइ ।

एस भयणा ।

अहवा - वियडभावित जत्थ दुगुछिय तत्थ न वेप्पइ, अदुगुछिए वेप्पति ॥५८६३॥

ओभासणा य पुच्छा, दिट्ठे रिक्के मुहे वहते य ।

संसट्ठे णिक्खित्ते, सुक्खे य पगास दट्ठूणं ॥५८६४॥

ओभासण त्ति जहा वत्थस्स “कस्सेय, किं वासी, किं वा भवस्सति, कत्थ वा आसी ?”-एव पुच्छा ।

सुद्धे गहण ।

पुणो सीसो पुच्छइ - “दिट्ठादिपदे” ।

आयरिओ आह - अदिट्ठातो दिट्ठ खेमतर ।

कह ? उच्यते - अदिट्ठे देये कि काए सघट्ठेतो गेण्हति ण वा ? अहवा - कायाण उवरि ठवियल्लय होज्जा, अहवा - बीजाती खूढा होज्ज, दिट्ठे पुण सव्व दीसइ, एएण कारणेण दिट्ठ वर, णो अदिट्ठ ।

“किं रिक्क, अणरिक्क त वेप्पतु ?” ज दहिस्सोरादीहिं अणरिक्क त वेप्पतु ।

इयर आउक्कायादीहिं अणरिक्क तत्थ कायवहो होज्ज, रिक्के वि कुशुमाती भवति ।

‘किं कयमुह वेप्पइ अकयमुह ?’ कय मुह वेप्पइ ।

“वहतय, अवहतय ?”

ज तक्कमादि फासुएण वहतय त वेप्पति, णावि ज आउक्कायादीहिं ।

“किं ससट्ठ, अससट्ठ गेण्हउ” ? ज फासुदब्बेण ससट्ठ त वेप्पतु ।

“उक्खित्त, णिक्खित्त” ? एत्थ उक्खित्त कप्पति ।

‘सुक्क, उल्ल’ ? फासुएण उल्ल पसत्थ ।

“पगासमुह, अपगासमुह” ? पगासमुह कप्पति ।

अहवा - “पगासट्ठिय अपगासट्ठिय” ? पगासट्ठिय कप्पति । “दट्ठूणं” त्ति जदा सुद्ध तदा चक्खुणा पडिलेहेति, जदि न पडिलेहेइ ताहे तसबीयादी होज्ज ॥५८६४॥

जइ तसबीयादी होज्ज, ताहे इम पुणो जयण करेइ -

ओमंथ पाणमादी, पुच्छा मूलगुण-उत्तरगुणेसुं ।

तिट्ठाणे तिक्खुत्तो, सुद्धो ससणिद्धमादीसु ॥५८६५॥

“ओमत्थ” त्ति पयस्स विभासा -

दाहिणकरेण कण्णे, धेतुत्ताणे य वाममणिबंथे ।

घट्ठेति तिण्णि वारा, तिण्णि तले तिण्णि भूमिए ॥५८६६॥

कण्ण तस्स मुह । कण्णे वेत्तु हत्थ उत्ताणय काउ, त पाय कण्णगहिय वामबाहूमणिबधप्पदेस सघट्ठेति त्ति तिण्णि वारा आहणति । जत्थ जइ बीय तसा वा दिट्ठा तो ण कप्पति, अह दिट्ठा ताहे हत्थतणे ततो वारा आहणति । तत्थ वि तस-बीए दिट्ठे ण कप्पति, अदिट्ठेसु पुणो ओमथय भूमीए तिण्णि वारा पप्फोडेति ॥५८६६॥

‘पाणमादी, एयस्स विभासा तिट्ठाणे तिकखुत्तो खोडिए समाणे -

तस बीयम्मि वि दिट्ठे, ण गेण्हती गेण्हती उ अदिट्ठे ।

गहणम्मि उ परिसुद्धे, कप्पति दिट्ठेहि वि बहूहि ॥५८६७॥

गहणकाले परिसुद्धे जइ पच्छा तसबीय वा पासति, ससणिद्धाणि वा पासति, तहावि त सुद्ध चेव, न परिट्ठवेति ।

अन्ने पुण भणति - जइ तजाए बीए जीव सत्त कुणगा ताव न परिट्ठवेइ । अह बहुतरे पासइ तजाए तो गहणकाले सुद्धि सपडिग्गहमाताते परिट्ठवेति । अतजाएसु बहूसु वि ठियेसु ण परिट्ठवेइ, ते अतजाए सडिय जयणाए फडेंति ॥५८६७॥

‘पुच्छा मूलगुणउत्तरगुणेषु’ त्ति सीसो पुच्छति - तस्स के मूलगुणा, के वा उत्तरगुणा ? ग्रहकरण मूलगुणा, मोयकरण उत्तरगुणा ।

एत्थ मूलगुणउत्तरगुणेहि चउभगो कायव्वो ।

पढमभगे चउगुरु तवकालगुरु, बितियभगे चउगुरु चेव तवगुरु ।

ततियभगे चउलहु चउगुरु । चउत्थो सुद्धो । “चाउल” त्ति गय ।

इदाणि “जहणजयण” त्ति दार -

पच्छित्त पण जहणो ते णेउ तव्वुद्धिए उ जयणाए ।

जहण्णा उ सरिसवादी, तेहि तु जयणेतरे कलादी ॥५८६८॥

पच्छित्त पण जहण असत्तासति तव्वुद्धियणाए गिण्हति, अहवा - सरिसवाती बीया जहण्णा, तहि छम्मागकरवद्धियणाए गेण्हति । इयरे त्ति बादरा कलादी, कल त्ति चणगा ॥५८६८॥

इयाणि एसेवत्थो विवरिज्जति हत्थपमाण काउ -

छम्मागकए हत्थे, सुहुमेसु पढमपव्व पंचदिणा ।

दस बितिते रातिदिणा, अंगुलिमूलेसु पण्णरस ॥५८६९॥

हत्थो छम्माए कीरइ, पढमपव्वा एको भागो, बितियपव्वा बितियभागो, अंगुलिमूले ततिओ, आउरेहा चउत्थो, पचमो अंगुट्ठबुधे, सेसो छट्ठो । एस पढमपव्वमेत्तेसु सुद्धमवीएसु पचराइदिया, बितियपव्वमेत्ते दसराइदिया, अंगुलिमूलमेत्तेसु पण्णरस ॥५८६९॥

वीसं तु आउलेहा, अंगुट्ठयमूले होंति पणुवीस ।

पसतिम्मि होति मासो, चाउम्मासो भवे चउसु ॥५८७०॥

आयुरेहमेतेसु बीस राइदिया, अगुदुबुधमेतेसु पणुवीस, पसतीए मामलहु, चउसु पसतीसु चउलहु
॥१८७०॥

एसेव गमो णियमा, थूलेसु वि बितियपव्वमारद्धो ।

अंजलि चउक्क लहुगा, ते चिय गुरुगा अणतेसु ॥५८७१॥

मासमादिसु थूलेसु बितियपव्वमेतेसु पणग, अगुलिमूले दस, आयुरेहाए पणरस, अगुदुमूले बीसा,
पसतीए भिणमासो, अजलीए मासलहु, चउसु अजलीसु चउलहु । एते चेव पच्छिता सुहुमथूरेसु अणतेसु गुरुगा
कायव्वा ॥१८७१॥

णिककारणम्मि एते, पच्छित्ता वण्णिया उ बितिएसु ।

णायव्वऽणुपुव्वीए, एसेव य कारणे जयणा ॥५८७२॥

जा एसा पच्छित्तवुड्डी भणिया णिककारणे, कारणे पुण गेण्हतस्स सेव जयणा पणगादिगा भवति ।
जइ पुण अहाकडे पढमपव्वप्पमाणा बीया अप्पपरिकम्म च सुद्ध लब्धति ।

एत्थ अप्पबहुचिताए कतर घेतव्व ? भणति - अहाकड घेतव्व, णो अप्पपरिकम्म । एव बितियपव्वा
विंसु वि वत्तव्व ॥१८७२॥

जाव -

वोसद्धं पि हु कप्पति, बीयादीणं अहाकडं पायं ।

ण य अप्प सपरिकम्मा, तहेव अप्पं सपरिकम्मा ॥५८७३॥

वोसद्धं ति भरिय, अहाकड आगतुगाण भरिय पि कप्पति, ण य अप्पपरिकम्म बहुपरिकम्म वा । एव
अप्पपरिकम्म पि आगतुगाण भरिय कप्पति ण य बहुपरिकम्म सुद्ध ॥१८७३॥

इम जयणाए णिच्छतो छडेति -

थूले वा सुहुमे वा, अवहते वा असंथरंतम्मि ।

आगतुग सकामिय, अप्पबहु असंथरंतम्मि ॥५८७४॥

थूलाण वा चणगादियाण बीयाण सुहुमाण वा सरिसवादियाण भरिय होज्जा तस्स य जति
पुव्वभायण, णवर-त ण वहति । “असथर” ति अपज्जत्तिय वा भायण, भायणस्स वा अभावो, ताहे तम्मि असथरे
अप्पबहुअ तुलेत्ता बहुगुणकरे ति काउ अहाकड, आगतुगाण बीयाण भरिय ति आगतुगे सकामेत्ता जयणाए
अणत्थ, अहाकड चेव गेण्हति ण दोसो ॥१८७४॥ जयण ति गता ।

इदार्णि “चोदगो” ति -

थूल-सुहुमेसु बोत्तुं, पच्छित्तं तेसु चेव भरितेसु ।

ज कप्पति त्ति भणियं, ण जुज्जते पुव्वमवरेणं ॥५८७५॥ कथ्या

आचार्य आह - “असति असिव” ति -

चोदग ! दुविधा असती, संताऽसंता य संत अमिवादी ।

इयरो उ भामियादी, कप्पति दोसु पि जा भरिते ॥५८७६॥

सतासती जत्थ गामे णगरे विसए वा भायणे अत्थि तत्थतरा वा असिब, सग्गामे वा जेसु कुत्तेसु अत्थि तेसु वा असिब, ओमोयरियादीणि वा तत्थतरा वा एसा सतासती ।

अहवा - सतासती अत्थि भायण, णवर - त ण बहति ।

अहवा - सतासती असथरम्म ति अत्थि भायण डहर ण सथरति । तेण इयर ति असतासती सा इमा - “भामिय” ति, पलीवए दडु पात, तेणेहि वा हड, रायदुडेण वा हड, भग्ग वा, सव्वहा अभावो पातस्स, एवमादिकारणेहि कप्पति दोसु वि असतीसु अहाकड पाद आगतुगवीयाण भरिय घेतु, ण य सुद्ध अपपरिकम्म । ज पुण मए भणिय पच्छित्त त दुविहाए असतीए अभावे जो गेण्हति तस्स त भवति । अहाकडे जइ विधीए दोसा तट्ठावि त बहुगुणकर, अपपरिकम्ममि पुण सुद्ध पि बहुदोसकर ॥५८७६॥

कह ? उच्यते -

जो तु गुणो दोसकरो, ण सो गुणो दोस एव मो होती ।

अगुणो वि य होती गुणो, जो सुंदर णिच्छओ होति ॥५८७७॥

एव इह पि अपपरिकम्मे सुद्धेवि दोसा, अहाकडे वीयस्स सहिए दूढे वि गुणो चेव ।

कह ?, उच्यते - अहाकडे जति वि ताणि आगनुगवीयाणि जयणाए अणत्थ सकामेतस्स अप्पो सव्वट्ठादीसो, तट्ठावि ण य सुत्तत्थपल्लिमथो, ण य छेदणादिआतोवघायदोसा । अण्णो य इमो नवर - गुणो, तक्खणादेव घेतु हिडियव्व । एव त सदोस पि बहुगुण । अपपरिकम्मे पुण एव चेव विवरीय भाणियव्व, अतो त सगुण पि सदोस ॥५८७७॥ असति असिब ति गय ।

इदाणि “पमाण-उवओग-छेदण” ति तिण्णि वि पदे जुगव भण्णति -

पाद सामण्णेण वा उवकरण जइ अहाकड पमाणजुत्त वा ण लब्भति, तो त पमाणजुत्त कायव्व, उवउत्तेण छेतु इणमेव ।

जतो भण्णति -

असति तिगे पुण जुत्तजोग ओहोवधी उवग्गहिते ।

अ्रेदण-भेदणकरणे, सुद्धो तं निज्जरा विउला ॥५८७८॥

असति ति अहाकडस्स “तिगे” ति तिल्लिवारा “जुतो जोगो” अहाकड तयो वारा मार्गितमित्थं, पुण ति अवधारणे । कि अवधारति ?, उच्यते - तिण्ह वाराण परओ अपपरिकम्मेव गेण्हति । एस ओहिए उवग्गहिए वा पादे, वत्थे अणम्मि वा उवहिम्मि विही गेण्हियव्वो । एव क्रमागते अपपरिकम्मे उवउत्तो छेदणभेदण करंते विसुद्धो, ण तत्थ पच्छित्त । त विहि “अनेक्खतस्स, प्रत्युत्त निज्जरा विपुला भवति ॥५८७८॥

चोदगाह - “णणु अपपरिकम्ममादिसु वेप्पमाणेसु छेदणादिकरणे आयसजमविराहणा भवति ।” -

आचार्याह -

चोदग ! एताए चिय, असती य अहाकडस्स दो इतरे ।

कप्पंते छेदणे पुण, उवओगं मा दुवे दोसा ॥५८७९॥

हे चोदग । जा एसा दुविहा सतासतासती भणिया ताए अहाकडस्स असतीते दो इतर ति

अप्यपरिकम्म बहुपरिकम्म च कप्पते वेत्तु, तेसु पुण छेदणादि करोती सुट्ठुवउत्तो करोति, मा दुवे दोमा भविस्सति, आयसजमविराहणादोसा इत्यर्थं ॥५८७६॥

अस्यैवार्थस्य अपर कल्प -

अहवा वि कओ गेणं, उवओगो ण वि य लब्भती पढमं ।

हीणधिय वा लब्भइ, पमाणओ तेण दो इयरे ॥५८८०॥

उवओगो ति मग्गणजोगे पढम ति अहाकडय, अहवा - लब्भइ अहाकड त पमाणतो हीण ग्रहिय वा लब्भइ तेण कारणेण “दो इतरे” ति, “इतर” ति - अप्यपरिकम्म सुद्ध पमाणजुत्त गेण्हति, तम्भासति हीणप्पमाणाइरेगलभे वा बहुपरिकम्म सुद्ध जुत्तप्पमाण वेप्पति ॥५८८०॥

इम च अप्यपरिकम्म पडुच्च भण्णइ -

जह सपरिकम्मलंभे, मग्गंते अहाकडं भवे विपुला ।

णिज्जरमेवमलंभे, वितियस्सितरे भवे विपुला ॥५८८१॥

जहा सपरिकम्मे ति अप्यपरिकम्मे सुद्धे जुत्तप्पमाणे लब्भमाणे वि अहाकड मग्गतस्स णिज्जरा विपुला भवति, तहा पढमस्स ति अहाकडस्स अलभे इयर ति - अप्यपरिकम्म मग्गनस्स विपुला णिज्जरा भवति ।

अहवा - एतीए गाहाए चउत्थ पाद पढति “वीयस्सितरे भवे विउल” ति । वितिय अप्यपरिकम्म, तस्स अलाभे इयर ति बहुपरिकम्म, त मग्गतस्स णिज्जरा विउला भवति, पढमवितियाण अलभे सतासतासतीए वा ॥५८८१॥

अहवा - जत्थ ते लब्भति तत्थिमे कारणा -

असिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।

सेहे चरित्त सावय-भए व ततियं पि गेण्हज्जा ॥५८८२॥

जत्थ अहाकड पाद अप्यपरिकम्म वा लब्भति तत्थ असिव, अतरे वा परिरयगमण च गल्लिय, एव ओमरायदुट्ठ बोहिगादीण वा मय गिलाणपडिबधेण वा तत्थ न गम्मइ, सेहस्स वा तत्थ सागारिय चारित्तभेदो ति, तत्थतरा वा चरित्ताओ उवसग्गति, सीहादिसावयमय तत्थ अतरा वा, एवमादिकारणेहि अगच्छतो ततिय । ततिय ति - बहुपरिकम्म सत्याणे चैव गेण्हति ॥५८८२॥

गयमत्थ सीहावलोयणेण भणति -

आगंतुगाणि ताणि य, सपरिकम्ममे य सुत्तपरिहाणी ।

एएण कारणेण, अहाकडे होति गहणं तु ॥५८८३॥

चरिम परिकम्मेतस्स सुत्तवपरिहाणी । शेष गवायम् ॥५८८३॥ पमाण उवओगछेयण ति गत ।

इदार्णि “मुहे” ति दार -

वितिय-ततिएसु नियमा मुहकरणं होज्ज तस्सिमं माणं ।

तं पि य तिविहं पादं, करंडयं दीह वट्ठं च ५८८४॥

बितिय अप्परिकम्म, (ततिय बहुपरिकम्म) एतेसु गियमा मुहकरण, त च मुह तिविह - करडाकृति, दोह ति ओलवग, वट्ट ति समवउरस ॥५८८४॥

तेसि मुहम्स इम माण -

अकरंडगम्मि भाणे, हत्थो 'उडढं जहा ण घट्टेति ।

एयं जहण्णयमुहं, वत्थुं पप्पा ततो विसालं ॥५८८५॥

अकरड ओलवओ समवउरस्स वा, एतेसु मुहप्पमाण हत्थो पविसतो णिप्पिडतो वा जहा उड्ड अह य ण घट्टेति - ण स्पृशतीत्यर्थः । एयं सव्वजहणमुहप्पमाण । अतो पर वत्थु ति महत्ते महत्तर विसाले विसालतर मुह कज्जति, ज पुण करडगाकृति तस्स विसालमेव मुह कज्जति । अण्णहा त दुक्कप्पय भवति ॥५८८४॥ एस पडिग्गहो भणितो ।

इदाणि मत्तगो भण्णति -

अन्नाह चोदक - न तित्थकरेहि मत्तगो अणुण तो ।

कह ?, यस्मादुक्त -

दव्वे एगं पादं, वुत्तं तरुणो य एगपादो उ ।

अप्पोवही पसत्थो, चोदेति न मत्तओ तम्हा ॥५८८६॥

उवकरणदञ्जोभोयरियाए भणिय - “३ एगे वत्थे एगे पाए चियत्तोवगरणसज्जणया” । तथा चोक्त - “४ जे भिक्खु तरुणे बलव जुवाणे से एग पाद धरेज्ज” तथा चोक्त - “अप्पोवही कलहविवज्जणा य, विहारचरिया इसिण पसत्था” ।

चोदगो भणति - जम्हा एव बहुसुय, अण्णोसु वि सुतपदेसु भणिय, तम्हा ण मत्तगो वेत्तव्वो ॥५८८६॥

आयरियाह -

जिणकप्पे सुत्तेतं, सपडिग्गहकस्स तस्म तं एगं ।

णियमा थेराणं पुण, बितिज्जओ मत्तओ भणिओ ॥५८८७॥

एगवत्थपादादिया जे सुत्तपदा चोदेसि, एते सपडिग्गहस्स सपाउरणस्स य जिणकप्पियस्स सुत्ता । थेराण पुण नियमा पडिग्गहस्म बितितो मत्तगो भवति, स तित्थयरेहि चेव अणुण्णातो, अप्पोवहिगह्णतो दुपत्तो अप्पोवही चेव, जतो तिप्पमिति बहुत तम्हा दिट्ठ मत्तगहण ॥५८८८॥ त अगेण्हते पच्छित्त ।

इमे य दोसा -

^१अग्गहणे ^२वारत्तग, ^३पमाण ^४हीणा^५ऽहियसोही ^६अववाए ।

^८परिभोग ^१गहण बितियपद लक्खणादी ^७मुहं जाव ॥५८८८॥

अग्गहणे त्ति अस्य व्याख्या -

मत्तगग्गेहणे गुरुगा, मिच्छत्तं अप्प-परपरिचाओ ।

संसत्तग्गहणम्मि य, संजमदोसा मुणेयव्वा ॥५८८६॥

मत्तगं अग्गेहते चउगुरुगा पच्छित्तं, गवसद्धादि मिच्छत्तं गच्छे ।

कहं ?, उच्यते - तेण चैव पडिग्गहेण णिल्लेवंतं दट्ठुं दुहिद्वधम्मे त्ति, जति पडिग्गहे आयरियातीणं गेण्हति अप्पा चत्तो, अह अप्पणो गेण्हति तो आयरियादी पदा चत्ता ।

मत्तगग्रभावे संसत्तभत्तपाणं कहिं गेण्हउ ?, अहपडिलेहियं पडिग्गहे चैव गेण्हति, तो संजम-विराहणा सवित्थरा भाणियव्वं । 'छक्काय च० गाहा ॥५८८६॥

“वारत्त” त्ति अस्य व्याख्या -

वारत्तग पव्वज्जा, पुत्तो तप्पडिम देवथलि साहू ।

पडिचरणेगपडिग्गह, आयमणुच्चालणा छेदो ॥५८८७॥

वारत्तपुरं नगरं तत्थ य अभग्गसेणो राया, तस्स अमच्चो वारत्तगो णाम । सो घरसारं पुत्तस्स णिसिउं पव्वइतो । तस्स पुत्तेण पिउभत्तीए देवकुलं करित्तु रयहरणमुहपोत्तियपडिग्गहघारी पिउपडिमा तत्थ ठाविया । तत्थ थलीए सत्तागारो पवात्तितो । तत्थ एगो साधू एगपडिग्गहघारी तत्थ थलीए पडिग्गहए भिक्खं घेतुं, तं भोत्तुं, तत्थेव पडिग्गहे पुणो पाणगं घेतुं सण्णं वोसिरिउं, तेणेव पडिग्गहेण णिल्लेवेति ।

तेसि सत्ताकारणिउत्ताणं चिंता - कहं णिल्लेवेइ त्ति, पडियरतो दिट्ठो, तेहिं णिच्छूदो । तेहिं य ताणि भायणाणि अगणिकाइयाणि अण्णाणि छड्डियाणि, तस्स अण्णेसिं च साधूणं वोच्छेओ तत्थ जातो, उड्डाहो य ॥५८८७॥

इमं ३मत्तगस्स पमाणं -

जो मागहओ पत्थो, सविसेसतरं तु मत्तगपमाणं ।

दोसु वि दव्वग्गहणं, वासावासेसु अहिगारो ॥५८८९॥

मगहाविसए पत्थो त्ति कुलवो । दोसु वि त्ति उड्डवद्धे वासासु य । कारणे असणं पाणगदव्वं वा गेण्हति ।

अण्णे पुण भणंति, - दोसु वि त्ति - पडिग्गहे भत्तं, मत्तगे पाणगं । इहं पुण मत्तगेण वासावासासु अधिकारो । वासासु पढमं चैव जत्थ धम्मलामोत्ति तत्थ पाणगस्स जोगो कायव्वो ।

किं कारणं ?, कयाति वग्गारियवासं पडेज्ज, जेण घराओ घरं न सक्केति संचरिउं, ताहे विणा दव्वेण लेवाडो भवति, तम्हा पढमभिक्खातो चैव पाणगं मणियव्वं । अहवा - वासासु संसज्जति त्ति तेण सोहिज्जइ त्ति अतो तेण अधिकारो ॥५८८९॥

अथवा इमं पमाणं -

सुक्खोल्ल ओदणस्सा, दुगाउतद्वाणमागओ साहू ।

भुंजति एगट्ठाणे, एतं खलु मत्तगपमाणं ॥५८९०॥

अप्येण उल्लिखो सुक्खोयणो, अहवा - सुक्खो चेव ओयणो अण्णभायणगहितेण तिम्मणेण जो पज्जत्तिओ भवइ, एय मत्तगस्स पमाण ॥५८९२॥

अथवा इम पमाण -

भतस्स व पाणस्स व, एगतरागस्स जो भवे भरिओ ।

पज्जत्तो साहुस्मा, एतं किर मत्तगपमाणं ॥५८९३॥ कथा

मत्तगो जुत्तप्पमाणो वेत्तव्वो, हीणप्पमाणे अतिरित्ते वा बहू दोसा ॥५८९३॥

एत्थ ^१हीणे त्ति दार -

तस्सिमे दोसा -

उहरस्स एते दोसा, ओभावण खिसणा गलंते य ।

छण्हं विराहणा भाणभेयो जं वा गिलाणस्म ॥५८९४॥

ओभावणा चप्पाचप्पि भरेमाण दट्ठु भणाति - इमे दरिदा दुक्खभग्गा पव्वइत्त त्ति । अहवा - चप्पाचप्पि भरेमाण दट्ठु भणाति - इमे असत्तुत्त त्ति, खीसति ^२अतिलोभगिच्चे त्ति वा भणाति, अतिभारिय-गलनं य पुढवादिछक्कायविग्राहणा लेवाडिज्जति, तत्थ पुव्वणापुव्वणे दोसा ।

अहवा - लेवाडणभया तत्थुवआगेण खानुमादी ण पेहति, अतो भायणविग्राहणा । चप्पाचप्पि वा करेतस्स भायणविग्राहणा । गिलाणमादियाण वा अप्पज्जत्त भवति तेण तेसिं विराहणा ॥५८९४॥

अहवा इमे उहरे दोसा -

पडणं अवंगुतम्मि, पुढवी-तसपाण-तरुगणादीणं ।

आणिज्जंतं गामंतरातो गलणे य छक्काया ॥५८९५॥

कप्पाकर्णिण भरिते लेवाडणभएण अक्खुएण त्ति तत्थ पुढविकाया तसा तरुप्फाडया पडेज्ज, अहवा - गामतरातो अतिभरिए अणिज्जन्ते परिगलमाण छक्काया विराहिज्जति ॥५८९५॥ हीणे त्ति गत्त ।

इदार्णि ^३अधिगे त्ति दार -

अहियस्स इमे दोसा, एगतरस्सोग्गहम्मि भरियम्मि ।

सहसा मत्तगभरणे, भारो ।व विगिंचणियमादी ५८९६॥

प्रमाणाधिके इमे दोसा - एगतरस्स सि भत्तस्स पाणस्स वा पडिग्गहे भरिते पच्छा मत्तगे गहण करेज्ज, सहसा तम्मि मत्तगे भरिए अतिभारेण खानुमादिए दोसे ण पेहेइ, अण्ण च दोसु वि भरितेसु विगिंचणिया दासा, अह ण विगिंचति तो अतिबद्धेण गेलणादिया दोसा ॥५८९६॥ अधिगे त्ति गय ।

जम्हा एते दोसा तम्हा हीणऽइरित्ते वज्जेउ पमाणपत्तो वेत्तव्वो । त च अप्पणट्ठा ण परिभुजति । प्रायरियादीणट्ठा परिभुजति ।

अह णिकारणे अप्पणट्ठा परिभुजति, तो इम ^४पच्छिन्न -

जति भोयणमावहती, दिवसेणं तत्तिथा चउम्मासा ।

दिवमे दिवसे तस्म उ, चित्तिणाऽऽरोवणा भणिता ॥५८९७॥

एगदिवसेण जत्तिए वारे मत्तगेण भत्तपाण आणेति तत्तिया चउलहुगा भवति, दिवसे दिवसे त्ति वीप्साया बिनियादिदिवसेसु पच्छित्तबुडढी दरिसेति - जत्तियवारा आणेति ततो से बित्तिएण आरोवणा कज्जति, चउलहुस्स अबित्तिय चउगुरुग त बित्तियवारे दिज्जति, एव उवरिं पि णेव्व, अट्टमे दिवसे पारचिय पावति ॥५८६७॥ सोही गया ।

इदाणि १अववादे त्ति -

अण्णाणे गारवे लुद्धे, असंपत्ती य जाणए ।

लहुओ लहुओ गुरुगा, चउत्थो सुद्धो य जाणओ ॥५८६८॥

एरिसा जहा पडिग्गहे भणिया तहेव मत्तगे वि भाणियव्वा ॥५८६८॥

इदाणि २परिभोगो त्ति दार ।

मत्तगे णो अप्पणट्ठा परिभु जइ, आयरियादीणट्ठा पारभु जइ -

आयरिय बाल बुद्धा, खमग गिलाणा य सेह आएसा ।

दुल्लभ मंसत्त असंथरम्मि अट्ठाणकप्पम्मि ॥५८६९॥

आयरियरस य गिलाणस्स य मत्तगे पाउग्ग घप्पइ सेहबालादियाण अण्हिहत्ताण मत्तग भत्त घेप्पइ पाउग्ग वा । अहुवा - बालादिया पडिग्गह्य ण सक्केति वट्टावेउ, ताहे मत्तगेण हिडति । गच्छट्ठा वा दुल्लभदव्व घतादिय पडुप्पण्ण मत्तगे गेण्हेज्जा । तत्थ वा ससज्जति भत्तपाण तत्थ मत्तगे गेण्हिज्जति भत्तपाण, तत्थ मत्तए घेनु सोहेति, पच्छा पडिग्गहे छुब्भइ । ओमादि असथरणे वा, असथरणे पडिग्गहे अरिए अण्णम्मि य लब्भते मत्तगे गेण्हेज्जा । अट्ठाण कप्पो अट्ठाणकप्पो अट्ठाणे विधिरित्त्यर्थ । कप्पगहण कारणे विधीए अट्ठाण पडिवण्णेति दमेति, तत्थ अमयरणे पडिग्गहे अरिए मत्तगे गेण्हति ॥५८६९॥ परिभोगि त्ति गत ।

“अगहणपदवित्तियपदलक्खणादि मुह जाव” त्ति - एतेसि पदान् अत्थो जहा पडिग्गहे ।

तहावि अक्खरत्थो भण्णति - गहणे ।

मत्तग को गेण्हति ? वित्तियपद असिवादिकारणेहि सत्थाणे चेव अप्पबहुपरिकम्मो गेण्हति । *लक्खणादि दारा जहा पडिग्गहे तथा मत्तगे वि वत्तव्वा, मुहकरण च, अप्पपरिकम्म सपरिकम्म च लेवेयव्व ।

तत्थ लेवग्गहणे इमा विही -

हरिए बीए चले जुत्ते, वत्थे साणे जलद्धिते ।

पुढवीऽसंपातिमा सामा, महावाते महिताऽमिते ॥५८७०॥

ओहिणज्जुत्तिमादीसु अणेगमो गतत्था । एस उवहो अण्वोक्कडो भणिओ ।

विभागतो पुण उवही दुविहो - ओहिओ उवग्गहितो य । जिणाण परिहारविसुद्धियाण अहालदियाण पडिमापडिवण्णाण, एतेसि ओहितो चेव उवही ।

जिणकप्पिया दुविहा - पाणिपडिग्गही, पडिग्गहधारी य ।

पाणिपडिग्गही दुविहा - पाउरणवज्जिया, सहिया य ।

पाउरणवज्जियाण दुविहो - रयहरण मुहपोत्तिया य ।

पाउरणसहियाण तिविह, चउव्विह, पचविह ।

पडिग्गहवारी वि पाउरणवज्जिओ पाउरणसहितो वा ।

पाउरणवज्जियस्स नवविहो ।

पाउरणसहियस्स दसविहो एक्कारसविहो बारसविहो य ।

परिहारविसुद्धिगादी गियमा पडिग्गहवारी पाउरण । चितिसवयणअभिग्गहविसेसओ भवणिज्ज ।
अहासदियाण विसेसो गच्छे पडिबद्धा अप्पडिबद्धा वा होज्ज ।

इम थेरकप्पियाण -

चोदसगं पणुवीसा, ओहोवधुवग्गहो यऽणोगविहो ।

संथारपट्टमादी, उभयो पक्खे वि नायव्वो ॥५९०१॥

थेरकप्पियाण ओहोवही चोदसविहो ।

सजतीण ओहोवही पणवीसविहो ।

उभयपक्खे ति साधुसाधुणीण उवम्महिओ उवही सथारगपट्टादि अणोगविहो भवति ॥५९०१॥

जे भिक्खू अणंतरहियाए पुढवीए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहारिए
सओस्से सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मड्डिय-मक्कडासंताणगंसि,
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४०॥

जे भिक्खू ससणिद्धाए पुढवीए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहारिए,
सओस्से सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मड्डियमक्कडासंताणगंसि
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा साइज्जइ ॥सू०॥४१॥

जे भिक्खू ससरक्खाए पुढवीए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहारेए
सओस्से सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मड्डिय-मक्कडासंताणगंसि
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥

जे भिक्खू मड्डियाकडाए पुढवीए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहारिए
सओस्से सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मड्डिय-मक्कडासंताणगंसि
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्ठवेइ,
परिट्ठवेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥

जे भिक्खू चित्तमताए पुढवीए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए
सओस्से सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासताणगमि
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवण परिट्टवेइ,
परिट्टवेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥४४॥

जे भिक्खू सिलाए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए
सओस्से सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगंसि
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्टवेइ,
परिट्टवेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

जे भिक्खू लेलूए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए
सओस्से सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगंसि
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्टवेइ,
परिट्टवेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

जे भिक्खू कोलावाससि वा दारुए जीवपइट्टिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए
सओस्से सउदए सउत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासताणगंसि
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्टवेइ,
परिट्टवेतं वा साइज्जइ ॥सू०॥४७॥

जे भिक्खू थूणंसि वा गिहेलुयसि वा उसुयालसि वा भामबलसि वा
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्टवेइ,
परिट्टवेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥४८॥

जे भिक्खू कुलिर्यंसि वा भित्तिमि वा सिलंसि वा लेलुसि वा
अंतलिकखजायंसि वा दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकंपे, चलाचले
उच्चारपासवणं परिट्टवेइ, परिट्टवेतं वा साइज्जइ ॥सू०॥४९॥

जे भिक्खू खंधंसि वा फलहंसि वा मंचमि वा मंडवंसि वा मालसि वा पासायंसि वा
दुब्बद्धे, दुब्बिखित्ते, अनिकंपे, चलाचले उच्चारपासवणं परिट्टवेइ,
परिट्टवेतं वा सातिज्जति ।

त सेवमाणे आबज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं उग्घातिया ॥सू०॥५०॥

पुहवीमादी कुलिमादिएसु थूणादिखंधमादीसु ।

तेसुचारादीणि, परिट्टवे आणमादीणि ॥५१०२॥

आदिसदानो मसगिद्धमरक्खादी जे सुत्तपदा भणिना तेसु उच्चारपासवण परिदुर्वैतस्म आयसजम-
विराहणा भवति, आणादिया य दोसा । चउलहु पच्छित्त । एनेसु पुढवादी पदा जहा तेरसमे उद्देसगे वक्खाया
तहा भाणियव्वा । णवर — तत्थ ठाणानि भणिया, इह उच्चारपासवण भाणियव्व ॥५६०२॥

इमो अववातो —

वित्तियपदमणप्पज्जे, ओमण्णाइण्णरोहगद्धाणे ।

दुब्बलगहणि गिलाणे, वोसिरण होति जयणाए ॥५६०३॥

अणप्पज्जे खित्तचित्तादि, ओसण्ण ति चिरायतण अपरिमोह “आइण्ण”, जणो वि तत्थ वोसिरति,
राहगे वा त अणुण्णाय, दुब्बलो वा साधू, गहणिदुब्बलो वा, थडिल गतुमसमत्थो वा, गिलाणो वा असमत्थो,
एते वासिरति । जयणाए वोसिरति, जहा आयसजमविराहणा ण भवतीत्यथ ॥५६०३॥

“देहडो सीह थोरा य ततो जेट्ठा सहोयरा ।

कणिट्ठा देउलो णण्णो सत्तमो य तिइज्जगो ।

एनेसि मज्झिमो जो उ, मदे वी तेण वित्तिता ।

॥ इति णिमीह-विमेमचुण्णीए मोलसमो उद्देसओ समत्तो ॥

सप्तदश उद्देशकः

उक्त षोडशम । इदानीं सप्तदशमोद्देशक । तस्मिन्समो सबधो -

आतपरे वावत्ती, खंघादीएसु वोसिरेंतस्स ।

मा सच्चिय कोतुहला, बंधंताऽऽरंभो सत्तरसे ॥५६०४॥

खंघादिएसु उच्चवारपासवण करेंतस्स आयविराहणा पडतस्स हवेज्ज, उमएण पडतेण कुशुमादि विराहिज्जति, मा सच्चयेव भायपरविराहणा कोउग्रमादीहि तण्णगादिबधतस्स भविस्सति । अनो सत्तर-समस्स आरभो ॥५६०४॥

जे भिक्खु कोउहल्लपडियाए अन्नयरं तसपाणजायं तणपासएण वा मुंजपासएण वा कट्टपासएण वा चम्मपासएण वा वेत्तपासएण वा रज्जुपासएण वा सुत्तपासएण वा बंधइ, बंधंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

जे भिक्खु कोउहल्लपडियाए अन्नयरं तसपाणजायं तणपासएण वा मुंजपासएण वा कट्टपासएण वा चम्मपासएण वा वेत्तपासएण वा रज्जुपासएण वा सुत्तपासएण वा बंधेन्नलंगं मुयइ, मुयंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

तसपाणतण्णगादी, कोतुहल्लपडियाए जो उ बंधेज्जा ।

तणपासगमादीहिं, सो पावति आणमादीणि ॥५६०५॥

तसपाणगो वन्ममादि मेदुर, आणादी चउलहु च ।

तण्णग-वाणर-वरहिण, -चगोर-हंस-सुगमाइणो पक्खी ।

गामारण्ण चउप्पद, दिट्ठमदिट्ठा य परिसप्पा ॥५६०६॥

तण्णगगहणातो इमे वि पक्खिणो गहिता-वरिहणो त्ति-मोरो, रक्तपादो दीर्घघ्रीवो जलचरो पक्खी चकोरो, ग्रण्ण वा किं चिं किसोरादि गामेयग, मृगादि वा आरण्ण दिट्ठपुव्व वा अदिट्ठपुव्व वा, णउलादि वा, मुयपरिसप्प, सप्पादि वा उरपरिसप्प, एवमानि बधति मुयति वा ॥५६०६॥

बधमुयणे वा इम कारण -

दिस्सिहिति चिरं बद्धो, णयणादि 'चउप्पडंत दुप्पस्स ।

गमणपुत्तादिक्कुतुहल, मुयति व जे बारसे दोसा ॥५६०७॥

वितियपदमणप्पज्झे, वंघ्रे अविकोविते य अप्पज्झे ।
जाणते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५६०८॥

वितियपदमणप्पज्झे, मुचे अविकोविते व अप्पज्झे ।
जाणते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५६०९॥

उत्सग्गो भववातो य जहा बारममे उद्देसगे तहा भागियव्वो ।

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए तणमालिय वा मुजमालियं वा भेडमालियं वा
मयणमालिय वा पिंछमालियं वा दंतमालियं वा सिंगमालियं वा
संखमालिय वा हड्डमालियं वा कट्टमालिय वा पत्तमालियं वा
पुप्फमालियं वा फलमालियं वा बीयमालिय वा हरियमालियं वा
करेइ, करेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए तणमालिय वा मुंजमालियं वा भेंडमालिय वा,
मयणमालिय वा पिंछमालियं वा दंतमालियं वा सिंगमालियं वा,
संखमालियं वा हड्डमालियं वा कट्टमालियं वा पत्तमालिय वा,
पुप्फमालियं वा फलमालियं वा बीयमालियं वा हरियमालिय वा,
घरेइ, घरेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए तणमालियं वा मुंजमालियं वा भेंडमालिय वा,
मयणमालियं वा पिंछमालिय वा दंतमालियं वा सिंगमालिय वा
संखमालियं वा हड्डमालिय वा कट्टमालिय वा पत्तमालियं वा,
पुप्फमालिय वा फलमालियं वा बीयमालियं वा हरियमालियं वा
पिणद्धइ, पिणद्ध तं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

तणमादिमालियाओ जत्तियमेत्ता उ आहियासुत्ते ।

ताओ कुतूहलेणं, धारेंत आणमादीणि ॥५६१०॥

वितियपदमणप्पज्झे, करेज्ज अविकोविते व अप्पज्झे ।

जाणते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५६११॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए अयलोहाणि वा तंबलोहाणि वा तउयलोहाणि वा,
सीसलोहाणि वा रुप्पलोहाणि वा सुवण्णलोहाणि वा,
करेति, करेत वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

अयमादी 'आगगा खलु, जत्तियमेत्ता उ आहिया सुत्ते ।

ताडं कुतूहलेण, ^१मालेते आणमादीणि ॥५६१२॥

वितियपदमणप्पज्झे, करेज्ज ओविकोविते व अप्पज्झे ।

जाणते वा वि पुणो, कज्जेमु बहुप्पगारेमु ॥५६१३॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए अयलोहाणि वा तबलोहाणि वा तउयलोहाणि वा
मीसलोहाणि वा रुप्लोहाणि वा सुवण्लोहाणि वा
घग्ग, धरेंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥७॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए अयलोहाणि वा तंबलोहाणि वा तउयलोहाणि वा
मीमलोहाणि वा रुप्लोहाणि वा सुवण्लोहाणि वा
पिणद्धइ, पिणद्ध त वा सातिज्जइ ॥सू०॥८॥

✽

✽

✽

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए हाराणि वा अद्दहाराणि वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा
कणगावलिं वा रयणावलिं वा कणगाणि वा तुडियाणि वा केऊराणि वा
कुंडलाणि वा पट्टाणि वा मउडाणि वा पलंबमुत्ताणि वा सुवण्लमुत्ताणि वा
करेति, करेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए हाराणि वा अद्दहाराणि वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा
कणगावलिं वा रयणावलिं वा कडगाणि वा तुडियाणि वा केऊराणि वा
कुंडलाणि वा पट्टाणि वा मउडाणि वा पलंबमुत्ताणि वा सुवण्लमुत्ताणि वा
धरेड, धरेंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०॥

जे भिक्खू कोउहल्लपडियाए हाराणि वा अद्दहाराणि वा एगावलिं वा मुत्तावलिं वा
कणगावलिं वा रयणावलिं वा कडगाणि वा तुडियाणि वा केऊराणि वा
कुंडलाणि वा पट्टाणि वा मउडाणि वा पलंबमुत्ताणि वा सुवण्लमुत्ताणि वा
पिणद्धइ पिणद्धंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

कडगादी आभरणा, जत्तियमेत्ता उ आहियासुत्ते ।

ताडं कुतूहलेण, ^२मालेते आणमादीणि ॥५६१४॥

वितियपदमणप्पज्झे, माले अविकोविते व अप्पज्झे ।

जाणते या वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५६१५॥

जे भिक्खु कोउहल्लपडियाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंबलाणि वा कवलपावराणि वा कोयराणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा नीलमियाणि वा भामाणि वा मिहामामाणि वा उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगूलाणि वा पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणगकंताणि वा कणगखमियाणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा करेइ, करेतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥१२॥

जे भिक्खु कोउहल्लपडियाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कवलपावराणि वा कोयराणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा नीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगूलाणि वा पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणगकंताणि वा कणगखमियाणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा धरेइ, धरेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

जे भिक्खु कोउहल्लपडियाए आईणाणि वा आईणपावराणि वा कंबलाणि वा कवलपावराणि वा कोयराणि वा कोयरपावराणि वा कालमियाणि वा नीलमियाणि वा सामाणि वा मिहासामाणि वा उट्टाणि वा उट्टलेस्साणि वा वग्घाणि वा विवग्घाणि वा परवंगाणि वा सहिणाणि वा सहिणकल्लाणि वा खोमाणि वा दुगूलाणि वा पणलाणि वा आवरंताणि वा चीणाणि वा अंसुयाणि वा कणगकंताणि वा कणगखंसियाणि वा कणगचित्ताणि वा कणगविचित्ताणि वा आभरणविचित्ताणि वा परिभुंजइ, परिभुंजतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

अजिगादी वत्था खलु, जत्तियमेत्ता उ आहियासुत्ते ।

ताइं कुतूहलेणं, परिहंते आणमादीणि ॥५६१६॥

वित्तियपदमणप्पज्जे, परिहे अविकोविते व अप्पज्जे ।

जाणंते वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५६१७॥

जे भिक्खु इत्यादि । करेति धरेति पिण्डेति, एय लोह सुत्ते आभरण सुत्ते, झङ्गादि जाव वत्थसुत्त ।

एतेसि सुताण भासगाडाण य अत्थो जहा सत्तमुद्देशगे तथा भाणियब्बो, णवर - तत्थ माउग्गामस्स मेट्ठणपडियण् करेति, इह पुण कोउयपडियाए करेति । इह चउलहु पच्छित्त । सेस उस्सग्गववादेहि मविन्थर तुल्ल, णवर - अत्रवादे कज्जेमु बट्ठप्पगारेसु त्ति जहा ओमे तण्णमानियाओ दाणसड्ढादियाण अन्नमत्थिओ करेति विक्कयट्ठा वा काउ धरेति, कारणे परलिंगट्टिते वा पिण्डिति । एव मेसा वि उवउज्जिउ भावेयव्वा ॥५६१७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथर -

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स -

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
मवाहावेज्ज वा पलिमदावेज्ज वा
संवाहावेतं वा पलिमदावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स -

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खवावेज्ज वा
भिल्लिगावेज्ज वा, मक्खवावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स -

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उवट्ठावेज्ज वा
उल्लोलावेतं वा उवट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स -

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
मीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पथोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पथोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१९॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स -

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
फूमावेज्ज वा रयावेज्ज वा
फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥



जा णिग्गंथी णिग्गंथस्म —

काय अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्म —

काय अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
संवाहावेज्ज वा पलिमदावेज्ज वा
संवाहावेतं वा पलिमदावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा
भिलिगावेज्ज वा मक्खावेतं वा भिलिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा
उल्लोलावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२४॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्म —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगवियडेण वा उमिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पथोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पथोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

✽

✽

✽

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्म —

कायसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायसि वण अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

संवाहावेज्ज वा पलिमदावेज्ज वा
संवाहावेतं वा पलिमदावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कार्यसि वण अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा तेल्लेण वा घएण वा
वमाए वा णवणीएण वा मक्ख्खावेज्ज वा भिल्लिगावेज्ज वा
मक्ख्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कार्यसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्वेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा
उल्लोलावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कार्यसि वण अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदग्गवियडेण वा उसिणोदग्गवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा, उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कार्यसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

❀

❀

❀

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कार्यसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा अमियं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
अच्छिंदावेज्ज वा विच्छिंदावेज्ज वा
अच्छिंदावेतं वा विच्छिंदावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कार्यसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
अन्नयरणे तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिंदावित्ता विच्छिंदावित्ता
पूर्यं वा सोणियं वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कार्यसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,

अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
 अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता
 पूयं वा मोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता मीओदगवियडेण वा
 उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा पयोयावेज्ज वा
 उच्छोलावेत्तं वा पधोयावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥३५॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदल वा
 अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
 अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा मोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
 मीओदगवियडेण वा उमिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता
 अन्नयरणं आलेवणजाएणं आलिपावेज्ज वा विलिपावेज्ज वा
 आलिपावेत्तं वा विलिपावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायंसि गंडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदल वा,
 अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
 अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
 सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता
 अन्नयरणं आलेवणजाएणं आलिपावेत्ता विलिपावेत्ता तेल्लेण वा
 घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगावेज्ज वा मक्खावेज्ज वा
 अब्भंगावेत्तं वा मक्खावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥३७॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायंसि गड वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,
 अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिक्खेणं सत्थजाएणं
 अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विसोहावेत्ता
 मीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता
 अन्नयरणं आलेवणजाएणं आलिपावेत्ता विलिपावेत्ता तेल्लेण वा
 घएण वा वसाए वा णवणीएण वा अब्भंगावेत्ता मक्खावेत्ता
 अन्नयरणं धूवणजाएणं धूवावेज्ज वा पधूवावेज्ज वा
 धूवावेत्तं वा पधूवावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥३८॥



जा णिग्गंथी णिग्गंथस्म —

पालुकिमियं वा कुच्छिकिमियं वा अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
अंगुलीए निवेमाविय निवेमाविय नीहरावेड
नीहरावेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥३६॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्म —

दीहाओ नहसिहाओ अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥४०॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्म —

दीहाडं जंधरोमाइ अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४१॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्म —

दीहाइं कक्खरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४२॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्म —

दीहाडं मंसुरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४३॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्म —

दीहाडं वत्थिरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्म —

दीहाडं चक्खुरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

दत्ते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा आर्धसावेज्ज वा
पधंमावेज्ज वा, आधसावेतं वा पधंमावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

दत्ते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा, उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

दत्ते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

❀

❀

❀

जा णिगंथी णिगंथस्स —

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
मंवाहावेज्ज वा पलिमहावेज्ज वा
मंवाहावेतं वा पलिमहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा तेन्लेण वा घएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा भिल्लिगावेज्ज वा
मक्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा लोद्धेण वा कक्केण वा
उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा
उल्लोलावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो सीओदगवियडेण वा
उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा पधोयावेज्ज वा
उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

दीहाइं उत्तरोट्ठाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा मंठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा मंठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

दीहाइं अच्छिपत्ताइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा सठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा सठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥

❀

❀

❀

जा णिगंथी णिगंथस्स —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
मवाहावेज्ज वा पलिमहावेज्ज वा
मवाहावेतं वा पलिमहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥

जा णिगंथी णिगंथस्स —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
तेल्लेण वा वएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा
भिल्लिगावेज्ज वा, मक्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५९॥

❀

❀

❀

जा णिगंथी णिगंथस्स —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा
उल्लोलावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

जा णिग्गथी णिग्गंथस्स —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
मीओदगवियडेण वा उमिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथम्म —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
फ़मावेज्ज वा रयावेज्ज वा
फ़मावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६२॥

❀

❀

❀

जा णिग्गथी णिग्गंथस्स —

दीहाइं भुमगरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा सठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा सठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६३॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

दीहाइं पासरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा सठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा सठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६४॥

जा णिग्गंथी णिग्गथस्स —

अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा नहमलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६५॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

कायाओ सेयं वा जल्लं वा पक्कं वा मल्लं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥

जा णिग्गंथी णिग्गंथस्स —

गामाणुगामं दुइज्जमाणे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीसदुवारियं कारावेइ, कारावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥

आमज्जण सक्कत् पुन पुन प्रमार्जनं ।

जा समणि संजयाणं, गिहिणो अहवा वि अण्णतित्थीणं ।

पादप्पमज्जणमादी, कारेज्जा आणमादीणि ॥५६१८॥

आदिमहातो सत्राधनादिमुत्ता पच, कायमुत्ता छ, वणमुत्ता छ, गडमुत्ता छ, पालुकिमिमुत्त, णहसिहा रोमन्तो-ममुत्त च एते तिण्णि, दत्तमुत्ता तिण्णि, उत्तरोट्ट [णासिगा] मुत्त च, अच्छिपत्तामज्जणमुत्ता तिण्णि (छ) भमुहमुत्त, सेयमुत्त, अच्छिमलातिमुत्त, सीसदुवारियमुत्त च । एते (एग) चत्तालीस मुत्ता ^१ ततिओइसगगणेण भाणियव्वा । तत्थ सय करण, इह पुण णिग्गधीण समणस्स अण्णतित्थिएण गारत्थिएण कारवेति त्ति विसेसो ॥५६१८॥

इम अधिकयमुत्ते भण्णाति -

समणाण संजतीहिं, अस्संजतएहि तह गिहत्थेहिं ।

गुरुगा गुरुगा लहुगा, तत्थ वि आणादिणो दोसा ॥५६१९॥

सज्जतो जति समणस्स पायप्पमज्जणादी करेति तो चउगुरुगा, असज्जतो जति गिहत्थीओ जति करेति तत्थ वि चउगुरुगा, गिहत्थपुरिसा जति करेति तो चउलहुगा, आणादिणो य दोसा भवति ॥५६१९॥

मिच्छते उड्डाहो, विराहणा फासभावसंबंधो ।

पडिगमणादी दोसा, भुत्ताभुत्ते य णायव्वा ॥५६२०॥

इत्थियाहिं कीरत पासित्ता कोइ मिच्छत गच्छेज्जा, एते कावडिय त्ति काउ । सज्जमविराहणा य । इत्थिफासे मोहोदयो परोप्परओ वा प्पासेण भावमबधो हवेज्जा, ताहे पडिगमण अण्णतित्थियादि दोसा । अहवा - फासतो जो भुत्तभोगी मो पुव्वरयादि सभरिज्जा । अहवा - चित्तिज्ज एरेसो मम भोइयाए फासो, एरिसी वा मम भोइया आसि । भुत्तभोइस्स इत्थिफासेण कोउण्णदि विभासा ॥५६२०॥

दीहं च णीससेज्जा, पुच्छा किं एरिसेण कहिएणं ।

मम भोइयाए मरिसी, सा वा चलणे वदे एवं ॥५६२१॥

सो वा सज्जो मज्जतीए पमज्जमाणीए दीह णीससिज्जा ।

ताहे सा पुच्छति - किमेय दीह ते नोससिय ?

सो भण्णाति - किं एरिसेण कहिएण त्ति ? निब्बधे कहेइ, "मम भोइयाए सरिसी तुम त्ति ।" सा वा चलणे पमज्जती दीह णीससेज्जा । पुच्छा कहण च एव चेव । एते सज्जतीहिं दोसा ॥५६२१॥

एते चेव य दोसा, अस्संजतियाहि पच्छकम्मं च ।

आतपरमोहुदीरण, बाउस तह सुत्तपरिहाणी ॥५६२२॥

गिहत्थीसु अतिरित्तदोसा - पच्छ कम्म हत्थे सीतोदकेण पक्खालेज्जा, पादामज्जणादीहिं य उज्जलवेसस्स अप्पणो मोहो उदीज्जेज्जा, सोभामि, [वा] ग्रह को मे एरिस ण कामेति त्ति गव्वो हवेज्ज, त वा उज्जलवेस दट्ठु अण्णोसि इत्थियाण मोहो उदिज्जेज्ज, सरीरबाउसत्त च कत्त भवति, जाव त्ति करेति ताव सुत्तत्थपलियथो भवेज्जा ॥५६२२॥

१ तृतीयोद्देशके तु १६ सख्यकसूत्रादारम्य ६६ सख्यकसूत्रपर्यन्त ५३ सख्याकानि सूत्राणि भवन्ति ।

मपातिमादिघातो, विवज्जओ चैव लोगपरिवाओ ।

गिहिएहि पच्छकम्मं, तम्हा समणेहि कायच्चं ॥५६२३॥

पमज्जमाणी सपातिमे अभिघाणज्जा अजयत्तणेग । विवज्जतो” ति साधुणा विभूमापग्विज्जिएण होयव्व, भणिय च “विभूमा इत्थिसग्गो” सिलागो, एयस्स विवरीयकरण विवज्जतो भवति । लोग-परिवादो ति, जारिस् सेवेमग्गण्ण एरिसेण अनिवृत्तेन भवितव्य । एवमादि स्त्थीसु दोसा । गिहत्थियुरिसेसु वि इत्थिफासादिया मोत्तु एते चैव दोसा पच्छकम्म च ॥५६२३॥

इमे य दोसा -

अयते पप्फोडेते, पाणा उप्पीलणं च सपादी ।

अतिपेत्तल्लणम्मि आता, फोडण खय अट्ठिभगादी ॥५६२४॥

मज्जओ अजयणाए पप्फोडतो पाण अभिहणेज्ज, बट्ठण वा दवेण धोवनो पाणे उप्पिलावेज्ज, खिल्लरव्वे वा सपातिमा पडेज्ज । एस सजमविरावणा ।

आयविरावणा इमा - तेण गिहिणा अतीव पेल्लिओ पादो ताहे मयी विकरेज्ज, फोडण नि गित्थरभल्लेण णहादिणा वा खय करे ज, अट्ठि वा भजेज्ज ॥५६२४॥

एते चैव य दोसा, अस्संजतियाहि पच्छकम्मं च ।

गिहिएहि पच्छकम्मं, कुच्छा तम्हा तु समणेहि ॥५६२५॥

गतार्था । किं चि विसेसो - पुव्वद्वेण गिहत्थी भणिता पच्छद्वेण गिहत्था । दो वि पाए पप्फोडेनो कुच्छ करेज्ज, कुच्छतो य पच्छाकम्मसभवो । जम्हा एते दोसा तम्हा समणाण समणेहि कायच्च, समणीण समणीहि कायच्च, णा गिहत्था अण्णतित्तिया वा छुदेयव्व ॥५६२५॥

वित्तियपदमणप्पज्जे, अट्ठाणुच्चाते अप्पणा उ करे ।

मज्जणमादी तु पदे, जयणाए समायरे भिक्खू ॥५६२६॥

अणप्पज्जो कारवेज्जा, अणप्पज्जस्स वा कारविज्जति, अट्ठाणे पडिवण्णो वा अतीव उच्चाओ पमज्जणादिपदे अप्पणो चैव जयणाए करेज्ज, अप्पणो असतो सतेहि कारवेज्जा ॥५६२६॥

असती य सजयाणं, पच्छाकडमादिएहि कारेज्जा ।

गिहि-अण्णतित्तिएहि, गिहत्थि-परतित्तित्तिविहाहि ॥५६२७॥

असति सजयाण पच्छाकडेहि कारवेति । तस्मा साभिग्गहेहि, ततो गिरभिग्गहेहि । ततो अहाभट्ठणहि । ततो णियल्लएहि मिच्छविट्ठीहि । ततो अभिग्गहियमिच्छाविट्ठीहि । ततो अण्णतित्तिएहि मिच्छादिट्ठिमादिएहि । पुव्व असोयवादीहि, पच्छा सोयवादीहि । ततो पच्छा “गिहत्थिपरतित्तित्तिविहाहि” ति । ततो गिहत्थीहि णालबद्धाहि णालबद्धाहि, तिविवाहि थेरमज्जमतस्सीहि, एव परतित्तियणीहि वि सजतीहि वि एव चैव । ॥५६२७॥

एसो चैव अत्यो वित्थरतो भण्णनि, ततो पच्छा “गिहत्थिपरतित्तित्तिविहाहि” ति, गिहत्थी दुविहा - णालबद्धा णालबद्धा य ।

ततो इमाहि गिह्त्थीहि णालवद्धाहि -

माता भगिणी धूया, अज्जियणीयल्लयाण असतीए ।

अणियल्लियथेरीहिं, मज्झ-तरुण-अण्णतिथीहिं ॥५६२८॥

माता भगिणी धूया अज्जिया णत्तुगी य । एतेमि अमतीते एयाहिं चेव अण्णतिथीणीहिं, एतेसि अमतीए अणालवद्धाहिं गिह्-थीहिं तिथिघाहिं कमेण थेर-मज्झम-तरुणीहिं, तत्रो एयाहिं चेव अण्णतिथीयाहिं तिथिघाहिं ॥५६२८॥

तिविहाण वि एयासिं, अमतीए संजतिमातिभगिणीहिं ।

अज्जियभगिणीणऽमती, तप्पच्छाऽविसेसतिविहाहिं ॥५६२९॥

अणालवद्धाण थेर-मज्झम-तरुणीण असति मज्जतीतो माना भगिणी धूया य अज्जियणत्तुअमादितातो करेति, ततो पच्छा अवमेनातो अणालवद्धातो तिथिघाओ थेर-मज्झम तरुणीओ करावेति करेति वा ॥५६२९॥

एयम्मि चेव अत्थे अण्णायरियकया इमा गाहा -

माता भगिणी धूया, अज्जिय णत्तीय सेसतिविहा उ ।

एतासि असतीए, तिथिहा वि करेति जयणाए ॥५६३०॥

एयासि असतीए त्ति मायभगिणिमादियाण असति सेसतिविहाउ त्ति अणालवद्धातो •सज्जतीतो तिथिघातो थेरमज्झमतर्गणीओ, जयणा जहा फाससबद्धणाणि ण भवति तहा कार्वेति करेति वा ॥५६३०॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए -

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा

आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए -

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

सवाहावेज्ज वा पलिमहावेज्ज वा

संवाहावेतं वा पलिमहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए -

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा

भिल्लिगावेज्ज वा, मक्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७०॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए -

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा

लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उवट्ठावेज्ज वा

उल्लोलावेतं वा उवट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७१॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए —

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगवियडेण वा उसिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७२॥

जे निग्गंथे णिग्गंथीए —

पादे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कूमावेज्ज वा रयावेज्ज वा
कूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७३॥

❀

❀

❀

जे निग्गंथे निग्गंथीए —

कार्यं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७४॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए —

कार्यं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
संवाहावेज्ज वा पल्लिमदावेज्ज वा
संवाहावेतं वा पल्लिमदावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७५॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए —

कार्यं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्ख्खावेज्ज वा
भिल्लिगावेज्ज वा मक्ख्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७६॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए —

कार्यं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्धेण वा कक्कणेण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा
उल्लोलावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७७॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए --

कार्यं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगवियडेण वा उमिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७८॥

जे निगन्थे निगन्थीए —

कार्यं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७६॥

❀

❀

❀

जे निगन्थे निगन्थीए —

कायमि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८०॥

जे निगन्थे निगन्थीए —

कार्यमि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
संवाहावेज्ज वा पलिमदावेज्ज वा
संवाहावेतं वा पलिमदावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८१॥

जे निगन्थे निगन्थीए —

कार्यसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा तेल्लेण वा वएण वा
वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा भिलिगावेज्ज वा
मक्खावेतं वा भिलिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८२॥

जे निगन्थे निगन्थीए —

कार्यमि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्धण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा
उल्लोलावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८३॥

जे निगन्थे निगन्थीए —

कायसि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
मीओदगवियडेण वा उमिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा, उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८४॥

जे निगन्थे निगन्थीए —

कार्यमि वणं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८५॥

❀

❀

❀

जे निगमथे निगमथीए —

कायसि गडं वा पिलगं वा अरइयं वा अमियं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेण तिकखेणं सत्थजाएणं
अच्छिदावेज्ज वा विच्छिदावेज्ज वा
अच्छिदावेतं वा विच्छिदावेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥८६॥

जे निगमथे निगमथीए —

कायमि गडं वा पिलगं वा अरइयं वा आसयं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
अन्नयरेण तिकखेणं सत्थजाएण अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता
पूयं वा सोणियं वा नीहरावेज्ज वा विमोहावेज्ज वा
नीहरावेतं वा विमोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८७॥

जे निगमथे निगमथीए —

कायमि गडं वा पिलगं वा अरइयं वा असियं वा भगंदलं वा,
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
अन्नयरेणं तिकखेणं सत्थजाएण अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता
पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विमोहावेत्ता मीओदगवियडेणं
उमिणोदगवियडेणं वा उच्छोलावेज्ज वा पयोयावेज्ज वा
उच्छोलावेतं वा पयोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८८॥

जे निगमथे निगमथीए —

कायसि गडं वा पिलगं वा अरइयं वा अमियं वा भगंदलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिकखेणं सत्थजाएणं
अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विमोहावेत्ता
मीओदगवियडेणं वा उमिणोदगवियडेणं वा उच्छोलावेत्ता पयोयावेत्ता
अन्नयरेणं आलेवणजाएणं आलिपावेज्ज वा विलिपावेज्ज वा
आलिपावेतं वा विलिपावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥८९॥

जे निगमथे निगमथीए —

कायमि गडं वा पिलगं वा अरइयं वा अमियं वा भगंदलं वा,
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरेणं तिकखेणं सत्थजाएणं
अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा सोणियं वा नीहरावेत्ता विमोहावेत्ता

मीश्रोदगवियडेण वा उमिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता
अन्नयरणं आलेवणजाएणं आलिपावेत्ता विलिपावेत्ता तेल्लेण वा
घएण वा वमाए वा णवणीएण वा अब्भंगावेज्ज वा मक्खावेज्ज वा
अब्भंगावेत्तं वा मक्खावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए —

कायमि गड वा पिल्लं वा अरइयं वा अमियं वा भगंदलं वा,
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अन्नयरणं तिकखेण मत्थजाएण
अच्छिदावेत्ता विच्छिदावेत्ता पूयं वा मोणियं वा नीहरावेत्ता विमोहावेत्ता
मीश्रोदगवियडेण वा उमिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेत्ता पधोयावेत्ता
अन्नयरणं आलेवणजाएण आलिपावेत्ता विलिपावेत्ता तेल्लेण वा
घएण वा वमाए वा णवणीएण वा अब्भंगावेत्ता मक्खावेत्ता
अन्नयरणं धूवणजाएणं धूवावेज्ज वा पधूवावेज्ज वा
धूवावेत्तं वा पधूवावेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए —

पालुक्किमिय वा कुच्छिक्किमिय वा अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
अंगुलीए निवेमाविय निवेमाविय नीहरावेड
नीहरावेत्तं वा मातिज्जति ॥सू०॥६२॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए —

दीहाओ नहमिहाओ अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा मंठवावेज्ज वा
कप्पावेत्तं वा मंठवावेत्तं वा मातिज्जति ॥सू०॥६३॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए —

दीहाडं जंघरोमाड अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा मंठवावेज्ज वा
कप्पावेत्तं वा मंठवावेत्तं वा मातिज्जति ॥सू०॥६४॥

जे निग्गंथे निग्गंथीए —

दीहाइं कक्खरोमाड अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा मंठवावेज्ज वा
कप्पावेत्तं वा मंठवावेत्तं वा मातिज्जति ॥सू०॥६५॥

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाइं मंसुरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा मंठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६६॥

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाइं वत्थिरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा मंठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा संठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६७॥

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाइं चक्खुरोमाइ अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा संठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा मंठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६८॥

*

*

*

जे निगंथे निगंथीए —

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा आघंसावेज्ज वा
पघमावेज्ज वा, आघमावेतं वा पघमावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६९॥

जे निगंथे निगंथीए —

दंते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा उच्छोलावेज्ज वा
पथोयावेज्ज वा, उच्छोलावेतं वा पथोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१००॥

जे निगंथे निगंथीए —

दते अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेतं वा रयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०१॥

*

*

*

जे निगंथे निगंथीए —

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेतं वा पमज्जावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०२॥

जे निगंथे निगंथीए —

उट्ठे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
मंवाहावेज्ज वा पल्लिमहावेज्ज वा
मंवाहावेतं वा पल्लिमहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१०३॥

जे निगंथे निगंथीए —

उट्टे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा तेल्लेण वा घएण वा
वमाए वा णरणीएण वा मक्खावेज्ज वा भिल्लिगावेज्ज वा
मक्खावेत वा भिल्लिगावेत वा मातिज्जति ॥सू०॥१०४॥

जे निगंथे निगंथीए —

उट्टे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा लोद्वेण वा कक्केण वा
उल्लोल्लोवेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा
उल्लोल्लोवेत वा उव्वट्ठावेत वा सातिज्जति ॥सू०॥१०५॥

जे निगंथे निगंथीए —

उट्टे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा अप्पणो सीओदगवियडेण वा
उमिणोटगवियडेण वा उच्छोल्लोवेज्ज वा पधोयावेज्ज वा
उच्छोल्लोवेत वा पधोयावेत वा सातिज्जति ॥सू०॥१०६॥

जे निगंथे निगंथीए —

उट्टे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा फूमावेज्ज वा
रयावेज्ज वा, फूमावेत वा रयावेत वा सातिज्जति ॥सू०॥१०७॥

जे निगंथे निगंथीस्स —

दीहाइं उत्तरोट्ठाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा मंठवावेज्ज वा
कप्पावेत वा मंठवावेत वा सातिज्जति ॥सू०॥१०८॥

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाइं अच्छिपत्ताइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा मंठवावेज्ज वा
कप्पावेत वा मंठवावेत वा सातिज्जति ॥सू०॥१०९॥

❀

❀

❀

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
आमज्जावेज्ज वा पमज्जावेज्ज वा
आमज्जावेत वा पमज्जावेत वा मातिज्जति ॥सू०॥११०॥

जे निगंथे णिगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
संवाहावेज्ज वा पल्लिमहावेज्ज वा
संवाहावेतं वा पल्लिमहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१११॥

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
तेल्लेण वा घएण वा वसाए वा णवणीएण वा मक्खावेज्ज वा
भिल्लिगावेज्ज वा, मक्खावेतं वा भिल्लिगावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११२॥
* * *

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
लोद्धेण वा कक्केण वा उल्लोलावेज्ज वा उव्वट्ठावेज्ज वा
उल्लोलावेतं वा उव्वट्ठावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११३॥

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीओदगविण्डेण वा उमिणोदगवियडेण वा उच्छोलावेज्ज वा
पधोयावेज्ज वा उच्छोलावेतं वा पधोयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११४॥

जे निगंथे निगंथीए —

अच्छीणि अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
फूमावेज्ज वा ग्यावेज्ज वा
फूमावेतं वा ग्यावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११५॥
* * *

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाइं भुमगरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा सठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा सठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११६॥

जे निगंथे निगंथीए —

दीहाइं पासरोमाइं अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
कप्पावेज्ज वा सठवावेज्ज वा
कप्पावेतं वा सठवावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११७॥

जे निगंथे निगंथीए -

अच्छिमलं वा कण्णमलं वा दंतमलं वा नहमलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेतं वा विमोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११८॥

जे निगंथे निगंथीए -

कायाओ मेयं वा जल्लं वा पंकं वा मलं वा
अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा नीहरावेज्ज वा विसोहावेज्ज वा
नीहरावेतं वा विसोहावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११९॥

जे निगंथे निगंथीए -

गामाणुगामं दूइज्जमाणे अण्णउत्थिएण वा गारत्थिएण वा
सीसदुवारियं कारावेइ, कारावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२०॥

मुत्ता एक्कच्चत्तालीस ततिओइ मगमेण जाव सीसदुवारेति मुत्ता । अत्थो पूर्ववत् ।

एसेव गमो णियमा, णिगंथीणं पि होइ गायज्जो ।

कारावण संजतेहिं, पुज्जे अवरम्मि य पदम्मि ॥५६३१॥

मज्जतो गारत्थिमादिहिं सज्जतीण पादपमज्जणाती कारवेति, उत्तरोदुमुत्ता ण मभवति, अलववणाए वा मभवति ॥५६२९॥

जे निगंथे निगंथस्स मरिमगस्म अंते ओवासे संते, ओवासे

न देइ, न देंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२१॥

णिगयमयो अतो वसहीए व्रतसजमयुगादीहिं तुल्लो सरिसो सतमिति विज्जमाण ओवासो नि -
अवगासो - स्थानमित्यथ । अदंतस्स चउलहू ।

इमो मरिसो -

ठितकप्पम्मि दमविहे, ठवणाकप्पे य दुविहमण्णतरे ।

उत्तरगुणकप्पम्मि य, जो सरिसकप्पो स सरिसो उ ॥५६३२॥

दसविहो ठियक्कप्पो इमो -

आचेलक्कुदेसिय, सेज्जायर गयपिंड किइक्कम्मे ।

वय जेइ पडिक्कमणे, भासं पज्जोसवणकप्पे ॥५६३३॥

इयस्स वि 'अचेलको धम्मो, इयस्स वि उदेसिय ण कप्पइ । एव सेज्जायरपिंडो रायपिंडो य ।

कितिकम्म दुविघ - अन्मुट्ठाण वदण च । त दुविह पि इमोवि जहारुह करेति, इमो वि जहारुह ।

अथवा - किं कम्म स्वर्वाहिं मज्जतीहिं अज्जदिविस्सयस्स वि सज्जनस्स कायव्व दो वि तुल्लमिच्छति ।

१ आचेलक्को, इत्यपि पाठ ।

इमस्स वि पच महव्वयाणि । नो पत्तम पचमहव्वयारूढो सो जिट्ठो सामाइए वा ठविओ । इमस्स वि इमस्स वि अइयारो होउ मा वा, उभयसम्प इमस्स वि इमस्स वि पडिक्कमति । उदुवद्धे मास मास एगत्थ अच्चति इमस्स वि इमस्स वि । चत्तारि मासा वासासु पज्जोमवणकप्पे ण िहरति इमस्स वि इमस्स वि । एसो दमविहो ठियकप्पो ॥५६३२॥

ठवणाकप्पो दुविहो – अकप्पठवणाकप्पो सेहठवणाकप्पो य –

आहार उवहि सेज्जा, अकप्पिएण तु जो ण गिण्हावे ।

ण य दिक्खेति अणट्ठा, अडयालीसं पि पडिक्कुट्ठे ॥५६३३॥

आहार-उवहि सेज्ज अकप्पिय ण गिण्हति । एम अकप्पठवणा । सेहठवणाकप्पो – अट्टारस पुरिसेसु, वीस इत्थीसु, दस ण्णुमेसु, एते अडयालीसं ण दिक्खेइ णिककारणे ॥५६३४॥

सो वि इमो 'उत्तरगुणकप्पो –

उग्गमविसुद्धिमादिसु, सीलंगेसुं तु समणधम्मसेसु ।

उत्तरगुणसरिमकप्पो, विसरिसधम्मो विसरिसो उ ॥५६३५॥

पिडम्स जा विसोही ॥ गाहा ॥

तस्य उग्गममुद्ध गेण्हति, आदिसद्दाओ उप्पायणएसणातो, समितीओ पच भावणा बारस, तवो दुविहो, पडिमा बारस, अभिग्गहा दव्वादिया, एते सीलगगहणेण महिया । अह्वा – सीलगगहणाओ अट्टारससीलगसहस्सा । एयम्मि ठिनकप्पे उत्तरगुणकप्पे वा जो सरिसकप्पो सो सरिसो भवति, जो पुण एतेसि ठाणाण अण्यरे वि ठाणे सीदति सो विसरिसधम्मो भवति ।

अह्वा – ठियकप्पे दसविहे, ठवणाकप्पे य दुविहे, णियमा सरिसो । उत्तरगुणे पुण केसु विसरिसो चेव, जहा तवपडिभग्गिह्हेसु ॥५६३५॥

अह्वा सरिसो इमो –

अण्णो वि य आएसो, संविग्गो अहव एस मंभोगी ।

दोसु वि य अर्धीगारो, कारणे इतरे वि सरिसाओ ॥५६३६॥

जो सविग्गो सो सव्वो चेव सरिसो, अह्वा – जो समोइओ सो सरिसो । अह्वा – कारण पण इयरे ति – पासत्थअसभोन्नि ते वि सरिसा भवन्ति ॥५६३६॥

जो तस्स सरिसगम्स तु, संतो वा से ण देति ओवासं ।

णिककारणम्मि लहुया, कारणे गुरुमा य आणादी ॥५६३७॥

सतमोवास निक्कारणियमागयस्स जइ ण देति तो चउलहु । सतमोवास कारणियमागयस्स जइ न देइ तो चउगुरु, आणादिया य दोसा ॥५६३७॥

इमे कारणा जेहि आगओ –

उदगागणितेणोमे, अट्ठाण गिलाण मावयपउट्ठे ।

एतेहिं कारणिओ, णिककारणिओ य विवरीओ ॥५६३८॥

अण्णगामे सगामे वा अण्णवमधीण साघु ठिता, तेमि मा वमती उदकेन प्लाविता अण्णिणा वा दइढा ते आगता, तेण-मावयवुद्धेहि वा उवइविज्जमाणा मण्णमागया, अट्ठाणपडिवाणा वा वज्जोमहज्जेमु वा गिलाणट्टमागयस्म एवमादिएहि पयोयणेहि जो आगतो सो कारणिओ । अतो विवरीओ दप्पता आगतो णिवकारणिओ ॥५६३८॥

वमहि गभावे वहि वमतस्म इमे दोमा -

कृयरदमममोमसीता, मावय-वाल-सतक्करणा वा ।

दोस वहु वमतो वहितो जे ते सन्निमेम उविति अदेते ॥५६३९॥

कुच्छियचरा कुचरा पारदा कादि तेहि उवइविज्जति, दमममादीहि वा खज्जति, उम्मादि वा जल सीन वा पडति, सीहादिमावएण मप्पादिमानेण वा खज्जइ, तक्करे त्ति चोरा तेहि वा मुस्सति हरिज्जति । एवमादि बहि वमतो बहुदोमा । जे तस्स साघुस्म वहि वसतो दोमा ते सव्वे उवेति त्ति - भवति अदेतस्म । ज तेपु पच्छित्त त सत्त्व अदेतस्स भवतीत्यथ ॥५६३९॥

कि चान्यत् -

एगट्ठा संभोगो, जा कारुवकारिता परोप्परओ ।

अविचित्राऽवच्छल्ला, हवन्ति एवं तु छेदो य ॥५६४०॥

अविचित्तभावा अदेतस्स अवच्छलता य भवति, संभोगवोच्छित्ती, साहम्मियवच्छल्लवोच्छित्ती वा, अट्ठा - पवयणवुच्छित्ती वा, तम्हा माहुणा साहुस्स दढमोहिण होयव्व ॥५६४०॥

जति एकक्रमाणजिमित्ता, निहिणो वि हु दीहसोहिया होति ।

जिणवयणबाहिभूया, धम्मं पुण्णं अयाणंता ॥५६४१॥ कत्था

किं पुण जगजीवसुहावहेण संभुंजिऊण समणेण ।

सकमा हु एकक्रमेक्के, नियगं पि व रक्खितो देहो ॥५६४२॥

आवत्तीण जहा अप्प ग्वखति तथा अण्णो वि आवत्तीए रक्खियव्वो ॥५६४२॥

एव खेते अखेते वा वसर्षाए वासो दातव । असत्थरणे खेते वि अन्नगच्छस्स अवगासो दातव्वो ।

जतो भण्णति -

अत्थि हु वसमग्गामा, कुदेस-णगरोवमा सुहविरारा ।

बहुगच्छुवग्गहकरा, सीमाछेदेण वसियव्वा ॥५६४३॥

अत्थि त्ति विज्जए वसमग्गामो णाम जत्थ उडुवद्धे आयरिओ अप्पवित्तिओ गणावच्छेओ अप्प-ततियो एस पच्च, एतेण पमाणेण जत्थ तिणिण गच्छा परिवसति एय वसमखेत ।

वासामु आयरिओ अप्पततितो, गणावच्छेतितो अप्पचउत्थो एते सत्त, एतेण पमाणेण जत्थ तिणिण गच्छा परिवसति एय वसमखेत । एते एकवोम, एय वसमखेत । कुच्छिओ देसो कुदेसो उवमिज्जति जो गामो कुदेस णगरोवमो, सो य सुहविरारो सुलभभत्तपाण वसधी वत्थ णिवद्व व नुप्रभृतिबहूत्व पुच्चभणि सत्थप्पमाणेण उवगाहे वट्ठति, ते य बहुगच्छा जति सम ठिया तो सत्थारग खेत ।

तत्थ सीमच्छेदेण वसियव्व, इमो सीमच्छेदे -

तुम्ह सचित्त, अम्ह अचित्त ।

अहवा—तुम्ह बाहिं, अम्ह अतो । तुम्ह इत्थी, अम्ह पुगिसा ।

अहवा—तुम्ह सगामो अम्ह वाताहडा कलेहिं वा बाडगसाहाहिं वा उब्भामगेहिं ।

अहवा—ज लभति त सव्व सामण ।

अहवा—जो ज लाहीं तस्स त । एव सीमच्छेदेण वनियव्व, णो अधिकरण कायव्व । परखेत्ते वि खेतियव्वेण सीमच्छेदो कायव्व । खित्तएण वि अमायाविणा भवियव्व ॥५६४३॥

भवे कारण ण देज्जा वि —

दित्तियपद पारंचिय, अमिव गिलाणे य उत्तमट्ठे य ।

अव्वोच्छित्तोवामे, असति णिक्कारणे जतणा ॥५६४४॥

पारंचिय असिवस्स इमा विभासा —

पारंचिओ ण दिज्ज व, दिज्जति व ण तस्सुवस्सए ठाओ ।

दुविहे असिवे बाहिं, ठितपडियरणं च ते वा वी ॥५६४५॥

पारंचिओ अण्णेसि अण्णो ठाण ण देज्जा, पारंचियस्स वा ठाओ न दिज्जति, असिवगहियस्स ण दिज्जति, अमिवगहियो वा वसहीए ठाण ण देज्ज, असिवगहियस्स अण्णवसहिंठियस्स वेयावच्च कायव्व, अण्णवसहिंठितो वा असिवगहियाग वेयावच्च करेइ । दुविह पुण असिव । चउभगे पच्छिमा जा दो भगा साहु अभट्ठा ॥५६४५॥

इयाणि ^१गिलाणउत्तिमट्ठाण विभासा —

अतरत्तमिगावण्णहि, मिगपरिसा वा तरंतो अण्णत्थ ।

एमेव उत्तिमट्ठे, ममाहि पाणादि उभयम्मि ॥५६४६॥

जेसि अतरतो अत्थि सो य आगतुगो मिगो अगीयत्थो होज्ज अपरिणामो वा ताहे सो अण्णवसहीए ठविज्जति अहवा — गिलाणो आगओ वत्थव्वाण य मिगपरिसा ताहे सो गिलाणो अण्णत्थ ठविज्जति, एव उत्तिमट्ठपडिवण्णे वि समाहिणमित पाणगादि दायव्व । तत्थ “उभयम्मि” त्ति जति आगतुगो मिगो तो अण्ण वसहीए ठविज्जति । अह वत्थव्वगपरिसा मिगा तो उत्तिमट्ठपडिवण्णे अण्णवसहीए ठविज्जति ॥५६४६॥

^२अव्वोच्छित्तिविभासा इमा —

छेदसुतणिसीहादी, अत्थो य गतो य छेदसुत्तादी ।

मंतनिमित्तोसहिपाहुडे, य गाहेति अण्णत्थ ॥५६४७॥

णिसीहमादियस्स छेदसुत्तस्स जो अत्थो आगतो मुत्त वा मोक्कलाणि वा पच्छित्तविहाणाणि मताणि वा जाणिपाहुड वा गाहतो अण्णत्थ वा गाहेति अण्णत्थ वा ते मिगा ठविज्जति, जत्थ वसहीए वा दिज्जति तत्थ मिगाण ओवासो ण दिज्जति ।

एव ता णिक्कारणे पारंचियादयाण ओवासो ण दिज्जते ॥५६४७॥

इमो अववादे अववादो - पुणो इम कारणमविविक्खण्ण असिवादिके पारंचियादीण वि ओवासो दिज्जति —

जा निगंथी निगंथीए मरिसियाए अंते ओवामे मंते ओवामे-

न देह न देतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२२॥

एमेव गमो णियमा, णिगंथीण पि होइ नायव्वो ।

पुव्वे अवरे य पदे, एगं पारचियं भोत्तुं ॥५६४८॥ कट्था

णवर - अववादपदे सजनीण पारचिय णत्थि ।

जे भिक्खू मालोहडं असणं वा पाण वा खाइमं वा साइमं वा

देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२३॥

मालोहडं पि तिविहं, उड्डमहो उभयओ य णायव्वं ।

एक्केक्कं पि य दुविहं जहण्णसुक्कोसयं चेव ॥५६४९॥

उड्डमालोहडं बिमूमादिसु, अहमालोहडं भूमिचरादिसु, उभयमालोहडं मचादिसु, ममध्येणित्थित, ग्रहवा - कुडिमादिसु भूमिद्वितो अघोसिरो ज कट्ठति । अगगतलेहि ठाउ ज उत्तारेइ त जहण । पीढमादिसु ज आराहु उत्तारेइ त सब्व उक्कोस ॥५६४९॥

भिक्खू जहण्णयम्मी, गेरुत्त उक्कोमयम्मि नायव्वो ।

अहिदमण मालपडणे, एवमादी नहिं दोसा ॥५६५०॥

मिक्कताओ उआरिउकामा साहुणा पडिसिद्धा तच्चन्नियट्ठा गिण्हइ अट्ठिण डक्का मया । मालाओ उआरिउकामा माहुणा पडिसिद्धा परिव्वायगट्ठा उत्तारेती पडिया, जतलीलेण पोट्टु काडिय मया ॥५६५०॥

इमे उक्कोसे उदाहरणा -

आमंद पीढ मंचग, जंतोदुक्खलपडंत उभयवहो ।

दोच्छेय-पदोमादी, उड्डाहमणा णिवातो य ॥५६५१॥

सेस पिडणिज्जुत्ति-अणुमारेण भाणियव्व ।

डमा सोही -

मुत्तणिवातो उक्कोमयम्मि तं खंधमादिसु हवेज्जा ।

एतेमामण्णतरं, तं सेवंतम्मि आणादी ॥५६५२॥

उक्कोमे चउलहु, जहण्णे मामलहु, सेस कठ ।

डम वितियपद -

अमिवे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।

अद्धाणरोहए वा, जयणागहणं तु गीयत्थे ॥५६५३॥

अणोगसो पतत्था । णवर-गीयत्थो पणमपरिहाणीए जयणाग गेण्हइ ॥५६५३॥

जे भिक्खू कोट्टियाउत्तं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा

उक्कुज्जिय निक्कुज्जिय देज्जमाणं पडिग्गाहेइ

पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२४॥

पुनर्मप्यमाणा हीणाधिया वा विक्खल्लमती कोट्टिआ भवति, कलिजो णाम वममयो कडवल्लो सट्ठो वि भणानि । अण्णे भणानि — उट्ठियाउरग्गि हुनिकरण उक्कज्जिय, उट्ठिए तिरियहत्तकरण भवकुज्जिय, उट्ठिय ति — पेडियमादिमु अरुमिउ आगारेति । अथवा — काय उच्च करेज्जा उक्कज्जियड्डायन तद्धद गुण्हाति, काय उट्ठ कृत्वा गुण्हाति — उण्णमिय इत्यथ ।

कोट्टियमादीएमुं, उमओ मालोहडं तु णायव्वं ।

ते चेव तत्थ दोमा, तं चेव य होति वितियपयं ॥५६५४॥

एव उभयमालोहडं दमिय ड्ढ, ते चेव दामा वितियपय च ।

ज भिक्खु माट्ठिओलित्तं असण वा पाण वा खाडमं वा साइम वा

उब्भिंदिय निब्भिंदिय टेज्जमाणं पडिग्गाहेड

पडिग्गाहेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥१२५॥

अथपाणियादिभायणे छूडं त पिहितं मरावगादिणां मट्ठियाए उल्लित्तं त उब्भिंदिय दत्तम्भं जो गेण्हइ तम्मं च उल्लु ।

पिहितुब्भिण्णकवाडे, फासुग अफासुगे य बोधव्वे ।

प्रफासु पुढविमादी, फासुगल्लगणादिदरए ॥५६५५॥

उब्भिण्ण दुविध — पिहुभिण्ण वा कवाडुभिण्ण च ।

पिहुभिण्ण दुविध-फासुय अफासुय च । ज त फासय त अचिा वा मीस वा । अफासुय पुढविमादि-छमु काएसु जहासभव भाणियव्व । ज फासुअ ल्लगणेण अहवा — वत्थेण चम्मेण वा दहरिय । दहरपिहि-उब्भिण्णे मासलहु, नेमपिहुभिण्णेषु चउलहु, अण्णेषु चउयुक्क परित्तमीसेसु मासलहु अगतमीसेसु मासयुह, साट्ठणिमित्त उब्भिण्णे कयविकवत्तेसु अधिकरण कवाडपिहितुब्भिण्णे कुचियवेधे तालए वा आवत्तणपेडियाए वा तममादिविराधणा । मेस जहा पिडणिज्जुत्तीए ॥५६५५॥

एतेमामण्णतरं, पिहितुब्भिण्ण तु गेण्हती जो तु ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त-विराहणं पावे ॥५६५६॥ कत्था

अमिवे ओमोयरिए, रायदुड्ढे भए व गेलण्णे ।

अद्धाण रोहए वा, जयणा गहणं तु गोयत्थो ॥५६५७॥ पुक्कव

जे भिक्खु अमणं वा पाण वा खाडमं वा साइम वा पुढविपत्तिट्ठिय पडिग्गाहेति पडिग्गाहेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥१२६॥

जे भिक्खु असण वा पाणं वा खाडमं वा साइम वा आउपत्तिट्ठिय पडिग्गाहेति पडिग्गाहेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥१२७॥

जे भिक्खु असणं वा पाणं वा खाडमं वा साइम वा नेउपत्तिट्ठिय पडिग्गाहेति पडिग्गाहेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥१२८॥

जे भिक्खु अमणं वा पाणं वा खाइमं वा माउमं वा वणम्सत्तिकायपतिट्ठियं पडिग्गाहंति
पडिग्गाहंत वा मातिज्जति ॥५६५॥१२६॥

मच्चित्तमीसएसु, काएसु य होति दुविहनिक्खित्तं ।

अणंतर-परंपरे वि य, विभासियव्व जहा सुत्ते ॥५६५॥२॥

पुढवःदी कायः ते दुविधा - सच्चित्ता मीसा वा । सचित्तेसु अणतरणिक्खित्त परपरणिक्खित्त वा ।
मीससु वि अणतरणिक्खित्त परपरणिक्खित्त वा । पिडणिज्जुत्तिगाहामुत्ते जहा तहा सवित्थर भाणियव्व ।
आयाग्विनियसुयक्खधे वा जहा सत्तमे पिडेमणासुत्ते तहा भाणियव्व ॥५६५॥३॥

सुत्तणिवातो सच्चित्तऽणंतरे त तु गेण्हती जो उ ।

मो आणा अणवत्थं, मिच्छित्त-विराधणं पावे ॥५६५॥४॥

परित्तमचित्तेसु अणतरणिक्खित्ते वचलहु, एत्थ सुत्त णिवयति । सचित्तपरंपरे मासलहु, मीमअणतरे
मासलहु ५२२२ पणय, अणते एते चेत्त गुरुगा पच्छित्ता ॥५६५॥५॥

चोदगाह -

तत्थ भवे णणु एव, उक्खिप्पतम्मि तेमि आसासो ।

मज्जतिमिचित्ते घट्टण, थेरुवमाए ण तं जुत्तं ॥५६६॥०॥

पुढवादिक्कायाण उवग्गि ट्ठिय ज तम्मि उक्खिप्पने णणु नेमि आसामो भवति ?

शाचार्याह - तम्मि उक्खिप्पन जा मघट्टणा मा मज्जयगमित्त, ताण य अप्पमघयणाण सघट्टणाए
महती वेदणा भवति ॥५६॥०॥

अन्य थेरुवमा -

जरजज्जरो उ थेरो, तरुणेणं जमलपाणिमुद्धहो ।

जारिमघदण देहे, एगिंदियघट्टिते तह उ ॥५६६॥१॥

जहा जराजुणदेहे थेरो बलवता तरुणेण जमलपाणिणा मुद्धे आहते जारिम वेयण
वेयति, तता अरिक्कतर त मघट्टिग वेगण अणुह्वति, तम्हा ण जुत्त ज तुम भणमि ॥५६६॥२॥

इम विनियपद -

अमिवे ओसोयरिए, रायदुद्धे भए व गेल्लणे ।

अट्टाण रोहए वा, जयणा गहणं तु गीयन्थे ॥५६६॥३॥

प्रवत्त । गीय'या इमाए जयणाए गहण करति - पुव्व मीसे परपरट्ठित्ते गेण्हति, ततो मीसे
अणतरे तता सच्चित्ते परंपर, ततो सचित्ते अणतर, एव अणतकाए वि, एस परित्ताणनेसु कमो दरिसिओ
॥५६६॥४॥

गहणे पुण इमा जयणा -

पुव्व मीमपरंपर, मीमे तत्तो अणंतरे गहण ।

मच्चित्त परपरऽणंतरे य एमेव य अणते ॥५६६॥५॥

पुव्व परिस्ते मीसे परपरट्ठितो गेण्हति, ततो मीसअणतपरपर, ततो मचित्तपरितपरपर, ततो अणतमीसअणतर, ततो अणनसचित्तपरपर, ततो परित्तसचित्तअणतर, ततो अणनसचित्तअणतर आहारे भणिय ॥५६६३॥

आहारे जो उ गमो, णियमा सो चेव होइ उवहिम्मि ।

णायव्वो तु मतिमता, पुव्वे अवरम्मि य पदम्मि ॥५६६४॥ कठ्या

जे भिक्खु अच्चुसिण असण वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सुप्पेण वा विट्ठणेण वा तालियंटेण वा पत्तेण वा पत्तभगेण वा साहाए वा साहाभंगेण वा पेहुणेण वा पेहुणहत्थेण वा चेलेण वा चेलकण्णेण वा हत्थेण वा मुहेण वा फुमित्ता वीड्ढा आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेत वा सातिज्जति ॥सू०॥१३७॥

जे भिक्खु असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उसिणुसिणं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३१॥

जे भिक्खु असणादी, उमिणं णिव्ववियमंजयट्ठाए ।

विहुवणमाईएहि, पडिच्छए आणमादीणि ॥५६६५॥

“णिव्वाविय” ति उल्लवेऊण, सेस कथ्य ।

उसिणे धेप्पते इमे दोमा—

दायग-गाहगडाहो, परिमडणे काय-लेव-णासो य ।

डज्झति करोति पादस्म छड्डणे हाणि उड्डाहो ॥५६६६॥

परिसडते वा भूमीते छक्कायवहो, अच्चुसिणेण वा, आणस्स लेवो डज्झति, उसिणे दिज्जमाणे वा करे डज्झमाणो पाय त छड्डेज्ज, तम्मि भग्गे असति भायणस्स अप्पणो हाणी, बहु असणादि परिट्ठविय दट्ठ “वहि फोड” ति उड्डाहो । जणो वा पुच्छति — “कह डड्ढो” ? ति । सजयस्स भिक्खु देज्जमाणो जणे फुमते उड्डाहो ति ॥५६६६॥

इमो अववादो —

असिचे ओमोयरिए, रायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।

अट्ठाण रोहए वा, काले वा अतिच्छमाणम्मि ॥५६६७॥ पूववत्

काले अतिच्छमाणे ति जाव त परिक्रमेण सीतीभवति ताव आइच्चो उवत्थम गच्छति । मनो मूनादीहिं तुरिय सीयलिज्जति, ण, दोसो ॥५६६७॥

उसिणे पुण कारणे धेप्पते इमा जयणा —

णिण्हति णिमीतितु वा, सज्झाए महीय वा ठवेऊण ।

पत्तावंचगते वा, धोलणगहिते व जतणाए ॥५६६८॥

उववसिता पदसधिय जहा ण डञ्जति तथा गेण्हति । अहवा - मचगे मचिकाए वा मञ्जे भूमीए वा पाद ठवेत्ता गेण्हति । पत्तगबधगतो वा गेण्हति । अचुत्तुसिग च पादाट्टित घालेइ, मा लेवो डञ्जिहिति । एयाए जयणाए कएगे गेण्हतो अदासो ॥५६६८॥

जे भिक्खू उम्सेइमं वा मसेइमं वा चाउलोदगं वा वालोदगं वा तिलोदगं वा तुमोदगं वा जवोदगं वा आयामं वा सोवीरं वा अंवकंजियं वा सुद्धवियउं वा अहुणा धोयं अणंबिल अपरिणयं अवक्कंतजीवं अविद्धत्थं पडिग्गाहेइ पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३२॥

उस्मेतिममादीया, पाणा वुत्ता उ जत्तिया सुत्ते ।

तेसिं अण्णतरायं, गेण्हंते आणमादीणि ॥५६६९॥

उसिण सीतोदगे छुम्भति त उम्मइमपाणय । ज पुण उसिण चेव उवरि सीतोदगेण चेव मिचिय त मसेइम । अहवा-समेतिम, तिला उण्हपाणिण सण्णा जति सीतोदगा धोवनि तो समतिम नण्णति । चाउलाण धोवण चाउलोदग । अघुणा घेत अचिरकालघात । रमतो अणवीभूय । ज जीवेण विपमुक्क त वक्कत, ष वक्कत अवक्कत, मचेतन मिश्र वा इत्यथ । जमवण्णमज्जान त परिणय, न परिणय अपरिणय - स्वभाववर्णस्यमित्यर्थ । ज वण्णघरसफामेहिं सव्वेहिं ध्वस्त त विध्वस्त, स्पर्णगधा वा ध्वस्त विध्वस्त, ण विद्धत्थ अविद्धत्थ, सवथा स्वभावस्यमित्यर्थ । अहवा - एए एगट्ठिया । अपरिणय गेण्हनस्स चउलह, आणाइया य दोमा ॥५६६९॥

उम्सेइमस्स इम वक्खाण -

सीतोदगम्मि छुम्भति, दीवगमादी उसेइमं पिट्ठं ।

मंमेइमं पुण तिला, सिण्णा छुम्भति जत्थुदए ॥५६७०॥

मरहुद्विमए उम्मेइया दीवगा सीआदगे । छुम्भति । उम्मेइमे उदाहरण, जहा-पिट्ठ । अहवा - पिट्ठस्म उम्मेज्जमणस्म हेतुज पाणिय त उम्मेइम । पच्छद्व गताथम् ॥५६७०॥

पट्ठमुस्सेतिममुदयं, अक्कपकप्पं च होति केसिचि ।

तं तु ण जुज्जति जम्हा, उमिणं मीसं ति जा दडो ॥५६७१॥

ते दीवगादी उम्मेतिमा, एकस्मि पाणिण दोसु तिसु वा णिच्चलिज्जति तत्थ वितियततिज्जा य मव्वमि चेव अक्कप्पा, पट्ठम पाणिय न पि अक्कप्प चेव । केपि चि आयरियाण कप्प, त ण घडति ।

कम्हा ? जम्हा उमिणोदगमवि अणुवने डडे मीस भवति, त पुण कहि उस्सेतिमेसु छूडेसु अचित्त भविष्यतीत्यर्थ । ॥५६७॥

इमो चाउलोदे विही -

पदमं वितियं ततिय, चाउलउदगं तु होति सम्मिस्सं ।

तेण परं तु चउत्थे, सुत्तणिगातो इहं भणितो ॥५६७२॥

पट्ठम वितिय ततिय चाउलोदगा एत णियमा मिस्सा भवति, तेण पर चउत्थादि मचिन्ता । एत्थ सुत्तणिगाना चउलउदगमित्यर्थ । आदिन्नेसु तिसु वि मामनहु ।

अण्णे पुण - तति ए वा चाउलसोघणे सुत्तणिवायमिच्छति, जेण तत्थ बहुं आरिणयं, थोवं परिणयमिति ॥५६७२॥

जं उस्सेतिमादि मिस्सं तस्मिमो गहणविही -

कालेण पुण कप्पति, अंवरसं वण्णगंधपरिणामं ।

वण्णातिविगतलिगं, णज्जति बुक्कंतजीवं ति ॥५६७३॥

तं उस्सेतिमं चिरकालं अच्छंतं जया रसतो अंवरसं, वण्णतो विवण्णं, गंधाओ अण्णगंधं, कासतो चिक्खित्तं, एवं तं उदगं वण्णातिविगतलिगं दट्ठं णज्जति जहा विगयजीवं ति तहा वेप्पति ।

चोदगाह - "जेसि कुडं गमणादिकं जीवलिंगं ते णज्जति, जहा विगयजीवा ति । पुढवादी पुण अव्वत्तजीवलिंगे कहं गता; जहा विगतजीवं ?" ति ॥५६७३॥

आचार्याहि -

कामं खलु चेतणं, सव्वेसेगिदियाण अव्वत्तं ।

परिणामो पुण तेसि, वण्णादि इधणासज्ज ॥५६७४॥

पुव्वद्धं कंठं । पच्छद्धे इमो अत्थो-बहुमज्झत्थो विवण्णेण जहासंखं अपमज्झ चिरकालोवलक्खिता जहा वण्णादी तहा तेसि अव्वभिचारी अजीवते परिणामो लक्खिज्जति ॥५६७४॥

एमेव चाउलोदे, पढमे विति-ततिय तिणिण आएसा ।

तेण परं चिरधोतं, जहि सुत्तं मीसयं सेसं ॥५६७५॥

चाउलोदगे वि जे पढमवित्ता चाउलोदगा ते अहुणा धोता मीसा । "तेण परं चिर धोयं जहि सुत्तं" ति तेण परं अउत्थादि चाउलोदगं तं चिरधोयं पि सवित्तं, जहि सुत्तं णिवयति तस्याग्रहणमेव । जं पुण "मीसयं सेसं" ति तम्मि इमे तिणिण अणागमिगा आदेसा -

तत्थेगो भणति -- चाउला धोवित्ता जत्थ तं चाउलोदगं बुब्भति तत्थ जातो कण्णे फुसिताओ लग्गाओ ताओ ण जाव सुक्कति ताव तं मीसं, "तेण परं" ति - तामु सुक्कासु तं अचित्तं भवतीत्यर्थः । १ ।

अवरो भणति - चाउला जाव सिज्झति ताव त मीसं, तेण परं अचित्तं पूर्ववत् । २ ।

अवरो भणति - तम्मि चाउलोदगे जे बुब्भुआ ते जाव अच्छति ताव मीसं, तेण परं अचित्तं पूर्ववत् । ३ ।

आचार्याहि - "तेण परं चिरधोयं" ति एते अक्खरा पुणो चारिज्जति, जेण फुसिताओ सि(सी)यकाले चिरं पि अच्छति । गिम्हकाले लहुं सुसंति, चाउला वि लहुं चिरेण वा सिज्झति, बुब्भुआ वि चिरं नीवाए अच्छति, पवाए लहुं विणस्संति, "तेणं" ति तेण कारणेण एते अणादेसा । "परं" ति एतेसि आएसणं इमं वरं प्रधानं आगमितं आदेसंतरं - "जं जाणेज्ज चिराधोतं" सिलोगे । बहुप्पसणं च मतीए दंसणेण य अचित्तं जाणत्ता गेण्हति । जत्थ "वालधोवणं" ति आलावगो-चमरिवाला धोव्वति तक्कादीहि, पच्छा ते चमरा सुद्धोदगेण धोव्वति । तत्थजि पढमवित्तियततिया मीसा, जं च पच्छिम्मं तं सचित्तं, तत्थ सुत्तनिवातो । अहुवा वालधोवणं सुरा गालिज्जति जाए कंबलीए सा पच्छा उदएण धोवइ, तत्थ वि पढमाति धोवणा मीसा,

पच्छिमा सचित्ता, तस्मिन् मुत्तणिवातो। अह्वा - वालधोवण रलयारेकत्वात् वारागागदुगो, सो तक्कवियडादि-
भाविता धोव्वड तत्थ वि पढमादी मीमा, पच्छिमा सचित्ता, तस्मिन् मुत्तणिवातो। सव्वेसु मीम कालेण परिणय
मे भ्म ॥१६७५॥

इमं वितियपद -

अमिवे ओमोयरिए, रायदुडे भए व गेलण्णे ।

अद्वाण रोहए वा, जयणा गहणं तु गीयत्थे ॥१६७६॥ पूर्ववत्

जे भिक्खू अप्पणो आयरियत्ताए लक्खणाई वागरेइ

वागरेतं वा सातिज्जति ॥सु०॥१३३॥

जहा मे करपादेसु लेहा गिव्वत्तिता, चदव्वककुमादी दीमति सुसठाणे, सुपमाणता य देहस्म, तह
म अदस्स आयरिएण भवियव्व, जो एव वागरेइ तस्म चउलहु आणादिया य ।

ते लक्खणा इमे -

माणुम्माणपमाणं, लेहमत्तवपुअंगमंगाई ।

जे भिक्खू वागरेति, आयरियत्तादि आणादी ॥१६७७॥

माणस्स उम्माणस्स य इमा विभासा -

छुड्ढेति तो य दोणं, छुडो दोणीए जो तु पुण्णाए ।

सो माणजुतो पुरिसो, ओमाणे अद्भमारगुरू ॥१६७८॥

माण नाम पुरिसप्पमाणतो ईसिअतिरित्ता उट्टिया कीरइ सा पाणियस्स समणिवद्धा भरिज्जति,
पच्छा तत्थ पुरिसो पाक्खप्पति, जति द्रोणो पाणियस्स छुड्ढेति तो माणजुतो पुरिसो, अह्वा - पुरिस
छोड्ढण पच्छा पाणियस्स भरिज्जति तस्मिन् पुरिसे ओमित्ते जइ सा कुडी द्रोण पाणियस्स पडिच्छइ तो माणजुतो ।
उम्माणे ति जति तुलाण आरोविओ अद्भमार तुलति तो उम्माणजुतो भवति ॥१६७८॥

अद्भमतमंगुलुच्चो, ममुहाई वा ममुस्मितो णवओ ।

सो होति पमाणजुतो, संपुण्णंगो व जो होति ॥१६७९॥ कज्जा

लेहं ति अस्य व्याख्या -

मणिवधाओ पवत्ता, अगुडे जस्म परिगता लेहा ।

सा कुणति धणममिद्धं, लोगपहाण च आयरियं ॥१६८०॥ कज्जा

सत्त्वपुअंगमगाण इमा विभासा -

सत्त अदीणता खलु, वपुतेओ जस्म ऊ भवइ देहे ।

अंगा वा सुपड्डा, लक्खण सिरिदच्छमा इतरे ॥१६८१॥

सत्त्व प्रधान महीनीए वि आवदीण जो अदीणो भवति सो सत्त्वमनो । वपु णाम तयो सो जस्म
अत्यि देहो सो वपुमनो । अद्भमगा ताणि जस्म सुपत्तिममठाण णि, अगति ति उवगाणि ताणि वि जस्म

सुपङ्क्तसुसंठिताणि, अण्णाणि-य सिरिवच्छमादीणि लक्षणानि, “इयरे” ति वज्रणा ते य मसतिलगादी ।
अहवा - सह जाय लक्षण, पच्छा जाय वज्रण, ॥५६८१॥

अहवा भणेज्ज -

अमुगायरियसरिच्छाई लक्षणणं ण पासह महं ति ।

एरिसलक्षणजुत्तो, य होति अचिरेण आयरिओ ॥५६८२॥

अमुगस्स आयरियस्स जारिसा हत्थपादादिसु लक्षणं, जारिस पि वा देह, मम पि तारिस वेव ।
पच्छद कठ ॥५६८२॥

इमे दोसा -

गारवकारणखेत्ताइणो य सच्चमलिय च होज्जा हि ।

विवरीयं एति जदो, केति णिमित्ता ण सव्वे उ ॥५६८३॥

अह आयरिओ भविस्सामि ति गारवकारणे खित्तादिवित्तो भवेज्जा, सायवाहणो इव ।
अहवा - छउमत्थोवलक्खिमा लक्खणा सच्च वा हवेज्जा अलिता व होज्ज । पच्छद कठ । अहवा - इमो
आयरिओ होहिइ ति कोइ पडिणीमो जीविताओ ववरोविज्ज ॥५६८३॥

एयस्स इमो अववातो -

वित्तीयपदसणप्पज्जे, वागरे अविकोविते य अप्पज्जे ।

कज्जे अण्णपभावण, वियाणणट्ठा य जाणमवि ॥५६८४॥

पडिणीयपुच्छणे को, गुरु मे किं सो हं ति पेच्छ मे अंगं ।

गिहि-अण्णतित्थिपुट्ठे, व जुंगिते जो अणोत्तप्पे ॥५६८५॥

खित्तादिगो अणप्पज्जे सेहो अजाणंते अप्पणो लक्खणो पगासेज्ज । अप्पज्जे वा “कज्जे” ति कोइ
पडिणीतो पुच्छेज्जा - कतमो मे गुरु ?

ताहे जो आरोहपरिणाहजुत्तो सो भणति - किं तेण ? अह सो ।

पडिणीओ भणति - कहं णाय ?

साहू भणति - पिच्छ मे अग लक्खणजुत्त ।

“अण्णपभावण” ति अस्य व्याख्या - गिहिअण्णतित्थिएण वा पुच्छिय - को मे गुरु ? ति ।

आयरिओ जति सरीरजुगितो ताहे जो अणो साहू अणुत्तरदेहो अलज्जणिज्जो, आयमेसु य क्क्य-
गमो, एव सो अणो पमाविज्जति, अप्पणा वा पमावेति ॥५६८५॥

वियाणणट्ठाए ति अस्य व्याख्या -

अद्वितगणहरे वा, कालगते गुरुस्मि भणतऽहं जोग्गो ।

देहस्स सपद मे, आरोहादी पलोएह ॥५६८६॥

१ गा० ५६८४ डा० १ । २ गा० ५६८४ डा० २ । ३ गा० ५६८४ डा० ३ ।

अट्टविते गणधरे आयरिया कालगया । तस्य जे वसमा अण्ण अलक्खणजुत्त ठविकामा, ताहे सो लक्खणजुत्तो अण्णेहि भणावेति -

अप्पणो वा भणति - आयरियपदजोगो देहसपद मे पेच्छह । अह आयरियो वि अलक्खणजुत्त ठविकामो, तस्य वि एय चेव अप्पाण पगासेति - खमासमणो जारिसो सुत्ते भणिओ नारिस ठवेह, सरोरसपदाते आरोहादिजुत्तो ठवेयव्वो । एव 'जाणतो वि भणेज्जा ॥५६८६॥

जे भिक्खू गाएज्ज वा हसेज्ज वा वाएज्ज वा णच्चेज्ज वा अभिणवेज्ज वा
हयहेसियं हत्थिगुलगुलाइयं उक्कुट्टसीहनार्यं वा करेइ
करेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३४॥

सरकरण सरसचारो वा गेय, मुह विप्फालिय सविकारकहक्कह हसण, सखमादि भ्राओज्ज वा वाएज्ज, पाद-जघा-ऊर कडि उदर बाहु अगुलि-वदन-गयण भ्रमहादिविकारकरण नृत्य, पुक्कारकरण उक्किट्टसघयणसत्ति-खपन्नो रुट्ठो तुट्ठो वा भूमी अप्फालेत्ता सीहस्सेव गाय करेति, हयस्स सरिस गाय करेइ हयहेसिय । वाणरस्स सरिस किलिकिलित करेति, अण्ण वा गयगज्जिआदित्रीवरुत्त करेनस्स चउलहु आणादिया य दोसा ।

जे भिक्खू गाएज्जा, णच्चे वाएज्ज अभिणवेज्जा वा ।

उक्किट्टहेसियं वा, कुज्जा वग्गेज्ज वीणादी ॥५६८७॥

अहिण्णो परस्स सिक्खावणा, नृत्यविकार एव बलित डिडिकवत् जावतिग मुह विप्फालेत्ता गीयउक्कुट्टिमादिया करेति ॥५६८७॥

तेसु इमे दोसा -

पुच्चासयप्पकोवो, अभिणवस्रलं व अण्णगहणं वा ।

अस्संपुडणं च भवे, गायणउक्किट्टिमादीसु ॥५६८८॥

आमयो ति रोगो सो उवसतो पकुप्पति, अहिणव वा मूल उपपज्ज, "अण्णगहण" ति गलगस्स उभयो 'कण्णबुधेसु सरणीतो मतातो तासु वातमैभगहितासु य अणायत मुहजत हवज्ज, अहवा - अण्णगहण भवज्जिउ ति काउ रायादिणा चेप्पेज्जा, मुह वा अस्सपुड वातसिभदोसेण अच्छेज्जा ॥५६८८॥

एते चेव य दोसा, अस्संपुडणं मुहत्तु सेसेसु ।

अण्णतरइंदियस्स व, विराहणा कायमुड्डाहो ॥५६८९॥

सेसा जे णच्चणादिता पदा तेसु वि एते चेव दोसा । मुहस्सवि असपुडण एक्क भोत्तु अण्णतर वा हत्थपादादि सोतादि वा उप्फिडंतो लुसेज्जा, एवमाटिया आयविराहणा । गायणादिसु वा पाणजातिमुहप्यवेसे मविराहणा । णच्चणादिसु उप्फिडंतो पाणविराहण करेज्ज अभिहणेज्ज वा । एव कायविराहणा । एयासु आयसजमविराहणासु सट्ठानपच्छित्त, गेय णच्चणादिमु सविगारो अणिहुतो वा न जतो ति जणो भणेज्ज, उड्डाह वा करेज्जा ॥५६८९॥

वितियपदमणप्पज्जे, पसत्थजोगे य अतिसयप्पमत्ते ।

अट्ठाण वसण अभियोग बोहिए तेणमादिसु वा ॥५६९०॥

खित्तादिअणप्पज्जे सेहो वा अजाणतो गीतादि करेज्ज ॥५६९०॥

“पमत्थजोए” त्ति अस्य व्याख्या -

एम पमत्थो जोगो, मदप्पडिवद्धे वाए गाए वा ।

अण्णो वि य आएमो, धम्मरुढ पवत्तयतो उ ॥५६६१॥

कार्णट्टिया सत्पडिबद्धाए वसहीए तत्थ गेय करेति, आओज्ज वा वाएति, मा अण्णो अण्णसि मोहुम्भवण विसोत्ति हवेज्ज ।

अहवा - समोत्तरादिषु पुच्छगवायण करेतो गवव्वेण कज्जति ॥५६६१॥

“अतिमय पत्त” त्ति अस्य व्याख्या -

केवलवज्जेसु तु अतिमएसु हरिसेण सीहणायादी ।

उक्किरुद्ध मेलण विहे, पुव्वव्वसण व गीतादि ॥५६६२॥

वीतरागस्वान् न कराति, नेन केवलातिसउप्पत्ति वज्जेत्ता मेसेसु अवधिलभादिएस अतिसएसु उण्णसु हरिमिउ सीहणाय करेज्ज । अण्णत्थ वा ३पडिगियत्तेण स वेइयासु आरूढो सीहणाय करिज्जा । ४अद्धाणपडिवण्ण महल्लमत्थेण परोप्पर फिडित्ता मिलणट्ठा उक्किरुद्धसद् सकरिज्जा । “वसण” त्ति कस्म त्ति पुव्व गिट्ठिकाणि गीतात्ति आसि, त म पव्वनितोवि वमणाओ करेज्जा, रायादिअभिओगेण वा ॥५६६२॥

अहवा -

अभिओगे कविलज्जो, उज्जेणीए उ रोधसीसो तु ।

बोहियतेणे महुरा, खमएण मीहणादादी ॥५६६३॥

मगारअभिओगओ जहा कविलेण कय तहा करिज्ज । अहवा - जहा रोहसीसेण उज्जेणीए रायपुरोहियमुयाभिओगतो वय । बोहियतेणे जहा महुराए खमएण सीहणा दो कओ तहा करेज्ज ॥५६६३॥

जे भिक्खू मेरि-महाणि वा पडह-सदाणि वा मुरव-महाणि वा मुइंग-सदाणि वा
नंदि-महाणि वा भल्लरि-सदाणि वा वल्लरि-सदाणि वा
डमरुग-महाणि वा मड्डय-सदाणि वा सदुय-सदाणि वा पएम-सदाणि वा
भोलुड-महाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वितयाणि सदाणि
कण्णमोयपडियाए अभिमंधारेइ अभिमंधारेत वा सातिज्जति ॥सु०॥१३५॥

जे भिक्खू वीणा-सदाणि वा विवंचि-महाणि वा तुण-महाणि वा
बव्वीमग-महाणि वा वीणाडय-महाणि वा तुंववीणा-सदाणि वा
भोडय-सदाणि वा ढकुण-महाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वा
तयाणि सदाणि कण्णमोयपडियाए अभिमंधारेइ
अभिमंधारेत वा सातिज्जति ॥सु०॥१३६॥

१ गा० ५६६० । २ गा० ५६६० । ३ पडिगियत्तेण सावयाइसु आरूढा इत्यपि पाठ । ४ गा० ५६६० ।
५ कुक्कुडिय, इत्यपि पाठ । ६ गा० ५६६० ।

जे भिक्खू ताल-सदाणि वा फंसताल-सदाणि वा लिच्छिय-सदाणि वा
गोहिय-सदाणि वा मकरिय-सदाणि वा कच्छभि-सदाणि वा
महड-गदाणि वा सणालिया-सदाणि वा वलिया-सदाणि वा
अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वा भुसिराणि कण्णसोयपडियाए
अभिसंधारेड, अभिसंधारेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥१३७॥

जे भिक्खू संख-सदाणि वा दंस-सदाणि वा वेणु-सदाणि वा खरमुहि-सदाणि वा
परिलिम-सदाणि वा वेवा-सदाणि वा अन्नयराणि वा तहप्पगाराणि वा
भुसिराणि कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेड,
अभिसंधारेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥१३८॥

सख शग, वत्त शख, दीघाकृति स्वल्पा च सखिगा । खरमुखी काहला, तस्स मुहत्थाणे खरमुहान्तर
कट्टमय मुह कज्जति । पिरिपिरित्ता तन्नोणसलागाणो सु (सु) सिगाओ जमलाओ सपा (वा) तिज्जति । मुहमूले
गगमुह । मा सखागारेण वाडजमाणी जुगव निणि सहे पिरिपिरिनी करेति ।

अण्णे भणति — गुजापणवो मठाण भवति । भभा मायगाण भवति । मेरिआगाणसकृदुमुही दुडु भी ।
महत्तमाणा मुरजा । मेसा पमिद्धा ।

ततवितते घणभुमरे, तच्चिवरीते य बहुविहे सरे ।

महपडियाः पदमवि, अभिधारे आणमादीणि ॥५६६४॥

घालविणीयमादि तत वीणातिमग्गि बहुततीहि वितत । ग्रहवा-तनीहि तत, मुहमउदादि वितत ।
घण ञजललकुडा सुमिर वनदिया । तच्चिवरीया कसिग-कमालग-भल तालजल-वादिना, जीवरुतादयश्च
बहवो तच्चिवरीया ॥५६६४॥

वितियपदमण्णप्पज्जे, अभिधारऽविकोविते व अप्पज्जे ।

जाणंतं वा वि पुणो, कज्जेसु बहुप्पगारेसु ॥५६६५॥

कज्जेसु बहुप्पगारेसु नि जहा जे अभिवोवसमणपयुत्ता सखसदातिथा तेसि सवणट्ठाते अभिसंधारेज्जा
गमणाए वारवतीण जहा मेरिमट्टस ॥५६६५॥

जे भिक्खू वप्पाणि वा फलिहाण वा उप्फलाणि वा पल्ललाणि वा उज्झगाणि वा
निज्झराणि वा वावीणि वा पोक्खराणि वा दीहियाणि वा सराणि वा
सरपतियाणि वा सरसरपतियाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेड,
अभिसंधारेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥१३९॥

जे भिक्खू कच्छाणि वा गदणाणि वा नूमाणि वा वणाणि वा वणविदुग्गाणि वा
पव्वयाणि वा पव्वयविदुग्गाणि वा कण्णसोयपडियाए अभिसंधारेड,
अभिसंधारेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥१४०॥

જે ભિક્ષુ ગામાણિ વા નગરાણિ વા છેડાણિ વા કવ્વહાણિ વા મડંબાણિ વા
દોળમુહાણિ વા પટ્ટણાણિ વા આગરાણિ વા સંવાહાણિ વા
સન્નિવેસાણિ વા કણ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેડ,
અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૧॥

જે ભિક્ષુ ગામ-મહાણિ વા નગર-મહાણિ વા છેડ-મહાણિ વા કવ્વહ-મહાણિ વા
મડબ-મહાણિ વા દોળમુહ-મહાણિ વા પટ્ટણ-મહાણિ વા આગાર-મહાણિ વા
સંવાહ-મહાણિ વા સન્નિવેસ-મહાણિ વા કણ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેડ,
અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૨॥

જે ભિક્ષુ ગામ-વહાણિ વા નગર-વહાણિ વા છેડ-વહાણિ વા કવ્વહ-વહાણિ વા
મડંબ-વહાણિ વા દોળમુહ-વહાણિ વા પટ્ટણ-વહાણિ વા આગાર-વહાણિ વા
સંવાહ-વહાણિ વા સન્નિવેસ-વહાણિ વા કણ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેડ,
અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૩॥

જે ભિક્ષુ ગામ-પહાણિ વા નગર-પહાણિ વા છેડ-પહાણિ વા કવ્વહ-પહાણિ વા
મડંબ-પહાણિ વા દોળમુહ-પહાણિ વા પટ્ટણ-પહાણિ વા આગાર-પહાણિ વા
સંવાહ-પહાણિ વા સન્નિવેસ-પહાણિ વા કણ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેડ,
અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૪॥

જે ભિક્ષુ આમ-કરણાણિ વા હત્થિ-કરણાણિ વા ઉટ્ટ-કરણાણિ વા
ગોળ-કરણાણિ વા મહિસ-કરણાણિ વા સૂયર-કરણાણિ વા કણ્ણસોય-
પડિયાએ અભિસંધારેડ, અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૫॥

જે ભિક્ષુ આસ-જુદ્ધાણિ વા હત્થિ-જુદ્ધાણિ વા ઉટ્ટ-જુદ્ધાણિ વા ગોળ-જુદ્ધાણિ વા
મહિસ-જુદ્ધાણિ વા કણ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેડ,
અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૬॥

જે ભિક્ષુ ઉજ્જહિયદ્ધાણાણિ વા હય-જૂહિયદ્ધાણાણિ વા ગય-જૂહિયદ્ધાણાણિ વા
કણ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેડ, અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૭॥

જે ભિક્ષુ અભિસેય-દ્ધાણાણિ વા અક્ખાડય-દ્ધાણાણિ વા માણુમ્માણ-દ્ધાણાણિ વા
મહયા હય-નટ્ટ-ગીય-વાહય-તંતી તલ-તાલ-તુહિય-પહુપ્પવાહય-
દ્ધાણાણિ વા કણ્ણસોયપડિયાએ અભિસંધારેડ,
અભિસંધારેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૧૪૮॥

जे भिक्खु डिंवराणि वा डमराणि वा खाराणि वा वेराणि वा महाजुद्धाणि वा
महामंगामाणि वा कलहाणि वा बोलाणि वा कण्णसोयपडियाए
अभिसंधारेड, अभिसंधारेंतं वा सातिज्जति ॥५०॥१४६॥

जे भिक्खु विरूवरूवेसु महुरसवेसु इत्थीणि वा पुरिसाणि वा थेराणि वा
मज्झिमाणि वा डहराणि वा अलकियाणि वा सुअलकियाणि वा
गायताणि वा वायताणि वा नच्चंताणि वा हमंताणि वा रमंताणि वा
गोहंताणि वा विउल असण वा पाणं वा खाडमं वा साडमं वा
परिभायताणि वा परिभुजंताणि वा कण्णमोयपडियाए अभिसंधारेड,
अभिसंधारेतं वा सातिज्जति ॥५०॥१५०॥

जे भिक्खु इहलोइएसु वा रूवेसु, परलोइएसु वा रूवेसु, दिट्ठेसु वा रूवेसु, अदिट्ठेसु वा
रूवेसु, सुएसु वा रूवेसु, असुएसु वा रूवेसु, विन्नाएसु वा रूवेसु,
अविन्नाएसु वा रूवेसु सज्जइ रज्जइ गिज्झइ अज्झोववज्जइ सज्जतं
रज्जत गिज्झंन अज्झोववज्जतं वा सातिज्जति ॥५०॥१५१॥

॥ तं मेवमाणे आवज्जइ चाउम्मामियं परिहारट्ठाण उग्घाइय ॥

एते चोइममुत्ता जहा बारममे उद्देशगे भण्णिता तथा इह पि सत्तरसमे उद्देशगे भाणियव्वा ।

वप्पादी जा विह लोइयादि सदादि जो तु अभिघारे ।

तं चेव तत्थ दोसा, तं चेव य होति बितियपदं ॥५६६६॥

विमेषो तथ चक्खुदसणप्रतिज्ञया, इह पुण कण्णमवणपडियाए गच्छति, वप्पादिएसु ठाणेषु जे
सदा ते अभिघारेउ गच्छति ॥५६६६॥

॥ इति विमेष-णिमीहचुण्णीए सत्तरममो उद्देशो मम्मत्तो ॥

अष्टादश उद्देशकः

भणिग्रो सत्तरसगो । इदार्णि अट्टारसगो इमो भण्णति । तस्समो सबधो —

सदे पुण धारेउं, गच्छति तं पुण जलेण य थलेण ।

जलपगतं अट्टारे तं च अणट्ठा णिवारेति ॥५६६७॥

सखादिसदे अभिघारेंता गच्छन्तो जलेण वा गच्छन्ति थलेन वा गच्छन्ति । इह जलगमणेण
अभिगारो, अधवा — जलेण गमण अणट्ठाए ण गतव्व । एय अट्टारसमे णिवारेति । एस सबधो ॥५६६७॥

अणेण सबधेणागयस्स इम पढमभुत्त —

जे भिक्खू अणट्ठाए णावं दुरुहइ दुरुहंत वा सातिज्जति ॥सू०॥१॥

णो अट्ठाए, अणट्ठाः । दुरुहइ ति विनगइ ति आरुमति ति एगट्ठ । आणादिया दोसा चउलहु ।

बारसमे उद्देसे, नावासंताग्गिम्मि जे दोसा ।

ते चेव अणट्ठाए, अट्टारसमे निरवसेसा ॥५६६८॥

अणट्ठे दसेति —

अतो मणे किरिसिया, णावारुढेहिं वच्चइ कहं वा ।

अहवा णाणातिजदं, दुरुहणं होतअणट्ठाए ॥५६६९॥

केरिसि अन्मतर ति चक्खुदसणपडियाए आरुमति, गमणकुतूहलेण वा दुरुहति, अहवा — नाणाबि-
जदं दुरुहतस्स सेस सव्व अणट्ठा ॥५६६९॥

अववादेण आगाढे कारणे दुरुहेज्जा ।

थलपहेण सघट्टादिजलेण वा जइ इमे दोसा हवेज्ज —

बितियपद तेण सावय, भिक्खे वा कारणे व आगाढे ।

कज्जुवहिमगरवुज्झण, णावोदरा तं पि जयणाए ॥६०००॥

एस बारसमुद्देसेगे जहा, तहा भाणियव्वा । सुत्त दिट्ठ, कारणेण विलगियव्व ।

केरिस पुण णाव विलग्गन ? केरिस वा ण विलग्गति ?
अतो सुत्त भण्णति -

जे भिक्खु नावं किणइ किणावेइ, कीयं आहट्ठ देज्जमाणं दुरुहइ
दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खु नावं पामिच्चेइ पामिच्चावेइ, पामिच्चं आहट्ठ देज्जमाणं दुरुहइ
दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खु नावं परियट्ठेइ परियट्ठावेइ, परियट्ठं आहट्ठ देज्जमाणं दुरुहइ
दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

जे भिक्खु नावं अच्छेज्जं अनिसिट्ठं अभिहइ आहट्ठ देज्जमाणं दुरुहइ
दुरुहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५॥

जे अण्णणा कीणइ, अण्णेण वा कीणावेइ, किणत्त अणुमोदेति वा ङ्कु ।

पामिच्चेति पामिच्चावेति पामिच्चत्त अणुमोदेति ङ्कु । पामिच्च णाम उच्छिण्ण । जे णाव परियट्ठेति
३, ङ्कु । डहरियणावाए महल्ल णाव परिणावेति - परिवर्तयतात्यर्थ । महल्लाए वा डहर परावतयति ।

अणस्स वा बला अच्छेतु साहूण गेति ङ्कु । अणिसट्ठा पडिहारिया गहिता अण्णो कए कज्जे त
साधूण समप्पेति साधूण वा गति ङ्कु ।

एतेहि सुत्तपदेहि सव्वे उग्गम-उप्पादण-एसणादोसा य सूचिता ।

तेण णावणिज्जुत्ति भण्णइ -

नावा उग्गमउप्पायणेसणा संजोयणा पमाणे य ।

इंगालयूमकारण, अट्ठविहा णावणिज्जुत्ती ॥६००१॥

उग्गमदोसेसु जे चउलहू ते जहा सभव, णाव पडुच्च वा ।

उच्चत्तभत्तिए वा, दुविहा किणणा उ होति णावाए ।

हीणाहियणावाए, भंडगुरुए य पामिच्चे ॥६००२॥

साधुसट्ठाए उच्चताए नाव किणाति सब्बा आत्मीकगेतीत्यर्थ । अत्तोए ति - भाडएण गेण्ठति ।
अण्णणा से णावा हीणप्पमाणा अहियप्पमाणा वा । अहवा - भंडगुरु ति - ज तत्थ भंडभारो विज्जति त
गुरु साहू य णो खमिहितित्ति, ता एवमादिकज्जेहि णाव पामिच्चेति । अहवा - सा णावा स्वयमेव गुरुत्वात्
शीघ्रगामिनीत्यर्थ ॥६००२॥

दोण्ह वि उवट्ठियाए, जत्ताए हीण अहिय सिग्गट्ठा ।

णावापरिणामं पुण, परियट्ठियसाहु आयरिया ॥६००३॥

दो वणिगा जत्ताए णावाहि उवट्ठिता, तत्थ य एगस्स हीणा, एगस्स अहिया, तो परोप्पर णावा-
परिणाम करेति - नावा नाव परावर्तयतीत्यर्थ । अहवा - मदगामिनी शीघ्रगामिन्या परावर्तयति । एव
साध्वर्थमपि ॥६००३॥

एमेव सेसएसु वि, उप्पायण-एसणाए दोसेसुं ।

ज ज जुज्जति सुत्ते, विभासियव्वं दुच्चाए ॥६००४॥

कीयगडादीणावासुत्तेसु ज ज जुज्जति त त पिडणिज्जुत्तिए भाणियव्व-दुच्चाया बायालीसा, सोलस उग्गमदोसा, सोलस उप्पायणदोसा, दस एमणदोसा, एते मिलिया बाताला उग्गमउप्पायणसणा तिणि बाग गता ।

सजोमादियाण चउण्ह इमा विभासा ।

संजोए रणमादी, जले य णावाए होति माणं तु ।

सुहगमणित्तिगालं, छडीखोमादिसुं धूमो ॥६००५॥

साधुभट्टाए रणमादि किं चि कट्ट सजोएति, आसणमज्झरगमणा जलप्पमाण साधुप्पमाणो य हीणं सुत्तमधियप्पमाणेण वा होज्ज । सुहगमणि ति रागेण इगालसरिस चरणं करेति, णावागमणे छडी हवइ दुट्ठा वाहया वा नावाभएण सरीरसखोहो भवति । कपो, मुच्छा, सिरत्ती य । एवमादी दोसा चरण भूमिधणेण समं करेति ॥६००५॥

कारणे विलग्गियव्वं, अकारणे चउल्लह्मुण्येयव्वं ।

किं पुण कारणं होज्जा, असिवादि थलामती दुरुहे ॥६००६॥

भाणाइकारणेण य दुरुहियव्वं, निक्कारणे चउल्लह्, असिवाइकारणे वा गच्छवत्स ॥६००६॥

त नावातारिम चउव्विह-

नावामंतारपहो, चउव्विहो वण्णितो उ जो पुव्विं ।

णिज्जुत्तीए सुविहिय, सो चेव इहं पि णायव्वो ॥६००७॥

निज्जुत्तीपेठ इमस्सेव जह पेट्ठया आउक्कायाधिगारेण भाणिया तहा भाणियव्वा ॥६००७॥

तिरिओ य णुज्जाणे, समुद्गामी य चेव नावाए ।

चउल्लह्मुगा अंतगुरु, जोय मद्ध जा सपदं ॥६००८॥

तत्र इव ॥६००८॥

बीयपथ तेण मावय, भिक्खे वा कारणे व आगाढे ।

कज्जुवहिमगर बुज्झण, नावोदग तं पि जयणाए ॥६००९॥

बारसमे पूववत् ॥६००९॥

जे भिक्खु थलाओ नाव जले ओक्कसावेइ ओक्कसावेतं वा मातिज्जति ॥६०१०॥

थलस्थ जले करेति ।

जे भिक्खु जलाओ नावं थले उक्कसावेइ उक्कसावेतं वा सातिज्जति ॥६०११॥

जलस्थ थले करेति ।

जे भिक्खू पुण्णं णाव उस्सिंचइ उस्सिंचंत वा सातिज्जति ॥सू०॥८॥

जे भिक्खू सण्णं णावं उप्पिलावेइ उप्पिलावेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥९॥

“सण्ण” ति — कहमे खुत्ता, उप्पिलावेइ ति — ततो उक्खणति ।

गाहेइ जलाओ थलं, जो व थलाओ जल समोगाहे ।

सण्ण व उप्पिलावे, दोमा ने त च वितियपदं ॥६०१०॥

तोम ज बारममे भणिता ते भवति, वितियपदं च ज तत्थेन भणिय त चेव भाणियव्व ॥६०१०॥

जे भिक्खू उवद्विय णावं उत्तिगं वा उदग वा असिंचमाणि वा उवरुवर वा
कज्जलावेमाणि पेहाए हत्थेण वा पाएण वा असिपत्तेण वा
कुसपत्तेण वा मट्टियाए वा चेलेण वा पडिपिहेइ
पडिपिहंनं वा साडज्जति ॥सू०॥१०॥

जे भिक्खू पाडेणाविय कट्टु णावाण दुरुहइ दुरुहतं वा सातिज्जति ॥सू०॥११॥

जे भिक्खू उड्डुगामिणि वा नावं अहो गमिणि वा नावं दुरुहइ
दुरुहतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१२॥

जे भिक्खू जोयणवेलागामिणि वा अट्टजायणवेलागामिणि वा नाव दुरुहइ
दुरुहतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१३॥

जलनावा चलाए हीरति, दीहरज्जुए तडसि रुक्खे वः कालगे वा बट्ट वा मुत्तित्ता वाहेज्ज,
छुम्भमाणि वा वचेज्ज, उत्तिगेण वा भरित भरज्जमाणी वा जो उवतिचति, सबलपाणियस्स वा भरेति रित्त
वा, विमिती गच्छउ ति पाणियस्स भरेति, । तस्स चउलहु ।

उव्वद्वपवाहेती, बंधइ वुज्झइ य भरिय उस्सिचे ।

रित्त वा पूरेति, ते दोसा त च वितियपदं ॥६०११॥ कठ्या

जे भिक्खू नावं आकसइ आकसावेइ आकमावंत वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

जे भिक्खू नावं खेवेइ खेवावेइ खेवावंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जे भिक्खू णाव रज्जुणा वा कट्ठेण वा कड्डुइ, कड्डुंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

जे भिक्खू णावं अलिच्चेण वा पप्फिडएण वा वंमेण वा पलेण वा वाहेइ,
वाहेंत वा सातिज्जति ॥सू०॥१७॥

जे भिक्खू नावाओ उदगं भायणेण वा पडिग्गहणेण वा मत्तेण वा

नावाउस्सिंचणेण वा उस्सिंचइ उस्सिंचंत वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

णावाए उत्तिग जाव पिहित सातिज्जति ।

एतेसि मुत्ताण पदा सुत्तसिद्धा चेव तहावि केइपदे सुत्तफासिया फुमति -

नावाए खिवण वाहण, उस्मिंचण पिहण साहणं वा वि ।

जे भिक्खू कुज्जा ही, सो पावति आणमादीणि ॥६०१२॥

अण्णावट्ठितो जलट्ठितो तडट्ठितो वा णाव पराहुत्त खिवति, णावण्णवरणयणप्पगारेण णयण वाहण भण्णति । उत्तिगादिणावाए चिट्ठमुदग अण्णयणेण कव्वादिणा उस्मिचणएण उस्सिचइ । उत्तिगादिणा उदग पविममण इत्यादिणा पिहति । एवमप्पणा करेति, अण्णस्स वा कहेति, आणादि चउलहु च ॥६०१२॥

एतेसु अण्णेसु य सुत्तपदेसु इम वितियपद -

वितियपद तेण सावय, भिक्खे वा कारणे व आगाढे ।

कज्जोवहिमगरवुज्झण, णावोदग तं पि जयणाए ॥६०१३॥ पूर्ववत्

आकड्ढणमाकमण, उक्कमण पेल्लणं जञ्जो उदगं ।

उड्डमहतिरियकड्ढण, रज्जू कट्टम्मि वा घेत्तुं ॥६०१४॥

अप्पणो तेण आकड्ढणमागमण उदग तेण प्रेरण उक्कमण 'उड्ड' ति णदीए समुद्दे वा वेत्ता पाणियस्म प्रतिकूल उड्ड, 'अह' ति तस्सेव उदगस्म ओतोऽनुकूल अहो भण्णति, नो प्रतिकूल नो अनुकूल वितिरिच्छ निरिय भण्णति, एय उड्ड अह तिरिय वा रज्जुए कट्टम्मि वा घेतु कड्ढु ति ॥६०१४॥

तणुयमलितं आमत्थपत्तमरिमो पिहो हवति रु दो ।

वंसेण थाहि गम्मति, चलएण वलिज्जती णावा ॥६०१५॥

तणुतर दीह अलितानिगिती 'अलित', आमत्थो पिप्पलो तस्म पत्तस्स ररिमो रुदो पिहो भवति, वसो वेणू तस्स अवट्ठभेण प.दंति पेरित्ता णावा गच्छति जेग वाम दक्खिण वा वालिज्जति सो चलगो रण्ण पि भण्णति ॥६०१५॥

मूले रुंद अकण्णा, अंते तणुगा हवंति णायव्वा ।

दव्वी तणुगी लहुर्गा, दोणी वाहिज्जती तीए ॥६०१६॥

पुव्वद कठ । लहुगी जा दोणी सा तीग दव्वीग वाहिज्जति णावाउस्मिचणय च दुग (उस चलग) दव्वगादि वा भवति, उत्तिग णाम छिद्र त हत्थमादीनि पिहति ॥६०१६॥

सरतिमिगा वा विप्पिय, होति उ उसुमत्तिथा य तम्मिस्मा ।

मोयतिमाड दुमाणं, वातो छल्ली कुविदो उ ॥६०१७॥

अहवा - सरस्स छल्ली ईमिगि ति तस्सेव उवरि तस्स छल्ली सो य मुनो दब्भो वा, एते वि विप्पित ति कुट्टिया पुणो मट्टियाए सह कुट्टिज्जति एय उसुमट्टिया, कुसुमट्टिया वा, मोदती गुलबज्जणी, आदिसहाओ वड पिप्पल-आमत्थयमादियाण वक्को मट्टियाए सह कुट्टिज्जति सो कुट्टिविदो भण्णति, अहवा - चेलेण सट्ट मट्टिया कुट्टिया चेलमट्टिया भण्णति ।

णवमाईएहि त उत्तिग पिहेति जो तस्स चउलहु आणादिया य दोमा ॥६०१७॥

जे भिक्खु नावं उत्तिगेण उदगं आमवमाणं उवररिं कज्जलमाणं पलोय
हत्थेण वा पाएण वा आसत्थपत्तेण वा कुसपत्तेण वा मट्ठियाए वा
चेलकण्णेण वा पडिपेहेड पडिपेहेतं वा सातिज्जति ॥६०॥१६॥

उत्तिगेण णावाए उग्ग आमवति पेहे त्ति प्रक्ष्य उवररिं कज्जलमाणं त्ति भरिज्जमाणं पेक्खित्ता
परस्स दाएति आणादिया चउलहु च ।

उत्तिगो पुण खिड्डं, तेणासव उवरिण कज्जलण ।

चित्तिपदेण दुरूढो, णावाए मंडभूतो वा ॥६०॥१८॥

पुव्वद्ध गताथ । असिवादिगणादिकारणाणि दुरूढो णाव जहा भड निव्वावार तथा णिव्वावारभूतण
भविष्यव । सव्वसुत्तेसु जाणि [वा] पडिसिद्धाणि ताणि कारणाखुडो सव्वाणि सय करेज्ज वा कारवेज्ज वा,
ते तत्थ साधुणो णिव्वावार दट्ठु कोइ पडिणीओ जले पक्खिवेज्ज ॥६०॥१८॥

अहवा -

नावादोसे सव्वे, तारेयव्वा गुणेहि वा अधिओ ।

पवयणपभावओ वा, एगे पुण वेति णिग्गंथी ॥६०॥१९॥

एव तच्चतस्स णावाए सभवो हवेज्ज जहा तेमि माकट्टियदाराण णावाए दोसो त्ति मिण्णा सा
णावा ।

इयदुद्धराति गाढे, आवइवत्तो सबालवुडु उ ।

सहसा णिब्बुडमाणो, उद्धरियव्वो समत्थेण ॥

एस जिणाण आणा, एमुवदेसो उ गणधराण च ।

एस पइण्णा तस्स वि, ज उद्धरते दुविहगच्छ ॥

जो अतिसेसविसेसपण्णो तेण सव्वो नित्थारेयव्वो, अतिसेसअभात्ते सारीरबलसमत्थेण वा त सव्वे
णित्थारेयव्वो । अह सव्वे ण समकेति ताहे एककेवक हावतेण, जो पवयणपभावओ सो पुव्व तारेयव्वो ।

अण्णे पुण मणंति जहा - णिग्गंथी पुव्व तारेयव्वो ॥६०॥२०॥

इमा पुरिसेमु केवलेसु जयणा -

आयरिण अभिसेगे, भिक्खु खुडु तेहेव थेरे य ।

गहणं तेसिं इण्णमो, संजोगकमं तु वोच्छामि ॥६०॥२०॥

जइ समत्थो एते वेव सव्वे त्ति तारेउ तो सव्वे तारेति ।

अह ण सव्वकेति ताहे थेरेवजाअउरो ।

अह ण तरति ताहे थेरेखुडुगवज्जा तिणि ।

अह ण तरति ताहे आयरिय अभिसेगा दोणि ।

अह ण तरति ताहे आयरिय ॥६०॥२०॥

दो आयरिया होज्ज, दो वि नित्थारेतु ।

अह न तरङ्ग ताहे इम भण्णनि -

तरुणे निष्फण्ण परिवारे, सलद्धिए जे य होति अब्भासे ।

अभिसेगम्मी चउरों, सेमाण पच चेव गमा ॥६०२१॥

आयग्गिओ एगो तरुणो, एगो थेरो । जो तरुणो सो नित्यारेयव्वो ।

दोवि तरुण थेरा वा एक्को सुत्तत्ये निष्फण्णो, एक्को अनिष्फण्णो । जो निष्फण्णो सो नित्यारिज्जति ।

दोवि निष्फण्ण अनिष्फण्ण वा । एक्को सपरिवारो, एक्को अपरिवारो । जो सपरिवारो सो नित्यारिज्जति ।

दोवि सपरिवारो तो उक्कोमलदीतो जो भत्तवत्थसिस्सादिएहि सहितो सो नित्यारिज्जति । दोवि सलद्धिया वा तत्थ जो अब्भामतो सो नित्यारिज्जति, मा दूरत्थ । समीव ज त जाव जाहिंति ताव सो हडो । इयरो वि जाव पव्वेहिंति ताव हडो । दोण्ह वि चुक्को तम्हा जो आसण्णो सो तारेयव्वो ।

अभिसेगे पुण चउरो गमा भवति - तरुणो सपरिवारो सलद्धी आसण्णो य, जम्हा सो गियमा निष्फण्णो तम्हा तस्म निष्फण्णानिष्फण्ण इति न कर्तव्य ।

सेमाण भिक्खूये खुड्डाण जहा आयग्गिस्स तरुणादिया पच गमा तहा कायव्वा ।

अण्णे पच गमा एव करेति - तरुणे निष्फण्ण परिवारे सलद्धिए अब्भासे ।

अहवा पंच गमा - तरुणे निष्फण्ण परिवारे सलद्धीए अब्भासे थनवासी । जो थलविसयवासी न नित्यारेति, सो अतारो । जलविसयवासी पुण तारो भवति, ण सहसा जलस्स बीहेति ॥६०२१॥

इदाणि निम्माथीण पत्तेय भण्णनि -

पवत्तिणि अभिसेगपत्त थेरि तह भिक्खुणी य सुड्डी य ।

अभिमेगाए चउरो, जलथलवासीसु संजोगा ॥६०२२॥

जहा माहूण भणिय तहा साहुणीण वि भाणियव्व ॥६०२२॥ एम पत्तेयाण विधी ।

इमा मीसाण -

सव्वत्थ वि आय्थरिओ, आयरियाओ पवत्तिणी होति ।

तो अभिसेगपत्तो, मेसेसु इत्थिया पढमं ॥६०२३॥

दोसु वि वगेसु जुगव आरइपत्तेसु इमा जयण - जति समत्थो सव्वाणि वि तारेउ तो सव्वेतारेत्ति । अह अममत्थो ताहे एगडुगातिपरिहाणीए, जाहे दोण्ह वि अममत्थो ताहे सव्वे अक्खनु आयरिख पढम गित्यारेइ, ततो पवत्तिणी, ततो अभिसेग, मेसेसु इत्थिया पढम, ति भिक्खुणि पढम ततो भिक्खु, खुड्ढि ततो खुड्ड, थेरि ततो थेर । एत्थएपबहुत्तिता कायव्वा - सुणिपुणो हौक्कण लवेऊणत्तविहि बहुगुणवेट्ट (वड्ड) करेत्ता ।

भणिय च -

“बहुवित्थरमुस्सग्ग, बहुतरमववायवित्थर णाउ ।

जह जह सजमवुड्डी, तह जयसु णिज्जरा जह य” ॥

आयरियवज्जाण को परिवारो ? भण्णति - माया पिया पुत्तो भाया भगिणो सुण्हा धूया, अण्णे
अ सबधिणो मित्ता तदुवसमणिक्वता य ।

जे भिक्खू नावाओ नावागयस्स अमणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेत वा सातिज्जति ॥सू०॥२०॥

जे भिक्खू नावाओ जलगयस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खू नावाओ पकगयस्स अमणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

जे भिक्खू नावाओ थलगयस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा
पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२३॥

णावागयस्सेव दायगस्स हत्थातो पडिग्गाहेति तस्स चउलहु ।

अण्णेसु तिसु भगेसु भिक्खू णावागतो चेव, दायगो जन पक थलगतो । एतेसु चउरो भगा ।

अण्णेसु चउभगेसु भिक्खू जलगतो, दायगो णावा-जन पक थलगतो ।

अण्णेसु चउसु भिक्खू पकगओ, दायगो णावा-जल पक थलगओ ।

अण्णेसु चउसु भिक्खू थलगतो दायगो णावा जल-पक थलगतो ।

एते सव्वे सोलससु वि पत्तेय चउलहु । णावागते दायगे पडिसेहो, जेण सो सचित्तआउकाय-
परपरपत्तिद्वो जलपकथला सचित्ता मीसा वा, तो पडिसेहो ।

तत्थ कभ दरिसेइ -

नावजले पंकथले, संजोगा एत्थ होते णायव्वा ।

तत्थ गएण एक्को गमणागमणेण वित्तिओ उ ॥६०२४॥

एतेसु णाव-जल-पक-थलपदेसु ठितो भिक्खू दायगस्स सट्ठाण-परट्ठाणसजोगेण ठियस्स हत्थाओ गेण्हतस्स
हुगसजोगाभिलाव अमुचनेण सोलस भगा कायव्वा पूववत् ।

‘तत्थ गएण एक्को’ त्ति णावाक्खुओ णावागयस्स हत्थातो गेण्हति एस पढमभगो, णावागतो
जलगयस्स हत्थदायगस्स अच्छमाणस्स जलद्वियस्स हत्थातो गेण्हति, एव पकथलेसु वि गमणागमणेण तत्ति-
चउत्थ भगा, एव सेसभगा वि बारस उवउज्ज भाणियव्वा ॥६०२५॥

एत्तो एगतरण, संजोगेण तु जो उ पडिगाहे ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त निरायण पावे ॥६०२५॥

कत्था । सोलससो भगो थलगओ, थलगनस्स ममुदस्स अनरदीव मभवति, सा पुढवी सचित्ता
मीसा वा मसणिद्धा वा तेण पडिसिज्जति ॥६०२५॥

इम बितियपद -

अमिवे ओमोयरिए, रायदुङ्गे भण व गेलण्णे ।

अद्धान रोहए वा, जयणा गहणं तु गीयत्थे ॥६०२६॥

त्रयणा पणगपरिहाणी, मीमपरपरठितादि वा जयणा भाणिन्वा ।

जे भिक्खु वत्थं किणइ किणावेइ कीय आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेत वा सातिज्जमि ॥सू०॥२४॥

जे भिक्खु वत्थं पामिच्चेति, पामिच्चावेति पामिच्चमाहट्ठ दिज्जमाण
पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खु वत्थं परियट्ठेइ, परियट्ठावेइ, परियट्ठियमाहट्ठ दिज्जमाण
पडिग्गाहेति, पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खु वत्थं अच्चेज्जं अनिसिट्ठं अभिहडमाहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खु अतिरेग-वत्थं गणि उहिसिय गणिं समुद्धिमिय
तं गणिं अणापुच्छिय अणामतिय अणमणस्स वियरइ,
वियरंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खु अइरेगं वत्थं खुड्ढगस्स वा खुड्ढियाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा
अहत्थच्छिण्णस्स अपायच्छिण्णस्स अनासच्छिण्णस्स अकण्णच्छिण्णस्स
अणोड्ढच्छिण्णस्स सत्तस्स देइ, देतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खु अइरेगं वत्थं, खुड्ढगस्स वा खुड्ढियाए वा थेरगस्स वा थेरियाए वा
हत्थच्छिण्णस्स पायच्छिण्णस्स नासच्छिण्णस्स कण्णच्छिण्णस्स
ओड्ढच्छिण्णस्स असक्कस्स न देइ, न देत वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

जे भिक्खु वत्थं अणलं अथिरं अधुवं अधारणिज्ज धरेइ,
धरेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खु वत्थं अलं धिरं धुवं धारणिज्जं न धरेइ,
न धरेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खु वण्णमंतं वत्थं विवण्णं करेइ, करेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खु विवण्णं वत्थं वण्णमंतं करेइ, करेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

જે મિક્ત્વુ “નો નવણ મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ તેલ્લેણ વા ઘણ વા
નવણીણ વા વમાણ વા મક્કલેજ્જ વા મિલિંગેજ્જ વા
મક્કલેતં વા મિલિંગેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૩૫॥

જે મિક્ત્વુ “નો નવણ મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ લોદ્દેણ વા કક્કેણ વા
ચુળેણ વા વણેણ વા ઉલ્લોલેજ્જ વા ઉવ્વલેજ્જ વા
ઉલ્લોલેતં વા ઉવ્વલેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૩૬॥

જે મિક્ત્વુ “નો નવણ મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ સીઝોદગવિયડેણ વા
ઉસિણોદગવિયડેણ વા ઉચ્છોલેજ્જ વા પથોણ્જ્જ વા,
ઉચ્છોલેતં વા પથોણ્તં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૩૭॥

જે મિક્ત્વુ “નો નવણ મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ વહુદેવસિણ તેલ્લેણ વા
વણ વા નવણીણ વા વમાણ વા મક્કલેજ્જ વા મિલિંગેજ્જ વા
મક્કલેતં વા મિલિંગેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૩૮॥

જે મિક્ત્વુ “નો નવણ મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ વહુદેવસિણ લોદ્દેણ વા
કક્કેણ વા ચુળેણ વા વણેણ વા ઉલ્લોલેજ્જ વા ઉવ્વલેજ્જ વા
ઉલ્લોલેતં વા ઉવ્વલેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૩૯॥

જે મિક્ત્વુ “નો નવણ મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ વહુદેવસિણ મીઝોદગવિય-
ડેણ વા ઉસિણોદગવિયડેણ વા ઉચ્છોલેજ્જ વા પથોણ્જ્જ વા
ઉચ્છોલેતં વા પથોણ્તં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૪૦॥

જે મિક્ત્વુ “દુઝ્મિગંધે મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ તેલ્લેણ વા ઘણ વા
નવણીણ વા વમાણ વા મક્કલેજ્જ વા મિલિંગેજ્જ વા
મક્કલેતં વા મિલિંગેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૪૧॥

જે મિક્ત્વુ “દુઝ્મિગંધે મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ લોદ્દેણ વા કક્કેણ વા
ચુળેણ વા વણેણ વા ઉલ્લોલેજ્જ વા ઉવ્વલેજ્જ વા
ઉલ્લોલેતં વા ઉવ્વલેતં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૪૨॥

જે મિક્ત્વુ “દુઝ્મિગંધે મે વત્થે લદ્દે” ત્તિ કટ્ટુ મીઝોદગવિયડેણ વા
ઉસિણોદગવિયડેણ વા ઉચ્છોલેજ્જ વા પથોણ્જ્જ વા
ઉચ્છોલેતં વા પથોણ્તં વા સાતિજ્જતિ ॥સૂ.૦॥૪૩॥

जे भिक्खु “दुब्बिगंधे मे वत्थे लद्धे” त्ति कट्ठु बह्नुदेवमिण तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिल्लिगेज्ज वा मक्खेतं वा भिल्लिगेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४४॥

जे भिक्खु “दुब्बिगंधे मे वत्थं लद्धे” त्ति कट्ठु बह्नुदेवमिण लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोल्लेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोल्लेतं वा उव्वलेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४५॥

जे भिक्खु “दुब्बिगंधे मे वत्थे लद्धे” त्ति कट्ठु बह्नुदेवमिण मीआदग-
नियडेण वा उमिणोदगवियडेण वा उच्छोल्लेज्ज वा पधोएज्ज वा
उच्छोल्लेतं वा पधोएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४६॥

❀

❀

❀

जे भिक्खु “नो नवए मे सुब्बिगंधे वत्थे लद्धे” त्ति कट्ठु तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा भिल्लिगेज्ज वा मक्खेतं वा भिल्लिगेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४७॥

जे भिक्खु “नो नवए मे सुब्बिगंधे वत्थे लद्धे” त्ति कट्ठु लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोल्लेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उल्लोल्लेतं वा उव्वलेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४८॥

जे भिक्खु “नो नवए मे सुब्बिगंधे वत्थे लद्धे” त्ति कट्ठु
मीआदगवियडेण वा उमिणोदगवियडेण वा उच्छोल्लेज्ज वा
पधोएज्ज वा उच्छोल्लेतं वा पधोएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४९॥

जे भिक्खु “नो नवए मे सुब्बिगंधे वत्थे लद्धे” त्ति कट्ठु बह्नुदेवमिण
तेल्लेण वा घएण वा नवणीएण वा वसाए वा मक्खेज्ज वा
भिल्लिगेज्ज वा मक्खेतं वा भिल्लिगेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५०॥

जे भिक्खु “नो नवए मे सुब्बिगंधे वत्थे लद्धे” त्ति कट्ठु बह्नुदेवमिण
लोद्धेण वा कक्केण वा चुण्णेण वा वण्णेण वा उल्लोल्लेज्ज वा
उव्वलेज्ज वा उल्लोल्लेतं वा उव्वलेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५१॥

जे भिक्खु “नो नवए मे सुब्बिगंधे वत्थे लद्धे” त्ति कट्ठु बह्नुदेवमिण
मीआदगवियडेण वा उमिणोदगवियडेण वा उच्छोल्लेज्ज वा
पधोएज्ज वा उच्छोल्लेतं वा पधोएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५२॥

- जे भिक्खू अणतरहियाए पुढवीए दुब्बद्धे दुब्बद्धे अनिकंपे चलाचले
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५३॥
- जे भिक्खू समणिद्राए पुढवीए दुब्बद्धे दुब्बद्धे अनिकंपे चलाचले
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५४॥
- जे भिक्खू समरक्खाए पुढवीए दुब्बद्धे दुब्बद्धे अनिकंपे चलाचले
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेत वा पयावेत वा सातिज्जति ॥सू०॥५५॥
- जे भिक्खू मट्ठियारुडाए पुढवीए दुब्बद्धे दुब्बद्धे अनिकंपे चलाचले
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेतं वा पयावेत वा सातिज्जति ॥सू०॥५६॥
- जे भिक्खू चित्तमंताए पुढवीए दुब्बद्धे दुब्बद्धे अनिकंपे चलाचले
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेतं वा पयावेत वा सातिज्जति ॥सू०॥५७॥
- जे भिक्खू चित्तमंताए मिलाए दुब्बद्धे दुब्बद्धे अनिकंपे चलाचले
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेतं वा पयावेत वा सातिज्जति ॥सू०॥५८॥
- जे भिक्खू चित्तमंताए लेखूए दुब्बद्धे दुब्बद्धे अनिकंपे चलाचले
वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा,
आयावेतं वा पयावेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥५९॥
- जे भिक्खू कोलावासंमि वा दारुए जीवपड्डिए मअण्डे मपाणे मवीए महारिए
सअओस्से सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्ठिग-मवकडासंताणगसि
दुब्बद्धे दुब्बद्धे अनिकंपे चलाचले वत्थं आयावेज्ज वा
पयावेज्ज वा आयावेत वा पयावेत वा सातिज्जति ॥सू०॥६०॥
- जे भिक्खू धणंमि वा गिहेलुयंमि वा उमुयालमि वा भामवलंमि वा दुब्बद्धे
दुब्बद्धे अनिकंपे चलाचले वत्थं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा
आयावेतं वा पयावेत वा सातिज्जति ॥सू०॥६१॥

- जे भिक्खू कुलियंसि वा भित्तिमि वा सिल्लमि वा लेल्लमि वा अंतलिकख-
जायमि वा दुब्बद्वे दान्निस्सित्ते अनिकपे चलाचले वत्थं आयावेज्ज वा
पयावेज्ज वा आयावेतं वा पयावेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥६२॥
- जे भिक्खू खंधमि वा फलहंमि वा मच्चमि वा मडवंमि वा मालमि वा
पामायमि वा दुब्बधे दान्निस्सित्ते अनिकपे चलाचले वत्थ आयावेज्ज वा
पयावेज्ज वा आयावेतं वा पयावेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥६३॥
- जे भिक्खू वत्थातो पुढविकाय नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥६४॥
- जे भिक्खू वत्थाओ आउक्काय नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाण पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥६५॥
- जे भिक्खू वत्थातो तेउकायं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥६६॥
- जे भिक्खू वत्थातो कंडाणि वा मूलाणि वा पत्ताणि वा पुप्फाणि वा
फलाणि वा नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु देज्जमाण
पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥६७॥
- जे भिक्खू वत्थातो ओमहि-वीयाणि नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाण पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥६८॥
- जे भिक्खू वत्थातो तमपाणजाइं नीहरइ, नीहरावेइ, नीहरियं आहट्टु
देज्जमाणं पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥६९॥
- जे भिक्खू वत्थं कोरेइ, कोरावेइ, कोरियं आहट्टु
देज्जमाण पडिग्गाहेइ, पडिग्गाहेतं वा मातिज्जति ॥सू०॥७०॥
- जे भिक्खू गायगं वा अणायगं वा उवामगं वा अणुवामगं वा गामंतरंगि वा
गामपहंतरंगि वा वत्थं ओभामिय ओभामिय जायइ
जायतं वा मातिज्जति ॥सू०॥७१॥
- जे भिक्खू गायगं वा अणायगं वा उवामगं वा अणुवामगं वा परिमासज्झओ
उट्ठवेत्ता वत्थं ओभामिय ओभामिय जायइ
जायतं वा मातिज्जति ॥सू०॥७२॥
- जे भिक्खू वत्थनीमाए उडुबद्धं वमइ, वमंतं वा मातिज्जति ॥सू०॥७३॥

जे भिक्खू वत्थनीसाए वासावासं वसइ, वसंतं वा सातिज्जति ॥म्०॥७४॥

॥ तं सेवमाणे आवज्जइ चाउम्मासियं परिहारट्ठाण उग्घाइयं ॥

चोदसमे उद्देसे, पातम्मि उ जो गमो समक्खाओ ।

सो चैव निरवसेसो, वत्थम्मि वि होति अट्टारे ॥६०२७॥

मुत्ताणि ^१पणुवीस उच्चारयेय्वाणि जाव समत्तो उद्देसगो । एतेसि अत्थो चोदसमे, जहा चोदसमे पाद भणित तहा अट्टारममे वत्थ भाणियव्व ।

॥ इति विसेम-णिसीहचुण्णीए अट्टारसमो उद्देसओ समत्तो ॥

१ चतुर्विंशोद्देशकानुसारेण तु पञ्चत्वारिंशत्सूत्राणि भवन्ति ।

एकोनविंशतितम उद्देशकः

भणिआ अट्टारसमो । इदाणि एक्काणवासडमो भण्णति । तस्मिमो सबधो -

वत्थत्था वममाणो, जयणाजुत्तो वि होति तु पमत्तो ।

अन्नो वि जां पमाओ, पडिमिट्ठो एम एकूणे ॥६०२८॥

जो उदुवद्धे वामावाम वा वत्थट्ठा वमति, सो जति जयणाजुत्तो तहावि सो पमत्तो लब्धति ।
एव अट्टारसमस्स अतमुत्ते पमातो दिट्ठो । इहावि एगूणवीमईमस्स आदिमुत्ते पमाओ चेव पडिमिज्झति । एम
अट्टारसमाओ एगूणवीमईमस्स सबधो ॥६०२८॥

अहवा चिर वमंतो, मथवणेहंहि किणति त वत्थं ।

अक्कीत पि ण कप्पति, वियड किमु कीयमबंधो ॥६०२९॥

चिर ति वारिस्ततो चउरो मासे, मेम कठ ।

इम पढममुत्त -

जे भिक्खु वियडं किण्ड, किणावेइ, कीयं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ
पडिग्गाहेनं वा मातिज्जति ॥सू०॥१॥

कीय किणाविय अणुमोदितं च वियडं जमाहियं सुत्ते ।

एक्केक्कं त दुविहं, दव्वे भावे य णायव्वं ॥६०३०॥

अप्पणा विणति, अण्णेण वा किणावेइ साहुअट्ठा वा कीय परिभोगओ अणुजैणति, अण्ण वा
अणुमाण्ड, आणादिया दोसा चउलहु च । सो कीओ दुविधो - अप्पणा परेण च । एक्केक्को पुणो दुविहो - दव्वे
भावे य । जेष पूर्ववत् । परभावकीए मासलहु । ज अप्पणा विणति, एस उप्पायणा । ज परेण किणावेइ, एस
उग्गमो ॥६०३०॥

एएमामण्णतरं, वियड कातं तु जो पडिग्गाहे ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्तविराघणं पावे ॥६०३१॥

कठा । विडग्गहणे परिभोगो वा अकप्पमहण अकप्पपडिसेवा य सज्जमविराहणा य ।

जना भण्णति -

इहरह वि ता न कप्पइ, किमु वियडं कीतमादि अत्रिसुद्धं ।

असमितिऽशुत्ति गेही, उट्ठाह महव्वया आता ॥६०३२॥

इहरहा भकीत । किं पुण कीय ? , उगमदोसजुत सुट्ठुतर ण कप्पइ । वियडत्ते पचसु वि समितोसु भममिनां भवति, गुतीसु वि अणुतो, तम्मि लद्धसायस्स अररिच्चागो गेही, जणेण णाते उड्डाहो, पराधीणो वा महव्वए भजेअ ॥६०३२॥

कह ? उच्यते -

वियडत्तो छक्काए, विराहए भामती तु सावज्जं ।

अगडागणिउट्टएसु अ, पडणं वा तेसु वा धेप्पे ॥६०३३॥

पराहीणत्तणमो छक्काए विराहेज्ज, मोम वा भामेज्ज, अदत्त वा गेण्हेज्ज, मेहुण वा सेवेज्ज, त्तिण्णादिपरिगह वा करेज्ज । आयविराहणा इमा - अगडे त्ति कूवे पडेज्ज, पत्तिते वा डज्जिज्ज, उदरोग वा परेज्ज, तेग वा कसाएण वा णिककसति तो वा तहि धेप्पइ ॥६०३३॥

अहवा - कारणे पत्ते गेण्हेज्जा -

व्रितियपदं गेल्लणे, विज्जुवदेसे तहेव सिक्खाए ।

एतेहिं कारणेहिं, जयणाए कप्पती वेत्तु ॥६०३४॥

वज्जावएसेण गिलाणट्ठा धेप्पेज्ज, कस्सति कोति वाही तेणैव उवसमति त्ति ण दासो । गिलाणट्ठा वा वेज्जो आगितो, तस्मट्ठा वा धिप्पेज्ज, पक्कप वा सिक्खतो गृहण करेज्ज ॥६०३४॥

कह ? उच्यते -

मंभोडयमण्णमंभोइ याण अमतीते लिगमादीण ।

पक्कपं अहिज्जमाणो, सुद्धमति कीयमादीणि ॥६०३५॥

पक्कपो भिस्सियव्वा मुग्घो अरथतो वि त्थुक्कस्स पासे, अमति सगुरुस्स ताहे सगणे, सगणस्स वि असति ताह मभोतिताण मापासे सिक्खति । असति सभोतिताण ताहे अण्णसभोतियाण सगासे, तेसि पि असतीए लिगत्थादिथाण पासे पक्कप भविज्जति । तस्म य लिगस्स त वियडवसण हवेज्जा, सो अप्पणा चेव उप्पाएउ । अह सो उप्पाएउ सुत्तये ण तरति दाउ ताहे स साधु उप्पाएइ सुद्ध, जति सुद्ध ण लब्ध ताहे कोममादि गेण्हेज्जा ॥६०३५॥

जे भिक्खु वियडं पामिच्चेइ पामिच्चावेइ पामिच्चं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२॥

जे भिक्खु वियडं परियट्ठेति परियट्ठावेइ परियट्ठियं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेति,
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३॥

जे भिक्खु वियड अच्चेज्जं अणिमिद्ध अभिहडं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेइ,
पडिग्गाहेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥४॥

एतेसि सच्च पूर्ववत् जहा पिट्ठणज्जुत्तीए, पत्तेमु पच्छित्त चउलह ज च दुग्घियपडिग्गहणे पच्छित्त भवति, इह ।

एमेव तिविहकरणं, पामिच्च तह य परियट्ठे ।

अच्छिज्जे अणिमिट्ठे, तिविह करणं णवरि णत्थि ॥६०३६॥

तिविह करणं कृत कारितं अनुमोदिनं च, अच्छिज्जऽणिमिट्ठेमु तिविह करणं भवति, मेसं मच्च वितियपदं च पूर्ववत् ॥६०३६॥

जे भिक्खु गिलाणस्मऽट्ठाए परं तिण्हं दियडदत्तीणं पडिग्गाहेइ,

पडिग्गाहेनं वा मातिज्जति ॥सू०॥५॥

दत्तीए पमाणं पसती, तिण्हं पसतीणं परेण चउत्था पसती गिलाणकज्जे वि ण घेत्तवो, जो गेहति तस्मं चउलहु ।

जे भिक्खु गिलाणस्मा, परेण तिण्हं तु वियडदत्तीणं ।

गिण्हज्ज आदिएज्ज व, सो पावति आणमादीणि ॥६०३७॥

तिण्हं दत्तीणं परतो गहणे वि चउलहु । “आदिएज्ज” ति पिवनस्मं वि चउलहु ॥६०३७॥

तिण्हं दत्तीणं परतो गहणे आदियणं वा इमे दोमा -

अण्णच्चओ य गरहा, मददोसा गेहिवड्डुणं खिसा ।

तिण्हं परं गेहते, परेण तिण्हाइयंते य ॥६०३८॥

अण्णच्चओ ति जहा एस पव्वइओ होउ वियड गिण्हति आदियति वा तहा एस अण्णं पि करेति मेट्ठणादिं । “गरह” ति एस गूणं गियकुलजातितो ति । मददोसा—पीते पलवति वगइ वा । पुणो पुणो गहणे वा वियडे गेही वड्ढति । खिसा—धिरन्धु ते एरिसपव्वज्जाए ति ॥६०३८॥

दिट्ठं कारणगहणं, तस्स पमाणं तु तिणिं दत्तीओ ।

पातु व असागरिणं, सेहादि असंलवंतो य ॥६०३९॥

तिणिं दत्तीओ तिणिं पसतीओ रक्काणिओ तओ पाउ असागरिणे अच्छति, तिण्हितो ति जग्गायते पलवति णच्चइ वा । अभावियमेहं अपरिणं गेहिं सद्धिं उल्लावणं न करेति गिहीहिं वा ॥६०३९॥

वियडत्तस्स उ वाहि, णिग्गंतु ण देति अहं बला णीति ।

जयणाए पचवासे, गायणे व लवंते आसमवि ॥६०४०॥

जइ जुनमेत्तपीणं अतिरित्तं वा मत्तो वियडत्तगो ऽति मत्तो परापीणओ बाहिं णिग्गच्छेज्ज लो ण देति ये णिग्गन्तु, वना गितो “जयण” ति जहा ण पीडिज्जति तहा “पचवासे” ति-वज्जइ । अहं पचवासितो मोक्कलो वा गालज्जा पलवेज्ज वा तो “आसमवि” ति आसं मुहं तं पि सिविज्जति ॥६०४०॥

अववादतो तिण्हं दत्तीणं अतिरित्तमवि गिण्हेज्ज -

वितियपदं गेलणो, विज्जुवदेमे तहेव सिक्खाते ।

गहणं अतिरित्तस्सा, वेज्जुवदेसे य आइयणं ॥६०४१॥

गेलण्णट्ठा वेज्जुवदेसेण सिक्खाए वा एतेहि कारणेहि गहण अतिरित्तस्स आतियण पि, अतिरित्तस्स गेलणसिक्खाहि विसेसतो वेज्जुवदेसेण ।

त पुण इमेसु ठाणेषु कमेण गेहेज्जा -

‘गहण पुराणसावग, सम्म अहाभट्ट दाणसङ्के य ।

भावियकुलेसु ततो, जयणाए तत्तु परलगे” ॥१॥

जे भिक्खु वियड गहाय गामाणुगाम दूइज्जइ, दूइज्जंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥६॥

वियडेण हत्थगतेण जो गामाणुगाम दूइज्जइ गच्छइ, तस्स आणादी चउलहु च ।

कारणञ्चो सग्गामे, सइलामे गंतु जो परग्गामे ।

आणिज्जा ही वियडं, णिज्जा वा आणमादीणि ॥६०४२॥

कारणञ्चो वियड घेतव्व, त पि सग्गामे “सति” ति लब्भमाणे जो परग्गामतो आणति, सग्गामाञ्चो वा परग्गाम गेज्जा, तस्स आणादिया दोसा ॥६०४२॥

इमे य -

परिगलण पवडणे वा, अणुपंथियगंधमादि उड्डाहो ।

आहारतरतेणा, किं लद्ध कुतूहले चेव ॥६०४३॥

परिगलने एडवातिच्छक्काया विराहिज्जति, पडियस्स वा भायणभगे य छक्कायविराहणा, अहवा - परिगलने पडियस्स वा छड्डिते अणुपथिञ्चो वा पडिपथिञ्चो वा गवमाघाएज्ज, सो य उड्डाह करेज्ज, अतरा वा आहारतेणा भायण उग्घाडेज्जति, ददु आदिएज्ज उड्डाह वा करेज्ज । इयरे ति उवकरण तणा ते वा कुतूलहेण भायण उग्घाडेज्जा, किं लद्ध ति ? ते वा उड्डाह करेज्ज ॥६०४३॥

जम्हा एवमादिया दोसा -

तम्हा खलु सग्गामे, घेत्तुणं बंधणं घण कुज्जा ।

एत्तो चिय उवउत्तो, गिहीण दूरेण संवरितो ॥६०४४॥

खलुसद्धो सग्गामावधारणे, स्वयाम एव गृहीतव्य, सग्गामासति परग्गामातो आणियव्व, कारणे वा परग्गाम गेयव्व इमेण विहिणा - सकुडमुहभायणे ओमथिय नराव घणचीरबधण कुज्जा, पथ उवउत्तो गच्छति, जहा णो परिगलति पक्खलति वा । गिहीण य एयतजत्ताण हेट्ठोवाएण दूरतो गच्छति, त पि भायण वास कप्पादिणा गुसवृत करेति ॥६०४४॥

अववादकारणेण परग्गामे गेति, आणवेति वा -

चितियपदं गेलण्णे, वेज्जुवएसे तहेव सिक्खाए ।

एतेहि कारणेहि, जयण इमा तत्थ कायव्वा ॥६०४५॥ पूर्ववत्

एवमादिकारणेहि गेहृतस्स इमा जयणा -

पुराणेषु सावतेसु, व सणि-अहाभट्ट-दाणमड्डेसु ।

मज्झत्यकुलीणेषु, किरियावादीसु गहणं तु ॥६०४६॥

पुव्व पुराणस्म हृत्यातो धेप्पइ, तस्म अभति गहिताणुव्वनसावगस्म, ततो अविरयसम्मद्धिस्म,
ततो अहृद्गस्म ततो दाणसङ्कुस्स । मज्झत्या ज णो अम्ह भासण पडिवण्णा णो अणोमि, ते य जानिकुलाणा ।
एत्थ कुलीणो सभावद्धितो दिट्ठे य सहोत्थय । क्रिया वदति क्रियावादीति वेज्जेत्यर्थ ॥६०४६॥

खेत्तनो पुण इमेसु गहण -

गिहि-कुल-पाणागार, गहणं पुण तस्म दोहि ठाणेहिं ।

मागारियमादीहि उ, आगादे अन्नलिगेणं ॥६०४७॥

दोहिं ठाणेहिं गहण, गिहेत्ति पुराणादिपाण गिहेसु, “पाणागार” ति-कल्लालावणे, गिहामइ पच्छा
कल्लालावणे । “गिहे” ति पुव्व सेज्जातरगिहाना आणिज्जति जे दूराणयणे दोसा ते परिहरिया भवति,
से-जातरगिहासनि पच्छा णिवेमणता वाडग-साहि-मग्गाम-परगामानो य । जत्थ मलिगेण उट्ठाहो तत्थ परलिगेण
गहण करति ॥६०४७॥

अदिट्ठमस्सुतेसु, परलिगेणेतरं सलिगेणं ।

आसज्ज वा विदेमं, अदिट्ठपुव्वे वि लिगेणं ॥६०४८॥

जत्थ णग्गे गामे वा सो साधू ण केणइ दिट्ठो वण्णायानेहिं वा सुतो तत्थ परलिगेण ठितो गेण्ड ।
“इतरे” ति - जत्थ पुण सो परलिगद्धितो वि पच्छाभणज्जति तत्थ मलिगेण वा गेण्हनि । अह्वा -
“आसज्ज वा वि देस” - ति जत्थ देमे ण णज्जति किं एतेमि वियड कप्प अक्कप्प ति, ण वा लोपो गरहति,
तत्थ सलिगेण गेण्हति । “अदिट्ठपुव्वे” ति-जत्थ गाम-णगरादिमु ण दिट्ठपुव्वो तत्थ वा सलिगेण गेण्हति ॥६०४८॥

जे भिक्खु वियडं गालेइ, गालावेइ, गालियं आहट्ठ देज्जमाणं पडिग्गाहेति
पडिग्गाहंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥७॥

परपूणगादीहि गालेति तस्म चउलहु आणादीय। य दोसा ।

जे भिक्खु वियडं तू, गालिज्जा तिरिहकरणजांगेण ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छत्त विराधण पावे ॥६०४९॥

अप्यणो गालेइ, अण्णेण वा गालावेइ, गालेतमणुमोदेति एव तिरिहकरण, सेस कठ ।

इमे दोसा -

इहरह वि ताव गंधो, किमु गालेतम्मि जं उज्झमिया ।

खोलेसु पक्कसम्मिय, पाणादिविराधणा चेव ॥६०५०॥

“इहरह” ति अगालिज्जतस्म वि गंधो, गालिज्जते पुण सुट्ठुतर गंधो खोलपक्कसेसु उज्झम-
माणेसु उज्झमिता भवति, मज्झस्स हेट्ठो धोयगिमादिकिट्ठिसखेलो सुराए किण्णिमादिकिट्ठिमपक्कस अण्णा च
खोलपक्कसेसु छट्ठिज्जमाणेसु मक्खिगपिपीलगा विराधणा, मधुविदोवक्खणामो य प्राणिविराधणा ॥६०५०॥

वितियपदं गेलण्णे, वेज्जुवएमे तहेव भिक्खाए ।

एतेहिं कारणेहिं, जयण इमा तत्थ कातव्वा ॥६०५१॥

कारणे इमाए जयणाए गेण्हेजा -

पुव्वपरिगालियस्स उ, गवेसणा पढमताए कायव्वा ।

पुव्वपरिगालियस्स व, अमतीते अप्पणा गाले ॥६०५२॥

रिज्जु पुव्वपरिस्ति कट्ठम् ॥६०५२॥

सव्वे वियडसत्ता जहा णिद्दोस-मदोप्पा भवति तहा आह -

कारणगहणे जयणा, दत्ती दूतिज्जगालण चेव ।

कीतादी पुण दप्पे, कज्जे वा जोगमकरेत्ता ॥६०५३॥

दत्तीसुत्त दूइज्जणामुत्त गालणामुत्त च एते सुत्ता कारणिया, एतेसु कारणसु विरड वेप्पइ, गहणे णिद्दोसो जयण करेतोऽजयण करेतस्स दोसा भवति । कायगड पामिच्च-परियट्ठि-अच्छेजादिया पुण सुत्ता दप्पतो पडिसिद्धा, दप्पतो गेण्हतो सदोसो, कज्जे अववादतो गेण्हतो जति तिणि वारा सुद्धस जोग ण पउजति पणगपरिहाणी वा न पउजति तो सदोसो ॥६०५३॥

जे भिक्खु चउहिं संभाहिं सभायं करेइ करेतं वा साइज्जइ, तं जहा

पुव्वाए सभाए, पच्छिमाए संज्भाए, अवरण्हे, अडूरत्ते ॥सू०॥८॥

तासु जो सज्भाय करेइ तस्स चउलहु आणादिया य दोसा ।

पुव्वावरसंभाए, मज्झण्हे तह य अद्वरत्तम्मि ।

चतुसंभासज्भायं, जो कुणती आणमादीणि ॥६०५४॥

सभासु अपाढे इम कारण -

लोए वि होति गरहा, संभासु तु गुज्झगा पवियरंति ।

आवासग उवओगो, आसासो चेव खिन्नाण ॥६०५५॥

लोइयवेइसामादियाणा य सभासु पाढो गरहियो, अल्ल सभासु गुज्झग ति देवा ते विवरति ते पमन छलेज्ज, सभाए सज्भायविणियट्ठचित्तो आवासगो उवउत्तो भवति, सज्भायखिण्णस्स य त वेल आसासो भवति, णाणायारो य विराहितो, णाणविराहण करेण सज्जमो विराहितो, जम्हा एत्तिया दोसा तम्हा णो करेजा ॥६०५५॥

कारणे वा करेज्ज -

वितियाऽऽगाढे सागारियादि कालगत असति वोच्छेदे ।

एतेहि कारणेहिं, जयणाए फप्पती कातुं ॥६०५६॥

आगाढजोगो महाकप्पसुयाइउट्ठि पडिसुणावणमित्त सभासु कड्डिज्जजा, अहवा - आगाढकारणा सागारियादि ॥६०५६॥

तेसि इमा विभासा -

ज जस्स जियं सागारियम्मि णिसिभरणे जेण जग्गंति ।

अहिणवगट्ठित्तम्मि एते, पडिपुच्छं नत्थि उभयस्स ॥६०५७॥

“सागारिग” ति-महपडिबद्धाए वमवीए ठिता तत्थ जस्म ज सुय कालिग उक्कालिग वाएइ ति सो त सक्काए परियट्ठेति । “कालगतो” ति — कोइ साधू निमीए मग्गो तदट्ठा राम्भो जग्गियव्व, तत्थ जेण मुत्तेण रसिएण णायमादिणा कडिज्जनेण जग्गति त मक्कामु वि कडिज्जति, गिलाणो वा ओसही पीओ जेण जग्गति त कडिज्जति । “असाति” ति किंचि अज्जमग्ग कस्सइ गुरुणा समीवाओ गहित सो गुरू कालगतो, तस्स व अहिणवगहियस्स मुत्तत्यस्स अण्णतो पडिपुच्छ पि णत्थि अतो त सक्कामु वि परिहट्ठेति ॥६०५७॥

“वोच्छेदि” ति अस्य व्याख्या —

वोच्छेदे तस्सेव उ, तदन्थि सेसेसु तं समुच्छिण्णे ।

अणुपेहाए अबालिओ, धोमसु यं वा वि सदेणं ॥६०५८॥

वम्म इ आयरियस्स किंचि अज्जमग्ग अत्थि, अण्णोसु त वोच्छिण्ण, सो सक्कामु असक्काले वा परियट्ठेति, मा मम पि वोच्छिज्जिति । अहवा — तस्स समीवातो पढतो लहु पढामिति सक्कामु वि पढति, मा वोच्छिज्जिति ति । सक्कामु कारणे अणुपेहियव्व । जो पृण अणुपेहाए ण सक्केति सो सदेण वि पढेज्जा । अहवा — त धोससदेण धोमेयव्व त पि जयणाए, जहा अणो अपरिणामगो ण जाणति ॥६०५९॥

जे भिक्खु कालियसुयस्स परं तिण्हं पुच्छाणं पुच्छइ

पुच्छंतं वा सातिज्जति ॥६०॥६॥

जे भिक्खु दिट्ठिवायस्स परं सत्तण्हं पुच्छाणं पुच्छइ

पुच्छंतं वा सातिज्जति ॥६०॥१०॥

कालियसुयस्स उक्काले सक्कामु वा अमज्जाए वा तिण्ह पुच्छाण परेण पुच्छइ तस्स चउलहु । दिट्ठिवायस्स सक्कामु असज्जाए वा सत्तण्ह परेण पुच्छतस्स इह ।

तिण्हुवरि कालियस्सा, सत्तण्ह परेण दिट्ठिवायस्स ।

जे भिक्खु पुच्छाण, चउसंभं पुच्छ आणादी ॥६०५६॥

चउसु सक्कामु अण्णयरीए वा तस्स आणादी ॥६०५६॥

पुच्छाते पुण कि पमाणं, अणो भण्णति —

पुच्छाणं परिमाणं, जावतियं पुच्छति अपुण्हत्तं ।

पुच्छेज्जा ही भिक्खु, पुच्छ णिसज्जाए चउसंगो ॥६०६०॥

अपुण्हत्त जावतिय कडिडउ पुच्छति सा एगा पुच्छा ।

एत्थ चउसंगो —

एक्का णिसेज्जा एक्का पुच्छा, एत्थ सुद्धो ।

एक्का णिसेज्जा अणेगाओ पुच्छाओ, एत्थ तिण्ह वा सत्तण्ह वा परेण चउसहुगा ।

अणेगा णिसज्जा एक्का पुच्छा, एत्थ वि सुद्धो ।

अणेगा णिसज्जा अणेगा पुच्छा, एत्थ वि तिण्ह सत्तण्ह वा परेण पुच्छतस्स चउलहुगा ॥६०६०॥

१ गा० ६०५६ । २ गा० ६०५६ । ३ गा० ६०५६ ।

अहवा तिणिण मिलोगा, ते तिसु णव कालिएतरे तिगा सत्त ।

जन्थ य पययममत्ती, जावतिय वाचिओ गिणहे ॥६०६१॥

तिहि मिलोगेहि एगा पुच्छा, तिहि पुच्छाहि णव सिलोगा भवति, एव कालियसुयस्म एगतर ।
दिट्ठिवाए मत्तसु पुच्छासु एगवीम मिलोगा भवति । अहवा - जत्थ पगत सम्पपति थोव बहु वा सा एगा
पुच्छा । अहवा - जत्थिय आयरिएण तरइ उच्चारिण वेत्तु सा एगा पुच्छा ॥६०६१॥

वितियागाढे मागारियादि कालगत असति वोच्छेदे ।

एतेहिं कारणेहि, तिण्ह मत्तण्ह व परेणं ॥६०६२॥

कम्हा दिट्ठिवाए सत्त पुच्छातो ? अतो भण्णति -

नयवातसुहुमयाए, गणिते भंगसुहुमे णिमित्ते य ।

गंथस्स य बाहुल्ला, सत्त कया दिट्ठिवातम्मि ॥६०६३॥

णेममादि सत्तणया, एक्केक्को य सयविहो, तेहिं सभेदा जाव दव्वपरूवणा दिट्ठिवाए कज्जति सा
णयवादसुहुमया भण्णति । तह परिकम्ममुत्तेसु गणियसुहुमया, तहा परमाणुमदीसु वण्णगवरसफासेसु एगग्रुण
कालगादिपज्जवभगसुहुमता । तहा अट्ठगमादिणिमित्त, बहुवित्थरत्तणतो दिट्ठिवायगयस्स य बहुअत्तणतो सत्त
पुच्छाओ कताओ ॥६०६३॥

जे भिक्खू चउसु महामहेसु सज्झायं करेइ करेतं वा साडज्जइ, तं जहा -

इदमहे खंदमहे जक्खमहे भूयमहे ॥सू०॥११॥

रवण पयण खाण-पाण नृत्य गेय-प्रमोदे च महता महामहा तेसु जो सज्झाय करेइ तस्म चउलहु ।

जे भिक्खू चउसु महापडिवएसु सज्झाय करेइ करेतं वा साडज्जइ, तं जहा -

सुगिम्हयपाडिवए आसाढीपाडिवए

आसोयपाडिवए कत्थियपाडिवए वा ॥सू०॥१२॥

एतेमि चेव महामहाण जे चउरो पडिवयदिवसा, एतेसु वि करेतस्स चउलहु ।

चतुमुं महामहेसु, चतुपाडिवदे तहेव तेमिं च ।

जो कुज्जा सज्झायं, सो पावति आणमादीणि ॥६०६४॥ कत्था

के पुण ते महामहा ? उच्यते -

आसाढी इदमहो, कत्थिय-सुगिम्हओ य वोधव्वो ।

एते महामहा खलु, एतेसिं चेव पाडिवया ॥६०६५॥

आसाढी - आसाढपोणिमाए ^१इह लाडेसु सावणपाणिमाए भवति इदमहो, आसोयपुणिमाए
कत्थियपुणिमाए चेव, सुगिम्हातो चेतपुणिमाए । एते अतदिवसा गहिया । आदिता पुण अज्ज विसए

१ 'इह' अनेन ज्ञायते लाटदेशीयोऽय-वृत्तिकार इति ।

जनो दिवमानो महामहो पवत्तन्ति ततो दिवमानो आरब्ध जाव अनदिवमा ताव मज्झानो ण कायव्वो । एएमि चव पुण्णिमाण अगतरे जे बहुलपडिवगा चउरा तेवि व जेयव्वा ॥६०६५॥

पडिसिद्धकाले करेतस्म इमे दासा -

अनतरपमादजुत्तं, छलेज्ज अप्पिड्डिओ ण पुण जुत्तं ।

अद्दोदहिड्डिती पुण, छलेज्ज जयणोवउत्तं पि ॥६०६६॥

सरागसज्जनो सरागनणतो इदियविसयादि अण्णतर पमादजुत्तो हवेज्ज, विमेमतो महामहेसु त पमायजुत्त पडिणीयदेवता अप्पिउडया वित्तादि छलण करेज्ज । जयणाजुत्त पुण साहु जा अप्पिड्डितो देवो अद्दोदधीओ ऊगट्टिइत्त मो ण मक्केति छलेउ - अद्दमागगेवमठितितो पुण जयणाजुत्त पि छनेति, अत्थि से सामत्थ, त पि पुव्ववेरसबधसरणतो कोति छलेज्ज ॥६०६६॥

चोदगाह - “वारमविहम्मि वि तव, मब्भितर वाहिरे कुसलदिट्ठ ।

ण वि अत्थि ण वि य होही, मज्झायममो तवोकम्म ॥”

कि महेसु सज्झासु वा पडिसिज्झति ?, आचार्याह -

कामं सुओवओगो, तवोवहाणं यणुत्तरं भणितं ।

पडिसेहितम्मि काले, तहावि खलु कम्मबंधाय ॥६०६७॥

दिट्ठ महेसु सज्झायस्स पडिसेहकारण ।

पाडिवएसु कि पडिसिज्झइ ?, उच्यते -

छणियाऽवमेसएणं, पाडिवएसु वि छणाऽणुसज्जन्ति ।

मह्वाउलत्तणेणं, अमारिताणं च मम्मणो ॥६०६८॥

छण्यस्स उवसाहिय ज मज्जपाणादिग त सव्व णोवभुत्त, त पडिवयासु उवभज्जति, अनो पडिवतासु वि छणो अणुमज्जति । अण्ण च महदिणेसु वाउलत्तणतो जे य मित्तादि ण सारिता ते पडिवयासु सभारिज्जति त्ति छणो वट्ठति, तेसु वि तं वेव दोमा, तम्हा तेसु वि णो करेज्जा ॥६०६८॥

वित्तियागाढे मागारियादि कालगत अमति वोच्छेदे ।

एतेहि कारणेहि, जयणाए कप्पती कातुं ॥६०६९॥ कठ्या

जे भिक्खू पोरिमिं मज्झायं उवाइणावेड उवाइणावेत्तं वा साडज्जति ॥सू०॥१३॥

जे भिक्खू चउकालं मज्झायं न करेड न करेत्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥१४॥

कालियमुत्तस्स चउरो मज्झायकाला, ते य चउपोरिसिणिप्पण्णा, ते उवात्तिणावेति ति - जो तेसु मज्झाय न करेड तस्स चउलहु अणादिणा य दोमा ।

अतो अहोरत्तस्म उ, चउरो मज्झायपोरिमीओ उ ।

जे भिक्खू उवायणति, सो पावति आणमादीणि ॥६०७०॥

अहारत्तस्स अता अब्भनरे, मेस कथ्य ॥६०७०॥

चाउक्काल सज्झाय अकरेतस्स इमे दोसा ।

पुव्वगहितं च नासति, अपुव्वगहणं कओ सि विकहाहिं ।

दिवस-निसि-आदि-चरिमासु चतुसु सेसासु भइयव्वं ॥६०७१॥

मुत्तये मोत्तु देस भन्त राय इत्थिकहादिसु पमत्तो अचछति अगुणेतस्स पुव्वगहित नासति, विकहा-
पमत्तस्स य अपुव्व गहण णत्थि, तम्हा णो विकहामु रमेज्जा ।

दिवसस्स पढमचरिमासु णिसीए य पढमचरिमासु य-एयासु चउसु वि कालियसुयस्स गहण गुणण च
करेज्ज । सेसासु त्ति दिवसस्स विनयाए उक्कालियसुयस्स गहण करेति अत्थ वा सुणेति, एसा चेव भयणा ।
ततियाए वा भिक्ख हिंडइ, अह ण हिंडति तो उक्कालिय पढति, पुव्वगहियमुक्कालिय वा गुणेति, अत्थ वा
सुणेइ । णिसिस्स विइयाए एसा चेव भयणा सुवइ वा । णिसिस्स ततियाए णिहाविमोक्ख करेइ, उक्कालिय
गेहति गुणेति वा, कालिय वा सुत्तमत्थ वा करेति । एव सेनासु भयणा भावेयव्वा ॥६०७१॥

चाउक्कालियसज्झायस्स वा अकरणे इमे कारणा -

असिवे ओमोयगिए, गायदुट्ठे भए व गेलण्णे ।

अट्ठाण रोहए वा, काल च पडुच्च नो कुज्जा ॥६०७२॥

अस्य व्याख्या -

सज्झायवज्जमसिवे, रायदुट्ठे भय रोहग असुद्धे ।

इतरमवि रोहमसिवे, भइतं इतरे अलं भयसु ॥६०७३॥

“सज्झायवज्जमसिवे” त्ति - लोके असिव वा साधू अप्पणा वा गहितो तत्थ सज्झाय ण पडुवेंति
आवस्सगादि उक्कालिय करेति । रायदुट्ठे बोहिगभए य तुण्हिक्का अचछति, मा णज्जिहामो, तत्थ कालिग-
मुक्कालिग वा ण करेंति । अहवा - “रायदुट्ठे भय” त्ति-णिग्विसया भत्तपाणे पडिसेहे य ण करेंति सज्झाय ।
उवकरण (सरीर) हरे दुविषभेरवे य ण करेंति, मा णज्जीहामो ति । रोषगे असुद्धे काले वा ण करेंति ।
इयरमवि आवस्सगादि उक्कालिय, जत्थ रोषगे अचियत्त असिवेण य गहिया तत्थ त पि ण करेंति । इयरे
त्ति - ओमोदरिया तत्थ भयणा - जइ बितियजामादिसु वेलासु ण करेंति सज्झाय, अह ण फव्वति
पच्छुसियवेलातो आदिच्चोदयाओ आरद्धा ताम हिंडति जाव अवरण्हो त्ति । गेलण्णट्ठाणेसु ‘अल भयसु’ त्ति-
जइ गिलाणो सत्तो अट्ठाणिगेण वा न खिण्णो तो करेति, अह असत्ता तो ण करेति । अहवा - गिलाण
पडियदमा वा ण करेति, कासं वा पडुच्च णो कुज्जति । असुद्धे वा काले ण करेति । अणुपेहा सव्वत्थ
अविहद्ध ॥६०७३॥

जे भिक्खु असज्झाइए सज्झायं करेइ, करेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१५॥

जम्मि जम्मि कारणे सज्झाओ ण कीरति त सव्व असज्झाइय, त च बहुविह वक्खमाण, तत्थ
जो करेइ तस्स चउलहु आणाभगो अणवत्था मिच्छत्त आयसन्नमविराहणा य ।

तस्सिमे भेदा -

असज्झायं च दुविहं, आतसमुत्थं च परसमुत्थं च ।

जं तत्थ परसमुत्थं, त पचविहं तु नायव्वं ॥६०७४॥

आयसमुत्थ चिट्टुड ताव उर्वरि भणिहिनि अणतरसुत्ते, ज परसमुत्थ त इम पचविह ॥६०७४॥

संजमघाउप्पाते, सा दिव्वे वुग्गहे य सारीरे ।

घोमणयमेच्छरणो, कोड छलिओ पमाएणं ॥६०७५॥

एयम्मि पचविहे अमग्गाइए जो सज्जाय करेनि तस्सिमा आयसजमविराहणा । दिट्ठतो-घोसणय मेच्छरणो ति ॥६०७५॥

अस्य व्याख्या -

मेच्छभयघोसणणिवे, हियसेमा ते तु डंडिया रण्णा ।

एवं दुहओ डंडो, सुर पच्छित्तं इह परे य ॥६०७६॥

खिइपतिट्ठित्त नगर, जियसत् राया । तेण सविसए घोसावित जहा - मेच्छो राया आगच्छति, त गामनगराणि मोत्तु समासण्णे दुग्गेसु ठायह, मा विणस्सिहिह । जे ठिया रण्णो वयणेण दुग्गादिमु ते ण विणट्ठा । जे पुण न ठिता ते मेच्छेसु विलुत्ता, ते पुण रण्णा आणाभरो मम कओ ति ज किंचि हियसेस पि त पि डंडिता । एव असज्जाइए सज्जाय करेतस्स दुहतो डंडो इह भवे "सुर" ति देवताए छलिज्जति, परभव पडुच्च णाणादिविराहणा पच्छित्त च ॥६०७६॥

इमो दिट्ठतोवणओ -

राया इव तित्थकरो, जाणवता साधु घोसणं सुचं ।

मेच्छो य असज्जाओ, रतणधणाइं च णाणादी ॥६०७७॥

जह राया तथा तित्थकरो, जहा जणपदजणा तथा साधू, जहा आघोसण तथा सुत्तपोरिसिकरण, आरिसा मेच्छा तारिसा असज्जाया, जहा रयणधणावहारो तथा णाणदसणचरणविणासो । त पि सब्ब उव-
सघारेयव ॥६०७७॥

“कोति छलिओ, पमादेण” ति अस्य विभासा -

थोवाऽवसेसपोरिसि, अज्जयणं वा वि जो कुणति सोच्चा ।

णाणादिसारहीणस्म तस्स छलणा तु संसारे ॥६०७८॥

सज्जात करेतस्स थोवावसेसगो उद्देशगो अज्जयण वा, तो पोरिसी आगय ति सुता, अहुवा - असज्जाइय कालवेला वा सोच्चा वि जो आउट्टियाए सज्जाय करोति सो णाणादिसारहीणो भवति । णायायास्त्यो य देवताए छलिज्जति, सतारे य दीहकाल परिघट्टेति, पमादेण वि कारंतो छलिज्जति चेव, दुक्ख सतारे अणुभवति ॥६०७८॥

ज त मजमोवघाति त इम तिविह -

महिया य भिण्णवासे, सचित्तरजो य संजमे तिविहे ।

दव्वे खेत्ते काले, जहियं वा जच्चिरं भव्वं ॥६०७९॥

पचविहमसम्मायस्म किं कहं परिहरियज्जमिति तस्मात्ततो इमो दिट्ठतो -

दुग्गादि तोमियणिणो, पचण्हं देति इच्छियपयारं ।

गहिणं यं देति मोल्लं, जणम्म आहारवत्थादी ॥६०८०॥

एगम्म ण्णो पच पुरिमा, ते बहुममरलद्धविजया । अण्णया तेहि अच्चनविमसं दुग्गं गहिनं । तस्मिं तुट्ठा राया । इच्छिय णगरे पयारं देति ज ते किञ्चि अमणादिगं वत्थादिगं वा जणम्म गेहन्ति तस्मं उगइय (वयणिय) सव्वं राया पयच्छन्ति ॥६०८०॥

एगेण तोमिततरो, गिहमगिहं तस्मं सव्वहिं पयारो ।

रत्थादीसु चउण्हं, एव पढसं तु सव्वत्थं ॥६०८१॥

तेमिं पचं हं पुरिमाणं एककेण राया तोमिततरो तस्मं गिहाणं रायासु सव्वत्थं इच्छिय-पयारं पयच्छन्ति । चउण्हं रच्छामु चेव इच्छियपयारं पयच्छन्ति । जो एतं दिण्णपयारं अमापज्ज तस्मं राया उट्ठं करेति । एतं दिट्ठतो ।

इमो उवमचारो - जहा पच पुरिमा तथा पचविहमसम्माय, जहा सो एगा अरुमरहित्तरो पुरिमा एव पढसं सज्जमोवधानितं सव्वहा णासित्तज्जति तस्मिं बहुमाणेण सज्जमागं पडिलेहणदिका वाइ चिट्ठा कीरइ, इतरमु चउसु असज्ज इएसु जहा ते चउरो पुरिमा रच्छामु चेव अगासायणज्जा तथा तेसु सज्जाम्भो चेव ण कीरइ, मेसा सव्वा चिट्ठा कीरइ, आरस्मगादिउत्कानिय पडिज्जति ॥६०८१॥

‘महियादिनिवहस्मं सज्जमोवधानितस्मं इमं वक्खवाण -

महिया तु गम्भमासे, सच्चित्तारयो तु ईमिआयंभो ।

वासे तिण्णि पगारा, बुब्बुय तव्वज्ज फुसिता य ॥६०८२॥

महियत्ति धूमिया, सा य कत्तियमग्गमिगादिमु गम्भमासेसु भवति, सा य पडणपमकालं चेव सुहुम-त्तण्णो सव्वं आउक्कायभाविनं करेति, तस्य तत्कालममयं चेव सव्वचेट्ठा गिरुज्जति । ववहारमचित्तो पुढविकाओ आरणो वा उट्ठओ आगतो सच्चित्तारओ भवति, तस्मं लक्खणं - वण्णतो ईमिं आयंभो दिमतरेसु दीमन्ति सोवि गिरनरपाएण तिण्हं दिणागं परतो सव्वं पुढविकायभाविनं करेति, तत्पलाशकासभवच्च । भिन्नवासं निविहं - बुब्बुपाइ, जस्य वासे पडमाणे उदगबुब्बुया भवति तं बुब्बुपरिसं, तेहि वज्जितं तव्वज्जियं । सुहुमफुमारोहिं पडमाणेहिं फुमियं वरिसं, एतेसु जहामसं तिण्णि पच-सत्तदिणपरतो सव्वं आउक्कायभाविनं भवइ ॥६०८२॥

सज्जमपायस्मं सव्वभेदणं इमो नउच्चित्तो परिहारो - “दव्वे खेत्ते” पच्छद्धं अस्य व्याख्या -

दव्वे तं चियं दव्वं, खेत्ते जहि पडति जच्चिरं कालं ।

ठाणभामादिभावे, मोत्तुं उस्सासं उम्मेमं ॥६०८३॥

दव्वतो तं चेव दव्वं ति महिया सच्चित्तारयो भिन्नवासं च परिहरिज्जति । “^३जहियं व” ति -- जहिं खेत्तं महियादी पडति तेहिं चेव परिहरिज्जति । ‘^४जच्चिरं’ ति - पडणकालातो आरब्धं जच्चिरं

कालं पठति तच्चिरं परिहारो । “भव” ति—भावतो ‘ठाणमासादि’ नि—काउस्सग्ग ण करेति, ण य भ मति । आदिमद्भाओ गमगायमग पडिनेहणमज्झयादि ण करेति । “मोत्तु उस्सासउम्मेम” मोत्तु ति णो पडिमिज्झति उम्मेमादिया अगकयत्वात् जीवितव्याघातकत्वाच्च, दोषा क्रिया सवा निपद्यते । एम उस्सग्गपरिहारो । आनिण्ण पुण सच्चिन्नरए तिणिण्णि मिण्णवासे तिणिण्ण पच सत्त, अतो पर सज्झयादि ण करेति ।

अत्रे भणति — बुब्बुयावरिसे अहोरत्त, तव्वज्जे दो अहोरत्ता, फुसियवरिमे सत्त, अतो पर अउक्कायभाविन सव्ववेट्ठा णिरुज्झति ॥६०८३॥

सामत्ताणाऽऽवरिया, णिक्कारणे ठंति कज्जे जतणाए ।

हत्थऽच्छिगुलिमण्णा, पोत्तोवरिया व भासति ॥६०८४॥

णिक्कारणे वा सकप्पकवलीय पाउया रेणिह्या सव्वन्नतरे चिट्ठति, अवस्सकायव्वे वा कज्जे वत्तव्वे वा दया जन्णा हत्थेण भूमादिअच्छिन्निकरणं वा अणुनीए वा सण्णति—“इम करेदि, मा वा करेहि” ति । अहवा—एव णावगच्छति मुहणेत्तिय अतरिया जयणाए भासति गिलाणादिकज्जेसु वा सकप्पपाउया गच्छति ॥६०८४॥ सजमघाति ति गत्त ।

इदाणि — “उप्पाए” ति दार — अन्नभादिविकारवत् विश्रमा परिणामतो उत्पातो पामुमाओ भवति ।

पंसू य मंम रुहिरं, केस-मिल-वुड्ढि तह रयुग्घाए ।

मंसरुहिरऽहोरत्तं, अवमेसे जच्चिरं सुत्तं ॥६०८५॥

पमुवरिस ममवरिम रुहिरवरिस, केसति — बालवरिस, करणादि वा सिलावरिम, रयुग्घायपयडण च । तेमि इमो परिहारो—ममरुहिर अहोरत्त सज्झाओ ण कोरइ अवसेसा पमुमादिया जच्चिर-काल पठति तत्तिय काल सुत्त णदिमादिय ण पठति ॥६०८५॥

पसुरउग्घातणे इम वक्कवाण —

पंसू अचित्तरयो रयुग्घातो धूलिपडणसव्वत्तो ।

तत्थ सवाए णिव्वायए य सुत्तं परिहरंति ॥६०८६॥

धूमागारो आपहुरो रयो अचित्तो य पसू भण्णइ, महास्कन्धावारगमनसमुदता इव विश्रसा परिणामतो समता रेणुपतन रयुग्घातो भण्णइ अहवा — एम रयो, उग्घातो पुण पसुरता भण्णति, एतेसु बातमहितेसु असहितेसु वा सुत्तपोरिमि ण करेति ॥६०८६॥

कि चान्यत् —

सामाचित्ते तिणिण्णि दिणा, सुगिम्हते निभिसव्वंति जति जोग्गं ।

तो तम्मि पडंते वी, कुणंति संवच्छरज्झमाय ॥६०८७॥

एते पसुरयुग्घाता सामाविगा हवेज्ज, असाभाविका वा । तत्थ असाभाविका जे णिग्घायभूमिकप चदोपरागादिदिव्वसहिता, एरित्तेसु असाभाविगेसु कते वि उस्सग्गे ण करेति सज्झाय । ‘सुगिम्हए’ ति —

जइ पुण वेत्तमुदपक्खदसमीण अवग्गहे जोग णिक्खवति २समाओ परेण जाव पुण्णिमाए एत्थनरे तिण्णि दिगा उव्वरार भवित्तरउग्घाडावण काउस्सम्मा करेति, तग्गसिमादिमु वा तिसु दिण्णेषु तो साभाविके पडते वि सज्झाय सवत्तर करति, अहं न उस्सग्ग ण करति ना साभाविके वि पडते सज्झाय ण करेति ॥६०८७॥ उप्पाय ति गय ।

इदार्णि “सादेव्वे” त्ति - स दिव्वेण मादिव्व दिव्वकृतमित्यर्थ ।

गंधव्व दिमा विज्जुग, गज्जिते जूव जक्ख आलित्ते ।

एक्केक्कपोरिमी गज्जित्यं तु दो पोरिमी हणति ॥६०८८॥

गंधव्वणगरविउव्वण दिमाडाहकरण विज्जुभवण उक्कापडण गज्जियकरण जूवगो वक्खमाणो जक्खालित्त जक्खदिन आगामे भवति, तस्य गंधव्वणगर जक्खदिन च एते णियमा दिव्वकया, सेसा इयणिज्जा, जतो फुड ण गज्जति । तेण तेमि परिहारो । एत गंधव्वादिमा सव्वे एक्क पोरिमि उव्वणनि, गज्जिय तु पोरिसि दुग हणइ ॥६०८८॥

दिसिदाहो छिण्णमूलो, उक्क संग्हा पगामजुत्ता वा ।

मग्गा छेदावरणो, तु जूवओ मुक्के दिण तिण्णि ॥६०८९॥

अन्यनपदिगतरविभागे महाणगरप्रदीप्तमिवोद्योत किन्तु उव्वरि प्रकाशमघस्तादघकार ईहण छिण्ण-मूला दिग्दाहा । उक्कालक्खण पदेहवण रह करती जा पडइ मा उक्का, रेहविगहिता वा उज्जोय करेती पडति सा वि उक्का । “जूवगो” त्ति मज्झिमा य वदप्पमा जेण जुगव भवति तेण जूवगो, मा य सम्पप्पमा चदप्पमावरिया फिट्ठनी ण गज्जति मुक्कक्खण्डिवयादिमु दिण्णेषु समोच्छेदे य अणज्जमाणे कालवेन ण मुणति, अतो तिण्णि दिण्णे पातोमिय काल ण गेप्पति तेमु तिसुवि दिण्णेषु पादोसियमुत्तपोरिमि ण करेति ॥६०८९॥

केमिं चि होतऽमोहा, उ जूयओ ताव होंति आइण्णा ।

जेसिं तु अणाडण्णा, तेसिं टो पोरिसी हणति ॥६०९०॥

जगत्सु सुभासुभमत्यणिमिनुप्पादा अवितथो आदिच्चकिरणविकारजणिओ आइच्चमुदयत्थमे आयवो किण्ह सामो वा सगडुदिसिठितो डडा अ मोह त्ति एम जूवगो, सस कथ्य ॥६०९०॥

कि चान्यत् -

चदिमसूवरारगे, णिग्घाए गुंजिते अहोरत्तं ।

मग्गाचतुपाडिवए, जं जहि सुगिम्हए नियमा ॥६०९१॥

चदसूवरारगे गहण भणति, एव वक्खमाण साअे निरअे वा व्यतरकृतो महागजितसमो ध्वनि-निर्वात, तस्सेव विकारो गुजमानो महाध्वनि, गुजित सामणगतो, एतेमु चउसु वि अहोरत्त सज्झाओ ण कीरइ । णिग्घागुंजितेमु विमेषो - विनियदिणे जाव मा वेला विज्जति, गो अहोरत्तछेदेण छिज्जति, जहा अण्णेषु असज्झाईण्णसु ॥६०९१॥

१ गा० ६०७५ । २ तेमि किं पोरिमी तिज्जि । (आ० नि०) । ३ आताअ ।

सम्भाव्योति अणुदिनं सुगि, मज्झिमे अत्थमाण, अट्टरन्ने य - एयासु चउसु मज्झाय ण करेति । दोमा पुञ्चुत्ता । चउण्ह महामहेसु चउसु पाडिवएसु मज्झाय ण करति पुञ्चुत्ता, एव अण्ण पि जत्तिय जाणति "ज" नि मह जाणेज्जा । "जहि" नि गामणगरादिमु त पि तत्थ वज्जेज्ज । सुगिम्हो पुण सत्त्वय गियमा भवइ । एत्थ अणागाढजोग गियमा गिक्खिवन्ति । आग ढ ण गिक्खिवन्ति णपढन्ति पुण ॥६०९१॥

३चदिस-सूरिमग ति अस्य व्याख्या -

उक्कोमेण दुवालस, अट्ट जहण्ण पोरिमी चंदे ।

सूरो जहण्ण वारस, पोरिमि उक्कोम दो अट्टा ॥६०९२॥

चदोदयकाले चैव गृहिणा, सूरसियरातीए चउरो, अण्ण च अहोस्त एव दुवालस । अट्टा - उप्पाद-गहण सव्वरातीय गहण मग्गहो चैव गिञ्जुडो, सूरसियरातीए चउरो, अण्ण च अहोस्त एव वारस । अट्टा - अजाणया अब्भच्छण्णे सकाते ण तज्जनि कि वेल गहण ? परिहरिता राती पभाए दिट्ठ मग्गहो निञ्जुडो, अण्ण च अहोस्त, एव दुवालस । एव चदस्स सूरस्स अत्यमग्गहणे मग्गहनिञ्जुडो उवहयरातीए चउरो, अण्ण च अहारन् परिहरन्ति, एव वारस ।

अह उदतो गृहितो तो सूरसियमहोस्तस्म अट्ट, अण्ण च अहोस्त परिहरन्ति एव सोलस । अट्टा - उदयवत्तागृहिणो उप्पादियगहणे सव्वदिणे गहण होउ मग्गहो चैव गिञ्जुडो सूरसियमहोस्तस्म अट्ट, अण्ण च अहारन् एव सोलस । अट्टा - अब्भच्छण्णे ण जज्जाति कि वेल होहिन्ति गहण, दिदयत्ता सकाए ण पडिय, अत्यमग्गहणे दिट्ठ गहण मग्गहो गिञ्जुडो सूरसियस्स अट्ट अण्ण च अहोस्त, एव सोलस ॥६०९२॥

मग्गहणिञ्जुड एवं, सूरादी जेण होतऽहोस्ता ।

आडण्णं णिमुक्के, मोचिय दिवसो य रादी य ॥६०९३॥

मग्गहणिञ्जुडे त अहोस्त उवहन । वह ? उच्यते "सूरादी जेण अहोस्ता", सूरस्यकालाभो जेण अहोस्तस्स आदी भवन्ति त परिहरन्ति सूरसिन् अण्ण पि अहोस्त परिहरन्ति । इम पुण आदिण चदो गृहितो रातीए चैव मुक्को, नीस चैव राईए मम चैव वज्जिज्ज, जम्हा आगामिसूरुदए अहोस्तसमत्ती । सूरस्स वि दिया गृहितो दिया चैव मुक्को, तस्मेव दिवसस्स मेम राती य वज्जिज्जा । अट्टा - मग्गहणिञ्जुडे विधी भणितो ।

नतो सीसो पुच्छन्ति - "कह च्छे दुवालस, सूरे सोलस जमा ?"

आचार्याह - "सूरादी जेण होति अहोस्ता", चदस्स गियमा अहोस्तद्धे गते गहणसभवो अण्ण च अहारन् एव दुवालस, सूरस्स पुणो अहोस्ताताए सूरसियमहोस्त परिहरन्ति, अन्न पि अहोस्त परिहरन्ति एव सोलस ॥६०९३॥ सादेवेति गत ।

इदाणि ३बुग्गहे ति दार -

बुग्गहड्डियमादी, मंखोमे डंडिए व कालगते ।

अण्णरायए व समए, जच्चिर णिदोच्चऽहोस्तं ॥६०९४॥

‘बुग्गहड्डियमादि’ ति अस्य व्याख्या -

सेणादिव भोड महयर, पुमिन्थीणं च मल्लजुद्धे वा ।

लोढादि-भंडणे वा, गुज्जमुद्वाहमचियत्तं ॥६०९५॥

डंडियस्स डंडियस्स य पुण्हो, आदिसहातो सेणाहिवस्स सेणाहिवस्स य । एवं दोहं भोइयाणं, दोहं महत्तराणं, दोहं पुरिसाणं, दोहं इत्थीणं, मल्लाण वा जुद्धं पिट्ठायगलोढुमंडणेण वा । आदिसहातो विसयपसिद्धासु संसुल्लासु । विग्गहा प्रायो व्यंतरबहुला, तत्थ पमतं देवया छलेज्ज । “उड्डाहो” हा निदुक्ख ति, जणो भणंज - अम्हे भावइपत्ताणं इमे सज्जायं करेति ति अचियत्तं हवेज्ज । विसयसंखोभो परचक्रायमे । डंडिए वा कालगए भवति । “अणराए” ति रणो कालगते णिब्भएवि जाव अणो राया न ठविज्जति । “सभए” ति जीवंतस्स वि रणो बोहिगेहि समंततो अभिदुयं जच्चिरं समयं ततियं कालं सज्जायं ण करेति । जद्विसं सुअं णिदोच्चं उत्स पुरतो अहोरत्तं परिहरति ॥६०६५॥ एस डंडिए कालगते विधी ।

सेसेसु इमा विधी -

तद्विसभोयगादी, अंतो सत्तण्ह जाव मज्जाओ ।

अणाहस्स य हत्थसयं, दिट्ठिविवित्तम्मि सुद्धं तु ॥६०६६॥

गामभोइए कालगते तद्विसं ति अहोरत्तं परिहरति ।

आदिसहातो -

महतरपगते बहुपक्खिते, व सत्तघर अंतरमते वा ।

णिदुक्ख ति य गरहा, ण करेति सणीयगं वा वि ॥६०६७॥

गामरट्टमहत्तरे अधिकारणिजुत्तो बहुसम्मतो य पगतो “बहुपक्खिते” ति बहुसयणो वाङ्गसाधि-अधिवो सेज्जातरो य अणम्मि वा अणंतरघरातो आरम्भ जाव सत्तमधर, एतेसु मएसु अहोरत्तं सज्जाओ ण कीरति । अह करेति तो णिदुक्ख ति काउं जणो गरहति, अक्कोसेज वा णिच्छुमेज वा । अणसहेण वा सणियं सणियं करेति अणुपेहति वा । जो पुण अणाहो मतो तं जति उब्भिण्णं हत्थसयं वज्जेयच्चं, अणुब्भिण्णं असज्जायं ण भवति, तह वि कुच्छियं ति काउं आयरणओ य दिट्ठं हत्थसयं वज्जिज्जति ॥६०६९॥

जइ तस्स णत्थि कोइ परिदुवेंतो ताहे -

सागारियादिकहणं, अणिच्छे रत्ति वसभा विगिंचति ।

विक्खिण्णे व समंता, जं दिट्ठं सदेतरे सुद्धा ॥६०६८॥

सागारियस्स आदिसहातो पुराणस्स सज्जस्स अहामहस्स वा कहिज्जति - “इमं छड्ढेह, अम्हं सज्जाओ ण सुज्जइ ।” जति तेहि छड्ढियं तो सुद्धं । अह ते णेच्छति ताहे अणं वसहि “गम्मति । अह अण्णा वसही ण लभति ताहे वसभा अण्णसागारियं परिदुवेंति । एस अभिण्णे विधी ।

अह भिण्णे काकसाणादिएहं समंता विक्खिण्णं तम्मि दिट्ठिविवित्तम्मि सुद्धासुद्धं असदभावं गवेसं-तेहि ज दिट्ठं तं सद्धं विवित्तं छड्ढियं । “इयरं” ति अदिट्ठं तम्मि तत्थये विसुद्धा सज्जायं करेताण वि ण पच्छित्तं । एत्थ एयं पसंगतोअभिहितं ॥६०६८॥

इयापि सारीरं -

सारीरं पि य दुविहं, णाणस-तेरिच्छगं समासेणं ।

तेरिच्छं पि य तिविहं, जल-थल-खयरं चउद्धा तु ॥६०६९॥

१ भंसलासु (आ० वृ०) भंसुल्लासु इत्यपि पाठः । २ गा० ६०६४ । ३ गा० ६०६४ । ४ गा० ६०६४ । ५ गम्मति इत्यपि पाठः । ६ गा० ६०७५ ।

एष्य भाणुम ताव चिदुड, तेरिच्छ ताव भाणाभि-त निविष भच्छादियाण जलज, गवादियाण थलज, मयूरादियाण खहचर । एतेमि एक्केक्क दब्बादि चउव्विह ॥६०६६॥

एक्केक्कस्म वा दब्बादिओ इमो चउहा परिहारो -

पंचेदियाण दब्बे, खेत्ते मट्ठिहन्थ पोमगलाइण्णं ।

तिकुरन्थ महंतेगा, णगरे बाहिं तु गामस्म ॥६१००॥

दब्बतो पचेदियाण रहिरादि दब्ब असज्झाडय । खेततो सट्ठिहत्थज्जमनरे असज्झाडय, परतो ण भवति । अहवा - खेततो पोमगलाइण पोमगल मम तेण सज्ज आकिण व्याप्त तस्सिमो परिहारो, तिहि कुरत्थाहि अतरिय मुज्झति, आगतो ण मुज्झति । महत्तरत्थाए एक्काए वि अनरिय मुज्झति, अणतरिय दूरट्ठित ण मुज्झति । महत्तरत्था रायमगो जेण राया बलसमगो गच्छति देवजाणरहो वा विविधा सबहणा गच्छति, मेमा कुरन्था । एसा णगरविधी ।

गामस्म जियमा बाहिं, एष्य गामो अत्रिसुद्धणेगमणयदरिसणेण मीमापज्जतो, परग्गाममीमाए मुज्झतीत्यर्थ ॥६१००॥

काले तिपोरिमऽडुव, भावे सुत्तं तु नंदिमादीय ।

सोणिय मंमं चम्मं, अट्ठीणि य होति चत्तारि ॥६१०१॥

निरिय च असज्झाडय सभवकालातो जाव तनिय पोरिसी ताव असज्झाडय, परतो मुज्झइ । अहवा अट्ठुत्तामा असज्झाडय, ते जत्थ घायण तत्थ भवति ।

भावतो पुण परिहरति सुत्त, त च णदिमणुओगदार तदुलवेयालिय चदगवेज्जग पोरिसी-मडलमादी । अहवा - “चउड्डा उ” ति - असज्झाडय चउव्विह, मम सोणिय चम्म अट्ठि च ॥६१०१॥

मम सोणिउक्खित्तममे इमा विधी -

अंतो बहिं च धोतं, सट्ठी हत्थाण पोरिसी तिणिण ।

महकाये अहोरत्तं, रद्धे वूढे य सुद्धं तु ॥६१०२॥

साधुवसही सट्ठीहत्थाण अतो बहिं च धोवति । भगदशनमेतत् - अनो धोन अतो पक्क, अनो धोत बाहिं पक्क, बाहिं धोत वा अतो पक्क । अतग्गहणाणो पढमवितिया भगा, बहिग्गहणातो ततियभगो एतेसु तिसु वि असज्झाडय । जम्मि पदेसे धोत आणेउ वा रद्ध मा पदसो सट्ठीए हत्थेहिं परिहरियव्वो । कालतो तिणिण पोरिसीओ ॥६१०२॥

बहिधोतरद्ध सुद्धो, अंतो धोयम्मि अवयवा होति ।

महाकाए बिरालादी, अविमिण्णं के ड णेच्छंति ॥६१०३॥

एस चउत्थो भगा । एरिस जति सट्ठीए हत्थाण अव्वतर आणिय तहावि त शस-भाय ग भवति, पढम बितियमोसु अता धावित्तु णीए रद्धे वा तम्मि धोतदुणे अवयवा पडति तेण असज्झाडय । तनियभगो बहिं धावित्तु अता व णीए मसमेव असज्झाडय ति । त च उक्खित्तमस आइणगोमगल न भवइ । ज रक्कसाणादीह अणिव । रयविपरकिण णिज्जति त आनिणपागल भाणियव्व । महाकान्तो पचिंदसा ज र न न आणिय

वज्रैव । खेनमा मट्टि हत्था, कालता अहोरात्र, ००० अहारत्तच्छेदो । सूत्रदण रद्ध पक्क मम असज्जाइय ण भवति जत्थ असज्जाइय पडित तेण पदेमेण उदगवाहो 'वृद्धो, तम्मि पोरिमिकानि अपुण्ण विमुद्ध आघायण ण मुज्झति । "समहाकाय" ति अस्य व्याख्या - महाकाय पच्छद, भूमागाश महाकायो स बिगालादिना हतो, जति त अमिण्येव गिलित घेत वा सट्ठीग हत्थाण बाहिं गच्छति तो के द आग्रियाऽसज्जाय गेच्छन्त, धितपक्का पुग असज्जाइय चेव ॥६१०३॥

ठियपक्को पलाग मुज्झति अस्य व्याख्या -

सूमादि महाकायं, सज्जागादी हताऽऽघयण केती ।

अविमिण्णे गेण्हेतुं, पठति एगे जति पलाति ॥६१०४॥ गताः

निरिय च असज्जायापिकार एव इम भणति -

अंतो वहिं च मिण्ण, अडय विदू तहा विआता य ।

रायपह वृद्ध मुद्धे, परवयण माणमादीणि ॥६१०५॥

अतो वहिं च मिण्ण अडय ति अस्य व्याख्या -

अंडयमुज्झिय कप्पे, ण य भूमि खणति इहरहा तिणिण ।

असज्जाइयप्पमाणं, मच्छियपादो जहिं वुड्डे ॥६१०६॥

१ धुवसवीतो सट्ठीहत्थाण अतो मिण्ण अडय असज्जा य, वहिंमिण्णे ग भवति । अहवा - माहुवसहीण अतो बाहिं वा अडय मित्र ति वा उज्झिय ति वा गगट्ट, न च कप्प वा उज्झित भूमिण वा, जति कप्पे तो न कप्प सट्ठीग हत्थाण बाहिं गउ घोवति ततो मुद्ध । अह भूमिण मिण्ण तो भूमिण खणितु ण छट्टिज्जति, ण मुज्झन्तीत्यय । इहरहा ति तत्त्यथे मट्टि हत्था तिणिण य पारिसीओ परिहरिज्जति ।

इदाणि "विदु" ति असज्जाइयम्म किं विदुप्पमाणमेतेण हीणे अधिकतरेण वा असज्जाआ भवति ? ति पुच्छा ।

उच्यते - मच्छिता पाग वहिं वुड्डति त असज्जाइयप्पमाण ॥६१०६॥

इदाणि "विद्याय" ति -

अनरायु तिणिण पोरिमि, जराउगाणं जरे चुते तिणिण ।

रायपह विदु गलिते, कप्पति अण्णत्थ पुण वृद्धे ॥६१०७॥

जरा जति ग भवति नाण पसूताण वग्गुत्तिमदियाग तांमि पसूदकाल आ आरब्ध तिणिण पोरिसीओ असज्जा ना मातु अहारत्तच्छेद आमणापमूयाणवि अहारत्तच्छेदेण मुज्झति । गोमादिजरायुजाण पुण जाव जरा लवति ताव असज्जाइय, जरे चुते तिणिण । जाह जरा पडित ततो पडणकानतो आरब्ध तिणिण पट्टा परिहरिज्जति । "रायपह वृद्धमुद्ध" ति अस्य व्याख्या - "रायपह विदु" पच्छद, साधुवसहीण आमण्णेण गच्छम मम्म ति यिक्कम्म जह ति विदु गलिते त जह रायपहनरिता तो मुद्धो, अह रायपहे चेव विदु गलिते तत्त्यथे कप्पति सज्ज प्रा काउ । अह अण्णम्म पहे अण्णत्थ वा पडित त जह उदगवुड्डिवाहेण बाह-
१०५॥ २, २०॥ ति विजय यत्ताते पत्तीवण्णेण वा दद्धे मुज्झति ॥६१०७॥

१०५॥ २०॥ १०॥ १०॥ जति न वुड्डे (आ० १०) । ४ गा० ६१०५ । ५ गा० ६१०५ ।
१ गा० २० ।

“परवयण” साणमादीणि त्ति परो त्ति चोदगो, तस्म इम वयण, “जइ साणो पोगल समुद्धिमत्ता जाव ३वमहिंसमीवे चिट्ठइ ताव असज्झाइय । आदिमद्वाता मज्जाराणी” ।

आचार्याह -

जति कुमति तर्हि तुड, जति वा लेच्छारिएण मंचिक्खे ।

इहरा ण होति चोदग !, वंतं वा परिणतं जम्हा ॥६१०८॥

साणो भोत्तु मम लेच्छारिएण तुडेग वसह्मिआसण्णेण गच्छतो, तस्म गच्छतस्म जइ तुड रहिरमादी-
निन छोडादिपु कुमति, तो असज्झाय । अहवा - लेच्छारियतुडा वसहि-आसण्णे चिट्ठइ तहवि असज्झाइय ।

इहरह” त्ति - आहारिएण हे चोदग । असज्झातिय ण भवति, जम्हा त आहारिय बत
अवन वा आहारपरिणामेन परिणय, आहारपरिणय च असज्झाइय ण भवति, अण परिणामतो मुत्त-
पुत्तिमादि वा ॥६१०८॥ नेरिच्छ गत ।

इदार्णि ३माणस्सण -

माणन्मयं चतुद्वा, अट्ठि मोत्तण सत्तमहोरत्तं ।

परियावण्णविवण्णे, सेसे तिग मत्त अट्ठेव ॥६१०९॥

त माणुस्सय असज्झय चउव्विह - चम्म मम रहिर अट्ठि च । अट्ठि मोत्तु मेसस्स तिविचस्स इमो
परिहारो - खेततो हत्थमत, कालतो अहोरत्त, ज पुण सरीरातो चेव वणादिमु आगच्छति परियावण
विवण्ण वा त असज्झाइय ण भवइ । ‘परियावण्ण’ जहा रहिर चेव पूयपरिणामेन ठिय, विवण्ण म्भदिर-
कल्लसमाण रसादिग च, सेस असज्झाइय भवति । अहवा - सेस अगारी रिउसभव तिणि दिणा बीयायाणे
वा - जो मावो सो सत्त वा अट्ठ वा दिणे असज्झाइय भवति ॥६१०९॥

बीयायाणे कह सत्त अट्ठ वा १, उच्यते -

रत्तुक्कडाओ इत्थी, अट्ठदिणे तेण सुक्कडहिने ।

तिण्ह दिणाण परेणं, अणोउत्तं तं महारत्तं ॥६११०॥

णिसेगकाले रत्तुकडयाण इत्थिय पमवेइ तेण तस्म अट्ठ दिणा परिहरियव्वा, सुक्काधिगतणतो
पुत्ति पमवति तेण तस्म सत्त दिणा । ज पुण इत्थीण तिण्ह रिउदिणाण परेण भवति त सरोगजोणित्थीए
महारत्त भवति । तस्मुस्सग काउ सज्झय करेति । एम रहिरे विही ॥६११०॥

ज वुत्त ३अट्ठि मोत्तण ति, तस्म इदार्णि विपी इमो भण्णति -

दंते दिट्ठे विगिचण, सेमट्ठी बारमेव वरिमाणि ।

आमितसुट्ठे सीयाण पाणमादी य रुद्धरे ॥६१११॥

जति दतो पडितो षो पयत्ता गवेसियव्वा । जइ दिट्ठो तो हत्थमत्ताता पर विगिचियव्वो । अह
ण दिट्ठो तो उग्घाडवाउम्मस काउ रम्भय करेति । सेमट्ठिनेसु जीवमुक्कदिणाग्भातो हत्थसत्तज्जभनरट्ठितेम्
बारस वरिस असज्झातिय ॥६१११॥

“१. नामितमुद्धे सीताण” नि अस्य व्याख्या -

सीताणे जं दड्डुं, ण तं तु मोचुं अणाह णिहताई ।

आडंवे य रुद्धे, मादिसु हेड्डुड्डिया वाग ॥६११२॥

पुव्वद, “सीयाणि” नि सुवाण जाणि वियगागविम दड्डुणि ण त तु अट्टित असज्जाय करेति, जाणि पुण तत्थ अणान्य वा अणाहकनेवराणि पट्टिवियाणि, मण हाणि वा इधणादिअ णवे “णिह्य” ति णिक्खिया ते असज्जातिय करेत्ते, “प. ५” ति - मानगा तम आडवरो जक्को त्रिगिमक्को वि भण्णनि तम्म हेट्टा सज्जामनअट्टीणि टवि जति, एव रुद्धर, मातिघरे । कालतो बारम वरिसा । खेतता हत्थमत परिहरणिज्जा ॥६११२॥

आवणमितं व वृद्धं, मेमे त्तिट्टम्मि मग्गण विवेगो ।

सारीरगामपाडग, साहीउ ण गीणिय जाव ॥६११३॥

एनीए पुव्वदस्म इमा विभासा -

अमिवोमाधयणेमु, बारम अविसोहितम्मि ण करेति ।

आसियवृद्धे कीरति, आवामितमग्गिते चेव ॥६११४॥

ज सीयागट्टाण जत्थ रा अमिवओममनाणि बट्टणि त्तिट्टियाणि । आधयण ति - ज थ वा महासगाम-मना बहू, एतसु ठाणेसु अविसोवीण कालतो वारस वरिसा, खेतओ हत्थमत परिहरति सज्जाय ण करेतीत्यथ अट्ट एने ठाणा दवग्गिमादिणा दड्डु । उदगवणा वा तण वृद्धो, गामणयणे वा आवासतेण अण्णो घरट्टाणा सोधिता । “मेस” ति ज गिहीहि न सोधित पच्छा तत्थ सावू टिता अणाणो वमनी समतेण मग्गिता ज दिट्ट त विगिञ्जिता अदिट्टे वा तिण्णि दिणे उग्घाड-उत्सग्ग करेता असज्जम.वा सज्जाय करेइ ॥६११४॥

“२. सारीरगाम” पच्छद्व इमा विभासा -

डहरगामम्मि मते, ण करेती जा ण गीणियं होइ ।

पुरगामे व महंते, वाडगसाही परिहरंति ॥६११५॥

“सारीर” ति मयसरीर त जाव डहरमाणे ण णिफेडिय ताव सज्जाय ण करेति । अह णयरे महंते वा गामे नत्थ वाडगसाधीतो वा जाव ण णिफेडित ताव सज्जाय परिहरंति । मा लागो निदुडुव्वेत्ति उट्टाह करेज्जा ॥६११५॥

चोदगाह - “साहुवमहिसमीवेण मनसरीरस्म जइ पुफवत्थादि किचि पडति न असज्जाय ?”

आचार्य आह -

णिज्जंतं मोत्तूणं, परवयणे पुप्फमाडिपडिमेहो ।

जम्हा चउप्पगारं, सारीरमओ ण वज्जेति ॥६११६॥

मतसरीर उअओ वमधीण हत्थसयव्वतर थ जाव णिज्जइ ताव न असज्जाइय, मेसा पव्वयण-भणिया पुप्फाइ पडिमेहेयव्वा त असज्जाइय न भवति । जम्हा सारोगमसज्जाइय चउप्पवह - सीणिय मस अट्टिय चम्म च । अओ तसु सज्जाओ न वज्जणिज्जो ॥६११६॥

एसो उ असज्जभाओ, तव्वज्जियभातो तत्थिमा मेरा ।

कालपडिलेहणाए, गंडगमरुण दिट्ठतो ॥६११७॥

एसो सजमघायादिनो पवविहो असज्जभाओ भणितो, तेहि चैव पचहि वज्जितो सज्जभाओ भवति । तत्थ ति तम्मि सज्जकायकाले इमा ववखमाणा मेर ति समाचारी - पडिक्कमित्तु जाव वेला ण भवति ताव कालपडिलेहणाए कयाए गहणकाले पत्ते गडगदिट्ठतो भविस्सति । गहिते सुद्धे काले पट्टवणवेलाए मरुणदिट्ठतो भविस्सति ॥६११७॥

स्याद्बुद्धि किमर्थं कालग्रहण ? अत्रोच्यते -

पंचदिहममज्जभायस्स जाणणट्ठाए पेहए काल ।

चरिमा चउभागवसे, मियाड भूमिं ततो पेहे ॥६११८॥

पचविह सजमघायाइय १जइ काल अघेतु सज्जकाय करेति तो चउलहुगा, तम्हा कालपडिलेहणाए णमा सामाचारी-दिवसचरिमपोरिसीण चउभागावसमाते कालग्रहणभूमीअ। ततो पडिलेहेयव्वा । अहवा - ततो उ-चारपायवणकालभूमी य ॥६११८॥

अहियामिया तु अंतो, आसण्णे मज्ज दूर तिण्णि भवे ।

तिण्णेव अणहियामिय, अंतो छच्छच्च बाहिरतो ॥६११९॥

अतो णिवेमणस्म तिणि उच्चारअधियामियथडिले आमण-मज्ज-दूरे पडिलेहेति, अणधियामिय-थडिले वि अतो एव चैव तिणि पडिलेहेति एव अतो थडिल्ल । बाहि पि णिवेणस्म एव चैव छ भवति एत्थ अधियामियदूतरे अणधियामिया आसण्णतरे कायव्वा ॥६११९॥

एमेव य पासवणे, बारस चउवीमतिं तु पेहिता ।

कालस्स य तिण्णि भवे, अह स्रो अत्थमुवयाति ॥६१२०॥

पासवणे वि एतेणैव कमेण बारस, एते सब्बे चउव्वीस । अतुरियममभत उउत्तो पडिलेहिता पच्छा तिण्णि कालग्रहणथडिले डिलेहेति । जहण्णेण हत्थ तरिते । “अह” ति अणतर थडिलपडिलेहजोगाणतर-मेव स्रो अत्थमेति, ततो आवस्सग करेति ॥६१२०॥

तस्सिमो विधी -

अह पुण णिव्वाधारं, आवामंतो करेति मव्वे वि ।

मड्ढादिकहणवाघाततो य पच्छा गुरु ठंति ॥६१२१॥

अहमित्यनतरे सूरत्थमणाणतरमेव आवस्सग करेति, पुनर्विशेषणे दुविधमवस्सगकरण विसेसेति-णिव्वाधानिम वाधानिम च । जइ णिव्वाघात तो सब्बे गुरुसहिता आवस्सय करेति । अह गुरु सड्ढेसु धम्म कहेति तो आवस्सगस्स सार्हीह सह करणिज्जस्स वाघातो भवति, जम्मि वा काले न करणिज्ज आसितस्स वाघातो भवति, ततो गुरु णिग्गज्जधरो य पच्छा चरित्तायारजण्णट्ठा उस्सग ठायति ॥६१२१॥

सेमा उ जहासत्ती, आपुच्छित्ताण ठति सट्ठाणे ।

सुत्तन्थमरणहेतु, आयरिए ठितम्मि देवसिय ॥६१२२॥

१ असज्जकायजाणणट्ठाए काल पेहा - इइ स उक्कड । २ छच्छच्च इत्यपि पाठ ।

मेसा मापू गुरु आपुच्छिता गुह्यागस्म मगता। गमणदूर अहागतिणिज ज जस्म ठाग नय
पत्तिकमनाग हमा टवगा।

गुरु पच्छा ठायता मज्जेग गत्त मट्टाग ठायति।

जे वामतो न अगत्त मज्जेग गत्त मट्टाग ठायति।

ज दाहिगतो अत्तर मज्जेग न च अगत्त ठायति।

मुत्तयमण्डल तस्म य तुव यव ठायता करमि भव स मानियमिति मुत्त करेति।

जाह गुरु पत्त स माहय करत इमिर मे नि भणता ठाग उस्मग्ग ताहे पुव्वट्टिया देवमिया
इयारे चितति।

अण्ण भणति—जाह गुरु सामादय करेति, ताहे पुव्वट्टिता पि त सामाइत करेति। मेस
कण्ठ्य ॥६१००॥

जो होज्ज उ अममत्थो, बालो वुड्डो गिलाण परितंतो।

मो विकहाए विरहिओ, टाएज्जा जा गुरु ठंति ॥६१२३॥

परितता पाट्ठणादि मा वि मज्जायज्जाणारा अच्छइ, जाहे गुरु उति ताह ते वि बालादिया
ति ॥६१०३॥

एतेण विहिणा—

आवामग कानूणं, जिणोवदिट्ठं गुरुवएमेणं।

तिणिण थुट्टे पडिलेहा, कालस्म इमो विही तत्थ ॥६१२४॥

त्रिणेहि गणधराण उवदिट्ठ, तना परपरण जाग अम्ह गुरुवएसग आगत, त काउ आवामग अन
तिणिण धुवीतो करेति। अहवा—एगा एममिलाडया, बितिया विमिलोइया ततिया निमिलोइया, तमि समत्तोए
कालपडिलेहणविधो इमा कायव्वा ॥६१२४॥

अच्छउ ताव विधो, इमो कालभेदो ताव वुच्चति—

दुविहो य होति कालो, वाघातिम एतरो य णायव्वो।

वाघाओ वंधमालाए घट्टणं मडूकहणं वा ॥६१२५॥

पुव्वद्ध कट। जो अतिरितवमही बहुकप्पपडिसेविता य सा घघसाला, एतो गितअतिनाण घट्टणे
पट्टणादिवातातदोमा सड्डकहणेण वेलातिक्कमदोमा ॥६१२५॥

एवमादि—

वाघाते ततिओ मिं, डिज्जति तस्मेव ते णिवेदेति।

णिव्वाघाते दोणिण उ, पुच्छति उ काल वेच्छामो ॥६१२६॥

तस्मि वाघाति दोणिण जे कालपडिलेहणा णिग्गच्छति तेन ततिआ उवज्जायादि दिज्जति। ते
कालगाहिगे आपुच्छा मदिमावण कालपवेयण च मत्त तस्मव कंति, एत्थ मडगदिट्ठतो न भवति। इयरे
उवउत्ता चिट्ठति। मुद्धे काले तत्थव उवज्जायस्म पवयति, ताह डडधर बाहि कालपडियरा चिट्ठइ, इयरे—
दुयगावि अनो पविमति ताह उव ज्जायस्म समेवे मत्त जुगव पट्टवेति, पच्छा एगो डडधरो अतीति, तण
पट्टविने मज्जाय करेति ॥६१२६॥

निष्वाधातो पच्छद ग्रम्यार्थ -

आपुच्छण कितिकम्मे, आवामित खलिय पडिय वाधाते ।

इदिय दिसाए तारा, वामममज्झाइयं चेव ॥६१२७॥

निष्वाधाए दाणि जणा गुरु पुच्छति - काल वेच्छामो, गुण्णा अन्नगुण्णा, कितिकम्म ति वदण दाउ डडग थेनु उवउत्ता आवामितममज्ज करंता पमज्जता य गिग्गच्छति । अनरे य जइ पक्खलति पडनि वा वत्थादि वा विलग्गति कितिकम्मादि किंच वितह करेति, गुरु वा णिचि पडिच्छतो वितह करेति तो कालवाधातो । इमा कालभूमीए पडियरणविधी - इ णिण्हि उवउत्ता पडियरता । 'दिस' ति जत्थ चउरोवि दिमाओ दिस्सति, उडुम्मि निणि ताग जनि दीमति । जइ पुण अणुवउत्ता अणिटो वा इदियविसयो । दिम ति दिम.मोहो दिसाओ तारगओ वा ण दीसति, वास वा पडति अमज्झाइय च जात, तो कालवधो ॥६१२७॥

किंच -

जति पुण गच्छंताणं, छीतं जोतिं च तो णियत्तेति ।

निष्वाधाते दोणिण उ, अच्छंति दिसा णिरिक्खंता ॥६१२८॥

नेसि चेव गुरुममिवाता कालभूमी गच्छंताण ज अतरे जति छीय जोती वा कुमइ तो णियत्तति, एवमादि कारणेहि अवाहता ते निष्वाधातेग दो वि कालभूमीए गता मडासगादि विधीए पमज्जिता णिसण्णा उवट्टिया वा एक्केवको दो दिमाओ णिरिक्खता अच्छति ॥६१२८॥

कि च तत्प कालभूमीए ठिता -

सज्झायमचितेता, कणगं दट्ठूण तो नियट्ठति ।

पत्तेय डडधारी, मा बोल गंडए उवमा ॥६१२९॥

तत्प सज्झाय अकरंता अच्छति, कालवेल च पडियरता । जइ गिम्हे तिणि, सिसिरे पच, वासामु सत्त कणगा पिक्खेज्जा तडा वि नियत्तति । अह निष्वाधाएण पत्ता कालग्गहणवेलए ताहे जो डडधारी सो अतो पविसित्ता साहुसमीवे भणाति - बहुपडिपुण्णा कालवेला, मा बोल करेह । तत्प 'गंडगोवमा पुव्वभणिया कज्जति ॥६१२९॥

'गंडघोसिते बहुएहि सुतम्मी सेसगाण दंडो उ ।

अह तं बहूहि न सुयं, तो डंडो गंडए होति ॥६१३०॥

जहा लोणे गोमादिगडगेणाओसिए बहूहि सुए थेवेसु अमुए गोमादि किच्च अकरंतो सुट्टो भवति, बहूहि अमुए गडगस्स डंडो भवति । तहा इह पि उपमहारेयव्व ॥६१३०॥

ततो डडधरे णिग्गते कालग्गाही उट्टेइ, सो कालग्गाही इमेरिसो -

पियधम्मो दडधम्मो, संविग्गो चेव वज्जमीरू य ।

खेयणो य अभीरू, काल पडिलेहए माहू ॥६१३१॥

पियधम्मो दडधम्मो य । एत्थ चउभगो, तत्थ इमा पडतो भगो - णिच्च समारभउविग्गचित्तो सविग्गो,

वज्र पाव नमस भौम् वज्रभौम्, जह न न भवति नहा जयति, एत्थ कालविहिजाणो खेयणो, सत्तमनो
अभीम् गरिमां सञ्च काल पडियरेत्त पडिजगति - गृह्णातीत्यय ॥६१३१॥

ने य न वेत्त पडियरेत्ता इमेरिस्स काल नि -

कालो मंभा य तहा, दो वि सम्प्येति जह समं चेव ।

तह तं तुनेति कालं, चरिमदिमि वा अमज्झायं ॥६१३२॥

सम्भा धरणीं कालगगणमाडत्त, न कालगगण सम्भा ज सेम एते दो वि जहा सम् सम्प्येति
तहा त कालम्भं तुम्भं, अहवा - निम् उत्तरादियामु म्भं गेह्णति । 'चरिम' ति अवरा तीए वदगय-
सम्भानि वि गिण्हति न दोमो । ६१३२॥

मो कालग्गाही वेत्त तुनेत्ता कालभूमीओ मदिसावणगिमित्त गुरुपादमूल गच्छात्त ।

तत्थ इमा विधी -

आउनपुव्वमणिते, अणपुच्छा खलिय पडिय वाधाते ।

भासंतमूढसकिय, इंदियविसए य अमणुण्णे ॥६१३३॥

जहा णिग्गमाओ आउत्तो णिग्गता तहा पविसतो वि आउत्तो पविसात्त, पुव्वनिग्गतो चेव जह
अणपुच्छा काल गेह्णति पडिमतो वि जति खलति पडति वा एत्थ वि कालुवधातो । अहवा "वाधाए" ति
किरियासु वा मूढो अभिधानो नेट्टुइहालादिहा । भासंतमूढपच्छद - साम्यासिक उवरि वक्ष्यमाण, अहवा - एत्थ
वि इमो अत्था भाणियवा - वदग देतो अण भासतो देति वदग दुओ ण ददाति, किरियासु वा मूढो, भावत्तादिसु
वा सका - "कया ग कय" ति, वदग देतस्स इदिपविसओ वा अमणुण्णमागओ ॥६१३३॥

जिमीहिया णमोक्कारे, काउस्सग्गे य पचमगलए ।

कितिकम्म च करेत्ता, वितिओ कालं च पडियरती ॥६१३४॥

पविसतो तिण्णि णिसीहियाओ करेति, णमो खम्मममाण ति णमोक्कार करेति, इरियावहियाए
पच उस्सासकालिय उस्सग्ग करेति, उस्सारिण णमो अरहताण ति पचमगल चेव कड्ढति, ताहे कितिकम्म
बारसावत्त वदग देति, भणति य - सदिसह पादोसिय काल गेह्णामे, गुरययण गेह्णति । एव जाव कालग्गाही
मदिसावेत्ता भागच्छति । ताव वितिउ नि डडधरो सो काल पडियरेति ॥६१३४॥

पुणो पुव्वुत्तेण विधिणा णिग्गतो कालग्गाही -

थोवावसेसियाए, संभाए ठाति उत्तराहुत्तो ।

चउवीसग दुमपुण्णिय, पुव्वि य एक्केक्क य दिसाए ॥६१३५॥

उत्तराहुत्तो उत्तराभिमुखो डडधारीवि वामपासे रिडु तिरिय डडधारी पुव्वाभिमुखो ठायति
कालग्गाहणमित्त च अट्टुस्सास काउस्सग्ग करेति, अणो च्छुमामिय करेति, उस्सारिण चउवीसय दुमपुण्णिय
सामण्णपुव्वय च, एए तिण्णि अक्खलिय अणुपेहेत्ता पच्छा पुव्वा एए चेव तिण्णि अणुपेहेत्त, एव दक्खिणाए
॥६१३५॥

अवराए य गेह्णत्तस्स इमे उवधाया जाणियव्वा -

विंदू य छीय परिणय, सगणे वा मंकिए भवे तिण्हं ।

भासंत मूढ सकिय, इंदियविसए य अमणुण्णे ॥६१३६॥

गेहन्तस्स जइ अगे उदग बिट पडेज्ज, अप्पणा परेण वा जति छीन, अज्झयण कट्ठु तस्म जति अण्णो भवो परिणतो अनुपपुब्बेत्यथ । सगणे सगच्छे निह् साधूण गज्जिए सका एव विज्जुतादिमु ॥६१३६॥

‘भासन पच्छदस्म पूर्वन्त्यस्तस्य इमस्य च विभग्मा -

मूढो य दिमज्झयणे, भामंतो वा वि गेण्हति न सुज्झे ।

अण्ण च दिसज्झयणं, मंकतोऽणिट्ठविसए य ॥६१३७॥

दिमामोहो मजातो । अह्वा - मूढो दिम पटुच्च अज्झयण वा । कह ? उच्यते - पढमे उतराहु-
त्तेण ठायज्ज सो पुण पुत्तवुत्तो पढम ठायति । अज्झयणेसु वि पढम चउवीसत्थयो सो पुण मूढतणमो दुमपुप्फिय
सामन्नपुप्फिय वा कड्ढति, कुड्ढमेव जणाभिलावेण भामतो कड्ढइ, बुड्ढुडेतो वा गेण्हइ, एव ण सुज्झइ ।
‘मंकनो’ ति पुव्व उत्तराहुत्तेण ठाउ ततो पुव्वाहुत्तेण ठायव्व, सो पुण उत्तराधो भवराहुत्तो ठायति,
अज्झयणेसु वि चउवीसत्थयाधो अण्ण चेव खुड्ढियायारकहादि अज्झयण सकमनि, अह्वा - सकति किं
अधुमीए दिसाए ठितो ‘ण व’ ति ?, अज्झयणे वि किं कड्ढिय ण व ति ? “इदियविसए य अमणुण्णे” ति
अणिट्ठो पत्तो, जहा सोऽदिण रुदित वनरेण वा अट्ठहाम कृत, रूवे विभीसगादिविकृते रूव दिट्ठ, गवे कलेव-
रादिगघो, रसस्तत्रैव, स्रसं अभिनज्वालादि, अह्वा - इट्ठेसु राग गच्छइ अणिट्ठेसु इदियविसएसु दोस,
एवमादि उवषायवज्जिय काल वेत्तु कालनिवेदणाए गुरुसमीव गच्छति ॥६१३७॥

तस्म इम भण्णति -

जो वच्चंतम्मि विधी, आगच्छंतम्मि होति सो चेव ।

जं एत्थं णाणत्तं, तमहं वोच्छं समामेणं ॥६१३८॥

एसा गाहा भद्वाहुकया ।

एईए अतिदेसे कए वि सिद्धसेणखणम्ममणो पुव्वदस्स भणिय अतिदेस वव्व्वाणेति -

आवस्सिया णिमीहिय, अकरण आवडण पडणजोतिक्खे ।

अपमज्जिते य भीते, छीए छिण्णे व कालवहो ॥६१३९॥

जति णितो आवस्सिय ण करेति पविसता वा णिसीहिय, अह्वा - अकरणमिति आसज्ज न करेति
कालभूमीतो गुरुसमीव पट्ठियस्स जति अतरेण साणमज्जारादो छिदति, सेसा पदा पुव्वभणिता । एतेसु सव्वेसु
कालवघो भवति ॥६१३९॥

गोणादिकालभूमी, व होज्ज संमप्पगा व उट्ठेज्जा ।

कविहसिय विज्जु गज्जिय, जक्खालित्ते य कालवहो ॥६१४०॥

पढमयाए गुरु आपुच्छिता कालभूमि गतो, जति कालभूमीए गोण णिसण्ण ससप्पगा वा उट्ठिता
क्खेज्ज तो णियत्तए, जइ काल पडिलेहेतस्स गेहूतस्स वा णिवेदणाए वा गच्छत्तस्स कविहसियादी, एएहि
कालवघो भवति, कविहसित णाम आगासे विकृतरूप मुख वाणरसरिस हास करेज्ज, सेसा पदा गयत्था ॥६१४०॥

कालग्गाही णिवाधाएण गुरुसमीवमागधो -

इरियावहिया हत्थंतरे वि मंगलनिवेदणं दारे ।

सव्वेहि वि पट्ठविए, पच्छा करणं अकरणं वा ॥६१४१॥

जड वि युस्मस्म ह्यन्तरमिने कालो गतिना तद्वा वि कालपवेदगाण ट्रियावहिया पडिक्कमियव्वा पच्चुस्म समेन काल उस्मग्ग करुट, उस्मग्गि वि पच्चमगल ठियग्ग कड्डड, ताहे वडण दाउ काल निवेदेति । सुद्धा प उमिग्गाले ति ताहे डडधर मात्तु मेम सव्वे जुगव पटुवन्ति ॥६१४१॥

वि कारण ? उच्यत पुंस्व 'जम्मरुगदिट्ठता ति -

मन्निहिताण वडारो, पटुवित पमादि णो दए कालं ।

वाहिट्ठिते पडिचरण, पविमनि ताहे य डडधरो ॥६१४२॥

वडो वटगा विनागा एगट्ट । आग्गिओ आगारिता मारिता वा एगट्ट । वडेण आग्गिओ वडारो, तद्वा सो वडारो मग्गिठियग्ग मरुत्तग्ग लव्वन्ति न परोक्कस्म तद्वा दमकत्तादिपमग्गिदस्म पच्छा काल ण देति ॥६१४२॥

'वाहिट्ठिते' पच्छद कठ । 'सव्वहि वि' पच्छद, अस्य व्याख्या -

पटुवित वदिते ताहे पुच्छति केण कि सुतं भंते ! ।

ते वि य कहन्ति सव्वं, जं जेण सुतं च दिट्ठं वा ॥६१४३॥

डडधरण पटुविते वदिग्ग एव सव्वेहि वि पटुविते पुच्छा भवति - "अज्जो केण कि सुय दिट्ठ वा ? दडधरो पुच्छति - अण्णो वा । ते वि सव्व कहन्ति, जनि सव्वेहि भणिय - 'ण किंचि दिट्ठ सुय वा' तो सुद, करति म भय । अह एगेण वि फुड ति विज्जमादि दिट्ठ, गज्जितादि वा सुत, ततो अमुद्वे ण करेति ॥६१४३॥

अह मकिनो -

एक्कस्म दोण्ह वा संकितम्मि कीरइ ण कीरई तिण्हं ।

मगणम्मि संकिते पर-गणम्मि गंतु न पुच्छन्ति ॥६१४४॥

जति एगेण सदिट्ठ सुत वा तो कीरति सज्जाओ, दोण्ह वि सदिट्ठ कीरइ, तिण्ह विज्जुमादिसदेह ण कीरइ सज्जाता तिण्ह अण्णोणसदेहे कीरइ, सगणमकिते परगणवयणतो सज्जाओ ण कायव्वो । खेत्तविमा गेण तेसि चैव असज्जाइयमभवो ॥६१४४॥

"ज अण्य णाणत्त तमह वोच्छ समासेण" ति अस्यार्थ -

कालचउक्के णाणत्तगं तु पादोसियाए सव्वे वि ।

समयं पटुवयती, सेसेसु समं व विसमं वा ॥६१४५॥

एय सव्व पादोसिकाले भणिय । इदाणि चउसु कालेसु किंचि सामण्ण, किं चि विमेषिय भणामि-पादाणि इडधर एक्क मोत्तु मेमा सव्वे जुगव पटुवन्ति । मेमेसु तिसु अड्ढरत्त वेरत्तिय पाभातिए य सम वा विसम वा पटुवन्ति ॥६१४५॥

कि चान्यत् -

इंदियमाउत्ताणं, हणति कणगा उ तिण्णि उक्कोसं ।

वामासु य तिण्णि दिमा, उदुवद्धे तारगा तिण्णि ॥६१४६॥

मुटु इदियउवनेहि मव्वकाले पडिजागरियव्वा घेतव्वा । कणगेसु कालमखाकओ विसेसओ ? भण्णति - तिण्णि 'मिग्गमुवहणति नि तेण उक्कांग भण्णति, चिरेण उवघातो त्ति तेण सत्त जहण्णे, सेस मभिम्म ॥६१४६॥

अस्य व्याख्या -

कणगा हणंति कालं, ति पंच मत्तेव विंसिसिरवामे ।

उक्का उ सहेगागा, पगासजुत्ताव नायव्वा ॥६१४७॥

कणगा मिह्णे मिसिरे पव वामासु सत्त उवहणति, उक्का एक्का चेव उवहणति काल कणगे सण्हरो पगामविरहितो य, उक्का महनरेहा पगामकारिणी य, अहवा - रेहविरहितो वि फुलिगो पट्टमकारो उक्का चव ॥६१४७॥

‘वामासु य तिण्णि दिसा’ अस्य व्याख्या -

वामासु व तिण्णि दिसा, हवंति पाभातियम्मि कालम्मि ।

सेमेसु तिसु वि चउरो, उडुम्मि चतुरो चतुदिसिं पि ॥६१४८॥

जत्थ ठिनो ामकाले तिण्णि विदिसा पेक्कड, तत्थ ठिनो पभातिय काल गेण्हति, सेमेसु तिसु वि कालेसु वामासु चेव । जत्थ ठिनो चउरो दिसाविभागे पचउति तत्थ ठिनो गेण्हइ ॥६१४८॥

“उदुवद्धे तारगा तिण्णि” ति अस्य व्याख्या -

तिसु तिण्णि तारगाओ, उडुम्मि पाभाइए अदिट्ठे वि ।

वामासु अतारागा, चउरो छन्ने निविट्ठो वि ॥६१४९॥

तिसु कालेसु पाउसिते अडुरत्ति ए य जहण्णेण जति तिण्णि तारगा पेक्खति तो गेण्हति, उडुवद्धे चेव अन्नादिसयडे जति वि एक पि तार ण पेक्खति तथा वि पभातिय काल गेण्हति, वासाकाले पुण चउरो वि काला अन्नसयडे तारगसु अहीसनीसु गिण्हति ॥६१४९॥

“छण्णे निविट्ठो वि” ति अस्य व्याख्या -

ठागासति बिदूसु व, गेण्हति विट्ठो वि पच्छिम्मं कालं ।

पडियरति बहिं एक्को, गेण्हति अंतठिओ एक्को ॥६१५०॥

जति वसहस्स बाहि कालगाहिस्स ठागो णत्थि ताहे अतो छण्णे उद्धट्ठितो गेण्हति, अह उद्धट्ठियस्स वि अतो ठागो णत्थि ताहे अतो छण्णे चेव निविट्ठो गेण्हति । बाहि ठितो य एक्को पडियरति, वामबिदूसु पडनीसु गियमा अतो ठिओ गिण्हइ, त थ वि उद्धट्ठिओ निसण्णो वा, नवर - पडियरगो वि चेव ठिओ पडियरइ । एम पाभाइए गच्छुवग्गहट्ठा अववायविही, सेसा काला ठागासति न वेत्तव्वा आइण्णओ वा जाणियव्व ॥६१५०॥

कम्म कालम्म क दिस अभिसुहेहि पुव्व ठायव्वमिति भण्णात -

पादोमिय अडूरत्ते, उत्तरदिसि पुव्वपेहेए कालं ।

वेरत्तियम्मि भयणा, पुव्वदिसा पच्छिमे काले ॥६१५१॥

१ गा० गिम्हेउ, इत्थपि पाठ । २ गा० ६१४६ । ३ गा० ६१४६ । ४ गा० ६१४६ ।

पादामि अद्भरति गियमा उत्तरमुद्रो ठानि, वेरति ए भयणि नि इच्छा, उत्तरमुद्रो पुव्वमुद्रा वा,
पाभामि पुव्व - गियमा पुव्वमुद्रो ॥६१५१॥

इदाणि कालगहण पमाण भणति -

कालचउक्कं उक्कोमएण जहण्णेण तिगं तु बोधव्वं ।

वितियपदम्मि दुगं तु, मातिट्ठाणा विमुक्काणा ॥६१५२॥

उम्मग्गे उक्कोसेण चउरा काला वेण्णति, उम्मग्गे चेव - जहण्णेण तिग भणति । “वितियपद”
नि - अयवादी तण कालदुग भवति, अम यावित कारगे अगुणहानम्येय्य । अहवा - उक्कोमएण चउक्क
भणति । अहवा - जहण्णे हाणिपद तिग भवति, एक्कम्मि अगहिते इत्यथ । वितिए हाणिपदे दुग भवति,
द्वयोरगुणहानादित्यथ । एव अमायाविणो तिणि वा अगोण्हतस्म एक्को भवति । अहवा - मायाविमुक्तस्य
कारणे एकमपि काल अगुण्हत न दोष, प्रायश्चित्त वा न भवति ॥६१५२॥

कह पुण कालचउक्क ? उच्यते -

फिटितम्मि अद्भरत्ते, कालं वेत्तु सुवन्ति जागरिता ।

ताहे गुरू गुणन्ती, चउत्थे मव्वे गुरू सुवन्ति ॥६१५३॥

पादोसिय काल वेत्तु पोरणि काउ पुण्णपोरिणी सुनपादी सुवन्ति, अत्यचित्ता उक्कालियपाद्विणो
य जागरति जाव अद्भरत्ते । ततो फिटिए अद्भरत्ते काल वेत्तु ते जागरिता सुवन्ति, ताहे गुरू उट्ठिता गुणति
जाव चरिमो जामो पत्तो । चरिमे जामे मव्वे उट्ठिता वेरत्तिय वेत्तु सज्ज य करेंति ताहे गुरू सुवन्ति । पत्ते
पाभानिते काले जो पभातियकाल वेच्छिहिति सो कालस्म पडिक्कमिउ पाभाइयकाल गेण्हइ, मेमा कालवेत्ताए
पालस्म पडिक्कमिति, तत्रो आवस्सय करेंति । एव चउरो काला भवति ॥६१५३॥

निणिण कह ? उच्यते - पाभानिते अगहिते सेसा तिणिण भवे ।

अहवा -

गहितम्मि अद्भरत्ते, वेरत्तिय अगहिते भवे तिणिण ।

वेरत्तिय अद्भरत्ते, अतिउवओगा भवे दुब्धि ॥६१५४॥

वेरत्तिए अगहिण्ण सेसेसु गहितेसु तिणिण, अद्भरत्तिए वा अगहिते तिणिण, पादोसिए वा अगहिते
तिणिण ।

दोणिण कह ? उच्यते ।

पादोसियअद्भरत्तिएसु गहिण्ण सेसेसु अगहिण्ण दोणिण भवे ।

अहवा - पादोसिए वेरत्तिए य गहिते दोणिण ।

अहवा - पादोमितपभातितेसु गहिण्ण सेसेसु अगहिण्ण दोणिण, एम कप्पो विकप्पे । पादोसिएण
चेव अणुवहतेण उवओगतो सुपडिजग्गिएण मव्वकाले पठति ण दोसो ।

अहवा - अद्भरत्तियवेरत्तियगहिते दोणिण ।

अघवा - अद्भरत्तियपभातिएसु गहितेसु दोणिण ।

अहवा - वेरत्तियपभातिएसु दोणिण । जया एक्को ततो अणतरो गेण्हति ।

कालचउक्ककारणा इमे - कालचउक्कगहण उस्सग्गतो विही चेव ।

अह्वा - पाश्रोमिण् गहिण उवहते अङ्गुत्ते घेतु सज्झाय करेति तम्मि वि उवहते वेरत्तिय घेतु सज्झाय करेति, पाभानिनो दिवमट्ठा घेतुवो चेव एव कालचउक्क णिट्ठ । अणुवहते पुण पाउसिते सुपडि जग्गिने सव्वरत्ति पढति अङ्गुत्तिण्ण वि वेरत्तिय पढति, वेरत्तिण्ण अणुवहते सुपडिजग्गिनेण पाभानियमसुद्धे विट्ठ दिवमतो वि पढति ।

कालचउक्के अग्गहणकारणा इमे - पादोसिय ण गेण्हति, असिवादिकारणतो ण सुज्झति वा, पादो मिण्ण वा सुपडिजग्गितेण पढति ति ण गेण्हइ, वेरत्तिय कारणता ण सुज्झति वा पादोसिय अङ्गुत्तिण्ण वा पढति ति ण गेण्हति, पाभातित ण गेण्हति, कारणतो ण सुज्झति वा ॥६१५४॥

इदार्धाण पाभानितकालग्गहणे विधिपत्तेय भणामि -

पाभाइतम्मि काले, सच्चिक्खे तिण्णि छीयरुण्णाइं ।

परवयणे खरमादी, पावासिय एवमादीणि ॥६१५५॥

पाभातियम्मि काले गहणविधी य ।

तत्थ गहणविधी इमा -

णवकालवेलमेसे, उवग्गहिय 'अट्ठया पडिक्कमते ।

ण पडिक्कमते वेगो, नववारहते धुवमसज्झाओ ॥६१५६॥

दिवसनो सज्झाविरहियाण देसादिकहासभवे वज्जणट्ठा, मेहावीतराग य पलिमगवज्जणट्ठा, एव सव्वमिसमुग्गहट्ठा णवकालग्गहणकाला पाभातिण्ण अग्गहण्णाया, अतो णवकालग्गहवेलाहि पाभातियकालग्गाही कालस्स पडिक्कमति, सेसा वि त वेल उवउत्ता चिट्ठति कालस्स त वेल पडिक्कमति वा ण वा । एगो णियमा ण पडिक्कमइ, जइ छीयरयादीहि न सुज्झिहि ति तो सो चेव वेरत्तिओ पडिग्गहिओ होहि ति, सो वि पडिक्कतंसु गुरुस्स काल वेदिता अणुदिण्ण सूरिण कालस्स पडिक्कमते, जति य वेण्णमाणो णववारा उवहओ कालो तो णजति जहा धुवमसज्झाइयमत्थि, न करेति सज्झाय ॥६१५६॥

नववारग्गहणविधी इमो ।

“सच्चिक्ख तिण्णि छीयरुण्णाणि” ति अस्य व्याख्या -

एक्केक्को तिण्णि वारा, छीतादिहतम्मि गेण्हती काल ।

चोदेति खरो बारस, अणिट्ठविसण्ण व कालवहो ॥६१५७॥

एक्कस्स गेण्हतो छीयरयादिहते सच्चिक्खति ति गहणा विरमतीत्यर्थं, पुणो गेण्हइ, एव तिण्णि वारा । ततो पर अण्णो अण्णम्मि थडिले तिण्णि वारा । तस्स वि उवहते अण्णो अण्णम्मि थडिले तिण्णि वारा । तिण्ह असनीते दोण्णि जणा णववाराओ पूरेति । दोण्ह वि असतीए एक्को चेव णववाराओ पूरेति । थडिलेसु वि अणववातो तिसु दोसु वा एक्कम्मि वा गेण्हति ।

“परवयणे खरमादि” ति अस्य व्याख्या - ‘चोदेति खरो पच्छइ ।

चोदगाह -

“जइ रुदितमण्डि कालवहो ततो खरेण रडिते बारस वरिसे उवहम्मउ । अण्णोसु वि अणिट्ठइदिय-विसएसु एव चेव कालवहो भवति ॥६१५७॥

१ उवगहितट्ठयाए इत्यपि पाठ । २ गा० ६१५५ ।

आचार्यादि—

चोदग माणुमणिट्टे, कालवहो समगाण तु पहारे ।

पावामियाए पुच्चं, पण्णवणमणिच्छे उग्घाडे ॥६१५८॥

माणुमसं अणिट्टे कालवहा, समगतिरिया तस्मि जति अणिट्टा पहारसट्ठो सुणिज्जति तो कालवहो ।

“पावामिय” अस्य व्याख्या — पावामिया पच्छद्व, जति पभातियकालमहणवेलाए पवासिय-
भज्जा पतिगा गुग समग्गी दिण दिणे स्वेज्जा ता तीए रवणवेलाए पुच्चतरो काला घेतव्वो । अह सा पि
पच्चस स्वेज्ज नाह दिवा गतु पण्णविज्जनि, पण्णवणमणिच्छाए उग्घाडगकाउस्सगो कीरति ॥६१५८॥

“गवमादीणि त्ति अस्य व्याख्या—

वीमरमदस्वते, अच्चत्तग-डिभगम्मि मा गिण्हे ।

गोमे दरपट्टविते, तिगुण च्छीयऽण्णहिं पेहे ॥६१५९॥

अच्चत्तगपेण रवण न वीमरस्मर भण्णति, त उवहणते । ज पुण महुसद् धोलमाण च नोवहणइ ।
जाव अजपरि ताव अच्चत्त, त अण्णेगवि विस्सरसरेण उवहणति, महत्तउस्सभररोवणेण वि उवहणति ।
पाभातिगकालमहणविधी गया, इयाणि पाभातियट्टवण विधी —

“गोमे दर” पच्छद्व, गोमि त्ति उदिने आदिच्चे दिसावलोय करेत्ता पट्टवेंति । दरपट्टविति त्ति अद्द
पट्टविने जति छीयादिणा भग्ग पट्टवण अण्णो दिसावलोग करेत्ता तत्थेव पट्टवेंति, एव तित्तियवाराए वि ॥६१५९॥

दिसावलोयकरणे इम कारण —

आइण्णपिमित महिया, पेहंता तिण्णि तिण्णि ठाणाड ।

णववार सुते कालो, हतो त्ति पढमाए ण करेति ॥६१६०॥

आइण्णपिमिय आतिण्णपोमल त काकमादीहि आणिय होज्ज, महिया वा पडिउमारडा,
एवमादि एगट्टाणे तयो वारा उवहने हत्थसयवाहि अण्ण ठाण गतु पेहति पडिलेहति पट्टवेंति त्ति वुत्त भवति,
तत्थ वि पुच्चुत्तविहाणेण तिण्णि वारा पट्टवेंति । एव वित्तियट्टाणे वि असुद्धे ततो वि हत्थसय अण्ण ठाण गतु
तिण्णि वारा पुच्चुत्तविहाणेण पट्टवेंति, जइ सुद्ध तो करेति सज्झाय णववारा । सुत्तादिणा हते णियमा
हतो कालो, पढमाए पोरिसीए ण करेति सज्झाय ॥६१६०॥

पट्टवितम्मि सिल्लोगे, छीते पडिलेह तिण्णि अण्णत्थ ।

सोणित्थ सुत्त पुरीसे, घाणालोगं परिहरिज्जा ॥६१६१॥

जया पट्टवणातो तिण्णि दु अज्झयणा सम्मत्ता तदा उवरि एवो सिल्लोगे ऋडिडयव्वो, तम्मि समत्ते
पट्टवणे सम्पति ॥६१६१॥ “तत्त्वज्जो भातो” बिनियपादो मतत्थो ।

“सोणिय त्ति अस्य व्याख्या —

आलोगम्मि चिलिमिली, गंधे अण्णत्थ गतु पकरेंति ।

वाधातिम कालम्मी, गडगमरूणा णवरि णत्थि ॥६१६२॥

१ गा० ६१५५ । २ गा० ६१५५ । ३ छीए छीए तिगी पेहे (आव०वृ०) । ४ गा० ६१६१ ।
५ गा० ६११७ ।

जत्थ मज्झानिय करेनहि सोणियचिरिका दिस्सति तत्थ ण करेति मज्झाय, कडग चिलिमिली वा अनर दाउ करेति । जत्थ पुण सज्झाय चेव करेताण मुत्तपुरीसक्केवरादियाण य गघो, अणम्मि वा असुभगघे आगच्छने नत्थ मज्झाय ण करेति, अणत्थ गत करेति । अण्ण पि बघणमेहणादिआलोग परिहरिज्जा । एय सब्ब जिब्बाघान्नाले भणित । वाधातिमकाले वि एव चेव, णवर - गडगमरुद्धिदुत्ता ण भवति ॥६१६२॥

एतेमामणत्तरे, असज्झाते जो करेइ सज्झाय ।

सो आणा अणवत्थं, मिच्छन् विराघणं पावे ॥६१६३॥

वितियागाढे सागारियादि कालगत अहव वोच्छेदि ।

एतेहि कारणेहिं, जयणाए कप्पती काउ ॥६१६४॥

दो वि कठाओ ॥६१६५, १४॥

जे भिक्खु अप्पणो असज्झाडए सज्झायं करेइ,

करेतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१६॥

अप्पणो सरीरसमुत्थे असज्झातिते मज्झाओ अप्पणा ण कायवो, परस्स पुण कायवो, परस्स पुण बायथा दायव्वा । महत्तेसु गच्छेमु अन्वाउलत्तणओ समणीण य णिच्चोउयममवो मा सज्झाओ ण भविस्सति, तेण बायणसुत्ते विही भणति ।

आयसमुत्थमसज्झाडयस्स इमे मेदा -

अन्वाउलाण णिच्चोउयाण मा होज्ज निच्चमज्झाओ ।

अदिमा भगदलादिसु, इति बायणसुत्तसंबधो ॥६१६५॥

आतसमुत्थमसज्झाडयं तु एगविहं होति दुविहं वा ।

एगविहं समणाण, दुविहं पुण होति समणीण ॥६१६६॥

एगविह समणाण त च व्रणे भवति, समणीण दुविह व्रणे उदुसमवे च ॥६१६६॥

इम व्रणे विहाण -

धोतम्मि य निप्पगले, बध्वा तिण्णेव होंति उक्कोमा ।

परिगलमाणे जयणा, दुविहम्मि य होति कायव्वा ॥६१६७॥

पढम विय व्रणो हत्थसयस्स बाहिरतो धाविउ णिप्पगलो कनो नतो परिगलने तिणिण बघा उक्कोसेण करेतो वाएति । दुविह व्रणसमव उउय च, दुविहे वि एव पट्टगजयणा कायव्वा ॥६१६७॥

समणो उ वणे व भगंदले व बंधेक्कका उ वाएति ।

तह वि गलंते छारं, दाउं दो तिणिण वा बंधे ॥६१६८॥

“व्रणे धोयणिप्पगले हत्थसयबाहिरतो पट्टग दाउ वाएइ, परिगलमाणेण मिण्णे तम्मि पट्टगे तस्सेव उवरि छार दाउ पुणो पट्टग देति वातेति य, एव ततिय पि पट्टग बवेज्जा बायण च देज्ज, ततो पट्ट परिगलमाणे हत्थसयबाहिर गतु व्रण पट्टगे य धाविउ पुणो एतेणेव क्रमेण वाएति । अहवा - अणत्थ गतु पढति ॥६१६८॥

एमेव य समणीणं, वणम्मि इतरम्मि सत्तवंधा उ ।

तह वि य अठायमाणे, धोउणं अहव अण्णन्थ ॥६१६६॥

इयरति उडुअ एव चव, णवर - सत्तवंधा उक्कोमेण कायव्वा, तह वि अट्टते हत्थसयबाहिरनो
धाविउ णो वाणि, अहवा - अण्णन्थ पढति ॥६१६६॥

एतेमामण्णतरे, असज्झाए अप्पणो व सज्झायं ।

जो कुणति अजयणाए, सो पावति आणमादीणि ॥६१७०॥

आणादिया य दासा भवति ।

इमे य -

सुयणाणम्मि य भत्ती, लोगविरुद्धं पमत्तल्लणा य ।

विज्जामाहण वइगुण्ण धम्मयाए य मा कुणसु ॥६१७१॥

सुयणाणे अणुवचरतो भभत्ती भवति । अहवा - सुयणाणभत्तिरागेण असज्जातिने सज्झाय मा
कुणसु, उवदेसो एम-ज लोगधम्मविरुद्ध च त ण कायव्व । अविहीए पमत्तो लभमति त देवया छलेज्ज । जहा
विज्जामाहणवइगुण्णयाए विद्या न मिज्जति तथा इह पि कम्मखमो न भवइ । वैगुण्य वैधर्मता - विपरीतमावे-
त्तय । “धम्मया ए य” सुयवम्मस एम धम्मो ज असज्झाइए सज्झायवज्जण ण करेनो सुयणाणाया
विरुद्ध, तम्हा मा कुणसु ॥६१७१॥

चोदकाह - ‘जति दत्तमद्विममोगियादी असज्झाया, णणु देहो एयमनो चव, कह तेण
सज्झाव करेह ?’

आचार्याहि -

कामं देहावयवा, दंतादी अवजुता तह विवज्जा ।

अणवजुता उ ण वज्जा, इति लोगे उत्तरे चेवं ॥६१७२॥

काम चोदगामिप्पायअणुमयत्वे सच्च, तम्मयो देहोवि । सरीरायो अवजुत ति पृथग्भावा ने
वज्जगिज्जा, जे पुण अणवजुता तत्थत्वा ते ण वज्जगिज्जा, इति उपप्रदर्शने । एव लोके दृष्ट, लोकोत्तरेऽ
प्यत्रमित्यथ ॥६१७२॥

कि चान्यत् -

अब्भंतरमललित्तो, वि कुणति देवाण अच्चणं लोए ।

बाहिरमललित्तो पुण, ण कुणइ अवणेइ य ततो णं ॥६१७३॥

अब्भतरा मूत्रपुरीषादी, तेहिं चव बाहिरे उवलित्तो कुणइ तो अवण्ण करेइ ॥६१७३॥

कि चान्यत् -

आउट्टियावराहं, सन्निहिता ण खमए जहा पडिमा ।

इय परलोए दंडो, पमत्तल्लणा य इति आणा ॥६१७४॥

जा य पडिमा मणिहिय ति देवयाअधिठिता, सा जति कोइ अणादिण्ण आउठित ति जागतो बाहिरमललितो न पडिम छिवति, अरुचण वा से कुणइ तो ण खमइ, खेत्तादि करेइ, रोग च जणेइ, मारेइ वा । इय ति — एव जो अस भाइए सज्ज य करेति तस्स णाणायारविराहणाए कम्मबबो, एम मे परलोइओ दडो, इह लोण पमत्त देवता छुलेज्ज स्यात् । अणादिविराधगा वा धुवा चेव ॥६१७४॥

कोइ इमेहि अप्पसत्थकारणेहि असज्जाइए सज्जाय करेज्ज —

रागा दोमा मोहा, असज्जाए जो करेज्ज सज्जायं ।

आमायणा तु का से, को वा भणितो अणायारो ॥६१७५॥

रागेण दोमेण वा करेज्ज । अहवा — दरिमणमोहमोहितो भणेज्ज — का अमुत्तस्स णाणस्स आसायणा ? को वा तस्म अणायारो ? — नाम्नीत्यथ ॥६१७५॥

एनेसि इमा विभासा —

गणिमदमाइमहितो, रागे दोमेण ण सहती सडं ।

सव्वमसज्जायमय, एमादी हांति मोहाओ ॥६१७६॥

महिओ ति हट्टुनृष्टनदितो, परेण गणिवायगो वाहरिज्जतो भवति, तदभिलासी असज्जाति एव सज्जाय करेइ, एव रागे । दोसेण — कि वा गणी वाहरिज्जति वायगो ? अह पि अधिज्जामि जेण एयस्स पडिमवनिभूतो भवामि, जम्हा जीवसरीरावयवो — असज्जायमय न श्रद्धातीत्यथ ॥६१७६॥

इमे दोमा —

उम्मायं च लभेज्जा, रोगायकं च पाउणे दीहं ।

तित्थकरभासियाओ, खिप्प धम्माओ भंसेज्जा ॥६१७७॥

खित्तादिगो उम्मानो, चिरकालिगो रोगो, आसुघाती आयको — एस वा पावेज्ज, धम्माओ भसो, मिच्छादिट्ठो वा भवति, चरित्ताओ वा परिवडति ॥६१७७॥

इह लोए फलमेयं, परलोए फलं न देंति विज्जाओ ।

आसायणा सुयस्स य, कुव्वति दीहं तु ससार ॥६१७८॥

सुयणाणायारविवरीयकारी जो सो णाणावरणिज्ज कम्म वधति, तदुदयाओ य विज्जाओ कयोवचाराओ वि फल ण देंति-ण सिद्धय तीत्यथ, विघोए अकरण परिभवो एव सुतासादणा, अविघोए वट्टनो गियमा अट्ट कम्मगतीओ वधइ, हस्सट्टितियाओ दीहठिईओ करेइ, मदाणुभावा य तिव्वाणुभावाओ करेइ णप्पपदेसाओ य बहुपदेसाओ करेति, एवकारी य गियमा दीह ससार णिव्वत्तेति । अहवा — णाणायारविराहणाए दमणविराहणा, णाणदसणविराहणाहि गियमा चरणविराहणा । एव तिण्ह विराहणाए अमोक्खो, अमाक्खे गियमा ससारो ॥६१७८॥

वितियागाढे सागारियादि कालगत असति वोच्छेदे ।

एएहिं कार्णेहिं, कप्पति जयणाए काउं जे ॥६१७९॥ पूर्ववत्

सव्वन्थ अणुप्पेहा अप्रतिसिद्धादित्यर्थ ।

जे भिक्खू हेठ्ठिल्लाईं समोमरणाइं अवाएत्ता उवरिन्ल्लाईं समोमरणाइं वाएइ,
वाएतं वा मातिज्जति ॥सू०॥१७॥

आवामगमादीयं, सुयणाणं जाव बिंदुमाराओ ।

उक्कमओ वाटेंते, पावनि आणाइणो दोमा ॥६१८०॥

ज जस्स अ दीग त नम्म णिट्ठिल्ल ज जस्स उवरिन्ल त तस्स उवरिन्ल, जहा दमवयालिसमा
वस्संग हेठ्ठिल्ल, उवरिन्लयाणा दमवयालिय हेठ्ठिल्ल, एव णेय जाव बिंदुमारेति ॥६१८०॥

सुत्तन्थ तदुभयाणं, ओमरणं अहव भावमादीणं ।

तं पुण नियमा अंगं, सुयखंधो अहव अज्झयणं ॥६१८१॥

समांमरण णाम मेलघो, सो य सुत्तत्थाण, अहवा - जीवादि णवपदत्थभावाण । अहवा -
दब्बखेतकायभावा, एए जत्थ समोमडा मव्वे अन्थिनिटुत्त भवति, त समोमरण भणति ।

त पुण कि होज्ज ? उच्चने-अग, सुयक्खघो, अज्झयण, उहेमगो । अग जहा आयारो न अवाएत्ता
सुयगडग वाएति । सुयक्खधा-जहा भावस्सय त अवाएत्ता दमवयालियसुयखंध वाएति । अज्झयण जहा सामाति
अवाएत्ता च उवीसत्थय वाएति, अहवा - सत्थपरिणा अवाएत्ता लोगविजय वाएति । उहेसमेसु जहा सत्थ-
परिणाए पढम सामन्नउहेसिय अवाएत्ता पुढविकाउहेसिय बितिय वाएति । एव सुत्तेसु वि दट्ठव्व । अहवा -
दोसु सुयक्खधेसु जहा बभचेरे अवाएत्ता आयारगे वाएति । सव्वत्थ उक्कमतो । एव नम्म आणादिया दोमा
चउलहुगा य, अत्थे चउगुरु भणति, पमत देवया छत्तेज्ज ॥६१८१॥

इमो य दोमो -

उवरिसुयममदहणं, हेठ्ठिल्लेहि य अभावितमतिस्स ।

ण य तं भुज्जो गेण्हति, हाणी अण्णोसु वि अदण्णो ॥६१८२॥

हेठ्ठिल्ला उत्सगमुता तेहिं अभावित्स उवरिल्ला अववादसुया ते ण सह्हति अतिपरिणामगो
भवति, पच्छा वा उत्सग न रोचेइ अतिक्रामेय नि काउ त ण गेण्हति । अण्ण उवरिगेण्हति एव आदिसुत्तस्स
हाणी ताममित्थय । आदिसुत्तवज्जितो उवरिसु अट्ठागेण य पयत्तेण बहुस्सुतो भणति, पुच्छिज्जमाणो य पुच्छ
ण णिव्वहति, जारिसो एस अणायगा तारिसा अण्णे वि एव अण्णेमि पि अवण्णो भवति, जम्हा एवमादी दोसा
तम्हा परिवाडीए दायव्व ॥६१८२॥

इमो अववातो -

णाऊण य वोच्छेदं, पुव्वगते कालियाणुजोगे य ।

सुत्तत्थ तदुभए वा, उक्कमओ वा वि वाएज्जा ॥६१८३॥

रियधम्म-दढधम्मस्स, निस्सगतो परिणामगस्स, सविगसभावस्स, विणीयस्स परममेहाविणो -
एरिसस्स कालियसुत्ते पुव्वगए च मा वोच्छिज्जउत्ति उक्कमेण वि देज्ज, ॥६१८३॥

जे भिक्खू णवबंभेचेराइं अवाएत्ता उवरियसुयं वाएइ

वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥१८॥

णवबभवेगगहणेण सव्वो आयारो गहितो, अहवा - सव्वो चरणाणुओगो न अवाएत्ता उत्तमसुत वाएति, तस्स आणादिया दोमा चउलहु च ॥६१८२॥

किं पुण त उत्तमसुत ? उच्यते -

छेयसुयमुत्तमसुयं, अहवा वी दिट्ठिवाओ भण्णइ उ ।

जं तहि सुत्ते सुत्ते, वण्णिज्जइ चउह अणुओगो ॥६१८४॥

पुव्वद्ध कठ । अहवा - बभवेरादी आयार अवाएत्ता धम्माणुओग इस्सिभासियादि वाएति अहवा - सूरपण्णित्तियाइगणियाणुओग वाएति, अहवा - दिट्ठिवात्त दवियाणुओग वाएति, अहवा - जदा चरणाणुओगो वातिता तदा धम्माणुओग अवाएत्ता गणियाणुओग वाएति, एव उक्कमो चारणयाए सव्वो वि भासियव्वो, एव सुत्ते ।

अत्ये वि चरणाणुओगस्स अत्ये अवहेत्ता धम्मादियाण अत्ये वहेति ० ० । आदेसओ वा चउगुए ।

छेदसुय कम्हा उत्तमसुत्त ? , भण्णति - जम्हा एत्थ सपायच्छित्तो विधी भण्णति, जम्हा य तेण चरणविसुद्धी करेति, तम्हा त उत्तमसुत्त ।

दिट्ठिवाओ कम्हा ? , उच्यते - जम्हा तत्थ सुत्ते चउरो अणुओगो वण्णिज्जति, सव्वहिं गयविहीहिं दव्वा दमिज्जति, विविधा य इड्डीया अतिसत्ता य उण्णज्जति, तम्हा त उत्तमसुत्त । एव सुत्तस्स उक्कमवायणा वज्जिया ॥६१८३॥

अत्यम्स कहु भाणियव्व ? , उच्यते -

अपुहुत्ते अणुओगो, चत्तारि दुवार भासई एगो ।

पुहुत्ताणुओगकरणे, ते अत्थ तओ उ वुच्छिन्ना ॥६१८५॥ कट्था

अहवा - मुत्तवायण पडुच्च कमो भण्णति णो अट्ठ पट्ठवण ।

कम्हा ? , जम्हा सुत्ते सुत्ते चउरो अणुओगो दमिज्जति ।

उक्त च -

अपुहुत्ते व कहेंते, पुहुत्ते वुक्कमेण वाययंतम्मि ।

मुव्वभणिता उ दोमा, वोच्छेदादी मुणेयव्वा ॥६१८६॥ कट्था

णवर - वोच्छिज्जति एगसुत्ते चउण्हमणुओगाण जा कहणविधी सा पुत्तकरणेण वोच्छिण्णा, ण सपय पवत्तइ णज्जइ वा, अहवा - तेसि अत्थाण कहणसरूवेण एगसुत्ते ववत्थाण वोच्छिण्ण पृथक् स्थापित मित्थयं ॥६१८५॥

केण पुहत्तीकय ? , उच्यते -

बलवुट्ठिमेहाधारणाहाणी णाउ विज्झ दुव्वलियपूसमित्त च पडुच्च -

देविंदवदिएहिं, महाणुभागेहि रम्मिअ अज्जेहिं ।

जुगमासज्ज विभत्तो, अणुओगो तो कओ चउहा ॥६१८७॥ कट्था

के पुण ते चउरो अणुओगो ? , उच्यते -

कालियसुयं च इस्सिभासियाणि तइयाए सूरपण्णत्ती ।

जुगमासज्ज विभत्तो, अणुओगो तो कओ चउहा ॥६१८८॥ कट्था

अथवा - किं कारणं णयवज्जिनो चरणाणुभोगो पढम दारठविय ? , उच्यते -

णयवज्जिओ वि हु अल, दुक्खक्खल्यकारओ सुविहियाण ।

चरणकरणाणुओगो, तंण कयमिण पढमदारं ॥६१८६॥ कट्ठा

शिष्टप्राह - “कालियसुय आयारादि एक्कारम अगा, तथ पक्कपो आयारगतो ।

जे पुण अगवाहिग छेयमुयज्झयणा ने कत्थ अणुभोगे वत्तवा ? उच्यत -

ज च महाकप्पमुयं, जाणि य मेमाड छेदमुत्ताइं ।

चरणकरणाणुयोगो, ति कालियछेओवगयाणि य ॥६१८७॥

आवस्सय दसवेयालिय चरणघम्मगणियदवियाण पुहताणुभोगे ।

कमठवे कारण इम -

अपुहत्ते वि हु चरणं, पढमं वणिज्जते ततो धम्मो ।

गणित दवियाणि वि ततो, सो चेव गमो पुहत्ते वी ॥३१६१॥ कट्ठा

तमु पुण जुगव वणिज्जमाणसु इमा विधी -

एक्केक्कम्मिउ मुत्ते, चउण्ह दाराण आमि तु विभामा ।

दारं दारं य नया, गाहगमेण्हतए पप्प ॥६१६२॥

मुत्ते मुत्ते चउरो दार ति अणुभोगा, पुणो एक्केक्को अणुभोगो णएहि चितिज्जति, ने य नया गाहग पटुब्ब गिण्हतग वा सखेववित्थरेहि दट्टवा -

जइ गाहगो णातु समत्थो गिण्हतगो वि समत्था तो सव्वणएहि वित्थरेणवि भामियव्व, विनियभगे मेण्हतगवमण वत्तव्व, तनियभगे जत्तिय वुत्त तस्म धारणमत्थो तनिय भासति, चरिमे दोणि वि ज मुत्ताणुक्ख अपुहत्ते पुहत्ते वा ॥६१६२॥

ते चउरो अणुभोगा कह विभामिज्जति ? , उच्यते -

समत ति होति चरणं, समभावम्मि य ठितस्स धम्मो उ ।

काले तिकालविमयं, दविण वि गुणो णु दव्वणू ॥६१६३॥

तुलाचरण व समभावकरण । चरणसमभावट्टियस्स णियमा विसुद्धिमरूवो धम्मा भवति । काले णियमा निकालविमय चरण, जम्हा समयखेत्ते कालविरहित न किंचित्थि । अथवा - तिकालविसय ति पच्चत्थिकाया जहा धुवे णितियया मासती तहा चरण भुवि च भवति भविस्सति य । दव्वानुभोगे चरणचित्ता ।

किं दव्वो गुणो ति ? दव्वट्टित्ताभिप्पाण्ण चरण दव्व, पज्जवट्टित्ताभिप्पाण्ण चरण गुणे, अथवा - पढमतो मामादयगुण पडिवत्तीतो पुव्वमेव चरण लब्धमिति, चरणट्टितस्स धम्माणुभोगो लभति, चरण-धम्मट्टियस्स गणियाणुभोगो दिज्जति, ततो निअणुभोगभावितथिरमतस्स दव्वानुभोगो य ण्यविवीहि दसिज्जति ॥६१६३॥

इद च वण्यते -

एत्थं पुण एक्केक्के, दारम्मि गुणा य होतंजाया य ।

गुणदोसदिट्ठसारो, णियत्तत्ति सुहं पवत्तत्ति य ॥६१६४॥

यत्थ न्ति एतेसि अणुओगाण अत्यकट्ठे, पुण विसेसणे ।

किं विसेसेति ? एककेके अणुओगे गुणा दरिमिज्जति ।

आवाय त्ति— दोसा य कहं ? उच्यते — पडिमिद्ध आयरत्तस्म विहिं अकरेतस्स य इहपर-
लोइयदोसा, पडिसिद्धवज्जेतस्म विहिं करेत्तस्म इहपरलोइया गुणा । चरणाणुवचयभवण गुणसारो, चरण-
विघातो कम्मवचयभवण च दोसमारो, एव गुणदोमदिट्ठमारो दोमट्ठाणेसु सुह णिवत्तति, गुणठाणेसु य सुह
पवत्तते । अहवा — णयवादेसु एगतगाह दिट्ठदोमो सुह णिवत्तति, अणगतगाहे य दिट्ठगुणा सुह पवत्तति
॥६१९६४॥

अतो भण्णइ—

अपुहुत्ते य कहेंते, पुहुत्ते बुक्कमेण वाययंतम्मि ।

पुव्वभणिता उ दोमा, वोच्छेदादी सुणेयच्चा ॥६१९६५॥

अणुओगाण अपुहुत्तकाले पुहुत्त विण्ण कारणे ण कायव्व, पुहने णाकारणेण उक्कमकरण कायव्व ।
अहवा — करति पडिमिद्ध तो इमातो आदिमुत्ते जे वोच्छेदादिया दोमा बुत्ता ते भवति ॥६१९६४॥

आयारे अणर्हाए, चउण्ह दाराण अण्णतरंगं तु ।

जे भिक्खु वाएत्ती, सो पावति आणमादीणि ॥६१९६६॥

सुयकडादी चरणाणुओगे दट्ठव्वो, सेम कठ ।

णाऊण य वोच्छेयं, पुव्वगए कालियाणुओगे य ।

मुत्तत्थजाणएणं, अप्पा बहुयं तु णायव्वं ॥६१९६७॥ पूर्ववत्

जे भिक्खु अपत्तं वाएइ वाएतं वा मातिज्जति ॥सू०॥१९॥

जे भिक्खु पत्तं वाएइ वाएतं ण वा मातिज्जति ॥सू०॥२०॥

अपात्र आयोस्य अभाजनमित्यर्थ, तत्पडिपक्वो पत्त ।

जे भिक्खु अपत्तं वाएइ वाएतं वा मातिज्जति ॥सू०॥२१॥

जे भिक्खु पत्तं ण वाएति ण वात्तं वा सातिज्जति ॥सू०॥२२॥

अप्राप्तक क्रमानधीतश्रुतमित्यर्थ, पडिपक्वो पत्त, आणादी चउलहु वा । एते चउरो वि सुत्ता
एगट्ठा वक्खाणिज्जति ।

केरिस् अपात्र ? उच्यते —

तिंतिणिण च्लचित्ते, गाणंगणिण य दुव्वलचरित्ते ।

आयरिय पारिभामी, वामावट्ठे य पिसुणे य ॥६१९६८॥

तिंतिणीड त्ति अस्य व्याख्या — दुविघो तितिणो दव्वे भावे य ।

तेंदुरुयदारुयं पिव, अग्गिहितं तिडितिडेति दिवमं पि ।

अह दव्वतिंतिणो भावतो य आहारुवहिमेज्जासु ॥६१९६९॥

ज अग्नीं छुड निनीडेति न दवतिनिग । भावतिनिगा दुविहो वयणे रमे य, वयणे तितिणो कयाकामु किचि भतिना बादितो वा दिवम पि निडिनिडेनो अच्छति । रसतिनिगो तिविहो - आहार उवहि मेज्जामु ॥६१६६॥

तन्थ आहारे इमो—

अंनोवहिमजायण, आहार बाहि रीरदहिमादी ।

अतो तु होति निविहा, भायण हन्थे मुहे चैव ॥६२००॥

आहारे दुविधा - बाहि अता य । तन्थ बाहि खीर दधि वा लभिता हिडनो चैव न खीर कलममालिओदण उपागतो खडमादि वा मज्जोगतो बाहि मजायण करेति ।

अतो न्ति वमहीण, सा निविधा - भायण हन्थे मुहे चैव वा । तन्थ भायणे - जत्थ कलममालिओदणो तन्थ खीर दधि वा । पक्खिवति हन्थे तल, हगादिगा पिडविगतिमादिय हन्थट्ठिय वेडेना मुहे पक्खिवति, पुन्व मुहे तलगहगादि पक्खिविचा पच्छा पिडविगति पक्खिवति ॥६२००॥

एमेव उवहिसेज्जा, गुणोवगारी य जस्स जो होति ।

मा तेण जो अनंतो, तदभावे तितिणो णाम ॥६२०१॥

उक्काम अनरकप्प लद्ध उक्काम चैव चोलपट्टक उपागता तेण सह परिभोगेण सज्जोएति । एव सेमावहि पि, एव मज्ज अकवाड लद्ध कवाडेण सह सज्जोएति ।

ज जस्स आहागादि तस्स गुणावगारी अलभतो निनिगा भवति ॥६२०१॥

इदार्णि २चलचित्तं न्ति अस्य व्याख्या—

गति ठाण माम भावे, लहुओ मासो य होति एक्केक्के ।

आणाइणो य दोमा विराहणा मजमायाए ॥६२०२॥

चवलो गतिमादिता चउव्विहो, चउमु वि पत्तेय मामलहु पच्छित्त ॥६२०२॥

तन्थ गतिट्ठाणचवलाण इमा विभामा -

दावद्विओ गतिचवलो उ थाणचवलो इमो तिविहो ।

कुडादसई फुमती, भमति व पादे व णिच्छुमति ॥६२०३॥

गतिचवलो दुय गच्छति - नुरितगामोत्थ । णिमण्णो पट्ठिवाहुक्करचरगादिएहि कुड्ढमादिएहि णेगसो फुसड, णिमण्णो य हत्थो आसण अमुचना समता भमति । हत्थपादाण पुगो पुणो य सकोयण विक्खेव व करेति, गायस्म वा कप ॥६२०३॥

१भामाचवलो इमो -

भासचवलो चउद्धा, असत्ति अलियं अमोहणं वा वि ।

असमाजोगमसम्भं, अणहित तु अममिक्खं ॥६२०४॥

असम्भप्पलावी असमिक्खियप्पलावी अदेसकालप्पलावी । असत्ति, अलिय त्हा गो अश्च ब्रवीति, अयवा - असत्ति असोभण च असम्भावत्य, जहा इयामाकतदुलमात्राऽयमात्मा । अपडिता जे ते असम्भा तेमि ज ज जोग्ग न त असम्भ ।

अहवा - जा त्रिदुसभा न भवति मा असम्भा, तीण ज जोग्ग त असम्भ, न च ग्राम्यवचन कर्कश कटुक निष्ठुर जकारादिक वा ।

बुद्धीए अणूहिय पुव्वावर इहपरलोयगुणदोस वा जो महमा भण्ड, सो असमिक्खियप्पलावी ॥६२०॥

अदेसकालप्पलावी इमो -

कज्जविवर्त्ति दट्ठण भणति पुव्वं मते तु त्रिण्णातं ।

एवमिणं ति भविस्सति, अदेसकालप्पलावी तु ॥६२०५॥

अदेसकालप्पलावी-जहा भायण पडिक्कमिय अट्टकरण पि से कय लेवित रुढ, ततो पमाएण त भग्ग ताहे सो अदेसकालप्पलावी - “मए पुव्व चेव णाय, जहा एय भज्जिहि” ॥६२०५॥

इमो ^२भावचवलो -

जं जं सुयमत्थो वा, उट्ठिं तस्स पारमप्पत्तो ।

अण्णोणसुतदुमाणं, पल्लवगाही उ भावचलो ॥६२०६॥ कट्ठा

इदाणि ^३गाणगणितो -

छम्मासे अपूरेत्ता, गुरुगा वारससमा तु चतुलहुगा ।

तेण परं मासो उ, गाणगणि कारणे भइतो ॥६२०७॥

णिककारणे गणातो अण्ण गण सकमतो गाणगणिओ, सो य उवसपण्णो छम्मासे अपूरित्ता गच्छति तो चउगुह, बारसवरिसे अपूरित्ता गच्छइ तो चउलहुगा, वारसण्ह वरिसाण परतो गच्छन्तस्स मासलहु । एव णिककारणे गाणगणितो । कारणे भित्तो, अत्र भयणा सेवाए गाणगणियत्त कारणिज्ज । दार ॥६२०७॥

इदाणि ^४दुब्बलचरणो -

मूलगुण उत्तरगुणे, पडिसेवति पणगमादि जा चरिमं ।

धितिबलपरिहीणो खलु, दुब्बलचरणो अणट्ठाए ॥६२०८॥

सव्वजहण्णो चरणावराहो जहन्त पणग भवति, तदादी जाव चरिम ति पारचित्तावराह पडिसेवितो अणट्ठा चरणदुब्बले ॥६२०८॥

किं च -

पंचमहव्वयभेदो, छक्कायवहो तु तेणऽणुण्णातो ।

सुहसीलवियत्ताणं, कहेति जौ पवयणरहस्सं ॥६२०९॥

सुहे सील व्यक्त येषां ते सुहसीलवियत्ता, ते पासत्थादी मदधम्मा । अहवा - मोक्खमुहे सील ज तम्मि विगतो आया जेवि ते सुहसीलवियत्ता ॥६२०९॥

आयग्नियपारिभामी इमो—

डहरो अकुलीणो त्ति य, दुम्महो ढमग मंदबुद्धी य ।

अवि यऽप्पलाभलद्धी, सीमो परिभवति आयरिय ॥६२१०॥

इम डहरादिपदभावमुज्जुत आयग्निय कोइ आयबद्धो सूयाए अमूयाए वा भणति । तत्थ सूया पर-
भाव अतववदमेग भ ति जहा अज्ज वि डहरा अम्हे, के आयग्नियनम्म जाग्गा ? अमूया पर हीणभावज्जुत
फुडमेव भणति । जहा को वि वयपरिगतो ति पस्सबुद्धी डहर गुण भणानि—अज्ज वि तुम थणदुद्धगघियधुहो
स्वता भन सगमि, केग्गिमम.यग्निय न ते ? एव उतभवुलो हीणाहियकुल, मेहावी मदमेह, ईमरो पव्वतिओ
दग्गिद्वयन्निय, बुद्धिमपणा मदबुद्धि, लद्धिमपणा मदलद्धि । दार ॥६२१०॥

इदाणि वामावट्टो—

एहि भणितो त्ति वच्चति, वच्चमु भणिओ त्ति तो समुल्लियति ।

ज जह भणितो न तह, अकरेतो वामवट्टो उ ॥६२११॥

वम विवट्टति ति वामवट्टो, विवरीयकारीव्यथ । दार ॥६२११॥

इदाणि पिसुणो—

पीतीसुणो पिसुणो, गुरुगादि चउण्ह जाव लहुओ य ।

अह्वा मंतासते, लहुओ लहुगा गिहं गुरुगा ॥६२१२॥

अलिगतराणि अकस्सते पीतिसुण कग्गति त्ति पिसुणो, प्रीतिविच्छेद करेतीव्यथ । तत्थ जइ
आयग्नियो पिसुणन करेइ तो चउगुर, उवज्जभायस्स चउलहु भिक्खुस्स मासगुरु, खुडुस्स मासलहु । अह्वा—
सामण्णो जति सज्जतो सज्जणसु पिसुणत्त करेइ तत्थ सतेण करेतस्स मामलहु, असतेण चउलहुगा । अह सज्जतो
गिहत्थेसु पिसुणन करेइ एते चेव पच्छिन्ना गुरुगा भाणियव्वा, मासगुरु सते, असते ० ० ॥६२१२॥

अह्वा—इमे अपात्रा अप्राप्ताश्च इह भणति, किंचि अव्वत्तस्स वि एत्थेव भणति—

आदीअदिट्ठभावे, अकडसमायारिए तरुणधम्मो ।

गव्वित पडण्ण णिण्हयि, छेदसुते वज्जिते अत्थं ॥६२१३॥

“आदीअदिट्ठभाव” ति अस्य व्याख्या—

आवासगमादीया, सूयकडा जाव आदिमा भावा ।

ते जेण होतऽदिट्ठा, अदिट्ठभावो भवति एसो ॥६२१४॥ कथ्था

“अकडसामायारि” ति अस्य व्याख्या—

दुविहा सामायारी, उवसंपद मडली य बोधव्वा ।

अणलोइत्तम्मि गुरुगा, मंडलिसामायारिं अओ वोच्छं ॥६२१५॥

उत्सवदाए निविधा — पाणोबसपवा दमणे य चरणे य । त अण्णगणातो आगय अणालोयावेत्ता
अणुवमरण वा ज परिभुजति वाएइ वा तस्स चउयुक् । मडलिसामायारी दुविधा — सुत्तमडली अत्थमडली
य ॥६२१५॥

तेमु इमा विधी -

सुत्तम्मि होति भयणा, पमाणतो या वि होइ भयणाओ ।
अन्थम्मि तु जावत्तिया, सुणेंति थोवेसु अन्ने वि ॥६२१६॥
दो चेव निसिज्जाओ, अक्खणक्का वित्तिज्जिया गुरुणो ।
दो चेव मत्तया खलु, गुरुणो खेले य पासवणे ॥६२१७॥
मज्जण निसेज्ज अक्खा, कितिकम्मुस्सग्गवंदणं जेट्ठे ।
परियागजातिसु य सुणण ममत्ते भासती जो तु ॥६२१८॥

सुत्तमडलीए गिसेज्जा कज्जति वा ण वा, वसभागो एकप्ये चिट्ठितो वाय्य ति । अहवा -
भयणा सहे कबलाओ देंति वा न वा । अघवा - पमाणतो भयणा, जाहे गुरु णिसण्णो ताहे तस्स विहिणा
कितिकम्म बारसावत्त देंति, पच्छा अणुओगस्स पाठवण उस्सग्ग करति, त उस्सग्ग पारेत्ता ततो गुरु दिट्ठिविहिं
अरवसेसु करेत्ता पच्छा जेट्ठस्स वदणय देति, जहा जेट्ठो परियागजाईसु ण घेतव्वो । सुणेंताण जो गहणधारणाजुत्तो
ममत्ते वक्खणे जो भासती — पडिभणतीत्यर्थं सो जेट्ठो, ततो सुणेंता कालवेलाए अणुओग विसज्जेत्ता गुरुस्स
वदण देंति, पुणो वदित्ता कालस्स पडिक्कमति ॥६२१८॥

अवितहकरणे सुद्धा, वितहकरेंताण मासियं लहुगं ।
अक्खनिसिज्जा लहुगा, सेसेसु वि मासियं लहुगं ॥६२१९॥

ज सदोस त वितहकरण, तत्थ मासलहु, अक्खणिसिज्जाए विणा अत्थ कहेतस्स सुणेंताण चउलहु,
सेसेसु वि पमज्जणादि अकरणे मासलहु चेव, एव सव्व अवितह सामायारि जो न करइ सो अक्कडसामायारी ।

इदार्णि “तरुणधम्मो” त्ति -

तिण्हारेण समाणं, होति पक्कप्पम्मि तरुणधम्मो तु ।
पंच्ह दसाकप्पे, जस्स व जो जत्तिओ कालो ॥६२२०॥

“यम” त्ति वरिसा, पक्कप्पो णिसीहज्जयण । तरुणो अविपक्व, जस्स वा सुत्तस्स जो कालो भणितो
त अपूरेंतो तरुणधम्मो भवति । वार ॥६२२०॥

इदार्णि “गम्बिय” त्ति, अविणीतो णियमा गम्बितो त्ति ।

अतो भणति -

पुरिमम्मि दुव्विणीए, विणयविहाणं ण किंचि आइक्खे ।
न वि दिज्जति आभरणं, पलियत्तियकण्हत्थस्स ॥६२२१॥

विणयविहाण सुअ, पलियत्ति त छिण्ण । सेस कठ्थ ।

मदवकरणं णाणं, तेणेव य जे मद ममुचिर्यंति ।

ऊणममायणमग्निमा, अगदो वि विमायते तेमिं ॥६२२२॥ कथा

इदानीं “पडण्णो न्ति, सो दुविहो पडण्णपण्हो पडण्णविज्जो य -

मोतु अणभिगयाणं, कहंति अमुगं कहिज्जए अत्थं ।

एम् तु पडण्णपण्हो, पडण्णविज्जो उ मव्व पि ॥६२२३॥

गुरुममीव सुगेता अणभिगयाणं कहंति । अगधीयमुया अगीतो अपरिणामगो य - एतेमि उदेसुदेम कथितो पडण्णपण्णा मगइ । जो पुण आदिरतेण मव्व कहंति सा पडण्णविज्जो ॥६२२३॥

तेमि कहंनस्म इमे दोमा -

अप्पच्चओ अक्किन्ती, जिणाण ओवातमइलणा चेव ।

दुल्लभबोहीयत्तं, पावंति पडण्णपागरणा ॥६२२४॥

सा अपात्र अप्राप्त, अव्यक्ताना च काले अविधीए छेदसुनादि अणमहस्म न कहिज्जत अप्पच्चय करंति । कह ? उच्यते - एतं चिच्च पुव्व उस्सगे पडिमेह कथिता इह अववादे अणुणा कहंति, एव अप्पच्चया अविमामा भवति, एते वि धम्मकारिणा ग भवतीत्यथ । पडिमिद्धममायरेण व्रतभगो व्रतभगकारिणो न्ति अक्किन्ती । जिणाण आगा ओवानो भण्णति, तस्म मतिलणा पडिमिद्धस्म अण कहतेण पुवावरविरुद्ध उम्मतवयण च दमिय । सुयधम्म च विराज्जेतो दुल्लभबोधि णिवत्तेइ पडण्णपण्हो पडण्णविज्जो वा ॥ दार ॥६२२४॥

इयाणि २णिण्हयि न्ति -

मुत्तन्थतदुभयाइं, जो धेत्तु निण्हवे तमायरियं ।

लहु गुरूम मुत्त अत्थे, गेरुयनारं अवोही य ॥६२२५॥

सनस्स वायणायरिय णिण्हवति ० ० । अत्थस्स वायणायरिय निण्हवति ० ० । “गेरुय” न्ति परिव्राजको, जहा तेण सो ण्हाविओ निण्हविओ पडिओ य असण्णातो । एव इह णिण्हवेतस्स छलणा, परलोगे अबाधिलामो । एते सव्वे नितिणिगादिगा अदिदुभावादिगा य अप्पत्तभूता काउ अवायणिज्जा ॥६२२५॥

किं अकज्ज ? उच्यते -

उवहम्मति विण्णाणे, न कहेयव्वं सुत च अत्थं वा ।

न मणी सतसाहम्सो, आवज्जति कोच्छुभामस्स ॥६२२६॥

उवहय न्ति - सदोस स्वसमुत्था मति, गुरूवदेनेण जा मतो त विण्णाण । अहवा - मतो चेव विण्णाण । भासो न्ति - सकुतो । कोच्छुभो मणी मतसाहम्सो कोच्छुभासस्स अयोग्यत्वात् णो विज्जड, ॥६२२६॥

एव जम्हा तित्तिणिगादि अजोग्गा -

तम्हा ण कहेयव्वं, आयरिएणं तु पवयणरहस्मं ।

खेत्तं कालं पुरिमं, नाऊण पगासए गुज्झं ॥६२२७॥

पवयणग्रहस्य अववादपद मव्व वा छेदस्त्त । अववायतो खेतकालपुरिसभाव च णाउ अपात्र पि वाएज्ज । खेतआ अद्वाणे लद्धिमपणो समत्था गच्छुवग्गकरोणि काउ अपात्र त पि वाएज्जति । एव काले वि आम्मादिमु पण्णिमपुरिसा वा वाइज्जति । भावे गिलाणादियाण उवग्गाहकरो युक्कस्म वाऽमहायस्म सहाओ । वाच्छेते वा असद पत्ते अपत्ते वि वाएज्जा । एवमादिकारणेषु अरत्तदुट्ठो पवयणग्रहस्य पवाएज्ज ॥६२२७॥

एते होति अपत्ता, तन्विवरीता हवति पत्ता उ ।

वाएते य अपत्त, पत्तमवाएते आणादी ॥६२२८॥

जे एते निनिणिगादी अपत्ता, एतमि पडिक्खभूता सव्वे पात्राणि भवन्ति । तम्हा अपात्रे बहू दोसा तम्हा ण वाएयव्व, पात्र वाएयव्व, अण्णाहा करणे आणाइया दासा ॥६२२८॥

तेसु विमत्तेसु इम पच्छित्त —

अव्वत्ते य अपत्ते, लहुगा लहुगा य होति अप्पत्ते ।

लहुगा य दव्वर्तितिणे, रमर्तितिणे होतऽणुग्वाया ॥६२२९॥

वयमा अव्वत्त अपात्त अप्राप्त उवकरण निनिणि च एते वाएतस्स चउलहुगा । रसति आहारर्तितिणे उयुग्गा भवन्ति, मा उस्सग्गणिच्छिउ ॥६२२९॥

मरज्ज सह विज्जाए, कालेण आगते विदू ।

अप्पत्तं च ण वातेज्जा, पत्तं च ण विमाणए ॥६२३०॥

कालेण आगए त्ति आधानकालादारम्य प्रतिसमय कालेनागत यावन्मरणसमय, अत्रान्तरे अपात्र न वाचयेत्, पात्र च न विमानयेदिति ॥६२३०॥

अपात्रस्य इमो अववातो —

वित्थियपदं गेल्लण्णे, अद्वाणसहाय असति वोच्छेदे ।

एतेहि कारणेहिं, वाएज्ज विदू अपत्तं पि ॥६२३१॥

जहा पूर्वं तहा वत्तव्य ।

अहवा — अपात्रे अण्ण इम अववादकरण —

वाएतस्स परिजितं, अण्णं पडिपुच्छगं च मे णत्थि ।

मा वोच्छिज्जतु सव्वं, वोच्छेदे पदीवदिट्ठतो ॥६२३२॥

जम्म समीवातो गहिय सो मतो, अण्णओ तस्स पडिपुच्छग पि णत्थि, अतो परिजयट्ठा अपात्र पि वाएज्जा । सय वा मरतो वत्तस्स अभावे मा सव्व सव्वहा वोच्छिज्जति, वोच्छिण्णे पदीवदिट्ठतो ण भवति, तम्हा अपत्त वाएज्ज । अपत्ताओ पत्तेसु सचरिस्सति पदीवदिट्ठतेण — जह् दीवा दीवसय० कख्या ॥६२३२॥

जो पात्र ण वाएति तस्सिमे दोसा —

अयमो पवयणहाणी, सुत्तथाण तहेव वोच्छेदो ।

पत्तं तु अवाएते, मच्छरिवाते सपक्खे वा ॥६२३३॥

अवापनस्म अयसो ति -- एम दुदादी ईहति वा किंवि, मुहा वा सव्व कितिकम्म कारवेणि,
भावमग्गेण वा अकज्ज तण गच्छो मे सयहा पुट्ठा, एवमादि अयसो। पत्रयण वा उव्वणो, तस्स हणी। कह् ?,
आगममुण्णे नित्ये ण पव्वयनि कोति। सेम कठ ॥६२३३॥

कारणेन पात्रमपि न वाचयेत् -

दव्व खेत्तं कालं, भावं पुरिसं तहा ममासज्ज ।

एतेहि कारणेहिं, पत्तमवि विद्द ण वाएज्जा ॥६२३४॥

‘दव्वे खेत्ते य’ ति अस्य व्याख्या -

आहारादीणऽमती, अहवा आयंविस्म ति विहस्म ।

खेत्ते अद्वाणादी, जत्थ सज्जाओ ण सुज्जेज्जा ॥६२३५॥

आयविलवारण आयविलस्स अमति ण वाएति, निविह - ओदणकुम्मासमत्तुगा वा । खेत्तो
अद्द णपडिवणो ण वाएति, जत्थ वा खेत्ते सज्जाओ ण सुज्जति, जहा वइदोसभगवती ण सुज्जति ॥६२३५॥

कालभावपुग्निमे य इमा विभासा -

अमिवोमाईकाले, असुद्धकाले व भावगेलण्णे ।

आतगत परगतं वा पुरिसो पुण जोगमममत्थो ॥६२३६॥

अमिवकाले अमकाले य सुद्धे वा काले अमज्ज इए ण वाएजा। भावे अप्पणा गिलाणो “परगय व”
ति वाइज्जमाणे वा गेलण्ण णाउ, अहवा - परगिलाणवेयावच्चवावडे पुरिसो वा जोगमम असमत्थो ण वाइज्जट,
एवमादिकारणहिं पत्तो वि ण वाइज्जइ ॥६२३६॥

जे भिक्खू अव्वत्तं वाएइ, वाएतं वा मातिज्जइ ॥सू०॥२३॥

जे भिक्खू वत्तं न वाएइ, न वाएतं वा मातिज्जइ ॥सू०॥२४॥

अव्वंजणजातो खलु, अव्वत्तो मोलसण्ह वरिसेणं ।

तव्विवरीतो वत्तो, वातेतियरेण आणादी ॥६२३७॥

जाव कवखादिमु रोमसभवो न भवति ताव अव्वत्तो, तस्सभवे वत्तो। अहवा - जाव सोलसवरिमो
ताव अव्वत्तो, परतो वत्तो। जइ अव्वत्त वाएति इयर नि वत्त न वाएति। तो आणादिया दोसा चउलहु च
॥६२३७॥

अव्वत्ते इमो अववादो -

णाऊण य वोच्छेदं, पुव्वगते कालियाणुयोगे य ।

सुत्तथ जाणएणं, अप्पावहुय मुणेयव्वं ॥६२३८॥

अववादे वत्तो इमेहिं कारणेहिं न वाएज्जा -

दव्व खेत्तं कालं, भावं पुरिसं तहा समामज्ज ।

एतेहिं कारणेहिं, वत्तमवि विद्द ण वाएज्जा ॥६२३९॥ पूववत्त

जे भिक्खु अपत्तं वाएइ, वाएत वा सातिज्जति ॥सू०॥२५॥

जे भिक्खु पत्तं न वाएइ न वाएतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥२६॥

अप्राप्त एयस्स अत्थो अप्राप्तसूत्रे गत एव, “अविट्ठ भावे” ति । तथा नि इह असुण्णत्थ भण्णति अव्वत्तसुत्तम् ।

अप्राप्तसूत्रे वउभगो भाणियव्वो -

परियाएण सुतेण य, वत्तमवत्ते चउक्क भयणा उ ।

अव्वत्तं वाएते, वत्तमवाएति आणादी ॥६२४०॥

परियाओ दुविट्ठो - जम्मणओ पवज्जाण य । जम्मणओ सोलसण्ह वरिसाण आरतो अव्वत्तो, पवज्जाण निह वरिसाण पक्खस्स अव्वत्तो । जो वा जस्स सुत्तस्स कालो वुत्तो त अपावेतो अव्वत्तो, सुएण आवम्मणे अणधीए दमवेयालीए अव्वत्तो, दमवेयालीए अणधीए उत्तरज्जयणाण अव्वत्तो, एव सर्वत्र ।

एय परियायसुत्ते वउभगो कायव्वो । पढमभगो दासु वि वत्तो बित्तिओ सुएण अव्वत्तो तत्तिओ वण्ण अव्वत्तो, चरिमा दोट्ठि वि । अव्वत्ते वाएतस्स पढमभगिल्ल अवाएतस्स आणादिया य दासा चउलहु च ॥६२४०॥

अप्राप्तो पि वाएयव्वो इमेहि कारणेहि -

णाऊण य वोच्छेदं, पुव्वगए कालियाणयोगे य ।

एएहि कारणेहि, अव्वत्तमवि पवाएज्जा ॥६२४१॥ पूर्ववत्

प्राप्त पि न वाएइ, इमेहि कारणेहि -

दव्वं खेत्तं कालं, भाव पुरिसं तथा समासज्ज ।

एएहि कारणेहि, पत्तमवि विदू ण वाएज्जा ॥६२४२॥ पूर्ववत्

अव्वत्ते अप्रातछेदसुत वाएज्जमाणे इद दोसदसग उदाहरण -

आमे घडे निहितं, जहा जलं तं घडं विणासेति ।

इय सिद्धंतरहस्सं, अप्पाहार विणासेइ ॥६२४३॥

निहित पक्खित्तं, सिट्ठ कहिय । अप्पा आहारता जत्थ त अप्पाहार, अप्पचारणसामर्थ्यमित्यर्थ ।

जे भिक्खु दोण्हं मरिसगाणं एक्कं संचिक्खावेड, एक्कं न संचिक्खावेड,

एक्कं वाएइ, एक्कं न वाएइ, तं करंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२७॥

सरिस ति तुल्ला, तेमि उ तुल्लत्तण वक्खमाण । त मरिस एवक वाएइ, एक्क न संचिक्खावेति, तस्स आणादिया दोसा चउलहु च ।

एगं सचिक्खाए, एग तु तहि पवायए जो उ ।

दाण्हं तु सरिसयाणं, सो पावति आणमादीणि ॥६२४४॥ गतार्था

मादृश्य डमेहि —

मंविग्गा समणुष्णा, परिणामग दुविह भूमिपत्ता य ।

सरिम अदाणे रागो, बाहिरयं णिज्जरा लाभो ॥६२४५॥

दा वि सविग्गा मति सविग्गने समणुष्णत्ति, दा वि समोदता मति सविग्गसमणुष्णान्ते, दोवि परिणामग मति सविग्गसमणुष्णा परिणामगत । दा वि दुविधभूमी पत्ता । दुविधभूमी — वण्ण मुत्तण य । वण्ण वज्जगज्जातक । मुत्तण जस्स मुत्तम्म जावडए परिणाम वायणा बुता त दो वि पत्ता, जहा आयासरस्स तिण्णि सवच्छराणि, मुयगडदमाण पचमवत्सरणि, एवमादिसमिमाण एक्क सच्चिक्खावेइ एक्क वाएइ सुत्ते ० ० । अत्थे ० ० । सरिमाण चेव एक्कस्स अदाण दामा लब्धमि, वितियस्स दाणे रागो लब्धमि । जरस ण दिज्जति सो बाहिरभाव गच्छइ, तत्पच्चय च णिज्जर ण लब्धमि, अण्ण च सा पदोस गच्छति, पडुट्ठो वा ज काहिंति तणिग्गफण्ण ॥६२४५॥

भवे कारण जेण एक्क सच्चिक्खावज्ज —

दव्व खेत्तं कालं, भाव पुरिमं तद्वा समामज्ज ।

एएहि कारणेहिं, मंचिक्खाए पवाए वा ॥६२४६॥

दव्वखेत्तकालभावाण इमा विभासा —

आयविलणिच्चितियं, एगम्म मिया ण होज्ज वितियम्स ।

एमेव खेत्तकाले, भावेण ण तिण्ण हट्ठेक्को ॥६२४७॥

दव्व आयविल णिच्चितिय वा असणादि दोण्ह वि ण पटुप्पनि, एव कक्खड्ढेत्ते वि असणादिग ण पटुप्पनि, ओमकाले वि दोण्ह ण लब्धमि भावे एक्को ण तिण्णो ति गिलाणा, हट्ठे ति अगिलाणो, त वादेति गिलाण सच्चिक्खावेइ ॥६२४७॥

अहवा मयं गिलाणो, अममन्थो दोण्ह वायणं दाउं ।

मंविग्गादिगुणजुओ, अमहु पुरिसो य रायादी ॥६२४८॥

पुव्वद्ध कठ । अहवा — भावतो सविग्गादिगुणजुताण वि तत्वेक्को असहू । असहू ति सभावतो चेव जोगस्स असमन्थो राया च रायमती, एवमादी पुरिसो कुत्तुयभावितो जाव भाविज्जनि ताव सच्चिक्खा-विज्जति ॥६२४८॥

जो धरिज्जति, सो इम वुत्त धारिज्जति —

अण्णत्थ वा वि णिज्जति, भण्णति समत्ते वि तुज्झ वि दलिस्सं ।

अण्णे ण वि वाइज्जति, परिकम्म सहं तु करेति ॥६२४९॥

जइ वा असहू तो त परिकम्मणेण सहू करेति जाव, ताव धरेति । इयर पुण वाएइ, सेस कठ ।

जे भिक्खू आयरिय-उवज्झाएहिं अविदिन्नं गिर आइयइ,

आइयंतं वा मातिज्जति ॥सू०॥२८॥

गिर ति वागी वयण, न पुण सुने चरणे वा । जो त आयरिय-उवज्झाएहि अदत्त गेण्हति तत्थ सुत्ते
हु । अत्थे ज्झा । चरणे सुत्तुत्तग्गुणमु अण्णगविह पच्छति ॥६२४६॥

दुविहमदत्ता उ गिरा, मुत्त पडुच्चा तहेव य चरित्तम्मि ।

सुत्तत्थेमु सुतम्मि, भासादोमे चरित्तम्मि ॥६२५०॥

जा सुने गिरा सा दुविधा - सुने अत्थे वा । चरणे मावज्जदोमज्जता भासा ॥६२५०॥

कह पुण सो अदिण्ण आडयत्ति ?, उच्यते -

रातिणियभाग्गेणं, बहुम्मुतमतेण अन्नतो वा वि ।

गत्तु अपुच्छमाणो, उभयं पण्णावदेमेणं ॥६२५१॥

तम्म किंचि सुयत्थसदिदु, सो सव्वरातिगिआ ह नि गारवेण ओमे ण पुच्छति, सीमत्त वा न करेइ,
सव्वबहुमुओ वा ह भणामि, कहमण्य पुच्छिस्म एवमादिगारवट्ठितो अण्णतो वि ण गच्छति, गतो वा ण
पुच्छति, ताह जन्थ सुत्तत्थाणि वाइज्जति तत्थ चिलिमिलिकुडकडनरिआ वा ठिओ अण्णावदेमेण वा गतागत
करेत्तो मुत्ति, उभय पि अण्णावदेमेण ॥६२५१॥

एसा मुत्त अदत्ता, होति चरित्ते तु जा ससारज्जा ।

गारत्थियभासा वा, ढडूर पलिकुचिता वा वि ॥६२५२॥

वरित्ते ढडूरसर करेति, आलायणकाले पलिउचेति, कताकत वा अत्थे पलिकुचति । सम कठ
॥६२५२॥

वित्तिओ वि य आएसो, तवतेणादीणि पंच तु पदाणि ।

ज भिक्खु आतियती, सो पावति आणमादीणि ॥६२५३॥

तवतेणे वनितेणे, रूवतेणे य जे नरे ।

आयारभावतेणे य, कुव्वई देवकिन्विस ॥ (दश० अ० ५ गा० ४६)

एतेसि इमा विभासा -

खमओ सि ? आम मोण, करेति को वा वि पुच्छति जतीणं ।

धम्मकहि-वादि-वयणे, रूवे णीयल्लपडिमा वा ॥६२५४॥

सभावदुब्बलो भिक्खागओ अण्णत्थ वा पुच्छिओ “तुम सो खमओ ति भते ?” ताहे सो भणति-
आम, मोणेण वा अच्छति । अहवा भणति - को जतीमु खमण पुच्छ । वइतेणि ति “तुम सो धम्मकही
वादो गेमिलिओ गणी वायगो वा ?” एत्थ वि भणति - आम तुण्हिक्को वा अच्छति ति । भणति रूवे - “तुम
अम्ह मयगा सि ?” अहवा - “तुम सो पडिम पडिवण्णमासी ?” एत्थेव तहेव तुण्हिक्कादी अच्छति ॥६२५४॥

बाहिरठवणाअलिओ, परपच्चयकारणाओ आयारं ।

महुराहरणं तु तहि, भावे गोविंदपव्वज्जा ॥६२५५॥

आयारतेणे मथुरा कोडयइल्ला उदाहरण ते भावतुण्णा । परपईतिणिमित्त बाहिरकिरियासु
मुट्ठु उज्जना ज ने आयारत्तणा । भावतेणे जहा गोविंदवायगो वादे णिज्जिओ सिद्ध तहरणद्वयाए पव्वज्जम-

भुवगतो, पञ्चा मम्मत्त पडिवणो । एवमादि गिराण अदिताण णो गहण कायव्य । एक्क नाव गिरवममो कत्तो भवति । सुमावदादिया च चरणभसदोसा ॥६२५५॥

एतेमामण्णतरं, गिरं अदत्तं तु आतिए जो तु ।

मो आणा अणवन्थ, मिच्छत्त विगवण पात्रे ॥६२५६॥ कत्था

आवणमड्डाण पच्छित्त च ॥

भवे कारण न अदत्त पि आदिगजा -

वितियपदमणप्पज्जे, आतिए अविक्कोविते व अप्पज्जे ।

दुडाड मंजमट्ठा, दुल्लभदब्बे य जाणमवी ॥६२५७॥

वित्तादिचित्तं वा आटणज्ज, महो वा अजागता, 'दुहाइ' ति उवमपन्ताण वि न देइ तस्म, उवमपण्णो अणुवसपण्णो वा जत्त गुणेइ वक्खायेइ वा कम्मति तत्थ कुट्टु तरिओ सुत्ति गयागय व करेत्तो । 'सजमहेउ व' ति अच्छिता कइ मिया दिट्ठ ति पुच्छिओ, दिट्ठा वि न दिट्ठ ति भगेज्ज । जन्थ वा मज्जय भासात्ता भासिज्जमाणा न, गारिका सजयभासाओ गण्हेज्जा तत्थ अविदिण्णात्ता गारन्थियमासाण भासज्जा । आयरियस्म गिलागस्म वा मयपागेण वा महस्सपागेण वा दुल्लभदब्बेण कज्ज तदट्ठा गिमित्त पउजेज्ज, अण्ण वा विचि मयववयण भग्ज्ज, तदट्ठा चव तेणादि वा पचपद भगेज्ज ॥६२५७॥

जे भिक्खु अन्नउत्थियं वा गारन्थियं वा वाएइ,

वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२६॥

जे भिक्खु अण्णउत्थियं वा गारन्थियं वा पडिच्छइ

पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥२७॥

जे भिक्खु पामन्थं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥२८॥

जे भिक्खु पामन्थं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥२९॥

जे भिक्खु ओसन्नं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३०॥

जे भिक्खु ओमन्नं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३१॥

जे भिक्खु कुमीलं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३२॥

जे भिक्खु कुमीलं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३३॥

जे भिक्खु नितियं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जति ॥सू०॥३४॥

जे भिक्खु नितियं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३५॥

जे भिक्खु संसत्तं वाएइ, वाएतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३६॥

जे भिक्खु संसत्तं पडिच्छइ, पडिच्छंतं वा सातिज्जइ ॥सू०॥३७॥

तं मेवमाणे आवज्जति चाउम्मामिय परिहारट्ठाण उग्घातियं ।

एतेसि वायण देति पडिच्छति । भावनेणो वा सव्वेसु अहाच्छदवज्जिएसु चउलहु, अहवा - अथे
हु । अहाच्छदे चउगुरु सुते अथे फु ।

अण्णपासंडी य गिही, सुहसीलं वा वि जो पवाएज्जा ।

अहव पडिच्छति तेमि, चाउम्मासाओ पोरिमि ॥६२५८॥

पोरिमि ति सुत्पोरिसि अथपोरिसि वादेत्तस्स, तेसि वा समोवातो पोरिसि करेत्तस्स, अहवा -
एक्को पोरिसि वाएत्तस्स ।

अणेगासु इम -

सत्तरत्तं तवो होति, ततो छेदो पहावती ।

छेदेण छिण्णपरियाए, ततो मूलं ततो दुगं ॥६२५९॥

सत्तदिवसे चउलहु तवो, ततो एक्क दिवस चउलहुच्छेदो, ततो एक्केक्कदिवस मूलणवटुपारचिया ।
अहवा - तवो तहेव चउलहु छेदो सत्तदिवसे । सेसा एक्केक्कदिवस । अहवा - तवो तहेव छुगुरुछेदो सत्तदिवसे,
मेसा एक्केक्क । अहवा - चउलहु तवो सत्तदिवसे, ततो चउगुरु तवो सत्तदिवसे ?, ततो छल्लहु तवो
सत्तदिवसे, ततो छगुरु तवो सत्तदिवसे, ततो एते चेव छेदो सत्त सत्त दिवसे, ततो मूलणवटुपारचिया
एक्केक्कदिण । अहवा - ते चेवेव चउलहुगारि वा सत्त दिवसिगा, ततो छेदा लहुपणगादिगा सत्त सत्त दिवसिगा
सत्त दिवसे गेयव्वा जाव छगुरु, ततो मूलणवटुपारचिया एक्केक्कदिवस ॥६२५९॥

गिहिअण्णतित्थिएसु इमे दोसा -

मिच्छत्तथिरीकरणं, तित्थस्सोभावणा य गेण्हते ।

देते पवंचकरणं, तेणेवऽक्खेवकरणं च ॥६२६०॥

कह मिच्छत्त थिरतर ? उच्चये - ते त दटु तेसि समीवे गच्छत्त मिच्छहिटी चित्तेति - इमे
चेव पहाणतरा जाता, एते वि एतेसि समीवे सिक्खति । लोगो दटु भणाति - एतेसि अण्णो आगमो गत्थि,
परसनिताणि सिक्खति । निस्सार पवयणति ओभावणा । अह तेमि देति तो ते सहसत्थादिभाविता महाजणमध्ये
वट्ट चोर खुज्जाविलियासणए करीसण पिलुअए ति एवमादिपवचण करेति उड्डाह च । अहवा - तेणेव
सिक्खिएण अक्खेवे ति चोयण करेज्ज दूसेज वा ॥६२६०॥

गिहिअण्णतित्थियाणं, एए दोसा उ देत गेण्हते ।

गहण-पडिच्छणदोसा, पासत्थादीण पुञ्चुत्ता ॥६२६१॥

कथा । णवर - पासत्थादिसु गहणपडिच्छणदोसा जे ते पण्णरसमे उहेसगे वुत्ता ते उट्टव्वा ।
वदण-पससणादिया तेरसमे । जम्हा एते दोसा तम्हा गिहिअण्णतित्थिया वा ण वाएयव्वा ॥६२६१॥ परपास-
डिलक्खण - जो अण्णाण मिच्छत्त कुब्बतो कुतित्थिए वाएति, जिणवयण च णाभिगच्छात्त सो परपासडी ।

जो पुण गिहि-अण्णतित्थियो वा इमेरिसो -

णाणे चरणे परूवण, कुणति गिही अहव अण्णपासंडी ।

एएहि संपउत्तो, जिणवयणं सो मपासंडी ॥६२६२॥

णाणदसणचरित्ताणि परूवेति, जिणवयण च रोएति सो सपासडी चेव, सो वाइज्ज इ तस्स जोग्ग ।

एएहि मंपउत्तो, जिणयणमण्ण भोग्गतिं जाति ।

एएहि विपमुक्को, गच्छति गति अण्णतिन्थीणं ॥६२६३॥

जो अण्णतिन्थियाणुक्काणि नी त गच्छति । सेम कअय ।

भवे कारण वाएज्जा वि -

पव्वज्जाए अभिमुह, वाएति गिही अहव अण्णपामंडी ।

अववायविहारं वा ओमण्णुवगंतुकामं वा ॥६२६४॥

गिहि अण्णपासंडि वा पव्वज्जाभिमुह सावग वा छज्जीवणिय ति जाव मुत्तना, अयत्ता जाव पिडेमणा, एम गिहत्थारिमु अववादो । इमो य'सत्थादिमु अवव दा ति उवमपदा उज्जयविहारीग उवसपण्णो जा पामत्थादी मो अववादविहारठितो न वा वाएज्ज । अहवा - पासत्था'देग'ग जा सविग्गविहार उव गंतुकामो - अण्णुट्ठिकाम इत्यर्थ । त वा पामत्थादिभावगहिा चव वाएज्जा, ज व अण्णुट्ठि ॥६२६४॥

एव वायणा दिट्ठा, तेमि समीवानो गहण कह होउज्ज ? उच्यते -

वित्थियपद समुच्छेदे, देमाहीते तहा पक्कप्पम्मि ।

अण्णम्म व असमतीए, पडिक्कमते व जयणाए ॥६२६५॥

जम्म भिववुम्म गिहत्थपरिय'ओ वट्ठि, गिहत्थारियाग' पास जम्म तिग्गि वरिसाणि परियायम्म सपुण्णाणि, तम्म य आया'रपक्को अविज्जियव्वो । आया'रिया य कालगता, एमेव समुच्छेदो, अहवा - कम्मइ साहम्म आया'रपक्कप्पम्म देण अणघो'न समुच्छेदो य जातो, एतेमि सव्वो आया'रपक्कप्पा पढम्मम्म वित्थियम्म देसो इ वम्म अहिज्जियव्वो ॥६२६५॥

सो कम्म पासे अहिज्जियव्वो ? उच्यते -

संविग्गमसविग्गो, पच्छाकड मिद्धपुत्त सारूवी ।

पडिकंते अण्णुठिते, असमती अण्णत्थ तत्थेव ॥६२६६॥

सगच्छे चव जे गीयत्था, तेमि असमति परगच्छे सविग्गमणुअसगामे, तम्म असमति ताहे अण्णस्स, "अण्णस्स वि असमती" ति अण्णमभोइयस्स वि असमति गिआदिउक्कमेण असमिग्गेसु । तेसु वि गितियादिट्ठाणाओ आवकहाए पडिक्कमावितो, अणिच्छि जाव अहिज्जइ ताव पडिक्कमावित्ता तहावि अणिच्छे तस्स व मगामे अहिज्जइ । सव्वत्थ वदणादीणि ण हावेइ । एमेव जयणा । तेमि असमतीए पच्छाकडा ति जेण चारित्त पच्छाकड उतिकखत्ता भिवख हिंडइ वा न वा ।

सारूविगो पुण सुक्किल्लवत्थपरिहिओ मडममिह घरेइ अज्जो अ पत्तादिमु भिवख हिंडइ ।

अण्णे भण्णनि - पच्छाकडा सिद्धपुत्ता चव, जे समिहा ते सारूविगा । ए'सि सगामे सारूविगाइ पच्छाणुलोमेण अधिज्जति, तेसु सारूविगादिमु पडिक्कने अण्णुट्ठि'ए ति मामातियकडो व्रतारोपिता अण्णुट्ठिओ, अहवा - पच्छाकडादिणु पडिक्कनेसु । एते मव्वे पासत्थादिया पच्छाकडादिया य अण्ण खेत्त णेउ पडिक्कमाविज्जति, अणिच्छेसु तराव ति ॥६२६६॥

"देमाहीते" ति अस्य व्याख्या -

देसो सुत्तमहीय, न तु अत्थतो व असमत्ती ।

असमति मण्णमण्णणे, इतरेतरपक्खियमपक्खी ॥६२६७॥

पुत्रवद कठ । “अमनि नगुणमणुणे” ति पय गयत्य ति । “इतरेतर” ति असति गितियाण इतरे मसत्ता, तेमि अमनि इतरे कुमीना एय गेयव्व, एमो वि अत्थो गनो चेव । तेसु वि जे पुत्रव सविग्गपक्खिता पच्छा सविग्गपक्खिणमु दमेरिसा जे पच्छाकडादिया मुडगा ते । पच्छाकडादिया जावज्जीवाण पडिक्क माविज्जति, जावज्जीवमणिच्छेमु त्राव अहिज्जति ॥६२६७॥

तहवि अणिच्छेमु -

मुंडं च धरमाणे, मिहं च फेडंत णिच्छ समिहे वी ।

लिगेण अमागरिण, ण वंढणादीणि हावेति ॥६२६८॥

जति मुड धरति ता मोहरणादी दव्वलिग दिज्जति जाव उद्देमानी करेइ, समिहस्स वि सिह फेडेनु एमेव दव्वलिग दिज्जति, मिह वा णो इच्छति फेडउ तो समिहस्सेव पामे अधिज्जति, सल्लिगे ठिमो चेव अमागारिण पदेमे सुयपूय ति काउ वदणाइ सव्व ण हावेइ, तेण विचारेयव्व ॥६२६८॥

पच्छाकडयस्स पामत्थादियस्स वा जस्स पामे अधिज्जति ।

तत्थ वेयावच्चकरणे इमो विही -

आहार उवहि सेज्जा, एमणमादीसु होति जतियव्वं ।

अणुभोग्यण कारावण, मिक्खति पदम्मि मो सुद्धो ॥६२६९॥

जति तस्स आहारादिया अरिय ता पहाण । अह णत्थि ताह सव्व अप्पणा एमणिज्ज आहाराति उतागव्व ॥६२६९॥

अप्पणा असमत्थो -

चोदेति मे परिवारं, अकग्गेमाणे भणाति वा सद्धे ।

अव्वोच्छित्तिकग्गम्स उ, सुयभत्तीए कुणह पूयं ॥६२७०॥

दुविहासती य तेमि, आहारादी करेति सव्वं तो ।

पणहाणी य जयंतो, अत्तट्ठाए वि एमेव ॥६२७१॥

जो तस्स परिवारो, पासत्थादियाण वा मीसपरिवारो, सद्धा वि सता ण करेति, असता वा णत्थि सद्धा, एव भमतीए सो सिक्खगो आहारादी सव्व पणगपरिहाणीते जयणाते तस्स विमोहिकोडीहि सय करेत्तो सुज्झति । अप्पणो वि एमेव पुत्रव सुद्ध गेण्हति, असति सुद्धस्स पच्छा विसोहि कोडीहि गेण्हतो सिक्खइ । अववादपदेण विसुज्झइ ॥६२७१॥

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए एगूणवीसडमो उद्देशओ समत्तो ॥

विंशतितम उद्देशकः

भणिग्रो एगुणवीमइमो उद्देसग्रो । इदाणि वीसइमो भण्णइ । तस्सिमो सबधो -

हत्थाद-वायणते, पडिमेहे वितहमायरंतस्स ।

वीमे दाणाऽऽरोवण, मामादी जाव छम्मासा ॥६२७२॥

पणप्पस्म इत्थवस्ममुत्त जाव वायणत मुत्त, एत्थ वितहमायरतस्स दिट्ठमेय एगुणविसाए वि उद्देसेसु आवाजणपच्छित्त, तेमि आवाण्णाण वीसतिमउद्देस दाणपच्छित्तेण ववहारो भण्णाति - दाणत्तेण पच्छित्तस्स आनेवणा दाग रोवणा । आगवणत्ति - चडावणा, अहवा - ज दव्वादिपुरिसविमाणेण दाण सा आरोवणा । न च कम्म ? कह ? आययियमुवज्जभायाण कताकतकरणार्थ, भिक्खुण वि गीतमगीताण, थिरकयकरणसघयण-मपण्णियेयराण य गच्छपताण च मव्वेमि तेमि इह दाणपच्छित्त भग्गइ, त च इह मुत्ततो मासादी जाव छम्मासा णो पणगादिभिण्णमसत्ता, ते वि अत्थतो भाणियव्वा ॥ १७२॥

एतेण सव्वेणागयस्म इम पढममुत्त -

जे भिक्खू सामियं परिहारट्ठाण पडिमेवित्ता आलोएज्जा-

अपलिउचिय आलोएमाणस्स मासियं,

पलिउचिय आलोएमाणस्स दोमामियं ॥सू०॥१॥

जे गिद्धमे, निदिग् विदारणे, क्षुध इति वरण आख्या, त भिनत्तीति भिक्षु, भिक्षणशीलो वा भिक्षु, भिक्षाभोगी वा भिक्षु । मासाह्मिप्फन्न् मासि । यथा - कौशिक, द्रौणिक । अहवा - माणसणातो वा मासो, जम्हा समयादिकालमाणाई असति तम्हा मासे समयवलयियमुहुत्ता माणा तत्रान्तर्गतादित्यथ । अहवा - दव्वत्तेनकालमावमाणा असतीति मामो । दव्वतो जत्तिया दव्वा मासेण असति, खेतग्रो जावत्तिय खेत मासेण असति । वावतो तीम दिवसा, भावतो जावत्तिया सुत्तत्यादिया भावा मासेण गेण्हति । परिहरण - परिहारो वज्रं नि वुत्त भवति । अहवा - परिहारो वहुण नि वुत्त भवति, त प्रायश्चित्त । णा गतिनिवृत्ती तिष्ठन्त्य-म्मिनिनि म्यान इह प्रायश्चित्तमेव ठाण, त प्रायश्चित्तठाण अणेगपगार मूत्तुत्तरदप्पकापजयाजय भेदप्रभेदभिण्ण भवति । आइ मग्गदा वच्चे, लोक दशने, आलोयणा णाम जहा अप्पणो जाणति तहा परस्म प गड करेइ । परि सव्वतो भावे कृच कौटिल्ये, तस्म पलिकुच्चे ति रूव भवति, रलयोरैवयम् इति व वा, न पलिकुच्चा अपलिकुच्चा, तस्मेव अपलिकुचिय आलोमाणस्स मासिय लहुग गुरुग वा पडिसेत्थणा-गिप्फणा दिज्जति । जो पुण पलिकुचिय आलोणइ तस्स ज दिज्जान पलिउचणमासो ग मग्गणिप्फणो गुरुगो दिज्जति । एय सुत्तत्थो ।

इदार्णि एसेवत्थो सुत्तफासियणिज्जुत्तीए वित्थरेणं भण्णति -

जे त्ति व से त्ति व के त्ति व, णिहेसा ह्वेति एवमादीया ।

भिक्षुस्स परूवणया, जे त्ति कओ होति णिहेसा ॥६२७३॥

जे त्ति वा, से त्ति वा, के त्ति वा एवमादी । णिहेसायगा भवति । जे-कारस्स णिहेसादरिसणं - “जे अस्तएणं अमक्खणेणं अमक्खाइ” इत्यादि । से-गारो जहा - “से गामंसि वा” इत्यादि । के-कारो जहा - “कयरे आगच्छति दित्ते रूवे” इत्यादि ।

चोदगाह - किं कारणं सेसणिहेसे भोतुं जेकारेणं निहंसं करेइ ?

आचार्याह - एत्थ कारणं भण्णइ - सेगारस्स णिहेसे पुव्वपगतापेक्खो जहा - “भिक्षू वा” इत्यादि । ककारो संसयपुच्छए वा भवति, जहा - “किं कस्स केण व कहं केवचिर कइविहे” इत्यादि । जेगारो पुण अणिहिट्ठवायपुद्देसे जहा - “जेगेव जं पइच्च” इत्यादि, अहवा - जहा इमां चेव जेगारो उस्सग्गववायट्ठिएण पडिसेवियं व त्ति न निहिट्ठं गुरं लहुं वा जग्ग।जयगहिं वा तेण जेगारेण निहेसो कृतेत्यर्थः अहवा - जेकारेण अतिहिट्ठभिक्षुस्सट्ठा निहेसो ॥६२७३॥

सो भिक्षू चउव्विहो इमो -

नामं ठवणा भिक्षू, दव्वभिक्षू य भावभिक्षू य ।

दव्वे सरीरमविओ, भावेण उ संजतो भिक्षू ॥६२७४॥

नाम भिक्षू, जस्स भिक्षुत्ति नामं कयं ।

ठवणा भिक्षू चित्रकर्मलिहितो ।

दव्व भिक्षू दुविधो, आगमतो नो आगमतो य । आगमतो जाणए अणुवमो गो दव्वमिति वचनात् । नोआगमओ जाणगादिति विधो, दोणि वि मामित्ता तच्चतिरितो एगमवियादिति विधो, एगमविओ गाम जो णेरइयतिरिए य - मणुयदेवेमु वा अणंतरं उव्वट्ठित्ता जत्थ भिक्षू भविस्सति तत्थ उव्वज्जिहिति, वट्ठाउओ गाम जत्थ भिक्षू भविस्सइ तत्थ आउयं बद्धं, अभिमुह्णामगतो गाम जत्थ भिक्षू भविस्सति जत्थ उवव-ज्जिउकामो समोहतो पदेसा णिच्छूडा । अहवा - सयणधगादिपरिचचइयं पव्वजाभिमुहो गच्छमाणो । गओ दव्वभिक्षू ।

इदार्णि भावभिक्षू । सो दुविधो - आगमतो णो आगमतो य । आगमतो जाणए भिक्षुसदोपयुत्ते, णो आगमतो इहलोगिण्णिसो संवेगभावितमती संजमकरणुजतो भावभिक्षू ॥६२७४॥

चोदगाह - त्वयोक्तम् -

भिक्षुणमीलो भिक्षू, अण्णे वि ण ते अणणवित्तिता ।

णिप्पिसिएणं जातं, पिसितालंभेण सेसाउ ॥६२७५॥

“भिक्षाहारो वा भिक्षू”, एवमन्ये रक्तपटादयोऽपि - भिक्षवो भवन्ति” ।

आचार्याह - न ते भिक्षवः । कुतः ? येन तेषां भिक्षावृत्तिनिरूपणा न भवति । आहूतमपि आषाकर्मदोषयुक्ता च तेषां वृत्तिः प्रलंबादि, अन्यान्यवृत्तयश्च येन ते भिक्षवो न भवन्ति । तस्मात् साधव एव भिक्षवो भवन्ति, येन साधूनामाषाकर्मदिदोषवजिता निरूपणा वृत्तिः । “अणणवित्तिता” - अणण-

वृत्तयश्च भिक्षा मुक्त्वा नास्त्यन्या साधूना वृत्ति । एतथ आयरिओ णिप्पिसिएण दिट्ठु करेति, सपिसिय जो भुजति सो सपिमिओ, जो ण भुजति सो णिप्पिमिओ । “पिसियालभेण सेसा य” ति - जे पुण भगान - “णिच्चि (पि) मा वय जाव पिमिस्स अलाभो” ति, एव भगता सेसा न निप्पिसिया भवतीत्यथ ॥६२७४॥

इमे वि एयस्मेव अत्यस्म समाहगा दिट्ठता -

अविहिंस बंभचारी, पोमहिय अमज्जमंमियाऽचोरा ।

मति लंभ परिच्छाती, होति तदक्खा ण पुण मेमा ॥६२७६॥

अह्वा काइ भणेज्जा - अहिसगोह जाव मिए ण पस्सामि ।

अण्णो कोति भणेज्ज - वभचारी अह जाव मे द्दथी ण पटुप्पज्जति ।

अह्वा एव भणेज्ज - आहारपोमही ह जाव मे आहारो ण पटुप्पज्जइ ।

अह्वा कोति भणेज्ज - अमज्जममवृत्ती ह जाव मज्जममे ण लहामि ।

अह्वा कोति भणेज्ज - अचोरक्कवृत्ती ह जाव परच्छिद न लभामि ।

एने अमतिलभपरिच्छागिणोवि णा तदक्खा भवति, तेग अत्येण अक्खा जेसि भवति ते तदक्खा अहिमगा इत्यथ, मेमा अनिवृत्तचित्तास्तदाख्या न भवति, ते उ रक्तपटादयो न भवति भिक्षव ससावद्य-भिक्षामनिलभपरित्यागिन माधव एव भिक्षवो भवन्ति । “सेसे” ति भिक्षवगृहणे वा साधूण चरगादियाण दमो विसेमो ॥६२७६॥

भणानि -

अह्वा एसणामुद्धं, जहा गेण्हंति भिक्खुणो ।

भिक्षं णेवं कुलिंगत्था, भिक्खजीवी वि ते जती ॥६२७७॥

“एसणामुद्ध” ति - उगमादिमुद्ध, पच्छाणपुव्विगगहण वा एय, सेस कठ । अह्वा - ते चरगादि-कुनिगी न केवल भिक्षुवृत्तुपजीवी ॥६२७७॥

जाव इमाणि य भुजति -

दगमुद्देसियं चेव, कंदमूलफलाणि य ।

सयं गाहा परत्तो य, गेण्हंता कह भिक्खुणो ॥६२७८॥

“तण ति - उदग, “उद्देसिय” ति तपुद्दिश्य कृत, “कद” इति मूल कदावी, पथिन्यादि मूला, आम्रादि फला, एयाणि स्वय गेण्हता कह भिक्खुणो भवति ? इत्युक्त भवति ॥६२७८॥

जो पुण सण्णिच्छियभिक्खु इमेरिसी वृत्ती भवति -

अच्चित्ता एमणिज्जा य, मिता काले परिक्खिता ।

जहालद्धविसुद्धा य, एमा वित्ती उ भिक्खुणो ॥६२७९॥

अगरहिता अगरहियकुलेसु वा भत्तिवहुमाणपुव्वं वा दिज्जमाणी अ ति वातालीसदोसविसुद्धा एमणिज्जा भत्तट्टप्पमाणुत्ता मिता । “काले” ति दिवा । अह्वा - गामणगरदेसकाले । अह्वा ततियापोरिसोए

दायगादिदोसविमुदा । परिक्खिना “जहालद्धा” णाम सजोयणादिदोमवज्जिना, एरिसवृत्तिणो भिक्खु भवन्ति ॥६२७६॥ “भिक्षुणसीले” ति गत ।

इदाणि “भिनत्ति” ति भिक्षु — “भिदि” विदारणे, “क्ष्व” इति कर्मण आख्यात, त भिनत्तीति भिक्षु, एष भेदको गृहीत सो दुविहस्स भवति — दव्वस्स य भावस्स य । भेदकग्रहणाच्च तज्जातीयं द्वयमुच्यते — भेदण भेत्तव्व च ।

जतो भण्णति — “दव्वे य भाव” गाहा ।

तत्थ —

दव्वे य भाव भेयग, भेदण भेत्तव्वगं च तिविहं तु ।

णाणाति भाव-भेयण, कम्म खुहेगट्ठत्तं भेज्जं ॥६२८०॥

दव्वे निविहो — दव्वभेदको दव्वभेयणाणि दव्वभेयव्व । दव्वभेदका रङ्कारादि दव्वभेदणाणि परमुमादीणि, दव्वता भेत्तव्व कट्टुमादिय । भावे भावभेदका भिक्षु भावभेदगाणि णाणादीणि भावभेत्तव्व कम्म ति वा, खुह ति वा बोण ति वा, वलुस ति वा वज्ज ति वा, वेर ति वा, पका ति वा मनो ति वा, एते एगट्ठिता । एव जाव भेज्ज भवन्ति ॥६२८०॥

इमानि भिक्षोरेकार्थिकानि शक्रेन्द्रपुरन्दरवत् भिक्षु ति वा जनि ति वा ममग ति वा तवम्मि ति वा भवने ति वा ।

एतेमि इमा व्याख्या —

भिदंतो वा वि खुधं, भिक्षु जयमाणञ्चो जई होइ ।

तवमजमे तवस्मी, भवं खवेतो भवंतो ति ॥६२८१॥

भिनत्तति भिक्षु । यतो प्रयत्ने । तप मन्नापे, तप अस्स, स्वीति तपस्वी । अहवा — अधिकरणभि-
क्षानादिद सूचित — तपमि भव तापम । अहवा — तप मयमामना तवस्मी नारकादिमवाणमत करेतो भवतो । नारकादिभवे वा मययतीति क्षपक्, एत्थ भावमिक्षणा अधिकारो ॥६२८१॥ भिक्षु ति गय ।

इदाणि मामो तस्स णामादिछक्कमो णिक्खेवो —

नामं ठवणा दविण्, खेत्ते काले तहेव भावे य ।

मासस्स परूवणया, पगतं पुण कालमासेणं ॥६२८२॥

णामठवणाओ गताओ, दव्वमासो दुविहो — आगमओ गोआगमओ । आगमओ जाणओ अणुवउत्तो ।
ओ आगमतो जाणगसरीय भविगसरीर, जाणगमवियअइरिओ इमो —

दव्वे भविओ णिव्वित्तिओ य खेत्तम्मि जम्मि वण्णणया ।

काले जहि वण्णिज्जइ, णक्खत्तादी व पंचविहो ॥६२८३॥

भविओ ति एगमविओ बद्धाउ अभिमुहणामगतो य । अहवा — जघरीर भव्यशरीर व्यतिरिक्त ।
“णिव्वित्तिओ” ति — मूलगुणगिव्वित्तिनो उत्तरगुणगिव्वित्तिओ य । तत्थ मूलगुणगिव्वित्ति जेहि जीवेहि तण्हमतए णामगतस्स कम्मस्स उदएण मासदव्वस्स उदएण मासदव्वपाउग्गाइ दव्वाइ गहियाइ ।

तत्थ णक्खन्तचदा इमे -

अहोरत्ने मत्तवीमं, निमत्तसत्तट्टिभाग णक्खत्तो ।

चंदो अउणत्तीस विमड्ढि भागा य वत्तीमं ॥६२८४॥

णक्खत्तमासो सत्तावीस अहोरोत्तो, “तिमत्त” ति एक्कवीस च मत्तसट्ठिभागा - एस् लक्खणमो य परिमाणमो य णक्खत्तमासो । चदमासो अउणत्तीस अहोरोत्ते बत्तीम च बिसट्ठिभागे ॥६२८॥

उडुमामो तीमदिणो, आडचो तीम होड अद्धं च ।

अभिवर्द्धितो य मासो, पगतं पुण कृष्णमासेणं ॥६२८५॥

उदुमासो तीस चैव पुष्पा दिशा । आदिष्वमामो तीस दिशा दिण्ड व । अभिवद्भितो ग्रहिमासगो
भण्ति । एतेमि पचन्ह पदान इह पगत ति अधिकारो कम्ममासेण, कम्ममामो ति उदुमासो ॥६२८॥

अभिर्वाङ्मयस् इम पमाण -

एककत्तीमं च दिणा, दिणभागमयं तहेक्कत्तीसं च ।

अभिप्रद्विओ उ मामो, चउर्वामसतेण छेदेणं ॥६२८६॥

एगत्तीम दिवमा, दिवसस्स चउवीससयस्सइयस्स इगवीमुत्तर २१३३ च भागसत्त एय
अधिमासगप्पमाण ति । एतेसि च णक्खत्तादीयाण मासाण उप्पत्ती इमा भण्णन्ति -

अग्नीहोत्रादी चदो चार चरमाणो जाव उत्तरासाढाण अत गम्भो ताव अद्धारससता तीसुत्तरा सनसद्दी भागाण भवति, एतावना सव्णकखन्मडल भवति ॥ २६ ॥ एतेसि सत्तसद्दीए वेव भागो, भागलद सत्तावीस ग्रहोरत्ता अहो रत्तस्स य इगवीस सत्तसद्दिभागा २७ ॥ एस णक्खत्तामासो परिमाणलक्खणओ । अहवा-एय वेव फुडतर भण्णति - अभियस्स चदयोगो इगवीस सत्तसद्दिभागा । अवरो छण्णक्खत्ता पण्णरस मुहुत्ता भोगाओ एतेसि छह् सनभिसा भरणी अद्धार अस्सेसा साती जेट्ठा य । एतेसि छह् तिण्णि अद्धारत्ता ।

अण्णे छण्णवत्तत्ता पणयालमुहुत्तभोगी त जहा - तिण्णि उत्तरा, पुणब्बसु, रोहिणी, विसाहा य ।
एते णव अहोरेत्ता । तिण्ण मज्जे मेलित्ता बारस जात्ता ।

अण्णे पण्णरम णक्खता तीसमुहुत्तभोगी, त जहा — अस्सिणी, कित्तिया, मिगसिर, पुस्स, मघा तित्ति पुव्वा, हत्थ, चिन्ता, अगुग्गहा, मूल, सवण, षण्णिट्ठा, रेवती य, एते पण्णरम अहोरेत्ता । बारस मिलिता जाया मत्तावीम मव्वे । इक्खमडलग्गिभोगकालो णक्खत्तमागो भण्णति ।

इदानीं चदमासो तस्मै गिरदरस्य, तज्ज्ञा—सावण बहुलपडिवयानातो आरक्ख जाव स'वणो'ण्णिमा समत्तो—एम परिमाणो चदमासो। एव भद्वनादिनो वि सेसा दट्ठ्वा। लक्खणओ पुण आमाहो'ण्णिमाए वतिककनाए सावणबहुलपडिवयाए रुद्धुहुत्तसमयपडमाओ अभितिस्स भोगो पवन्ति चदेण सह। इमो णव मुहुत्ते चउवीस बिमट्ठिभागे छावट्ठि सत्तसदि चो'ण्णियाओ य।

एते इमेण विहिणा भवति—जे ग्रभीयस्म दगवीस सत्तसट्ठी भागा ते सह छेदेण वामट्ठीण गुणिता जाता नेरसमया विउत्तरा, असाण छेदो दगतालीस सत्ता चउपणणा (३१ + ६२ = ९३) तेण भागे ण देह ति असा तीसगुणा कायव्वा, १२०० + ३० = ३६०६०

४१५४

$$६ \frac{१६७४}{४१५४} + ६२ = \frac{१००७८८}{४१५४} \quad ६२ = \frac{१६७४}{५७} = २९ \frac{६६}{५७}$$

नेहि भागेहिने लद्ध नव मुहुत्ता, ६ सेस वामट्ठीए गुणयव्व, एत्थ उ वट्ठो (छेदो) कज्जनि-वामट्ठिभागेण, एक्कतालीसताण चउपणणाण वामट्ठिभागेण सत्तसट्ठी ३३ भवति, एक्केण गुणित एत्तिर ६ चेव सत्त सट्ठीए ६७ भागे हिने लद्ध चउवीस वामट्ठिभागा ३३ छावट्ठ च सेसचुणीया भागा ३३। एत्थ अभीति—भोगे सवणादिया सव्वे णक्कवत्तभोगा छोटव्वा जाव उत्तगमाढाण असपत्तो, तत्थ इमा रासी जाता अट्ठमया ण्णविसुत्तरा ८१६ मुहुत्ताण, चउवीस च वामट्ठिभागे ३३ छावट्ठि चुणीया भागा। ६६ एत्थ पुणो अभीतिभोगो य छोटव्वा, सवणभोगा य मम्मत्तो ३०, धणिट्ठाण य छव्वीस २६ मुहुत्ता बायालीस वावट्ठिभाग दो य चुणिणरा ८२, ६२, २ भागा, ताहे इमो रासी, एयस्मि ८८४, ६०, ६२, १८२, ६७ भुत्ते। मावापोणिणमा मम्मत्ता।

एत्थ चउतीसुत्तरमयस्म सत्तसट्ठीए भागो हायव्वो, दो लद्धा, ते उवर्ग पक्खित्ता, जाना वाणउतीए वावट्ठिभाग ति काउ बावट्ठिए भातिता एक्को लद्धो सो उवर्ग पक्खित्तो, सेसा तीस वावट्ठिभागा ठिता ८८५ जे पचासीया अट्ठमया मुहुत्ताण तेसि ३० तीसाए भागा लद्धा ण्णविसुत्तरा अहोर्त्ता, जे सेसा पण्णरसा मुहुत्ता ते ६२ वामट्ठीए गुणिता जाता णवमया तीसुत्तरा, एत्थ जे ते सेसा तीस वावट्ठिभागा ते पक्खित्ता जाया णवमया सट्ठी ८६०। एयस्म भागो तीसाए, लद्धा वत्तोस, विसट्ठिभागा एते अउणत्तीसाए अहोर्त्ताण हेट्ठा ठाविया विसट्ठित्ता छेदमहिता। एव एमो चदमासो अउणत्तीस दिवसा विसट्ठिभागा य वत्तीस भवति।

इदाणि उडुमामो भण्णति—एक्क अहोर्गत बुद्धीए वावट्ठि भागे छेत्ता तस्स एक्कसट्ठी भागा चदगतीए तेहि समत्ती भवति।

कह पुण ?, उच्चये—जति अट्ठारमहि अहोर्त्तमहि सट्ठेहि अट्ठारसनीमुत्तरासया लब्धति तो एक्केण अहोर्त्तेण किं लब्धामो। एव तेरगमियकस्से कते आगय एगमट्ठि वावट्ठिभागा ३३ अहो रत्तस्स, एसा एक्कसट्ठी तीसाए तिहीहि मासा भवति तित्तीसाए गुणयव्व, ताहे इमो रासी जानो १८३०। एयस्स एगसट्ठीए भागो हायव्वो लद्धा तीस तिही, एसा एव उडुमामो णिक्कणो एस चेव कम्ममासो, सहाणमासो य भण्णति। एस चेव रासी वावट्ठिहिता चदमासा वि लब्धति।

इदाणि आइच्चमामो भण्णइ। सो इमेण विहिणा आणयव्वो—आदिच्चो पुत्तभागे चउमु अहोर्त्तेसु अट्ठारमसु य मुहुत्तेसु दक्षिणायण पवत्तति, सो य अप्पणो चारेण सव्वणक्खत्त-मडलचार चरित्ता जाव पुणो पुत्तस्स अट्ठ अहोर्त्ता चउवीस मुहुत्ता भुत्ता।

एम सव्वो आइच्चस्म णक्खत्तभोगालो पिडेयव्वो, इमेण विहिणा—

सयभिसयभरणीओ, अट्ठा अस्सेस माति जेट्ठा य।

वच्चनि मुहुत्ते एक्कवीमति छच्च अहोर्त्ते ॥

तिण्णुत्तरा विमाहा, पुणव्वसू रोहिणी य बोधव्वा।

गच्छति मुहुत्ते तिणिण चेव वीस च अहोर्त्ते ॥

अवसेमा णक्खत्ता, पण्णम्म वि मूर्महसया जति ।
वारम्म चैव मुत्त, तेरसय ममे अहोरेत्ते ॥
अभिनि छच्च मुत्त, चत्ताग्गि य केवने अहोरेत्ते ।
मूरेण मम गच्छट्ठ, एत्तो करण च वोच्छामि ॥

एय मव्व मेविण्ण एमा अहारत्तरामी भवति ॥३६६॥

एय आदिच्च वरिम । एयस्म वारमहि भग्गा भागनद्ध आदिच्चमासो । अहवा — पचगुणस्स सट्ठीए
भागो भागनद्ध तौम अहारत्ता, अहारत्तस्स य अद्ध, एम आदिच्चमासो पमाणो लक्खणतो य । एत्थ वि
मव्वमासा अण्णो भागहारत्ति उपपज्जति ।

इदाणि अभिवद्धिओ —

छच्चैव अतीगत्ता, हवति चदम्मि वामम्मि ।
वारम्मामेणने, अट्ठाइज्जेहि पूरितो मामो ॥
एवमभिवद्धितो खलु, तेरम्मामो उ बोधव्वो ॥

वपमिनि वास्यण ।

सट्ठीए अतीनाए, होति तु अविमामगो जुगद्धम्मि ।
वावीम पक्खमने, होई विनिओ जुगत्तम्मि ॥

अहवा — णक्खत्तादेमसाग दिग्गण य ण इमातो पचविहातो पमाणवरिमदिवसरासीतो अट्ठारम-
मतीसुत्तराओ आणिज्जति । तसु पचप्पमाणा वरिमा एमे — चद चद अभिवद्धिय पुणो चद अभिवद्धिय ।
तेमिमा करण — चदमासा एगुणीम २६ दिवस, दिवसम्म य वामट्ठिभागा वतीस ३३, एम चद मामो ।

बारमामवरिम ति — एम बारमगुणे वज्जति, ताहे इम भवति अइयाला तिण्णिमया दिवसाण,
विमट्ठिभागा य तिण्णिमया चुवमीया, ते वावट्ठी मडग नद्धा छद्धिमा, ते उवरि पक्खत्ता जाता तिण्णि सता
चउप्पण्णा, ३४६ समा बारम, ते एयमा अट्ठेण उवट्ठिता जाया एगतीस भागा ३६, एय चदवरिसपमाण ।
'तिण्णि चदवरिम ति तो तिगुण कज्जति तिगुणकय इम भवति वामट्ठिहिय दिग्गमहस्स, एगतीसविभागा
य अट्ठारस' । एय तिण्ह चदवरिमाग पमाण । एत्तो अभिवद्धियकरण भण्णति सो एकतीस दिग्गति एकवीससय
चउवीसमय भागाण, एरिम "बारम मामा वरिम" ति काउ बारमहि गुणयव्वा, गुणि ए इमो रानी, तिण्णि
सया बोहत्तरा दिग्गण चउवीसमया भागा चोदममया वावण्णा, छेदेण भातिते लद्धा एककारस, ते उवरि
छूढा जाना तिण्णिमया दिवमाण तेमीया हिट्ठा अट्ठासोनि सेमगा, ते मच्छेया चउहि उवट्ठिता जाया एकती-
समागा वावीस, एय अभिवद्धियवरिसपमाण ।

"दो अभिवड्ढियवरिम" ति एम रासी दोहि गुणयव्वो, दोहि गुणि ए इमो रासी सत्तसया छावट्ठा
दिवसाण इगतीम भागा य चवीयाला ए एकतीसभानियालद्धो तत्थेक्को, सो उवरि छूढो, जाया सत्तसया सत्तट्ठा
एक्कतीसतिभागा य तेरसा । ७६७, ३३ । एम अभिवड्ढियवरिसरासी पुव्वभणियचदवरिसरासिस्स मेलितो ।
कह ? उच्यते — दिवमा दिवसेसु, भागा भागेसु । ताहे पचवरिसरासी "सरत्तविपुद्धो भवइ उ" अट्ठारससया
तीसुत्तरा ॥१८३०॥ एम धुवरामी ठाविज्जति । एयाओ धुवरासीओ सव्वमासा णक्खत्तादिया
उप्पाइज्जति अप्पण्णो भागहारेहि ।

१-१० २ ।	२-३१	३७२ ।	
१८	१२१	१४४२	३-३८३ २२ ।
३१	१२४	१२४	३१

जग्नो भणित—

भा-ममि-रितु-स्रमामा, मत्तडि वि एगमडि मट्टी य ।
अभिवड्डियम्म तेरम, भागाण मत्त चोयाला ॥६२८७॥

मत्तडिं णक्खत्ते, छेदे वावड्डिमेव चंदम्मि ।

एगडि अ उडुम्मि सट्ठी पुण होइ आइच्चे ॥६२८८॥

मत्तमया चोयाला, तेरमभागाण होंति नायव्वा ।

अभिवड्डियम्म एमो, नियमा छेदो मुणेयव्वो ॥६२८९॥

अट्टारमया तीसुत्तरा उ ते तेरमेसु मंगुणिता ।

चोयाल मत्तभइया, छावड्डितिगिवड्डिया य फलं ॥६२९०॥

भा इति णक्खत्तमासो, सति त्ति चदमासो, रिउ त्ति वा कम्ममासो वा एगट्ठ, सूरम.सो य, एतेसि मामाण जहामख भागदारा इमेरिसा—मत्तमट्टी विमट्टि एगमट्टी सट्टी य अभिवड्डियम्म मामस्स भागहारा सत्तमया चोयाला तेरमभागेण । एतेसि इमा उप्पत्ती जइ तेरमेहि चदमासेहि बारम अभिवड्डियम.सा लब्भति ता वावड्डि ए चदमासेहि कति अभिवड्डियमासा लभिस्यामो एव तेरासिए कते आगत सत्तावणमासो मासस्स य तिणि तेरमभागा, एते पुणो सवणिया जाता सत्तमया चोयाला तेरमभागाण ति, एतेहि अट्टारसण्ह सयाण तीमुत्तराण तेरसगुणिताण २०७९० भागो हायव्वो, लद्ध एकत्तीम दिणा, मेस मत्तमया छविमा ने ऋहि उवड्डिया जाया मय एकवीसुत्तर अमाण, छेदे वि सय चउवीसुत्तर, एम अभिवड्डियवरिसवारमभागे अधिमासगो । जो पुण ममिसूरगतिविसेमणिप्फणा अधिमासगो सो अउणत्तीस दिणा विसट्टिभागा य बत्तीम भवति ।

कह ? उच्यते—“समिणो य जो विमेमो आइच्चवस्म य ह्वेज्ज मामम्म तीमाए मगुणिता अधिमामगो चदो । आइच्चमासो तीस दिणा तीमाय मट्टिभागा, चदमासो अउणत्तीस दिणा विमट्टिभागा य बत्तीस । एतेमि विमेमे कते मेसमुद्धरित एकत्तीम वसट्टिभागा अण्णे तीस चैव वामट्टिभागा एते उवड्डिया परोप्पर छेदगुणकाउ एगस्स सरिसच्छेदो नेट्टो अमेसु पक्खत्ता तेसु वि च्छेय सवट्टिएसु एगमट्टि वामट्टि भागा (उ) जाया अहोरत्तस्स, एम एक्को तिही सोमगतीए सो तीसगुणितो विसट्टिभागागो चदमासपरिमाणणिप्फणो अहिमामगो भवति ।

अथवा—इमेण विहिणा कायव्व—जइ एक्केण आइच्चमासेण एक्का सोमतिही लब्भति तो तीमाए आदिच्चमासेहि कति तिही लब्भामो आगत तीम सोमतिहीधो, एम आदिच्चचदवरिसअभि वड्डियल्लम्मम य प्रतिदेन प्रतिमास च कला बहुमाणी तीमाए मासेसु मासो पूरति ति, एमो अधिमासगो चदमासपरिमाणो चदो अधिमासगा भणति, एय चैव अभिवड्डि पडुच्च अभिवड्डियवरिस भणति ।

भणिय च सूरपण्णत्तीए—“तेरस य चदमासो एसो अभिवड्डिओ ति णायव्वो” ववमिति वाक्यशेष । तस्स बारसभागे अधिमासगो अभिवड्डियववमसात्थेय । अथवा—अधिमासगपमाण इम एगत्तीम दिणा अउणत्तीम मुहुत्ता विसट्टि भागा एम सतरसा, एते कह भवति ? उच्यते—ज एगवीस उत्तरमय असाण तीसगुण कायव्व तस्म भागो सयेण चउवीसुत्तरेण भागलद्ध अउणत्तीस मुहुत्ता, सेसस्स अट्टे ताव दो, तत्थ विसट्टि भागा सत्तरस भवति, एव वा एकत्तीसदिनसहिय अधिकमासपमाण । एमो पचविहो कालमामो भणति ॥६२९०॥

इदानीं भावमामो सो दुविहो आगमतो णा आगमतो य -

मलादिवेदओ खलु, भावे जो वा वियाणतो तस्म ।

न हि अग्निगाणओऽग्गी-णाणं भावो ततोऽण्णो ॥६२६१॥

जो जीवा घण-माम-मूल कद-पत्त पुष्प फलादि वेदति सो भावमामो, जो वा आगमतो उवउत्तो म म इति पदन्धज गओ ।

चोदगाह - “ण हि अग्निगाणओ अग्नि” ति तत्त्वग्निज्ञानोपयोगत आत्मा अग्न्याख्यो भवति ।

एवमुक्ते चोदकेनाचार्याह - ‘गाण भावो ततो णऽगो’ ति गाण ति ज्ञान, भाव अधिगम उपाय इत्यनर्थान्तरमिति कु-रा अग्निद्रव्योपयुक्त आत्मा तस्मादग्निद्रव्यभावादन्वो न भवति ॥६२६१॥

एतद् छविहा मामग्निकेवो, कालमावेग अधिकारो तत्त्व वि उडुपासेण, मेसा सीसस्स विकोवण्टा भगिया मामे ति गय ।

इदानीं “परिहारे” ति तस्स इमो णिकेवो -

णामं ठवणा दविए, परिगम परिहरण वज्जणोग्गहे चव ।

भाववण्णे सुद्धे, णव परिहारस्स नामाई ॥६२६२॥

भावपरिहारो दुविहो कज्जति (भाववण्णपरिहारो सुद्धो य) भाववण्णपरिहारितो एस चरित्तायारो । अहवा - भावपरिहारितो दुविहो पसत्थो अपसत्थो य । पसत्थे जो अण्णामिच्छादि परिहरति, अपसत्थो जो ण गममवचिन्ताणि परिहरति । एव भावे ति वेहे कज्जमाण दमविहो परिहारनिकेवो भवति ॥६२६२॥

तेमि इमा व्याख्या - णामठवणातो गनातो, वनिरित्तो दव्वपरिहारो ।

कटगमादी दव्वे, गिरिनदिमादीसु परिहरो होति ।

परिहरण धरण भोगे, लोउत्तर वज्ज इत्तरिए ॥६२६३॥

लोगे जह माता ऊ. पुत्तं परिहरति एवमादी उ ।

लोउत्तरपरिहारो, दुविहो परिभोग धरणे य ॥६२६४॥

जो कम्मादीणि परिहरति आदिग्गहणेण खानू विमसण्णादी । परिगमपरिहारो णाम जो गिरि तदि वा परिहरतो जानि आदिग्गहणातो समुदमडवि वा । परिगमो ति वा पज्जहारो ति वा परिहरो ति वा एगट्ट । परिहरण परिहारो दुविहो लोइयो लोउत्तरो य । तत्त्व लोगे इमो - ‘लोगे जह’ पुव्वद्ध कठ ।

लोउत्तरपरिहारो दुविहो - परिभोगे धरणे य । परिभोगे परिभुजति पाउणिज्जतीत्यर्थ । धारणपरिहारो नाम ज मगोविज्जति पडिनेहिज्जति य ण य परिभुजति ।

१ सू० १ । “भावपरिहारो दुविहो य पसत्थो । अपसत्थो जो अण्णामिच्छादिद्वी परिहरति भाववण्णपरिहारितो एव तवविधो भवति, भावसामान्यतो अट्टविधो भवति । अहवा - सुद्ध परिहारितो एस अण्णइमारो, भाववण्ण परिहारितो एस चरित्तायारो ।” एव पाठ स्तावद् टाडपत्रकितप्रतो टिप्पणीरूपेण सूचित ।

दुर्विहा - दोहसा लाउल्लिहा य । लाउसा इल्लिहा आवकहिना य । उल्लिहा सूर्यगमनगादिदमदिवसवज्जण,
आवकहिना नरा ग वल्ल , नरा दुर्विहा - इल्लिहा आवकहिना य ।
तत्थ इल्लिहा मज्जायत्तागमभिगममदु दि आवकहिना र पिणा । अहवा - अट्टारम पुग्गिसेमु ।'

अणुगहपरिहारो -

खोडादिभंगऽणुगह, भावे आचण्णमुद्वपरिहारो ।

सामादी आचण्णो, तेण तु पणन न अन्नंहि ॥६२६५॥

“खाउभा” लि वा, “उक्कोडभा” लि वा, “अक्खाउभा” लि वा एगट्ट, अउ मयादाया ।
खोड गम ज रायकुत्तम्म रि गदि इव्व दायव व्हिक्कण पर परिणयण चाअटादिय ण य चोन्नगानिप
तात्तम्म भगो खाउभा, न रायणुगहण मज्जायत्ता भज्जा एक दा निणि वा सवति जावन्ति अणुगहा
न कज्जति तत्थि काल सा दम्भदिमु परिहरिज्जति तावत् कान न दाप्पेत्तय । एम अणुगह परिहारो ।
भावपरिहारो दुर्विहा - आचण्णपरिहारो मुद्वपरिहारो य । तत्थ मुद्वपरिहारो जा वि मुच्चा पचयाम अणुग
वम्म परिहरट्ट - करानोत्थय । विमुद्वपरिहारकणा वा घेप्पद् । आचण्णपरिहारो पुण जो मामिय वा जाव
दम्भामिय वा पायच्छित्त आवण्णा तण सो मपच्छित्तो अमुद्धा अ विमुद्वपरिहारो माह्वि परिहरिज्जति । इह तण
अहिकारो ण मेनेहि (अधिहारो) विभावगट्टा पुण पळविया ॥६२६६॥

इदाणि 'ठाण, तस्मिन्मो चोहमविहो निक्खेवा -

नामं^१ ठवणा^२ दविणं^३, खेत्तद्धा^४ उट्ठो^५ विरति^६ दमही ।

मंजम^७ पग्गह^{१०} जोहो^{११}, अचल^{१२} गणण^{१३} मंधणा^{१४} भावे ॥६२६६॥

णामठवणातो गयाओ, जाणमगीर भवियवइरित्त दव्वट्टाण इम -

मच्चित्तादी दव्वे, खेत्ते गामादि अद्वदुविहा उ ।

तिरियनरे कायठिती, भवठिति चेवावमेमाण ॥६२६७॥

सच्चित्तदव्वट्टाण अचित्त मीस । सच्चित्तदव्वट्टाण तिविध - दुपय चउपय अपय । दुपयट्टाण दिगे जत्थ
मणूमा उवविसति तत्थ ठाण जायति, चउप्यदाण पि एव चत्र, अरदाण पि जत्थ गरुय फल निक्खिप्पइ
तत्थ ठाण सजायति । अचित्त जत्थ फलगाणि माहज्जादि णो निक्खिप्पति तत्थ ठाण । एतेमि चेव दुपदा
दियाण समलकिताण पूववत् घडस्म वा जलमरियम्म ठाण (मीस) । खेत्त गामणगरादिय तेमि ठाण
खेत्तट्टाण, अहवा - खेत्ता गामणगरादियाण ठाण ।

अद्दा काल इत्थर्थ, मो दुविधो उवलक्खितो जीवेम अजीवसु य । अजीवेसु जा जस्स ठिई ।
समारिज्जीवेसु दुविधा ठिई - कायठिई भवठिती य, तत्थ तिरियणरेसु अणोभवगाहणमभवातो कायठिई,
मेसाण ति - देवनागाण एगभवमच्चिट्टाण भवठिई अहवा - कानट्टाण समयावलियादि णेय ॥६२६८॥

ठाण निर्माय तुअट्टण, उट्टाती विरति मव्व देमे य ।

मज्जमठाणममखा, पग्गह लोगीतर दो पणगा ॥६२६८॥

‘उट्ट’ ति तज्जानीयगणानां निर्मायानुयट्टणं, वि गतिता, तेमि उट्टट्टाण आदि त पुण काउम्मसग निर्माय उव्विमण तुअट्टण मविण उ । ‘विरति’ ठाण दुविह—देमे मव्वेय, नत्थ देमे मव्वेय अन्वया पच्च, मव्वेय मधूग मव्वेयया पच्च । उव्विमट्टाण उव्विमस्रो जस्स वा ज आवस्सहट्टाण । ‘मज्जमठाण’ ति वा अज्जमवम यठाण ति वा परिगामठाण ति वा एगट्ट । एत्थ पढममज्जमट्टाणे पज्जय-परिम ग मव्वगाममज्जमस्य मव्वगामपडमहि अगनगुणित पटम मज्जमट्ट ण पज्जवग्गेण भवति । ततो वितियादि-मज्जमट्टाणा उव्वरगिविसुद्धीर अगनभागाहिगा णेया, एव लक्खणा सामण्यतो मज्जमठाणा असखेज्जा । विभागतो सामानियल्लेमज्जमठाणा दा वि सरिमा असखेज्जे ठाण गच्छति, ततो परिहारसहिता ते चेव असखेज्जागे गच्छति, ताह परिहारितो वाच्छिज्जति । नदुवरि सामानियल्लेदोवट्टावणिगा अण्णे असखेज्जाठाणे गच्छति, ताह न वाच्छिज्जति । नदुवरि मुहुममपरायमज्जमठाणा केवलकालतो अनामुहुत्तिया असखेज्जा भवति, ततो अगनगुण पग अहव्व य मज्जमट्टाण भवति । इमा ठवणा । ‘पग्गहठाण’ दुविह — लोइय, इतर लोउत्तर । ‘दो पणगा’ ति लोउय पच्चविह ॥६२६८॥

न जहा -

गयाऽमच्च पुरादिय, सेट्ठी मेणावती य लोगम्मि ।

आयरियादी उत्तर, पग्गहणं होड उ निरंहो ॥६२६९॥

गया जुवरया अमच्च । सेट्ठी पुराहितो । उत्तर पग्गहे ठाण पच्चविह — आयरिए उव्वग्गाए पवति येरा गणावच्छेद । प्रक्कें अट्ट, प्रट्टा वा ग्रह, प्रधानस्य वा ग्रहण प्रग्रह इत्यथ ॥६२६९॥

इदानीं जोहट्टाण पच्चविह इम—

आलीढ पच्चलीढे, वेमाहे मंडले ममपदे य ।

अचले य निर्येकाले, गणणे एगादि जा कोडी ॥६३००॥

वामुअ अगमो काउ दाहिण पिट्ठो वामहत्थेण घणु वेत्तूण दाहीणेण ४अपगच्छइ ति आलीढ । त चिय विवरीय पच्चालीढ । आलीढ अतो पणिततो काउ अगतले बाहि ज रहट्टिओ वा जुज्झइ त वइसाह । जाणूरुज्जे य मडले काउ त्र जुज्झइ त मडल । ज पुण तेसु चेव जाणूरुसु आयतेसु समपादट्टितो जुज्झति न समपाद । अण्ण भणति—ज एतेमि चेव ठाणाण जहासभव चलियठितो पासतो पिट्ठो वा जुज्झति न छट्ट चनियण म ठाण ।

“अचलट्टाण” नाम जहा — परमाणुपोगलेण भते । निरेए कालतो केवचिर होति ?, जहणण एक्क समय, उक्कोमेण असखेज्ज काल, असखेज्जा उस्सप्पिणि ओमप्पिणीओ । निरेया निश्चल इत्यर्थ । एव दुपदेमादियाण वि वत्तव्व । ‘गणण’ ति गणिय, तस्म ठाणा अणेगविहा, जहा एक दह मत महम्म दममहम्माइ सयमहस्स दहशनमहम्माइ कोडी । उवरि पि जहासभव भाणियव्व, ॥६३००॥

१ गा० ६२६५ । २ गा० ६२६५ । ३ गा० ६२६५ । ४ पश्चानुवमससरति । ५ गा० ६२६५ । ६ गा० ६२६५ ।

इदाणि “सधणा” सा दुविहा - दवे भाव य ।

पुणो एक्केक्का दुविहा - छिण्णसधणा अछिण्णसधणा य ।

नत्थ दवे “छिण्णसधणसधणा” इमा -

रज्जुमादि अछिण्ण, कचुगमादीण छिण्णसधणा ।

मेदिदुगं अछिण्णं, अपुव्वगहणं तु भावम्मि ॥६३०१॥

मीमात्रो ओदइय, गयम्म मीमगसणे पुणो छिण्ण ।

अपसत्थं पसत्थं वा भावे पगनं तु छिन्नेणं ॥६३०२॥

ज सूत्र वा मुज वा रज्जु अछिण्ण सधेति सा अछिण्णसधणा । अणोग्गखडाण इमा छिण्णसधणा जहा कचुगादीण । भावसधणा दुविहा - छिण्णा अछिण्णा य, नत्थ अछिण्णसधणा मेदिदुग उवमामग सेदी खवगसेदी य । उवमामगसेदीए पविट्ठो अणनाणुबधिपमिइ आठनो उवमामेउ न थक्कइ ताव जाव मव्व मोहणिज्ज उवमामित । खवगसेदीए वि एव चेव अपुव्वभावगगण करेत्तो न थक्कइ ताव जाव सत्थ माहू खविय । एमा अछिण्णसधणा । एव अपसत्थाओ वि पसत्थसम्मतभाव सकनस्म ज पुणो अपसत्थमिच्छता-दिम व सकमति । एसा अपसत्थछिण्णभावसधणा ।

अहवा - भावट्ठाण ओदइय-उवममिय-खइय खओवममिय परिणामिय सन्निवाइयाण अप्पण्णो भाव-सत्त्वठाण भण्णइ । एत्थ अधिकारो भावट्ठाणेण, नत्थ वि छिण्णभावसधणा ।

कह ? उच्यते - जेण सो पसत्थभावाओ अपसत्थ भाव गओ, तत्थ य सामियानि आवण्णा, पुणो आलोयणापरिणओ पसत्थ चव भाव सधेति ॥६३०२॥

इयाणि पडिसेवणा, सा इमा दुविहा -

मूलत्तर पडिसेवण, मूले पंचविह उत्तरे दमहा ।

एक्केक्का वि य दुविहा, दप्पे कप्पे य नायव्वा ॥६३०३॥

मूलगुणानियारपडिसेवणा उत्तरगुणाइयारपडिसेवणा य । मूलगुणानियारे पाणातिवायादि पंचविहा । उत्तरगुणेसु दसविहा इमा - पिडस्स जा विसोही, समितीतो ६, भावणाओ य ७, तवो दुविहो ८, पडिमा ९, अभिम्माहा १० ।

अहवा - अणागयमतिककत कोडिमहिंय गियट्ठिय चेव मागारमणागार परिमाणकड गिरवसेसं सकेय अट्ठापच्चक्खाण चेति ।

अहवा - उत्तरगुणेसु अणेगविहा पडिसेवणा कोहातिया । मूलत्तरेसु दुविहा पडिसेवणा । सा पुणो एक्केक्का दुविहा - दप्पेण कप्पेण वा ॥६३०३॥ दप्पकप्पा पुव्वमगिता ।

सीसो पुच्छति -

किह भिक्खु जयमाणो, आवज्जति मासियं तु परिहारं ।

कंटगपहे व छलणा, भिक्खु वि तहा विहरमाणो ॥६३०४॥

पुव्वद्ध कठ आयरियो भणति - कटगपहे व पच्छद्ध कठ ॥६३०४॥

किं चान्यत् -

निक्खल्लमि उदरवेगे, विसमम्मि वि विज्जल्लमि वच्चंतो ।

कुणमाणो वि पयत्तं, अवमो जह पावती पडणं ॥६३०५॥ पूर्ववत्

दृष्टान्तीपसहार -

तह मसणमुविहिगाणं, मच्चपयत्तेण वी जयंताणं ।

कम्मोदयपच्चनिया, विराहणा कस्मइ हरेज्जा ॥६३०६॥

अण्णा नि हु पडिमेवा, सा उण कम्मोदएण जा जतणा ।

सा कम्मक्खयकरणी, दप्पाऽज्जय कम्मज्जणणी उ ॥६३०७॥ पूर्ववत्

पुणरप्याह चोदक - किमेका तेनैव कर्मोदयप्रत्यया प्रतिवेवना उतान्योऽपि कश्चित्प्रतिवेवनाया अभिन भद ? उच्यते, अस्तीति ब्रूम । यतमानस्य यः कलिका प्रतिवेवना सा कर्मोदयप्रत्यया न भवति, न य तत्थ कम्मबोधो, जतो न पडिसेवतस्स वि कम्मखओ भवति । जः पुण दप्पेण कप्पेण वा पत्ते अजयणाए पडिसेवणा म। कम्म जणेति - कम्मवध करणीत्यर्थः ।

यतश्चैव तत इदं सिद्धं भवति -

पडिमेवणा वि कम्मोदएण कम्ममवि तं निमित्ताणं ।

अण्णोण्हेउसिद्धी, तेसि बीयंकुराण व ॥६३०८॥

कथा । पडिमेवणाए हेऊ (कम्मोदया कम्मोदयहेऊ) पडिसेवणा, एवमेवामन्यान्त्यहेतुत्वं तस्यापि प्रसाधको दृष्टान्तः - यथा बीजाकुरयो ॥६३०८॥

दिष्टा पडिमेवणा कम्महेतु पमादमूला या, सा य खेत्तमो कह हुज्जा ?, उवस्सये बहि वा वियारादि-
गिययम्म । कालतो दिया वा गतो वा । भावमो दप्पेण वा कप्पेण वा अजयणाए पडिमेवति । मासातिअति-
चारपत्तेण मवेगमुवगाएण आलोयणा पउजियव्वा । इमं च चित्ततेण णज्जति केवल जीवितघातो भविस्सति
समल्लमरणेण दोहसमारी भवति त्ति काउ भणति -

तं ण खमं खु पमादो, मुहुत्तमवि अच्छित्तुं मसल्लेणं ।

आयरियपादमूले, गंतूणं उदरे मल्ल ॥६३०९॥

आलोयणाविहाणेण पञ्चित्तकरणेण य अतियारसल्ल उदरति विसोधयतीत्यर्थः, ॥६३०९॥

जम्हा मसल्लो न सिज्जति, उद्धरियसल्लो य सिज्जइ ।

तम्हा तेण इमं चिनियव्व -

अहर्यं च मावराही, आसो इव पत्थिओ गुरुसगामं ।

वइतग्गामे संखडिपत्ते आलोयणा ति विहा ॥६३१०॥

अण्णाण अतियारसल्लसल्लिय गाउ तस्म विसोहणट्ट गुरुसमीवे प्रस्थितो । कहं च ?, उच्यते
अश्ववत् । तं च गुरुसमीव गच्छतो वइयाए खट्वादाणियगामे वा सखडीए वा अपडिबज्जतो गच्छइ, गुरुसमीव
पत्तो आलोयणं देति, सा य आलोयणा ति विहा इमा - विहारालोयणा, उवसपयालोयणा, अवराहालोयणा
य ॥६३१०॥

आमे दव औपम्ये अस्य व्याख्या -

मिश्रुज्जुगती आमो, अणुत्तति मारहि ण अत्ताणं ।

इय मज्जमणुवत्तति, वइयाड अवक्किआं माह ॥६३११॥

मिश्र मद वा उज्जुवक वा वक्र वा सारहिस्स छदमावृत्तमाणो गच्छति, यो य आरुद्धदग चारि पाणि वा अणुत्तति । एव माधु वि ब्रहा जहा सज्जमो भवति तहा तथा मज्जमणुवत्तमाणो गच्छइ, णा वइयादिमु मायामोक्खत्तया पडिवग्गता वइयादिमु वा ग वक्कण गहण गच्छति । आलायगपरिणओ जति वि अणानाणि कान करति तहावि आराहणो विमुद्धत्वात् ॥६३११॥

तस्य विहारालोयणा इमा -

आलोयणापरिणओ, मम्मं मंपट्ठिओ गुरुमगामे ।

जइ अतरा उ काल, करेज्ज आराहओ तहऽवि ॥६३१२॥

पक्खिव चउ मंवच्छर, उक्कोम वारसण्ह वरिमाण ।

ममणुण्णा आयरिया, फड्डगपतिया वि विगडेंति ॥६३१३॥

सभो तेया आयरिया पक्खिण आलोएति, रायणियस्म ।

राडगितो वि ओमरानिणियस्म आलोएति ।

जति पुण राडगिओ ओमो व ज्ञीयत्थो चाउम्मासिए आलोएति । तस्य वि अमतीने सवच्छरिण आलोएति । तस्य वि अमतीने जस्य मिलति गीयत्थस्स उक्कोमेण वारमहि वरिमेहि दूरानो वि गीयत्थममीव गत्त आलोएयव्व । फड्डगपतिया वि आगनु पक्खियादिमु मूलायणियस्म आलाएति ॥६३१३॥

तं पुण ओहविभागे, दरमुत्ते ओह जाव भिण्णो उ ।

तेण परेण विभाओ, संभमसत्थादिमुं भइं ॥६३१४॥

त विहारालोयण ओट्ठण विभागेण वा दति । तस्य ओहेण जे साधु ममणुण्णा “दरमुत्ते” ति भोतु आढत्ताण पाहुणता आगता ते आगतुगा ओहेण आलोएति, जइ य अनियारो पणम दम एणारस वीम भिण्णमासा य तो ओहालोयण दाउ भुजति । अह भिण्णमासानो परेण अइयारो मापादितो भवति तो वीमु समुद्धिसित्ता विभागेण आलोएति । “संभमसत्थादिमुं भनिय” ति संभमो अगिसभमादि सत्थेण वा सम भनाण अतरा सत्थसंश्लेषेमे पाहुणया आगया होज्ज, सत्थो य चरित्तकामो, ते य मासादिआण्णा, भायणाणि य णत्थि जेमु वीमु समुद्धिसिस्मिन्, ताहे ओहेण आलोएत्ता एक्कहु समुद्धिसित्ता पच्छा विभागेण आलोयव्व विमत्तारेणेत्यर्थ ॥६३१४॥

इराणि आलोयणाए कालनियमो भण्णति -

ओहे एगदिवसिया, विभागतो एगऽणेगदिवसा तु ।

रत्तिं पि दिवसओ वा, विभागओ ओहओ दिवसे ॥६३१५॥

ओहालोयणा णियमा एक्कदिवसता, अप्पावराहत्तणओ आसणभोधणकालत्तणओ य । विभागा-लोयणा एगदिवसिया वा होज्ज, अणेगदिवसिया वा होज्ज ।

न पुन अगेगदिवसिया वा होज ? बहुमवर इत्तणसो । बहु आलोपयन्व आयसिया वावडा होजा,
ग उहु वल पडिच्छति । आलावगा वा वावडा होज । एव अगेगदिवसिता भवति । विभागालायणा नियमा
दिवसना रति वा भवति । आहालायणा गियमा दिवसतो, जेग रानो ण भुजति ॥६३१॥

ओहालोयणाए डम विहाण —

अप्पा मूलगुणमुं, विराहणा अपउत्तरगुणमुं ।

अप्पा पामत्थाडमु, दाणग्गह मंपओगोहा ॥६३१६॥

कत्ता, एव आलाएणा मडलीए एक्कट्टु समुद्धिमति ॥६३१६॥

विहारविभागानोयणाए इम कालविहाण —

भिक्षाति-णिग्गएमु, रहिते विगडेति फडुगवती उ ।

मव्वममक्खं केती, ते वीमसियं तु कहयति ॥६३१७॥

अदिग्गहणेग वियारूमि विहारूमि वा जाहे मामपडिच्छया णिग्गया ताहे फडुगवती एगाणियस्स
मारियस्स आलाएति ।

कड प्रायसिया भणति — जह फडुगवती महादियाण मव्वसमिक्ख आलाएति ।

कि कारण ? उच्यते — ज । कच्चि विम्मसिय पद होज्ज त ते मारेद्विति — कहयतीत्यर्थ ।

न पुन कसिम आलोपति ? काण वा परिवाडीण ? अत उच्यते —

मूलगुण पढमकाया, तेमु वि पढम तु पथमादीमु ।

पादप्पमज्जणादी, चितियं उल्लादि पंथे वा ॥६३१८॥

दुविहो अवराहो — मूलगुणावराहो उत्तरगुणावराहो य । एत्थ पढम मूलगुणा आलोपयन्वा, तेमु
वि मूलगुणेषु पढम पाणानिवातो तत्थ वि पढम पुढविकायविराघणे जा पये वच्चनेण विराहणा कया,
वडिल्लाओ अयडिल्ल अयाडल्लाओ वा थल्लिन् मक्खमेग पदा ण पमज्जिता, ममरक्खे मड्डियादिहृत्थमनेहि वा
भिक्षयागहण कत एवमादि पुढविकायविराहण आ-एति । ततो आउक्काए उदउल्लेहि हृत्थेहि मत्तेहि
भिक्षुभाहण कय पये वा अजयणाए उदउल्लेणो, एवमादि आउक्काए ॥६३१८॥

ततिए पतिट्ठियादी, अभिधारणवीयणादि वायुमि ।

वीनादिघट्ट पंचमे, इंदिय अणुवातिओ छट्टे ॥६३१९॥

ततिए नित्तउक्काए परपरादिपतिट्ठियगहिय सजातिवहीए वा ठितो एवमादि नेउक्काए ।
वाउक्काए ज घम्मनेण बाहिं णिग्गु वातो अभिघारेउ भनादि मरीर वा वीयणादिणा वीविय, एवमादि
वाउक्काए । पंचमे वणम्मसिकाए बोयादिमघट्टणा कया, भिक्षादि वा गहण, एवमादि वणस्ससिकाए ।
“छट्टे” ति तसकाए, तत्थ इदियाणुवाण आलोए, पुव्व वेइदियाइयार ततो तेइदि-वउरिदि पचदियाइयार ।
एवमादि पाणानिवाओ ॥६३१९॥

दुब्भामियहमितादी, चितिए ततिए अजाइतो गहणे ।

घट्टण-पुव्वरतादी, इदिय आलोण मेहुण्णे ॥६३२०॥

विधिं सुसावाण, तस्य किंचिदुक्तमस्ति भगिन, हस्येण सुसावाणो भूमिश्च, एवमादि सुसावाण । तस्मिन् नि अदन्तादये, तस्य असाविष्य तदङ्गनादि गृह्यि हाञ्ज, उम्गह वा अणगुणवेत्ता कातियादि बोमिरित होञ्ज, एवमादि अदिश दणे । मटुग, चतिन महिमदिमु जसम्मद् इत्थिमघट्टणफो सो सानिच्चिओ होञ्ज, पुक्कयस्सिलिय दि वा अगुमस्य हाञ्ज उन्थीग वा वयगणि मगोत्तराणि इदियाणि दट्ठु ईमि नि राग गतो हाञ्ज, एवमादि मटुगे ॥३२०॥

मुच्छानिस्सि पचमे, छट्ठे लेवाड अगय सुठादि ।

उत्तरभिक्षवऽविमोही, अममित्तं च समितीसु ॥६३२१॥

परिगट्ठ उवसरणादिमु मुच्छा कय, हाञ्ज अनिगिन्नावो वा गतिनो होञ्ज । “पचमे” ति परिगट्ठ एवमादि । “छट्ठ” ति राईभोगे, तस्य लवाटपरिवासा कथा होञ्ज अगन किंचि सुठमाणि वा सणित्रिय किंचि परिमुत्त हाञ्ज, एवमादि रातीभोगे । एवमादि मूलयुगेसु अलायण । उत्तरयुगेसु अविमुद्धभिक्षवग्गहण कय होञ्ज, समितीसु वा अममिता हाञ्ज, गुत्तीसु वा अगुत्तो ॥६३२१॥

मंतम्मि य वल्लिरिण, तवोवहाणम्मि जं न उज्जमिय ।

एम विहारवियडणा, वोच्छ उवमपणाणत्त ॥६३२२॥

कथा । गता विहारालोयणा ।

इदाणि उवमपदालोयणा भण्णान -

एगमणेगा दिवसेसु होति ओहेण पदविभागो य ।

उवमपयावराहे, णायमणायं परिच्छन्ति ॥६३२३॥

सा उवमपदालोयणा समगुणाण वा अगमणुणा ण वा, तस्य समगुणाण सगामे समगुणो उवमप-ज्जतो दुगणिमित्त उवमपज्जति ॥६३२३॥

जतो भण्णति -

समगुणदुगणिमित्तं, उवमपज्जन्ते होड एमेव ।

असगुण्णेणं णवरि, विभागतो कारणे भडत्त ॥६३२४॥

सुत्तट्ठा दमणचरित्तट्ठा जेण त चरण प्रति सरिसा जेव । “एमेव” ति जहा विहारालोयणा तहा उवमपदालोयण दैतो एगदिवसेसु वा अणेगदिवसेसु वा आहंण वा पदविभागेण वा एव समगुणे उवमपदालोयण देति । “अण” इति अणसमोद्दसो असगुणो वा असविग्गो तेसु अणत्थ उवमपज्जन्तेसु तिगनिमित्त उवमपदा णाणदमणचरित्तट्ठा, विभागालोयणा य, ण आहतो । समसत्थादिसु वा कारणेसु ओहेण वि देति एम भयणा । अवराहे वि एव जा विसेसो भणिहिंति सा उवमपज्जमाणो दुविहो - णाओ अणाओ वा, जत्थ जो णज्जति सो ण परिकिस्सज्जति, जो ण जज्जति सो आवस्सगाईहि एहि परिकिस्सज्जति । एय उवरि वक्कमाण ॥६३२४॥

दियरातो उवमपय, अवराह दिवमओ पस्तथम्मि ।

उव्वाते तद्विसं, तिण्हं तु वइक्कमे गुरुगा ॥६३२५॥

उत्तमपदालोपणा सा (ओहणे) विभगेण वा (ओहणे) सा दिवमतो, न रात्रौ । जा पुण अत्रराहाऽऽ
लोपणा सा विभगेण दिवमतो, न रात्रौ । दिवमतो वि विट्ठिवनि वातादिदामवज्जिते “पमत्थे” उवातिमु य
पमत्थेमु, नय पि वक्खमाण अवगाहं वि आहानोपणा अववादकारणे भनिय-वा ॥६३२५॥

“उवातो” नि पच्छद्द अस्य व्याख्या -

पढमदिणे स विफाले, लहुओ वितिय गुरु ततियए लहुगा ।

तम्म विकहणे ते च्चिय, सुद्धमसुद्धो इमेहिं तु ॥६३२६॥

अमण्णो जो उत्तमपज्जणदुषाए आगमा अयग्गिओ त जति पढमदिवसे ण विफालेति न पृच्छती
त्येव । कुता आगतो ? कहिं वा गच्छति ? किं निमित्तं वा आगतो ?” एव अपुच्छमाणस्स तद्विवस मासलहु,
बितियदिवसे जति १, पुच्छति चउलहु, “निण्ह तु वडक्खमे गुरुगा” इति चउत्थदिवसे जति ण पुच्छति ३ ।

सो वि पुच्छिओ भणनि - “वहेहामि” मासलहु, बितियदिवसे मासलहु, ततियदिवसे ४ (ल),
चउत्थदिवसे अकहतस्स चउगुगा । अहंवा - “तद्विवसे” ति पढमदिवस “उवाते” आन्ता इति कृत्वा ण
पुच्छितो आयग्गिओ सुद्धो । अहं बितियदिवसे ण पुच्छति तो मामगुरु । ततिय ण पुच्छति चउलहु, चउत्थे
दिवस चउगुरु । एव तेण पच्छिण्ण वा अक्खाय जेण कज्जेण आगमा । तस्स पुण आगतुगस्स आगमो सुद्धो
असुद्धो वा हवेज्ज, एत्थ चत्तारि भगा । इमेग विहणा भग, कायव्वा - णिग्गमण पि आगमण पि असुद्ध । एव
चउगो भगा कायव्वा । तत्थ णिग्गमो इमेहिं कारणेहि असुद्धो भवति ॥६-२६॥

^१ अहिकरण ^२ विगति ^३ जोए, ^४ पडिणीए ^५ थद्द ^६ लुद्ध ^७ णिद्धम्मे ।

^८ अलमाणवद्धवेरो, ^९ सच्छंदमती ^{१०} परिहियव्वे ॥६३२७॥

अहिकरणे” नि अस्य व्याख्या -

गिहिमंजयअहिकरणे, लहुगा गुरुगा तस्स अप्पणो छेदो ।

विगती ण देति घेत्तुं, भोत्तुद्धरितं च गहिते वि ॥६३२८॥

जति गिहत्येण सम अहिकरण काउ आगमो न आयग्गिओ सगिण्हइ तो चउलहुगा । अहं सज्जण
सम अहिकरण काउ आगत सगिण्हइ तो चउगुगा, तस्स पुण आगतुगस्स पचगाइदिओ छेदो । अहंवा -
पुद्धो अपुद्धो वा इम भगेज्ज - “विगति” ति ‘विगती ण’ पच्छद्द ॥६३२८॥

किं च -

ण य वज्जिया य देहो, पगतीए दुब्बलो अहं भंते ! ।

तत्त्मावितम्म एण्हिं, ण य गहणं धारणं कत्तो ॥६३२९॥

सो य आयग्गिओ विगतिगिण्हणाए ण देति जोगवाहीण । “गहिय” नि अण्णेहिं भुत्तुद्धरिय त रि
नापुज्जाणइ, किं वा भगव अहं ण पव्वजितवसमस्स तुत्ता, अण्ण च अहं सभावेणैव दुब्बला विगतीए बलामो
अण्ण च अहं विगतिभावियदेहा इदाणि तस्स अभावे ण बलामो, ण य सुत्तथे वेत्तु समत्था, पुव्वगहिण वि
घरितु समत्था ण अवाभो ॥६३२९॥

“जोगे पटिणीए” नि दो दारे जुगव वक्खणेनि -

एगनरणिच्चिगती, जोगो पच्चन्थिको व तहि माइ ।

चुक्कखलितेमु गेण्हति, छिड्डाणि कहंति तं गुरुणं ॥६३३०॥

पुच्छिओ भणानि - तस्म आययिस्स एगनर उवामेण जागा वुड्ढइ एगनर आयविल्लिग वा, जागवाहिस्स वा त आययिया विगति ग विमज्जति, एवमादि कव्वडो जागा ति तण आगओ । पुच्छिओ य भगेज - तस्मि गच्छे एगा माघू मम “पच्चन्थिगा” ति - पत्तिगोओ । कहं वि माम एगिजोगे चुक्कति, बीगरिण खलितं विट्ठण्डिलहादिकं गेण्हति, अच्चन्थ खरटेनि, चुक्कखलिताणि वा अवराट्ठपदच्छिदाणि गेण्हति, से य गुरुण कहंति, पच्छा तं गुरुओ से खरिटेनि । अहंवा - अगाभेगा चुक्कखलिताणि भणंति, ज पुण आभोगमा अमायायारिं करे तं छिदं भणति । ६ ३०॥

इदरणि ‘यद्धलुद्ध’ दो वि भणंति -

चक्रमणादी उट्ठण, कडिगहणे भाओ णन्थि थद्वे प ।

उक्काम मय भुंजति, दैतप्पगेमिं तु लुद्धे व ॥६३३१॥

आययिया जइ वि चक्रमणं वरति तहावि अम्भुट्टेयंवा आदिगहणाता जइ वि काइयभूमिं गच्छति अ गच्छति वा, एवमादि तन्थ अम्भुट्टताण अम्भ कडीओ वाएण गहिताओ, अम्भुट्टाणपल्लिमयेण य अम्भ मज्झमा तत्थ ण सरति । अहं ण अम्भुट्टेओ तो पच्छित्तं दति खरटेनि वा, एव थद्धा भणानि ।

जा लुद्धा मां भणानि - ज उक्कमय किंचि वि मिदरिणिगलुगादि लब्धंति तं अप्पगा भुजति, अण्णमि वा बाल वुड्ढ दुव्वल पाहणगाण वा देति, अम्भे ण लब्धामो, लुद्धो एव भणानि ॥६३३१॥

“णिट्ठस्म अलमे” दो वि जुगव भणानि -

आवाभियमज्जणया, अकरण अति उगगडड पिद्धस्मे ।

वालादट्ठा दीहा, भिक्खाप्पलसिओ य उब्भामं ॥६३३२॥

जो णिद्धमां सो पुच्छिओ भणति - जइ कहिं वि आवसिता निसोहिया वा ण कज्जति ण पमज्जति वा, णितो पविमनो वा । डडगादि वा णिक्खवतो ण पमज्जति, तो आययिया “उग्गो” - दुट्ठति वुत्तं भवति, पच्छित्तं दंति, अहंवा - उग्ग पच्छित्तडड देति गिरणुकपा इत्यथ ।

जो आलस्मिओ मां भणानि - अप्पणो पज्जते वि बालवुड्ढाण अट्ठाए दोहा भिक्खापरिया तस्मि गच्छे हिडिज्जइ, खुड्डलक कक्कड वा त खेतं दिणं दिणे “उब्भाम” ति भिक्खायरिय गम्मइ प्रतिदिनं आमान्तं गम्यत इत्यथ ।

अपज्जते आगया गुरु भणति - “किमिह वसहीए महाणमो ज अपज्जते आगता ? वच्चहं पुणो, हिडहं खेतं, कालो भायणं च पट्ठापहं,” एवमादि दोहभिक्खायरियाए ^१ भवित्यतो आगतोमिति ॥६३३२॥

अणुबद्धवेगे य मच्छदो य दो वि जुगव भणानि -

पाणमुणगा य भुंजति, एक्कउ अमंसडवमणुबद्धो ।

एक्कल्लस्म ण लब्भा, चलितुं पवं तु मच्छदो ॥६३३३॥

अगबद्धवेरो भगानि - येव वा बहु वा असखड काउ जहा सुगगा पाणा वा परोप्पर तक्खगादेव -
एकभायगे भजति एव तथ्य सजया वि, णवर - मिच्छादुक्कड दाविज्जति । अगहे उ ण सक्केमो हियत्येय
मन्नेऽ नेहि सम समुत्तिमिउ । एव आगओ अगबद्धवेरो भगानि ।

जो मच्छन्ता मा भगानि - मण्णाभूमि पि एगाणियम्म गत्तु ण दत्ति, णियमा म्माडमहिएहि गतव्व ।
न असहमागो आगओ इ । एने अक्किरणादिग् पदे आयरिता माउ परिचचयड, न सगुणानीत्यथ ॥६३३३॥

अक्किरणादिगहि पदेहि आगयम्म डम पच्छित्त -

ममणऽधिकरणे पडिणीय लुट्ट अणुवट्टवेरे चउगुरुगा ।

मेमाण हांति लहुगा, एमेव पडिच्छमाणम्म ॥६३३४॥

जो समणहि समसक्किरण काउ आगतो, जो य भगानि-तथ्य मे पडिणीतो साहू, जो य लुट्टो, जो
अणुवट्टवरो, एनेमु चउमु चउगुरुगा ससेमु उमु गिहिसक्किरणे य चउगुरुगा । जो य आयरिओ एते
पच्छित्ति तम्म वि एव चेव पच्छित्ता ॥६३-४॥

अह्वा - जे एने दोमा वुत्ता एनेमि एक्केण वि णागओ होज्ज ।

इमेहि दोमेहि आगओ होज्ज -

अह्वा एगेऽपरिणते, अप्पाहारं य थेगए ।

गिलाणे बहुरोगे य, मंदधम्मं य पाहुडे ॥६३३५॥

एम मोलममे व्याख्यातो, तथापि इहोच्यते -

एक्कल्लं मोत्तूणं वत्थादिअक्कप्पिएहि महितं वा ।

मो उ परिमा व थेरा, अहऽण्णमेहादि वट्टावे ॥६३३६॥

आयरिय एगाणि मानु ण गतव्व, असणवत्थादिअक्कप्पिया सेहसहिय च मोत्तु ण गतव्व ।
“अप्पाहारो” णाम जो आयरिओ सकियसुत्तथा, न चेव पुच्छिउ वायण देति, तारिस वि मोत्तु ण गतव्व ।
“येर” ति अजगम गुरु, परिसा वा मे थेरा, तेमि मेहाग थेराण य अह चेव वट्टावगो आसि ॥६३३६॥

तथ्य गिलाणो एगो, जप्पमरीरो तु होति बहुरोगी ।

णिद्धम्मा गुरु-आणं, न करेति ममं पमोत्तूणं ॥६३३७॥

तथ्य वा गच्छे एगो जरादिगा गिलाणो, तस्स अह चेव वट्टावगो आसी । बहूहि साहारणरोमेहि
जप्पमरीरो भगति तस्सवि अह चेव वट्टावगो आसी । मदधम्मा गुरु आण न करेति मम पुण एगस्स करेति ।
सजय गिहीहि वा सह अधिकरण काउ आगतो, गुरुस्स वा केणइ सह अहिकरण वट्टति ॥६३३७॥

एतारिमं विउसज्ज, विप्पवासो ण कप्पती ।

मीसपडिच्छायरिए, पायच्छित्तं विहिज्जती ॥६३३८॥

पुत्तवड वठ । एरिस मोत्तु जइ सीसो आगओ पडिच्छओ वा, जो य पडिच्छइ आयरिओ तेसि इम
पच्छित्त ॥६३३८॥

एगो गिलाणपाहुड, तिण्ह वि गुरुगा उ सीसगादीण ।

मेसे मीमे गुरुगा, लहुय पडिच्छे गुरु सरिसं ॥६३३९॥

जो तगाणि गुरु मोत्तु आगमो, गिलाण वा मोत्तु, अधिकरण वा काउ आगमो, एतेसु सीसस्स पडिच्छ-
गस्स पडिच्छमा, गस्स य आयरियस्स तिप्पवि चउगुग्गा । जेण अणो मेसा अपरिणय अप्पाहार थेर बहुरोग मदघम्मा
य एतेसु जइ सीमा आगमो चउगुग्गा, अह पडिच्छतो ता चउलहुगा, गुरुस्स भयणा । “सरिम् व” त्ति जइ सीम
मेव्हति तो चउगुग्गा, पडिच्छो चउलहुगा ॥६३६॥

अहवा पाहुडे इम -

सीमपडिच्छे पाहुड, छेदो राडंदियाणि पंचेव ।

आयरियस्स उ गुरुगा, दो चेव पडिच्छमाणस्स ॥६३४०॥

सीसस्स पडिच्छगस्स वा अधिकरण काउ अणगच्छे सवसत्तस्स पवराइदिअ छेदो भवति, पुरुस्स
पडिच्छमाणस्स चउगुग्गा । एते पढमभगे गिग्गम-दोसा भगिता, आगमो वि से अमुद्धा भवति, वइयादिमु
पडिवज्जतो आगतो तत्थ वि पच्छित्त वत्तव्व ॥६३४०॥ एम पढमभगो गतो, वितियभगो वि परिसो
चेव, णवर आगमो सुद्धो ।

इमे उक्कमेण ततिय-चउत्थभगा -

एतदोमविमुक्कं, वतियादी अपडिबद्धमायायं ।

दाउण व पच्छित्तं, पडिवद्ध वी पडिच्छेज्जा ॥६३४१॥

इमो चउत्थो भगो । एतेसु जे अधिकरणादी गिग्गमदोसा तेसु वज्जितो आगमणदामेसु व
वइयादिमु अपडिबद्धनमागमा जो, एस चउत्थभगिल्लो सुद्धो ।

ततियभगे णि अमदोसेसु सुद्धो आगमणदोसेसु वइयादिमु जो पडिबज्जतो आगमो न ग पडिच्छति ।
अववादतो वा तस्स पच्छित्त दाउ पडिच्छति, ण दोषेत्यथ ॥६३४१॥

सुद्धं पडिच्छिउण, अपरिच्छिणे लहुग तिण्णि दिवमाइं ।

मीसे आयरिए वा, पारिच्छा तत्थिमा होति ॥६३४२॥

यथोक्तदोषरहित सुद्ध पडिच्छित्ता तिण्णि दिवमाणि पर्विक्खियव्वो कि घम्मसहितो ण व त्ति, जइ ण
परिच्छति तो चउलहुगा, अण्णापरियाभिप्रायेण वा मासलहु । सा पुण परिक्खा उभयो पि भवति ॥६३४२॥

एत्थ पढम ताव तस्स परिक्खा भण्णति -

आवासग सज्झाए, पडिलेहण भुंजणे य भामाए ।

वीयारं गेलन्ने, भिक्खग्गहणे परिच्छति ॥६३४३॥

केई पुव्वणिसिद्धा, केई सारेंति तं न सारेंति ।

संविग्गो सिक्ख मग्गति, मुत्तावलिमो अणाहोऽहं ॥६३४४॥

केइ त्ति साहू अवराहपदा वा सबज्जति, तस्स उवसपदकालाभो पुव्वणिसिद्धा ‘अज्जो’ इम इम
च न कायव्व”, जत्थ जइ पमादेति ते मारिज्जति त्ति वुत्त भवति, णो उवसपज्जमाण तेसु णिसिद्धपदेसु
बट्टमाण सारेंति ॥६३४४॥

तत्थ आवस्सए ताव इमेण विहिणा परिकित्थज्जइ -

हीणाहियविवरीए, मति च बले पुव्वगते चोदेति ।

अप्पणए चोदेती, न ममं ति इहं सुहं वमित्तुं ॥६३४५॥

हाण गम काउस्सग्गमुत्ताणि दक्खिणाणि कर्त्ता अण्णेहिं मावुहिं विवरवोमट्ठहिं वोसिरइ अधिक नाम काउस्सग्गमुत्ताणि अतिरुत्तिरि वट्ठेत्ता अणुपट्ठणाए पुव्वमेव वोसिरइ, उम्मारिए वि रायणिण पच्छा उम्मारेति, विवरीए ति पाओमियकाउस्सग्गा पमाणि जहा करेति, पमाइए वि पादाणि ज करेति ।

अहवा - मूरे अत्यमिते चेव गिवाधाते सह आयगिएण सव्वसाहूहिं पडिक्कमियव्व, अह आयगियाण सड्ढातिधम्मकहा व घाता होज्ज तो बालवुड्ढगिलाणअसहु गिसेज्जघर व मोत्तु मेसा सुत्तत्थ-उम्भरणट्ठना काउस्सग्गेण ठ यति, जे पुण मति बले पुव्व काउस्सग्गे गाट्ठति थेरा तेसु अप्पणाए चोदेति, जो पुण परिकित्थज्जइ सो ण चोइज्जइ पमादेतो । तहे जइ सो एव च मति "सुट्ठु ज मे ण पडिचोदेति, सुहं अच्छामि" सो पजरम्मो जायत्तो, ण पडिच्छियत्तो ॥६३४५॥

अह पुण म ते ण पचोदेति ति काउ "सविग्गो सिक्ख मग्गति" पच्छद्द अस्य व्याख्या -

जो पुण चोइज्जंतो, दट्ठण तनो नियत्तती ठाणा ।

भणति अहं मे चत्तो, चोदेह ममं पि सीदंतं ॥६३४६॥

अति पुण सा भणति जेमूठाणेसु अह पमादेमि तेसु चेव ठाणेसु अप्पणो सीसा पमादेमाणा पडिचो-इज्जंतो, अह तु ण पडिचोइज्जामि "अणाहोइह" - परिचत्तो ताह सविग्गविहार इच्छतो आसेवणभिवक्ख मग्गतो अप्पणो चेव ततो ठाणाओ गियत्तति, अहवा - छिणमुत्तावलिपगासाणि अतूणि विणिमुयमाणे आयरियाण पादेसु पडिओ भणति - मा म मरणमुवगय पडिच्चवह, मम पि सीदत चोएह ॥६३४६॥ एमा ताव आवस्समय पडुच्च, परिक्खा गता ।

इदाणि मज्झाय-पडिलेहण-भु जण भासदारा पडुच्च परिक्खा भणति -

पडिलेहणमज्झाए, एमेव य हीण अहिय विवरीए ।

दोसेहि वा वि भुजति, गारत्थियढट्ठरा भासा ॥६३४७॥

पडिलेहणकालतो हीण अहिय वा करेति अहवा - खोडगादोह हीण अहिय वा करेति, विवरीय नाम भुहपोत्तियादी पडिलेहेति, अहवा - ए रयहग्ग ति पच्छिम पडिलेहेति, अवरण्हे पढम अप्पणो - पडिलेहेत्ता सेहगिलाणपरिणि पच्छा आयगियस्म एव वा विवरीय । सज्झाए वि हीण - अणागताए कालवेणाए कालस्स पडिक्कमति, अहिय अतिच्छिन्नाए कालवेलाए कालस्स पडिक्कमति, वदणातिक्किय हीणातिरिक्क करइ, विवरीय पोरिसिपाड उम्भाडकालिपोरिसीए पग्गिट्ठति, वा विवरीय करइ, "सत्तविह-आलोवगविहीने ण भुजते, कायमियालक्खतियादिदोमेहि वा भुजति, मुरसगादिदोसेहि वा भुजति, सावज्जादि आमा वा भासति, एतेसु चोदणा तहव भाणियव्वा जहा आवस्सए भणिता ॥६३४७॥

मेमाणि तिणिण दाराणि एगगाहाए वक्खाणेति -

थंडिल्लसमायागी, हावेति अतरंतगं न पडिजग्गे ।

अभणिओ भिक्ख ण हिंडइ, अणेसणादी व पेल्लेति ॥६३४८॥

रहितत्वे पदमञ्जरा इतरगङ्गा दिसलागादिमायायां परिहावति, गिलाग ण पडिजगड
गिल गम्भ वा खलमलादि वेयावच्च ण करति भिवम्भ ण हिट्ट, दरहिडता वा सण्णियट्ट, काटलेग वा
उपशान्ति, अग्गसण्ण वा येरुति ॥६३/८॥

तस्म पुण इमाओ ठाणाओ आगमो हाज्ज -

जयमाणपरिह्वेते, आगमण तस्म दोहि ठाणेहि ।

पंजरभगअभिमुहं, आवासयमादि आयगिण ॥६३/९॥

सो जयम माया मूलाओ आगमो हाज्ज, परिह्वेताग वा मूलाओ आगमो हाज्ज, परिह्वेता
नाम पासव्यादी, त य जा जयमाण ण मूलाओ आगमो मा ण णदमणट्टाए वा अगता, पजरभगा वा आगतो ।
जा पुण परिह्वेताग मूलाओ आगतो सो चरित्तट्टाए उज्जमित्तमो । अट्टवा - अण्णजमित्तमा विणाणदमण
ट्टाए । अट्टवा - जा जयमाणहिता आगमो मा पजरभगा, जो पुण परिह्वेताग आगतो मा पजरभमुहा ।
एतमु दोमु वि आगमण आयगिण आवासयमादिपरिच्छा कायव्वा ॥६३/९॥

आह पजर इति बोध्यं ? अत उच्यते -

पणगादि मंगहो होति पजरो जाय मारणज्जोणो ।

पच्छित्तचमहणादी, णिवारणा सउणिदिट्ठतो ॥६३/१०॥

आयसिओ - वरुत्तातो पवता येरो गणावच्छेतिनो एतेहि पच्छित्त परिगहिता गच्छा पजरो भण्णि,
आदिगङ्गाओ भिवम्भ वमट्ट वुड्डुखुड्डुगा य चेप्पति । अट्टवा - ज आयसियादी परापर च दति मित्त मधुर
मोबालभ वा खरफमादीहि वा चमहेता पच्छित्तदाणेण य असामायिओ णियति न्ति एसा वा पजरो ।
पजरभगो पुण गय चेव अमहतो गच्छओ णीति । “गच्छम्मि केट्ट पुग्गिमा कारण गाथा कथा ।

“जह सउण पजरे दुक्ख अच्छति तहा” -

एत्थ सउणदिट्ठतो कज्जति - जहा पजरत्थस्स सउणम्म मलागादीह सच्छदमण
णिवारिज्जति एव आयसियादि पुरिसगच्छपजरे मारणमलागादिय सामायारि उम्मगमगण णिवारिज्जति ।
एत्थ जे सविग्गाण मूलाओ णाणदमणट्टाए आगता, जे य परिह्वेताग मूलाओ आगता चरित्तट्टा एते
सगेण्हियव्वा । जे पुण पजरभगा णाणदमणट्टाए आगता, जे परिह्वेताग मूलाओ णाणदमणट्टाए आगता, एते न
सगिण्हियव्वा ॥६३/१०॥

एत्थ जे सगिण्हियव्वा ते एगो वा होज्ज, अणेगा वा ।

जतो भणति -

ते ‘पुण एगमणेगाणेगाणं मारणं जहा कप्पे ।

उवसंपद आउट्टे, अविउट्टे अण्णहिं गच्छे ॥६३/११॥

तत्थ जे अणेगा तेमि मोदताण मारणा जहा कप्पे भणिता “उवदेसो सारणा चेव ततिता
पडिमाराणा” इत्यादि, ‘घट्टिज्जत वत्थ अतिरुवणकुकुमसिली जता’ इत्यादि । जो पुण एगो सो
असामायारि करेत्तो चोदितो जह आउट्टितो तस्म उवसंपदा भवति, ‘अविउट्ट’ ति - जति ण आ
उट्टितो, भण्णति “अण्णहिं गच्छे” ति ॥६३/११॥ एसा आगयाण परिच्छा गता ।

१ ‘जे पुण’ इति चूर्णौ ।

अहंवा - एय पच्छद - अण्णत्ता भण्णति - तेण वि आगन्तुणा गच्छा परिच्छिद्यव्वो आवस्सगमा-
दीहि एवम एयदाग्निं । पच्छिन्नलगाण जति किंवि अवास्सगदारेहि मोदन पस्सइ तो आयरियातीण कहति,
जति या कहिण मम्म आउट्ठति नि त स धु चोदति पच्छिन्न च मे दति ते तत्थ उवमपदा । अहं कहितं सो
आयरिआ तुमिगाओ अच्छति भणति वा - किं तुज्ज, गो मम्म आउट्ठति ? तो अविउट्ठे आयरिए अण्णहि गच्छति
अन्यत्रोपपन्नैत्यर्थः, ॥६३५१॥

नतियमगिल्ले इमा पटिच्छणविही -

णिग्गमणे परिमुट्ठो, आगमणे अमुट्ठे देति पच्छित्तं ।

णिग्गमण अपरिमुट्ठे, इमा उ जयणा तहि होति ॥६३५२॥

नतियमगिल्लस्म वड्यादिमु पडिवडस्म मुट्ठस्म ज आवणो न पच्छित्त दाउ पटिच्छति । जति
पण पढमबित्तज्जेण वा भयेण अट्ठिकरादीहि एगे अपरिणयादीहि वा आगता, जे य पजरभगा, जे परिहा-
वत्तमु ग गदमगट्ठाने आगता ते ण सगिहिण्यव्वा, न य फुड पडिमेहिज्जति ॥६३५३॥

तस्मि इमा पडिमेहणजयणा -

णत्थि मंक्कियमंघाडमंडली भिक्ख वाहिराणयणे ।

पच्छित्त विओमणे, णिग्गयसुत्तम्म छण्णेणं ॥६३५३॥

“णत्थि सक्कि” अस्य उदाहरण -

णत्थेयं मे जमिच्छह, सुत्तं मए आम मंक्कियं तं तु ।

न य मंक्कियं तु दिज्जइ, णिस्संक्कमुते गवेसाहि ॥६३५४॥

ज एत सुत्तत्थ तुम्हे इच्छह एय मम णत्थि । अहं सो भणति - अण्णममीवे सुत्त मए जहा तुम्भ
एय अत्थि, अहंवा भणति - मए चेव तुम वायण देता सुत्ता । आयरिओ भणति - आम ति सच्च,
इदाणि त मे सक्कि जात, ण य द, णजोगा, ण य सक्कियसुत्तत्थ दिज्जति, आगमे पडिसिद्ध, गच्छ अण्णतो
जत्थ णिस्सक सुत्त ॥६३५४॥

त सघाडए ति जो सघाडयस्म उव्वयाति सो भण्णति -

एक्कल्लेण ण लब्भा, वीयारादी वि जयण मच्छंदे ।

भोयणमुत्ते मंडलि, अपहंते वी णिओअंति ॥६३५५॥

अहं एस्मि सामायारी णा सघाडण विणा लब्भति सणभूमिमादि गिगत्त, एसा सच्छदेण
जयणा । “मंडलि” ति जो सो अणुबद्धवेरत्तणेण आगतो सो इमाण जयणाए पडिमेहिज्जति । जो य
सुत्तसङ्कीर्ण उव्वयाति, “भोयण” पच्छद, अहं सामायारी अवस्स मंडलीने समुद्दिमियव्व, सुत्तरथमंडलीसु
जति ण पडति ण मुणेति वा तहावि मंडलीए उव्विट्ठो अच्छति, ण सच्छदेण अच्छिउ लब्भति ॥६३५५॥

अलमं भणति वाहि, जति हिंडसि अहं एत्थ बालाती ।

पच्छित्तं हाडहड, अवि उस्सग्ग तहा विगती ॥६३५६॥

“वाहिराण्यो” नि जो आलम्बितमग्रे अगता मा इमा ए पडिमिज्जति अलम्बितो भणति - अह एव मत्वेने वा न गिलाग बुद्धिनि जिडति, जति जिगे दिग भिक्व यरिय कसेसि तो अन्य पच्छितति । जो निवम्मो “अडउम, दया आयरिआनि” एतत्ति क गति आगतो मा इमा जयणाए पडिमिज्जति मा अह सामायारी जइ दुमस्सिदादीग करति ना रि अह ह उड पच्छित दिज्जति हाडहडणाम तवकाल चेव दिज्जति - क नरग कउत्ति । “अविउम्मसो” नि जो वा अविगती यागुज्जति नि आगसो, मा अणनि-अह सामायारी नागवाहिगा विगतिआउम्मस अकसेण पडिय-व । “तह” नि -

कि चान्त् - अह साम च गी जागवहिग उजागवाहिगा वा विगता न गृहीतव, इत्यथ । अहवा - “तह” ति ज मा कारण दीवति तम्म तह प्रतिनाम उवणमिज्जति ॥६३४६॥

एव चोदग आह -

तथ भवे मायमोमो, एवं तु भवे अणज्जवजुतम्म ।

वुत्तं च उज्जुभते, मोही तेलोककदंभीहि ॥६३४७॥

तत्रेति या एदा गिम्म अमुद उवण पडियेण भणित । अत्र कस्यचिमति स्यात् - एव पडियेणम्म माया भवति दुमवाय च भवति ज विज्जमाण सुणयि नि भणति सवि वा, एव मव इव दिमु अणज्जव अरिजुत्त वरमणी मय सुमव गण य जुत्तो भवति अवज्जवयणजुत्ता वा, उवत्त च “मोही उज्जुभतम्म व” एव - मिताकोउय न च अज्जव अकसेण तम्म सवमोही ण भवति ।

आचार्याह - “मय, सुमव ओय, जना कारण मायसुमागतो य अणगयो” इम च कारण गिम्मस न अमुद त उव यपडिमो कय ॥६-५॥

कि च -

एमा उ अगीयन्थे, जयणा गीते वि जुज्जती जं तु ।

विहेमकं इहरा, मच्छगिवादो य फुडरुक्खे ॥६३४८॥

एव अगीयन्था पडिमिज्जति, गीयत्या पुण फुड चेव भणति, ते सामायारी जाणता किह अपत्तिय दाम वा बहेति, तेमु वि य ज मातासुमावादकारण उज्जति त च कायव्व । अगीयत्याण पुण “इहर” नि फुड भगता विहेमकर भवति, चितति य, एत मच्छरभावेण ण देति सुत्तये । सपक्खजगे य न एव प्रमाणेण मच्छरभावो भवति । सभूयदोमुच्चरण फुड गेहवज्जिय रुक्ख, अहवा - फुडमेव रुक्ख त च अधिकरणदि रणादिगा वा दोमेण आगतो ति ण पडिच्छ मो, एव मच्छरभाव अयमो सप जति ॥६३४९॥

एनेमि पडिच्छाण डमो अववातो -

गिम्मसमुदमुदाण ण वारितं गेह्वती ममाउडु ।

अहिकरण पडिणिअणुबद्धे, एगागि जहं ण संमिण्हे ॥६३५०॥

अत्र अकारलोपा दृष्टव्य, एव गिम्ममो अमुदो जस्म सो उवाएण जयणाए वारितो ण पडिच्छत इत्यथ । अहवा - दोसा जहा वारणाओ ण उवज्जति तहा उवाएण वारितो प्रतिपिद्ध इत्यथ । पडिमिदो जइ सा भगद “मिच्छामि दुक्कड, ण पुणो एव कह, ज वा भणड न करमि, मुक्को मे पावभावो दुगइवट्ठो इत्थो वि गरुत्ता” एव आउटो गेहिहव्वो । तथ वि इमा ण गेहिहव्वो जो अधिकरण वाउमागतो, जो ण पडिणीओ ति भणता, जो य अणुबद्धोसा जेण आयरिआ एगादि भावेण ज ॥६३५१॥

१ गा० ६०/२ । २ गा० ६०/३ । ३ उत्त० अ० ३ गा० १२ ।

पटिणीय इमो अववादो -

पटिणीयस्मि वि भयणा, गिहस्मि आयरियमादिदुद्धस्मि ।

मंजयपटिणीय पुण, ण होति तं खाम भयणा वा ॥६३६०॥

इमा भयणा, कानि गीयन्त्या प्रायश्चित्तम् पटुदुग्धा आदिगणेषु उवज्जाय-पवति धेर-गणावच्छेदग-भिक्षूणां, मा उवस, मिज्जन् वि गावस्समि, तस्मिन् गणा भयणा म गिहियव्वो । जइ पुण सज्जता मे पटुदुग्धा पटिणीय ति भयज्जा नो, ग ण उवसपदा, ण पटिच्छिज्जति ति बुत्त भवति । अहवा मो भण्णनि - गच्छ, त खामउ अ गच्छ । जइ बुत्त । गन्तव्यं न गन्तव्यं मेति ता ण पटिच्छिज्जति, गयस्स वा सो ण खमति तो पच्छागतो पटिच्छिज्जति । अहवा मो भण्णज - मा अगच्छम, गेस खामितो ण खमति तो पटिच्छियव्वो चेव एसा भयण ॥६३६०॥

इदानीं जे अविमुद्विगममा - उवज्जाय वारिता वि ण गच्छति, जे य विमुद्विगममा पटिच्छिता वि सीदन्ति - तस्मिन् बोधियन्ति इमा ।

‘ [पण्यद्विगममा छुण्णति] ’ ति वयण, जय भिक्खादिगता होति तदा छुट्टेता गच्छति । सुत्तस्स वि अ यरिय [पण्यद्विगममा] माउग पटवण वि रातो पटमपे गिमा सावेत्ता तस्स पुण अववेवणा कहा कहिज्जति ताव ज ण गिहियव्वो ज ण पण्यो ताहे सत्ता उट्टावेत्ता न सुत्त छुट्टेता वच्चति । छुण्णति ति अप्रमा- र्ण्यं य एव सत्ति, तो अप्रमाणियान् नप्पविख्याय । वच्चता गय कहति जहा णस्सियव्व, मा रहस्स भेद काटिति । यत्ति एव वच्छा मम उट्टा भयणा जाय दुद्धगिममा य एते दमणाइयाणि ति एगट्टा भयणा पटिच्छियव्वो ।

तस्य दमणणाणेषु उवज्जगत्ति इमो विधी -

वत्तणा मंधणा चैव, गहणं मुत्तत्थ तदुभए ।

वेयावच्चे खमणे, काले आवकहादि य ॥६३६१॥

एते वत्तणादिदा माच्छे असतीग वववेवण वा णत्थि परगच्छे पुण जत्थ वत्तणादिया णियमा अत्थि तत्थ उवसपदा । पुव्वगहियस्स पुणो पुणो अब्भस्सणा वत्तणा, पुव्वगहियविसरियस्स मुक्कसारणा मधणा, अपुव्वस्स गहण, एते तिग्गि विगप्पा सुत्ते, अन्ये वि तिग्गि उभए वि तिग्गि एण णव विगप्पा । उत्तरचरणावसपदट्टा उवसाज्जतो वेयावच्चकरगखमगकरणट्टा वा उपसपज्जति, ते पुण वेयावच्चखमणे भान्तो आवकहाते ति जावजीव करेद, आदिगहणाओ इत्तरिय वा काल करेज्ज ॥६३६१॥

तस्य दसणणा इमे, इमा य तेसु विही -

दंसणणाणे मुत्तत्थ तदुभए वत्तणादि एक्केक्के ।

उवसंपदा चरित्ते, वेयावच्चे य खमणे य ॥६३६२॥

दमणविसोहया जे सुत्ता सत्थाणि वा तेसु सुत्तेसु वत्तणा सवणा गहण, एव अत्थे तिग, तदुभए तिग, ‘तक्केक्के’ ति - एव दमणे णवविगप्पा, आयारादि ए य णाणे एव चैव विगप्पा । चरितोवसपदा इमा दुविहा - वेयावच्चट्टा खमणट्टा वा ॥६३६२॥

सुद्ध पुण अपटिच्छित्तम् इम पच्छित्त -

सुद्धपटिच्छणं लहुगा, अकरेते सारणा अणापुच्छा ।

तीसु वि मामो लहुओ, वत्तणादीसु ठाणेषु ॥६३६३॥

अ गुरुमग म मुन य न मे गहिन गुरुहि अणुगुणाश्चा, विहीण आपुच्छिन्ना वइदःदिमु अपडिबज्झा
आगता, परिच्छित्तो सुद्धो य जो न न पडिच्छति आयरिआ नम्म चउतहु ।

अ विदू पणो वत्तगागिमित मो जति वत्तण ण करेति तो मे मामलहु, एव सघणगहणेसु वि ।
आयरिओ वि अइ न उदमपणा दूरादिमु अछत्त ण सारेति, ण चोदति नम्म वि वत्तगादिमु
ठागेसु मामलहु ।

अथे पण अकरेन-अम, गण निमु वि वत्तगादिमु ठागेसु पनेय मामगुरु । उभर वि पच्छित्त ।
अह गने दोम तम्हा गुरुणा सारेयव्वा — “अज्जा ! अदट्ट अगता न वत्तणःदिक्क न करेमि” ॥६३६३॥

“अणापुच्छ” ति अस्य व्याख्या —

अणुणुणाऽणुण्णाते, देत पडिच्छत्त भंगचउरो तु ।

भंगतिए मामलहु, दुद्धतोऽणुण्णाते सुद्धो उ ॥६३६४॥

अणुणाओ अणुगुणाःतण सट्ट वत्तण करति, एव चउभगो कायव्वो, एव मयणागहणेसु वि चउभगो,
एत्य आदिल्लेसु तिमु भगेसु देने गेहताण मुत्ते मामलहु । तवकालविमेषित अथे मामगुरु । चउत्थभगो पुण
दुद्धताऽणुणातत्तणओ सुद्धो ॥६३६४॥ पाणे ति गय ।

इदाणि दमण —

एमेव दंमणे वी, ववणमादी पदा उ जह पाणे ।

मगमातण-खमण, अणिच्छमाण न उ णिओए ॥६३६५॥ पुव्वद्ध कठ

इदाणि चरित्तोवसपदा मा दुविवा — वेयावच्च खमणे य ।

तत्थ वेयावच्चोवसपदाए इमा कारावणविही —

तुल्लेसु जो सलद्धी, अण्णस्म व वारएण इच्छंते ।

तुल्लेसु य आवकही, तस्साणुमते व इत्तरिए ॥६३६६॥

आयरियाण एवको गच्छे वेयावच्चकरो, अत्रो अण्णगणातो पच्छा आगतो भणति — अह मे
वेयावच्च करेमि, तत्थ कतरो कारविज्जति ? , “तुल्लेसु” तत्थ जति दो वि तुल्ला कालतो वि इत्तरिया
तत्थेगो सलद्धी सा कारविज्जति, अहवा — दो वि आवकही तत्थ वि जो सलद्धी सो कारविज्जति ।
अह दो वि इत्तरिया दो वि सलद्धिया, एत्य आगतुगो उवज्झायदीण अण्णस्स वेयावच्च कारविज्जति,
भणिय च — “उवज्झायवेयावच्च करेमाणे समणे णिग्गथे महाणिज्जरे महापज्जवसाणे भवति ।”
अहवा — जति वत्थव्वो वेयावच्चकरो इच्छति तो वारोवारेण कारविज्जति, आगतुगो वा काल पडिक्खा
विज्जति जाव पुव्वित्तस्स इत्तरकालो समपइ, आवकहीसु वि दोसु सलद्धिणसु एव वारय मोत्तु ।
अहवा — एवको इत्तरिओ एवको आवकही “तुल्लेसु” ति लद्धीए एत्य आवकही कारविज्जति, इत्तरिओ
अण्णस्स सण्णिउज्जति, अहवा — सो वत्थव्वो आवकही भणति तुम ताव वीममाहि एव वुत्तो जति
इच्छति तो तस्म अण्मने आगनु इत्तरिओ कारविज्जइ, तस्मि अणिच्छे णो कारविज्जति, सो समने
गच्छिहि, पच्छ। इयरो ण काहिनि, तओ आयरिओ उभयभट्ठो भविस्सइ । अह इत्तरिओ आवकहिनी य
य दो वि अलद्धिसपणा तत्थ आवकहिणा कारेयव्व, इयरो अण्णस्स सण्णिउज्जति विमज्जिज्जइ वा । अह

उत्तरिमा मल्लो, आवकही भणति - “वीसमाहि ता तुम एम इत्तरिमा सल्लो करेतु, पच्छा तुम चेव काहिमि ।” अणिच्छे एमा चेव काहिनि, उत्तरिमा अणम्म वा कारविज्जति, दो वि वा सवृता करेति । अह इत्तरिमा मल्लो आवकही मल्लो एत्थ आवकाहिणा कारवेयव्व, उत्तरिमा अणम्म कारविज्जइ, अणिच्छे पडिसेज्जइ ॥६२६६॥

अह वत्थव्ववेयावच्चकरेण अणुणाआ कारवेइ, नम्म अणापुच्छाए अण वैयावच्चकरेण टवति तो इमे दासा -

अणुणाते लह्मा, अचियत्तममाह जोग्गदाणादी ।

णिज्जरा महती हु भवे, तवस्मिमादीण उ करेते ॥६३६७॥

वत्थव्व-आवकहि वैयावच्चकरस्म अणापुच्छा आगतु इत्तरिया वैयावच्चकर ठावेति, अणुणातो वा वैयावच्चकर ठवेइ तो चउलह्मा ।

अणो भणति - अणापुच्छाए वैयावच्चकरे ठावे मामलहु, अणुणातो वैयावच्चकारवणे चउलहु । वत्थव्ववेयावच्चकरस्म वा अचियत्त, अचियत्तेण वा असखड करेज्जा । “मसाह” ति - ण कहिनि मा पुव्ववैयावच्चकरा उड्डकट्टा जेनु कुलेसु आयरियादीण पाउमा लव्वमति ते ण कहेनि, सड्डकुलाणि वा ण कज्ज, नह्मा सो इत्तरिमा भणति - खमगादितवस्सीण तुम करेहि, तेसि पि कज्जमाणे महती णिज्जरा भवति ॥६३६७॥ वैयावच्चे ति गय ।

इदाणि “खमण” ति -

तत्थिम गाहापच्छइ “मणगामतण” इत्यादि, जो अणगगाओ खमणद्वयाओ उवसपज्जति सो दुविहो - अविगिट्टा विगिट्टो । अट्टमादि विगिट्टो, दासु वि उवसपज्जतेसु सणो आयरि ण आमतयव्वो आपुच्छि यव्वो ति वुत्त भवति - अज्जो “एम खमणकरणद्वया आगतो कि पडिच्छिज्जति उअ पडिसिज्जउ ति, तेमि अणुमए पडिच्छिज्जइ अणिच्छेसु पडिसिज्जइ । ण वा ते अणिच्छमाणे तस्स वैयावच्चे बला णिओएति ॥६३६७॥

जो पडिच्छिओ सो पुच्छियव्वो - तुम कि अविगिट्टु करेसि विगिट्टु वा ? तेण एगतेर कहिते पुणा पुच्छिज्जइ - तुम अविगिट्टु करेता पाणदिणे करिसो भवसि ? सो भणइ - गिलाणोव्वो, ण य सज्जाय पडिलेह्मादियाण जोगाण समत्थो भवामि ।

तस्सिमो उवदेमो -

अविकिड्डकिलामंतं, भणंति मा खम करोहि मज्झायं ।

मक्का किलामिउं जे, विकिड्डेणं तहि वितरे ॥६३६८॥

अविगिट्टुतवकरणकिलामत भणति - (मा) तुम खमण करेहि, ण वट्टति तव खमण काउ, सज्जायकरणे वैयावच्चे वा उज्जुतो भवाहि, सज्जायमणिज्जत विसज्जेयव्वो । अह गिलाणोव्वो ण भवति ततो पडिच्छियव्वो ।

जो पुण विकिड्डखमओ सो जइ ण किलिस्सति - सज्जायपडिलेह्मादि जोगे य सव्वे सयमेव अहीणमतिरित्ते करेति - सो पडिच्छियव्वो ।

जो पुण विगिट्टेण किलिस्सति तत्थिम गाहापच्छइ - “मक्का किलामिउं” मक्का इति युक्त, जइ वि विगिट्टुतवकरणे गिलाणोव्वो भवति तहावि तथ वितरति ति तवकरणे अणुजाणतीत्यर्थ ॥६३६८॥

विगिटृतवकरणे जो गिलाणोवमो भवति तत्थिमा सामायारी -

अण्णपडिच्छणे लहुगा, गुरुग गिलाणोवमे अडते य ।

पडिलेहण सथारग, पाणग तह मत्तगतिगम्मि ॥६३६६॥

अस्य विभाषा -

दोण्णेकतरे खमणे, अण्णपडिच्छंतऽसंथरे आणा ।

अप्पत्तिर्य परितावण, सुत्ते हाणऽण्णहि वतिमो ॥६३७०॥

“दोण्ह” ति - तम्मि अविगिट् विगिट्हाण अण्णतरो खमओ होज्ज, अहवा - विगिट्ठो अगिलाणोवमो होज्ज । एतेसि खमगाण अण्णथरे खमगे गच्छे विज्जमाणे जति अथरिओ अण्ण खमग गच्छे अणापुच्छाए पडिच्छति तो चउलहु ।

दोण्ह वि खमगाण जुगव पारणदिणे पज्जत्तपारणगस्स असथरण हवेज्ज ।

दुगादिखमगवेयावच्चकरणे वावडाण वेलातिक्रमे वेयावच्चकरणे असथरण हवेज्ज ।

असथरता य ज एमणादि पेलेज्ज तण्णिप्फण पावति आणादिणो य दोसा । असथरे य अकज्जमाणे व परितावणादि दुक्ख हवेज्जा, सिस्सपडिच्छगा वि चित्तेज्जा - इह अण्णोणखमगवेयावच्चकरणे अम्ह सुत्तवपरिहाणी, अतो अण्ण गण “वडमो” ति - गच्छेज्ज, ॥६३७०॥

गणअणापुच्छाए खमगे पडिच्छित्ते गणे य अकरेमाणे आयरियस्स य इम पच्छित्त दोसा य ।

“गुरुग गिलाणोवमे अडते य” अस्य व्याख्या -

गेलण्णतुल्ल गुरुगा, अडते परितावणादि सयं करणे ।

णेसण-गहणागहणे, दुगट्ट हिंडंत मुच्छा य ॥६३७१॥

तेसु गच्छिल्लगेसु वेयावच्च अकरतेसु जइ खमगो गिलाणोवमो जाओ ता आयरियस्स चउगुरुगा, “अडते” “सय” “दुगट्ट” ति भत्तपाणट्ठा वा सयमेव हिंडतो खुहापिपासादि सीउण्णे वा पडिलेहणा दिकिरिय वा सयमेव करंतो परिस्समेण ज अणागाढादि परियाविज्जति, मुच्छादि वा पावति, तस्य चउलहुगादि जाव चरिम पावति । परियाविज्जतो अणेसणिज्ज गेण्हति, एत्थ वि गुरुस्स तण्णिप्फण, अह ण गेण्हति तो बहु अडतस्स परियावणादि णिप्फण ॥६३७१॥

सीसो पुच्छति - कि तस्स चउव्विहाहारविसयस्स कायव्व ।

आचार्याह - “पडिलेहण” पच्छद्द, उवगरण से पडिलेहियव्व, सथारगो सो कायव्वो, पाणग से आणेउ दिज्जति, पारणदिणे भत्त पि से आणेउ दिज्जांत । उच्चारपासवणखेलमत्तगो य एते तिण्णि ढोइज्जति परिट्ठविज्जति य, जम्हा एवमादि दोसा गणिणो तम्हा गच्छ आपुच्छित्ता समणुणाते खमग पडिच्छति ।

अह णत्थि गच्छे खमगो तो पडिच्छियव्वो चेव, पडिच्छियस्स य सव्व सव्वपयत्तेण कायव्व णिज्जरट्ठा । त परिक्र्वासुद्ध जा तिण्णि दिवसे किमागतो ति अणापुच्छिता अणालोवेत्ता

वा सवसावेति तो इम पच्छित्त साववाद भण्णइ -

पढमदिणाणापुच्छे, लहुगो गुरुगा य हुंति वितियम्मि ।

ततियम्मि होंति लहुगा, तिण्हं तु वतिक्रमे गुरुगा ॥६३७२॥

पढमदिणे मासलहु ति, बितिए मासगुरु, ततिए चउलहु ति, परओ चउत्यादिदिण्णेषु चउगुरुगा ॥६३७२॥

अववातो - अतो कज्जे तिण्णि दिणा बहुतर च काल त सवसावेता वि अपच्छित्ती ।

जतो भण्णति -

कज्जे भत्तपरिण्णा, गिलाण राया य धम्मकह वादी ।

छम्मासा उक्कोसा, तेसिं तु वतिक्रमे गुरुगा ॥६३७३॥

कुल गण सचकज्जेहिं वावडो आयरितो भत्तपञ्चक्खातो वा सावू तस्स लोगो एति, तत्थ आयरिओ धम्मकहण्णेण वावडो गित्थम्म-वेण वावडो, राया वा धम्मट्ठी एइ, तस्स धम्मो कहेयव्वो, वादी वा णिगिण्हियव्वो, एवमादिकारणेहिं वावडो आयरिओ होज्ज, एव जाव छम्मासा ण पुच्छेज्ज, आलोयण वा ण पडिच्छेज्ज, ॥६३७३॥

एवमादिकज्जवावडो वा इम जयण करेज्ज -

अण्णेण पडिच्छावे, तस्समति सयं पडिच्छए रत्तिं ।

उत्तरवीमसाए, खिण्णो वा णिसि पि ण पविसे ॥६३७४॥

जइ अत्थि अण्णो गीयत्थो आलोयणारिहो सो सदस्सिज्जति-तुम पुच्छिज्जसि आलोयण पडिच्छाहिं । अह गत्थि गीयत्थो ताहे सयमेव रत्तिं आलोयणा पडिच्छियव्वा । अह परप्पवादिणिगिण्हट्ठा जहा सिरिगुत्तस्स छलुगस्स पराजयट्ठा उत्तरवीमस करेत्तस्म राओ वि परिच्छणा गत्थि, दिवा परस्समकिण्णो वा रातो सुवति एव रातो वि ण पडिच्छति जाव उक्कोस छम्मासा । जति य छम्मासे पुण्णे ण पुच्छति आलोयण वा ण पडिच्छति तो 'चउगुरुगा भवति ।

अण्णे भण्णति - छण्ह परतो पढमे दिणे मासलहु, बितिए मासगुरु, ततिए चउलहु, परतो चउगुरु ति ॥६३७४॥

अधवा एत्थ वि अववाताववातो भण्णति -

दोही तिहिं वा दिणेहिं, जति छिज्जति तो ण होति पच्छित्तं ।

तेण परमणुणवणा, कुलादि रण्णो व दीवंति ॥६३७५॥

जति छण्ह मासाण परतो निरुत्त दोहिं तीहिं वा दिणेहिं कज्जसमत्ती भवति तो तेसु वि पच्छित्तं न भवति, अह तेसु वि कज्जसमत्ती न भवति ताहे छम्मासासमत्तीए चेव कुलादिया अणुणविज्जेति रण्णो वा दीविज्जति ति 'अह कल्ले इमेण कज्जेण अक्खणितो णो आगमिस्सति, विदित भवतु तुज्झ, परप्पवाइणो वा' । जइ एव न कहेति तो चउगुरुगा ॥६३७५॥

सोवि मुद्धो आलोयगो विज्झतो कह आलोयण करेति ? उच्यते—

आलोयण तह चेव तु, मूलुत्तर णवरि विगडिते इमं तु ।

इत्थं मारण चोयण, निवेयण ते वि एमेव ॥६३७६॥

“तह चेव” ति जहा सभोइयाण विहारालोयणाए भणिय नहा भाणियन्व । “मूलुत्तरे” ति — पुव्व मूलुगुणातिवार, णवर-इमो विसेसो, “विगडि” ति आलोए एगतो ठिता विभिण्णे वा साहुणो वदित्ता भणानि — आलोयणा भे दिण्णा, इच्छामि सारण वारण चोयण च मे काउ । तेहि वि पडिभाणियन्व-नुम पि अज्जा । अम्ह मारेज्जासि चोएज्जामि य ॥६३७६॥ उवसपदालोयणा गया ।

इदाणि अवराहालोयणा यत्र प्रकृत —

एमेव य अवराहे, कि ते ण कया तहिं चिय विसोही ।

अहिगरणादि कहयती, गीतत्थो वा तहिं णत्थि ॥६३७७॥

“एमेव” ति जहा विहारउवसपदालोयणासु विही भणितो तहेव इम पि जाव पुटो वा भणति — अह अवराहालोयगो आगतो ।

ताहे आयरिएहि भाणियन्व — कि ते ण कया तेहि चिय विसोधी ? ततो कहेति अधिकरण मे वय तत्थ, आदिग्गहणेण विगति सचाडगादी कथेति । अहवा भणति — तत्थ गीतत्थो णत्थि, ॥६३७७॥

एत्थ अहिकरणादिअविसुद्धकरणेसु आयरिएण भाणियन्वो —

ण वि य इहं परियरगा, खुल खेत्तं उग्गमवि य पच्छित्तं ।

संकितादी व पदे, जहकमं ते तह विभासे ॥६३७८॥

पडियरगा नाम अवराहावणस्स पच्छित्ते दिण्णे गिलायमाणस्स णत्थि वेयावच्चगरा । खुलत्तेण गाम मदभिवक्ख जत्थ वा घयादि उवग्गहदव्व न लब्धति, एत्थ वा न धम्मसङ्घी लोगो । अहवा भणाइ — अम्हे उग्ग पच्छित्त देसो ।

“णत्थि सकिय” — (गाथा ६३५३)

“सकियमादी य पए” ति ।

हेट्ठा व्याख्याता एव व्याख्येया इत्यथ । इह सकियस्स अत्थ ण याणामि, किह पच्छित्त दिज्जति ? विस्सरिय वा पच्छित्त, एव सकियादिपदा जह्वक्केण पच्छित्ताभिलावेण भाणियन्वा । अहवा — ते सकितादि-पदे “जह्वक्कम” ति — जहासभव ते विभामिज्जति ॥६३७८॥

एव असुद्ध पडिसेहेत्ता सुद्ध पडिच्छति । तस्स विही ज त हेट्ठा भणिय — “अवराहे दिवसतो पसत्थम्मि” त इदाणि भणति ।

अवराहालोयणा णियमा विभागेण दिवसतो दव्वादिसु देति, जतो भणति —

दव्वादि चतुरभिग्गाह, पसत्थमपसत्थ ते दुहेक्केक्का ।

अपसत्थे वज्जेउं, आलोयणमो पसत्थेसु ॥६३७९॥

दव्वखेत्तकालभाव च अभिगिज्ज देति, एते य दव्वादिया पसत्था वा अपसत्था वा होज्जा, अपसत्थादीणि वज्जेत्ता पसत्थेहि आलोएयव्व ॥६३७९॥

एतथ पढमे अपसत्था -

भग्गवरे 'कुड्डेसु य, रासीसु य जे दुमा य अमणुण्णा ।

तत्थ ण आलोएज्जा, तप्पडिपक्खे दिमा तिणिण ॥६३८०॥

जन्थ भन्तुलाकुड्डादि किं चि पडित त भग्गवर, कुड्डगहणातो वा भिण्णकुड्डसेस, पाठातरेण वा
नटुवर ॥६३८०॥

एय अप्पमत्थखेत्तग्गहण, रासिदुमग्गहण अप्पसत्थदव्वग्गहण । अस्य व्याख्या -

अमणुण्णधण्णरासी, अमणुण्णदुमा य होति दव्वम्मि ।

भग्गवर रुद्ध ऊसर-पवात दड्डादि खेत्तम्मि ॥६३८१॥

अमणुण्णधण्णा तिलमासकोद्वादी । अमणुण्णदुमा एते -

णिप्पत्त कंटडल्ले, विज्जुहते खार कडुय दड्डे य ।

अय तव तउय कयवर, दव्वे धण्णा य अपसत्था ॥६३८२॥

सभावतो करीरपलामानिया वा अणो पत्तमाडकाले णिप्पत्ता, अग्घाडगवत्थुलमोक्खादिया खार रुक्खा,
नेह्णिणिकुडगणिवादिद्या कडुरुक्खा, अयादि लोहदव्वा, अप्पस्मत्थ रासी मव्वे वज्जणिज्जा, अगारतुसभुमचीवरादी
अणोगदव्वणिगरो कयवरो, मामतिलकोद्वादिया अपसत्था धण्णा, एते दव्वयो भणिता

खेत्तयो भग्गवरादि रुद्धवर महादेववर दुग्गमादि घरा य, जत्थ वा भुसकुट्ट हिरण्णादिकुट्टो वा,
ऊसर ति ऊपरभूमी, खिण्णटका तटी प्रपात, दवादिदड्डा वा भूमी, जत्थ एय खेत्तयो अप्पसत्थ ॥६३८२॥

इम कालतो -

पडिक्कुट्टेल्लगदिवमे, वज्जेज्जा अट्टमिं च नवमिं च ।

छट्ठिं चउत्थि बारसिं च दोण्हं पि पक्खाण ॥६३८३॥ कट्ठा

भावतो इम अप्पसत्थ -

संभागतं रविगतं, विड्डेरं सग्गहं विलंघिं च ।

राहुहतं गहभिण्णं, च वज्जए सत्त णक्खत्ते ॥६३८४॥

जम्मि उदिते सूरौ उदेति त संभागत, जत्थ सूरौ ठितो त रविगत, ज सूरस्म पिट्ठतो अणनर
त विलवी ।

अण्णे भणनि - ज मूरस्म पिट्ठतो अगतो वा अणतर त संभागत । ज पुण पिट्ठतो सूरगतातो
त तित (?) विलवी । ज जत्थ गमणकम्मममारभादिसु अणभिहित्य त विड्डेर विगतद्वारमित्यर्थ । ज
क्रूरग्रहेणाक्रान्त त संभागत, जत्थ रविसीण गहण आसी त राहुहत, मज्जेग जस्स गहो गतो त गहभिण्ण,
एते सन वि णक्खत्ता चदजोगजुत्ता आलोयगादिसु सव्वपयत्तेण वज्जणिज्जा ॥६३८४॥

एतेसु इम फल -

संभागतम्मि कल्लहो, होति कुभत्तं विलंघिणक्खत्ते ।

विड्डेर परविजयो, आइच्चगते अणेव्वाणी ॥६३८५॥

१ रुद्धेसु इत्यपि पाठ । २ राहुगत इत्यपि पाठ ।

जं मग्गहम्मि कीरइ, णक्खत्ते तत्थ बुग्गहो होति ।

राहुहतम्मि य मरणं, गहभिण्णे सोणिउग्गालो ॥६३८६॥

एयातो दोवि कठातो । एते अप्पसत्थदब्बादिया । एतेसु णो आलोएज्जा ॥६३८६॥

तप्पडिपक्खे दब्बे, खेत्ते उच्छुवण चेडयधरे वा ।

गंभीर साणुणादी, पयाहिणावत्तउदए उ ॥६३८७॥

तप्पडिपक्ख नि - अप्पसत्थाण दब्बादियाण प्रतिपक्षा पमत्था दब्बादिया तेसु आलोएज्ज । तत्थ दब्बे सालिमादिपसत्तवधणार, सीसु, हिग्गण-सुवण्ण णि रधण-वित्तिथर विदुमरासिसमीवे वा, खेत्तमो उच्छुकरण-समीवे मालिकरणे चेतियधरे पत्तपुप्फलोववेत्ते वा आराम गभीरे, जत्थ वा खेत्ते पडिसदो भवति त साणुणातो जत्थ वा णदीए पदाहिणावत्त उदग बहति पउममरे वा ॥६३८७॥

कालतो -

उत्तदिणसेसकाले, उद्वट्ठाणा गहा य भावम्मि ।

पुव्वदिस उत्तरा वा, चरतिया जाव णवपुव्वी ॥६३८८॥

उत्तदिगा अट्ठमीमादीने वज्जेता मेसा वित्तिपादी विवसा पमत्था, तेसु वि व्यतिवातादि दोसवज्जितेसु पसत्थकरणमुहत्तेसु, भावतो उच्छट्ठाणगतेसु गहेसु - रविस्स ^१मेसो उच्चो, सोमस्स ^२वसमो, अगारस्स ^३मगरो, बुहस्स ^४कणा, विहम्सतिस्स ^५कक्कडमो, ^६मीणो सुक्कस्स, ^७तुलो सणिच्छरस्स । सव्वेसि गहाण अप्पणो उच्चट्ठाणातो ज सत्तम त णीय । अहवा - भावतो पसत्थ बुहा सुक्को बहस्सती ससी य । एतेसि रासि-होरा द्रेक्काणअसत्तसु णा उदिएसु सोम्मगहबलाइएसु य आलोएज्जा । सो पुण आलोएतो आलोयणारिहा वा तिण्ह दिसाण अन्नयगेए अभिमुहो ठाति उत्तरा पुव्ववरतिया य, सा इमा जाए दिसाए तित्थकरो केवली मणपज्जवग, णी ओहिणाणो चोहसपुव्वी जाव णवपुव्वी जो जम्मि वा बुगे पहाणो आयरिओ जत्तो विहरति ततो हुत्ता पडिच्छति आलोएति वा ॥६३८८॥

आलोएतस्स इमा सामायारी -

णिसेज्जाऽसति पडिहारिय कितिकम्म काउ पंजलुक्कुडओ ।

बहुपडिसेवऽरिसेसु य, अणुणवेउं णिसज्जगतो ॥६३८९॥

अप्पणिसेज्जकर्णेहि अपरिभुत्तेहि परिभुत्तेहि णिवेज्ज करेति असति अप्पणिसेज्जाण अणस्स सतिया पडिहारकप्पा वेत्तु करेति । तत्थ जति आयरिओ पुव्वहुत्तो णिमीयति तो आलोयगो दाहिणओ, उत्तरा-हुत्तो णिसीयति तो इयरो वामनो पुव्वहुत्तो ठाति चरति य । दिसाभिमुहो ठावितो विहीए वारसावत्त वदण दाउ कयजली उस्मगउक्कुडुयठिओ आलोएइ । जइ पुण तस्म बहुपडिसेवणताओ चिरेण आलोयणा समप्पिहिइ, न सक्केइ तच्चिर उक्कुडुओ ठाउ, अरिसालुयस्स अरिसाओ खुभेज्जा, तो गुरु अणुणवेत्ता णिसिज्जाण उवग्गहिय पादपुच्छे वा जहाइहे ठाविओ आलोएति ॥६३८९॥

कि पुण त आलोइज्जति ?, उच्यते - चउव्वह इद दब्बादी -

चेयणमच्चित्तदब्बे, जणवयमग्गे य होति खेत्तम्मि ।

णिसिदिण-सुभिक्ष-दुब्भिक्षकाल-भावम्मि हिट्ठितरे ॥६३९०॥

द्ववतो अचित्त सचित्त मीस वा अकप्पिय किंचि पडिसेविय होज्जा । खेत्तओ जणवते वा अट्ठाणे वा । कालनो दिया वा राओ वा सुभिवखे वा दुब्भिवखे वा । भावतो हट्ठेण वा गिलाणेण ना, जयणाए अजयणाए वा, दप्पओ कप्पओ वा ॥६३९०॥

आलोयणाए इमे गुणा -

लहुताल्हादीजणयं, अप्पपरणियत्ति अज्जवं सोही ।

दुक्करकरणं विणओ, णिस्सल्लत्तं च मोहिगुणा ॥६३९१॥

जहा भारवाहो ओहरियभरोव्व आलोइए उद्धरियसल्लो लहु भवति, अतियारघम्मतवियस्स चित्तस्स आलोयणाए णिस्सल्लो चित्तस्स प्रल्हादण जनयति पल्हादित्ति वुत्त भवति, आलोयणकरणओ सय दोसेहि णियत्तति त पामित्ता अण्णे वि आलोयणभिसुहा भवति, अतियारपसणतो वि णियत्तिया भवति, ज रहे परिसेवित परस्म आलोएतेण अज्जव ति अमायावित्त कय भयति, अतियारपकमल्लिणस्स अप्पणो चरणस्स वा साहो कता भवति दुक्करकरण च ।

कह ? उच्यते - ण दुक्कर ज पडिसेवित, त दुक्कर ज आलोइयति, अहवा - ज पडिसेवित त जीवस्स ससारसुहाणूकूल न दुक्कर, तओ ज चित्तनिवित्तिकरण त दुक्करकरण ति अप्पतेण गुहस्स विणओ कतो भवति, चरित्तविणओ वा एस कओ भवति, समल्लो य अप्पा णिस्सल्लो कओ । आलोयत्ति वा सेहत्ति वा एगट्ठ ॥६३९२॥

तेण पुण आलोयतेण मायामयविप्पमुक्केण -

जह बालो जंपंतो, कज्जमकज्जं च उज्जुयं भणइ ।

तं तह आलोएज्जा, मायामयविप्पमुक्को उ ॥६३९२॥ कब्बा

जो आलोयणारिहो सो इमो दुविहो -

आगममुयववहारी, आगमतो छ्विहो उ ववहारी ।

केवलि मणोहि चोइस, एस णव पुव्वी य णायव्वा ॥६३९३॥

आगमववहारी सुयववहारी य तत्थ जो सो आगमववहारी सो छ्विहो इमो - केवलनाणी ओहिणाणी मणपज्जवणाणी चोइसपुव्वी अभिण्णदमपुव्वी णवपुव्वी य । एते आगमववहारी पच्चक्खणाणिणे जेण जहा अइयारो कतो त तहा अतियार जाणति ॥६३९४॥

त च आगमववहारिस्स आलोएज्जमाणे जति आलोयणो पडिक्कु चति -

पम्हुट्ठे पडिसारण, अप्पडिवज्जंतं गं खलु सारे ।

जति पडिवज्जति मारे, दुविहत्तियारं वि पच्चक्खी ॥६३९४॥

“पम्हुट्ठे” ति - विस्सरिए त पच्चक्खणाणी णाउ “पडिसारिज्जइ” ति -

ताहे भणाति - अमुग ते विस्सरित त आलोणहि ।

अह जाणइ - ण पडिवज्जति तो ण पडिसारेइ । दुविहो अइयारो मूलगुणाइयारो उत्तरगुणा इयारो य । एव पच्चक्खणाणी सम्म आउट्टस्स देति पच्छित्त, अणाउट्टस्स ण देति ॥६३९४॥

एते पञ्चखववहारी वृत्ता -
सेमा जे ते इमे सुयववहारी -

कप्प-पकप्पा तु सुते, आलोयावेति ते उ तिक्सुचो ।

मरिसत्थेऽपलिउंची, विसरिम पडिकुंचितं जाणे ॥६३६५॥

“कप्पो” ति दसाकप्पववहारा, ‘पकप्पो’ ति णिसीह, तुशब्दान्महाकप्पमुत्त महाणिसीह णिज्जुत्तीपेडियवरा य, एवमादि सव्वे सुयववहारिणो । ते य सुयववहारी एवमारालोइए पलिउचिते अपलिउच्चि वा विमेष ण याणति, तेण कारणेण “निक्सुचो” ति गियमा तिणि वारे आलोयावेति । एक-वारा भणानि - “ण सुट्ठु मए अबधारिय,” “णिहावसगमा” । तनियवाराए भणानि “अणुवउत्तेण किंचि णो अबधारिय, पुणो आलोएहि” । जति तिहि वागाहि मरिस चेव णालानिय तो णायव्व अपलिउची । अह विसरिस बुलुवतो य आलोएति तो पलिउच्चिय जाणियव्व ॥६३६५॥

तत्थ जो पलिउची सो इमेण अम्मदिट्ठेण चोग्य वो -

आमेण य दिट्ठतो, चउच्चिहा तिणि दडिएण जहा ।

सुद्धस्म होति मामो, पलिउंचिते त चिम चऽन् ॥६३६६॥

दव्वादचउच्चिहपडिसेवणापलिउची आगमसुयववहारादीहि भाणियव्वो ।

सुणेहि अज्जो । उदाहरण, जहा - एकम्म रण्णो आमो मव्वलक्खणजुत्तो वावण-पवण-समत्थो, तस्स आमम्म गुणेण अजेयो सो राया । सामनराइणो य मव्वे अज्जो आणावेति ।

ताहे ममनरायाणो अप्पणो मभासु भणति - अत्थि कोइ एरिसो पुग्गिसो, जो त हरित्ता आणेति ? सव्वेहि भणिय - सो पुरिमपजरत्थो चिट्ठति, गच्छति वा, ण मक्कति हाउ । एग्गस्स रण्णो एणेण पुरिसेण भणिय - जइ सो मारेयव्वो तो मारेमि ति ।

ताहे रण्णा भणिय - “मा अह तस्म वा भवतु, वावादेहि” ति । तन्नो तत्थ गतो सो ।

तेण य छणपदेसट्ठितेण पडिक्करूव धणुहरुडस्स अते क्षुद्रकीकटक लाएत्ता विट्ठो आसो, त इसिया कडग आहणित्ता पडिय, क्षुद्रकीकटकोवि आसमगीरम्मणुपविट्ठो, सो पभूअजव-जोगासण चरतो वि तेण अव्वत्तमल्लेण वाहिज्जमाणो परिहाइउमाढत्तो ।

ताहे वेज्जस्स अक्खानो, वेज्जेण दिट्ठो, भणिय च - गत्थि से कोति धाउबिसवादरोगो, अत्थि से कोइ अव्वत्तमल्लो ।

ताहे वेज्जेण जमगसमग पुरिमेहि कद्दमेण आलिपाविओ सो आसो, सो सत्तपएसो अनिउण्हत्तणतो पढम मुक्का, त फाडेत्ता अवणीओ क्षुद्रकीकटकसल्लो, सो य पणत्तो । बिंतिओ एव अणुद्धरियसल्लो मनो ।

इदाणि उवमहारो - जहा सो आसो अणुद्धारियमल्लो वल ण गेण्हइ, असमत्थो य जुट्ठे मनो य, एव तुम पि मसल्लो करतो किरियकलाव सजमवुण्ह णा करेमि, ण य कम्मणो जय करेमि, अजए य कम्मणो अणगाणि जम्मणभरणणि पाविहिंसि, णो य मोक्खत्थ साहहिंसि, तम्हा सव्व सम्म आलोएहिंति ।

अहवा चउच्चिहा आलोवगा - अपलिउच्चिए पलिउच्चिय - एतेसि चउण्ह भगण पढमतिये सुद्धभावस्स मासमावन्नस्स मासो चेव पच्छित्त, बिंतिचउत्थेसु माइणा त च आवण्णमासिय इम च अण मासयुस मायाणिक्कणा मासिय ॥६३६६॥

स्यान्मति — “किं तिष्ण आलोयणां अरतो माई णोवलम्भति तो (जम्भो) तिष्णिवारा आलोया-
विज्जति ?

आचार्य आह — एग-दुवारा सुद्धि स्पष्टा न उवलम्भति मायीति, तथावि फुडतर उवलद्धिनिमित्त
तिष्णि वारा आलोयाविज्जति पुव्व च मायाणिक्कण मासगुरु दिज्जति त्ति ।

एत्थ इमो दिट्ठतो “‘तिष्णि दडिण जहा” अस्य व्याख्या —

अट्ठप्पत्ती विमरिम, - णिवेयणे दंड पच्छ ववहारो ।

इति लोउत्तरियम्मि वि, कुचितभावं तु दंडेति ॥६३६७॥

अथस्य उत्पत्तिरर्थो व्यवहारादुत्पद्यत इति अट्ठप्पत्ती व्यवहारो भणति—जहा कोइ पुरिसो अण्णा-
तित्तो रायकरण उवट्ठितो णिवेदेति—अह देवदत्तेण अण्णातित्तो, ताहे करण (पई) पुच्छति—कह तुज्झ
कलहो समुट्ठितो?, ताहे सो कहेति । कहिए करणपत्ती भणति—पुणो कहेहि, कहिए पुण ततियवारा
कहाविज्जइ, जति तिसु वि सरिस तो जाणति—सम्भावो कहिओ, अह विसरिस नो जाणति करण-
पत्ती एस पलिउचिय कहेइ त्ति । कीस राजकुले सुसावाय भणति ? प्रनारेति त्ति पुव्व डडिज्जति,
पच्छा जइ ववहारे जियति तो पुणो डडिज्जइ । एव सो मायावी वि डडोवहतो कीरति । इय एव
लोउत्तरे वि अह तिष्णि वारा आलोयावेत्ता जइ पलिउची कीस माय करेहि त्ति तो मायपच्चयो मासगुरु
से दि जति पुव्व, पुणो वि से पच्छा ज आवण्णा त दिज्जति, एव चैव सो सुज्झति, णटिय से अण्णो
सोघणप्पगारो इति ॥६३६७॥

अह आगमववहारी पच्चक्खणाणपच्चयतो पलिउचिय अपलिउचिय वा जाणति । जे
पुण सुतववहारी, ते कह दुरवलक्ख असुभ पलिउचियभाव अतोगत जाणति ? अत उच्यते—

आगारेहि सरेहि य, पुव्वावरवाहयाहि य गिराहि ।

नाउं कुचितभावं, परोक्खणाणी ववहरंति ॥६३६८॥

आलोयणस्स आगारो ण सविग्गभावोवदसगो, सरोवि से अक्खत्तमविट्ठो खूभियग्गारो, पुव्वावर
वाहता य गिरा । आलोयतो भणति—अक्खपिय मे जयणाए पडिमेविय, ण य तियपरियट्ठ काउ त गहिय त्ति,
एवमादिकारणेहि कुचियभाव णाउ पच्छा आलोयणेण य आलोत्तिने फुडीकए । एव परोक्खणाणी ववहार
ववहरंति ॥६३६८॥

जे भिक्खु दोमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेविच्चा आलोएज्जा

अपलिउचिय आलोएमाणस्स दोमासियं

पलिउचिय आलोएमाणस्स तेमासियं ॥स्र०॥२॥

अस्य व्याख्या—द्वाम्या मासाभ्या निष्पन्न दोमासिय, सेस जहा मामियसुत्ते । णवर—इमो
विसेसो, पलिउचिते ततिओ गुरुमासो दिज्जति ।

दोमासादिपलिउचितेसु जहक्कम इमे दिट्ठता—

कुचित सल्ले मालागारे मेहे पलिकुंचिते तिगट्ठाणा ।

पचगमा णेयव्वा, वव्हि उक्खड्डमट्ठाहि ॥६३६९॥

१ गा० ६३६९ । २ अक्खत्तमविस्पष्ट । ३ पुन पुनरित्यर्थ ।

दोमासिगपलिकु चियस्म कु चितो दिट्ठतो दिज्जति—कु चितो तावसो, फलाण अट्ठाए अडवि गओ । तेण णदीए मय मओ मच्छो दिट्ठो । तेण सो अप्पमागारिय एइत्ता खाइतो । नम्म तेण अणुचियाहारेण अजीरतेणागाढ गेलण जात ।

तेण वेज्जो त पुच्छति—किं ने खाइय ? जओ रोगो उप्पण्णो ।

तावसो भणानि—फलाइ मोत्तु अण्ण ण किञ्चि खाइय ।

वेज्जो भणइ—“कदादीहि णिक्कमानिय ते सगीर, घय पिवाहि ति । तेण पीय मुट्ठुतर गिलाणीभूतो ।

पुणो पुच्छिओ, वेज्जेण भणिय—“सम्म कहेहि” ।

कहिं तेण—मच्छो मे खाइतो ।

वेज्जेण मसोहण-वमण विरेयणकिरियाहि णिक्कसाएत्ता लट्ठीओ कओ ।

इमो उवणओ—जो पलिउचति नम्म पच्छिन्नकिरिया णो सक्केति मुद्ध काउ, मम्म पुण अतियाररोग आलोए तो तस्म पच्छिन्ने सुहकिरिया काउ सक्केति ॥६३८६॥

जे भिक्खू तेमामियं पडिहारट्ठाण पडिसेवेत्ता आलोएज्जा

अपलिउंचिय आलोएमाणस्म तेमामियं

पलिउंचिय आलोएमाणस्म चउमासियं ॥सू०॥३॥

अत्रापि मासिकव्याख्या एव, नवर—त्रिभिर्मासैर्निष्पन्न त्रैमासिक, पलिउ चिए चउत्थो म सो बुरुओ दिज्जति ।

पलिउचगे य इमो ‘मल्लदिट्ठतो कज्जति । दो रायाणो मगाम सगामेति । तस्स एकस्स रण्णो एक्को मणूसो मूरत्तणेण अतीववल्लभो । सो य वट्ठहि सत्तेहि सल्लिओ । ते तस्म सल्लाइ वेज्जो अवणेति, अवणिज्जमाणेहि अतीव दुक्खविज्जइ, एकम्मि से अगे सल्लो विज्जमाणो तेण विगूहितो वेज्जस्स दुक्खाविज्जिहामि ति । सो य तेण सल्लेण विवट्ठमाणेण बल णो गिण्हति, दुब्बलो भवति, पुणो तेण पुच्छिज्जमाणेण णिवधे कहिं णीणिओ सल्लो, पच्छा बलव जातो । एत्थ वि उवणओ पूर्ववत् ।

जे भिक्खू चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवेत्ता आलोएज्जा

अपलिउंचिय आलोएमाणस्स चाउमासिय

पलिउंचिय आलोएमाणस्स पंचमासिय ॥सू०॥४॥

अत्रापि तदेव व्याख्यान, नवर—पलिउचणाणिक्कणो पचमो गुह्यमासो दिज्जति ।

इमो य ‘मालाकारदिट्ठतो—दो मालाकारा कोमुदिवारे पुष्पाणि बहूणि उवणित्ता गहेत्ता विहीए उवट्ठिता । तत्थेगेण कयगेसु उवट्ठितेसु पागडा कया, तेहि णाउ तेसि मोल्ल दिण्ण, बहू य लाभो लट्ठो । जेण पुण ण कयाणि पागडाणि, तस्स न कोइ कयगो अल्लीणो, ते तत्थेव विणट्ठा, ण य लाभो लट्ठो । एव जो मूलगुणउत्तरगुणावराहा ण पागडेति सो पच्छित्त, पेब्बाणलाभ च ण लभति ।

जे भिक्खू पंचमामियं परिहारट्ठाणं पडिमेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउच्चिय आलोएमाणस्म पचमासियं
पलिउच्चिय आलोएमाणस्म छम्मामियं ॥सू०॥५॥

तथैव व्याख्यान, गाणन इम — पलिउच्चिये छट्ठो मामो गुरो दिज्जति ।

इमो य मे 'मेहदिट्ठतो दिज्जति —

चत्तारि मेह गाहा —

गज्जिता णामेगे णो वासित्ता, चउभगा कायव्वा, एव तुम मि आलोएमि त्ति गज्जिता
णिमज्जकरण वदणदाणण उज्जमिता आलोवेउमाडत्तो णो अवराहपाणिय मचमि, जम्हा पलिउ चण करेसि,
तम्हा मा बिफल गज्जित करेहि, मम्म आलोएहि त्ति ।

“अनिगट्ठाणे” त्ति ग्रन्थ व्याख्या — पलिउच्चिए आउट्टे समाणे सुनववहारी पुणो तिणिं वारा
अ लोयावित्ति, जड पुणा तिहि वार हि मग्गि आलोणिय तो जाणति — “एस मम्म आउट्टो, ज मे दायव्व त
दति” ।

अह विमग्गि तो भणति — अण्णन्थ सोहि करेहि, णाह तव सक्केमि एरिमियाए अणिच्छिय-
अलायणा सवभाव अयाणतो सोहि काउ ।

अहवा सीमो पुच्छति — “एते मासादि छम्मामत्ता पायच्छित्तटाणा कुप्पो पत्ता ?”

आचार्यहि — “तिगट्ठाणे” त्ति, उग्गमप्पादणेमणांमु ज अक्कप्पडिसेवणाए अगायारकरण तेण
एते मासादिउम्मामत्ता पायच्छित्तटाणा पत्ता इति । अहवा — णागाडिणाणायाहेत्ति । अहवा — आहार-
उवहिसेज्जा अक्किपाणिंहेतो ।

इदाणि छम्मामियसुत्तम्म अनिदेसकरण इम — जम्हा पचमामिए पलिउच्चिए छम्मामा दिट्ठा,
तमु आरोवण विहाण ज, त चेव छम्मामपडिमेवणाए वि, तम्हा छम्मामियसुत्त ण पडि, अतिदेस करेति ।

तेण परं पलिउच्चिए वा अपलिउच्चिए वा ते चेव छम्मामा ॥सू०॥६॥

“तेण” त्ति तम्म पचमामियस्स पुरो छम्मामिय भवति, तम्म पडिसेविए आलोयणाकाले जति
अपलिउच्चिय आलोएति तो छम्मामित, पलिउच्चिय आलोइए वि ते चेव छम्मामा, जहा मासादिसु पलिउच्चिए
य मायाणिप्फणो गुरो मामो आवत्तीओ अहिगो दिज्जइ तहा छम्मामावत्तीए भवतीत्यथ ।

कम्हा ? उच्यते — जम्हा जियकप्पो इमो । जस्स तित्थकरस्स ज उक्कोस्स तवकरण तस्स
नित्थे तमेव उक्कोम पच्छित्तदाण सेससाधूण भवति । सत्तिभुत्तेण वि परतो तवो ण कायव्वो,
आमायणभया, चरिमत्तित्थकरस्स य अम्ह सव्वुक्कोसा छम्मामिया तवभूमो सूत्रखड गत ।

जे भिक्खू बहुसो वि मासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउच्चिय आलोएमाणस्म मासियं
पलिउच्चिय आलोएमाणस्म दोमासिय ॥सू०॥७॥

जे भिक्खु बहुसो वि दोमासियं परिहाट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउचिय आलोएमाणस्स दोमासिय
पलिउंचिय आलोएमाणस्स तेमासिय ॥सू०॥८॥

जे भिक्खु बहुसो वि तिमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउचिय आलोएमाणस्स तिमासिय
पलिउंचिय आलोएमाणस्स चउमामियं ॥सू०॥९॥

जे भिक्खु बहुसो वि चउमामियं परिहाट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स चउमासियं पलिउंचिय आलोएमाणस्स
पंचमासियं ॥सू०॥१०॥

जे भिक्खु बहुसो वि पंचमासियं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्ज
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स पंचमासियं
पलिउंचिय आलोएमाणस्स छम्मासिय ॥सू०॥११॥

‘तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मामा ॥सू०॥१२॥

अत्र पचानामपि सूत्राणां सूत्रकं गाथापठ्यार्धमपि दिश्यते “पच-” इति सख्या, “गमा” इति सूत्रप्रकारो, ते य मासदुमासादि, “अण्येव” इति वयणुच्चारणमग्ने, “बहूहि” नि - बहुस सुत्ता ।

“उखडुमड्ढाहि” इति बहुस वक्त्वाण, उखडुमड्ढु इति वा बहुमा इति वा भूयो भूयो इति वा पुणो इति वा एणट्ठ । एषा पचानामपि बहुमसूत्राणमयमथ - त्रिप्रभृतिबहुत्व तिणिं वारा मासिय पडिसेवेत्ता अपलिउ चिय आलोएइ एकं चेव मासिय दिज्जइ, अहं पलिउ चिय आलोएति तो वितितो मासो मायाणिप्फणो गुरुगो दिज्जति एव दोमासिय पि ।

णवर - ततिगो मासो मायाणिप्फणो गुरुगो मासो दिज्जति । तेमासिए तिणिं मासा, चउत्थो मायाणिप्फणो गुरुगो दिज्जति ।

चाउम्मासिए चत्तारि मासा, पचमो मायाणिप्फणो गुरुगो दिज्जति ।

पचमासिए पच, छट्ठो मायाणिप्फणो । तेण परं पलिउचित्ते वा ते चेव छम्मामा, एतत्सूत्र-मुक्ताथमेव । एव मासादिमु एगपडिमेवणसुत्ते पचसु मासादिसु बहुसु पडिसेवणमुत्तेसु पचसु वक्त्वाणिणसु ।

अत्र चोदकाह - ‘तुम्हे रागदोसी’ ।

किं चान्यत् सूत्र -

चोदग मा गद्भत्ति कोट्टारतिगं दुवे य खल्लाडा ।

अद्धानसेवितम्मि, सन्वेसु वि वेत्तुणं दिण्णं ॥६४००॥

बहुएसु एककदाणे, रागो दांसो य एगदाणे उ ।

चोदग एदमगीए, गीयम्मि व अजतमेवम्मि ॥६४०१॥

आचार्याह -

कम्हा अम्हे रागहोसी ?

पुणो चोदगाह - पुच्छद् - “बहुएसु” ति, बहुससुत्ते मासियट्ठाणसु वि बहुसो मेविएसु एककदाणे रागो, एकसि ज सेवित त चेव पडिपुण्ण एक देताण तम्मि मे ब्रेषो भवति ।

आयरिओ भणति - “चोदग एवमगीत” पच्छद्, ज आदिसुत्तेसु पचसु पडिमेवित त चेव दिज्जति ७य अगीयत्थस्स एव दिज्जति । ज पुण बहुससुत्तेसु दाण भणिय, एय जो गीयत्थो कारणे अजयणाए सेवति, तस्सेद दिज्जति ॥६४०१॥

सगलबहुसमुत्ताण विसमपडिसेवणासु समदाणपसाहण्डा इमो दिट्ठतो दिज्जति -

जो जतिएण रोगो, पसमति तं देति भेसगं वेज्जा ।

एवागमसुतनाणी, त देति दिसुज्झते जेणं ॥६४०२॥ कथ्या

प्राचार्य एवाह, “सुत्त” ति अस्य व्याख्या -

अवि य ह्नु सुत्ते भणियं, सुत्तं विसमं ति मा भणसु एव ।

संभवति ण मो हेतू, अत्ता जेणालियं ब्या ॥६४०३॥

आयरिओ भणइ - न वय रागदोसित्ता, जेग सुत्त चेव फुड समदाण भणति ।

“चोदगो ति चोदगो भणति, “ज तुमे भणति सुत्ते वुत्त ति, त चेव सुत्त विसम ति, जेग आदिपच-सगलमुत्ताणि पच य बहुसमुत्ताणि पुग्वावरविह्वाण, जतो एतेनि दोण्ह वि पचगमुत्ताण विसमा पडिसेवणा सम दाण” ति ।

आयरिओ भणइ - “चोदग ! जे तुम भणमि सुत्त विसम ति त “३मा” अस्य व्याख्या, मा भणसु एव ति । सेम कठ । “वीतरागो हि सर्वज्ञ” श्लोक ॥६४०३॥

पुणो सीमो भणइ - भगव ! ण्णु विसमा पडिसेवणा वत्थू कह वा विसमवत्थूसु सुद्धी समा भवति ?

उच्यते -

कामं विसमा वत्थू, तुल्ला मोहि तथावि खलु तेसिं ।

पंच वणि तिपंच खरा, अतुल्लमुल्ला उ आहरणं ॥६४०४॥

“काम” अणुमयत्थे, “खलु” सट्ठो इम अवधारति, विसमवत्थुपडिसेवणासु वि भवति चेव तुल्ला सुद्धी, मा य समा चेव, सममुद्धिपसाहणत्थ दिट्ठतो इमो, “अगद्दमे” ति अस्य व्याख्या - “पचवणि” पच्छद्, जहा - पच वणिया समभागसमाइत्ता ववहरति, तेसि अण्णया कयाइ समुप्पण्ण जहा विरिचामो । सव्वम्मि विभत्ते खरा विभयामो ति, ते य “तिपचक्खरा” - पण्णरस्स ति वुत्त भवति, ते य विसमभरवहा विसममोल्ला ॥६४०४॥

ते सम्मं विभञ्जता तिणिण आवडंति, मुल्लतो पुण अतुल्लमुल्ला भवन्ति ।

ताहे ते -

विणिउत्तभंडं भंडण, मा भंडह एत्थ एगो सट्ठीए ।

दो तीस तिणिण बीसग, चउ पण्णर पंच बारसगा ॥६४०५॥

‘विणिउत्तभंडि’ त्ति सभंडोवकरणे-विभत्ते विश्चीनं रासभणिमित्तं भंडिउमारद्धा । असमत्था य समं अप्पणा विभातियं अण्णं कुसलमुवट्ठिता, तेण य भणिता - “मा भंडह, अहं भे समं विभयामि, कहेहि किं को वहति ? कस्स किं मुल्लं ? त्ति ।

तेहि कहियं - एत्थ एक्को रामभो सट्ठिमोल्लो, सट्ठि च पलसते वहति, दो पत्तेयं तीसमुल्ला तीसपलसत्तो वाहिणो. एवं तिणिण बीसा, चत्तारि पण्णरसा. पंच बारसा एवं कहिए । तेण मुल्लसमा विभत्ता, एगस्स एगो सट्ठिमुल्लो दिण्णो, वितियवणिग्यस्स तीसा दो, ततियस्स बीसा तिणिण, चउत्थस्स पण्णरसमुल्ला चउरो, पंचमस्स पंच बारसमुल्ला । विसमवत्थूसु वि तेण सममुल्ला कया, ण य सो विभयंती रागदोसिल्लो, ण य वणिग्याणं अत्थि हाणी ॥६४०५॥

एयस्स इमो उवसंघारो -

कुसलविभागसरिसञ्चो, गुरु य साहू य होंति वणिग्या वा ।

रासभसमा य मासा, मोल्लं पुण रागदोसा तु ॥६४०६॥ कंठ्या

णवरं - “मुल्लं पुण रागदोसा उ” त्ति - जहा रासभद्वग्गुणबुद्धिहाणीओ मुल्लस्स बुद्धिहाणी तहा भावे रागदोसबुद्धीहाणीजनितपडिसेवणाहिंतो पच्छित्तस्स बुद्धिहाणी भवतीत्यर्थः । जतो तिव्वरागदो-सञ्भवसाण सेवते मासट्ठाणे मासो चेव दिज्जति, मदभावस्स दोसु मासियट्ठाणेषु पण्णरस पण्णरस वेत्तुं मासो दिज्जइ, एवं तिसु दस दम वेत्तुं मासो दिज्जइ, चउसु पत्तेयं अट्ठट्ठा मा राइंदिया वेत्तुं दिज्जति, पंचसु छ छ वेत्तुं मासो दिज्जति, एवं सगलदुमासा चेत्ति सुत्ते वि बहुससुत्ते य कारणा अजयणपडिसेविणो रागादि-बुद्धिहाणीतो य उवउज्ज बहुवित्थरभणियव्वं । “अट्ठाणसेवितम्मि” त्ति - गीयत्थेण अट्ठाणातिकारणे जं सेवितं अजयणाए तत्थ बहू मासा आवण्णो, एतेण एक्कसरा चेव आलोइता तत्थ गुरुणा अजयणसुद्धीणिमित्तं तस्सञ्चणोसिं च अणवत्थणिवारणत्थं सव्वेसि मासाणं समविसमेण वा दिवसगहूणेण दिवसो वेत्तुं एक्को मासो दिण्णो । अगीयत्थो वि जो मंदणभावो बहुमासे सेवित्ता तिव्वञ्भवसाणी वा हा दुट्ठकयादीहि आलोइते, तेण णायं एस एक्केण चेव मासेण सुज्झति, तहावि अगीयत्था परिणामओ वा चित्तेज्ज - दोमासियादि आवण्णो हं कहं एक्केण मासेण सुज्झस्सामि त्ति ताहे पच्चयकरणट्ठताए सुतववहारी सव्वसफलमासकरणत्थं सव्वेसु दिवसे वेत्तुं एक्कमासं दलाति । आगमववहारी पुण ण दो वि मासा सफला करेइ एक्कं चेव दलाति, वितियं मासं भोसेति, जो पुण तिव्वञ्भवसाणे णिवकारणपडिसेवी तस्स मासादिआवण्णस्स मासादि चेव पडिपुणं दिज्जति । एवं अगीयगीयत्थाण णिवकारणे वा पुढो ॥६४०६॥

पायच्छित्ते दिण्णे सिस्सायरियाणं पुच्छुत्तरगाहा इमा -

वीसुं दिण्णे पुच्छा, दिट्ठंतो तत्थ डंडलइतेणं ।

डंडो रक्खा तंति, भयजणगो चेव सेसाणं ॥६४०७॥

नीसु पृथक् पृच्छति—अगीतगीताण णिककारणकारणे वा किं वि सरिस पच्छित्ति दिण्ण ति? ॥६४०॥

एत्थ “काट्टागारे” ति वयण, अस्य व्याख्या —

“दिट्ठतो तत्थ दडलइएण” ति अस्य व्याख्या —

डडत्तिग तु पुरत्तिगे, ठवित पच्चंतपरनिवारोहे ।

भत्तद्वं तीमतीसं, कुंभग्गहमागमो जेत्तु ॥६४०८॥

सुणेहि चोदग — “एगम्म अहिवरण्णो पच्चनियराया वियट्ठा। अहिवरण्णा तस्स आमण्ण-
पुरेसु तिण्णिण दडा विसज्जिता, गच्छह णगराणि रक्खह । एतेसु पत्तेय णगरेसु तेसु पच्चतिराइणो
न आगत्तु रोहिता । तेहि य रोहिएहि खीणभत्तेहि, जे तेसु पुरेसु अहिवरण्णो कोट्टागारा तेहि
पत्तेय धण्णम्म तीम तीम कु भा गहिया । तेहि य सो पच्चनियराओ जितो । आगता रण्णो समीव,
कहित, तुट्ठो राय ।

पुणो तेहि कहिय — तुज्झ कज्ज करतेहि अन्न खइय ।

रण्णा चित्ति-जइ एनेमि डडो ण कज्जति, तो मे पुणो पुणो उप्पण्णपयोणेहि कोट्टागारा
विलु पिहित्ति, ण य एणेसि अण्णेसि च भय भवति ।

तम्हा “दडो” पच्छद्ध, अस्य व्याख्या —

कामं समेतं कज्ज, कतचित्तीएहि कीस भे गहितं ।

एस पमादो तुब्भं, दस दम कुभे वहह दड ॥६४०९॥

सच्च मम कज्ज तहावि कयवित्तीहि कीस भे धण्ण गहिय ?, एस तुम्ह पमादो । तेसि
अणवत्थपसगणिवारणत्थ दड वत्तेति, देह मे धण्ण ति । एव भणित्ता पुणो राया अणुग्गह करेति,
वीस वीस कु भा तुब्भे मुक्का, दम दम कु भे छुब्भह कोट्टागारे ॥६४०९॥

“अक्खा” ति तेहि ने छूढा, चित्ति य च — “अम्हेहि रण्णो कज्ज कय, तहावि डडिया,
ण पुणो एव करिस्सामो” । अण्णेमि पि भय जाय, एस दिट्ठतो ।

इमो उवसहारो —

तित्थंकर रायाणो, जडणो दंडा य काय कोट्टारा ।

असिवादि उग्गहा पुण, अजयपमादारुवण दंडो ॥६४१०॥

तित्थकरा रायत्थाणीया, साधू डडत्थाणीया, छक्कायत्थाणीया कोट्टागारा, विग्गहत्थाणीयाणि
असिवादीणि । गीयत्थस्स अजयणाए प्रसगवारणाणिमित्त मासादीहि बहुसो सेवितेहि तेहि एक्को मासो दिज्जति
अगीयत्थस्स पुण प्रमादवारणाणिमित्त दोहि मासेहि दुमासो दिण्णो । अहवा — दो वि सफला काउ मामो चेव
दडो दिण्णो ॥६४१०॥

चोदगो भणइ —

वट्ठएहि वि मामेहिं, एगो जति दिज्जती तु पच्छिन्नं ।

एवं बहु मेवित्ता, एक्कमि विगडेमि चोदेति ॥६४११॥

जति गीयत्थस्स कारणा अजयणाए बहूहि मासिएहिं सेविएहिं एकसराए आलोइय ति काउ एक्को मासो दिज्जति, तथा अम्हे वि बहुमासे पडिसेवित्ता एक्कसराए आलोयामो, तो एक्कमासो लब्धामो ॥६४११॥

एत्थ आयरिओ भणइ -

मा वद एवं एक्कसि, दिगडेमो सुवहुए वि सेवित्ता ।

लब्धिमि एवं चोदग, देंतो खल्लाड खडुगं वा ॥६४१२॥

खल्लाडगम्मि खडुगा, दिण्णा तंबोलियस्स एक्केण ।

सक्कारेत्ता जुयल, दिण्णं वितिएण वोरवितो ॥६४१३॥

“दुवे य खल्लाड” ति दिट्ठन करेइ,

एक्को खल्लाडो तंबोलियवाणियओ पण्ण विक्केति । सो एक्केण चारभडचोद्रेण पण्णे मग्गितो । तेण न दिण्णा । थेवेसु वा दिण्णेषु हसिएण चारभडचोद्रेण खल्लाडसिरे खलुक्का दिण्णा, “टक्कर” ति वुत्त भवति ।

वणिएण चितिय - “जइ कलहेमि ता मे रूसितो मारेज्ज, तो उवायेण मो वेरणिज्जायण करेमि” । वणिएण उद्वेत्ता हट्ठो समाइच्छ वत्थजुयल च से दिण्ण, पाएसु पडितो, महत्त से तबोल ।

चारभडचोदो पुच्छति - “कि कज्ज तुम न रुट्ठो, पेच्छग मम पूएसि, पाएसु य पडसि” ति । वणिएण भणिय - “सव्वखल्लाडाण एस ठिई, परम सुह च उप्पज्जइ” ।

चारभडचोद्रेण चितिय - “लट्ठो मे जीवणोवाओ ।

ताहे तेण चितिय - “तस्स एरिसस्स खडुक्क देमि, जो मे अदरिइ करेज्ज” । ताहे तेण ठक्कुरस्स दिण्णा, तेण मारितो ॥६४१३॥

एवं तुमं पि चोदग, एक्कसि पडिसेविउण मासेण ।

मुच्चिहिंसी वितियं पुण, लब्धिहिंसी छेदमूलं तु पच्छित्तं ॥६४१४॥

चोदग । तुम पि एक्कसि पडिसेविए मासिएण मुक्को, आउट्टियए बहु सेवतो छेद मूल वा लब्धिहिंसी । अण्ण च मो चोदो एक्क मग्ग पत्तो, तुम पुण ससारे अणेगमरणाइ पाविहिंसि ॥६४१४॥

कि चान्यत् ? इम च तुम ण याणसि -

दिण्णमदिण्णो दंडो, हितदुहजणणो उ दोण्ह वग्गाण ।

साहूणं दिण्णसुहो, अदिण्णसुखो गिहत्थाणं ॥६४१५॥

दो वग्गा इमे - माहुवग्गो गिहत्थवग्गो य । साहुवग्गो पच्छित्तदंडो दिज्जतो सुह जणेति, अदिज्जतो दुक्ख करेति । गिहिवग्गो एय चेव विवरीय भवति ॥६४१५॥

कह् ? उच्यते -

उद्वियदंडो माहू, अचिरेण उवेति सासयं ठाणं ।

मो चिचयऽणुद्वियदंडो, संसारपकडुओ होति ॥६४१६॥

१ गा० ६४०० । २ पोट्टेण (व्यव०) । ३ व्यग्रहारे ‘छेद’ इति पद नास्ति, तुशब्दात् छेदो गृहीत । ४ पक्कट्टो (व्यव०) ।

पच्छित्तेण जया उद्धित पाव भवति तदा विसुद्धचरणो मुक्ख पावति । अविमुद्धचरणो पुण अप्पाण ममार, तेण कड्ढति — नयतीत्यर्थ । ससारभाव वा अप्पाण, तेण “कड्ढति” — आकष्यतीत्यर्थ ॥६४१६॥

गिहत्था पुण —

उद्धियदडो गिहत्थो, असण-वसण-रहिओ दुही होति ।

सो च्चियऽणुद्धियदंडो, असण-वसण-भोगवं होति ॥६४१७॥

“असण” भत्त, “वत्थ” वसण, तेसि णासाति । डडिओ पुण तेसि अभागी, अडडिओ पुण भोगी य इवति । जम्हा एव माधूण पच्छित्तदडो दिण्णो सुहो, तम्हा जो जेग सुज्झइ तस्स त एगमणेगमासिय वा अणुरूव दायव्वमिति ॥६४१७॥

जे भिक्खू मासियं वा दोमासिं वा तेमासियं वा चाउम्मासिय वा

पंचमासियं वा एएमि परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाण

पडिसेवित्ता आलोएज्जा —

अपलिउंचिय आलोएमाणस्स मासिय वा दो मासिय वा

तेमामियं वा चाउम्मासियं वा पंचमामियं

पलिउंचिय आलोएमाणस्स दोमामियं वा तेमासियं वा

चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा छम्मासियं वा

तेण पं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा ॥६४१८॥

मूत्रे उच्चारिते शिष्याह —

कसिणारुवणा पढमे, बितिए बहुसो वि सेविता सरिसा ।

संजोगो पुण ततिए, तत्थंतिमसुत्त वल्लीव ॥६४१९॥

सिस्सो भणति — मासिगादिमु पवसु सगलसुत्तगमेसु कसिणारूवणे त्ति ज सेवित त चेव सव्व दिण्ण, ण किंचि विज्झोसित । आदिमा पच वि सगलसुत्तगमा सगलसुत्तगामण्णओ एक्क सुत्त भवति ।

“बितिय” त्ति — बहुसाभिषाणसामण्णतो पच दि बहुसुत्ता बितियसुत्त भवति, तत्थ य सरिसा-वराहा मासादो बहुपडिसेविता ते य भोमियसेमा पढमसुत्तसमा चेव दिण्णा । एव एगदोसु सुत्तेसु इमो ततियसुत्तारओ किमत्थ भणति ?

आचार्याह — बहुवित्थरततियसुत्तपदरिसणत्थ, जतो भणति — “सजोगो पुण” पच्छद ।

ग्रहवा — सुत्ते उच्चारिते सिस्साह “णणु मासदुमासादिया पुव्वाभिहिना कि पुणो भणति” ?,

आचार्याह — ण तुम सुत्ताभिप्पाय जाणसि —

कसिणारुवणा पढमे, बितिए बहुसो वि सेविता सरिसा ।

संजोगो पुण ततिए, तत्थंतिमसुत्त वल्लीव ॥६४१९॥ कठ्या पूर्ववत्

जे अत्थतो सजोगसुत्ता भगविकप्पा वा तेसि भाणिग्गवे इमो विही —

आदिमसुत्ते भणिते, पढमे सेसा कमेण सजोगा ।

अनिल्ले पुण भणिए, अतिल्ला अत्थओ पुव्व ॥१॥

मज्झे गहिण जे सेसपा तु ते उभयतो भवे णेया ।

तेसि पुव्वापुव्व, सेसा य ततो कमेण तु ॥२॥

विभासा - जत्थ सुतादिसजोगेसु भगेसु वा आदिल्ला सुत्ते भणिता तत्थ लेमा कमेण अत्थता पच्छा भाणियव्वा । अह सुत्ते अतिल्ला पुव्व भणिया तत्थ अत्थतो आदिल्ला पुव्व भाणियव्वा । चह सुत्ते म-भग्गहण कय तो अत्थओ सजोगा उभयो वि भाणियव्वा । इम ततिय सुत्त छवीसतिभेदभिण्ण, तत्थ अतिम पचमसजोगे सुत्त इम सुत्तेण गहिय, जे आदिमविगप्पा ते वल्लिदिट्ठनसामत्थओ गेज्झा, जहा वल्ली अग्गे वेत्तु आघट्टिता सव्वा समूलमज्झा आघट्टिज्जइ एव एतेण अतिमपचमसजोगमुत्तेण सव्वे आदिमा दुगादी सयोगा गहिया नवति, अतोऽयमिद सूत्रमारब्ध ।

तत्थ इमे दसदुगसजोगा, त जहा -

जे भिक्खू मासिय च दोमासिय च परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्ज अपलिउंचिय आलोएमाणस्स मासिय च दोमासिय च

पलिउंचिय आलोएमाणस्स दोमासिय तेमामिय च उच्चारेयव्व ।

जे भिक्खू मासिय च तेमामिय च । जे भिक्खू मासिय च उम्मासिय च ।

जे भिक्खू मासिय पचमासिय च । एव दो मासिय तेमामिय चाउम्मासिय पचमासिय च पोयव्व, तेमासिए चाउम्मासिय पचमासिया णेयव्वा, चाउम्मासिए पचमासिय णेयव्व, एते दम दुअसजोगा, एव तियसजोगे दस, च उक्कुसजोगेण पच, एगो पचगसजोगो ॥६४१६॥

सो य इग्गे सुत्तेणेव गाहतो -

जे भिक्खू बहुसो वि मासियं वा, बहुसो वि दोमासियं वा बहुसो वि

नेमामियं वा बहुसो वि चाउम्मासियं वा बहुसो वि पचमामियं वा

एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयर परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा

अपलिउंचिय (बहुसो वि) आलोएमाणस्स मासियं वा दोमामियं वा

तेमामियं वा चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा देज्जा ।

पलिउंचिय (बहुसो वि) आलोएमाणस्स दोमासियं वा तेमासियं वा

चाउम्मासियं वा पंचमासियं वा छम्मासियं वा ॥६४२०॥

एव चउत्थसुत्त ।

इमा से णिज्जुत्ती -

जे भिक्खू बहुसो मासियाड सुत्तं विभासियव्वं तु ।

दोयासिय तेमामिय, कयाइ एककुत्तरा उड्डी ॥६४२०॥

बहुसो ति - त्रिप्रभृति बहुत्व । किं पुण त ' , बहुसो पडिसेवित मासियट्ठाण ति वुत्त भवति । "विभास" ति - व्याख्या, सा य कायव्वा, जहा बहु सगलसुत्ते तहा बहु सजोगसुत्ते वीत्यर्थ । जहा मासियट्ठाणा बहुपडिसेवाते कया तहा दोमासियतेमासियट्ठाणा वि, एव चउपचमासिया वि ददुव्वा, एगुत्तरउड्डीए तेसि दुगादिसजोगा गहिता, सुत्ते पुण पचसजोगो गहिम्मे । जहा ततियसुत्ते अतिम-

मज्जेण दुगाइमज्जेण गहिया तहा बहुससजोगमुत्ते वि अतिमसजोगेण दुगादि वा सजोगा सुइया । इह पि ते चेव छव्वीस सजोगमुत्ता, णवर-बहुसाभिहाणेण कायव्वा, एव एतेसु चउसु मुत्तेसु सभेदमिण्णेसु बावट्ठि सुत्ता भणिया । एते य उग्घायणुग्घाएहि अविसेसिता भणिता ॥६३२०॥

इदाणि पुण एतेसि चेव विशेषज्ञापनार्थमिदमुच्यते—

उग्घाताणुग्घाते, मूलत्तरदप्पकप्पतो या वि ।

संजोगा कायव्वा, पत्तेगं मीसगा चेव ॥६४२१॥

सगलमुत्ता पच, बहुसमुत्ता पच, सगलमुत्ते य सजोगमुत्ता छव्वीस, बहुसमुत्ते य सजोगमुत्ता छव्वीस । एते बावट्ठि सुत्ता उग्घायामिहाणेण णेयव्वा । एते चेव बावट्ठि सुत्ता अणुग्घायामिहाणेण णेयव्वा । एता तिण्णि बावट्ठीओ छासीय सुत्तसय । एत्थ तीस असजोगमुत्ता, सेसछपणसय पत्तेगं सजोगमुत्ताण भवति ।

इदाणि उग्घाताणुग्घातमीसगाभिहाणेण सजोगमुत्ता भाणियव्वा ।

तेसि इमो उच्चारणविही—

जे भिक्खू उग्घायमासिय च पलिउच्चिय च आलोए उग्घातमासिय च
अणुग्घायदोमासिय च ।

एव उग्घायमासिय असुयतेहि अणुग्घायदोमासियादि वि भाणियव्वा ।

एव चेव अणुग्घातमासिते उग्घायतो य दुगादिसजोगा भाणियव्वा ॥६४२१॥

एत्थ इम एगदुगादिपडिसेवणपगारदस्सिणत्थ एगदुगादिसजोगफलआगतककरणदरिम-
णत्थ च भणति—

एत्थ पडिसेवणाओ, एक्कगदुगतिगचउक्कपणएहि ।

दस दस पंचग एक्कग, अदुन अणेगाओ णेयाओ ॥६४२२॥

‘एत्थ’ ति—अतिवक्ते सजोगमुत्तसमूहे, अहवा—उग्घाताणुग्घातमजोगे वा वक्खमाणे मासदु-
मामिएसु एगादिपडिसेवणप्रकारा भवतीत्यथ । तत्थ उग्घातिएसु एक्कपडिसेवणाते पचप्पगारा ते य सुत्त-
सिद्धा चेव, तेण पच्छद्धेण न गहिया, दुगसजोगे दस, तिगसजोगे दस, चउक्कसजोगे पच, पचगसजोगे एक्को,
एव अणुग्घातेसु वि एते पत्तेगसजोगा ।

इदाणि एतेसि मीसगसजोगो भणति—एत्थ एक्कादि उग्घातिगसजोगहणा पच वि
अणुग्घातियसजोगेण पचगेण गुणित्ता जहासख इमे जाता ।

पणवीस पण्णासा पण्णासा पणवीस पच य, एव उग्घातियाण एग दु-ति-चउ-पचसजोगेसु अणुग्घातियाण
य एक्कगजोगे जात पणपणसय ।

पुणो उग्घातियाण एग दु-ति-चउ पचसजोगा अणुग्घातियदुगसजोगेहि दसहि गुणिया जहासख इमे
जाता पण्णासा ।

सत, पुणो सत, पुणो पण्णासा, दस य, एव उग्घातियाण सव्वसजोगा अणुग्घातियाण दुग-जोगेहि
मिलिया तिण्णि सया दसुत्तरा भवति ।

पुणो उग्घातियाण सव्वसजोगा अणुग्घातियतिगसजोगेहि दसहि गुणिया तहि जहासख जाता
पण्णासा, सत, सत, पण्णासा, दस य, एते वि सव्वे मिलिया दसुत्तरा तिण्णिसया भवति ।

पुणो उग्धातियसव्वसजोगो अणुग्धातियचउक्कमजोगेहि पचहि गुणिता जाता जहामख पणुवीस पण्णासा पणुवीस पच य, एय पि मिलिय पणपणसय भवति ।

पुणो उग्धातियसव्वसजोगा अणुग्धातियसव्वसजोगेण एककेण गुणिता जहासख पच दस दस पच एकको य, एते सव्वे एककीस, एव उग्धाताणुग्धातसगलसव्वसुत्ताण सखेवो णव सया एककमट्टा ।

इदणिं बहुसुत्तेसु वि मीसा सुत्त सजोगा एतेण चैव त्रिहिणा णव सया एगमट्टा भवति, सव्वे मीसगमुत्ता सपिडिता अउणवीस सया वावीमुत्तरा भवति, एने चैव आदिमट्टासीसतसहिया एककीम सय अट्टुत्तरा भवति । जम्हा दुविहो अवरारो – मूलगुणे उत्तरगुणे वा, तम्हा एने सव्वे सगलसुत्ता सजोगकुत्ता य मूलगुणावराहाभिहाणेण लद्धा, उत्तरगुणावराहाभिहाणेण वि एत्तिया चैव, जम्हा एव तम्हा एस रासी दोहि गुणिता जातो चत्तारि साहम्सा दो य सया सोलसुत्तरा ।

जम्हा एनेमु मूलुत्तरगुणेषु दप्पतो कप्पतो य अजयणाए अवरारो लब्धमि तम्हा एस रासी पुणो दुगुणो कज्जति, कते य इम भवति – अट्टु सहस्सा चत्तारि सता य बत्तीसाहिया भवति । एत्थ जा मीसगमुत्तसखा सा ततियचउत्थसुत्तेहिंतो उप्पण्णा सखेवओ भणिता ।

त चैव बहुवित्थर दरिमतो आयरिओ भणति “अदुव अणेगाओ णेयओ” ति अयवा – ण केवल पडिसेवणाए एते सजोगमुत्तप्पगारा भवति ।

अणो वि अण्णण पगारेण पडिसेवणाए अणेगमुत्तप्पगारा भवति ता य पडिसेवणाओ “णेयाओ” ति णायवा इत्थय ।

तेसु णिदरिसण इम –

जे भिकवू पचराइदिय पडिसेवित्ता आलोएज्जा ।

अपलिउचिय आलोएमाणस्स पच राइदिय ।

पलिउचिय आलोएमाणस्स सपचराइ मासिन दसग ।

एव दस पण्णरस वीस पणुवीसराइदिएसु वि सव्व भाणियव्व ।

एव बहुसाभिलावेण भाणियव्वा, एतेसु वि सजोगे सुत्ता भाणियव्वा ।

एव सामण्णतो भणितेसु पच्छा उग्धाताणुग्धायमूलुत्तरदप्पकप्पेसु अट्टु सहस्सा चत्तारि सया य बत्तीससहिता पुव्वभिहाणेण अणूणमडरित्ता कायव्व, एत्थ पणगादिराइदिया मासदुमासा दिएहि सह ण चारेयव्वा, जम्हा उव्वरि पचमासातिरेगमुत्त भणिहि, त च सातिरेग पणगादि सजोगा भवति, स सयोगसूत्रैव भविष्यतीत्यर्थं ।

एत्थ चोदगो सगलबहुमसजोगमुत्तेसु विगोवितमती भणति – “णणु बहुसमुत्तावत्तिट्ठुमासादिसुत्ता भणिया, अहवा – जत्थ परट्ठाणुडुड्डी दिट्ठा तत्थ दुमासादिया आवत्ती भवतीत्यत्र निदरिसण जहा एत्थेव दसमुट्ठे सगे लतियसुत्ते ति विहे तवगेलणद्धाणे असथडे भणिय ।

एग दुग तिणिण मासा, चउमासा पचमासा छम्मासा ।

सव्वे वि होति लहुगा, एगुत्तरबुद्धिता जेण ॥

एव दुमासादिया एने आवत्तिसम्भवातो भवतीत्यर्थं । अहवा जम्हा बहुसु मासिएसु अपलिउचिय आलोएमाणस्स मासिय चैव दिट्ठु, दुमासादिएसु वि अपलिउचिय आलोएमाणस्स दुमासातिया चैव, तम्हा वा दुमासादिसुत्ता पुढो कया, ता य आवत्तीओ एगादिदोमासदुट्ठुदव्वाभावमकिलेसाओ वा भवति ।

तस्य द व सागारियपिडे मासिय, सागारियपिडे हड दोमासिय, सागारियपिडाहडउदउल्ले तेमासिय
सागारिण पिडुहमियउदउल्लाहडे चाउम्मासिय, सागारियपिडुहमिय उदउल्लाहडे पुढविमचित्तपरपरणिबिखत्ते य
पवमामिय, तम्मि चव वयणसथवसुत्ते छम्मासिय ।

भावतो मदति वनरञ्जवसाण पडिमेवणातो मासदुमामादी भावत्तीतो भवति, ग्रहवा - भावओ
डमा चउभगासेवणा

ज भिक्खू मामिए मासिय, मामिए अणगमासिय ।

अणगमानिए मामिय, अणगमामिए अणगमासिय ।

एव मामस्म दुमासादिट्ठाणेहि वि सह चउभगा कायव्वा ।

पच्छा दुमासादियाण वि सट्ठाण-परट्ठाणेहि चउभगा कायव्वा ।

एत्थ पणरस चउभगा भवति ।

पढमचउभगे बितियचउभगादिसु सीसो इम पुच्छति -

जहमण्णे बहुमो मामियाइ सेवित्तु बुड्ढी उवरिं ।

तह हेट्ठा परिहायति, दुविह तिनिहं च आम ती ॥६४२३॥

दुविहं च दोसु मासेसु मासो जाव सुद्धो तिविहं च ।

तिसु मासो जाव सुद्धो चसदा चतुसु पंचसु छसुत्ति एमेव ॥६४२४॥

“जह” ति जेण पगारेण ग्रह मण्णामि - चित्तेमि ति (ग्रह) मासिय पडिसेवेत्ता बहुमो मासियाइ
सट्ठाणे पावति ति वुत्त भवति, एव मासिय सेवित्ता उवरि एयुत्तरबुड्ढी एग दुग ति चउ जाव पारचिय
पावति ति मण्णामि । किं वा ह मण्णे ‘तह’ ति एतेण पगारेण मासिय पडिसेवित्ता भिण्णमासादी ‘हेट्ठा’
ति परिहाणी भवति जाव “पणम” ति, ग्रहवा - पारचिये ‘हेट्ठा’ ति परिहाणी जाव पणम ति,
“दुविह” ति एव दोमासियाठाणे वि पडिसेवित्ते उवरि बुड्ढी जाव पारचिय पावति, हेट्ठाओ वि मासादिपरि-
हाणी जाव पणम ति, पारचियाओ जाव पणम ति, तिविह चेति तिसासिए एव उवरिहत्ती बुड्ढी हेट्ठाहुत्ति य
परिहाणी भाणियव्वा, चसदाओ एव सब्वपच्छित्तठाणसु कायव्व ।

आयरिओ भणति - “आम” ति,, आमशब्द यनुमतार्थो द्रष्टव्य ॥६४२४॥

पुणरप्याह चोदक -

केण पुण कारणेण, जिणपण्णत्ताणि काणि पुण ताणि ।

जिण जाणंते ताडं, चोदग पुच्छा बहुं गाउं ॥६४२५॥

चोदगो पुच्छति - केण कारणेण मासादीठाणे पडिसेवित्ते पच्छित्तस्स बुड्ढी हाणी वा भवति ति ।

आयरिओ भणति - जिणपण्णत्ताणि बुद्धिहाणि भावकरणाणि ।

सीसो पुच्छति - काणि पुण ताणि भावकरणाणि ।

आयरिओ भणति - रागदोषाणवस्वरिबुड्ढीए मामियठाणपडिसेवणाते वि पच्छित्तबुड्ढी भवति,
पच्छा वा हरिमायतस्स पच्छित्तबुड्ढी भवति सिंहव्यापादकस्येव । तेसि चव रागदोसादिहाणीए पच्छित्ते
वि हाणी दट्ठ्वा, पच्छा व हा दुट्ठक्तादीहि भवति, शृगालव्यापादकस्येव ।

पुणो नोदको पुच्छति — जे मासिगादिठाणा पच्छिता ते आलोयकमुहाता चेव जे पुण रागादि भाववडिदण्णिफ्फणा ते कह उवलम्भति ?

आयरिओ भणइ — जिणा जाणनि ताद, ते य जिणा केवलि-ओहि-मणपजव-चोहस दस णवपुव्वी य, एते गियमा जाणति — रागादिएहि जहा बुड्ढी हाणी वा भवनि, ज वा पच्छित्तमावण्णो जेण वा विसुज्झति पणगावत्तिट्ठाणपडिमेवण, ए वि जाव पारचिय देनि, पारचियावत्तिठाणपडिसेवि ए वि परिहाणीए जाव पणग देति ।

पुणो चोदगाह — जे छउमत्था कप्पकप्पववहारघारी ते कि न जाणति ?, बुड्ढिहाणिणिफ्फणा वा पच्छित्त कह वा जाणति ?

आचार्याहि — ते वि जाणति तदुवड्ढसुयणाणप्पमाणतो तिकवुत्तो आलोयावेउ मासियमावण्णो बहुसु वा मासिणसु मासिय चेव देति ।

एत्य पुणो चोदग पुच्छा — ‘बहु मासिय’ ति ज भणह, एयमह णाउमिच्छामि ॥६४२५॥

आचार्याहि —

तिविहं च होइ बहुगं, जहण्णगं मज्झिमं च उक्कोसं ।

जहण्णेण तिण्णा बहुगा, पंचमयुक्कोम चुलसीता ॥६४२६॥

जे सुत्तणिबद्धा मासिया ते पडुच्च बहु तिविह जह्वमज्झिमुक्कोम, तत्थ जहण तिण्णि मासा, उक्कोसेण पचमाससया चुलसीया, जे पुण चउरादी ठाणा पचसया तेसीया, एय मज्झिम बहु ॥६४२६॥

इदाणि जहा पच्छित्त दिज्जति तहा भणति, तहा मासिकादि जाव छम्मामा ताव विणा ठवणारोवणाए सुणेण व दिज्जंत, सत्तमासिगादिगा पुणो मज्झिमा पच्छित्ता ।

उक्कोस च जहा दिज्जति तहा दमेहि दारेहि भणति —

१ २ ३ ४ ५
ठवणासंचयरासी, माणाड पभू य केत्तिया सिद्धा ।

दिट्ठा णिसीहनामे, सच्चे वि तहा अणाचारा ॥६४२७॥ दार

‘ठवणासचय’ ति दार, ठविज्जतोति ठवणा, ठवणगह्णाओ य आरोवणा एत्थ गहिता, आ मज्जायाए रोवणा मासादि जाव छम्मामासियादाण मित्यर्थ ।

“सचय” ति ठवणारोवणापगारेहि अण्णोणमासेहितो दिण्ण सचिणितो जम्हा छम्मासा दिज्जति तम्हा छप्प मासाण सचय ति सण्णा । अथवा — “सचय” ति ठवणारोवणाहि जे सचयमासा लद्धा ते ठवणारोवणप्पगारेण छम्मासा काउ दावन्वा ॥६४२७॥

इमेसि पुरिसाण —

बहुपडिसेविय सो या-वि अगीओ अवि य अपरिणामो वि ।

अहवा अतिपरिणामो, तप्पचचयकारणा ठवण ॥६४२८॥

जेण अगीयत्थपुरिमेण बहुमासिठाण पडिसेवित अण्ण च अपरिणामगो अथवा — सो चेव अमीयत्थो अतिपरिणामगो, एतेम दोह वि पुरिसाण पचचयकारणत्थ ठवणारोवणप्पगारेण छम्मामासियपच्छित्त दिज्जति ॥६४२८॥

जे पुण एतेसि पडिवक्खभूता पुग्गिस्स तेसि णो ठवणप्पगारेण दिज्जति ।

जअो भण्णति -

एगम्मिऽणगदाणे, येगेसु य 'एगणेगणेगा वा ।

ज दिज्जति तं मेण्हति, सीयमगीओ तु परिणामी ॥६४२६॥

च उभयत्रिगणेषु पच्छित्तानपढमभगे इमे गीयो अगीयो परिणामगो अपरिणामगो अतिपरिणामगो य सव्वे सम्म पडिवज्जति, दितियादिभगेसु गीतो अगीतो वा परिणामगो एते दो वि ज जहा दिज्जति त तहा सम्म पडिवज्जति ।

चोत्साह - 'पच्छिमो णणु पढममग्गिओ जत्तो अणगेसु अणगेगा चेव दिण्णा सव्वे इत्यर्थ' ।

आचार्याह - ण 'व सुणेहि - जह महनधण्णरासीतो कस्स ति धण्णकुडवे दायव्वे, ज तत्थ कुडवे ठाति त दिज्जति, ज तत्थ न मायति त पस्मिडड, एव सत्तादिमासपडिसेवणाए सत्तादिमासो चेव दिज्जति छम्मा साहिय पडिसाडित्ता 'अणेग' ति छम्मासा दिज्जति, अववादओ चउवुट्ठीए पचमासा दिज्जति, एव णो पढममग इत्यर्थ ॥६४२६॥

अगीतो जो अपरिणामगो सो ततियभगे इम आसकेज्ज -

बहुएसु एगदाणे, सो च्चिय सुद्धो ण मेसगा मासा ।

अपरिणते तु संका, सफला मामा कता तेणं ॥६४३०॥

जइ बहुसु मामिएसु पटिमेविणसु थेव एक्को मामो दिज्जति तो सो अगीतो अपरिणामगो चित्तेण मज्जिज्ज भासेज्ज वा ओ मे दिण्णो मामो सो सुद्धो, मेसा जे मामा ते मे न सुद्धा तेण तस्स गामकपरिहरणत्थ सव्वमासाण ठवणारोवणप्पकारेण सम-विमम दियसग्गहणेण सफलीकरण कय इत्यर्थ ॥ ४३०॥

वितियभगेसु ठवणारोवणमनरेण पच्छित्तदाणेण इमे दोसा -

ठवणामेत्तं आरोवण ति इति णाउमतिपरिणामो ।

कुज्जा तु अतिपमंगं, बहुगं सेवित्तु मा वियडे ॥६४३१॥

"ठवण" ति असम्भावठवणा, "मात्रा" क इ तुल्यवाची, असम्भावठवणाए तुल्य अपरमार्थभूत ज त भण्णति ठवणामेत्त, त च "आरोवण" ति इति उपप्रदर्शने, एव अतिपरिणामगो चित्तेज्जा भासेज्ज वा । अधवा - अकप्पमेवगाण वा एगम करेज्ज, आउट्टियाण वा बहुमासादिशेण सेवित्ता आलोएज्ज, जम्हा वितियभगे बहु पच्छित्त ततियभगे थेव इत्यर्थ । जम्हा एते दोसा तम्हा ठवणारोवणप्पगारेण सव्वे मासा सफल करेत्ता छम्मासे जिज्जा से ॥६४३१॥

इदाणि ठवणारोवणप्पगारो भण्णति ।

तस्सिमे चउरो भेदा -

ठवणा वीमिग पक्खिग, पंचिग एगाहिता य णायव्वा ।

आरोवणा वि पक्खिग, पंचिग तह पंचिगेगाहा ॥६४३२॥

ठवणाठाणा चउरो, तेसि आइभेदा इमे — वीसिया ठवणा, पक्खिया ठवणा, पचिया ठवणा, एगाहिया ठवणा । आरोवणा वि पक्खियारोवणा, पचियारोवणा, एगाहिया य आरोवणा ॥६४३२॥

ण णज्जए का आरोवणा, काय ठवणत्ति, कस्स जाणणत्थ इम भण्णत्ति —

वीमाए अद्धमाम, पक्खे पचाहमारुहेज्जाहि ।

पचाहे पचाहं, एगाहे चेव एगाहं ॥६४३३॥

वीमाए ठवणा पक्खिआदी आरोवणा, पक्खियाए ठवणाए पविधादी आरोवणा, पचियादी ठवणाए पचियादी आरोवणा, पक्खियाए ठवणाए एगाहियादि आरोवणा ॥६४३३॥

जहण्णुक्कोमदरिसणत्थ इम भण्णइ —

ठवणा होति जहण्णा, वीसं राइंदियाइ पुण्णाइ ।

पण्णं चेव सयं, ठवणा उक्कोसिया होति ॥६४३४॥

सव्वजहण्णा ठवणा वीम राइदिया, ततो अण्णा ण्णवीसइ राइदिया, ततो अन्ना तीस राइदिया, एव पच पच बुद्धीए णेयव्व जाव तीमइमा उक्कोसिया ठवणा पण्णइ राइदियसत्त, ॥६४३४॥

एव आरोवणाए वि इमाओ —

आरोवणा जहण्णा, पनरसराइंदियाइ पुण्णाइ ।

उक्कोमं सट्ठसय, दोहि वि पक्खेवओ पच ॥६४३५॥

“दोहि वि” ति ठवणामु पच पच उत्तर वरेतेण जहण्णाओ उक्कोमा पावेयव्वा इत्यथ ॥६४३५॥

आदियाण तिण्ह ठवणारोवणाण इम उत्तरलक्खण —

पंचण्हं परिवुद्धी, ओवद्धी चेव होति पचण्ह ।

एतेण पमाणेणं, नेयव्वं जाव चरिमं ति ॥६४३६॥

जो पुण एकिया ठवणारोवणाओ तेसि उत्तर एक्को चेव परिठरति, उवरुवरि बुद्धि उत्तर आवद्धि ति तीसतिमाओ ठाणाओ हेट्ठा पच्छाणुपुब्बीए हाणी जाव पढमठाण ति । एतेण पचणेण वा प्रमाणेण ताव णेयव्व जाव चरिम ति, पच्छिमा ठवणारोवणातो उक्कोसा इत्यथ । एक्केक्के ठवणाठाणे उक्कोसारोवणा जाणियव्वा ॥६४३६॥

लक्खण इम —

जाव ठवण उदिट्ठा, छम्मासा ऊणगा भवे ताए ।

आरोवण उक्कोसा, तीसे ठवणाए णायव्वा ॥६४३७॥

छण्ह माराण असीय दिवससत्त भवन्ति, त ठवेत्ता पच्छा जाए ठवणाए पत्यइ अतिल्ल आरोवण जाणियत्तए त इच्छियठवण असीताओ दिवससयाओ सोहेज्जा, ज तत्थ मेम सा तीसे ठवणाए उक्कोसा आरोवणा भवतीत्यर्थ । जहा वीसियठवणा असीयसतातो मुच्चा सेम सट्ठ सत्त, त वीसितठवणाए उक्कोसिया आरोवणा, पक्खिया से जहण्णा । सेसाओ से अट्ठावीम अजहण्णुक्कोसा भवति । एव असीतातो सत्ताओ पणुव्वीसिया ठवणा सोहिया सेस पणपण सय पणुव्वीसियाए ठवणाए उक्कोसिया आरोवणा भवति, वीसिया से जहण्णा । सेसाओ से सत्तावीसमजहण्णुक्कोसिया । एव तीसादिसु वि उक्कोसारोवणलक्खण णयव्व ॥६४३७॥

इदार्णि उक्कोसठवणालक्खण -

आरोवण उदिट्ठा, छम्मासा ऊणगा भवे ताए ।

आरोवणाए तीमे, ठवणा उक्कोसिया होति ॥६४३८॥

जहा पक्खिता आरोवणा असीतातो सताआ सुद्धा, सेम पणसट्ठ सत त पक्खियआरोवणाए उक्कोसा ठवणा भवति, बीसिया से जहण्णा, सेम अट्ठावीस अजहण्णुक्कोसा भवति ।

एव बितिए आरोवणाठाणे आढत्ते अतित्त तिसइम ठाण फिट्ठति ।

ततिए आरोवणाठाणे आढत्ते एण्णतीसतिम ठवणाठाण फिट्ठति, एव एकैक्के उवरि उवरि आरोवणाठाणे ठवणाण ओवड्डीए एकैक्के ठाण हुसेजा, जाव सट्ठिमयारोवणाए बीसिया चेव एक्का ठवणा भवतीत्यथ ॥६४३८॥

पढमे ठवणारोवणाठाणे ठाणसखा इमा -

तीस ठवणाठाणा, तीसं आरोवणाए ठाणाई ।

ठवणाणं संवेहो, चत्तारि सया य पण्णडा ॥६४३९॥

तीस ठवणादि काउ पच्चुत्तरवुड्डीए जाव पणसट्ठमत ताव तीस ठवणाठाणा भवति, आरोवणासु वि पण्णरमाइ काउ पच्चुत्तरवुड्डीए चेव जाव सट्ठिसय ताव तीम चेव आरोवणाठाणा भवति, एतेसि ठवणारोवणाण परोप्पर “सवेहो” त्ति सजोगा, तेम सजोगाण सखा इमा - चत्तारि सता पचसट्ठा भवति ।

कह ? उच्यते - बीसियठवणाए पण्णरमादियारोवणाठाणा जाव सट्ठ पय ताव छम्मासाणयण-करण कज्जति ।

एव बीसियठवणाए तीस आरोवणमवेहा भवति ।

एव पण्णवीसियठवणाए पण्णरसादिया आरोवणाठाणा गेयक्वा, जाव पणपण्णमयारोवण त्ति, एत्थ एक्क आरोवणाठाण हुसित ।

एव तीसियठवणाए पण्णरमादि णेया जाव पण्णाभ सत, एत्थ दो आरोवणाठाणा हुसिता ।

एव उवरिठवणाए आरोवणा ओवड्डीए एकैक्के ठाण हुसेजा, जाव पणसट्ठमयठवणाए एक्का चेव पण्णरसिया आरोवणा भवतीत्यर्थ ॥६४३९॥

एयस्स ठवणारोवणमवेहुम्म मवग्गफलाण य णिमित्त आयरिएहि इमो सुहुमो सेदिग्ग उवाओ उदिट्ठो -

गच्छुत्तरमंवग्गे, उत्तरहीणम्मि पक्खिखे आदी ।

अंतिमयणमादिजुय, गच्छद्वगुण तु सव्वयण ॥६४४०॥

एतीए गाहाए इमा परिभासा गणियकरण च, जम्हा पढम आरोवणाठाण मवेहुओ एक्क लभति तम्हा त चेव एक्क आदी, जम्हा एककुत्तरवड्डीए बितियादिआरोवणाठाणा सव्वे लभति तम्हा पढमठवणाए उत्तर पि एक्को चेव, जम्हा य पढमठवणाठाणवुड्डीए तीस ठाणा भवति तम्हा पढमठवणाए तीस गच्छो ।

बितियाए ठवणारोवणाठाणे तेत्तीस गच्छो ।

ततियाए ठवणारोवणाठाणे पणतीस गच्छो ।

चउत्थे ठवणारोवणाठाणे अउणासीत सय गच्छो ।

एतेमि गच्छाण इमो आणयणोवाओ — ठवणारोवणविजुत्ता छग्गामा पचभागभत्तीया जे रूपपुत्ता ठवणापदा तेसु चरिमादेसभागिकको । छग्गामादिवसाण असीतमय त पढमेहि ठवणारोवणदिवसेहि विजुत्ता कज्जति, सेसस्स पचहि भागो हीरइ जे तत्थ लद्धा ते रुवजुत्ता कग्ग, जावनियाते एवतिया पत्तेय ठवणारोवणपदा भवति । एत करण आदिल्लेसु ठवणारोवणठागेनु । चरिमे पुण ठवणारोवणठागे एसेव आदेसो, णवर एक्केण भागो हायव्वो ति ।

इदाणि गणियकरण एक्को आदी, एक्को उत्तर, तीम गच्छो । गच्छो उत्तरेण सविग्गउ त्ति — गुणितो तीमा चेव जाना “उत्तरहीणे” ति — तीमाओ एक्को उत्तर पाडित जाया अउणत्तीसा । तम्मि आदि पक्खित्ता एक्को जाना तीमा चेव, एव वीसियाए ठवणाए, अत धण सह आदिल्लेहि लद्ध ति वुत्त भवति । आदी एक्को सो तीमाए पक्खित्तो जाना एक्कनीमा । ‘गच्छद्ध’ पण्णरस तेहि गुणिया एक्कनीसा जाना चत्तारि य मया पण्णट्ठा, पढमे ठवणारोवणट्ठाणे त सव्वधण ति । ॥६४४०॥

अथवाऽयमन्यो विकल्प —

दो रामी ठावज्जा, रुवं पुण पक्खिवेहि एगत्तो ।

जुत्तो य देइ अद्धं, तेण गुण जाण सकलियं ॥६४४१॥

दा रामि ति णवरि हेट्ठा य, तीसे ठवियाए एक्कत्थ रुव पक्खित्त जो रासी तत्थ “अद्ध देति” — तम्म अद्ध वेत्तत्थ तेणद्धेण इतरो रासी गुणेयत्थो, एव वा सव्वमवेवफल देति ॥६४४१॥

इदाणि सव्वट्ठवणारोवणाण दिवसमासाण य लक्खण सव्वानुवातो भणति —

दिवसा पचहि भतिता, दुरुवहीणा हवन्ति मासाओ ।

मासा दुरुवसहिता, पचगुणा ते भवे दिवसा ॥६४४२॥

अम्याअं — “दिदम” ति वीसियठवणा दिवसा पण्णरमादियारोवणादिवसा य ।

इम णिदरिसण — वीसियाए ठवणा पचहि भाए हिते भागलद्धा चत्तारि, तातो दोण्णि रुवा ठेडिया जाया दोण्णि मासा, पण्णरसियाए आरोवणाए पचहि भागेहिते भागलद्धा तिण्णि मासा ते दुरुवहीणा हया जाओ एक्कमासो ति — ।

इम दिवसलक्खण — एते वि य मासा लद्धा ते दुरुवसहिया काउ पचगुणा कायव्वा, ताहे मासेहितो दिवसग्ग पुण्विल्लपमाणसम आगच्छइ, एव सेमासु वि सव्वासु ठवणारोवणासु कायव्व ॥६४४२॥

इयाणि जहा ठवणाहि छग्गामा काउ पच्छित्त दिज्जति तहा भणति

पढमा ठवणा वीसा, पढमा आरोवणा भवे पक्खो ।

तेरसहिं मासेहिं, पंच तु राइंदिया भोसो ॥६४४३॥

वीसियठवणा पण्णरमियारोवणाहि एयाओ कविहिं मासेसि सेविर्हं णिप्फणातो होज्ज ? दिट्ठ तेरसहिं,

कह ? उच्यते —

ठवणारोवणदिवसमाणाउ विसोहितु ज सेम । इच्छियारोवणाए भाए असुज्जमाणे खिवे भोसो । छग्गमासाण असीत दिवसत भवति, तओ वीसिया ठवणा पन्नरसिया य आरोवणा सोहेयव्वा, सेस

पणयालय, नयस्म पणरमियाए आरोवणाए भागो दायव्वो, जम्भो अद्ध भाग न देति तित्तोभोसो पक्खिव्वो, इम भोसपक्खेवलक्खण — “जत्तियमेत्तण मो सुद्ध भाग पयच्छए रासी, तत्तियमेत्त पक्खिव्व अकस्मिणरोवणाए भोसग्ग” । भोम त्ति वा समकरण त्ति वा एगट्ठ, एत्थ पच्चभोसा पक्खित्ता, पच्छा भागे हिते भागलद्ध दममा, एत्थ इम “वरणलक्खणग, हापुव्वद्धेण भणइ — आरोवणा जत्तिभी तत्तिहि गुणाते करेज्ज भागलद्धा । ज एत्थ “पढम” त्ति — आरोवणा ततो एक्केण गुणिता दव दस चेव भवति, एत्थ — ठवणारोवणासहिता सचयमामा हवति “एवतिय” त्ति — पुव्वभणितमासाण य करणेण ठवणाए दो मासा आरोवणाए एक्को मासो, एते त्सु पक्खित्ता जाया तेरस सचयमासा ।

इदाणि इच्छामो णाउ “कतो कि गहिय ? ति, ठवणासासे ततो फेडेइ” ।

सीमो पुच्छइ — तेरमण्ह मवयमासाण कि कतो मासाओ गहित जेण छम्मामा जाया ? कह, वा करण कत ?

भण्णति — तेरमण्ह मासाण दोण्णि ठवणासासा फेडिता, तत्थ सुद्धा सेमा एक्कारस मासा जाता, एत्थ करण इम — “२जत्तिसु ठवणाए मासतत्तियभाग करेड त्ति पच्चगुण”, एत्थ आरोवणाए एक्को मासो एक्कभागवत्त एक्कारस चेव ते त्तिपच्चगुण त्ति कायव्वा, तिण्णि य पच्च पणरम, तेहि एक्कारसगुणिता जाता पच्चमट्ठ सय, एत्थ दोण्णि ठवणासासा पुव्वकरणेण दिवसे काउ पक्खित्ता बीस, जात पचासीत सय, एत्थ पच्चरइदिया भोसो कम्भो, सेस असीय सय ।

अट्ठा — किञ्चि विसेसेण य चेव अट्ठण्णहा भण्णति — तेरमण्ह सचयमासाण इच्छामो णाउ एक्केक्काओ मासाओ कि गहिय जेण छम्मामा ? जता भण्णति — तेरमण्ह मासाण तिण्णि ठवणारोवणामामा फेडिता जाता तत्थ सुद्धा सेमा दस मामा, एग्हितो एक्केक्काओ मासाओ अद्धमासो अद्धमासो गहितो, एते पच्च मासा, दोहि ठवणामामेहितो दम दम रा दिया गहिता, आरोवणासासो एक्को, ताओ पक्खो गहितो, पच्च भोसो कम्भो । क प्रत्यय ? एत्थ गाहा — “३जइमि भवे आरुवणा” गाहा, एसा पढमठवणा, पढममण्ण करणलक्खण भणिय, आरोवणभागलद्धमासाण पणरसहि गुण्यव्वा, ते दस मासा पणरसहि गुणिता जाया पण्णासुत्तरमत्त, एत्ततो पच्चज्जामा सोहितो सेम पणयाल सत्त । एत्थ ठवणारोवणादिवसा पक्खित्ता जाय असीय सय ॥६४४२॥

पढमा ठवणा बीसा, वितिया आरोवणा भवे बीमा ।

अट्टारम मामेहि, एसा पढमा भवे कसिणा ॥६४४४॥

एसा ठवणारोवणाओ असीयसयाओ सोहिया सेस चत्तालीससय, एयस्स बीसियाए आरोवणाए भागे भागलद्ध सत्त मासा आरोवणा, पुव्व करणेण “दोहि मासेहि णिप्फण” त्ति काउ सत्तमासा दोहि गुण्यव्वा जाता चोदसमासा, “दिवसा पचहि भइया” गाहा ॥६४४३॥

एतेण करणेण दो ठवणासासा दो य आरोवणमासा णिप्फणा एए चत्तारि वि चोदसण्ह मेळित्ता जाता अट्टारस मासा, कसिणा णाम जत्थ भोसो णत्थि । “कातो मासातो कि गहिय” त्ति एत्थ लक्खण जत्ति एक्कातो मासातो णिप्फणा आरोवणा तो सेवियमासेहितो ठवणारोवणमापा सोहेयव्वा, अह दुमादि-मासेहितो णिप्फणा आरोवणा तो सेवियमासेहितो ठवणामा चेव सोहेयव्वा णो आरोवणमासनि । इमा य वितियआरोवणा दोहि मासेहि णिप्फण त्ति काउ अट्टारसण्ह मासाण मज्झातो दोण्णि ठवणासासा सोहिता,

१ गा० आरुवणा जत्ति मासा तत्तिभाग त करेति पच्चगुण ६४८४ । २ गा० आरुवणा जइ मासा, सइभाग त करेति पच्चगुण ६४८४ । ३ गा० ६४८५ ।

सेसा सोलस मासा । 'दोहि मासेहि आरोवणा णिप्फण' ति काउ सालस दुहा कायव्वा, एक्को अट्ठो उवरि बितिओ अट्ठो हेहा ।

किं कारण एव कज्जति ? उच्यते जज्जा इम भण्णति -

“जतिभि भवे आरवणा, तति भाग तस्स पण्णरसहि गुणिए ।

मेम पव्हि गुणिए, ठवणदिणजुत्ता उ छम्मासा” ॥

पढमातो अट्ठमातो पक्खो पक्खा गहितो बितियाओ अट्ठमातो पच पच राइदिया गहिता, ५वणामामेहितो दस दस राइदिया गहिता ।

क प्रत्यय ? उच्यते - ‘जइमि भवे आरवणा’ गाहा जे सचयमासातो ठवणामाससुद्धा जइवी आरोवणा आरोवणातो वा जति मामा णिप्फणा ततिभाग कज्जति बितियआरोवणा दो वा आरोवणामास ति तेण सोलसमासा दुहा कना अट्ठ एत्थ एक्कम्मि अट्ठे पण्णरसच्छित्तरादिनागहिय ति पण्णरसगुणो कतो उ जान वीसुत्तर सय । बिनियहुमाओ पच पच गहिय ति पच गुणिनो जातो चत्तालीसा चत्तालीसा वीसुत्ते सते पक्खित्ता जात सट्ठसय, एत्थ अवणीय ठवणमासाण दोह् दस दस राइदिया गहिय ति ने वीस पक्खित्ता जाय असीयसय ॥६४४॥

पढमा ठवणा वीमा, ततिया आरोवणा उ पणुवीमा ।

तेवीसा मासेहि, पक्खो तु तहिं भवे भोमो ॥६४४५॥

एयाओ ठवणागेवणाओ असीयसताओ सुद्धा, मेस पण्णीस सय । एयस्स पणुवीसागेवणाए भागो हायव्वो, जम्हा सुद्ध भाग ण देनि तम्हा पक्ख पक्खिवित्ता भागलद्धा छम्मासा, तिहिं मासेहि आरोवणा णिप्फणा तम्हा छम्मामानिगुणा कना जाया अट्ठारस मासा, ठवणारोवणमासपुव्वकरणेण उप्पाएत्ता तथेव पक्खित्ता जाता तेवीस सचयमासा ।

एत्थ इच्छामो णाउ “कतो मामाओ कि पच्छित्त गहिय” ? उच्यते - सेवितमामेहितो दो ठवणामामा सोहिया, मेमा एक्कवीस मासा, एने तिहा ठविज्जति तिन्निमत्तगा पूजा कया तत्थ पढमपूजातो पक्खो पक्खो गहितो, असेहि दोहि सत्तगपुजेहि पच पच राइदिया गहिया । दोहि ठवणामासेहितो दस दस राइदिया गहिया । क प्रत्यय ? पढममत्तग पण्णरसगुण काउ पक्खो सोहेयव्वो मेम णउती, सेसा दो सत्तगपूजा मेलिया चउदस भवति, एते चोदस पचगुणिया सत्तरी हवति, सत्तरी णउतीए मेलिया सट्ठ सत भवति, एत्थ वीस ठवणादिवसा पक्खित्ता ज त अमीत सत ॥६४४५॥

एव एया गमिया, गाहाओ होति आणुपुव्वीए ।

एएण कमेण भवे, चत्तारि मया उ पन्नट्ठा ॥६४४६॥

एव वीमियठवण अमुयतेण उवरवरि आरोवणाए पच पच पक्खिवतेण णेयव्व जाव अतिमा आरोवणा, एयामु इम करणविहाण कायव्व - असीयातो दिवससयाओ ठवणारोवणदिवसा सोहेयव्वो, पच्छा सेसस्स इच्छिआरावणाए भागो हायव्वो, जइ सुद्ध भाग ण देइ तो जावति ण सुव्वइ तावतिओ भोसो पक्खियव्वो पच्छा भागेहित भागलद्धा मासा जइहि मासेहि आरोवणा णिप्फणा ततिहि य भागलद्धा मासा गुणयव्वा, ठवणारोवणमासा तथेव पक्खियव्वा । एव पडिसेवणामासग जाणियव्व । एत्थ ज इच्छति णाउ कतो मासाओ कि गहिय त हे सचयमासेहितो ठवणा सोहिता सेसा जे मासा ते जइहि स मेहि आरोवणा णिप्फणा तइए पुजे वरेंति, तेसु एक्कातो पूजातो अट्ठमासो अट्ठमासो गहिओ, त पुण पण्णरसहि गुण, सेसा जे पन्ना ते एक्केहि मिलित्ता तसु एक्केक्कातो मासातो पच पच राइदिया गहिया, एव सव्वत्थ

ब्रेयलेउ कायन्व, एते दिना मामीकता परोपरमामाण मेलियव्वा, जइ भोसो पक्खित्तो तो मोह्यव्वो, ठवणामासा एत्थेव पक्खियव्वा एव छम्मासा भवति ।

क प्रत्यय ? पडिमेवणाणिमित्त जातो पुजातो अद्दमामो गहिओ त पुज पण्णरसहि गुणिते मेसा पुजा एक वा जावतिय गट्ठिय तात्रनिग्गण गुणेत्ता तत्थेव पक्खियव्वो, जति भोसो पक्खित्तो तो सोह्यव्वो, मेसठवणामासो दुक्खसहिओ काउ पचहि गुणेत्ता ते दिवसा पक्खियव्वो ।

एव असीत दिवससत्त भवति ।

एव पग्गुनीसियाए ठवणाए पक्खिआदिआरोवणातो कायव्वातो जाव पणपण सत्त ।

एव तीमियाए वि ठवणाए पक्खियादियारोवणाओ जाव पण्णास सत्त भवति ।

एव ठवणाओ पणगवड्ढीए णेयव्वाओ जाव चरिमट्टवणा आरोवणाओ पुण पणगहणीए हावियव्वाओ जाव पक्खिया आरोवण ति । एयाआ सव्वाओ एतेण पुव्वभणियलक्खणेण पुहत्तिया काउ चत्तारि सया पण्णट्ठा गाहाण कायव्वा ॥६४६॥ इति पढम ठवणारोवणट्ठाण सम्मत्त ।

इदाणि वितिय ठवणारोवणट्ठाण भण्णति—

दो रामी ठावेज्जा, रूवं पुण पक्खिवेहि एगत्तो ।

जुत्तो य देइ अद्दं, तेण गुणं जाण संकलियं ॥६४७॥

तेत्तीमं ठवणपदा, तेत्तीसारोवणाए ठाणाइं ।

ठवणाणं मंवेहो, पंचेव सया तु एगट्ठा ॥६४८॥

कह तेत्तीस ठवणारोवणट्ठाणा भवति ?, उच्यते असीयातो दिवससत्तातो पढमा पक्खिया-
ठवणा, पढमा य पचिया आरोवणा, एया सोहेत्ता सेसस्स पचहि भागो, भागलद्ध बत्तीसा, तत्थ रूव पक्खित्त
गुणिय भवति, एस गच्छो एक्को आदी एक्को उत्तर “गच्छुनर” गाहा ॥ (३० २०—६४४१) पूर्ववत् ॥
तेत्तीस काउ पचसया एक्कमट्ठा भवति ॥६४४८॥

पढमा ठवणा पक्खो, पढमा आरोवणा भवे पंच ।

चोत्तीमा मासेहिं, एस पढमा भवे कसिणा ॥६४४९॥

असीयाओ सयाओ एया ठवणारोवणाओ सोहेत्ता सेसस्स पचहि भागो, भागलद्ध बत्तीस मासा,
आरोवणा एक्काओ मामाओ णिप्फण्णति काउ एक्केण गुणिया, एत्तिया चेव, पण्णरसियाए ठवणाए
पचहि भागो भागलद्ध तिणि मासा, ते दुक्खहीणा कया जाय एक्को मासो । पचियाए वि आरोवणाए
पचहि भागो भागलद्ध एक्को मासो, एत्थ णत्थि दुक्खहीण तहा वि एत्थ मासो चेव वेप्पति, एए दो वि
ठवणारोवणामासा बत्तीसाए मेलिया जाया चोत्तीस मासा ।

इच्छामो नाउ कत्तो कि गहिय ?, बत्तीसाए मासेहिं पच पच राइविया गहिया, ठवणारोवण-
मासेहिं ठवणारोवणदिवसा गहिया ।

क प्रत्यय ?, बत्तीसमासा पचहि गुणिया काउ ठवणारोवणादिवसा पक्खित्ता असीय सत्त
भवति । एक्क वा ठवणामास फेडित्ता तेत्तीस पचगुप्पा कायव्वा, ठवणादिवसजुत्ता य छम्मासा भवति
॥६४४९॥

पढमा ठवणा पक्खो, वितिया आरोवणा भवे दम उ ।

अट्टारसहिं मासेहिं, पच य राडंदिया भोमो ॥६४५०॥

असीयातो सयाओ एयाओ ठवणारोवणाओ सोहेत्ता मेसे पच भोमे पक्खित्ता दसियाए आरोवणाए भागो भागलद्ध सोलस मासा, आरोवणा एक्कातो मासाता णिप्फण त्ति काउ एक्केण गुणिय जाता सोलस चेव, पणरसियाए ठवणाए पचहिं भागो भागलद्ध निणि दुल्लवहीणा कया जातो एक्को मासो, दसियाए आरोवणाए पचहिं भागो भागलद्ध दोणि, जत्थ दुल्लवहीण न होइ आगास वा भवति तत्थ वि (एक्को मासो नायव्वो, तेण एत्थ वि एक्को मासो, एते दो वि ठवणारोवण मासा सोलसण्ह मेळित्ता जाता अट्टारस मच्चयमामा ।

कतो मासाओ कि गहिय ? अट्टारसण्ह म सण सोलसहिं मासहिं तो दस दम राडंदिया गहिया, ठवणारोवणमासेहिं तो ठवणा दिवसा गहिता ।

क प्रत्यय ? सोलस मासा दस गुणा काउ, पच उ भोसो सोहियव्वो, सेसा ठवणारोवणदिवसा पक्खित्ता जाय असीय सय ।

अहवा — अट्टारसण्ह एक्क वा ठवणामास फेडत्ता दसगुणा कायव्वा, भोसो पच साहियव्वो, ठवणादिण सहिता छम्मासा ढवति ॥६४५०॥

पढमा ठवणा पक्खो, ततिया आरोवणा भवे पक्खो ।

बारसहिं मासेहिं, एसा विनिया भवे कसिणा ॥६४५१॥

असीतातो सतातो एयाओ ठवणा सोहेत्ता सेम पन्नाम सय, एयम्स पणरसियाए आरोवणाए भागो भागलद्ध दस मासा, आरोवणा एक्काओ मासाओ णिप्फण त्ति एक्केण गुणिय एत्तिय चेव, एत्थ दोणि ठवणारोवणमासा पक्खित्ता जाता बारस मामा ।

कतो कि गहिय ? एक्केक्काओ मामाओ पक्खो गहिओ ।

क प्रत्यय ? बारस मासा पणरसहिं गुणिया जात असीय सत, एत्थ सव्वत्थ सम गहण ॥६४५१॥

एवं एता गमिया, गाहाओ होति आणुपुव्वीए ।

एएण कमेण भवे, पंचेव सया उ एगट्ठा ॥६४५२॥

एव पक्खिय ठवण अमुयतेण आरोवणाए उवव्वरि पच पच पक्खित्तेण आरोवणासु एक्केक्क ठाण परिहरितेण ताव गेयव्व जाव तित्तीसत्तिमा आरोवण त्ति । ताहे वीसिय ठवण अमुयतेण एव चेव गेयव्व जाव बत्तीसइमा आरोवणा । एव ठवणासु पच पच पक्खित्तेण आरोवणासु एक्केक्क ठाण परिहरितेण गेयव्व जाव पहोउयपुहत्तियकरणेण गाहाण पचसया एगमट्ठा जाता । मव्वत्थ जतीहिं मासेहिं आरोवणाणिप्फण ततीहिं भागलद्ध गुणेयव्व सेस उवउज्जित्ता भणियव्व ॥६४५२॥ बितियठवणारोवण सम्मत्त ।

इदाणि ततिय भण्णन्ति —

पणतीसं ठवणपदा, पणतीमारोवणाए ठाणाडं ।

ठवणाणं संवेहो, छ च्चेव सया भवे तीसा ॥६४५३॥

असीतातो सयाओ पचिया ठवणा पचिया आरोवणा य, एयाओ सोहेयव्वाओ, सेस सत्तरि सय, गयम्म पचहि भागा भागलद्ध चोत्तीस ख्व पक्खित्त जाय पणतीस, एक्को आदिण एक्कोत्तर पणतीसतो गच्छो । गच्छुत्तर गाहा (उ० २०, ६४४०) पूववत् गणिण आणेयव्वा छ मता तीमुत्तरा ॥६४५३॥

पढमा ठवणा पंच य, पढमा आरोवणा भवे पंच ।

छत्तीमा मामेहि, एसा पढमा भवे कसिणा ॥६४५४॥

असीतातो सयाओ पचिया ठवणा पचिया उ आरोवणा सोहिया सेस सत्तरि सत, एयस्स पचियाए आरोवणातो भागो, भागलद्ध चोत्तीस मासा आरोवणा एक्काओ माम्माओ णिप्फण त्ति काउ एक्केण गुणिय एत्तिय चेव, पचयाए ठवणाए पचहि भागलद्ध एक्को मासो, जत्थ दुरूवहीणा ण होति तत्थ उ हवति साभाविय त्ति य वयणाओ एक्क एव मासो भवति । एव आरोवणाए वि, देणिण मासा चोत्तीसाए मेलिता जाया छत्तीस मासा ।

काओ किं गहिय ? एक्केक्काओ मासाओ पच पच दिवसा गहिया एत्थ वि सव्वत्थ सम गहण ।

क प्रत्यय ? छत्तीमहि मासेहि पच गुणियव्वा जात असीय सत । अहुवा - छत्तीसण्ह मासाण क्को ठवणामासो फेडितो, सेसा पणतीस, ते पचगुणा ठवणदिवसजुता छम्मासा भवति ॥६४५४॥

पढमा ठवणा पंचा, वितिया आरोवणा भवे दस तू ।

एगूणवीस मासेहि पंच राइंदिया ओसो ॥६४५५॥

असीयातो सतातो पचिया ठवणा दसिया आरोवणा एतातो ठवणारोवणाओ सो सुद्धेत्ता सेस पणमट्ठि सय, एत्थ पचज्जोमो पक्खित्तो, जात सत्तरि सय, एयस्स दसियाए आरोवणाए भागो भागलद्ध सत्तरस मासा आरोवणा, एक्केक्कातो मामाओ णिप्फण त्ति काउ एक्केण गुणिय एत्तिय चेव, ठवणादिवसा पचहि भइया साभाविता मासो, आरोवणातो वि एक्को मासो, एते दो मासा सत्तरसण्ह मेलिता जाता एक्कोणवीस मासा ।

कतो किं गहिय ? ठवणामासातो पच राइंदिया गहिया सेसेहि अट्टारसहि मासेहि एक्केक्कातो मासाओ दस दस राइंदिया गहिता ।

क प्रत्यय ? अट्टारस दसगुणिता जात असीत दिवससत, एतातो पचतो ओसो सुद्धो, सेस पचसत्तरिसत, पच ठवणादिवसा मेलिता जात असीत दिवससत ॥६४५५॥

पढमा ठवणा पंचा, ततिया आरोवणा भवे पक्खो ।

तेरसहि मासेहि, पंच उ राइंदिया ज्जोसो ॥६४५६॥

असीतातो दिवसपतातो पचिय ठवण पण्णरसिय आरोवण एयाओ ठवणारोवणाओ सोहेत्ता सेस सट्ठि सय पच ओस पक्खिवित्ता पक्खित्तातो आरोवणातो भागो भागलद्ध एक्कारस आरोवणा, एक्काओ मासाओ णिप्फण त्ति काउ एक्केण गुणिय एत्तिय चेव पुव्वकरणेण ठवणारोवणमासे करेत्ता भागलद्धा दो मासा एते एक्कारमण्ह मेलिता जाता तेरस सव्वयमासा ।

कतो किं गहिय ? बारसमासेहि अट्ठमासो गहिओ तेरसमासातो ठवणामासाओ पच राइंदिया गहिता ।

क प्रत्यय ? बारस पण्णरसेहि गुणिता पच ओसेहि सोहेत्ता सेस पचहत्तर सत पच ठवणा दिवसा मेलिता जाय असीय सय ॥६४५६॥

एवं एत्ता गमिया, गाहाग्रो होति आणपुव्वीए ।

एएण कमेण भवे, छ च्चेव मयाइ तीमाइ ॥६४५७॥

एव पविय ठाण अमुयनेण आरोवणाए पच पच उवस्वन् पक्खित्तेण णेयव्व जाव पणतीसइमा आरोवणा, ताहे पुणो दमिय ठवण काउ एव चेव नयव्व जाव चउतीसइमा आरोवणा ।

एव ठवणारोवणासु पच पच पक्खित्तेण एक्केक्क ठाण परिहावेतेण नेयव्व जतीहि मासेहि आरोवणा णिप्फणा ततीहि भागलद्ध पुणेय व, सस उवउज्जित्ता णेयव्व ॥६४५७॥ तनियठवणारोवण ठाण गय ।

इदाणि चउत्थ भण्णति —

अउणासीतं ठवणाण मतं आरोवणाण तह चेव ।

सोलस चेव महस्मा, दसुत्तरसयं च मंहेहो ॥६४५८॥

कह ? उच्यते — अमीतातो दिवसमताग्रो पढमाठवणारोवणाग्रो एक्कियाग्रो सोहेयव्वाग्रो, सेस अट्टहत्तरस्मिन्, एयस्स एक्कियाए आरोवणाए भागो भागलद्ध एतिय चेव रुवेण पक्खित्ते अउणासीन सय भवति ।

इयाणि मवेहकरणे इमे भण्णति — ‘ गच्छुत्तर ’ गाहा, एक्को आतो, एक्को उत्तर, अउणासीय सत गच्छो, पूववत् गणिते कते आगन् सोलसहस्साणि सन् च दहुत्तर ॥६४५८॥

पढमा ठवणा एक्को, पढमा आरोवणा भवे एक्को ।

अमीतं माममत, एसा पढमा भवे कमिणा ॥६४५९॥

असीतातो सनातो एक्किया ठवण, एक्किया य आरोवणा सोहिता मेस अट्टहत्तरसत्त एक्कियाए आरोवणाए भागो भागलद्ध एतिय चेव । एत्थ एक्को ठवणामासो एगो आरोवणामासो पक्खित्ता जात अमीय माससत्त ।

काग्रो कि गहिय?, एक्केक्काग्रो मासाग्रो एक्को दिवसो गहितो, एत्थ वि सव्वत्थ समग्गहण ॥६४५९॥

पढमा ठवणा एक्को, वित्तिया आरोवणा भवे दोण्णि ।

एक्काणउतीमासेहि, एक्को उ तहि भवे भोसो ॥६४६०॥

एयाग्रो ठवणारोवणाग्रो अमीतातो सयातो माहेत्ता सेम सत्तहत्तरि सय एयस्स अट्टाए दुत्तियाए आरोवणाए भागो एक्क उभोस पक्खित्ता भागलद्ध ण्णुणणउत्तिमासा एत्थ ठवणामासो आरोवणामासो य पक्खित्ता जाता एक्काणउत्ति मासा ।

कातो कि गहिय ?, ठवणा मासा एत्थवि मव्वथाहतो एक्को दिवसो गहितो, णउत्तिमासेहि दो दो वि दिवसा गहिता ।

क प्रत्यय ?, सचयमासेहितो ठवणामासो फेडितो मेसा णउईतो दोहि गुणिया जाय असीय सय, एयातो एक्को सुद्धो सेस अउणासीत्त सत्त, एक्को ठवणादिवसो पक्खित्तो, एत्थ जाय असीत्त सत्त ॥६४६०॥

पहमा ठवणा एक्को, ततिया आरोवणा भवे तिन्नि ।

इगमट्टीमासेहि, एक्को उ तहिं भवेभोसो ॥६४६१॥

तहेव काउ जाव एक्कमट्टि सचयमामा ।

काओ कि गहिय ? उवणामासातो एक्केक्को दिवसो गहिओ, सेमेहि सट्टीए मानहि निणि
निणि राइ दिया गहिया ।

क प्रत्यय ? एक्कमट्टिमासहि एक्को ठवणामासो फेडितो मेमा सट्टि, ते तिहि गुणिता जात
असीय दिवसमत एक्को भोमा सुद्धो, नेस एगूणामोत मत, एक्को ठवणा दिवसो पक्खितो जाय असीय
सत ॥६४६१॥

एवं खलु गमिताणं, गाहाण होति सोलसमहम्मा ।

सतमेकं च दमहिय, नेयव्वं आणुपुच्चीए ॥६४६२॥

एव एक्किय ठवण अमुयतेण आरोतणाए उवस्वरि ठाणे एक्कमारोवयतेण ताव गेयव्व जाव
चरिमा अउणामीयमयारोवणा ।

एव दुनिगादिठवणामु वि एगादि आरोवणा गेयव्वा ता जाव जस्स चरिम ति । एयाओ सव्वाओ
पुव्वकयविहिणा कायव्वा जाव एक्केक्कपाहा (हो) डगणिबद्धरागिगगाहाण मालस महम्मा मत च दसुत्तर पुण्ण
ति । एयामु ठवणारोवणामु मासकरण करेतेण एगादियामु जाव चउरो पचमु भाग अदेत मासो चेव वेतव्वो ।

एव पण्णरमगादिमु दुक्खे अमुज्झते दसादिमु य दुक्खे अमुद्धे आगामे जाते एक्को चेव मासो
वेतव्वो, जाव चउदम, पण्णरमोववि विकला जाव उणवीमाए वि एक्कातो मासातो णिप्फण्ण ति दट्टव्वा ।

एव एक्कवीसादिमु केवलपणभागविमुद्धुरुज्झणीण कयमासपमाणेहितो णिप्फण्णा दट्टव्वा ।

एव सव्वत्थ सकलकरण करेतेण कायव्व ।

अह भिण्णिय ठवणारावणकरण इच्छति तो इम कायव्व — एक्कियठवणाए एगादिआमवणातो
जाव पण्णरम ताव सगलकरण चेव कायव्व, जत्थ एक्किया ठवणा सोलसिया आरोवणा एता दो वि असीत-
मतानो मुद्धा, मेस तमट्टिमत्त, एयम्स सोलसहि भागो भाग सुद्ध ण देति ति तेरसपक्खिता भागलद्ध
एक्कारम, ते ठविता, सगलच्छेदमहिया इम ११ । सोलसियारोवणाए पचहि भागो भागलद्ध निणि, ते
दुरुव्वणीणा कता मेसो एक्को मासो मासस्स य एक्को पचभागो । एम वणिओ मासो पचगुणो अमो पक्खितो
जाया छ पच भागा, एक्कियठवणाए वि हेट्टा पचभागो छेदो दिण्णो १ ।

इदाणि आरोवणा भागलद्ध त आरोवणामासगुण कायव्व, ति काउ अमा असगुणो छेदो
छेदगुणो छहि एक्कारसगुणिता पचहि एक्को गुणितो जाया छावट्टि पच भागा ठवणारोवणमाससत्थि ति
कायव्वा, एत्थ एक्को ठवणा पच भागो, छच्च आरोव पचभागा पक्खिता, जाया सचयमासाण तेहुत्तरि पच
भागा — १३ ।

कत्तो कि गहिय ति ? एक्को ठवणभागो फेडितो मेम आरोवणभागपरावनीए अमा असगुणा,
छेदो छेदगुणो भागे टिए ज लद्ध त दोमु ठाणेमु ठविय तत्थेगो रासी पण्णरसगुणो, बितितो आरोवणाए जति
विगला दिवसा असीतेहि गुणितो पक्खितो य ठवणादिवसजुत्तो भोसररिसुद्धो असीय सत भवति, एव
मत्तरम अट्टारस अउणवीसियामु वि कायव्व, णवर — बितियरासी दोहि तीहि चउहि गुणेषव्वो, वीसियाए

सगलकरण कायव्व इगवीसियाए वि सव्व एय चेव कायव्व, णवर — ठवणभागफेडिएसु ज सेस त आरोवणभाग परावत्तिय गुणिय भागहियलद्धे तिसु ठाणेषु ठायव्व, तत्थेक्को रासी पण्णरसगुणो, विन्निओ विगलदिवसगुणो, तत्तिओ पचगुणो, सव्वे एक्कट्ठा मेलिता ठवणदिणजुत्ता भोम्विसुद्धा असीत सत भवति ।

एव बावीसियासु वि कायव्व, एगतीसादिसु वि एव, णवर — जइ वि विकलमासो लब्धमि तत्ति ठाणत्थ ठवेयव्व, आरोवणभागहियलद्ध जत्थ दो रासी ठाविता तत्थ एगो पण्णरसगुणो, बित्तितो णियमा-विगलदिवसगुणो, किं च सचयमासभागेहितो सचयठवणभागफेडियव्वा पक्खिक्खतेण पुण जइ ठवणादिणा तत्ति सगला पक्खिवियव्वा मास वा दुरूवसहिय पचगुण असगहिय काउ पक्खिवेज्जा ।

एव बित्तियादिठवणासु वि सोलसियादिआरोवणातो उवउज्ज कायव्वाओ इति ॥६४६२॥ ठवणास चए त्ति दार गत ।

इदाणि ^१रासि त्ति दार ।

एस पच्छित्तरासी कओ उप्पण्णो ? अत उच्यते —

असमाहीठाणा खलु, सबला य परिस्सहा य मोहम्मि ।

पलिओवम सागरोवम, परमाणु तओ असंखेज्जा ॥६४६३॥

वीसाए असमाहिठाणेहि, खलुसहो सभावणत्थे, किं सभावयति “असखिज्जेहि वा असमाहि-ठाणेहि” त्ति, एव एक्कवीसाए सबलेहि, बावीसाए परिसहेहि, अट्ठावीसतिविधाओ वा मोहणजातो, अहवा-तीसाए मोहणज्जठाणेहितो, एतेहि असजमठाणेहि एस पच्छित्तरासी उप्पण्णो ।

सीसो पुच्छति — कत्तिया ते असजमठाणाइ ? जत्तिया पलिओवमे बालग्गा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे । तो जत्तिया सागरोवमे बालग्गा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे । तो सागरोवमबालग्गाण एक्केक्क बालग्गा असखेज्जखड कय । ते य खडा सबवहारिषण्णरमाणुमेत्ता, एवत्तिया असजमठाणा ?, णो तिणट्ठे समट्ठे, “ततो” त्ति एतेहितो असखेज्जगुणा दट्ठ्वा ।

अण्णे भणति — “सुहुमपरमाणुमेत्ता खडा कता” । ते य अण्णा भवति, त न भवति, जतो असजमठाणा असखेज्जलोगागासमेत्ता भवति, सजमठाणा वि एत्तिया चेव ॥६४६३॥

^२जे जत्तिया उ^० गाहा ॥६४६४॥ कट्ठा

रासित्ति • • गाहा ॥६४६५॥ रासि त्ति गत ।

इदाणि ^३“माण” त्ति, मीयते अनेनेति मान परिच्छेदो । त दुविह — दव्वे भावे य । दव्वे प्रस्थकादि ।

भावे इम —

बारस अट्ठम छक्कग, माणं भणितं जिणेहि सोहिकरं ।

तेण परं जे मासा, संभहण्णंता परिसडंति ॥६४६६॥

नित्यकरेहि विविह पायच्छित्तमाण दिट्ठ, पढमत्तित्थकरस्स बारसमासा, मज्झिमत्तित्थकरण अट्ठ-मासा, वद्धमाणसामिगे छम्मासा, एतो अभमहिय ण दिज्जति, बहुएहि पडिसेवित पि एत्तिय चेव दिज्जति,

१ गा० ६४२७ । २-६४६४, ६५ प्रकमिटे द्वे गाथे चूर्ण्यमुपरिनिर्दिष्टाकारेणैव समुल्लिखिते, मूल भाष्यप्रती तु न कोऽपि निर्देश । ३ गा० ६४२७ ।

धम्मयाए सुञ्झति । जहा पत्थए मविज्जते ताव मविज्जति जाव तस्स सिहा आरुहति, सेस आरुभिज्जत पि अधिक परिसडति । एव छण्ह मासाण ज अधिय पडिमेवित त ठवणारौवणप्पगारेण सहणमाण परिसडति तित्थकरआणा य एमा अणुगालियव्व त्ति, जहा रण्णो अप्पणो रज्जे ज माण प्रतिष्ठापित जो ततो माणातो अतिरेगमूल वा करेति सो अवराही डडिज्जति, एव जो तित्थकरण आण कोवेति सो दीहससारी ॥६४६६॥ माण त्ति गय ।

इदाणि “पभु त्ति” पच्छित्ते दायव्वे पभु त्ति वा जोग्गो त्ति वा एगट्ठ ।

को पुण सो ?, इमे —

केवल-मणपज्जवणाणिणो य तत्तो य ओहिनाणजिणा ।

चोद्दस-दस-नवपुव्वी, कप्पधर-पक्कप्पधारी य ॥६४६८॥

केवलणाणी, मणपज्जवणाणी, ओहीणाणी, जिणसहो शुद्धावधिप्रदशक, चोद्दसपुव्वी, अभिण्णदस-पुव्वी, भिण्णो मु ओवड्डीग जाव णवमपुव्वस्स ततिय आयाववत्थु कप्पववहारधरा, पक्कप्पो त्ति णिसीहउज्झयण ॥६४६७॥

किं च —

धेप्पति चसद्देणं, णिज्जुत्तीसुत्तपेढियधरा य ।

आणाधारणजीते, य होति पभुणो य पच्छित्ते ॥६४६८॥

अहवाहुकयणिज्जुत्तीगाहासुत्तधरा णिसीहकप्पववहारपेढगाहासुत्तधरा य, अहवा—सुत्त धरति सुत्तधरा जे महाणिमीह महाकप्पसुतादि अज्झयणे य धरेंति । “आण” त्ति आणाववहारी धारणाववहारी जीयववहारी एते पच्छित्तदाणे पभुणो भवति ॥६४६८॥ पभु त्ति गत ।

इदाणि “केवत्तिया सिद्ध” त्ति दार ।

सीसो पुच्छति — “केवत्तिया पच्छित्ता ?”

आयरियाह — दुविह पच्छित्तदरिसण — अत्थतो सुत्ततो अ । अत्थतो अपरिमाणा, सुत्ततो इहउज्झयणे इमे —

अणुग्घाडयमासाणं, दो चेव सया हवन्ति बावन्ना ।

तिण्णि सया बत्तीसा, होति उग्घाडयाणं पि ॥६४६९॥

पढममुद्देसते अणुग्घाडयमासातो सखित्ता दोणिण सया बावण्णा भवति, बितिय ततिय-चउत्थ-पच-मुद्देसतेमु मासलहुआ पच्छित्ता ते सखित्ता तिण्णि सया बत्तीसा भवति ॥६४६९॥

पंच सता चुलसीता, सव्वेसि मासियाण बोद्धव्वा ।

तेण पर वोच्छामि, चाउम्मासाण संखेवो ॥६४७०॥

उग्घाडयिमामाण अणुग्घाडयिमासाण एकतो सखित्ताण पच सया चुलसीता भवति । अतो पर चाउम्मासिते भणामि ॥६४७०॥

छञ्च मया चोयाला, चाउम्माया य होतऽणुग्घाया ।

सत्त मया चउवीसा, चाउम्मायाण उग्घाया ॥६४७१॥

छट्ठ-मत्तम-अट्ठम णवम-दसम-एक्कारममुद्देमए य चाउम्मासिया अणुग्घातिया छ सया चोयाला बुत्ता । (एतेमि सव्वमखेवा) बारम-नेरम चोद्दम पन्नरम सोलम मत्तरम-अट्ठारस-एणुणवीमुद्देमएमु उग्घाया चउमासिया मत्तना चउवीस बुत्ता (एतेसि सव्वसखेवो) ॥६४७१॥

तेरम सय अट्ठट्ठा, चाउम्मायाण होति मव्वेसि ।

तेण परं वोच्छामि, मव्वसमासेण मखेवं ॥६४७२॥

चउत्तट्ठगाण वा चउत्तुरुगाण च सव्वमखेवो तेरस सत्ता अट्ठमट्ठा, अतो पर मासचउमायाण सव्वमखेवण भणामि ॥६४७२॥

णव य मया य सहस्मं, ठाणाणं पडिवत्तिओ ।

वावन्नट्ठाणाई, मत्तरि आरोवणा कमिणा ॥६४७३॥

सहस्म णव सत्ता वावन्नट्ठिया मामादीना प्रायश्चित्तमन्यानामित्यथ । “सत्तरि आरोवणा कसिणाउ” त्ति, को अस्याभिमव्व ? उच्यते णु एमव मव्वो ‘केत्ति या मिद्ध’ त्ति, केवत्तिना आरोवणाओ जहण्णाओ मिद्धा, उवकोमा य मिद्धा, एव अजहणमणव्वकोसा य कमिणा अकसिणाओ य ।

तत्थ पढमे ठवणागारोवणाणे एक्का जहण्णा, वी (ती) स उवकोमा, चत्तारिमया चउत्तीसा अजहण्ण मणव्वकोमाण ।

विनिया ठवणागारोवणाणे एक्का जहण्णा, तत्तीस उवकोमा, सत्तवीसधिया पच्चसया मज्झाण ।

तत्तिथठाण एक्का जहण्णा पणत्तीस उवकोमा, पच्चमया चउणउया मज्झाण ।

चउत्थे ठाणे एक्का जहण्णा, अउणासीन मय उवकोमाण, पण्णरम सहस्मा णव य सया तीमुत्तर मभाण

पढमे ठवणागारोवणाणे मत्तरियारोवणा कसिणा भोमविरहिय त्ति बुत्त भवति ॥६४७३॥

ता य इमा—

मव्वामि ठवणाणं, उवकोमारोवणा भवे कसिणा ।

मेमा चत्ता कमिणा, ता खलु णियमा अणव्वकोसा ॥६४७४॥

पढमे ठवणागारोवणाणे तीस ठाणाणि, तत्थ एक्केक्काए ठवणाए अत्तिल्ला आरोवणा उवकोसिता भवन्ति, मा य णियमा भोसविरहिया, एयाओ तीम, एनासि मज्झा जातो आरोवणाओ भोसविरहिताओ ताओ चत्तालीस भवन्ति, एया उवकोमियाण मेलिताओ मत्तरि भवन्ति, ॥६४७४॥

कत्तराओ पुण नाओ चत्तालीम भोमविरहिताओ ? उच्यते—

वीमाए तू वीमं, चत्तममीती य तिण्णि कमिणाओ ।

तीमाए पक्खपणुवीम तीम पण्णाम पणमतरी ॥६४७५॥

वीसियाण ठवणाण वीसिया आरोवणा चत्तावीमिया अमीता, एयाओ तिण्णि कमिणातो । तीमियाते ठवणाए इमाता पच्च आरोवणातो अज्जभोमियातो पक्खिना पणवीमिता तीसिता पण्णासिया पच्चसत्तरीया ॥६४७५॥

चत्ताए वीम पणतीस सत्तरी चेव तिणि क्मिणाओ ।

पणतालाए पक्खो, पणताला चेव दो क्मिणा ॥६४७६॥

पण्णाए पण्णट्ठी, पणपण्णाए तु पण्णवीसा तु ।

मट्ठिठवणाए पक्खो, वीमा तीसा य चत्ता य ॥६४७७॥

चत्तालीमियाए ठवणाए इमाते तिणि आरोवणाओ क्मिणाता - वीसिता पणतीमिया सत्तरिया । पणयानीमट्ठवणाए इमाओ दोणि आरोवणा क्मिणातो पक्खिता पणयाला य आरोवणा क्मिणा (पणपण्णाए ठवणाए इमाने तिणि आरोवणाओ क्मिणाओ - पण्णवीसा, पणपण्णा पण्णट्ठी ।) सट्ठिक्रिक्कताते ^१ठवणाते इमा चत्तारि आरोवणा क्मिणा - पक्खिया वीसिया तीमिया चत्तालीसिया य ॥६४७८॥

सयरीए पणपण्णा, तत्तो पणमत्तरी य पन्नरसा ।

पणतीमा अमितीए, वीमा पणुवीम पन्ना य ॥६४७८॥

मत्तरीए ठवणाए एक्का पणपणिया आरोवणा क्मिणा । पणपन्नमत्तरियाए ठवणाए दो आरोवणा क्मिणातो - पक्खिता पणतीमिया य । अमीतिक्कियाए ठवणाए इमाओ तिणि आरोवणाओ क्मिणाओ - वीमिया पणुवीमिया पण्णामिया य ॥६४७९॥

णउतीए पक्ख तीमा, पणताला चेव तिणि क्मिणाओ ।

सतियाए वीस चत्ता, पचुत्तर पक्ख पणुवीसा ॥६४७९॥

दम उत्तर मतियाए पणतीमा वीस उत्तरे पक्खो ।

वीमा तीमा य तहा, क्मिणाओ तिणि ^२वीसइहिए ॥६४८०॥

णउतियाए ठवणाए तिणि आरोवणा क्मिणा - पक्खिया तीसिया पणयालीसिया य । सतियाए ठवणाए दोन्नि आरोवणा क्मिणा - वीसिया चत्तालीमिया य । पचुत्तरसतियाए ठवणाए दोन्नि आरोवणा क्मिणा - पक्खिया पणुवीमिया य ॥६४८१॥

दमुत्तरगाहा दमुत्तरसतियाए ठवणाए एक्का पणतीसिया आरोवणा क्मिणा । वीमुत्तरसतिया ठवणाए तिणि आरोवणा (क्मिणा -) पक्खिया वीसिया तीसिया ॥६४८०॥

तीमुत्तरे पणुवीसा, पणतीसे पक्खिया भवे क्मिणा ।

चत्ताले एगवीसा, पण्णामे पक्खिया क्मिणा ॥६४८१॥

वीमियठवणाए तू, एयाओ हवन्ति सत्तरी क्मिणा ।

सेसाणइवि जा जत्तिय, नाऊणं ता भणिज्जाहि ॥६४८२॥

तीमुत्तरसतियाए ठवणाए एक्का पणुवीसिया आरोवणा क्मिणा । पणतीमुत्तरसतियाए ठवणाए एक्केक्का पक्खिया आरोवणा क्मिणा । चत्तालुत्तरसतियाए ठवणाए एगवीसा आरोवणा क्मिणा । पण पण्णामुत्तरसतियाए एक्का पक्खिया आरोवणा क्मिणा । एव एयाओ सत्तरि क्मिणाओ । सेसा पचाणउया तिणि मया ते अक्मिणाओ भवन्ति । सेसामुवि तिसु ठवणआरोवणठाणेसु उवउज्जिऊण क्मिणाऽक्मिणप्पमाण भाणियव्व ॥६४८२॥

^१-पन्नामियाते ठवणाए एक्का पन्सट्ठिता आरोवणा क्मिणा । ^२ वीयाए (व्यव०) ।

अतो पर जेण एयाण सव्वासि सरूव वण्णिज्जति त भणामि —

सव्वासिं ठवणाण, एत्तो सामण्णलक्खणं वोच्छं ।

मामग्गे भोसग्गे, हीणाहीणे य गहणे य ॥६४८३॥

“सव्वासि” ति — चउसु ठवणारोवणठ णेसु जातो ठवणारोवणाग्रो अण्णोण्णवुहसो भवति ताग्रो य जहा णज्जति तहा तेपि “सामण्ण” ति — पिडिय अविमिटु मखेवभा य लक्खण भणामि — लक्खिज्जति ताण मरूवो जेण त लक्खण । “मासग्गे” ति — पडिमेवित, सचयमासाणामग्ग परिमाणमित्यर्थ । ‘भोसग्गि’ ति — सेवितमासाण उपपत्तिगमित्तमेव आरोवणादिस्मेहि भागे हीरमाणे कित्ति पखेव काउ सुद्ध भाग दाहिंति ति एयस्स लक्खण भ गियव्व । “हीण” ति त्रिमग्गहण त सचयमासेहि कह भवनीत्यय । अहीणग्गहण नाम समग्गहणमित्यय ॥६४८३॥

आरुवणा जति मामा, ततिभागं नं करे ति पंचगुण ।

सेसं पचहि गुणिण, ठवणदिणजुत्ता उ छम्मासा ॥६४८४॥

आरोवणाए जतिमासलद्धा सचयमासा ठवणामासमुद्धसेसा तद्भागे काय वा, तत्वेगो भागो “तिपचगुणो” ति — पण्णरसगुणो कायव्वो, सेसा भागा सपिडिया पचगुणा काय वा, ठवणा दिण जुत्ता जति अहिया तो भोमविसुद्धा छम्मासा भवति, एय कम्म पण्णरसादिसु आरोवणासु कायव्व, एगादिआरोवणासु पुण जाव चोहस ताव आरोवणदिणेहि चेव गुणयव्व ॥६४८४॥

जतिमि (मि) भवे आरुवणा, ततिभागं तस्स पण्णरसहि गुणे ।

ठवणारोवणमहिता, छम्मासा होति नायव्वा ॥६४८५॥

“जतिमि” ति — जतित्थी आरोवणा पढम-वित्ति-ततियादि वा, तत्थ जे सचया मासा लद्धा ते ठवणारोवणमासविमुद्धा जतित्थिया आरोवणा तत्तिभागत्था ते करेयव्वा, जनि एगभागत्था तो पण्णरसगुणा ठवणारोवणसहिता भोमविसुद्धा छम्मासा भवति । अथ णेगभागत्था तो एगभागो पण्णरसगुणो सेसा पचगुणा ठवणारोवणदिणसहिया छम्मासा कच्चिदेव कतव्य ॥६४८५॥

गुणकारेण कसिणाकसिणजाणत्थ इम भण्णति —

जेण तु पदेण गुणिता, होउणं सो ण होति गुणकारो ।

तस्सुवरि जेण गुणे, होति समो सो तु गुणकारो ॥६४८६॥

“पदेण” ति — एगदुगतिगादित्तेहि, जेण आरोवणा “गुणिता होउ” ति — गुणिता सतीत्यय । अहवा — ठवणादिणजुत्ता “होउ” ति ऊगा अहिया वा भवति ति, सो तस्स गुणकारो ण भवति, जहा पक्खिया आरोवणा दसहि गुणिता वीसियठवणासजुत्ता ऊगा छम्मासा, एक्कारसगुणा अहिया भवति तो णायव्व एतेमि कसिणकरण न होइ नास्सेवेत्यय । अकसिणत्वात्, “तस्सुवरि” ति एक्कारसण्ड उवरि ओमत्थग परिहाणीए पक्खिया आरोवणा “जेण गुणे” ति दसगुणिता तीसिय ठवणा होइ । “समो” ति छम्मासितो रामी, एत्थ सो दसको समकरण पडुच्च गुणकारो भवतीत्यय ।

एव णवहि अहुहि सत्तहि छहि पचहि चउहि तीहि बीहि एक्केण य पक्खित आरोवण गुणउ जीए ठवणाए सजुत्ता छम्मासा भवति तत्थ सो गुणकारो णायव्वो तावतिया य पक्खियाए कसिणा लब्धति । एव वीसियआरोवणादि, णवर — अट्टभागाग्रो ओमत्थियगुणकारो कायव्वो, एव सेसाग्रो वि सव्वाग्रो

गुणकारेहि वेयालियव्वाओ । अघवा - “जेण पदेण” एतीए गाहाए इम वक्काग - जति दोहि गुणा आरोवणा-
दिवसेहि पक्खित्तेहि असीन सत ण पूरेति तो सो समकरणे गुणकारो ण भवति, ताहे समकरणत्थ तदुवरि
तिमामादीण गुणकारेहि वेयालेयव्व ताव जाव जेण गुणिते ठवणाए पक्खित्ताए असीय सय भवइ, सो
गुणकारो कमिणारोवणमिम्मित्त समो भवति । अह सव्वगुणकारा वेयालिए ऊण अहिय वा असीय सत भवति
ताहे णायव्व ण एस गुणकारो, अकसिणा य एस णायव्व ति ॥६४८६॥

अहवा सव्वकसिणजाणणत्थ इम भण्णइ -

जतिहि गुणा आरोवणा, ठवणाए जुता हवति छम्मासा ।

तावतियारुवणाओ, हवन्ति सरिमाभिलावाओ ॥६४८७॥

जति गुणा आरोवणठवणाए पक्खित्ताए असीय सत भवति मा आरोवणा कमिणा णायव्वा,
तव्विवरीया सव्वा अकसिणा, तेसु ऽम करण - जेण गुणा आरोवणा ठवणादिमज्जुता जत्तिएण ऊणा अहिया
वा भवति त चेव तत्थ भोसग्ग, अकसिणा एसा णायव्वा ॥६४८७॥

किं च आलोयगमुहातो पडिमेवियमासग्ग मोउ त म सग्ग जाए ठवणाए सचयमाससम भवति त
ठवणारोवण ठवेति ।

नत्थिम करण - उदाहरण, जहा - अट्टावण मासा आलोयगमुहातो उवलद्धा, तत्थ
आयरिएण वीसिया उवणा पण्णाममत्तिमा आरोवणा ठवता, एयासि ठवणागेवणण सत्तर
दिवससत छम्मासिय असीयदिवससतमाणातो सुद्ध, सेसा दस एतेसि पण्णाम मत्तिथी आरो-
वणाए भागे ण सुज्झति ति चत्ताल मत पक्खित्त, भागे हिते एक्को लद्धो, एमो एक्को अट्टावीम-
निमआरोवणन्ति अट्टावीमारोवणमास ति वा अट्टावीसगुणो कतो जाता अट्टावीस चेव ।

एत्थ चेव इम भण्णति -

ठवणारोवणदिवसे, णाउण तो भणाहि मामग्गं ।

जं च समं त कमिण, जेणहियं तं च भोसग्गं ॥६४८८॥

ठवणारोवण मासे णाउ ताहे सचयमासग्ग भण्णजाह, “एवतित” णि - दो ठवणामासा अट्टावीस
आरोवणमासा एते तीस, एते अट्टावीसाए मेलियाए ाया अट्टावण सचयमासा, एव सव्वत्थ सचयमासग्ग
भागियव्व । जत्थ पुण आरोवणाए भागे हीरमाणे भोसविरहिय सम सुज्झति त कसिणति समेत्यण,
जत्थ पुण ण सुज्झति तत्थ जावतिएण चेव सुज्झति तावतिय चेव सभोसग्ग जाणियव्व ॥६४८८॥

ठवणारोवणदिवसेहि मासुप्पादनकरण इम -

जत्थ उ दुरूवहीणा, ण होति तत्थ उ भवन्ति साभावी ।

एगादी जा चोदस, एगाओ सेस दुगहीणा ॥६४८९॥

सव्वासि ठवणारोवणण दिवसेहि तो मासुप्पादणे तो णियमा पक्खि भागे हायव्वा, भागे हिते ज
लद्ध त णियमा दुरूवहीण कायव्व, जत्थ दुरूवहीण ण हाज्जा जहा एग दियासु ठवणामु जत्थ वा दुरूवहीण
कते आगास भवति जहा दमराइदियासु तामु साभाविय” ति - ण तेसि काति विम्भी वज्जि, तत्तिया
चेव ते तेहि सचयमासा ठवणामासा परिमुद्धा गुणेयव्व ति, अहवा - “साभाविय” ति - ते एगासिमात्र
भेदभिण्णा व सव्वे एकानो मासातो णिप्फण्णा इति, एव जाव चोदसिता आरोवणा ततो पर सेसासु
पण्णरमियासु दुगहीणकरण लब्धन्ति ॥६४८९॥

विकलेमु सकलकरणत्थ भण्णति -

उवरिं तु पंच भइते, जे मेमा के ड तत्थ दिवमा उ ।

ते मव्वे एगाओ, मामाओ होंति णायव्वा ॥६६६०॥

पण्णसियाए उवरि सालसमादियासु ठवणासु पचाहि भागे हिते उवरि भागलद्धे सेमा एक्कगमादी दीसति, ते लद्धाण पूरणमेव णायव्वा, ण तेसि किञ्चि सक्कलकरणे पुढो करण कज्जति, सो चेव एक्को मासो इत्यथ ॥६६६०॥

कह पुण ठवणारोवणमामहि सव्व सच्चमासेहि वा दिवसगहण कज्जति ?

एत्थ इम भण्णति -

होति समे समगहण, तह वि य पडिमेवणा व नाऊणं ।

हीणं वा अहिय वा, सव्वत्थ सम च गेणहेज्जा ॥६४६१॥

होति सामण्ये ठवणारोवणाण दिवसमा,ण समे तेसु सम दिवसगहण भवति, सेसेसु मासेसु सम विमम वा ।

कह ? उच्यते - जहा सत्तिया ठवणा सत्तिया चेव आरोवणा, एत्थ पुक्ककरणेण छब्बीम सच्च-मामा लब्धति, एत्थ ठवणारोवणमासेसु सत्तसत्तदिणा गहिया, जे पुण आरोवणाहि लद्धा मामा चउवीस तेसु एक्कातो मासाओ पच दिणा गहिना नम्हा दो तत्थ भोमा पडिना, सेसा जे तेवीस तेसु सत्त चेव दिणा गहिता ।

एव समासु ठवणारोवणासु समगहण दिट्ठ, अण्णासु कत्थत्त जइ विमम ठवणारोवणदिवसमा, “तह वि य” ति — ण पुक्ककरण कर्तव्य । “पडिसेवणा” — पडिसेवणमासा भण्णति, ते य जे ठवणारोवणाण भागे हिते लब्धति ते पडिसेवणमामा ते णाउ जहा छम्मासा पूरति तहा ठवणारोवणामु हीणमतिरित्त वा दिवसगहण कायव्व । कत्थ ति ठवणादिहीण आरोवणाए अहिय । अण्णत्थ आरोवणाए हीण ठवणाए अहिय । जहा वीसियासु ठवणारोवणासु वीसियाठवणाए दस दस दिवसा गहिता, दोसु आरोवणामासेसु दुइविभत्तेसु एक्कातो आरोवणामासातो पण्णरस गहिता बित्तियानो पच । एव अण्णासु वि भावेयव्व । “सव्वत्थ सम च गेणहेज्ज” ति — जे आरोवणाहि हियभागनद्धा मामा जे य ठवणारोवणामासा सव्वेहितो गहण जहा पक्खिय-ठवणाए पक्खियाए आरोवणाए, एव पत्तितासु ठवणारोवणासु, तहा एक्कियासु ठवणारोवणासु दुगादिसु य ॥६४६१॥

विसमा आरोवणाए, गहणं विममं तु होइ नायव्वं ।

सरिसे वि मेवितम्मि, जह भोसो तह खलु विसुज्जे ॥६४६२॥

जाओ ठवणातो दिवसमाणेण परोप्परतो विसमातो तासु जे सच्चमासा लद्धा तेसु पडिमेवतेण जति विमग्गिसावराहसेवण कन तहवि दिवसगहण करतेहि विसम चेव दिवसगहण कायव्व, तासु इमा सविस मत्तणतो चेव विसमगहण भवति, एव विसमकमिणासु गहण दिट्ठ जा पुण विममाऽकसिणासु गहण नत्थ य दिवसगहण करेतेण जहा भोसो विसुज्जति तहा कायव्व, “खलु” अवधारणे, भोमविममार्ये, विशेष-प्रदशनार्ये वा ॥६४६२॥

एवं खलु ठवणाओ, आरुवणाओ समामओ होति ।

ताहि गुणा तावइया, नायव्व तहेव भोसो य ॥६४६३॥

आरोवणाओ समामओ ति सव्वेओ भगिया, अहुवा - पाठतर “आरोवणाओ विसेसओ होति” ति - एतेमि विमसो हीणाहियदिवसग्गहणेण णायव्वो । अहुवा - पाठतर “आरुवणाओ विसेसिता होति” ति ।

कह पुण ठवणाओ आरोवणाहितो विसेसिज्जति ? उच्यते - जहा ठवणमासमुद्धे सेसमासा आरोवणमाससारसभागकया ते पणसरसपणमुणा य कया आरोवणादिणेहि वा गुणिया जाया एव आरोवणादिवसरिमाणलद्ध तहा ठवणदिणपक्खेवण ठम्मासा पूरति ति सह पूरणवत्, एव ठवणादिणेहि विसेसिज्जतीत्यय । “ताहि गुणा तावइय” ति - गग-दु तिमादिणोह सखाहि आरोवणा गुणिया ठवणादिणसज्जुआ जावतियासु छम्मासा भवति तावतिया उ कप्पिणा भवतीत्यय । अथवा - “ताहि गुणा तावइय” ति - इच्छियठवणा-रोवणादिणेहि असीयमयपरिसुद्धेहि सेसम्म इच्छियामेवणाए भागे हिने जे लद्धा ते एगादि आरोवणमाससखाहि गणिया ठवणा-रोवणमाससज्जुआ “तावनिव” ति - मच्चयमासा भवति । अहुवा - जत्थ सखिततर ठवणा-रोवणाहि विणा आरोवणकम्म काउ इच्छति तत्थ असीयमयस्स आलोग्यमुहाओ जे उल्लद्धा पडिसेवियमामा तेहि भागो हायव्वो, ते चेव सवया मासा, जड मव्व सुद्ध तो कप्पिण णायव्व, ज च भागलद्ध त एक्केक्क-मासातो दिवसग्गहण दट्ठव्व ।

क प्रत्यय ? उच्यते - जतो ताहि चेव भागहारगरीसीहि भागलद्ध गुणित तावतिय ति असीय मत भवति, अह पडिमेवणमासेहि भागे हीरमाणे किचि तत्थ विकल भवति ततो त भागलद्ध भागहारगसखमिसेहि ठाणेहि णायव्व, तत्थ एक्कमागविकल पक्खिसे ससा भागतोहि गुणति, जावतिता भागा तावतिमेतो रामी भागहारगुगो कज्जति, जो य विगलमम्मिस्सो भागो मो य तत्थ पक्खितो ताहे तावतिया चेव भा न्सति - असीतसतमित्यर्थ । “णायव्व तहेव भोसो य” ति - आरोवणाए भागे हीरमाणे असुज्झमाणे जो छेद म विसेसो भोसो णायव्वो ॥६४६३॥

कसिणाए रुवणाए, समगहणं तेसु होइ मामेसु ।

आरुवण अकसिणाए, विमम भोमो जह विसुज्जे ॥६४६४॥

जा कसिणा आरोवणा मा भोमविरट्ठिय ति बुत्त भवति, तत्थ आरोवणभागहारहियलद्धमासा जे तेसु एगभागत्थेनु सम दिवसग्गहण अह दुगादिभागत्थतो पत्तेय भागेनु समगहण दट्ठव्व, अकसिणारोवणातो णियमा तेसु मामेसु विममग्गहण, न पुण विममग्गह भोमवणेण भवति जहा भोसो विसुज्झतीत्यथ ॥६४६४॥

इद दिवसग्गहणलक्खण -

जइ इच्छसि नाऊण ठवणारुवणा य तह य मासहि ।

किं गहिय तद्विवासा, मासेहि तो हरे भाग ॥१॥

ठवणारुवणादिवमाण सतमासेहि सो य (भागो) हायव्वो !

लद्ध दिवसा जाणे, सेस जाणेज्ज तब्भागा ॥२॥

जति णत्थि ठवणआरोवणा य णज्झति सेविता मासा ।

सेवियमासेहि भए (वे) आसीय लद्धिमोग्गहिय ॥३॥ गताथा

एवं तु ममामेण, भणियं सामणलक्खण वीय ।

एएण लक्खणेणं, भोसेगव्वाओ सव्वाओ ॥६४६५॥ कठ-१

कसिणाकसिणा एता, सिद्धा उ भवे पक्कप्पनामम्मि ।

चउरो य अतिक्कमादी, सुद्धा तत्थेव अज्झयणे ॥६४६६॥

पक्कप्पो त्ति णिसीह, सेस पुव्वद्वस्स कठ । णिसीहणाम त्ति गय । इदार्णि “सव्वे य तहा अतियारे” त्ति, अइयारगहणातो चउरो अतिक्कमादि दट्ठ्वा, तेवि तत्थेव णिसीहज्झयणे सपायच्छित्तसरूपा सिद्धा ॥६४६५॥

सव्वो एस पच्छित्तगणो अतिक्कमादिसु भवति । ते य अतिक्कमादी इमे -

अतिक्कमे वतिक्कमे चेव अतियारे तह अणाचारे ।

गुरुओ य अतीयारो, गुरुगतरो उ अणायारो ॥६४६७॥

अतिक्कमादियाण इम णिदरिसण - आहाकम्मेण णिमतिओ पडिसुणणे अतिक्कमे वट्ठति, तगहणणित्त पयभेद करेइ वडक्कमे वट्ठति, त गेण्हतो अतियारे वट्ठति, त भुजतो अणायारे वट्ठति । एतेसु जहक्कम पच्छित्त इम - ००० द्धु । एते तवकालविसेसिना । अतियारठाणा अतिक्कमो गुरु, अतिक्कमतो वतिक्कमो गुरुतर ठाण, तओ वि गुरुओ अइयारो, ततो वि गुरुयतरो अणायारो । एव दोसट्ठाणपच्छित्त-कम्मबधेहि गुरुतरो क्रमश ॥६४६६॥

चोदकाह -

तत्थ भवे ण तु सुत्ते, अतिक्कमादी उ वणिग्या के ति ।

चोदग सुत्ते सुत्ते, अतिक्कमादी उ जोएज्जा ॥६४६८॥

चोदको भणति - तत्थ त्ति हत्थादिवायणतसुत्तगणेषु ण कत्थ त्ति अतिक्कमादी सुत्त वणिगता दिट्ठा ? ।

आयरियो भणति - हे चोदग ! णायव्व सव्वसुत्तेसु अतिक्कमादी ण तुमे दिट्ठा ? , “जोएज्ज” त्ति आयरिएण भाणियव्वा ॥६४६८॥

जतो भणति -

सव्वे वि य पच्छित्ता, जे सुत्ते ते पडुच्चणायारं ।

थेराण भवे कप्पे, जिणकप्पे चतुमु वि पदेसु ॥६४६९॥

सव्वेसु वि अतिक्कमादिसु चउसु वि पदेसु थेरकप्पियाण पच्छित्ता णत्थि त्ति काउ ते जे पच्छित्ता सुत्ते अणिता ते सव्वे थेरकप्पियाण अणायार पडुच्च भणिया ।

कह ? उच्यते - जति पडिसुत्ते पदनेदातो णियत्त त्ति गहिय वा परिट्ठवेति तहावि सुज्झति, अह भुजति तो अणायारे वट्ठतस्स पच्छित्त भवति । जिणकप्पियाण पुण अतिक्कमादिसु चउसु वि पदेसु पच्छित्त भवति, ण पुण एव काहिति ॥६४६९॥

अत्राह “जनि एव णिसीहे सिद्ध तो णिसीह कतो सिद्ध ?” उच्यते -

णिमीहं णवमा पुव्वा, पच्चक्खणाणस्स ततियवत्थूओ ।

आयारनामधेज्जा, वीसतिमा पाहुडच्छेदा ॥६५००॥

पुव्वगतैरितो पच्चक्खणाणपुव्व णाम णवमपुव्व, तस्स वीस वत्थु वत्थु त्ति वत्थुभूत वीस अत्था धिकारा, तेसु ततिय आयारणामधिज्ज ज वत्थु तस्स वीस पाहुडच्छेदा परिमाणपरिच्छिन्ना, प्राभुनवत् अर्थ-छेदा पाहुडच्छेदा भण्णति, तेसु वि ज वीसतिमा पाहुडच्छेद ततो णिसीह सिद्ध ॥६५००॥

चोदकाह - सब्ब साध्वत्त, किन्तु -

पत्तेयं पत्तेय, पदे पदे भासिउण अवराहे ।

तो केण कारणेणं, दोसा एगत्तमावण्णा ॥६५०१॥

एगुगवीसाए उद्दसएसु पदेसु पदेसु पत्तेय पत्तेय केसु वि मासलह पच्छित्ता, केसु वि मासयुरु, केसु वि चउलहु, केसु वि चउयुरु, एव सुत्तओ, अत्थओ पुण अवराहपदेसु पत्तेय पणगादि जाव पारचिय दात्तु तद्द मगलबहुसुत्तपदविधि पत्तेय पत्तेय च दसेउ दारुदङ्गायपुच्छसलोमणिलोममादि सुत्तपदा पत्तेय वण्णेउ तो कि दोसा एगत्तमावण्णा ? एगत्त णाम बहुसमासपदावण्णसु एकक्क चेव देह, अहवा - बहूहि तहारिहेसु एकक्क चेव छम्मा देह, गुरुसु वा लहु देह, लहुसु वा गुरुसु, मासिए वा दुमासादि जाव पारचिय देह, पारचिए वा हेट्ठाहुत्त जाव पणग देह, त मा एव एगत्त करेह, जहा पत्तेय परूवणा आवत्ती य तथा पत्तेय दाण पि करेह, कारण वा वच्च ॥६५०१॥

आचार्याह - मुणेहि एगत्तकारण -

जिण चोद्दस जातीए, आलोयण दुब्बले य आयरिए ।

एतेण कारणेणं, दोसा एगत्तमावण्णा ॥६५०२॥

जिण पडुच्च चोद्दसपुव्विमादि पडुच्च, एगा जाईए पडुच्च, पलिउच्चण आलोयण पडुच्च, दुब्बले पडुच्च, आयरिय पडुच्च, एते जिणादिए पडुच्च दोसाण एगत्त भवति ॥६५०२॥

एत्थ जिणादिएसु छसु जहक्कमेण इमे दिट्ठता -

धयकुडवो य जिणस्सा, चोद्दसपुव्विस्स नालिया होति ।

दव्वे एगमणेगे, णिसज्ज एगा अणेगा य ॥६५०३॥

जिणसु धयकुडदिट्ठतो, चोद्दसपुव्वीसु य णालियदिट्ठतो, जाईए एग अणेगदव्वदिट्ठतो, आलोयगाए एगणेगणिसज्जदिट्ठतो, ॥६५०३॥

तत्थ जिण पडुच्च जहा दोसा एगत्तमावण्णा तथा वेज्जपउत्तेण धयकुडदिट्ठतेण भण्णति -

उप्पत्ती रोगाणं, तस्समणे ओसहे य विब्भंगी ।

णाउं तिविहामइणं, देति तथा ओमहगणं तु ॥६५०४॥

“उप्पत्ति” त्ति रोगाण णिदाणकरण, तदित्यनेन रोगो सब्बभूति, “समणे” त्ति रोगप्रशमन रोगापहारीत्यर्थ । तस्स किं (तोसहत) रोगपममण ओसह, त जहावणातु विभगी, “विभगी” त्ति अणेग

टित भगी तच्च नाण, ततो विगत त विभगी, सो य मिच्छद्दिट्ठो उप्पणमोही भण्णति । “तिविहो” ति वाता पित्ता मिभन्नो वा तेसि वा समवायातो सण्णिवानितो भवति । “आमइण” ति आमतो रोगो, सो आमतो जस्म अत्थि मो आमती मण्स्मो भण्णति, तस्म सो विभगी मव्वदव्वादिकिरिय जाणतो एगो णेगो ओमहसामत्थ जाणतो रोगिणो उवमपण्णस्म तद्वा त घयाइतो गहगण देति जहा सेसो वातातिरोगो अमेसा फिट्ठति ॥६४०६॥

ओमहपयाणे य इमो चउभगो -

एगेणेगो छिज्जति, एगेण अणेग णेगहिं एक्को ।

णेगेहिं पि अणेगा, पडिसेवा एव मामेहिं ॥६५०५॥

एक्कोमहेण छिज्जंति केति कुविता वि तिन्नि वाताती ।

बहुएहिं वि छिज्जंती, बहुहिं एक्केक्कओ वा वि ॥६५०६॥

जहा एगेण घयकुडेण एगो वायातिरोगो छिज्जति, तहा एक्केण घयकुडेण “अणेगे ति तिण्णि वायाइखुभिया मण्णभावा छिज्जति ति । ‘बहुएहिं वि छिज्जति’ ति बहुएहिं वि घयकुडेहिं बहु चेव वायातीखुभियाइ छिज्जति । एस चरिमभगो । “बहुहिं एक्केक्कओ वा वि” ति बहुहिं घयकुडेहिं अचत्थमवगाढो एक्केक्को वायाइ वाहो छिज्जति । एस ततियभगो । एव जेण मासारुहेहिं रागाइएहिं मासो सेवितो सो मासेण सुज्झइ ति, जिणा तस्म मास चेव देति । ततियभगे बहुमासा पडिसेविता मदाणुभ वेग हा दुट्ठकयादीहिं य पयणुकया जहा मासेणेव सुज्झति ति जिगा तस्स चेव मास देति, जेण वा पणगादिणा सुज्झति त देति । ततियभगे तिक्कव्वमाणसविते मामे रागादीहिं वा हरिसायतस्स मासेण सुज्झति ति जिगा णाउ दुमासादी देति, रागुवरवरि वद्धिने जाव पारविय देति । चरिमभगो पुण पढमसन्निचो । अह्वा - बहुसु सच्चयमासेसु जिगा छम्मास चेव दिति ठवणारोवणवज्ज, एव अण्णेसु वि ओमहेसु चउभगो भाणियव्वो ॥६५०६॥

इमो दिट्ठतोवणतो -

धण्णंतरितुल्लो जिणो, गायव्वो आतुरोवमो साह ।

रागा इव अवराहा, ओसहसरिसा य पच्छित्ता ॥६५०७॥

जहा धण्णतरी तहा जिणो, जहा रोगी तहा माहू सावराधी, जहा ते रोगा तहा ते मुत्तुर गुणावराहा, जहा ताणि गोसहाणि तहा मासादी पच्छित्ता । एव जिणा णाउ जतिएणेव सुज्झति ततिय चेव दिति । एव जिण च पडुच्च दोसा एगत्तमावण्णा ॥६५०७॥

इदाणि चोद्दसपुव्वि पडुच्च जहा दोसाण एगत्त तहा भण्णति -

एसेव य दिट्ठतो, विव्वमिगतोहिं वेज्जसत्थेहिं ।

भिसजा करेति किरियं, सोहंति तहेव पुव्वधरा ॥६५०८॥

जहा विभगी रोगोमह चउभगा विकप्पेण अवितह किरिय करेति । “भिसज” ति - वेज्जा ते वि तहा विभगीकयवेज्जितसत्थाणुसारेण चउविकप्पेण अवितह रोगावणयणकिरिय करेति । “एसेव दिट्ठतो” ति - एमेव चोद्दसपुव्वीण दिट्ठो कज्जति, जहा ते वेज्जा तहा चोद्दसपुव्वधरा, परिहाणीए जाव पुव्वधरा, परिहाणि णाम णवपुव्वततियवत्थु ति, एए वि जिगाभिहित्तागमाणुसारओ जिगा इव अवितह जेण विमुत्तति त चेव पच्छित्त देति ॥६५०८॥

चोदकाह - “जिगा केवलणाणसामत्थनो पच्चवक्ख रागादियाण बद्धोवद्धि पस्सता तहा पच्छित्त देति, चाहमपुव्वी अपच्छन्तो कहिं दिज्ज” ?

अत्रोच्यते -

णालीत पस्वणता, जह तीइ गतो उ णज्जती कालो ।

तह पुव्वधरा भाव, जाणंती सुज्झते जेणं ॥६५०६॥

“णासीत” ति - घडितो उदगगलणोवलक्खित्तो कालो, तोए य घडियाए पस्वणा कायव्वा, जहा ‘पलित्तय्येकए कालणाणे, जहा तोए दिवारातिकालस्म य किं गत सेस वा णज्जति तहा पुव्वधरा दुक्खलक्ख भाव आगमप्पमाणतो जाणति, भावे य णाए जेण पच्छित्तेण सुज्झति ‘तम्मत्त हीणमहिय वा चउभग विगप्पेग जिगा इव पुव्वधरा वि देति, एव चोदसपुव्वीए पडुच्च दोसा एगत्तमावण्णा ॥६५०६॥ चोदसपुव्वीण णालिय ति गय ।

इदाणि जाति पडुच्च दोसा जहा एगत्तमावण्णा तहा भण्णति । अत्र दावय ३ “दव्वे एगमणेग” ति, जानी दुविहा - पच्छित्तजाती दव्वजाती य ।

एत्थ इमे भण्णति -

मासचउमामिण्हिं, बहूहि एगं तु दिज्जए सरिसं ।

अमणादी दव्वाओ, विमरिसवत्थूओ जं गुरुमं ॥६५१०॥

तत्थ पच्छित्तेकजातिय बहुसु लहुमासिएसु सरिसत्तणओ - ‘धम्मयए एक्क चेव मास दिज्जति, एक्क गुरुअ दिज्जति, लहुगुम्मजोगे गुरुअ एक्क ओहाडण दिज्जति, एव दु-ति-चउ-पच-अम्मसिएसु वि सव्वेसु वा आवण्णस्म छम्मासिय एक्क दिज्जति । दव्वेगजातीए ‘अमणादी’ पच्छद्ध, एक्कम्मि वा दव्वे अण्णेसे वा दव्वेस् अण्णेगा पच्छित्ता, “तत्थिवकदव्व” ति - असण त अण्णेगदोसपुट्ठिणरिसण, जहा त असण रायपिडो आहुडो उदउल्लो आहाकम्मिओ य, एत्थ एक्क चेव ओहाडण गुरुतर आहाकम्मियणिप्फण चउगुरु दिज्जति, “अण्णेगदव्वेसु वि” ति - असण आहाकम्मिय, पाण बीयादिवणस्सतिसघट्ट, खातिम पूतिम, सातिम उहेसिय, अह्वा-अण्णेगदव्वा एक्क असण आहाकम्मिय अण्ण असण कीयगड, अण्ण ठविय एव पाणादिया वि भाणियव्वा, एत्थ विसरिसवत्थुसु ज आहाकम्मिदि गुरुतर त दिज्जति सेसा तदतभावपविट्ठा दट्ठव्वा । एत्थ केति अणारिदिट्ठत वहेति, “दोसु वि अविरोहो” ति - अह्म आलोयणाए भणिहामो, एव जातीए एगत्तमावण्णा दोसा, एत्थ धम्मताए सुज्झति । अह्वा - जहा अतिपकावणयणपयुत्तो खारजोगो सेसमल पि सोहेति तहा ओहाडणपच्छित्त पि ससेपच्छित्ते सोहेति ॥६५१०॥ “जातीए” “दव्वे एगमणेगे” ति पय गय ।

इदाणि ‘आलोयणादिया तिण्णि दारा भण्णति, तेसि इमे दिट्ठता -

आगारिय दिट्ठंतो, एगमणेगे य तेण अवराहा ।

मंडी चउक्कमगे, सामियपत्ते य तेणम्मि ॥६५११॥

आलोयणाए आगारिदिट्ठतो, तेण दिट्ठता य । दुव्वले भडिदिट्ठतो । आयरिए सामितपत्त, तेण दिट्ठतो

॥६५११॥

१ पादलित्सूत्रकृते । २ त सम । ३ गा० २२७ । ४ मदपरिणामतया, इत्यपि पाठ । ५ गा० ६५०२ । ६ गा० ६५०३ ।

तत्थ आलोयणविगप्पा इमे -

णिमेज्जा य वियडणे, एगमणेगा य होति चउभंगो ।

वीसरिओसण्णपदे, विति तति चरिमे मिया दो वि ॥६५१२॥

“वियडण” ति - आलोयणा - एक्का णिसिज्जा, एक्का आलोयणा, एव चउभंगो । तत्थ पढमो विधीए अविव्घेण असेमाइयारे आलोयणस्स ।

वित्तिओ पम्हट्टाइयारस्स मायाविणो वा, आलोचियवदिएसु पुणो पच्छा सम्मालोयणरिणयस्स गुरुम्मि तह णिविट्ठे चेव वदण दाउ आलोवेति तस्म भवति ।

तनियभंगो बहुणा कालेण उस्सण्णवराहपदस्स बहुपडिमेविस्स वा एगदिण आलोयण अवधारेंतस्स, अहवा - गुरुम्मि वा काइगभूमिगतपच्छागते तत्थ णिसोदण णिमेज्जा एक्का एव आलोयणा भवति ।

चरिमभगे दो वि सभवति अवराहा विस्मरण उस्सण्णपदत्तण च ॥६५१२॥

एत्थ चउसु वि भगेसु अमायाविणो अणेगावराहस्सऽवि गुरुतर एक्क पच्छित्त इमेण अगारिदिट्ठेण -

एगावराहडंडे, अण्णे वि कहेतऽगारि हं मती ।

एवं णेगपदेसु वि, डडो लोउत्तरे एगो ॥६५१३॥

जहा एगो रहगारो । तस्स भज्जाए बहू अवराहा कया, ण य भत्तुणा णायव्वा । अण्णया घर अवाउडदार मोत्तु पमायओ मेज्झलियघरे ठिना । तत्थ य घरे साणो पविट्ठो । तस्समय च भत्ता आगओ । तेण दिट्ठो । पच्छा सा अगारी आगया । त अवराहि ति काउ पिट्ठिउमारद्धो । सा वि चित्तेइ अण्णे वि मे बहू अवराहा अत्थि, ते वि मे णाउ एमम पुणो पिट्ठिहि ति २इमेण मे ते सब्बे कहेमि ।

भणाति -

गावी पीता वासी, त हारिता भायणं पि ते भिण्ण ।

अज्जेव ममं सुहत, करेहि पडवो वि ते हरिओ ॥६५१४॥

गावी वच्छेण पीया, कमभायणमण्ण वा भग्ग, एवमादिअवराहे स एक्कसरा कहिएसु तेण सा त एक्कवार पिट्ठिता । एव लोउत्तरे वि अणेगावराहपदावण्णेसु एगो पच्छित्तदडो अविरुद्धो । ॥६५१४॥

अथवा - एत्थेव आलोयणत्थे इमो दिट्ठो -

णेगासु चोरियाध, मारणडंडो न सेसगा डंडा ।

एवं णेगपदेसु वि, एगो डंडो ण उ विरुद्धो ॥६५१५॥

एगो चोरो । तेण य बहुगागीना चोरिया कयाओ । कस्स ति भायण हरिय, कस्स ति पडओ, कस्स ति हिरण, कस्स ति सुवण्ण । अण्णया तेण राउले खत्त खय, रयणा गहिया, गहिओ य सो आरक्खेण रण्णो उवट्ठविओ ।

१ इच्छे (इयानि) ।

तस्ममय अण्णे उवट्ठिता भणति - अम्ह वि एतेण हड ति ।

रण्णा रयणहारि त्ति काउ सेसचोरियाओ य णाउ तस्स मारणटो एक्को आणत्तो,
मेमचोरियदडा तत्थेव पविट्ठा ।

एव लोउत्तरे वि अण्णेगपदेसु एगडडो अशिकुट्ठो ।

वितियभगे मायाविणो पुणा आलाएनस्स अण्ण ि पच्छित्त दिज्जति । एव जत्तिया वारा माई
आलोणत्ति तत्तिया पच्छित्ता ।

तनियभगे अमढस्स जह्विम आलोयणा ममायानि तद्विस्स एगपच्छित्त दिज्जति ।

चरिमभगे तेण णिसेज्जा क्या आलोइय च भणति य सम्मत्ता मम आलोयणा, दिण्ण पच्छित्त,
उट्ठिता गुरू, पुणो सभरिय तक्खण चेव गिमज्ज काउ पुणो य आलोइय, ताहे गुरू असढस्स भणति त चेव ते
पच्छित्त, असढभावा अण्ण ण देइ । अहवा - साधूण देवमियालोयणकाले गुरूण अण्णेग णिसिज्जा साधूण अण्णेगा
आलोयणाओ, एव आलोयण पडुच्च एगत्तमावण्णा ॥६५।१५॥

इदाणि दुब्बल पडुच्च भण्णति । तत्थ ३भडीचउक्कभगदिट्ठतो । भडी वलिया बइल्ला
वलिया, एव चउक्कभगो । पढमभगे बहु आरुभिज्जति, सेसेसु तिसु भगेसु इपा विभासा - वितिय
भगे ज बइल्ला सक्कति कड्डिउ तत्तिय आरुभिज्जति । तत्तियभगे जेण भडी ण भज्जति । चरिमभगे
उभय पि जत्तिय तरति तत्तिय आरुभिज्जति ।

एयस्सिमो उवणओ -

संघयण जह यगडं, धिती उ धुज्जेहि होति उवणीतो ।

विय तिय चरिमे भगे, तं विज्जति ज तरति वोढुं ॥६५।१६॥

सगडसरिच्छ संघयण धितियदल बइल्लतुल्ल, एत्थ वि चउभगो । पढमे सब्ब दिज्जति, वितिए
धितिअण्णरूव, ततिए संघयणाणरूव, चरिमे उभयाणरूव, ज तरति तत्तिय दिज्जति ॥६५।१६॥ एव दुब्बल
पडुच्च दोमाण एगत्त ।

इदाणि आयगिय पडुच्च भण्णति 'सामिपत्तेयनेणम्मि' त्ति -

णिवमरण मूलदेवो, आमऽहिवामे य पडि ण तु डंडो ।

संकप्पियगुरुदंडो, मुचति ज वा तरति वोढुं ॥६५।१७॥

एगत्थ णगरे राया अपुत्तो मओ, तत्थ य रायचित्तगेहि देवयाराहणणिमित्त अस्सो य
हत्थी ए अट्ठियासिओ । इओ य - भूलदेवो चोरिय करेतो गहिओ, तेहि रज्जचित्तगेहि वज्जो
आणत्तो, णगर हिंडाविज्जति । इतो य अस्म हत्थी मुक्का, अट्ठारसपयतिपरिवारो दिट्ठो भूलदेवो ।
अस्सेण हेसिय पट्ठी च उड्डिया, हत्थिणा गुलुगुलाविय गधोदग च करेण धेत्तु अभिसिक्तो खवे य
उड्डिओ, सामुद्पाढहं य आइटो एम राय त्ति । तस्स चोरियअवराहा सब्बे मुक्का रज्जे ठविओ ।
एम दिट्ठतो ।

इमो उवणओ-एगस्स बहुसुयस्स अहवा - पच्छित्तदडो गुरूसपितो गच्छे आयरिओ
कालगतो, सो य माधू आयरियजोगो त्ति आयरिओ ठविओ, विगडच्छेयमुत्तत्थतदुभयादीहि सगहो कायव्वो,
ताहे ज सक्केति वोढु त दिज्जति, अह ण सक्केति तो से सब्ब मुचति, एव दोमा एगत्तमावण्णा ॥६५।१७॥

१ समपत्ति, इत्थपि पाठ । २ गा० ६५०२ । ३ गा० ६५११ । ४ गा० ६५०२ । ५ गा० ६५११ ।

चोदगाह – माधूक्त दोसेगत्तकारण, कि इमाए एहहमेत्तीए ठवणारोवणआक द्विविकट्टीए इना पच इनो दस ति पच्छित्ता वेत्तु दिज्जति, जुत्त गुरुणा आगममणुसरित्ता ज पच्छित्त आरुह त ठवणारोवणभनरेण एककमरा हदि इम पच्छित्त एव दिज्जउ ।

आजायाह –

चोदग पुरिमा दुनिहा, वणिण मरुए णिहीण दिट्ठतो ।

दोण्ह वि पच्चयकरणं, सव्वे सफला कया मासा ॥६५१८॥

मरुगसमाणो उ गुरु, पूडज्जति मुच्चते य मे सव्वं ।

साह वणिओ व जहा, वाहिज्जति सव्वपच्छित्तं ॥६५१९॥

सुवहूहि वि मामेहिं, छण्हं मासाण परं न दायव्वं ।

अविकोवितस्स एव, विकोविण अण्णहा होति ॥६५२०॥

वीसं वीसं भंडी, वणमरुसव्वाओ तुल्ल भंडीओ ।

वीमतिभाओ सुक्कं, मरुगमरिच्छो इय अगीओ ॥६५२१॥

हे चोदग ! पुरिमा दुविहा गोया अगीयत्या य । तत्थ गीयत्याण अगीयपरिणाममाण य आवण्णाण जतिय दायव्व त विण। आकट्टिविकट्टीए दिज्जति ।

तत्थ दिट्ठतो वणिण । तस्स वीस भंडीओ एगजानियभडभरियाओ य सव्वाओ समभराओ, तस्स य गच्छतो सु कउणे सु किओ उवट्ठितो – “सु क देहि” ति ।

वणिओ भणति कि दायव्व ?

सु किनो भणति – वीसतिभाओ ।

ताहे तेण वणिण सु किण य पग्निच्छित्ता, मा ओरुहणपच्चारुहणतेसु वक्खेवो ‘भविस्मिन् ति काउ एका भंडी सु के दिण्णा ।

एव सर्वेण गीयत्याण अगीयपरिणाममाण य विणा आकट्टिविकट्टीए दिज्जति ।

जे पुण अगीयत्या अपरिणामगा य अतिपरिणामगा य ते जति छण्ह मासाण परेण आवण्णा, तेसि दोण्ह वि पच्चयकरणदु। सव्वे मासा ठवणाओवगविजाणेण सफला काउ दिज्जति ।

एत्थ दिट्ठतो – मुखमरुओ, तस्म वीम भंडीओ एककभडतुल्लभराओ । सु कितेण भणिओ – एककभंडीभड दाउ वच्चसु, किमहोतारणवक्खेवण ।

मुखमरुओ भणति – ओहरेत्ता एक्केक्काओ वीमतिभागो गण्हमु, मकिण तस्म पच्चयदु। ओहरेत्ता एक्केक्काओ वीसतिभागो गट्ठिनो ।

मरुगमरिच्छा अगीता, भुक्कियसरिसा गुरु ॥६५१९-२१॥

अहवा – णिहिदिट्ठतो इमेसु कज्जेसु अकज्जेसु य जनाजणसु उवसघरिज्जनि, जओ इम भणति –

अहवा वणिमरुण य, णिहिलंभणिवेदणे वणियदंडो ।

मरुण पूयविसज्जण, इय कज्जमकज्ज जतमजते ॥६५२२॥

एकवेण वणिणं णिही उक्खणिओ, न अण्णेहि णाउ रण्णो णिवेइय, वणिओ दडिओ णिही य से हडो । एव मरुणं वि णिही लडो । रण्णो णिवेइओ । रण्णा पुच्छिओ । तेण मव्व कहिय । मरुओ पुज्जो त्ति काउ सो से णिही दक्खिणा दिण्णा ।

‘इय’ त्ति — एव जो कज्जे जयगाकारी तस्स सब्ब मरुग्गस्सेव मुज्जति । जो य कज्जे अजय-
णकारी, जे य अकज्जे (जयगाकारी य अजयगाकारी) वा एतेसु [वारपत्तेसु] वणिग्गस्सेव पच्छित्तं दिज्जति ।
एवर — कज्जे अजयगाकारिस्स लहुतर दिज्जति ॥६५२२॥

अहवा — ज हिट्ठा भणिय जहा आयरियस्स सब्ब मोत्तव्व त कीस आयरिओ मुज्जति ? कीस वा सेसा वाहिज्जति ? एत्थ वा णिहिदिट्ठो ।

जतो इम भण्णइ —

मरुगसमाणो उ गुरू, पृड्जति मुच्चते य से सव्वं ।

साह वणिओ व जहा, वाहिज्जति सव्वपच्छित्तं ॥६५२३॥

उवमवारो आयरिएण कायव्वो पव्ववत् । आयरियस्स गच्छोवग्गह करतस्स सव्व पच्छित्तं फिट्ठइ, नेस कठ ॥६५२३॥

पुनरप्याह चोदक — ज तुब्बे सुत्तखण्ड पणवेह इम — “तेण पर पत्तिउच्चि वा अपत्तिउच्चि वा ते चेव छम्मासा”, त कि एस सव्वस्सेव णियमो अह पुरिसविभागेण त भण्णइ ।

आचार्याह —

सुवहृहि वि मासेहिं, ‘छण्हं मासाण परं न दायव्वं ।

अविकोवितस्स एवं, विकोवि ए अण्णहा होति ॥६५२४॥

तवारिहेहि बहृहि मासेहिं छम्मासाण परं न दिज्जति, सव्वस्सेव एस णियमो, एत्थ कारण जम्हा अम्ह वड्ढमाणसामिणो एव चेव पर पमाण ठवित, छम्मासपग्गो बहुसु वि मासेसु आवण्णेसु सव्वे मासा ठवणारोवणप्पगारेण सफला काउ अविकोवियस्स एव दिज्जति । जो पुण अविकोवितो तस्स “अण्णह” त्ति विणा ठवणारोवणाए छम्मासा चेव दिज्जति, सेस अतिरित्तं सव्व छडिज्जति ।

चोदकाह — “जति भगवया तवारिहे उक्कोस छम्मासा विट्ठा तो छम्मासातिरित्तमाससेवीण छेदादि कि न दिज्जति” ?

आचार्याह — “सुवहृहि” गाहा — जो अगीयत्थो अपरिणामतो अतिपरिणामतो वा छेदस्स वा अपरिहो छेदादि वा जो ण सहृति एतेसिं छम्मासो वरिसवहृहि वि मासेहिं आवण्णाण छम्मासा चेव ठवणारोवणप्पगारेण दिज्जति । ‘अवि’ पदत्थसमावणे एते अविकोविता जनि वि छेदमूलातिपत्ता तहा वि छेदो मूल वा ण दिज्जति, तवो चेव दिज्जति ।

अहवा — अवि पदत्थसमावणे, जति पुण अविकोवितो वि आउट्टियाए पविदिय चातेति दप्पेण वा भेट्ठुण सेवति, तो से त्रेदो वा मूल वा दिज्जति । जे पुण एगिदियादिविराहण अजयणसेवाए वा निवकारणसेवाए

वा अभिव्यववाए वा छेदमूलापत्ता ते अविकोत्रियस्स ण दिज्जति, तेसु छम्मासा चेव दिज्जति । जो पुण विकोवितो तस्म “अण्ह” ति छम्मासोवरि बहुसु मासेसु वा प्रावणस्स उग्घातिथ । वितियवागाण अणुग्घातिथ दिज्जति, छेदो ण दिज्जति । ततियवाराण छदो वि दिज्जति मूल ण दिज्जति ॥६५२४॥

को पुरिसो पुण विकोवितो अविकोवितो वा ? भण्णति -

गीओ विकोवितो खलु, कयपच्छित्तो सिया अगीओ वि ।

छम्मासियपट्टवणा, एतस्स संसाण पक्खंवि ॥६५२५॥

पुव्वद कठ । जो वा भण्णो - ‘अज्जो ! जइ भुज्जो भुज्जो सेविहिस्सि तो ते च्छेद मूल वा दाहामो”, एमा वि विकोविदा भण्णति एसो वि विकोविदववहारेण ववहारियवो । एतेसि चेव विवरीना जो य पढमताए पच्छित्त पडिवज्जते - एते अविकोविआ भण्णति । एतज्जो विकोवितो सो जति छसु मासेसु पट्टवितेसु अतरं जति वि मासिग्घदि पडिसवति त तस्म पुव्वठवियछम्मासस्स जे सेमा मासा दिना वा अच्छति ताण मज्जे पक्खेवो अणुग्घहम्मिणेण णिरणुग्घहकसिणण वा कज्जति ॥६५२५॥

एव वक्खमाण “णिहीण दिट्ठतो” ति पयस्स इम वा वक्खमाण -

अहवा महानिहिम्मि, जो उनचारो स चेव थोवे वि ।

विणयादुपचारो पुण, छम्मामे तहेव मामे वि ॥६५२६॥

अहवेत्यय विकल्प, महाणिह उक्खममाणे जारिसो उवयारो कीरइ तारिसो थोवे वि निहिम्मि, एव अवराहालोपणाए जारिसो छम्मासावराहालोपणाए निमिज्जादि विणयो-तारो कीरइ तारिसो मासिए वि आदिगण्णाओ दब्बादिसु तारिसो य पस्त्येसु चेव प्रयत्ने ॥६५२६॥

सीसो पुच्छति - “एव तवच्छेदमूलारुह पच्छित्त कओ उपपज्ज ? ।”

गुरु भणइ -

मूलतिचारेहितो, पच्छित्तं होति उत्तरेहि वा ।

तम्हा खलु मूलगुणे, नऽडक्कमे उत्तरगुणे वा ॥६५२७॥

पाणवहावीहि वा उत्तरगुणेहि विराहिहि एय पच्छित्त भवइ तम्हा मूलगुणा ण विराहेयव्वा उत्तरगुणा वा ॥६५२७॥

चोदगो भणइ - ‘वा” सहोवादाणतो इमा अत्यावत्ती उवलक्खिज्जति -

मूलव्वयातिचारा, जयसुद्धा चरणभंसगा होति ।

उत्तरगुणातिचारा, जिणमासणे किं पडिक्कुट्ठा ॥६५२८॥

जति मूलगुणांतयारा चेव चरणभंसगा भवति तो माहूण उत्तरगुणांतयारा चरणअवराहणा होता साहूण जिणसासणे किं पडिसिद्धा ? तेषि पडिसेवो णिरत्यगो पावति ॥६५२८॥

अह इम होज्ज -

उत्तरगुणातिचारा, जयसुद्धा चरणभंसगा होंति ।

मूलव्वयातिचारा, जिणसासणे किं पडिक्कुट्ठा ? ॥६५२९॥

अहं तुम्हे भणह - उत्तरगुणाद्वारा चरणभ्रं सका होति तो मूलगुणाद्वारा साधूण मा पडिसिज्झतु
अत्रिगहणत्वाच्च, पडिमेविज्जनु, ण दोमो ॥६५२॥

आयरियो भणइ -

मूलगुण उत्तरगुणा, जम्हा भमंति चरणमेढीओ ।

तम्हा जिणेहि दोन्नि थि, पडिमिद्धा सव्वमाहूणं ॥६५३०॥

मूलगुणजम्हा दो वि पडिसेविज्जमाणा चरणसेढीओ भ्रं शति, तण कारणेण दोण्ह वि अतिचरण
जिणेहि पडिमिद्धा । ज पुण 'वाकारो' अन्त्यावत्ति घोसेह, तत्थ वाकारो इम दरिसेइ - मूलगुणा वि पडिसे-
विज्जमाणा चरणाओ भसति, उत्तरगुणा वि पडिसेविज्जमाणा चरणाओ भसति, दो वि वा जुगव सेवमाणा
चरणाओ भसति । अहवा - वागारो इम अत्थ दरिसेइ - मूलगुणेहि पडिसेविज्जमाणेहि मूलगुणा ताव हता
चेव उत्तरगुणा वि हम्म त, उत्तरगुणेहि पडिसेविज्जनेहि उत्तरगुणा ताव पडिसेविते चेव हता, मूलगुणा वि हता
लभति ॥६५३०॥

कह ?, उच्यते इमेण दिट्ठतमामत्थेण -

अग्गधातो हणे मूलं, मूलधातो य अग्गगं ।

छक्कायमंजमो जाव, ताव णुमज्जणा दोण्हं ॥६५३१॥

जहा तालदुमम्म अग्गसूतीए हताए मूलो हतो चेव, मूले वि हते अग्गसूती हता,
एव मूलगुणेषु वि उवसत्तारो ।

एत्थ चोदगाह - "जति, मूलगुणातो अण्णोणविणासो तो णत्थि को य पवयणे मूलगुणवारी ।

कम्हा ? जम्हा णत्थि कोति सो सज्जो जो मूलगुणाण अण्णयर ण पडिसेवति, अण्णयरपडि-
सेवणाण य दोण्ह वि मूलगुणाण अभावो दुण्ह वि अभावे सामादियाविसजमस्स अभावो, सजमस्स अभावे
पचण्ह णियठाण अभावो, एव ते सव्व चारिणातो भसो लभति, अचरित्त वा तित्थ भवति सुण्ण वा
पवयणमिति ॥६५३१॥

आचार्याह - "छक्काय" पच्छद्ध एयम्म इमा वक्का -

जा सजमता 'जीवेसु ताव मूलगुणउत्तरगुणा य ।

इत्तरिय छेद सजम, नियंठ बकुसा य पडिसेवी ॥६५३२॥

"जीवेसु" ति - जाव छसु जीवणिआयेषु सजमता लभति ताव "दोण्ह" ति मूलगुणाण
अणुसज्जणा लभति, ताव इत्तरसामादियसजमस्स छेदोवट्ठावणियस्स य अणुसज्जणा लभति । जाव य दो
सजमा लभति ताव बउसणियठो पडिसेवणाणियठो य अणुसज्जति । तम्हा णो सुण्ण पवयण, ण वा अचरित्तो,
ण वा मूलगुणपडिसेवाए सज्ज चारित्ताओ भसो भवति ॥६५३२॥

मूलगुणपडिसेवाए चरित्तभसे इमो विसो -

मूलगुण दइयसगडे, उत्तरगुण मंडवे सरिसवायी ।

छक्कायरक्खणट्ठा, दोसु वि सुद्धे चरणसुद्धी ॥६५३३॥

मूलगुणे दो दिदुता—दतितो सगडं च, उत्तरगुणा वि एतेसु दसेयव्वा । उत्तरगुणेषु मंडवदिदुतो, एत्थ वि मूलगुणा दसेयव्वा । तत्थ दतिते उदगभरिते जइ पंचमहद्वारा जुगवं मु चंति तो तक्खणा रिक्को दतितो भवति । अहं पंचमहद्वाराण अण्णयरदारं एक्कं मु चंति तो कमेण रिक्को भवति । तस्सेव दतितस्स जे अण्णे सुहुमच्छिदा तेसु गलमाणेषु चिरकालेण रिक्को भवति ।

एवं महव्वएसु वि उवसंहारेयव्वं । भणंति य गुरवो एगवयभगे सर्वव्रतभंगो भवति, एस णिच्छयतो, ववहारतो पुण तमेवेक्कं भग्गं, एगभंगेण कमेण चरित्तं गलड ।

अण्णे भणंति—दप्पतो चउत्थासेवणे सव्वचरित्तभंगो, सेसेसु पुण अभिक्खासेवाए महल्लउत्तियारे वा भंगो भवति ।

सगडस्स पंच मूलंगा—दो चक्का, दो उद्धी, अक्खो य । तेहिं अविणट्टेहिं उत्तरंगेहिं यावज्ज-कीलकलोहपट्टादीहिं य समग्गं सगडं भारवहणखमं भवति पलोट्टए य । अहं तेसिं मूलगाणं एक्कं पि भज्जति तो न भारखमं भवति ण पलोट्टए य । सेसेहिं उत्तरंगेहिं केहिं चि विणा सगडं भारखमं पलोट्टति य । बहूहिं पुण उत्तरंगेहिं वि विसंघातित्तं ण तहा भारखमं पलोट्टति य ।

एवं चरणे वि मूलुत्तरगुणुत्तो साधू चरणभरं उव्वहति, सव्वो उवणयो कायव्वो । उत्तरगुण-विराहणाए पुण चिरकालेण चारित्तं भज्जति ।

कथं ? उच्यते—मंडवदिदुतेणं जहा एरंडमंडवो, तत्थ एगदुगादिसरिसवपक्खेवेण बहूहिं पक्खित्तेहिं मंडवभंगो न भवति, अहं तत्थ महल्लसिलापक्खेवो कज्जति तो तक्खणा भज्जति, एवं चारित्तमंडवो बहूहिं उत्तरगुणेहिं कालयो य चिरेण भज्जति, मूलगुणातियारसिलाहिं पुण सज्जं चेव भज्जति, आतिगहणाओ सिगय-सालि-तंडुलाइं । जम्हा एवं मूलगुणपडिसेवाए खिप्पं, उत्तरगुणपडिसेवाए य चिरेण चारित्तभंगो भवति, तम्हा मूलुत्तरगुणा नो अइक्कमेज्जा । कम्हा ? उच्यते—“छक्कायरक्खण्णा”, छक्कायरक्खणे “दो वि” ति—मूलुत्तरगुणा सुद्धा भवति, तेसु य सुद्धेसु णियमा चरित्तसुद्धी, चरित्तसुद्धीओ य अभिलसिताराहणा भवति ॥६५३३॥

शिष्याह—“पाणवहादिया पंच मूलगुणा तेणज्जंते, उत्तरगुणा न याणामो । ते के केवतिया वा” ? अतो भण्णति—

पिंडस्स जा विसुद्धी, समितीओ भावणा तवो दुविहो ।

पडिमा अभिग्गहा वि य, उत्तरगुण मो वियाणाहिं ॥६५३४॥

एतेसिं कमेण इमा संखा—

तिग वाताला अट्ठ य, पणुवीसा बार बारस च्चेव ।

छण्णउदी दव्वादी, अभिग्गहा उत्तरगुणा उ ॥६५३५॥

पिटविसोही ति विहा—उग्गमो उप्पादणा एसणा य । तत्थुग्गमो सोलसविहो, उप्पादणा सोलसविहा, एसणा दसविहा, एते बायालीसं । इरियादियाओ पंच, मणातियाओ तिण्णि, एयातो अट्ठ समितीओ । महव्वयभावणाओ पणवीसं । तवो दुविहो—अग्गिंतरो बाहिरौ य, एक्केक्को छविहो य एस दुवालसविहो । भिक्खुपांडिमाओ दुवालस, एते सव्वे णवणउत्ति मेदा । अहं इरियादियाओ पंच समितीओ कज्जंति तो छण्णउदं मेदा भवति । अभिग्गहा संखेवओ चउव्विहा—दव्वखेत्तकालभावभिण्णा अहवा—एक्कं चेव अभिग्गहं दव्वखेत्तकालभावविसिट्ठं गेण्ड, अभिग्गहा य परिमाणओ अणियतत्ति तेण ण एतेसु

पक्खिता, ण वा परिमाणमभित्ति ॥६५३५॥ एव मखेवतो भणिता उत्तरगुणा तेऽतिपसगतो भणिय ।

उदाणि पगत भणनि - ज नि हेट्ठा एगुणवोसाण उद्देमएसु पच्छित्त वणिणय तस्सिमे पुरिसेसु आवत्तिविमेसा -

णिग्गयवट्ठंता या, सचइया खलु तहा अमचइता ।

एक्केक्का ते दुविहा, उग्घात तहा अणुग्घाता ॥६५३६॥

जे ने पायच्छित्त वहनगा ते दुविहा - “णिग्गतं वट्ठमाणं य ।” णिग्गया णाम जे तव बोलीणा छेदादियत्ता, वट्ठना णाम जे तवे चेव वट्ठति । तत्य जे वट्ठना ते पुणा दुविहा - “सचत्तिता असचइया य ।”

सचत्तिता णाम जे छण्ह मामाण परेण पाच्छित्त पत्ता त मत्तमासादि जव आसीत सत्त मासाण ति नेमि ठवणागेवणविशयेण दिवसा वेत्तु छम्मासो णिपाएत्ता दिज्जति ।

असचइता णाम जे मास दुमास निमास चउ-पच-छम्मासिए वा वट्ठति ।

एने मवइया असचइया पुणो एक्केक्का दुविधा - उग्घाया अणुग्घाइया य । उग्घाय त्ति लहुगा अणुग्घाय त्ति गुरुगा ॥६५३६॥

सचयामचइएसु उग्घाताणुग्घाएसु इमो पट्टवणविही -

मामाड असंचइए, मंचइए छहि उ होइ पट्टवणा ।

तेरस पदअमंचहिए, संचति एक्कारस पदाडं ॥६५३७॥

तत्य असचत्तिने जो मास आवण्णो तस्स मासेण चेव पट्टवणा, एव दुमासावण्णस्स दोमासिया पट्टवणा, एव जाव छम्मासावण्णस्स छम्मासिता पट्टवणा । जो पुण सचइयावण्णो तस्स णियमा छहि चेव मामएहि पट्टवणा । पट्टवणा णाम दाण । त दाणमसचयसवएसु जहासख तेरसपद एक्कारसपद च ॥६५३७॥

कह तेरसपदा एक्कारस वा ?, उच्यते -

तवतिगं छेदतिगं, मूलतिगं अणवट्ठाणतिगं च ।

चरिम च एगसरगं, पढमं तववज्जियं वितियं ॥६५३८॥

असचए तेरस पदा इमे - असचए उग्घायमामावण्णस्स पढम मासो दिज्जति, वितियवारे उग्घाय-चउमासो दिज्जति, तइयवारे उग्घाय छमामतव दिज्जइ । ते वि उग्घाततवे उग्घाता चेव दिज्जति ततो, पर तिमि वारा छेद, ततो पर तिणि वारा मूल ततो पर तिणि वारा अणवट्ठ, ततो पर “चरिम” ति - पारचिय त । “एगसरग” ति एक्क वार दिज्जति । असचए अणुग्घातिए वि एव चेव तेरसपदा भाणि-वन्ना । “पढम” ति - अमचत्तिन एय गय । “तदवज्जित वितिय” नि - पढमतवदुग ज तेण वज्जिय । “वितिय” ति सचत्तिय एक्कारसपदिय भवति । अहवा - “पढमतववज्जित वितिय” ति - पढमतवदुग ज तेण वज्जिय “वितिय” ति सचत्तिय एक्कारसपदिय भवति, ॥६५३८॥

ते एक्कारस पदा सचत्तिए, उग्घानिण इमे -

छेदतिगं मूलतिगं, अणवट्ठतिगं च चरिममेगं च ।

संवट्ठितावराहे, एक्कारस पदा उ संचइए ॥६५३९॥

“संवट्टिनावराहं” त्ति - ज ठवणागोवणप्पगारेण बहुमातेहिंतो दिणा वेत्तु ते संवट्टिता एक्क छम्मासिय णिप्फातिय त संवट्टिनावराहो भणति, त एक्क दाउ ततो पर छेददिगा पूर्ववत् । एव सचइए उग्घातिए एक्कारसपदा, अणुग्घातिते वि एव चेव एक्कारस पदा भवति । ॥६५३६॥

एय पच्छित्त जे वहति पुग्गिंसा ते ति विहा इमे -

आततर परतरे वा, आततरे अभिमुहे य निक्खित्ते ।

एक्केक्कमसंचतिए, मंचति उग्घातऽणुग्घाते ॥६५४०॥

पढमो आयनरो परतरोवि । वित्तियो आततरो णा परतरो । ततितो परतरो णा आततरो । अणो पुण अणततर चउत्थ भणति, सो य मद्वाहुकयणिज्जुति त्तिपातलो ण सम्मयो ।

कम्हा ? उच्यते - जम्हा सो जइ इच्छिय करेति तो आयतरसमो दट्ठवो, अह वेयावच्च करेति तो परतरसमा दट्ठवोति, तम्हा णत्थि चउत्थो पुरिसभेदो । जे पुण चउत्थ पुरिसभेद भणति ते पुरिसभेद विक्कपोवलभाओ अत्थतो उण त्रणनगमपज्जवत्तणतो अविरोहियत्तणो य सभवतीत्यथ । एतेसि इम सरूव-पडमो सो तववल्लियो जाव छम्मासखमण पि काउ समत्थो, त च तव करेतो आयरियाइवेयावच्च पि करेति, सलद्धित्तणतो, तेण एस उभयतरो । आयतरो पुण तववल्लियो वेयावच्चलद्धो णत्थि । परतरस्स पच्छित्तकरणे सामत्थ णत्थि वेयावच्चकरणलद्धी मे अत्थि । चउत्थस्स पुण अणततरसम तववेयावच्चेसु दोमु वि सामत्थ अत्थि, णवर - जुगव ण सक्केति काउ, नव करेता वेयावच्च ण सक्केति, वेयावच्च वा करेता तव ण सक्केति, एव अणततरतो क्रमात् कगेतीत्यथ । एत्थ जो उभयतरो आयनरो य एते दो वि गियमा पच्छित्तवट्ठणाभिमुहा भवति, ततिए पुण जाव वेयावच्च करेति तार सपच्छित्ते निक्खित्ते कज्जति । एत्थ एक्केक्के पुरिसे पच्छित्त ज वहति त वा निक्खित्त । त मचइय वा पुगो एक्केक्क दुविह - उग्घात अणुग्घात ति । ॥६५४०॥ एव सखेवआ परुवित्त ।

इदाणि एमेवत्थो मवित्तरो भणति ।

तत्थ जो पढमो उभयतरो त्ति तस्स आयरिया इम दिट्ठत कप्पति -

मास जुयल हरिसुप्पत्ती, सोडदियमाइ इदिया पंच ।

मामो दुगतिगमामो, चउमासो पंचमासो य ॥६५४१॥

एक्को सेवगपुरिसो राय उल्लम्मति, सो य राया तस्स वित्त ण देनि । अणया तेण राया कम्हि य कारणे परितोसियो, ततो पर तेण रण्णा तस्म तुट्ठण पतिदिवस सुवण्णमासतो वित्ती कता, पहाण च से वत्थजुयल दिण्ण ।

एव तस्स उभयतरस्स दुहा हरिसो जानो, एक्क मे पायच्छित्तदाणेण अतिदार्मल्लिणो अप्पा सोहिआ, वित्तिय गुरूहि वेयावच्चे णिज्जुत्तो गिज्जरा मे भविस्सति ति । एव सो पायच्छित्त वहतो वेयावच्च करेता अण पि पायच्छित्त आवज्जेज्ज ।

कह ? उच्यते -

सोडदियमादीण इदियाण पचण्ह अणतरेण आतिगट्ठणातो कोहादीहि वाऽऽणज्जेज्ज, त पुण थोव पणगादी जाव वीसतिरातिदिय, बहु पारचियात्ति, औमत्थगपरिहाणीए जाव मासिय, एत्थ थोवे बहुए वा आवण्णस्स भिण्णमासो दिज्जइ ॥६५४१॥

कम्हा ? उच्यते -

तदवलितो मो जम्हा, तेण व अण्णे दिज्जिणए बहुगं ।

परतरओ पुण जम्हा, दिज्जति बहुए वि ता अप्प ॥६५४२॥

जम्हा सो पयच्छित्तनवीकरणे पितिमघयणवलितो 'तेण व' ति - तेण किल कारणेण पणमादी अप्प ि आरणस्स बहुभिणमामा दिज्जति । जम्हा पुण सो आयरियादि पर वेयाउच्चकरणेण अन्ने तारेद नण मे आरचियादि बहु पच्छित्त आवणस्स थोव भिणमामो दिज्जति । थोवे बहुए वि आवणस्स भिणमास दाणे कारण भणिय - ददियादीहि पुणो पुणो गावज्जनस्स आवत्तीकमो भण्णाति - "२मासो दुगति" पच्छिद, मासगट्टणेण भिणमामो सगलमामो य गहिओ ॥ ५४२ ॥

एतेमि च भिणमासादियाण आवत्तीदाणे इम परिमाण -

'वीमऽट्टारम लहु गुरु, भिण्णाणं मामियाण आवण्णो ।

सत्तारम पण्णारम, 'लहुगुरुगा मामिया होति ॥६५४३॥

सो उभयतरणो पट्टावियपच्छित्त बहुनो वेयावच्च च करेनो जति थोव बहु वा उग्घायमणुग्घाय वा अण्णो तो तम् जति उवातित पट्टविन तो मे उग्घ निते चैव भिणमामो दिज्जति, जति पुणो वि अट्टिणो मे पुणोवि भिणमामा दिज्जति, एव बीस वारा भिणमामो दयव्वो । जइ वीमातो पण्णे आउज्जेज्ज ततो मे थोवे बहुए वा लहुम सा सत्तर वारा दिज्जति, एत्थ थोव पणगादिभिणमासत, बहु पुण मासादिप रचिय त एव इमामान्ति वि, तिट्ठल्ल ठणा थोव उग्गिमठणा बहु भाणियत्वा ॥ ६५४३ ॥

सत्तरसण्ह मामियाण उवरि जतो पुणो वि आवज्जति तो ^३"दुगतिगमामो" ति-अस्य व्याख्या -

उग्घातियमामाण, सत्तरमेव य अणमुयतेणं ।

णेयव्व दोण्णि तिण्णि य, गुरुगा पुण होते पण्णरम ॥६५४४॥

दोमामिय पि उग्गानिय सत्तरमवारा ि जति जइ पुणो वि आवज्जइ तो नेमामिय पि सत्तर-वारा दिज्जति ॥६५४४॥

सत्तचउम्मा उग्घाडयाण पचेव होतऽणुग्घाया ।

पच लहुगा उ पच उ, गुरुगा पुण पंचगा तिण्णि ॥६५४५॥

सत्तरमसु तेमामिएसु अइक्केनेमु जति पुणो आवज्जति तो चउलहुअ सत्तवारा दिज्जति, तओ वि पर जइ पुणो वि आवज्जति तो पचमामिय लहुअ पचवारा दिज्जति, जइ पुणो आवज्जइ तो छल्लहुय एवक वार दिज्जइ, एत्थ अणो पचमामियठणाओ उवरि छम्मामिय न परुविनि, पचमामिनोवरि छेयतिय भणति, त न भवति, जम्हा एम् पच्छित्तदइही अणतराणतरठ णवइहीए दिहु तम्हा छम्मामिय वत्तव्व । छम्मामिनोवरि जइ पुणो आवज्जति तो तिण्णि वारा नहु चैव छेदो दायव्वो । एम अविमिट्ठो वा तिण्णि वारा छल्लहु न्हेदो ।

अह्वा - ज चेव तत्तित्य त चेव छेदनिय णि मासम्भतर चउमासम्भतर छम्मासम्भतर च, जम्हा एव तम्हा भिण्णमासदिद्धम्मास तेमु छिण्णेसु छेदित्य अतिक्कत भवति, ततो वि जनि पर आवज्जति तो निणि वारा मूल दिज्जति ।

जइ पुणो वि आवज्जइ तो निणि वारा अणवट्ट दिज्जति ।

जइ पुणो आवज्जइ तो एक्क वार पारचिय पावति । एव असचनिय उग्यानिय गत ।

जइ पुण असचनिय अणुग्घातिय पट्ठावय तो एयाओ चेव अइक्कत पाहाओ सिघावलो-यणेण अणुसरियव्वा । इमेण अत्थेण सा चेव उभयतरगो पच्छित्त वहमो वयावच्च करेतो आवज्जइ अप्प बह्म वा तो मे गुरुआ भिण्णमामा दिज्जति ।

पुणो आवज्जनस्म मो अट्टारमवारा दिज्जति ।

ततो पर पण्णरमवारा दिज्जति ।

ततो पर पण्णरमवारा मामिय गुरुअ दिज्जति ।

ततो पर पण्णरस्स चेव वारा दोमामिय गुरुअ दिज्जति ।

ततो पर पण्णरमवारा तेमासिय गुरुअ दिज्जति ।

ततो वि जइ पर आवज्जइ तो चउमासिय गुरु पचवारा दिज्जति ।

जइ पुणो वि आवज्जति पचमामिय निण्णवारा दिज्जति ।

जइ पुणो वि आवज्जइ तो एक्क वार अणुगुरु दिज्जति ।

जइ पुणो वि आवज्जइ तो छेदित्य, ततो मूचत्तिग, ततो अणवट्टनिग, ततो पर एक्क पारचिय, एव असचतित अणुग्घातित ॥६५४५॥

एत्थ असचतिते उग्घायाणुग्घायावत्तिठाणलक्खण इम -

उक्कोसाउ पयाओ, ठाणे ठाणे दुवे परिहवेज्जा ।

एवं दुगपरिहाणी, नेयव्वा जाव तिण्णेव ॥६५४६॥

उक्कोसा उग्घातिया वीस भिण्णमासपदा भवति, तत्तितो दो पडिया, जाया अट्टारम, ते उक्कोसा अणुग्घातियभिण्णमासा भवति, एव मास-दुमास तिसास चउम्मान-पवमासठाणेमु ॥६५४६॥ एते आवत्तिठाणा भणिया -

दोण्ह पुण एतेसि इमेण विहिणा -

वारम दम नव चेव तु, सत्तेव जह्णगगड ठाणाइ ।

वीसऽट्टारस मत्तर, पण्णरहाणी मुणेयव्वा ॥६५४७॥

ये सेसा वीसा भिण्णमासाण अट्ट मासिय पच्छद्वेण जुनेहिता भोसियति ते गहिया, पुव्वद्वेण भोसियसेसा गहिया ॥६५४७॥

के पुण भोसिज्जति ? इमे -

अट्टइ उ अवणेत्ता, सेसा दिज्जति जाव तु निमासो ।

जत्थऽट्टकावहारो, न होति तं भोमए मव्वं ॥६५४८॥

वीसा भिण्णमासाण अट्ट भोसिया सेसा बारस भवति, एते वि बारस तहेव छम्मासा काउ दायव्व ।

अट्टारसण्ह अट्ट भोसित्ता सेसा दस भवति, एते दस तहेव छम्मासा काउ दायव्वा ।
सत्तरसण्ह अट्ट भोसित्ता सेसा णव भवति, ते वि तहेव छम्मासा काउ दायव्वा ।
पण्णरसण्ह अट्ट भोसित्ता सेसा सत्त भवति, ते वि तहेव छम्मासा काउ दायव्वा ।

वोसियादि अट्ट भोसित्ता सेसा बारसादिया जहण्णठाणा भाणियव्वा । जत्थ पुण अट्ट ण पूरेज्ज जहा चउमासपचमासेसु तत्थ सव्व चेउ भोसिज्जति । अट्ट ति - अट्टमासिया मज्झिमा तवभूमी एतीए अणुग्गह-
करण ति अतो अट्टभागहारेण भोयणा कता, जे बारसादिया जहण्णठ णा ते वि ठवणारोवणप्पगारेण छम्मासे
काउ साणुग्गह निरणुग्गह वा आगेविज्जति ॥६५४८॥

जनो भण्णति -

छहि दिवसेहि गतेहिं, छण्ह मासाण होंति पक्खेवो ।

छहि चेव य मेसेहि, छण्ह मासाण पक्खेवो ॥६५४९॥

एतीए पच्छद्वस्स इमो अत्थो -

जे ते भोमियमेमा, छम्मासा तत्थ पट्टवित्ताण ।

छदिवसूणे छोटु, छम्मासे मेसपक्खेवो ॥६५५०॥

अट्ट ववहारे (भागहारे) कते जे तज्जभोसियसेसा बारसादिया तेसु वि ठवणारोवणप्पगारेण अधित
पडिमाहेत्ता जे णिप्फातिणा छम्मासा ते तत्थ पट्टवित्त णति “तत्थ” ति - जे ते पुव्वपट्टविता छम्मासा ते
छहि दिवसेहिं ऊणा वूढा मेसा छद्विणा अच्छति, तेसु चेव छसु दिवसेसु जे ते पच्छिमा छम्मासा तेसि
पक्खेवो कज्जति । किं वुत्त भवति ? तेहिं चेव छहिं दिवसेहिं पच्छित्तेहिं पच्छित्त छम्मासित खमण ति, एव
दुल्लघि ति सघयण ति - वसिऊण पट्टवित्ताण सगलअणुग्गहकसिण कत भवति छहिं दिवसेहिं गहिंएहिं
ति ॥६५५०॥

एव तस्स पुव्वद्वस्स इम वक्खाण -

अहवा छहि दिवसेहिं, गतेहिं जति सेवती तु छम्मासे ।

नत्थेव तेसिखेवो, छद्विणमेसेसु वि तहेव ॥६५५१॥

ज छम्मासिय पट्टवित तस्स छदिवसा वूढा, तेहिं अण्णे छम्मासा आवण्णो ताहे पुव्वपट्टविय-
छम्मासस्स पचमासा चउवीस व दिवसा भाणिज्जति, तत्थ पच्छिमछम्मासा पक्खिप्पति, त पि छदिवसूण
वहति, एव पि सगलाणुग्गहकसिण भवति । अहं छसु दिवसेसु वूढेसु अण्ण छम्मासिय वहति तो निरणुग्गह
पच्छित्त, एव छद्विणा छच्च मामा भवति । छद्विणसेसु तहेव ति - धितिसघयणबलियस्स निरणुग्गह-
कसिण भावेयव्व ।

कह ? उच्यते - जाहे छदिवसूणा छम्मासा वूढा ताहे अण्ण छम्मासिय आवण्णा ते छद्विणा
भोमिता पच्छिम छम्मासित पट्टवित त सव्व वहति ॥६५५१॥

एवं बारस मामा, छदिवसूणा उ जेट्टपट्टवणा ।

छदिवसगतेऽणुग्गह, निरणुग्गह आगते खेवो ॥६५५२॥

एव कालतो बारसमामा छहिं दिवसेहिं ऊणा “जेट्ट” ति उक्कोसा पट्टवणा भवति, अतो पर
तवारिहे उक्कोसवरा णत्थि, एत्थ साणुग्गहनिरणुग्गहेसु वा इमो पच्छद्वणियमो - ज आदीए छहिं दिवसेहिं

गएहि अण्ण छम्मासित आरोविज्जति त गियमा सन्व माणुग्गह । ज पुण अवसाणे छहि दिवसेहि सेमेहि ते छद्विदसा भोमेत्ता अण्ण छम्मासिय आरोविज्जति त पि गियमा गिरणुग्गहकसिण । एव अण्णधाति ए वि एव ताव असचयि ए वि, उग्घाताणुग्घाते (वि) एव । णवर - तस्स आदिमा तवा नत्थि, नियमा छम्मासिय आरोविज्जति, त पि साणुग्गहगिरणुग्गह पूववत् ॥६५५५॥

एत्थ साणुग्गहगिरणुग्गहदाणे चोदगाह -

चोदेति रागदोसे, दुब्बलवलिए य जाणए चक्खु ।

भिण्णे खधग्गिम्मि य, मासचउम्मात्ते ए चेडे ॥६५५३॥

चोदगो भणति - “भगव । तुभे रागदोसिया । कह ?, उच्यते - जस्स छद्विदसूगा छम्मासा भोमेह तम्मि भे रागो जाणइ ति, जहा एस बलव वेयावच्च करेउ वेयावच्चुवगारगहिया य साणुग्गह पच्छित वेह । जस्स पुण पचसु मासेसु चउवोसाए य दिणसु वूढेसु छद्विणे भोमेत्ता तवोखीणस्स वि अण्णे छम्मासे आरोवेह, तत्थे वि “जाणए” ति जाणह, जहा तम्म अतीवतवउभोसितदेहो ण सक्केति वेयावच्च काउ तेण से गिरणुग्गह पच्छित देह, एव च करेता तुभे चवखुसेट करेह, चवखुसेटा णाम एवक अच्छि उम्मिल्लेति, बितिय गिमिल्लति । एव एवक साणुग्गहकरणेण जीवावेह, बितिय गिरणुग्गह करणेण मारेह । किं च एवस्स किलाम पेक्खह, बितियस्स ण पेक्खह” ति ।

आचार्याह - “भिन्न” ति पच्छद्व, ण वय रागदोसिया, सुणेहि अग्गिदिट्ठन, - दोदारय-दिट्ठन च ।

“भिण्णे” ति जहा अग्गी अहुरत्तरेहि पाडित्तमेत्तो जति तम्मि महल्लकट्टपक्खेवो कज्जति तो से ते डहिउ अपचचलो सिग्घ विहाति - उज्जाति ति बुत्त भवति । अह सो सहिणकट्टुखण-मादीहि चुण्णेहि थोव जेवेहि सधुक्किज्जति तो सो ण विहाति, पच्छा जाहे खधग्गी विपुलो जालो ताहे विउल पि इधण डहिउ समत्थो भवति । एव तस्स छसु मासेसु पट्ठवियमेत्तेसु छसु दिवसेसु गएसु य जइ अण्ण छम्मासिय दिज्जति सो वि अहुण्णिभण्णअग्गिन्व विहाइ - विसाद वा गच्छति, जस्स पुण छद्विणमेसे पट्ठविज्जति सो तवलद्विबलाभिहाणो कतकरणत्तणतो ण विहाति, पुणो वि विउलतववट्ठणमत्थो भवति, खधग्गीवत् । अहवा -

इमो दुचेडदिट्ठतो ।

मासजातचेडो चउमासिओ य । तस्स जति मासजातचेडस्स जावतिओ चउमासजात-चेडस्स पीहगादि आहारो तत्तिओ दिज्जति तो सो अतिमेत्ताहारेण अजीत्तेण विणस्सति । चउमामजातचेडस्स वि जति मासजातचेडस्स जो आहारो तावत्तियमेत्तो दिज्जति तो सो वि अप्पाहारतणतो अप्पाण ण सधारेति, खिज्जति वा ।

एव जस्स आदीए साणुग्गह कत सो मासितचेडतुल्लो असमत्थो बहुपच्छित करेउ । जस्स अवसाणे गिरणुग्गह सो वि चउमामियचेडतुल्लो पच्छितकरणसहो अप्पेण ण सुज्झति । एव अह देताण रागो दोसो वा ण भवति ॥६५५६॥ गतो गायपरनरो ।

इदाणि ‘अण्णतरनरो, सो एयस्सेव अण्णसरिसो ति काउ उक्कमेण भण्णति - तस्स इम सरुव ।

जहा दो कावोडीओ एगखेण वोहु ण सक्केति - तहा सो वि पच्छित वेयावच्च च काउ ण तरति, सो य सचतिय अमवतिय वा आवणो गुरूण य वेयावच्चकरो णत्थि ताहे से त आवण णिक्खित्त कज्जति, गुरूण ताव वेयावच्च करेत्तो ज आवज्जति त मेम सब्व भोसिज्जति, वेगावच्चे समत्ते त णिक्खित्त वाहिज्जति, न वहनस्स जमावज्जति त इमेण विहिणा दिज्जति -

सत्त चउक्का उग्घाऽयाण पंचेय होतऽणुग्घाता ।

पच लहुगा उ पंच उ, गुरुगा पुण पचगा तिण्णि ॥६५५४॥

सत्तारम पण्णारम, निक्खेवो होति मामियाणं पि ।

वीसट्टारम भिण्णे, तेण परं णिक्खिदणया उ ॥६५५५॥

एतेसि अत्थो विचिन्वक्खणसभवानो बितियगाहापच्छणुपुब्बीआ पुव्व भणियव्वो, जति से असचए उग्घातिय पटुविय तो पुव्वविहिणा लहु वीस भिण्णामासा, ततो सत्तरस मासा लहु, एव दुमासतिमासलहू वि, ताहे बितियगाहत्थो सत्त चउलहू, ततो पच मासलहू तिण्णि ततो छेदमन्नणवट्टतिगो पारचिय चेक्क । अह मे अणुग्घात पटुवित ताहे ५ट्टारस गुरुभिण्णमासा पण्णरस मासगुरु एव दुगतिगमासा वि, ततो पच चउगुरु, ततो पच मासगा तिण्णि गुरुगा, ततो तिण्णि छेदादी । एव सचइए वि उग्घाया-णुग्घात, णवर - आदिमत्तवा ण दिज्जति । एत्थ वि अट्टगापहारदि पूर्ववत् ॥६५५५॥

एक्के आयरिया एव वक्खणोति । अण्णे पुण भणति - अण्णतरतरे जो प्रायतरो तस्सिम -

सत्त चउक्का०

गाहा ।

व्याख्येया पूर्ववत्, परतो मे छेदादी । अण्णतरतरे जो परतरो तस्सिम -

सत्त रस पण्णारस०

गाहा ।

थोवे बहुए वा आवण्णम्म सत्तरम तेमामिया “णिक्खेवो” ति पुव्व दायव्वा, ततो दुमासिया सत्तरस, ततो मामिया मत्तरस, ततो भिण्णामासा लहु वीस णिक्खिवियव्वा इत्यर्थ । अतो ‘पर’ ति छेदादिअणुग्घातिए वि तिमासिया य पण्णरस भणियव्व । अट्टारस भिण्णमासा । अतो पर छेदादी ॥६५५७॥

एव अण्णतरतरगतो -

इदाणि ‘आयतरस्स वि पटुविय असचतिय सचतिय वा, न पि एक्केक्क उग्घात-मणुग्घात वा, न वहतो जति थोव बहु वा इदयादीहि आवज्जति तो इम दाण -

आततरमादियाणं, मासा लहु गुरुग सत्त पंचेव ।

चउ तिग चाउम्मासा, ततो य चउत्विहो भेदो ॥६५५६॥

आततरो जस्स वेयावच्चकरणलद्धो णत्थि, आदिसट्ठातो परतरे य विही भणीहामि, तन्थ आततरे आवण्णे सत्तवारा मासिय लहुय दिज्जति, जइ पुणो आवज्जति तो चत्तारि वारा चउलहुय दिज्जति, जइ पुणो वि आवज्जइ तो छेदतिय, एव मूलतिय, अणवट्टनित, एक्क पारचिय । एव अणुग्घातिए वि, णवर - पचवारा मासित गुरूअ दिज्जति, तिण्णि वारा चउगुरु दिज्जति, “ततोय चउत्विहो भेदो” ति छेदमूलअणवट्ट पारचिय, एत्थ छेदमूलअणवट्टा तिगतिया दट्टव्वा, गतो आयतरो ॥६५५६॥

इदाणि 'परतरो, सो य जस्स वेयावच्चरणलद्धी अत्थि सो य सव्वहा पच्छित्तस्स अतरो ण भवति, जम्हा णिव्वित्तितादिता तरणि काउ तम्हा एत्थ वि एगखण्णकावोडीदिट्ठो भाणियव्वो, ज च आवण्णो म णिव्वित्त कज्जति, जाव वेयावच्च करेति, वेयावच्च करतो ज आवज्जति त से सव्व भोसिज्जति, वेयावच्च समत्ते त से प'व णिव्वित्त पट्ठविज्जति । त च वहनस्म जइ इदियादीहि आवज्जति ।

तत्थ दाणे इमातो दो गाहाओ परोप्परभाववक्खाणे भावट्टियाओ एगत्थाओ -

सत्त य मासा उग्घाइयाण छ च्चेव होतऽणुग्घाया ।

पंचेव य चतुलहुगा, चतुगुरुगा होति चत्तारि ॥६५५७॥

आवण्णो इंदिएहि, परतरए भोसणा ततो परेण ।

मासा सत्त य छच्च य, पणग चउक्क चउ चउक्क ॥६५५८॥

तस्स परतरस्स सच्चइयासच्चइयाए वा उग्घाताणुग्घातीए वा पट्ठवित्ते पुणो थोववहुए वा आवण्णस्स सत्त वारा मासिय लहुअ दिज्जति, पुव्वगमेण पचवारा चउलहुअ दिज्जति, ततो छेदतिय मूलतिय अणव-
ट्ठतिय एक्क पारचिय । अह अणुग्घातिय पट्ठविय तो उग्घानिय अणुग्घातिय वा थेव बहुअ वा आवण्णस्स
छव्वारा मासिय गुरुअ दिज्जति, चत्तारि वारा चउगुरु दिज्जति, ततो छेदतिय मूलतिय एक्क पारचिय
॥६५५८॥

“भोसणा ततो परेण” ति अस्य व्याख्या -

तं चेव पुव्वभणियं, परतरए णत्थि एगखंधादी ।

दो जोए अचएत्ते, वेयावच्चट्टिया भोसो ॥६५५९॥

“पुव्वभणिय” ति - ज अण्णतरतरे भणिय त चेव परतरे वि भाणियव्व, त च उच्यते -
कावोडिदिट्ठेण दो जोए ण सक्कते काउ पायच्छित्त वेयावच्च च ततो से वेयावच्चकरणारमकानतो परेण
जाव वेयावच्च करेति ताव ज आवज्जति त से सव्व परोपकारे त्ति काउ भोसिज्जइ, एव एस तवो भणितो,
जे जत्थ भिण्णमासादिया मासाइ वा तवट्ठाणा भणिया ते चेव छेदे पत्ते छेदा कायव्वा ततो वारा, ततो पर
मूल ॥६५५९॥

केरिस्स दिज्जति ? अतो भण्णइ -

तवतीयमसद्दहए, तवबलिए चेव होति परियाए ।

दुव्वल अपरीणामे, अत्थिर अबहुस्सुए मूलं ॥६५६०॥

मासादि जाव छम्मासा तव जो वोलिणो - तवेण णो सुज्झति त्ति वुत्त भवइ, अणवट्ठपारचिय-
तवाणि वा अत्तिच्छित्तो सम प्नेत्थय । देसच्छेद पि अत्तिच्छित्तो - तेण वि ण सुज्झति त्ति तस्स वि मूल, तवेण
पाव सुज्झति त्ति । तव जो ण सद्दहति, अहवा - असद्दहमाण त्ति मिच्छादिट्ठो वण्णु ठवितो पच्छा सम्मत्त
पडिवन्नस्स सम्म आउट्ठस्स मूल, जहा गोविइवायगस्स । तवबलितो जो तवेण ण किलिस्सइ, तव काहामि
त्ति पडिसेवति तस्स मूल । छम्मासिएण वा तवे दिण्णे भणाति - समत्थो ह अण्ण पि ये देहि तस्स वि मूल ।
छेदे वा दिज्जमाणे जम्स य परियाणो ण पूरेति इत्थं । अहवा - छेद परियाणा सम वट्ठति । अहवा भणाति -
रातिगिओ ह बहुणा विच्छित्तेण परियाणो मे अत्थि दोहो तस्स वि परियागगव्वियस्स मूल । दुव्वलो
चित्तिसयणेहि तव च काउमसमत्थो बहु च आवण्णो तस्म वि मूल । अपरीणामतो भणाति - जो सो तुम्भेहि

नवो दिण्णो एतेण णाह सु ङ्को नस्स वि मूल । अथिरो जो धित्तिदुब्बलत्तण्णो पुणो पुणो पडिसेवति, अणवसुओ
अग्गेयन्थो मो य अणवट्टारचिय वा आवण्णो सत्थेसु एमु मूल दिज्जति ॥६५६०॥

पुणग्गि आयरिओ विसेस दरिसिउकामो ज हेट्ठा भणिय त पुणो चोदेति ।

इम -

जह मण्णे एगमासियं, सेविउण एगेण सो उ णिग्गच्छे ।

तह मण्णे एगमासियं, सेविउण णिग्गच्छते दोहि ॥६५६१॥ कठा

आयरिओ भणति - आम, एस मासिय पडुच्च आदिल्लगमो गहितो, एतेण सेसा वि गमा
सूचिता ।

जहा मास सेवित्ता मामे “णिग्गच्छइ” ति - सुज्झति भणिय भवति, तहा मास सेवित्ता दोहि
मामेहि णिग्गच्छति ति ।

एव मास सेवित्ता तिहि णिग्गच्छइ, मास सेवित्ता चउहि, मास सेवित्ता पत्तहि णिग्गच्छइ, मास
सेवित्ता छेदेण णिग्गच्छइ, मास सेवित्ता मूलेण णिग्गच्छइ, मास सेवित्ता अणवट्टेण णिग्गच्छइ मास सेवित्ता
पारचिएण णिग्गच्छइ ।

दो-मासिय सेवित्ता दोमासिएण णिग्गच्छे दोमासिय सेवित्ता जाव चरिमेण णिग्गच्छे ।

तेमासिन सेवित्ता जाव चरमेण णिग्गच्छे ।

एव चउमासियाए वि सट्ठाणपरट्ठाणेहि भाणियव्व जाव चरिमेण णिग्गच्छे । एव पचमासिए वि
जाव चरिमेण णिग्गच्छे ।

एव छम्मासियाएवि जाव चरिमेण वि णिग्गच्छे । छेदे वि जाव चरमेण णिग्गच्छे । मूले वि जाव
चरिमेण णिग्गच्छे । अणवट्ट सेवित्ता अणवट्टेण णिग्गच्छे, अणवट्ट सेवित्ता चरिमेण णिग्गच्छे ॥६५६॥

एव विसमारोवण दट्ठु सोसो भणति - मासे सेविए ज मास चेव देह त आवति सम
दाण । ज पुण मासे सेविए दुमासो वि छेदादि देह त कह को वात्र हेतु ?

आचार्याह -

जिण णिल्लेवण कुडए, मासे अपलिकुं चमाणे सट्ठाणं ।

मासेहि विसुज्झिहत्ति, तो देति गुरूवएसेण ॥६५६२॥

जिणो केवल्लिणो, जिणग्गह्मा ओही मणपज्जव चोहस दस तव पुब्बो य गहिता, एते सक्किलेस-
विसोहीओ जाणिऊण अवरहाणप्फण मासिय जाव णप्फण वा दुमासादि जेण जेण विसुज्झति त देति,
तत्थ मासारुहअग्गवसाणठिएण मासे पडिसेवि अपलिउचिय आलोएमाणस्स सट्ठाण ति मास चेव देति,
अहवा - आलोएति पलिउचिय दुमासादियाण वा जे अरिहा अग्गवसाणठाणा तत्थ यठिएण मासो पडिसेवितो
तो एस दुमासादिमाणहि विसुज्झिहत्ति ति ताहे जिणो सुनववहारिणो वा गुरूवदेसेण अघिण देति पच्छित्त ।

तत्थिमो दिट्ठतो - “णिल्लेवण कुडए” ति, णिल्लेवणो ति रयणो, सो जहा - जलकुडेहि
वत्थ घोवति तहा दिट्ठतो कज्जति ।

अहवा - “लेवो” ति वत्थमलो, “कुडो” ति घडो जलभरितो, एत्थ चउभगो इमेण
विहिणा कायव्वो - एकक्क वत्थ एककेण जलकुडेण णिल्लेव कज्जति, एव चउभगो ॥६५६२॥

तस्य पढमवितियभगेसु वक्खाण इम -

एककुत्तरिया घडल्लक्कएण छेदाति होति णिग्गमणं ।

एतेहिं दोसवुड्ढी, उप्पज्जति रागदोसेहिं ॥६५६३॥

“एगुत्तरिया घडल्लक्कएण” ति अस्स व्याख्या -

अप्पमलो होति सुची, कोति पडो जलकुडेण एगेण ।

मलपरिवड्ढी य भवे, कुडपरिवड्ढी य जाव छ तू ॥६५६४॥

कोइ अप्पमलो पडो पविट्ठो एगेण जलकुडेण घरे चेव धोवति, गतो पढमभगो । इमो वितियभगो “मलपरिवड्ढीय” ति, जो ततो वि मलणतरो कठिणमलो वा दो वि दोहिं जलकुडेहिं धोवति, एव जहा जहा मलपरिवड्ढी भवति तहा तहा एगुत्तरजलकुडपरिवड्ढी कज्जति, “जाव” अभिप्रेतार्थ, समोहिं जलकुडेहिं छहिं घडेहिं चेव धोवति ॥६५६४॥

“छेदादि होति निग्गमण” ति अस्स व्याख्या -

तेण परं सरितादी, गंतु सोधेति बहुतरमलं तु ।

मलणाणत्तेण भवे, आयचण-जत्त-णाणत्तं ॥६५६५॥

जे ततो वि मलणतरा, सरित्ति ति णदी, ताए गतु धोवति, आदिमहाओ हद-कूव-तडागादिसु । वितिगादिपदेसु जहा जहा मलणाणत्त तहा तहा “आयचणजत्तणाणत्त” ति - आयचण णाम गोमुत्त पसुलेड ऊसादि उसमादी तम्मि णाणत्त बहुतर पधानतर व करेते, जतो पयत्तो प्रयत्तो, तत्थ वि अच्छोडपिट्ठणादिसु प्रयत्नततर करोतीत्यथ ॥६५६५॥

चरिमततियभगेसु इमं वक्खाण -

बहुएहिं जलकुडेहिं, बहूणि वत्थाणि काणि यि विसुज्जे ।

अप्पमलाणि बहूणि वि, काणिति सुज्झंति एगेणं ॥६५६६॥

पुव्वद्वेण चरिमभगो, पच्छद्वेण च ततियभगो, सेस कठ ।

इदाणि चउभगे वत्थजलकुडदिट्ठतो जा भणितो तस्स उवसहारो भणति - ‘जस्स मासिय येन त पडिसेवेत्ता’ जो मासेण विसुज्झंतीति तस्स मास चेव देति । अण्णस्स पुण मासिय पडिसेवतो एतेहिं रागदोसेहिं तिर्वतरेहिं बहुतरा उप्पज्जति, ‘दोसवड्ढि’ ति - कम्मवड्ढी, तव्विसुद्ध बहुतर पच्छित्त दु ति-चउ पच-छम्मासिय वा देति । अण्णस्स मासिए ति - रागदोसज्झवसाणासेविए सरितादिसरिच्छेव बहुतर छेदादि ॥६५६६॥

भगव । सेजहा से रागदोसवुड्ढीनो पच्छित्ते वुड्ढी दिट्ठा । किमेव रागदोसहाणीतो पायच्छित्ते हाणी ? इत्याह -

जह मण्णे दसमं सेविऊण णिग्गच्छे तु दसमेणं ।

तह मण्णे दसमं सेविऊण एगेण णिग्गच्छे ॥६५६७॥

“दमम” ति - पारचिय त सेविता तेगेव “णिग्गच्छइ” ति - विसुज्झतीत्यर्थ । तथा दमम सेविता णवमेण णिग्गच्छइ, णवम - अणवदु ?

आयरिओ - “ग्राम ति अणुमयत्थे भवति ।

अण्णे भणनि - “एगेण णिग्गच्छे”, “एगेण” ति मासेण । एत्थ भोवुद्धीए अणवत्थातिता सब्बे-दटुव्वा जाव पणम णिव्वितिय वा ॥६५६७॥

अपरितुष्टमना शिष्य पुनरप्याह - “बहुसुत दिट्ठ बहुसु मासेसु पव्विसेवितेसु अपलिउचिय म्वाएमाणस्स मामां चेव दिट्ठो, णो बहूणि मामियाणि सेविता सुत्तेणेव बहू मासा दिण्ण ति ।

अतो पुच्छा इमा -

जह मण्णे बहुसो मासियाणि सेवित्तु एगेण णिग्गच्छे ।

तह मण्णे बहुसो मासियाइ सेवित्तु बहूहि णिग्गच्छे ॥६५६८॥

अत्राप्याचार्येण ग्राम इत्यनुमतार्थं वक्तव्यं, किं बहुणा रागदोषावस्थितो एकैककावलिङ्गणे सब्ब-पच्छित्तारोवणट्ठाणा दटुव्वा ॥६५६८॥

इहापि केचित् बहुमसूत्रे प्रत्येकार्थे इम गाथाद्वय पठति -

एगुत्तरिया घडल्लक्कएणं छेदादि होति णिग्गमण ।

एएहि दोमवड्डी, उप्पज्जति रागदोसेहिं ॥६५६९॥

जिणणिल्लेवणकुडए, मासे अपलिकुंचमाणे सट्ठाणं ।

मासेहि विसुज्झिहिती, तो देंति जिणोवएसेणं ॥६५७०॥

इह एयासु पच्छित्तवुद्धी भाणिऊण पूर्ववत् पुणो एतासु चेव हाणी भाणियव्वा इति ।

पुनरप्याह चोदक -

पत्तेयं पत्तेय, पदे पदे माणिउण अवराहे ।

तो केण कारणेण, हीणम्भहिया व पट्टवणा ॥६५७१॥

सुतपदेसु पत्तेय अवराहे भाणिऊण पच्छित्त च ततो किं पुणो अत्थेण थोए बहुय, बहुए वा थोवपच्छित्त देह, सब्बहा वा भोस करेह एतीए हीणम्भतिपपट्टवणाए को हेतु ? ॥६५७१॥

आचार्याह -

मण परमोहि जिणं वा, चोदस दसपुव्विं च णवपुव्विं ।

थेरेव समासज्जा, उणम्भहिया व पट्टवणा ॥६५७२॥

ते परमाहिजिणादिया पच्चक्खणाणिणो पच्चक्ख रागदोसहाणी बुद्धी वा पेक्खति, कम्मबोधो य ण दव्वपडिसेवणाणुरूवो रागदोसाणुरूवो भवति अतो पच्चक्खणाणिणो रागदोसाणुरूव हीणमहिय वा पट्टवयति - ददतीत्यर्थ ।

शिष्याह - “प्रत्यक्षज्ञानिना युक्तमेतत्, ये पुन स्थविरास्ते कथं रागद्वेषवृद्धिं पश्येयुः” ।

आचार्याह - हाणि ताव इमेण आगारभासितेण धेरा जाणति ॥६५७२॥

हा दुट्टु कयं हा दुट्टु कारियं दुट्टु अणुमयं मे त्ति ।

अतो अंतो डज्झति, पच्छाचावेण वेवंतो ॥६५७३॥

प्राणातिपातादि कृत्वा उत्तर काल अत पश्चात्तापकरणेन च दह्यते, तत् पश्चात्तापकरणेन - वेपते कपतेत्यर्थः । अत्रोदाहरण गोव्यापादकवत् ॥६५७३॥

बुद्धिं पुण इमेहि जाणति -

जिणपणत्ते भावे, असदहंतस्स पत्तियं तस्स ।

हरिस्स वि व वेदंतो, तहा तहा वड्ढते उवरिं । ६५७४॥

जिणेहि जीवादिका भावा प्रकर्षेण प्रतिभेदेन वा ओतुजने ज्ञापिता ये ते प्रतिज्ञापिता तेषु अश्रद्ध धान जहा जमालीवत् । ण पत्तिय अपत्तिय तेसु जिणपणत्तेसुवि अप्रीति कुर्वाणस्येत्यर्थः । सर्वथा वा अप्रति- पत्ति अपत्तिय वा त महानिधिलाभदृष्टमित्र वेदतो, अहवा - हर्षागतमिव पाप कुरुतो तत्कारणहृषतो वेपते च यथा ।

यथा स्वाचक्षते जनाभिस्तुतो वा हर्षं गच्छति तथा प्रकृतिस्थितिप्रदेशानुभावा उपरस्परं करोति वधयतीत्यर्थः । अत्रोदाहरण सिंहव्यापादकवत् ॥६५७४॥

इदाणि पचमच्छट्ठ सुत्ताण इमो सम्बन्धो भणति - णिसीहस्स पच्छिमे उद्देशेगे तिविहभेदा सुत्ता तजहा - आवत्तिमुत्ता, आलोयणविधिमुत्ता, आरोवणा सुत्ता य । एएमि एकैकके भेदे दस दस सुत्ता, सव्वे तीस सुत्ता, तत्थ आवत्तिमुत्ता जे दस तेसि चउरो सुत्तेणव भणिता । इमे अत्थतो छ भाणियव्वा त जहा - सातिरेगमुत्त १ बहुसो सातिरेगमुत्त २ सातिरेगसजोगमुत्त ३ बहुसो सातिरेगसजोगमुत्त ४ णवम सगलस्स सातिरेगस्स य सजोगे मुत्त ५ दसम बहुसस्स बहुमसाइरेगस्स य सजोगे मुत्त ६ एव एतेसु दससु आवत्तिमुत्तेसु भणिएसु तेणेव विहिणा दस आलोयणासुना भाणियव्वा, तेसु वि आदिभेसु अट्टसुत्तेसु अत्थतो भणिएसु इम णवमसुत्त । तत्थ वि अत्थतो एग-डुग-तिगसजोगेसु भणिएसु इम चउककसजगे अतिल्लचउककसजोगेसुत्त -

जे भिक्खू चाउम्मासियं वा साइरेगचाउम्मासियं वा

पंचमासियं वा साइरेगपंचमासियं वा

एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं

पडिसेविच्चा आलोएज्जा -

अपलिउचिय आलोएमाणस्स चउम्मासियं वा, साइरेगं वा

पंचमासियं वा, साइरेगं वा ।

पलिउंचिय आलोएमाणस्स पचमासियं वा साइरेगं वा, छम्मासियं वा,

तेण परं पलिउचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा ॥६०॥१५॥

इदाणि छट्ठ बहुससुत्त च उच्चारियव्व, त च दसमेसु चउककसजोगे अतिल्लचउककसजोगे सुत्त इमेण विहिणा उच्चारियव्व -

जे भिक्खू बहुसो वि चाउम्मासियं वा बहुसो वि साइरेग चाउम्मासियं वा

बहुसो वि पंचमासियं वा, बहुसो वि साइरेगपंचमासियं वा

एएसिं परिहारट्टाणाणं अन्नयरं परिहारट्टाणं पडिसेवित्ता आलोएआ,
अपलिउंचिय आलोएमाणस्स बहुसो वि चाउम्मासिय वा
बहुसो वि साइरेगं वा, बहुसो वि पंचमासियं वा, बहुसो वि साइरेगं वा
पलिउंचिय आलोएमाणस्स बहुसो वि पंचमासिय वा
बहुसो वि साइरेगं वा, बहुसो वि छम्मासियं वा
तेण परं पलिउंचिए वा अपलिउंचिए वा ते चेव छम्मासा ॥६५॥१६॥

एतोसि आलोयणसुत्ताण अत्थो पूर्ववत् । इमो विसेतो -

एत्तो णिक्कायणा मासियाण जह घोसण पुहविपालो ।
दंतपुरे कासीया, आहरणं तत्थ कायव्वं ॥६५७५॥

“एत्तो” ति अत पर आलोयणाविहाण भण्णइ । “णिक्कायणा” णाम मासादि पडिसेवित जाव
आलोयणारिहस्स ण कज्जति ताव अ णिक्कायण भण्णात ।

अथवा - त मासादि पडिसेवित आलोयणविहीए गुरवो णाउ ज मासातिआरोवणाए वि हीर्णाधियाए
वा जहाकहाए आरोवणाए आरोवयति त णिक्कायण भण्णइ ।

अथवा - केरिसस्स आलोइज्जइ ति एव इमेण दिट्ठतेण णिक्काइज्जइ ।

“दंतपुर दंतवक्के, सच्चवती दोहले य वणयरए ।
घणमित्त-घणसिरीए, पउमसिरी चेव दढमित्ते ॥

जारिसस्स आलोइज्जति तत्थोदाहरण इम -

दंतपुर णगर, दंतवक्को राया, तस्स सच्चवती देवी । तस्स दोहलओ - “जति ह सच्चदंतमए
पासाए कीलिज्जा ।” रण्णो कहिय ।

रण्णा अमच्चो आणत्तो - “सिग्घ मे दत्ते उवट्ठवेसि ।” तेण वि णयरे घोसावित - जो
रण्णो दत्ते कीणनि ण देति वा घरे सत्ते तस्स सारीरो दडो ।

तत्थ णगरे घणमित्तो सत्थवाहो, तस्स य दो भज्जाओ - घणसिरी पउमसिरी य । अण्णया
तासिं दोण्ह वि भडण जात । तत्थ घणसिरीए पउमसिरी भणिया - कि तुम गव्वमुव्वहसि ? कि तए
सच्चवतीए अहिमो दंतमओ पासादो कतो ?

ताहे पउमसिरीए असग्गाहो गहितो - “जति मे दंतमओ पासादो ण कज्जति, तो मे अल
जीविण ।” ण देति घणमित्तस्स आलाव ।

तस्स वयसो दढमित्तो णाम । तस्स कहिय ।

तेण भणिया - ‘अह ते कालहीण इच्छ पूरेमि’ छड्डाविया असग्गाह ।

ताहे सो दढमित्तो वणचरादीए सम्माणसगहिए करेति ।

तेहि भणिय - “कि आणेमो, कि वा पयच्छामो”

तेण भणिय - “दत्ते मे देह” । तेहि य ते दत्ता खड्गपूलगेहि गोविता । सगड भरिय,
णयरदारे य पवेमिज्जताण गोणाऽऽकट्ठितो दत्तो पडिओ, “चोरो” ति सहोडो वणयरो गहितो ।

रायपुरिसेहिं पुच्छिज्जति कस्सेते दत्ता, सो ण साहति । एत्थतरे दढमित्तेण भणिय-“मम एए दत्ता, एस मे कम्मकरो ।” वणचरो मुक्को, दढमित्तो गहितो । सो रण्णातो पुच्छितो-“कस्सेते दत्ता ?” सो भणति “मम” ति । एत्थतरे दढमित्त गहिय णाउ धणमित्तो आगतो ।

रण्णो पुरतो भणाति - “मम एते दत्ता, मम दड सारीर वा णिगह करेहि” ति ।

दढमित्तो वि भणाति - “अहमेय ण जाणामि, मम सत्तिता दत्ता, मम णिगह करेहि” ति, एव ते अण्णुण्णावराहरक्खणट्टिया णिरवराही रण्णा भणिया - “अभन्नो । भूयत्थ कहेह ।”

तेहि सव्व जहाभूय कहिय ।

रण्णा तुट्ठेण मुक्का, उस्सु का ।

जहा सो दढमित्तो णिरवलावी भवि य मरणमब्भुवगतो ण य परावराहो सिट्ठो, तथा ऽऽलोयणारिहेण अपरिसाटिणा भवियव्व । जहा सो धणमित्तो भूयत्थ कहेति ममेसोवराहो ति एव आलोयणेण मूलुत्तरावराहा अपलिउच्चमाणे जहट्टिया कहेयव्व ॥६५७५॥

पचमे य सुत्ते इमो य विसेसो दसिज्जति -

पणगातिरेग जा पणवीससुत्तम्मि पंचमे विसेसो ।

आलोयणारिऽऽहालोयन्नो य आलोयणा चेव ॥६५७६॥

एतीए पुव्वद्वस्स इम वक्खाण -

अहवा पणणऽहिन्नो, मासो दसपक्खवीसभिण्णेणं ।

संजोगा कायव्वा, लहुगुरुमासेहि य अणेगा ॥६५७७॥

“अहवे” त्यय विकप्पवाची । क पुन विकल्प ? , उच्यते - पणगातिता ठाणा अतियारतो व णिप्फण्णा - भावन्नो वा निष्पन्ना भवतीत्यय । पचमे सुत्ते इमो विसेसो - मासो लहुपणगदसगातिरित्तो य कायव्वो, एव दस पणरस वीस भिण्णमासातिरित्तो य । एव दोमासादिया वि पणगादियातिरित्ता कायव्वा । पुणो पणगादिहं लहुगुरुहं लहुमीसगसजोगमुत्ता कायव्वा, इमेण विहिणा -

जे भिक्खू गुरुगलहुगपणगातिरेगमासिय परिहारट्ठाण इत्यादि ।

जे भिक्खू लहुगपणगदसगातिरेगमासित परिहारट्ठाण इत्यादि ।

जे भिक्खू लहुगपणगगुरुदसगसातिरेगमासिय परिहारट्ठाण इत्यादि ।

एव मासिय लहुपणग च अमुयतेण भाणियव्व जाव गुरुभिण्णमासो ति ।

ततो मासिय गुरुपणग च अमुयतेण भाणियव्व जाव गुरुभिण्णमासो ति ।

एव मासिय अमुयतेण पणगादियाण सव्वे दुगसजोगा भाणियव्वा ।

ततो मासिगस्सेव पणगादियाण सव्वे तिगसजोगा च उक्कादिसजोगा य जाव दसगसजोगो ताव सव्वे भाणियव्वा ।

ततो मासगुरु अमुचतेण पण दसग पणरस वीसभिण्णमासताण लहुगुरुभेदभिण्णाण दुगादिसजोगा जाव दसगसजोगा ताव सव्वे कायव्वा । एव दोमासियादिठाणेसु वि लहुगपणगादीयाण सव्वे सजोगा कायव्वा । एव अणेगा सजोगा भवतीत्यय । एव पचमे विसेसो उवउज्जिय सवित्थरतो भाणियव्वो । इमे य एत्थ पचमे सुत्ते आलोयणारिहा भाणियव्वा -

^१आयारव ^२आहारव, ^३ववहारोव्वीलए ^४पकुव्वी य ।

^५णिज्जवगवायदसी, ^६अपरिस्मावी य अट्टमए ॥

पचविह आयार जो मुणइ आयरइ वा सम्म सो आयारव ।

आलोइज्जमाण जो समेद सव्व अवघारेति सो आहारव ।

पचविह आगमादि ववहार जो मुणइ सम्म सो ववहारव ।

आलोयय गृहत्त जो महुरादिवयणपयोगेहि तहा भणइ जहा सम्म आलोएति सो उव्वीलगो ।

आलोइए जो पच्छित्त कारवेति सो पकुव्वी ।

जहा णिव्वहइ तहा पायच्छित्त कारवेति सो णिज्जवगो ।

अणालोएत्तस्स पल्लिउत्तस्स वा पच्छित्त च अकरेतस्स ससारे जम्मणमरणादीदुल्लभबोहीयत्त पर-
लोगावाए दरिमेति, इहलोगे च ओमासिवादी, सो अवायदसी ।

आलोइय जो ण परिस्सवति अण्णस्स ण कहेति त्ति वुत्त भवति सो अपरिस्सावी । एरिसो
आलोयणारिहो ।

इमेरिमो आलोयगो - २ “जाती कुल” गाहा । जातीए कुलेण य सपण्णो अकिच्च ण करेति ॥१॥
काउण वा सम्म कहेति ॥२॥ विणीयो णिसेज्जादिविणय सव्व करेति, सम्म च आलोएति ॥३॥ णाणी णाणाणु
माणेण आलोएइ ॥४॥ अमुगसुत्तेण वा मे पच्छित्त दिण्ण सुद्धो अहमिति दसणेण सहइति ॥५॥ एव चारित्त भवति,
सपण्णो पुणो अतियार ण करेति, अणालोतिए वा चरित्त णो सुज्झति त्ति सम्म आलोएइ ॥६॥ खमादिजुत्तो
खमी, गुरुमादीहि वा चोत्तितो कम्हे ति फरुस ण भणति, सम्म पडिवज्जति, ज पच्छित्त आरोविज्जति त
सम्म वहतीति ॥७॥ दनो इदिय गोइदिएहि वा दतो । ८॥ अपल्लिउत्तमाणो आलोएति वहति वा अमायी ॥९॥
आलोएत्ता णो पच्छा परितप्पइ, दुट्ठु मे आलोइय ति अपच्छायावी ॥१०॥ एरिसगुणजुत्तो आलोयगो ।

इमे आलोयगस्स आलोयणादोसा -

^१आगपइत्ता ^२अणुमाणइत्ता, ^३ज दिट्ठु ^४बायर च ^५सुहुम वा ।

^६छण ^७सदाउलग ^८बहुजण ^९अव्वत्त ^{१०}तस्सेवी” ॥१॥

वेयावच्चकरणेहि आयरिय आराहेत्ता आलोयण देति ॥१॥

“चरम थोव एम पच्छित्त दाहिति ण वा दाहिति” पुव्वामेव आयरिय अणुणेति - “दुव्वलो ह
थोव मे पच्छित्त देज्जह” ॥२॥

जो अतियारो अण्णेण कज्जमाणो दिट्ठो त आलोएति, इयर नो आलोएति ॥३॥

“बायर” - महत्ता अवराहा ते आलोएति, सुहुमा णो ॥४॥

अहवा - सुहुमे आलोएति नो बायरे ।

जो सुहुमे आलोएति सो कह बायरे ण आलोएति, जो वा बायरे स कह सुहुमे नालोए त्ति ॥५॥

“छण” ति - तहा अवराहे अप्पसट्ठेण उच्चरइ जहा अप्पणा चेव सुणेति, णो गुरु ॥६॥

“सदाकुल” ति - महत्तेण महेण वा आलोएति जहा अगीयातिणो वि सुणति ॥७॥

१ व्य० उ० १ गा० ३३८ । २ व्य० उ० १ गा० ३३९ - ३४० । ३ व्य० उ० १ गा० ३४२ ।

बहुजणमज्जे वा आलोएति अहवा एक्कस्स आलोएति पुणो अण्णोस्सि आलोएति ॥८॥

“अव्वत्तो” अगीयत्थो तस्स आलोएति ॥९॥

“तस्सेव” त्ति—जो आयरिओ तेहिं चैव अवराहपदेहिं वट्टति तस्सालोएति, ‘एस मे अतिथार तुल्ले ण दाहिंति, ण वा मे खरटेहिंति’ ॥१०॥ त्ति ॥६५७७॥

इदाणि आलोयणविधी भण्णति—

आलोयणाविहाणं, तं चैव दव्वखेत्तकाले य ।

भावे सुद्धमसुद्धे, मसणिद्धे माइरेगाडं ॥६५७८॥

आलोयणाविहाण ज पढमसुत्ते तुत्त त चैव सव्व सवित्थर इह दव्वखेत्तकालभावेहिं पडिसेवित्ता माणियव, पमत्थेहिं वा दव्वखेत्तकालभावेहिं आलोएयव्व पडिसेवित्ता पुण भावनो सुद्धेग वा असुद्धेग अप्पच्छिन्ती सप्पच्छिन्ती वा । असुद्धेग सपायच्छित्त, त च पायच्छित्त इह सुत्ते सातिरेगमासो केण भवति ?, उच्यते — ‘ससणिद्धे सातिरेगा’ इति ॥६५७८॥

अस्य व्याख्या —

मसणिद्ध बीयघट्टे, काएमुं मीसएसु परिठविते ।

इतर सुद्धमे सरक्खे, पणगा एमादिया होंति ॥६५७९॥

ससणिद्धेहिं हत्थमत्तेहिं भिक्खु गेण्हे पण, एव जति बीयघट्टपरित्ताकाएसु वा मीसेसु परारट्ट-विय इत्तरट्टविय वा सुद्धमपाट्टविय वा सरक्खेहिं वा हत्थमत्तेहिं गेण्हेति । एवमादिअवराहेसु पण्ण भवइ । एत्थ इम णिइरिसण—सागारियपिड ससणिद्धहत्थेहिं गेण्हेतो सातिरेगमासिय भवति, एव परित्ताकाय अणत्तर-णिक्खत्त बीयघट्ट च गेण्हेतो, एवमादिमासिय अवराहो पणगातिरित्तो मासो भवति ॥६५७९॥

त च आलोयणारिहो इमेण विहिणा जाणइ देति वा —

ससिणिद्धमादि अहियं, तु परोक्खी सो उ दँति अहियं तु ।

हीणाहिय तुल्लं वा, नाउं भावं च पच्चक्खी ॥६५८०॥

जो परोक्खणाणी आलोयणारिहो सो आलोयणसुद्धाओ पणगातिरित्त मास सोच्चा पणगातिरित्त चैव मास देति, जो पुण पच्चक्खणाणी सो पणगातिरित्त वि मासे आलोइए रागदोसभावानुरूव कम्मवच जाणिरुण हीण अहिय वा पडिसेवणतुल्ल वा पायच्छित्त देइ ।

इदाणि आलोयणसुत्ते वि जाहे सगलसुत्ता, बहुससुत्ता वा सगलसजोगसुत्ता, बहुससजोगसुत्ता य, एते चउरो समेदा भणिया भवति — ताहे जे पुव्वणिद्धि पचम छट्ठ-सत्तम-अट्ठमसुत्ता, ते अत्थतो भणामि ।

तत्थ पचम डम — ‘जे भिक्खु सातिरेगमासिय परिहारट्टाण ।

सातिरेगविमासिय परिहारट्टाण ।

सातिरेगतिमासिय परिहारट्टाण ।

सातिरेग चउमासिय परिहारट्टाण ।

सातिरेग पचमासिय परिहारट्टाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा ।

अपलिउचिय आलोपमाणस्स —

साइरेगमासिय साइरेगदोमासिय साइरेगतिमासिय साइरेगचउमासिय ।

साइरेगपचमासिय ।

पलिउचिय आलोएमाणस्स साइरेगदोमामित, सातिरेगतिमासित ।

सातिरेगचउमासित सातिरेगपचमासिय च” । एते पच सामण्णसुत्ता ।

एव पच सातिरेगउग्घातियाण वि भाणियव्वा, सातिरेग अणुग्घातियाण वि पच, एते पण्णरस्स वि पचम सातिरेगसुत्त । एव चेव छट्ठ सुत्त बहुमानिलावेण णेयव्व ।

इदाणि एतेमि चेव दोण्ह वि सुत्ताण पत्तेय पत्तेय सजोगा कायव्वा, जहा पढमबितिय-सुत्तेसु तहा कायव्वा, ताहे सत्तमट्ठमा सुत्ता भवति । सत्तमे सुत्ते णव सुत्ता एगट्ठा ण भवति । सातिरेग-सगलसुत्ताण सजोगसुत्ताण सव्वसुत्तपिडय च उप्पण सुत्तसहस्स । बहुससातिरेगसुत्तेसु वि एव चेव एत्तिया भवति । एते सव्वे एकतो िडिया एकवीस सया अट्ठुनरा, मूलुत्तरेहि गुणिया बायालीस सता सोलसुत्तरा । दप्पक्कपेहि गुणिता अट्ठसहस्सा चउरो य सता बत्तीसा भवति । एव आइमेसु चउसु सुत्तेसु अट्ठसहस्स चउरो य सता बत्तीसा भवति । अट्ठसु वि सुत्तेसु सव्वग्ग सोलससहस्सा अट्ठमता चउसट्ठा भवति । एति चि भावति सुत्ता अलोयणामुत्तेसु वि एत्तिया चेव, आरोवणमुत्तेसु वि एत्तिया चेव, तम्हा एस रासी तीहि गुणितो पण्णाम सहस्सा पच सता बाणउग्रा भवति ॥६५८०॥

इदाणि णवम सुत्त, त च सगलाण साहियाण य सजोगे भवति, तत्थ आदिमा चउरो सगल-सुत्ता पचमादिया अट्ठता चउरो साहियपुत्ता ।

एतेसि सगलसाहियाण सजोगविधिप्रदर्शनार्थमिदमाह -

एत्थ पडिमेवणाओ, एक्कग-दुग-तिग-चउक्क-पणएहि ।

छक्कग-सत्तग-अट्ठग,-णवग-दसहि च णेगाओ ॥६५८१॥

‘एत्थ’ ति सगलसाहियमजोगसुत्ता णवमे पडिसेवणग्गारा इमे एगादिया दस य, तेहि कायव्वा त जहा -

मासित, सातिरेगमासित ।

दोमासित सातिरेगदोमासित ।

तेमासित, सातिरेगतेमासित ।

चउमासित, सातिरेगचउमासित ।

पचमासित, सातिरेगपचमासित ।

एतेसि उच्चारणविधी इमा -

जे भिक्खु मासिय परिहारट्ठाण सेस पूर्ववत् ।

जे भिक्खु सातिरेगमासिय जाव अपलिउचिय आलोए, सातिरेगमासिय ।

जे सातिरेगदोमासिय जाव अपलिउचिय आलोए सातिरेगदोमासिय ।

एव तेमासियादिया वि वत्तव्वा एगादिसजोगा भाणियव्वा ॥६५८१॥

जहासख च तेसि एगादियाण इमे आगयफला -

दम चेव य णयाला, वीमा य मयं च दो दमहिगाइं ।

दोणिण मया वावण्णा, दमुत्तरा दोणिण य सताओ ॥६५८२॥

वीसा य सयं पणयालीमा दस चेव होति एक्को य ।

तेवीस च सहस्सं, अदुव अणेगाउ णेआओ ॥६५८३॥

एत्थ करणोवाओ इमो — एगादेगुत्तरिया पदसखमाणओ ठवेज्जाहि, गुणगारा जस्स जेत्तियाणि पदाणि ते एउत्तरवद्धिता ठवेऊण तेसि हेट्ठा ताणि चेव विवरीयाणि ठवेयव्वाणि ।

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०

१० ९ ८ ७ ६ ५ ४ ३ २ १

एत्थ उवरिमा गुणगारा हिट्ठिमो रासी भागहारो, तेसि हेट्ठाओ विवरीओ । एत्थ एक्कगसजोगे इच्छतेण अण्ण सगलरूव ठवेऊण अतिल्लेण दसगुणकारएण गुण्येव्व ताहे अतिल्लेण एक्कभागहारेण भागो हायव्वो, भागहारभागलद्ध दस एतेसि एक्कसजोगा दस लद्धा, एते एगते ठविया । दुगसजोगे इच्छतेण एते दस णवहि गुणिता दोहि भागेहितो लद्धा, दुगसजोगा पणयाल, एव ठाण्ठाणे पडिरासियगुणियहियभाग लद्धफला जाणियव्वा । तिगमजोगे वीमुत्तर सय, चउक्कसजोगे दो सता दमुत्तरा, पचमजोगेण दो सता बावन्ना, छक्कगसजोगे दो मया दमुत्तरा, सत्तगसजोगे सय वीमुत्तर, अट्ठगसजोगेण पणयालीस णवसजोगेण दस, दमसजोगेण एक्को, सव्वेमि सखेवो तेवीस सहस्स ।

“अदुव” ति अह्वा — “अणेगाउ” ति अणेगे पडिसेवणादिमुत्तभेदा णेयव्वा ज्ञेया वा ।

कह ? उच्चते — एते सामण्णतो भणिया, एने चेव उग्घायाणुग्घाते मूनुत्तरदप्पकप्पेहि गुण्येव्वा । अथवा — तीसपदाण इमा रयणा कायव्वा, तज्जा — मासिय पचदिणातिरेगमासिय, दमदिणादरेगमासिय, पनरसदिणादरेगमासिय, बीमदिणातिरेगमासिय, भिण्णदिणातिरेगमासिय, एव दुमामे तिमसे चउमासे पचमासे य एक्केक्के छट्ठाणा कायव्वा । एते पच छक्कातीस ठाणा । एनेसु वि करः पूर्वंवत् कायव्व ।

सव्वागयफलाण सपिडियाण इमा सुत्तसखा भवति —

‘कोडिसय सत्तऽहिय, सत्तत्तीस व होति लक्खाई ।

ईयालीस सहस्सा, अट्ठसया अहिय तेवीसा ॥

एत्थ वि सामण्णुग्घाताणुग्घातमीसमूनुत्तरदप्पकप्पभेदभिन्ना कायव्वा । णवर — जत्थ मीसो तत्थ उग्घातिया सजोगा एगादिणा ठवेउ अणुग्घानिया वि एगादिसजोगा पुढो ठवेउ, ताहे उग्घायएक्कगसजोगेण सव्वे एगादिअणुग्घाता जोगा गुणिता । एव मीसगसजोगे एक्कगसजोगफला भवति, एव दुग-तिग-चउक्क पचक-सजोगेहि गुणिता दुगादी सफला भवति एएण लक्खणेण सव्वत्थ मासफला आण्येव्वा, इम निदिरसण—उग्घाति-यस्स दमहि एक्कगजोगेहि दस अणुग्घाता गुणिया हवति । सत तु एक्कगसजोगे अणुग्घातातिगकएहि पणयालीस दु अणुग्घाता गुणिता अट्ठपचमसता जाता दुगाण अणुग्घाए बारससय इगवीससय पणुवीस-वीसा इक्कवीससय बारससय अट्ठपचसता य एग सत दम य । एते अणुग्घाताण सजोगा एक्कगादिया सव्वे ते सम्मिलिता तीससहिया दोणिसया दससहस्सा य ।

अट्ठणा —

“उग्घातितदुगएहि, पणयालीसाण सव्वसजोगा ।

अणुग्घातियाण गुणिया, एक्कादितिमेत्तिया राप्पी ॥

एक्के चउमतपण्णा, पणुवीमा दो सहस्स दुग जोगे ।

चउप्पणमया नव सहस चउमयपत्तम चउजोगे ॥

सेसा उवरि मुहुत्ता, णेयव्वा दस य पणचत्ता ।
 एते सव्वे मिलिया छायालसहस्स होति पणतीसा ॥
 उग्घातियदुअएहि, सव्वग्गेय अणुग्घाते ।
 अहणुग्घात दुएहि, पणयालिसएण सव्वसजोगा ॥
 अणुग्घातियाण गुणिया, एक्कादितिमेत्तिया रासी ।
 बारम चउप्पणसया, चउसया चोइसय सहस्स नियजोए ॥
 पणवीससहस्साइ दो य सया हुति चउजोगे ।
 चत्तऽहिता दोण्णि मत्ता, तीससहस्सा य पचसजोगे ॥
 सेसा उवरिमुहुत्ता, जा वीसऽधिय सय दसए ।
 उग्घातितसजोगा णुग्घाति य एक्कगातिसजोगा ॥
 सत्त सया सट्ठऽहिया, बावीस महस्स लक्खो य ।
 इगवास सया एगे, चउणउति सत्ता दुग्गम्म पण्णऽहिया ॥
 तिगजोगेऽणुग्घाता, पणुवीस सहस दो य सया ।
 चउत्तसहस्स सत्त, चउजोगपणम्मि दुसय बावण्णा ॥
 सेसा उवरिमुहुत्ता, दसग्गम्म दमुत्तरा दोण्णि ।
 एव उग्घाय चउक्कएण अधिग सत्त दसगेण ॥
 एगादि अणुग्घाता, गुणियफला सव्विमो रासी ।
 अट्ठसया तीसहिया चोइससयसहस्स दोइ लक्खाइ ॥
 कायव्वमेसगेसु वि, एव सव्वफला पिडरासी य ।

उग्घाताणुग्घातमीसेगमुत्तसव्वसखेवो इमो —

मीसगमुत्तसमासे, छायाल सहस्स दस य लक्खाइ ।
 पचसय अउणतीसा, दस पद मखित्तसखेवो ॥

एव कएसु जे सगलसाहिया सजोगा लब्भति ते णवममुत्तभेदा भवति, जे पुण सेसा ते सगलमुत्तभेदा वा साधितमुत्तभेदा वा इत्यर्थ । एव बहुमसुत्ते वि दसमे वक्खाण सत्ता य अपरिसेसा भाणियव्वा । णवर — बहुसाभिलावो भाणियव्वो, एते य दस सुत्ता बहुभगाकुला णो इह सव्वभगेहिं भणिया, ते य न भणिया अतिविथरोत्ति काउ जे न भणिया ते उवउज्जिउ गुरुवदेसतो वा भणेज्जाहिं ति । गया आलोयणसुत्ता ।

इदाणि आरोवणसुत्ता तत्थेवि आदिमा अट्ठसुत्ता सवित्थरा पूर्ववत् ।

इदाणि णवम दसमा, तेसु वि एगादिसजोगा पूर्ववत् ।

अतिल्लचउक्कसजोगे इमे सुत्ता —

जे भिक्खु चाउम्मासियं वा साइरंगचाउम्मासियं वा

पंचमासियं वा सातिरेगपंचमासियं वा

एएसिं परिहारट्ठाणाणं अन्नयरं परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा ।

अपलिउंचिय आलोएमाणे ठवणिज्ज ठवइत्ता करणिज्जं वेयावडियं,

ठविए वि पडिसेवित्ता से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया-

पुव्विं पडिसेविय पुव्विं आलोइय, पुव्विं पडिसेविय पच्छा आलोइयं,

પચ્છા પડિસેવિયં પુલ્લિં આલોડ્ય, પચ્છા પડિસેવિયં પચ્છા આલોડ્યં ।
 અપલિઉંચિએ અપલિઉંચિયં, અપલિઉંચિએ પલિઉંચિયં,
 પલિઉંચિએ અપલિઉંચિય, પલિઉંચિએ પલિઉંચિયં,
 અપલિઉંચિએ અપલિઉંચિયં આલોએમાણસ્સ સવ્વમેય સકય
 માહણિય જે ઇયાએ પટ્ટવણાએ પટ્ટવિએ નિવ્વિસમાણે પડિસેવેહ
 સે વિ કસિણે તત્થેવ આરુહ્યેવ્વે સિયા ॥સૂ.૦॥૧૭॥

જે મિક્સુ બહુમો વિ ચાઉમ્માસિય વા બહુમો વિ સાહરેગચાઉમ્માસિય વા
 પંચમાસિયં વા સાતિરંગપંચમાસિય વા
 એસિં પરિહારદ્વાણાણં અન્નયરં પરિહારદ્વાણં પડિસેવિત્તા આલોએજ્જા ।
 અપલિઉંચિય આલોએમાણે ઠવણિજ્જં ઠવહત્તા કરણિજ્જં વેયાવહિયં
 ઠવિએ વિ પડિસેવિત્તા મે વિ કમિણે તત્થેવ આરુહ્યેવ્વે સિયા
 અપલિઉંચિએ અપલિઉંચિયં, અપલિઉંચિએ પલિઉંચિયં,
 પલિઉંચિએ અપલિઉંચિય, પલિઉંચિએ પલિઉંચિય,
 અપલિઉંચિએ અપલિઉંચિયં આલોએમાણસ્સ મવ્વમેય સકયં
 સાહણિય જે ઇયાએ પટ્ટવણાએ પટ્ટવિએ નિવ્વિસમાણે પડિસેવેહ
 સે વિ કમિણે તત્થેવ આરુહ્યેવ્વે મિયા । એય પલિઉંચિએ ॥સૂ.૦॥૧૮॥

જે મિક્સુ ચાઉમ્માસિયં વા સાહરેગચાઉમ્માસિયં વા
 પંચમાસિયં વા સાહરેગપંચમાસિયં વા
 એસિં પરિહારદ્વાણાણં અન્નયરં પરિહારદ્વાણ પડિસેવિત્તા આલોએજ્જા ।
 અપલિઉંચિય આલોએમાણે ઠવણિજ્જં ઠવહત્તા કરણિજ્જં વેયાવહિય
 ઠવિએ વિ પડિસેવિત્તા સે વિ કસિણે તત્થેવ આરુહ્યેવ્વે સિયા
 અપલિઉંચિએ અપલિઉંચિયં, અપલિઉંચિએ પલિઉંચિય,
 પલિઉંચિએ અપલિઉંચિયં, પલિઉંચિએ પલિઉંચિય,
 પલિઉંચિએ પલિઉંચિયં આલોએમાણસ્સ સવ્વમેયં સકય
 સાહણિય જે ઇયાએ પટ્ટવણાએ પટ્ટવિએ નિવ્વિસમાણે પડિસેવેહ
 સે વિ કસિણે તત્થેવ આરુહ્યેવ્વે મિયા ॥સૂ.૦॥૧૯॥

જે મિક્સુ બહુસો વિ ચાઉમ્માસિયં વા બહુમો વિ માહરેગચાઉમ્માસિયં વા,
 પંચમાસિય વા સાહરેગપંચમાસિય વા
 એસિં પરિહારદ્વાણાણ અન્નયરં પરિહારદ્વાણ પડિસેવિત્તા આલોએજ્જા ।

पलिउं चिय आलोएमाणे ठवणिज्जं ठवइत्ता काणिज्जं वेयावडियं
ठविए वि पडिसेविच्चा से वि कमिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया
अपलिउं चिए अपलिउं चियं, अपलिउं चिए पलिउं चियं,
पलिउ चिए अपलिउं चिय, पलिउं चिए पलिउ चियं ।
पलिउं चिए पलिउं चियं आलोएमाणस्स सच्चमेयं सकयं
साहणिय जे एयाए पट्टवणाए पट्टविए निव्विसमाणे पडिसेवेइ
से वि कसिणे तत्थेव आरुहेयव्वे सिया ॥६५८०॥

(इत्यादि सर्व उच्चारयेव्व, एव बहुसो वि सुत्त उच्चारयेव्व) एते वि तहेव वक्खणयेव्व । यदि
सा एव व्याख्या को विशेष ? अत उच्यते - हेट्ठिमसुत्तेसु परिहारतवो ण भणिओ ।

इह परिहारतवो वि भाणिज्जइ -

को भते ! परियाओ, सुत्तत्थाभिगगहो तवोक्कम्मं ।

कक्खडमकक्खडेसु, सुद्धतवे मंडवा दोणिण ॥६५८४॥

“को भते” अस्य व्याख्या -

गीयमगीओ गीओ, अहं ति किं वत्थुं कासवसि (कस्स तवस्स) जोगो ।

अगीतो ति य भणिते, थिरमथिर तवे य कयजोगो ॥६५८५॥

सो अतियारपत्तो आलोए पुच्छिज्जइ - किं तुम गीतो अगीतो वा ?

जति भणइ - अह गीतो, तो पुणा पुच्छिज्जइ ति - तुम किं वत्थु ति, आयरिओ उवज्झाओ
बसभात वा ?

अणतरे कहिए पुणो पुच्छिज्जति - “कस्स तवस्स जोगो” ति - किं तव काउ अच्छिहसि ?
कस्स वा तवस्स समर्थेत्यर्थ ।

अह सो भणति - अह अगीतो, तो पुच्छिज्जति - किं तुम थिरो अथिरो ति ?

थिरो णाम धितिसघयणेहि बलव, अहवा - दरिसणे पव्वज्जाए वा थिरो अचलेत्यर्थ । इतरो पुण
अथिरो ।

जइ भणति - थिरो ह, तो पुच्छिज्जइ “तवे कयजोगो” ति कक्खडतवेहि संभावितो अभावितो
वा कृताभ्यासेत्यर्थ ।

जति भावितो तो से परिहारतवो दिज्जति, इयरस्स सुद्धतवो ॥६५८५॥

जो सो एव पुच्छिज्जइ साव्वु सो सगणिच्चतो अण्णगणातो वा आगतो -

सगणम्मि गत्थि पुच्छा, अण्णगणा आगतं व जं जाणे ।

परियाओ जम्मदिक्खा, अउणत्तीस वीस कोडी य ॥६५८६॥

जो सगणिच्चो, जो य परगणाओ गीतादिभावेहि णज्जति, एते ण पुच्छिज्जइ । जो परगणाऽऽमओ ण
णज्जति । परियाओ दुविहो - जम्मपरियाओ दिक्खपरियाओ य । जम्मपरियाओ जहण्णेण अउणत्तीस वासा,
उक्कोयेण जा देसूणा पुव्वकोडी । दिक्खपरियाओ जहण्णेण वीस वासा, उक्कोसेण देसूणा पुव्वकोडी ॥६५८६॥

इदाणि सुत्तत्थाणे -

णवमस्स ततियवत्थुं, जहण्ण उक्कोसऊणगा दसओ ।

सुत्तत्थभिग्गहा पुण, दव्वादि तवो रयणमादी ॥६५८७॥

सुत्तत्थेण जहण्णेण जेण अधीय णवमस्स ततिय आयावरत्थु, उक्कोसेण जाव ऊणगा दसपुव्वा, समत्तदसपुव्वादियाण परिहारतवो ण दिज्जति ।

कम्हा ? जम्हा वायणादिपचविहसज्झायविहाण चेव तेसि महत्तर कम्मणिज्जरठाण । किं च सगलसुयणाणी महत् ठाण णो परिहारतवविहाणेण विमाणिज्जति । किं च अणालावादिपदेसु य सुयस्स अभत्तो भवति । अभिग्गहा दव्वादिया ।

दव्वतो जहा - मए अज्जकुम्मासा वेत्तव्वा तक्कादि वा एकदव्व ।

खेत्ततो - एलुय विवखभिन्ना ।

कालतो - ततियाए पोरुसीए ।

भावतो - हसती रुवती वा ।

तवो य रयणावलिमादि, सीह निक्कीलियादि ।

एवमादिगुणजुत्तस्स परिहारतवो दिज्जति । एवमादिगुणविपहीणे पुण सुद्धतवो दिज्जति । परिहार-तवो कक्खडो दुश्चरेत्यथ । अकक्खडो सुद्धतवो सुकरेत्यथ ॥६५८७॥

सीसो पुच्छति - कम्हा गीतादिगुणजुत्तस्स परिहारो, इतरस्स य सुद्धतवो ?

आयरिओ भणइ - एत्थ दोहि मडवेहि दिट्ठु करेइ । सेलमडवेण एरडमडवेण य जुत्तो ।

जं मायति तं छुम्भति, सेलमए मंडवे ण एरंडे ।

उभयवल्लिए वि एवं, परिहारो दुब्बलो सुद्धो ॥६५८८॥

जावतिय मायति तावतित सेलमडवे छुम्भति तहा वि न भज्जति । एरडमडवो पुण जावतिय खमति तावतित छुम्भति । एव “उभय” ति जो धितीए सरीरेण य सघयणसपण्णो गीतादिगुणजुत्तो य तस्स परिहारतवो दिज्जति । “दुब्बलो” ति धितीए सघयणेण वा उभयेण वा दुब्बलो, तस्स सुद्धतवो दिज्जति ॥६५८८॥

परिहारसुद्धतवाण प्रायश्चित्त विसेसओ दिज्जति, ततो भन्नति -

अविसिद्धा आवत्ती, सुद्धतवे तह य होति परिहारे ।

वत्थुं पुण आसज्जा, दिज्जति इतरो व इतरो वा ॥६५८९॥

परिहारतवे सुद्धतवे य अविसिद्धा “आवत्ति” ति दोणि जणा तुल्ल आवत्तिठाण आवण्णा । तत्थ “वत्थु आसज्ज” ति - धितिसघयणसपण्ण पुरिसवत्थु णाउ । “इयरो” ति परिहारो तवो दिज्जति । ज पुणो धितिसघयणेहि हीण पुरिसवत्थु तस्स ताए चेव आवत्तीए “इयरो” ति सुद्धतवो दिज्जति । एत्थ अण्णोणा विक्खत्तो इयरसहा ठिता ॥६५८९॥

एत्थ एगावत्तीए विसमदानपसाहणत्थं इमो दिट्ठतो -

वमण-विरेयणमादी, कक्खडकिरिया जहाऽऽउरे वल्लिए ।

कीरति व दुब्बलम्मि वि, अह दिट्ठतो तवे दुविहो ॥६५९०॥

जहा दो जणा सरिसरोगाभिभूया, तस्म जो आउरो बलव सरीरेण तस्स वमणविरेयणादिका कक्खडादिकिरिया कज्जति । दुब्बलो वि जहा सत्ति तहा अकक्खडा किरिया कज्जति । “अह” ति — अय दिट्ठतो तवे दुविहो उवसहारणिज्जो — कक्खडकिरियसमाणो परिहारतवो, सुद्धतवो अकक्खडकिरियसमाणो ॥६५९०॥

जोसि णियमा सुद्धतवो परिहारतवो वा दिज्जति तन्नियमार्थमिदमुच्यते —

सुद्धतवो अज्जाणं, अग्गीयत्थे दुब्बले असंघयणे ।

धितिवल्लिए य समण्णा-गयमव्वेसिं पि परिहारो ॥६५९१॥

दुब्बलो धितीए अणुवचितदेहो रोगादिणा, असंघयणे ति — आदिल्लेहि तिहिं सघयणेहिं वज्जितो, एतेसि सुद्धतवो दिज्जति । जो धितीए बलव वज्जकुड्डसमाणो, जो य सघयणेहिं समण्णागग्रो आइल्लेहिं सघयणभावेहिं बुत्तो ति बुत्त भवति, गीतातिगुणेहिं वा समण्णागग्रो युक्त इत्यथ, सव्वेसिं तेसि परिहारतवो दिज्जति, ॥६५९१॥

तस्सिमो विधी — “ठवणिज्ज ठवइत्ता” सुत्तपद, ज तेण सह णायरिज्जति त ठवणिज्ज, त सव्व गच्छममक्ख ठविज्जइत्ति — परुविज्जति । अथवा — सव्वा चेव तस्स सामायारी ठवणिज्जा — परुवणिज्जा इत्यर्थ ।

कह पुण त ठविज्जति ?, उच्यते —

विउसग्गो जाणणट्ठा, ठदणा भी (ती) ए य दोसु ठवित्तसु ।

अगडे णदी य राया, दिट्ठंतो भीय आसत्थो ॥६५९२॥

नस्स परिहारतव आवज्जतो आदावेव उस्सग्गो कीरइ । कह ?, उच्यते — गुरू पुव्वदिसाभिमुहो वा उत्तरदिसाभिमुहो वा चरतदिसाभिमुहो वा चेइयाण वा अभिमुहो । एव परिहारतवो वि । णवर — गुरूस्स वामपासे ईसिं पिट्ठतो ते दुवग्गा वि भणति — “परिहारतववज्जणट्ठा करेमि काउस्सग्ग निरुवसग्गवत्तियाए” इत्यादि ताव भणति जाव वोसिरामी ति । पणवीसुस्सासकाल सुभज्जवत्तिसा ठिच्चा चउवीसत्थय वा वित्तेउ णमोक्कारेण पारेत्ता अक्खलिय चउवीसत्थ उच्चरति ॥६५९२॥

एत्थ सीसो पुच्छति — एम उस्सग्गो किं निमित्त कीरइ ?, उच्यते — साधूण जाणणट्ठा कीरइ ।

अहवा —

निरुवसग्गनिमित्तं, भयजणणट्ठा य सेसगाणं च ।

तस्सऽप्पणो य गुरूणो, य साहए होति पडिवत्ती ॥६५९३॥

पुव्वद्ध कठ । सुभेसु तिहिकरणमुहत्तेसु ताराचद्रबलेसु य अप्पणो गुरूस्स य जहा साहए भवति तहा परिहारतव पडिवज्जइ, ॥६५९३॥ काउस्सग्गकरणाणतर ठवणा ठविज्जइ, तत्थ आदावेव त परिहारित गुरू भणति —

कप्पट्ठिओ अहं ते, अणुपरिहारी य एस ते गीतो ।

पुव्वि कयपरिहारो, तस्सऽमत्तियरो वि दददेहो ॥६५९४॥

कप्पट्ठातो अह ते, जाव ते परिहारकप्पो ताव अह ते वदणावायणादिसु सहजो ते सेससाहगो । एत्थ कप्पट्ठा कालवाची । अहवा — कप्पभावट्ठितो, अह ते वदणावायणादिसु कप्पो अपरिहार्य इत्यर्थ ।

शेषा साधव परिहार्या । अण्ण च से एस गीयत्थो साधू पुब्ब कतपरिहारत्तणओ जाणगो “अणुपरिहारि” त्ति भिक्खादि जतो जतो परिहारी गच्छति, ततो ततो अणुपिट्ठो गच्छइ त्ति अणुपरिहारी भण्णइ । अहवा – परिहारस्स अणु शोव पडिलेहणादिसु साहेज्ज करेती त्ति अणुपरिहारी भण्णति । “तस्सऽमत्ति” त्ति – जेण पुब्ब परिहारतवो कतो तस्सासति इयरो त्ति अकयपरिहारो वि गीयत्थो दढसवयणो अणुपरिहारी ठविज्जति ॥२५६४॥

ठवण ठवेतो आयरितो सेससाधू इम भणाति—

एस तवं पडिवज्जति, न किं चि आलवति मा य आलवह ।

अत्तट्ठचित्तगस्सा, वाघातो (भे) न कायव्वो ॥२५६५॥

सबालवुड्ढ गच्छ गुरू आमतेउ भणाति—एस साधू परिहारतव पडिवज्जति, न एस किंचि आलवति, तुब्भे वि एय मा आलवेज्जह । अण्णो अट्ठो अत्तट्ठो, सो य अत्तादिओ, त अण्णो १ पर चित्तेति ण बालादिताण त्ति । अहवा – णिच्छयणो अत्तट्ठो अतियारमणिण अण्णो जहुत्तेण पच्छित्तेण विविणा अण्णति-यरतो विसोहेतीति अत्तट्ठचित्तगो । एयस्स भे वाघातो इमेहि पदेहि न कायव्वो ॥२५६५॥

आलावण पडिपुच्छण, परियट्ठट्ठाण वंदणग मत्ते ।

पडिलेहण सघाडग, भत्तदाण संभुज्जणे चव ॥२५६६॥

हे देवदत्त ! इत्यादि आलावो गतार्थ । एस तुब्भे सुत्तमत्थ वा किंचि ण पुच्छति, एय मा पुच्छेज्जह १, एव एस तुब्भेहि सह सुत्त अत्थ वा ण परियट्ठेति २, कालवेलादिसु वा न उट्ठवेति ३, एस तुब्भे वदणय अ करेति ४, उच्चारपासवणखेलमत्त ण वा देति ओहिमत्तग वा ५, ण य उवकरणादि किंचि पडिलेहेति ६, अ वा एस तुब्भे सघाडगभाव करेति ७, ण वा भत्तपाण देति ८, ण वा एस तुब्भेहि सह भुज्जेति ९, तुब्भे वि एयस्स एते अत्थे मा करेज्जह १०, एव दसहि पदेहि गच्छेण सो वज्जितो सो वि गच्छ वज्जेति ॥२५६६॥

जति गच्छवासी एते पदे अतिचरति तो इम पच्छित्त—

संघाडगा उ जाव तु, लहुओ मासो दसण्ह उ पदानं ।

लहुंगा य भत्तपाणे, संभुज्जणे होंत्तणुग्घाया ॥२५६७॥

दपण्ह पदान आलावणपदातो आढत्त जाव अट्ठम सघाडगपदे ताव मासलहु पच्छित्त, जति भत्तपाणं देति तो चउलहुगा, अच्च भुज्जति तो चउगुरगा ॥२५६७॥

एनेसु चव परिहारियस्स इम—

संघाडगा उ जाव तु, गुरूओ मासो दसण्ह उ पदानं ।

भत्ते पाणे संभुज्जणे य परिहारिए गुरूगा ॥२५६८॥

आलवणपदातो जाव सघाडपद, एते अतिचरतस्स परिहारियस्स मासगुरू, अह भत्त देति संभुज्जति वा तो दोसु वि चउगुरगा भवति ॥२५६८॥

कप्पट्टितो सो इम करोत -

कितिकम्म तु पडिच्छति, परिणपडिपुच्छणं पि से देति ।

सो वि य गुरुमुवचिद्वति, उदंतमवि पुच्छितो कहए ॥६५६६॥

कितिकम्म ति वदण, त जति परिहारितो देति ता गुरु पडिच्छति, आलोयण पि पडिच्छति, परिण ति - पच्चुसे अवरण्हे वा पच्चवखाण से करेति, सुत्तये पडिपुच्छ देति । 'सो वि य' ति - परिहारितो "गुरु" आयगिया त अन्मुट्ठाणादिविणएण "उवचिद्वति" - विणय करोतीत्यर्थ । "उदत" - सरीर-बट्टमाणी वत्ता त गुरुणा पुच्छितो वहेति ॥६५६६॥

एव ठवणाए ठवियाए "१दोनु ठविएसु" ति - कप्पट्टिते अणुपरिहारिए य । सो परिहारिओ कया इ भीनो होज्ज "कहमह आलावणादीहि गच्छवज्जितो एगामो इम उभगतव गहमि ? एतिय वा काल गमिम्मामि ?" ति एव भीओ अगडादिदिदुतेहि आसासेयव्वो ।

जहा - कोति अगडे पडितो कहमुत्तरिस्सामि ति भीओ ताहे सो तडत्थेहि आसासज्जति - मा तुम बीहेहि, वय तुम उत्तारेमो, एस रज्ज आणिज्जइ, एवमासासिउ णिब्भओ थाह बधति । अह सो भणति - "मओ एस वराओ, ण एय कोइ उत्तारेइ", ताहे सो णिरासो अगे सुयति, मरति य । एव परिहारितो वि आसासेयव्वो ।

जहा कोइ अणदीए अणुसोय वत्ततो भीओ ताहे सो तडत्थेहि आसासितो थाह *बवइ । अणासामितो णिरामो भया मरति ।

जहा वा कस्सइ "राया वट्ठो ताहे भीओ मारिज्जिहामि ति ताहे सो अण्णेहि आसा-मिज्जति - "मा बीहेहि, राया वि अन्नाय न करेति", एव सो न विद्वानि । अह सो भणति - "विणट्ठो मि" ताहे विपज्जति ।

एव परिहारितो वि भाणियव्वो - मा भीहि, अह ते वदणदायणादिसु कप्पट्टितो एस ते तवो-किलत्तम असमत्थस्म अणुपरिहारिओ । एव आसासितो तव वहुतो किलामिओ विरियायार अहावेतो परि-हारितो अणत्तर करिय काउमसमत्थो अणुपरिहारियस्स पुरओ इम भणाति -

उट्टेज्ज णिसीएजा, भिक्खं हिंडेज्ज भंडगं पेहे ।

कुविय पियबंधवस्स व, कग्गे इतरो वि तुसिणीओ ॥६६००॥

जइ उट्टेज्ज ण सक्कति ताहे भणइ उट्टेज्जामि, ताहे अणुपरिहारितो उट्टेवइ । एव णिसिएज्जामि । भिक्खायरियाए ज ण सक्केति त भिक्खगहणादि सव्व करेति । अह सव्वहा भिक्ख हिंडिउ ण सक्केति ताहे भणाति - भिक्ख हिंडिज्जामि । एव उत्तरे अणुपरिहारितो से हिंडिउ देति, भडगापेहुणे वि माहज्ज करेति, सव वा पडिलेहति । जहा कोवि प्रियबधुस्म कुवितो ज से करणिज्ज त सव्व तुप्पिह्वको करेति तथा "दयरो" ति - अणुपरिहारिओ परिहायिस्स सव्व करणिज्ज तुसिणीओ करेति ॥६६००॥

चोदगाह - जइ भय से उप्पज्जइ, एरिसी वा अवत्था भवति, ता किं पच्छित्त कज्जति ?

किं चाह -

अवमो व रायदंडो, ण य एवं च होइ पच्छित्त ।

संकर सरिसव सकडे, मंडव वत्थेण दिड्ढंता ॥६६०१॥

जहा अवसेहि रायदडो छुम्भति, किमेव पच्छित्त पि ?

आचार्याह - ण एव रायदडो विव अवसेहि वि वोढव्वो, पच्छित्त सवसेहि इच्छातो वोढव्व चरणविसुद्धिणिमित्त । अहवा - एव जहा अवस्म रायदडो छुम्भति, जति ण छुम्भति तो दोसो भवति । पच्छित्त पि अवस्स वोढव्व, जति ण वहति तो चरणविसुद्धी ण भवति ।

पुनरप्याह चोदक - 'बहु आवण्णं छुम्भउ, येव पच्छित्त किं छुम्भइ ? किं तत्तिलएण होहि' ति ।

आयरिओ भणइ - "सकर" पच्छद । सकर त्ति -

जहा सारणीए खेत्ते पज्जिज्जते एक्क वि तिण्ण लगत णो अवणीय, तण्णिस्साए अण्णे लगा, तेसि णिस्साए पत्तकट्टमादीवि, एव तम्मि सोते रुद्धं विसोय गय जल कुसारढढणादी पज्जेत्ति ण छेत्त सुक्खसस्स । एव चरणसोते पच्छित्तसकरेसु असोहिज्जते सव्वहा चरणणासो भवति । एव णाउ ज जहा आवज्जति त तहा सोहेयव्व ।

जहा वा मडवे एक्को सरिसवो पक्खित्तो सो णावणीओ, अण्णो वि, एव पक्खिप्पमाणेहि पक्खिप्पमाणेहि होहिहि सो सरिसवो जेण पक्खित्तेण मडवो भज्जिहि ।

एव येवयेवेण आवण्णेण असोहिज्जनेण चरित्तमडवो वि भज्जि हति ।

जहा भडीए एक्को पासाणो वलपिओ, जहा सरिसवस्स विभासा तहा भडीए वि । अहवा - भडीए एक्क दारुअ भग्ग, त ण सठवित, एव अण्ण पि, एव सव्वा भडी भग्गा ।

एव चरित्तमडीए वि उवसहारो ।

जहा वा सुद्धे वत्थे कज्जलविदू पडिओ, सो ण धोओ, अण्णो वि पडितो सो ण धोतो, एव पडतेहि अघोयतेहि सव्व त वत्थ कज्जलवण्ण जाय ।

एव सुद्ध चरित्त येवयेवावत्तीहि असोहिज्जनीहि सव्वहा अचरित्ती भवति ॥६६०१॥

एव दिट्ठतेहि पच्छित्तदाणकारणे पसाहिते चोदक -

अणुकंपिता व चत्ता, अहवा सोही न विज्जते तेमि ।

कप्पट्टगभंडीए, दिट्ठतो धम्मया सुद्धो ॥६६०२॥

चोदगो भणति - एगावत्तीए जस्स सुद्धतव देह, सो भे अणुकपितो रागो य । तत्थ जस्स परिहार सो भे चत्तो दोमो य तत्थ । अहवा - परलोग पडुच्च परिहारतवी अणुकपिओ चरणसुद्धीओ सुद्धतवी चत्तो चरित्तस्स असुद्धतणतो ।

अहवा - जइ परिहारतवेण सुद्धी तो सुद्धतवइत्ताण सोही ण विज्जति । अह सुद्धतवेण विसुद्धो भवति ता परिहारतवकक्खड्ढकरण सव्व णिरत्थय ।

एत्थ आयरिया कप्पट्टगभंडीए महल्लभंडीए य दिट्ठु करेति ।

जहा कप्पट्टा अप्पणो सगडियाए ववहरति, सकज्जणिप्फत्ति च करेति, णो तरति महल्लभंडीए, कज्ज त्त काउ ण वा महल्लभंडीए आरोविज्जति । अह आरोविज्जति तो सा भज्जति, कज्ज च ण सिज्जति । एव महल्लगा वि कप्पट्टगभंडीए कज्ज ण करेति, अह करेति तो पलिमथो, सकज्जसिद्धी य ण भवति ।

एव सुद्धतवेणेव सुद्धो भवति, परिहारतवेण णेव भवइ ।

कह ? उच्यते - “धम्मया सुद्धो” त्ति अस्य व्यख्या -

जो जं काउ समत्थो, सो तेण विसुज्झते अमढभावो ।

गूहितवलो ण सुज्झति, धम्मसभावो त्ति एगट्ठा ॥६६०३॥

जो साधू “ज” ति सुद्धतव परिहारतव वा काउ समत्थो भवति स साधू तेणेव तवेण सुज्झति । अमढभावनामो नि स्ववीर्यं प्रतिमाया अकुब्बमाणो स्वधर्मव्यवस्थितत्वाच्च, जो पुण स्ववीर्यं गूहति सो न सुज्झति, जतो तस्म धम्मो त्ति वा, सभावो त्ति वा, दो वि एगट्ठा ॥६६०३॥

एतेसु शुद्धपरिहारतवविशेषज्ञापनार्थमिदमुच्यते -

सुद्धतवे परिहारिय, आलवणादीसु कक्खडो इतरे ।

कप्पट्टिय अणुपरियट्ठण वेयावच्चकरणे य ॥६६०४॥

मीसो पुच्छन्ति - सुद्धतवपरिहारतवाण कतगे कक्खडो वा, अक्खडो वा ?

आयरियो भणति - सुद्धतवो आलवणादिहि अक्खडो, इयरो त्ति परिहारतवो सो अणालवणादीहि कक्खडो । जो पुण तवकालो, तवकरण वा त दोसु वि तुल्ल । आवण्णपरिहार पवणस्स जे कप्पट्टितअणुपरिहा-
न्या ठविया तेहि करणिज्ज “वेयावडिय” ति सुत्तपद ॥६६०४॥

किं पुण त वेयावडिय, ज कायव्व ? अत उच्यते -

वेयावच्चे तिविहे, अप्पाणम्मि य परे तदुभए य ।

अणुसट्ठि उवालंभे, उवग्गहो चेव तिविहम्मि ॥६६०५॥

दव्वेण भावेण वा ज अप्पणो परस्स वा उवकारकरणे त सव्व वेयावच्च । त च तिविह - अणुसट्ठो, उवालंभो, उवग्गहो य । उवदेसपदानमणुसट्ठो श्रुतिकरण वा अणुसट्ठो । सा तिविहा - आय-पर-उभयाणुसट्ठो, अत्ताणुसट्ठो जो अत्ताण अणुसासति, पराणुसट्ठो जो पर अणुसासति, परेण वा अणुसट्ठो ॥६६०५॥

अणुसट्ठीय सुभदा, उवलंभम्मि य भिगावती देवी ।

आयरिओ दोसु वि उवग्गहेसु सव्वत्थ आयरिओ ॥६६०६॥

पराणुसट्ठीए जहा चपानयरीए सुभदा णागरजणे अणुसट्ठा “वण्णा सपुण्णा सि” ति । उभयाणु-
सट्ठी जो अत्ताण पर च अणुसासति ॥६६०६॥

एव तिविह पि अणुसट्ठि डमेण गाथाजुयलत्थेण अणुसरेज्जा -

दंडसुलभम्मि लोए, मा अ मर्ति कुणसु दंडिओ मि त्ति ।

एस दुलहो उ दंडो, भवदंडणिवारणी जीव ॥६६०७॥

कट्ठा । ण केवल एस दंडो भवणिवारणो, अपि चात्माऽनाचारमलिनो विशोधित ॥६६०७॥

अवि य हु विसोहितो ते, अप्पाऽणायारमतिलिओ जीव ।

इति अप्य परे उभए, अणुसट्ठि शुइ त्ति एगट्ठा ॥६६०८॥

साधु कथं ते ज अप्पाऽणायारमलिणो विसोधितो ति एव वुच्चति । सेस कठ ॥६६०८॥

इदार्णि “^१उवलभो” ति – अणायारकरणोवलभतो, साधुना ताव एस पदाण उवालभो भणति ।
सो वि तिविहो – अप्पाणऽरे तदुगए य । ज अप्पाणा चेव अप्पाण उवालभति, जहा –

तुमए चेव कतमिणं, न सुद्धकारिस्स दिज्जते दडो ।

इह सुक्को वि ण सुच्चसि, परत्थ अह हो उवालभो ॥६६०९॥

आयरियादणा जो परेण उवालभति जहा मियावती देवी अज्जचदणाए उवालद्धा “अकालचा रिणि” ति काउ । उभयउवालभो जा अप्पाणा अप्पाण उवालभति आयरियादिणा य उवालभति, अहवा –
गुस्सा उवलभमाणो त गुरुवयण सम्म पडिवज्जतो पच्चुयरति, एम उभयउवालभो ॥६६०९॥

इदार्णि उवग्गहो, “^२उवग्गहो चेव तिविहम्मि” ति दव्वतो णामेगे उवग्गहो ना भावओ, ना दव्वओ भावओ, एगे दव्वतो वि भावतो वि, चउत्थो सुण्णो ।

तइयभगविभासा इमा – “^३आयरिओ दोसु” पच्छद्ध ।

अस्य व्याख्या –

दव्वेण य भावेण य, उवग्गहो दव्वे अण्णपाणादी ।

भावे पडिपुच्छादी, करेति जं वा गिलाणस्स ॥६६१०॥

कप्पटितो अणुपरिहारिओ वा असमत्थस्स असणाती ऋणउ देति । भावे आयरिओ सुत्ते अत्थे वा पडिपुच्छ देइ । अहवा – ज गिलाणस्स कज्जात सो भावस्सुवग्गहो ॥६६१०॥

अहवा “^४दोसु वि उवग्गहेसु ति अस्य व्याख्या –

परिहार ऽणुपरिहारी, दुविहेण उवग्गहेण आयरिओ ।

उवग्गिण्हति सव्वं वा, मबालवुड्डालं गच्छं ॥६६११॥

परिहारिय अणुपरिहारिय च एते दो वि दुविहेण वि दव्वभावोवग्गहेण उवग्गहेति । “^५सव्वत्था-यरिओ” ति परिहारियस्स अपरिहारियस्स अणुपरिहारियस्स मबालवुड्डस्स य गच्छस्स दव्वभावोहि सव्वहा उवग्गह करेति ॥६६११॥

एव परिहारियस्स परिहारतवेण गिलायमणस्म पुव्व अणुसट्ठी कज्जति, ततो उवलभो दिज्जति, पच्छा से उवग्गह कज्जति ।

भणिय च –

“दाण दवावण कारावणे य करणे य कयमणुणा य ।

उवहियमणुवहियविधि जाणाहि उवग्गह एय” ॥१॥

अणुसट्ठि-उवालभ-उवग्गहे तिसु वि पदसु अट्ठमगा कायव्वा, जतो भणति –

अहवाऽणुसट्ठुवालंभुवग्गहे कुणति तिन्नि वि गुरू से ।

सव्वस्स वा गणस्सा, अणुसट्ठादीणि सो कुणति ॥६६१२॥

एम अट्टमो भगो, आदिल्लेनु वि सत्तु जत्तिय चेव भणति करेति वा । अहवा - ण केवल परिहारियस्स करेति 'सो' ति - आयरिओ सव्वस्स गणस्स अट्टम गोए अणुसट्ठिमादीणि करेति, अहवा - "सो" ति - परिहारिओ, गणस्स कगोतीत्यर्थ ॥६६१२॥

अत्र चोदक -

आयरिओ केरिमओ, इहलोए केरिसो व परलोए ।

इहलोए अ सारणिओ, परलोए फुडं भणंतो उ ॥६६१३॥

छम्मानिय अणुगहकसिण जो एम उवग्गहकरो आयरिओ त चेव णाउमिच्छे केरिसो इहलोमे परलोए वा हितकरो ?

आचार्याह - आयरिओ चउव्विहो इमो - इह्लोगहिते णामेगो परलोमे । एव चउभगो । पढम-बित्तियभगवक्खाण पच्छद्ध । इह्लोग पडुच्च जो य सारेति, आहारवत्थपत्तादिय च जोग्ग देति । परलोगहितो जो पमादनस्स चोयण करेइ, ण वत्थपत्तादिय देति । उभयहितो जो चोदेति, वत्थादिय च देति । चउत्थो उभयगहिओ ॥६६१३॥

चोदगाह - "णण जो भट्टमभावत्तणओ ण चोएति, सो इहलोए इच्छिज्जति । जो पुण खरपरस भणतो चडरुद्राचार्यवत् चोदेति, ण सो इच्छिज्जति" ।

आचार्याह -

जीहाए विलिहंतो, ण भदतो जत्थ सारणा णत्थि ।

दंडेण वि ताडतो, स भदतो सारणा जत्थ ॥६६१४॥ कठ

एत्य कारणमिण -

जह सरणमुवगयाणं, जीवियववरोवणं णरो कुणति ।

एवं सारणियाणं, आयरिओ असारओ गच्छे ॥६६१५॥

साधू कह सरणमुवगया ?, उच्यते - जेग पक्खे पक्खे भणति - "इच्छामि खमासमणो !, कताइ च मे कितिकम्माइ" इत्यादि जाव "तुब्भ तवतेय सिरीओ (ए) चाउरताओ ससारकताराओ साहृत्य (टुट्ट) णित्थरिस्सामि" ति कट्टु एव सरणमुवगया अचोदेतो परिब्वइ ॥६६१५॥

तन्हा तत्तियभगिल्लो आयरिओ परिहारियस्स अणुसट्ठा तिविह वेयाअच्च करेति, कारवेइ अणुमण्णति य । एव वेयावच्चे कीरमाणे ज पडिसेवति आवज्जतीत्यर्थ । "से वि कसिणे तत्थेव आरुभियव्वे", एव सुत्त पद कसिण णाम कृत्स्न निरवशेष ।

त इम छव्विह -

पडिसेवणा य सचय, आरुवण अणुग्गहे य बोधव्वे ।

अणुघात निरवसेसे, कसिणं पुण छव्विहं होति ॥६६१६॥

पारं च सतमसीतं छम्मासारुवणां छद्दिणगतेहिं ।

कालकणिरंतरं वा अणूणमहिय भवे व्वट्ठं ॥६६१७॥

एषा यथासख्येन इमा विभासा -

पडिसेवणाकसिण पारचिय, सचयकसिण असीय मामसय, आरुवणकसिण छम्मासिय, अणुग्गहक सिण गाम छण्ह मासाण आरोवियाण छद्दिवसा गता ताहे अण्णे छम्मासो आवण्णो ताह ज तेण अद्दव्वुड त भोसित ज पच्छा आवण्ण छम्मासित त वहति, एत्थ पच मासा चउव्वीस च दिवसा जेण भोसिया । एय अणुग्गहकसिण । एत्थेव गिरणुग्गहकसिण भाणियव्व, जहा छम्मासिय पट्टविए पच मासा चउव्वीस च दिवसा वूढा ताहे अण्ण छम्मासिय आवण्णो ताहे त वहति पुव्विल्लस्स छद्दिणा भोसो । अण्णघायकसिण ज कालम जहा मासगुरुगादि ।

अट्टवा - ज गिरतर दाण एत्थ मासलहुगादी वि गिरतर दिज्जमाण अणुग्घात भवति, अट्टवा - मणुग्घातिय तिविह - कालगुरु तवगुरु उभयगुरु - कालगुरु ज गिम्हादिकवखडे काले दिज्जति, तवगुरु ज अट्टमादि दिज्जति गिरतर वा । उभयगुरु ज गिम्हे गिरतर च । गिरवसेसकसिण गाम ज आवण्णो त सव्व अणूणमतिरित्त दिज्जति ॥६६१७॥

एत्थ कयरेण कसिणेण त आरुभियव्व ? उच्यते -

एत्तो समारुभेज्जा, अणुग्गहकसिणेण विण्णसेसम्मि ।

आलोयणं सुणेज्जा, पुरिसज्जातं च विन्नाय ॥६६१८॥

एत्तो त्ति छविह (कसिणाण अणूग्गह) कसिणेण आरुभेयव्व पुव्विल्लस्स वि ण सेमदिवसेसु, त च आलोयण सुणेत्ता हा दुट्ठुकतादि पुरिसजाय च धितिसघयणेहिं दुब्वल एव विण्णाय जति छम्मासिय आवण्णो तो छसु दिवसेसु गतेसु आरोविज्जति । अह तिव्वज्जकवसिएण पडिसेवित रागायत्तेण आलोचित्त धितिसघयणेहिं य बलवतो से गिरणुग्गह आरोविज्जति 'छद्दिणसेस' त्ति ॥६६१८॥

इयारिण पडिसेवणाआलोयणासु चउभगे इम सुत्तखड उच्चारयेव्व - "पुव्व पडिसेविय पुव्व आलोतिय" इत्यादि, अस्यार्थ -

पुव्वानुपुव्वी दुविहा, पडिसेवणता तहेव आलोए ।

पडिसेवण आलोयण, पुव्विं पच्छा उ चउभंगो ॥६६१९॥

'पुव्वानुपुव्वि' त्ति अस्यार्थ - पूर्वस्य य अनुपूर्वश्च म पूर्वानुपूर्व ,

एत्थ गिण्णि ण - एकस्स ते अणु, ते य तिगस्स पुव्वा दुगस्स तिन्नि अणु ते य चउव्वकगस्स पुव्वा, एव सव्वत्र ।

अट्टवा - पूर्व वा अनुपूर्वं स एव पूर्वानुपूर्वो, अनेन अधिकार, जेण ज पुव्व पडिसेवित आलोयणकाले तमेव पुव्व आलोचित्त ति ।

अट्टवा - सामयिगी सण्णा, जाव अणुपरिवाडी सा पुव्वानुपुव्वी भण्णति, सा य दुविहा - पडिसेवणाएआलोयणाएय । एयासु पडिसेवणा आलोयणासु पुव्वापच्छरणाविकप्पेण चउभंगो कायव्वो ॥६६१९॥

जहा सुत्ते भगभावणा इमा -

पुव्वाणुपुव्वि पढमो, विवरीए बितियततियए गुरुओ ।

आयरियकारणा पुण, पच्छा पुच्छा य सुण्णो उ ॥६६२०॥

पुव्वाणुपुव्वी पढमं त्ति एस पढमो भगो, अस्य व्याख्या -

पच्छित्तऽणुपुव्वीए जयणा पडिसेवणा य अणुपुव्वी ।

एमेव वियडणादी, बितिय-ततियमादिणो गुरुओ ॥६६२१॥

पुव्वं गुरुणि पडिसेविऊण पच्छा लहूणि सेविता ।

लहूण पुव्विं कथयति, मा मे दो देज्ज पच्छित्ते ॥६६२२॥

पुव्वं ज गीयत्थकारणे लहूणरुपणमादिजयणाए पच्छित्तणुपुव्वि अवलंबतो पडिसेवति । एस पडिसेवणाणुपु वी । वियडणं त्ति आलोयणाणुपुव्वी, सा वि एव चेव ज जहा पडिसेवित तहा चेव आलोएति त्ति एस पढमभगो ।

विवरीतो वित्तो - 'पुव्व पडिसेवित पच्छा आलोइय' ति एस बितियभगो ।

तत्तिओ वि पच्छा पडिसेवित पुव्व आलोइय ति, एएसु विइयततियभगेसु ज आवण्णो त दिज्जति, मायाविणो य काउ मायाणिष्फण चउगुरुओ मासो दिज्जति । एतेसु वि ततियभगेसु भावना इमा, एत्थं गुरु त्ति बृहद् द्रष्टव्यम्, लघु अल्पमिति, सो अ मासलहु आदि देति, पुव्व सेविऊण पणगादिया पच्छा पडिसेविए पुव्व कथयति, मासादिया पुण पच्छा कथयति ।

स्यात् किमेव कथयति ?, उच्यते - आसकया "मा मे दो देज पच्छित्ते" ति अजयणणिष्फण अतियारणिष्फण च देति ॥६६२२॥

अहवाऽजतपडिसेवि, त्ति नेव दाहिति मज्झ पच्छित्तं ।

इति दो मज्झमभंगा, चरिमो पुण पढमसरिसो उ ॥६६२३॥

बितियभगे वा करेति इमं चित्ते - "पणगादिआलोयण सोउ" "अजयणपडिसेवि" ति गुरुणे दाहिति, पच्छित्तं अप्प वा दाहिति" एव मायिस्स मज्झिमदोभगसंभवो भवति । अहवा - विसेसतो त्ति त्थिभगऽत्थो इमो - "आयरियकारणा" (गा० ६६२०) पच्छद, आयरियादिकारणेण अण्णं गतुकामो आयरिए वा गतुकामो आयरिय भणति - इच्छामि भते तुब्भेहि अन्नभण्णामो इमेण कारणेण अमुगं विगति एवतियं कालं आहारेतए । एव तत्थं गीयत्था संभावो पुव्व आलोएत्ता पच्छा पडिसेवति । अहवा - तृतीयभगो शून्यो मतव्यः । चरिमभगो पढमभगसरिच्छो चेव णायव्वो ॥६६२३॥

एत्थं जम्हा पढमचरिमा दो वि भगा अपलिकुचियाभावे बितियं ततियं पलिकुचित्ताभावे तम्हा इमे अपलिउचियभावे चउभगसुत्तखड आगतः ।

'अपलिउचित्ते अपलिउचित्त' इत्यादि चउभगसुत्त उच्चारयेयव्व ।

पलिउंचण चउभंगो, वाहो गोणी य पढमओ सुद्धो ।

तं चेव य मच्छरिए, सहसा पलिउंचमाणे उ ॥६६२४॥

पलिउचण इत्यर्थं प्रतिषेधदर्शनाय । जहा सूत्रे तहा चउभगो क्वचित् सूत्रे आदिचरिमा भगा मज्झिमा अत्यतो वत्तवा ।

अस्मिन् सूत्रे चउभगे रहिते वा भिक्खुणिदिट्ठतेहि वक्खान विज्जइ ।

जहा कोइ वाहो कस्सइ इस्सरस्स कयवित्तीओ मस उवाणेति । अण्णया सो वाहो सु दूर मस धेतु इस्सरते सपत्तितो, चित्तेइ य सव्वेत मम इस्सरस्स दायव्वमिति । पत्तो इस्सरसमीव, तेण ईसरण सुट्ठमेण आभट्ठो-स्वागत सुस्वागत उवविसाहि ति, मज्ज च पातितो, वाहेण य तुट्ठेण सव्व त मस जहा चित्ति दिण्ण ।

एव को ति सावराही आलोइउकामो आयरियमगास पठितो चित्तेति य सुट्ठमबादरा सव्वे अतियारा आलोइयव्व ति पत्तो आयरियसमीव । आयरिएण वि सुट्ठु आढातितो- “धण्णो सपुण्णो आसि । तन दुक्कर ज पडिसेवित, त दुक्कर ज सम्म आलोइज्जति ।” एव अप्फालिएण सव्व जहा चितिय आलोइय, सुट्ठो य, एस पढमभगो ।

इदाणि वितियभगो, “त चेव य मच्छरिय” ति पच्छद्द -

खरंटणभीओ रुट्ठो, सक्कारं देति ततियए सेसं ।

भिक्खुणि वाह चउत्थो, सहमा पलिउचमाणो उ ॥६६२५॥

पढमपातो त वितियभगे “त चेव” ति- तहेव वाहो आगओ, जहा पढमभगे अपलिउचमाणो ति, तेण वि इस्सरेण कारणे वा मच्छरो से उप्पातितो, “सहस” ति- पुव्वावर अणालोवेउ “कीम उस्सूरे आगतो” ? ति । तेण खरटिएण भीओ पुव्वेण रुट्ठेण य पलिउचिय ण सव्व मस दिण्ण, पलिउचमाणे वितियभगो भवति ।

आलयगो वि आगओ । पुच्छिओ- केण कारणेण आगओ ति ? भणिय- अवराह आलोइउ । आयरिएण खरटितो । कीस तहा विहरिय जहा अवराह पावह ? आलोएतो वा खरटितो, तेण वि ण सम्म आलोतित । एस गतो वितियभगो ।

इदाणि ततियभगो- “सक्कार देति ततियए सेस” ति- तहेव वाहो सपट्ठितो मस धेतु, पुव्वमसमाणिय पलिउचियचित्तो चित्तेइ ण सव्व मस मए दायव्वमिति । पत्तो इस्सरसमीव, इस्सरेण सुट्ठु आढातितो, तेण से सव्व मस दिण्ण ।

एव आलयगो वि सपट्ठिओ पडिपट्ठिय साहु पुच्छति- “अमुग आयरिय मज्झेग आगतो सि ?” भणति- “आम” । “केरिसो सो सुट्ठभिगमो ण व” ति ? तेण भणिय- “दुग्गभिगमो” । तहेव तेण चित्तिय- न सम्म मए आलोइयव्व ति । आगतो गुरु समीव तेण सम्ममाढातितो पुच्छितो य किमागमण ? तेण भणिय आलोएउ । ताहे आयरिएण सुट्ठु उवव्हिओ धण्णो सि विभासा, तेण तुट्ठेण सम्म आलोचित । एस ततियभगो गतो ।

इदाणि चउत्थभगो- “भिक्खुणिवाह” पच्छद्द, चउत्थभगो तहेव आगतो जहा ततियभगे पलिउचमाणो, णवर- आगओ इस्सरेण खरटितो, तेण खरटिएण पुव्वपलिउचियभावेण य सम्म ण दिण्ण, एव आलयगो वि उवणओ कायव्वो ।

इमो गोणी च उभगदिट्ठतो । जहा गोणी दोहिउकामा पण्डुया आगया, सामिणा उव-
बूहिना गोभत्तेण, कडुनिता, धूमादीहि य उवग्गहिया, पलिमत्ताए णिउत्ता सव्व पण्डुता । एव
आलायगविभासा वि ।

वितिया आगया, ण आढिया, पारद्धा य पहारेहि, तीए ण दिण्ण मव्व खीर । आलोयगेहि
तहे उवण्णो । तनिया गूहनी दोहेउकामा आगया उवज्झिना प लमेत्ताए णिउत्ता सव्व पण्डुया, एव
आलोयगविभासा वि । चउत्था गूहनी आगता, सामिणा य पहारेहि पारद्धा, ण सव्व पण्डुया,
आलोयगो वि तहेव त उवण्णो ।

इदाणि भिक्खुणिदिट्ठतो — का इ भिक्खुणी कस्स इ पुव्वपरिवियस्स घर गता, तीए तिरिक्खे
‘खोरय दिट्ठ गहिय च तीए, पच्छा से परिणयभावे अप्पेमि ति घर गता, तेहि आढाइता, सा तुट्ठा तीए
दिण्ण ॥१॥

अण्णाए गहिय चितिय च नाए दाहामि ति घर गता, सा य न आढाइया, तेहि खरटिया य, तीए
न दिण्ण ॥२॥

ततियाए वि गहिय चिनिय च नाएण दायव्व ति, घर गता, सुस्वागता, आसणादीहि आढातिया,
तीए दिण्ण ॥३॥

चउत्थाए गहिय चितिय च नाएण दायव्व ति, घर गता, आढाइया खरटिया, ण दिण्ण ॥ ४ ॥
“भिक्खुणि वाह चउत्थो ति” भिक्खुणिवाहगोणिसु य एक्केक चउभगो, तेसु चउत्थे भगे पलिउचमाणेसु वि
स्वामिना स्वाथअ शिना सहसा अणादरो कता खरटणा वा पयुत्ताए ततो तेहि तथा चितिय [भे] तहेव
पलिउचितमित्यर्थ ॥६६२५॥

पडिरूवगोवसहारो इमो —

इस्सरसरिमो उ गुरू, साहू बाहो पडिसेदणा भंस ।

णम्मता पलिउचण, सक्कारो वीलणा होति ॥६६२६॥ कट्ठा

सुत्तखड इम — “अपलिउचि” इत्यादि, अस्यार्थ —

आलोयण ति य पुणो, जा एस अकुंचिया उभयओ वि ।

स च्चेव होति सोही, तत्थे य मेरा इमा होति ॥६६२७॥

आलोयमाणो अपलिउचिय जो आलोएति ‘उभउ’ ति — अपलिउचियसकप्पेण अपलिउचिय चेव
आलोतित, अहवा — पडिसेवणाणुलोमेण पच्छित्ताणुलोमेण य “सच्चेव होइ सोधि” ति — जो एम
अपलिउचिय अपलिउचिय आलोएइ सोमाडणिप्फणो तो बुद्धेत्यर्थ । पुनर्विशेषणे । किं विशिनष्टि?, उच्यते—
आलोएतस्स आलोयणारिहू प्रणि तत्थे या मेर ति सामाचारी इत्यर्थ । त आमण्णाभिग्गहेण अतियरतस्स
पच्छित्त भणति एव विभेसेति ॥६६२७॥ अत्रवा — एसा आलोयणा आयरियसिस्सभावे भवति ।

तेसि सामाचारी इमा —

आयरिए कह सोही, सीहाणुग-वसभ-कोल्लुगाणूए ।

अहवा वि सभावणे, णिम्मसुगे मासिगा तिणि ॥६६२८॥

जया आलोयणारिहायरिए आलोयगा आलोयण पउजति तदा कस्स कह सुद्धी असुद्धी वा भवति ?
उच्यते - आयरियो तिबिहो - सीहाणुगो वसहाणुगो ^१कोल्लुगाणुगो ।

तत्थ जो महत्तणिसिज्जाए ठितो सुत्तमत्थ वाएति चिट्ठइ वा सो सीहाणुगो ।

जो एककमि कप्पे ठितो वाएति चिट्ठइ वा सो वसहाणुगो ।

जो रयहरणणिसिज्जाए उवग्गहियपादपुच्छणे वा ठितो वाएति चिट्ठति वा सो कोल्लुगाणुगो ।

एव वसहभिवल्लुगो वि विकप्पेयव्वा, एव आलोयगा वि आयरियवसहभिवल्लुगो विकप्पेयव्वा ।
णवर - कोल्लुगाणुगे विसेसो - सदा णिसेज्जाए पादपुच्छणे वा उक्कुडुओ वा आलोएति, जइ उक्कुडुओ
आलोएति तो सुद्धो । णिसेज्जपादपुच्छणेसु भयणा । “अह्वा - वि सभावेण णिम्मसुग” ति - अह्वेत्यय
नियनप्रदशनाय । स्वको भाव स्वभाव, कोति आयरिओ वसभो वा सभावेण कोल्लुगाणुगो ह्वेज्ज । अह्वा -
धम्मसद्धाए कोइ नेच्छति सिज्जाए उवविट्ठिउ, तस्स निसिज्जा कायव्वा ण कायव्वा ?, उच्यते - जो होउ
सो होउ तस्स णिसिज्ज काउ आलोयगेण आलोएयव्व, जइ ण करेइ तो पच्छित्त पावइ ।

एत्थ दिट्ठतो णिमसुगेण रण्णा ।

जहा एको राया णिमसु, णत्थि से किञ्चि सरिरे रोम ति । तस्स कासवगो कयवित्ती, णत्थि
से रोम ति काउ परिभवेण न कताइ कमिज्जाए उवट्ठाति । अण्णया रण्णा भणिय - आणहि छुरभड,
कम्मिज्जाहि चि । तेण आणिय उग्घाडिय, दिट्ठ पमादतो अपडिजग्गणाए सव्व कट्ठिय, एस म
परिभवति । रुट्ठेण रण्णा सव्वस्सहरणो कतो, वित्ती य छिण्णा, अण्णो य ठविओ, सो य सत्तमे
दिवसे छुरभड सज्जेत्ता उवट्ठाति, सुट्ठेण रण्णा वित्ती सवड्ढिता भोगाभागी य जातो । एव जा
णिसेज्ज करेति सो इहलोगे जस पावति, परलोगे वि कम्म णज्जरणातो मिद्धि पावति, जो पुण निसिज्ज न
करेति सो पायच्छित्तदड पावति । इम - “मामिया तिणि” जत्थ आयरियाती सरिसो सरिमाणुअस्स
आलोएइ । तत्थ तिणि मासिया । सीहाणुस्स आयरियस्स सीहाणुगो चेव आयरिओ आलोएति । एय
एक्कमासिय । वसभस्म उमभाणुगस्स वसभो चेव वसभाणुगो आलोएइ । एव बितिय मासिय । भिवल्लुस्स
कोल्लुगाणुगो आलोएइ । एव ततिय मासिय । एय सट्ठाणे पच्छित्त ॥६६२२॥

इदार्णि सट्ठाणपरट्ठाणजाणत्थ तेसु चेव पच्छित्त वत्तुकामो इदमाह -

सट्ठाणाणुग केई, परट्ठाणाणुग य केइ गुरुगादी ।

सनिमिज्जाए कप्पो, पुच्छ निसिज्जा व उक्कुडए ॥६६२६॥

“सट्ठाण,णुग केइ” ति - आयरियस्स सच्छोभगा निषद्या सन्निषद्या, तट्ठियस्स सीहा सट्ठाणगा
सीहाणुगत्त सट्ठाण, तस्स परट्ठाणाणुगत्तण कप्पपुच्छगादीसु वसभकोल्लुगाणुयत्तणा ।

वसभस्स सट्ठाणाणुगत्त कप्पे वसभाणुगत्त तम्म परट्ठाणाणुगत्तण मणिसेज्जपुच्छणादिमु सीहाणुग
वाल्लुगाणुगत्तणा ।

भिवल्लुस्स सट्ठाण णुगत्तण प,दपुच्छण णिसेज्ज उक्कुडुअत्तणेण कोल्लुगाणुगत्तण, तस्य परट्ठाणाणुगत्तण
सणिसेज्ज, कप्पे य सीहाणुगवसहाणुगत्तणा ।

सीहाणुगस्स आयरियस्स सीहाणुगो आयरिओ आलोएइ, एसो पढभो गमभो ।

एव वसमस्स वि आलोयणारिहस्म अविणयप्रतिपत्तौ इमं पच्छित्तं । आयरियस्स णवविहस्स आलोयणस्स आदिसद्भाओ वसभिक्खुं वि णवविहाण । आदिशीहाणुगे चउलहु मज्झिमे चउगुरु, अतिल्ले छल्लहु, वसम णुगेसु दोमु मासलहु, अतिल्ले चउलहु दो कोल्लुगा सुद्धा, अतिल्ले मासलहु । सेस पूर्ववत् । भिक्खुस्स आलोयणारिहस्स सीहाणुगादिभेदस्स णव आर्याया सीहाणुगा भेदमिण्णा आलोयगा । एव च वसभा णव आलोएनगा, भिक्खुणो वि णव आलोएतगाण, तत्थ जे आयरिया णव आलोयगा ।

एतेसि पच्छित्तं । जहासखेण इमं -

चउगुरु चउलहु सुद्धो, छल्लहु चउगुरु अंतिसो सुद्धो ।

अगुरु चउगुरु लहुओ, भिक्खुस्स तु नयसु ठाणेसु ॥६६३६॥

ङ्का, ङ्का, सु, फु, ङ्का, सु, फा, ङ्का, ० ।

दोहि मि गुरुगा एते, गुरुम्मि नियमा तरेण कालेणं ।

वसमम्मि वि तवगुरुगा, कालगुरु होति भिक्खुम्मि ॥६६३७॥

आयरियस्स एते पच्छित्ता तवेण कालेण वि गुरुगा, वसमण वि णवण्ह आलोएनगाण एते चेव पच्छित्ता, नवर - तवगुरुगा काललहुगा, भिक्खूण वि णवण्ह आलोएतगाण एते चेव पच्छित्ता णवर - तवलहुगा कालगुरुगा । क्वचित् पाठास्तर - “एमेव य भिक्खू” गाहा - भिक्खुस्स तिविधभेदमिण्णस्स आलोयणारिहस्स आयरियवसमभिक्खुणो आलोएतगा । णव भेदा पूर्ववत् । आइहाणे सीहाणुगे चउगुरु, मज्झट्टाणसीहाणुगे छल्लहु, अतट्टाणसीहाणुगे छगुरु । सेस पूर्ववत् ॥६६३७॥

पच्छित्तदाणलक्खण अविनयप्रतिपत्तौ इमं -

सव्वत्थ वि सट्ठाण, अणुमुयंतस्स चउगुरु होति ।

विसमासण णीयतरे, अकारणे अविहिए मासो ॥६६३८॥

‘सव्वत्थ’ ति सर्वालोचनारिहस्याविनयप्रतिपत्तौ इमं आलोणारिहो जारिसे आसणे णिविट्ठो आलोयगो वि जति तारिस्स आसण अमुचतो आलोएति तत्तुल्य एव स्थितेत्यर्थं । तो चउगुरु पच्छित्तं । अह विसमे अधिकतीतो छल्लहु छगुरु वा स्थानापेक्षयेत्यर्थ । अह विसमे णीयतरे ठितो मासलहु, अय अकारणे णिसीएइ तस्स पच्छित्तं । आलोयणकाले सेसप्रविहीमु वि अप्पमज्जणादीसु मासलहु चेव ॥६६३८॥

इमं अववादतो भण्णति -

सव्वत्थ वि सट्ठाणं, अणुमुयंतस्स मासिय लहुय ।

परठाणम्मि य सुद्धो, जति उच्चतरे भवे इतरो ॥६६३९॥

आलोएणो वि कारणे जति सट्ठाण ण मुचति, सट्ठाण णाम सरिससरिसाण आयरिय वसह भिक्खुणो य सरिसाणुगो होउ आलोएनि ति तो मासलहु अह णीयतरट्टाणट्टितो आलोएति तो सव्वत्थ सुज्झति । सीहाणुगस्स वसमकोल्लुगा परट्टाण । कोल्लुगस्स कोल्लुगो चेव उक्कुड्डुओ परट्टाण । “इयरो” ति आलोयणारिहो जति उच्चतरे ठितो आलोयगो कारणे णीयतरे आसणे णीयतो सुज्झतीत्यर्थं । एव विभागतो एक्कासीति-विभागेण पच्छित्तं भुत्तं ॥६६३९॥

इम ओहेण पवविह पच्छित्त भणति—

चउगुरु मासो या, मामो छल्लहुग चउगुरु मासो ।

छगुरु छल्लहु चउगुरु, वित्तियादेसे भवे सोही ॥६६४०॥

सीहाणुगो होउ सीहाणुगस्स आलोएति चउगुरु, सीहाणुगस्स वसभाणुगो आलोएति मासलहू, सीहाणुगस्स कोल्लुगाणुओ होउ मासलहू वसभाणुगस्स सीहाणुगो आलोएति छल्लहू, वसभाणुगस्स वसभाणुगो आलोएति चउगुरु, वसभाणुगस्स कोल्लुगाणुगो मासलहू कोल्लुगाणुगस्स सीहाणुगो आलोएति छगुरु, कोल्लुगाणुगस्स वसभाणुगो छल्लहू, कोल्लुगाणुगस्स कोल्लुगाणुगो चउगुरु, एस वित्तियादेसे सोधी भणिया ॥६६४०॥

तेण आलोयणेण अपलिउचिय अपलिउचिय आलोइय, वीप्सा कृता, निरवशेष सवमालोचित, “सवमेत” ति । अथवा—“सव्वमेय” ति ज अवराहावण ज च पलिउचणाणिप्फण अण च किं वि आलोयणकाले असमायारणिप्फण सव्वमेत स्वकृत । “सगड” “साहणिय” ति एकतो काउ से मासादि पट्टविज्जति जाव छम्मासा । अहवा — “साहणिय” ति ज छम्मासातिरित्त त परिसाडेऊण भोसेत्ता छम्मासादित्यथ । “जे” ति य साधू, “एयाए” ति या उक्ता [विधि] प्राक्कृतस्य अपराधस्य स्थापना “पट्टवणा”, अहवा — प्रकर्षेण कृतस्य स्थापना । अहवा — अविशुद्धचारित्र्य त आत्मा अमायावित्त्वेन आलोचनाविधानेन उद्धृत्य त्रिसुद्धे चारित्र्ये प्रकर्षेण स्थापित । अहवा — “पट्टवणाए” ति प्रारम्भ, य एष आलोचनाविधि प्रायश्चित्तदानविधिश्च अनेन प्रस्थापित प्रवर्तित इत्यर्थ । “पट्टविय” ति तदेव यथारह प्रायश्चित्तकरणत्वेनारोपित, य एव प्रायश्चित्तकरणत्वेन स्थापित । “णिव्वसमाणो” त पच्छित्त वहतो कुव्वमाणेत्यथ । त वहतो प्रमादतो विसयकसाएहि जइ अण “पडिसेवति” ति ततो पडिसेवणाओ “से वि” ति ज से पच्छित्त त “कसिण” ति सव्व । अहवा — अणुगहकसियेण वा “तत्थेव” ति पुव्वपट्टविए पच्छित्ते आरोवेयव्व चडावेयव्व ति वुत्तं भवति । “सिय” ति अवधारणे दट्टवो । एस सुत्तत्थो ।

इमा णिज्जुत्ति—

मासादी पट्टवित्ते, जं अण्णं सेवती तगं सव्वं ।

साहणिऊणं मासा, छदिज्जंतैतरे भोसो ॥६६४१॥

ज छम्मासातिरित्त त एगतर तस्स भोससे इमाए गाहाए सुते गतत्थ । “पट्टविए” ति ज पद तस्मिमे भेदा

दुविहा पट्टवणा खलु, एगमणेगा य होतऽणेगा य ।

तवतिग परियत्ततिगं, तेरस उ जाणि त पताई ॥६६४२॥

—प्रकृतं समाप्तम् ।

सा पायच्छित्तपट्टवणा दुविधा — एगा अणेगा वा, तत्थ जा सच्चइया सा णियमा छम्मासिया एग विधा । सा य दुविधा — उग्घाताणुग्घाता वा । अहवा — केसि चि मएण एगविवा मासियादीण अण्णतरठाण पट्टवणा । तत्थ जा अणेगविहा सा इमा — “तवतिग” पच्छिद्ध । तत्थ पणगादिभिण्णमासनेसु परिहारतवो ण भवति, मापादिसु भवनीत्यर्थ । मासिय एवक तवठाण, दुपासादि जाव चाउम्मासिय वित्तिय तवट्टाण, णमासछम्मासिय तइय तवट्टाण ति, एते वि उग्घाताणुग्घाता वा, ‘परियत्ततिग’ णाम पव्वज्जा परियागस्स जत्थ परावत्ती भवति त परियत्ततिग त च छेदतिग, छेदो वि उग्घाताणुग्घाता वा, मूलनिग, अणउट्टतिग, एवक

च पारं चियं, एयाणि तवतिगसहिताणि जाणि तेरस पदाणि । एसा पारं चियवज्जिजा अणेगविहा पट्टवणा भवतीत्यर्थः । अहवा — “जाणि य पदाणि” ति एते एक्कारस पदा गहिता, एतेसु तव पारं चिया एगविधा, छेदादितिगं अणेगविधा पट्टवणा भवतीत्यर्थः ।

एते हिट्ठा सिद्धा किं निमित्तं इह पुणो उच्चरिज्जति ? उच्यते — स्मरणार्थः । अहवा — जं एवं पट्टवियं पडिसेवति तं कसिणं अणुग्गहेण वा गिरणुग्गहेण वा आरोविज्जति, उग्घाते उग्घायं, अणुग्घाए अणुग्घायं, अस्य ज्ञापनार्थमुच्चरितमित्यर्थः, अहवा — कसिणमप्यारोप्यमानं त्रयोदशैकादशभिर्वा पदेरारोप्यते, अस्य ज्ञापनार्थमुच्चरितमित्यर्थः । “अपलिउचितं” ति एयं पढमभंगसुत्तं गतं ।

वितियभंगसुत्तं पि एवं चेव, णवरं — उच्चारणा से इमा — “अपलिउचिते पलिउचितं आलोए-माणस्स जाव सिया” ।

ततियभंगसुत्तं पि एवं चेव । णवरं — उच्चारणा से इमा — “पलिउचिते अपलिउचितं आलोए-माणस्स जाव सिया” ।

चउत्थभंगसुत्तं पि एवं चेव, तस्स उच्चारणा सुत्तेणेव भणिया — “जे भिक्खू चाउम्मासियं वा सातिरेगचाउम्मासियं वा जाव सिया ।” जहा एते सुत्ता चउभंगविगप्पेण भणिया एवं मासिगदोमासिगा वि सुत्ता उवउज्जिऊण वित्थरओ चउभंगविभागेण भाणियव्वा । एवं बहुसुत्ता वि चउभंगवाहादिविद्वुत्तेसु भाणियव्वा । पढमा दस आवत्तिसुत्ता भणिया । पुणो दस ते चेव किं विसेसेविउट्ठा आलोयणसुत्ता भणिया ? एवं एए वीसं सुत्ता सप्पभेदा सम्मत्ता । सम्मत्तं च एत्थ ठवणारोवणपगयं ॥६६४४॥

एयाणि पच्छित्त.णि सो वहंतो अण्णं आवज्जेज्ज, सो वि तत्थेव “आरुहेयव्व” ति जं वुत्तं तस्स आरोवणे कति भेदा ?, उच्यते — पंचभेदा ।

इमे —

पट्टविता ठविता या, कसिणाकसिणा तहेव हाडहडा ।

आरोवण पंचविहा, पायच्छित्तं पुरिसजाते ॥६६४३॥

पट्टविया य वहंतो, वेयावच्चट्ठिता ठवितगा उ ।

कसिणा भोसविराहेता जहिं भोसो सा अकसिणा तू ॥६६४४॥

एषां व्याख्या — जं च वहति पच्छित्तं सा पट्टवितिका भणति, ठविया णाम जं आवण्णो तं से ठवियं कज्जति ।

किं निमित्तं ?, उच्यते — सो वेयावच्चकरणलद्धिसंपण्णो जाव आयरियादीण वेयावच्चं करेति ताव से तं ठवितं कज्जति, दो जीगे काउं असमत्थो सो वेयावच्चे समत्ते तं काहिति ति, एव ठविया । कसिणा णाम जत्थ भोसो न कीरइ, अकसिणा नाम जत्थ किंचि भोसिज्जति ॥६६४४॥

हाडहडा तिविधा — सज्जा ठविया पट्टविता य । तत्थ सज्जा इमा —

उग्घायमणुग्घायो, मासाइ तवो उ दिज्जते सज्जं ।

मासदुमासादियं उग्घातमणुग्घातियं वा जं आवण्णो तं जत्थ सिज्जं दिज्जति ण कालमपेक्खति सा सज्जा । इमा ठविया —

मासादी णिक्खित्ते, जं सेसं तं अणुग्घायं ॥६६४५॥

ज पुण मासादि आवण्ण णिविखत्ति ति वेयावच्छट्ठया ठविय कज्जति सा ठविया, तम्मि य ठवियसेस ति ज अण्ण उग्घातसणुग्घात वा आवज्जति त सच्च अणुग्घात कज्जति । कम्हा ? जम्हा सो अतिप्पमादी ॥६६४५॥

इमा पट्टविया -

छम्मासादि वहन्ते, अंतरे आवण्णे जा तु आरुवणा ।

सो होति अणुग्घाता, तिण्णि विकप्पा तु चरिमाए ॥६६४६॥

छम्मासिय वहतो आदिग्गहणाओ पचमासिय चउमासिय तेमासिय दोमासिय मासिय वा वहतो अण्ण ज अंतरा आवज्जति उग्घात अणुग्घात वा त से साणुग्गहेण णिरणुग्गहेण वा आरोविज्जमाण अणुग्घात आरोविज्जति । कारण पूर्ववत् । हाडहडाए एते तिण्णि विगप्पा ॥६६४६॥

सा पुण जहण्ण उक्कोस मज्जिमा होति तिण्णि उ विकप्पा ।

मासो छम्मासा वा, अजहण्णुक्कोस जे मज्जे ॥६६४७॥

सा हाडहडा छम्ममाणी ति विधा - जहण्णादिगा, तत्थ मासगुरू जहण्णा, उक्कोसा छगुरू, एतेसि दोण्ह वि मज्जे जा सा अजहण्णमणुक्कोसा इमा दोमासिय गुरू, तिमासिय गुरू, चउमासिय गुरू, पचमासिय गुरू ति । एसा आरोवणा पचविहा समासओ भणिया ॥६६४७॥

इदार्णि मासादी पट्टविए ज अण्ण अंतरा पडिसेवति मासादी तत्थ ज जम्मि दिवसग्गहणप्पमाण भण्णति पट्टविगाठविगा सरूव जतो भण्णति सुत्तमागय -

छम्मासिय परिहारट्ठाणं पट्टविए अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसराइया आरोवणा
आइमज्जावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमडिरित्तं तेण परं
सवीसइराइया दो मासा ॥सू०॥२१॥

पचमासियं परिहारट्ठाणं पट्टविए अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा
आइमज्जावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमडिरित्तं तेण परं
सवीसइराइया दो मासा ॥सू०॥२२॥

चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्टविए अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा
आइमज्जावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमडिरित्तं तेण परं
सवीसइराइया दो मासा ॥सू०॥२३॥

तेमासियं परिहारट्ठाणं पट्टविए अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा

आइमज्भावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं
सवीसइराइया दो मासा ॥सू०॥२४॥

दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविण् अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा
आइमज्भावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं
सवीसइराइया दो मासा ॥सू०॥२५॥

मासियं परिहारट्ठाणं पट्ठविण् अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा
आइमज्भावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमतिरित्तं तेण परं
सवीसइराइया दो मासा ॥सू०॥२६॥

सर्वं संहितासूत्र उच्चारैः पदच्छेद काऽऽ इमाऽऽ पदार्थोपगमो “वडिति” सख्या । मानासनाम्नास ,
अन्यानि मानानि समयावलिकादीनि असतीति मास , मानानि वा द्रव्यक्षत्रादीन्यसतीति मास । मासोऽस्य
परिमाण मासमईति वा, मासनिष्पन्न वा मासिक । परिहायते इति परिहार , परिहरण वजनमित्यथ ।
अहवा - परिहरण परिहार , अहवा - परिह्रियते वज्यते च अस्मात् परिहार । ‘ष्ठा गतिनिवृत्ती’
तिष्ठन्त्यस्मिन्निति स्थान । परिहारस्य स्थान परिहार स्थान । “पट्ठवित्ते” ति आदिकम्मण्णेदीरणभृतैश्वर्येण्वि
ति कृत्वा प्रारब्ध यत् स्थापित अट्ठवृद्ध ति भणिय होइ । न गच्छन्तीत्यगा वृक्षा इत्यथ । अगं कृत अगार
गृहमित्यर्थ । नास्य अगार विद्यते इत्यनगार । अतस्य च अंतर मज्झ अंतर नि भणति । द्विमासो अस्य
परिमाण दोमासिय । परिहारस्य स्थान स्थान प्रतिषेवित्वा, “प्रति” प्रतिदानयो प्रतिमन्निधानयोवस्तु वस्तु
प्रति मूलउत्तरगुणद्वयकष्य जयणमेवाकरण, क्त्वा प्रत्यय , पूर्वस्य परेण सह सबधमिच्छति कृत्वा अन्यत् किमपि
कर्तव्य तदपेक्षते । आडमयादाया, “लोकु दशने”, मयादयालोचन दातव्य आलोचन दशयेदित्यर्थ । अथ इत्यय
निपात , अपरा णाम जा सा पुव्वि भणिता सतो जा अण्णा सा अपरा । विंशतिरिति सख्या । रजत इति राशि ,
सा च रागस्वभावा उभयोरपि विद्यते, राशि उभयग्रहणार्थं, अहवा - अहोरात्रपरिसमाप्तिरत्र भवतीति कृत्वा
गन्निग्रहण, अयोन्यप्रतिबद्धत्वात् इतरेतग्रहणात् सिद्धिरिति । आरोविज्जतीति कृत्वा आरोवणा । पुव्व-
पायच्छित्ते छुम्भति, अहवा - उर्वारि चडाविज्जतिरिति भणिय होइ । कस्स ? तस्स साहुस्स ज भणिय पायच्छित्त
दिज्जति, “प्रादिमज्भावसाणेसु” - तस्स छम्माभियस्स परिहारट्ठाणस्स तिसु विभागेसु जत्थ जत्थ पडिसेवति
दो मासिय तत्थ तत्थ वीसतिरातिता आरोवणा आरुभेयव्वा । सह अत्येण सत्थ, सह हेउणा सहेउ,
मह कारणेण सकारण । किं भणिय होति - तस्स जतो णिप्फत्ति प्रभव , प्रसूति , त तस्स अत्योत्ति वा हउ
त्ति वा कारण ति वा एगट्ठ । जहा सुत्तस्स अत्थाओ प्रसूति उत्पत्तिरित्यथ । जहा व तनुप्य पट , मृत्पिडात्
घट , एव एसा वीसतिरातिया आरोवणा जतो णिप्फणा तीए त से अत्थो ति वा, हेतु - कारण , एगट्ठ
विट्ठा । दोमासियाए पडिसेवणाए वीसिया आरोवणा, सा पुण सअट्ठा अहीणमतिरित्ता कित्तिया होइ ?

आयरितो सयमेव पुच्छितो भणति — “तेण पर सवीसतिराया दो मासा” । “तेण” ति — तेण
मूलवत्पुणा सह आरोवणापरिमाण भवति, आवत्तिमाण न आरोवणामाण, पर अण्ण चेव ज भणिय होति तेण
सअट्ठ सहेउ सकारण त मानमधिकृत्य, त पुण सवीसतिराया दोमासा सह वीसाएहि सवीमनिगत्ता दोमासा ।

किं पुन दोमासियाए पडिमेवणाए वीसतिरपि आरोवणा?, उच्यते - लक्षणोक्तत्वात्, तत्त्व
लक्षणं दिवसा पक्वित्तागमासा आणज्जति, मासा वि पेक्खिऊण दिवसा आणज्जति ।

गाहा - “दिवसा पचहि भतिता दुरुवहीणा हवति मासाओ ।

मासा दुरुवसहिया, पचगुणा ते भवे दिवसा ॥” एसा लक्खणगाहा

एएण कारणेण दोहि मामेहि आवन्नेहि वीसतिरातिया आरोवणा ।

अहवा - इमो अण्णो वि आएसो सप्रट्ट सहेउ, सकारण अहीणमतिरित्तमिति, तस्स अणगारस्स
उभयतरगादीकारण णाऊण पढमपडिसेवणाए साणुग्गह वीसतिरातिया आरोवणा दिज्जति, जति तह वि ण
आएज्ज, तो मे तेण परेण सूत्रादेसो चेव सर्वीसतिरायदोमासा ।

कह ? जा सा वीसतिरातिया आरोवणा सा सकप्पिया ण ताव दिज्जति, तेण वि पुणो दोमासिय
न पडिमेवित तस्म पढम साणुग्गह कीरइ, बीए सहोदोत्ति काऊण ते चेव दो मासा गिरणुग्गहा दिण्णा तेण पर
मवीनिराता दो मासा ।

एव पचमामि ए वि पट्टविने त चेव सच्च भाणियन्व । एव चाउम्मासिए तेमासिए एयाणि सच्चाणि
नोमासिएण सम भाणियव्वाणि, णवर - छम्मासिया सचतिया वा असचतिया होज्ज, पचमासिया असचतिय
पट्टित्तिसुत्ता गता ।

इयाणि ठवियसुत्ता - जे ते सर्वीसतिरानिता दो मासा ते कारण पडुच्च ठविया आसी ते कारणे
णिट्टिने पट्टविज्जति ।

सर्वीसतिराडयं दोमासियं परिहारट्ठाणं पट्टवि ए अणगारे अंतरा दो मासियं
परिहारट्ठाणं पडिमेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराडया
आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउ सकारण
अहीणमतिरित्तं तेण परं सदसराया तिण्णिमासा ॥सू०॥२७॥

सदसरायतेमासियं परिहारट्ठाणं पट्टवि ए अणगारे अंतरा दो मासियं
परिहारट्ठाणं पडिमेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराडया
आरोवणा आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउ सकारण
अहीणमतिरित्तं तेण परं चत्तारि मासा ॥सू०॥२८॥

चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्टवि ए अणगारे अंतरा दो मासियं परिहारट्ठाण
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराडया आरोवणा
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउ सकारणं अहीणमतिरित्तं
तेण परं सर्वीसइराया चत्तारि मासा ॥सू०॥२९॥

सर्वीसइरायचाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्टवि ए अणगारे अंतरा दो मासियं
परिहारट्ठाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराडया आरोवणा

आइमज्भावमाणे सअट्ठं सहेउं मकारण अहीणमतिरित्तं
तेण पर सदसराया पंच मासा ॥सू०॥३०॥

सदसरायपचमासिय परिहारट्ठाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा दो मामियं
परिहारट्ठाणं पडिसेविच्चा आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा
आइमज्भावमाणे, सअट्ठं सहेउं मकारण अहीणमतिरित्तं
तेण परं छम्मासा ॥सू०॥३१॥

तेसु पट्टवित्तसु जति पुणो पडिसेवेज्जा ऋणो अ दो मासा तत्थ वीसतिरातिया आरोवणा भादी
मज्जे पज्जवसाणे, सह अट्ठेण सअट्ठं सहेउं सकारण ।

इह अत्थो जो आदिपट्टवणा सबीसतिरातिया दो मासा । तेण पर दमरातो दो मासा, दमरातो
तिणिण मासा पट्टविण् ।

जइ पुणो वि दो मासा पडिसेवेज्ज ताहे साणग्गह वीसतिराया दिज्जति जाव तेण पर चत्तारि
मासा, एव ताव णेय जाव तेण पर छम्मासा । अट्ठवा — केवल मण ओहि चोइस णवपुव्विणो य तस्स साधुणो
भाइ जाणिऊण, इमो सबीसतिराएहि दोहि मासेहि सुज्झिहि ति ताहे सबीसतिराया दो मासा मे
पट्टविज्जति ।

जति पुणो वि दो मासा पडिसेवेज्ज तत्थ वि तहव, तेण पर दम राया तिग्गि मासा ।

एव पुणो वीसतिरातिया छुक्कमेहि जाव ते पर छम्मामा अणुगहट्टवणा चेव थोवे वा बहुए वा
आवणो वीस वीस दिणा आरुभेयव्वा पडिसेवणा पडिसेवणा, जाव छम्मासा । एव ताव छम्मासादिपट्टविण्
दुमासपडिसेविण् कारण भणिय । एव ते सूत्रा पट्टवियाठवियाण गया ।

इदाणि अत्यवसओ सुत्ता —

छम्मसियं परिहारट्ठाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा मामियं परिहारट्ठाणं
पडिसेविच्चा आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्भावसाणे सअट्ठं सहेउं मकारण अहीणमडरित्तं तेण परं
दिवड्ढो मासो ॥सू०॥३२॥

पंचमासियं परिहारट्ठाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा मामियं परिहारट्ठाणं
पडिसेविच्चा आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्भावसाणे सअट्ठं सहेउं मकारण अहीणमडरित्तं तेण परं
दिवड्ढो मासो ॥सू०॥३३॥

चाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेविच्चा आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्भावसाणे सअट्ठं सहेउं मकारण अहीणमडरित्तं तेण परं
दिवड्ढो मासो ॥सू०॥३४॥

तेमामियं परिहारट्टाण पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्टाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्जावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
दिवड्ढो मामो ॥सू०॥३५॥

दोमामियं परिहारट्टाण पट्टविण् अणगारे अंतरा मामियं परिहारट्टाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्जावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
दिवड्ढो मासो ॥सू०॥३६॥

मासिय परिहारट्टाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्टाणं
पडिमेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्जावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
दिवड्ढो मासो ॥सू०॥३७॥

छम्मासिय पचमासिय चाउम्मासिय तेमासिय दोमासिय मासिय सन्वा लक्खणाधो पत्ताधो
लक्खण पुण मज्जे गहिण् आदिमा अतिमा य सजोगा ते भाणियव्वा, जहा छम्मासियादिपट्टवणा पट्टवित्ते
दोमामियस्स सजोगो भणितो तहा एतेसि पि सव्वासि सजोगो भाणियव्वो ।

तेण इम अत्थसुत्त - “छम्मासिय परिहारट्टाण पट्टविण् अणगारे अंतरा छम्मासिय चैव परि-
हारट्टाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा चत्तालोसइया आरोवणा आदी जाव तेण परं सचत्तालीस-
तिराया छम्मासा”, अत्थो पूर्ववत् ।

एव पचमासित परिहारट्टाण पट्टवित्ते छम्मासिय पडिसेवति ।

एव चाउम्मासिय पट्टविण् पडिसेवति, तेमासिय पट्टविण् पडिसेवति, दोमासिय पट्टविण् पडिसेवति,
मासिय पट्टविण् पडिसेवति । एण छ पडिसेवति । छ वि सुत्ता इह गत्थि । किं कारणेण जेण छम्मासाणं परेण
ण दिज्जति ? ठविया य सचत्तं ला छम्मासा, तेण ठविता सुत्ता नत्थि । इदाणि छम्मासिए पट्टविण् अंतरा
पचमासित पडिसेवति । अहावरा वीसतिगतिया आरोवणा आदि मज्जावसाणे जाव तेण परं सपचराया छम्मासा
एव पचमासे पट्टवित्ते पचमास पडिसेवइ । चाउम्मासिए वि पचमामा, तेमासिए वि पचमासा, दोमासिए वि
पचमासा, मासित्ते वि पचमासा एत्थ वि ठविया सुत्ता गत्थि, जेण सपचराया छम्मासे ति । छम्मासिए पट्टविण्
अंतरा चाउम्मासित पडिसेवेज्जा, अहावरा तीसति जाव तेण परं पचमासा, एव पचमासित चउमासित तेमासिय
दोमासिय मासिए वि पट्टविण् चउमामिय पडिमेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा ती (वी) सतिरातिता आरोवणा
जाव तेण परं पचमासा ठविता ।

सुत्त एत्थ अत्थि - पचमामिय परिहारट्टाण पट्टवित्ते चाउमासित परिहारट्टाण पडिसेवित्ता
आलोएज्जा अहावरा ती (वी) सतिरातिता आरोवणा जाव तेण परं छम्मासो । अत्थो पूर्ववत् । सुत्ता छम्मासिय
परिहारट्टाण पडिसेवित्ते अणगारे अंतरा तेमासित परिहारट्टाण आलोएज्जा, अहावरा पण्णवीसतिराइदिया
आरोवणा आदी जाव तेण परं पचूणा चत्ताणि मासा पचमासिते पट्टविण्, चउमासिते पट्टविण्, तेमासिते

पट्टविए, दोमासिए मासिए परिहारट्टाण पट्टविते, तेमासित परिहारट्टाण पडिसेवेज्जा जाव तेण पर पच्छणा चत्तारि मासा ठविता ।

सुत्ता — पच्छणचउम्मासिय परिहारट्टाण पट्टविते अतरा तेमासित परिहारट्टाण, अहावरा पणुवीसा आरोवणा जाव तेण पर छम्मासा सवीसतिगया चत्तारिमासा, सवीसतिराय चाउम्मासिय परिहार अतरा तेमासिय, अहावरा पणुवीसा आरोवणा जाव ते अट्ठछम्मासा अट्ठछम्मानिय पट्टवइ । पट्टविए अणगारे अतरा तेमासिय आलोए०, अहावरा पणुवीसराएदियारोवणा तेण पर छम्मासा ।

कि कारण सदसराया छम्मासा ण भणिया ? उच्यते — सातिरेगा छम्मासा णागेविज्जति ति तेण सदसराया छम्मासा ण भगति । इत्थाणि मासियसजोगसुत्ता लक्खणपत्ता सुत्तेण चैव भण्णति छम्मासिय-परिहारट्टाण पट्टविए अणगारे अतरा मासिय परिहारट्टाण पडितेविए आलोए, अहावरा पक्खिया आरोवणा आदी मज्झावसाणे साट्ठ सहेउ सकारण अहीणमइरित्त तेण पर दिवड्डो मासो एव पवमासिय पट्टविते तेमासिय पट्टविते मासिय पट्टविते अतरा मासिय जाव तेण पर दिवड्डो मासो ।

ठविया सुत्ता —

दिवड्डुमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्टाण

पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा

आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं

दो मासा ॥सू०॥३८॥

दोमासिय परिहारट्टाण पट्टविए अणगारे अंतरा मासिय परिहारट्टाण

पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा

आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं

अट्ठाइज्जा मासा ॥सू०॥३९॥

अट्ठाइज्जमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्टाणं

पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा

आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं

तिणि मासा ॥सू०॥४०॥

तेमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्टाणं

पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा

आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं

अट्ठुट्ठा मासा ॥सू०॥४१॥

अट्ठुट्ठमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्टाणं

पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा

आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं

चत्तारि मासा ॥सू०॥४२॥

चाउम्मासियं परिहारट्टाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्टाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा,
आइमज्झावमाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
अट्ठपंचमा मासा ॥सू०॥४३॥

अट्ठपंचमासियं परिहारट्टाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्टाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा,
आइमज्झावमाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
पंचमासा ॥सू०॥४४॥

पंचमासियं परिहारट्टाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्टाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा,
आइमज्झावमाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
अट्ठछट्ठा मासा ॥सू०॥४५॥

अट्ठछट्ठमासियं परिहारट्टाणं पट्टविण् अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्टाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा,
आइमज्झावमाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
छम्मासा ॥सू०॥४६॥

एव छम्मासादिपट्टवित्ते ज ज पडिसेवित्ता आरोवणा ठविया य विकला सट्टाणवड्ढीए भाषिया जाव
छम्मासा ।

इदानीं सगलठवियाए मासादिया १ । २ । ३ । ४ । ५ । ६ । सट्टाणवड्ढिया णेयव्वा जाव
छम्मासा, ताहे परट्टाणे वड्ढी भवति ।

तत्थ सट्टाणवड्ढी इमा — जहा — मासियठवियपट्टविण् मासिय सेवित्ता पक्खिया जाव दिवड्डु
मासा एव आरोवण पक्खिय वड्डु तेण ताव णेयव्व जाव छम्मासा । एय सट्टाणवड्ढिय ।

इम परट्टाणवड्ढिय — जहा — ठविण् दोमासिय पडिसेवित्ता वीसतिरातिया आरोवणा, जाव
वीसतिरातो मासो, एव वीसतियाखेवण णायव्व जाव छम्मासा, एव मासित्ते ठवियपट्टवित्ते तेमासिय पडिसेवित्ता
पणवीसरोवणा जाव छम्मासा ।

मासियठवियपट्टविण् चउम्मास पडिसेवित्ता तीसिय आरोवणाए जाव छम्मासा ।

मासियठवियपट्टविण् पंचमासिय पडिसेवित्ता पणतीस आरोवणाए जाव छम्मासा ।

मासियठवियपट्टविण् छम्मासिय पडिसेवित्ता चत्तालीसराडदियारोवणाए जाव छम्मासा ।

एव मासियपट्टवणाए परट्टाणवड्ढी भणिया ।

एव दोमासियान्निमु वि पट्टविण् सट्टाणवड्ढि भणिकण पच्छा परट्टाणवड्ढी भणियव्वा, सव्वत्तं
जाव छम्मासा । एमा एककगसजोगवड्ढी सट्टाणपरट्टाणेसु भणिया ।

इदाणि दुग्मजोगे सट्टाणपरट्टाणवड्ढि दुर्वह भणामि —

मासियठवियपट्टविए मासिय पडिसेवेज्ज पक्खियआरोवणा तेण पर दिवड्ढो मासो ।

दिवड्ढठविते पट्टविते दो मासो पडिसेवेज्ज वीसिया आरोवणा तेण पर पचरातो तिणि (दोणि) मासा । सपचरातो दो मासा ठविए पट्टविते तिमसिय पडिसेवित्ता पक्खिया आरोवणा, तेण पर सवीसराया दो मासा ठवियपट्टविए दोमासिय पडिसेवित्ता वीसिया आरोवणा, तेण पर सदसराइ तिणि मासा ।

एव पुणो मासिय, पुणो दोमासिय, एतत्ता सवत्थ दुग्मजोगवड्ढी दुर्विहा भाणियव्वा जाव छम्मासा ।

एव मासिय-तेमासिए य दुग्मजोगो, पुणो मासे चउमाने य । पुणो मासे पचमासे य (पुणो मासे) छम्माने य ।

दुग्मजोगे जत्थ जाए आरोवणात् पक्खित्ताए छम्मामा अतिरित्ता भवति तत्थ छ च्चेव मामा वत्तव्वा परओ न वत्तव्वा । कारण त चेव पूववत् । एव जत्तिया मामियाए ठवियाए दुग्मजोगा त भाणिऊण ताहे मामियाए चेव ठवियपट्टवियाए तियसजोगो चउक्कसजोगा पचसजोगा य भाणियव्वा, तेण छक्कमजोगो णत्थि, कारण त चेव । ताहे दोमासठवियाए दुग्मजोगवड्ढी दुर्विहा भाणियव्वा — सा य लक्खणेण पत्ता, सुत्तेण चेव भणति । एत्तिय गतूण सुत्त णिवडित ।

त च इम —

दोमामियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्टाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा,
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
अट्टाइज्जा मासा ॥सू०॥४७॥

अट्टाइज्जमामियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अंतरा दोमासिय परिहारट्टाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा अहावरा वीसिया आरोवणा,
आइमज्झावसाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
सपंचराइया तिणि मासा ॥सू०॥४८॥

मपंचरायतेमासियं परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अंतरा मासिय परिहारट्टाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा,
आइमज्झावसाणे, सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
सवीसतिराया तिणि मासा ॥सू०॥४९॥

सवीसतिरायतेमासिय परिहारट्टाणं पट्टविए अणगारे अंतरा दोमासियं
परिहारट्टाणं पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा,

आइमज्झावमाणे, सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
सदसराया चत्तारि मासा ॥सू०॥५०॥

सदसरायचाउम्मासियं परिहारट्ठाणं पट्टविण्ण अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावमाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
पचूणा पंचमासा ॥सू०॥५१॥

पंचूणपंचमासियं परिहारट्ठाणं पट्टविण्ण अणगारे अंतरा दोमासियं परिहारट्ठाणं
पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा वीसइराइया आरोवणा
आइमज्झावमाणे, सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
अद्धछट्ठा मासा ॥सू०॥५२॥

अद्धछट्ठमासिय परिहारट्ठाणं पट्टविण्ण अणगारे अंतरा मासियं परिहारट्ठाणं
अपडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा
आइमज्झावमाणे सअट्ठं सहेउं सकारणं अहीणमइरित्तं तेण परं
छम्मासा ॥सू०॥५३॥

दसणचरित्तजुत्तो, जुत्तो गुत्तीसु सज्जणहिएसु ।

नामेण विसाहगणी, महत्तरओ गुणाण मज्झसा ॥१॥

कित्तीकतिपिणद्धो, जसपत्तो (दो) पडहो तिसागरनिरुद्धो ।

पुणरुत्त भमइ महि, ससिक्ख गगण गुण तस्स ॥२॥

तस्स लिहिय निसीह, धम्मधुराधरणपवरपुज्जस्स ।

गारोग्ग धारणिज्ज, सिस्सपसिस्सोवभोज्ज च ॥३॥

(एव एकेवक अतरेता ताव णेयव्व जाव ५ म्मासा, एव एदस्स वि सब्बदुगसजोगादि भाणियव्वा) एव तेमासियठवियपट्टविण्ण दुविधा समतिग चउ पच छ, परे णत्थि, एव चाउ० । १।२।३।४। ना । फु । परे णत्थि । एव पचमासियजोगा १।२।३। ६ । ना । फु । परतो णत्थि, कारण त चेव । सब्बे वि जहा लक्खणेण भाणियव्वा, एते दुगसजोगादीण सजोगा सट्ठाणवड्ढिता भाणियव्वा परट्ठाणवड्ढिया य ।

“सट्ठाणवड्ढिय” ति किं भणिय होति ? जे मासियठवियपट्टविण्णमासिय चेव आदि काऊण सजोगा होति ते सट्ठाणवड्ढिता एव दो ति चउ पचमासिए ।

इमे परट्ठाणवड्ढिता – जे मासिय ठवियपट्टविण्ण दोमासिय वा तिमासिय वा चउमासिय वा पचमासिय वा आदी काऊण सजोगा कीरति । एसा परट्ठाणवड्ढी ।

एयासि अत्था चोदणाए कारणाणि य जहा पढमठवियाण एव पढमसुत्तस्स पट्टवणाए पडिसेवणा य भणिया ।

इदाणि बित्तिपसुत्तस्स बहुसस्स इमा विधी – छम्मासिय परिहारट्ठाण पट्टविण्ण अणगारे अंतरा बहुसो वि मासिय परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा, अहावरा पक्खिया आरोवणा आदिमज्झावमाणे सअट्ठ

सहेउ सकारण, अहीणमइरित्त तेण पर दिवइढो मासो, एव पचमासिए पट्टविते मासिया पडिसेवणा चउम्मासिए पचमासिया, तेमासिए पट्टविए मासिए पट्टविए, दोमासिते पट्टविए, मासिया पडिमेवणा, पक्खिया आरोवणा एव ठित्तगा सुत्ता वि दिवइढमासादि भाणियव्वा । त चेव निरवसेस बहुसाअभिलावेण सव्व भाणेत्यव्व । एव दम सुत्ता सुत्तकमेण चेव भाणियव्वा । नवर - पट्टवणे छ वा पच वा चत्ताग्गि वा तिण्णि वा दो व, एक्को वा पडिमेवणट्ठाणसु त चेव सव्वत्थ । सेस जह कम्मिणसुत्ते तहा ठविते य पट्टविए य, सुत्ता वि तह चेव तेसि सजोगा वि तह चेव कायव्वा ।

जो वि को वि विसेसो वि वुद्धीए उवउज्जिऊण भाणियव्वो इमानो जतगातो -

कुं ना ङ्क ३ २ १ ।

कुं कुं कुं कुं कुं कुं ।

ना ना ना ना ना ना ।

एक एक एक एक एक एक ।

३ ३ ३ ३ ३ ।

२ २ २ २ २ ।

१ १ १ १ १ १ ।

एव पट्टवित्तिगा सुत्ता समत्ता ।

इदाणि इह अज्झयणे सुत्तावत्तिपरिमाणदुवारेण पच्छित्तवहतगा भणन्ति ।

जतो भणन्ति -

एककूणवीसतिविभासियम्मि हत्थादिवायण तस्म ।

आरोवणरासिस्स तु, वहंतया होतिमे पुरिसा ॥६६४८॥

जे भिक्खू हत्थकम्म करेइ - इत्यादिसुत्तातो जाव एगूणवीसतिमुद्देसगअतसुत्ते वायणसुत्त, एतेसु एगूणवीसुद्देसेसु जो पच्छित्तगसी विभामिओ तस्स पच्छित्तस्स वहंतया इमे पुरिसा ॥६६४८॥

कयकरणा इतरे या, सावेक्खा खलु तहेव गिरवेक्खा ।

गिरवेक्खा जिणमादी, सावेक्खा आयरियमादी ॥६६४९॥

कयकरणा जेहि चउत्थल्लट्टमादी तवो कतो । 'इतरे' ति - अकयकरणा । जे कयकरणा ते दुविहा - सावेक्खा गिरवेक्खा य । तत्थ गिरवेक्खा जिण दिया, ते सरीरगच्छादिगिरवेक्खनणतो गिरवेक्खा । आदिसद्दातो सुद्धपरिहारिया अहालदिया पडिमापडिवण्णा एते गियमा कयकरणा इत्यथ । जे पुण सरीरगच्छे य सावेक्खा ते ति विहा - "आयरियादी", आदिसद्दातो उवज्झाया भिक्खू य ॥६६४९॥

अकयकरणा वि दुविहा, अणभिगता अभिगता य बोधव्वा ।

जं सेवती अभिगतो, अणभिगते अत्थिरे इच्छा ॥६६५०॥

जे अकयकरणा ते दुविहा - अणभिगता इयरे य । तत्थ अणभिगता गाम अगहियसुत्तत्था । इयरे ति - 'अभिगता', ते य गहियसुत्तत्था । एत्थ जो कयकरणो धितिसघयणजुत्तो अभिगतो य सो ज सेवति त चेव से पच्छित्त दिज्जति । जो पुण अणभिगतो अथिरो अकयकरणो धितिसघयणादिहीणो तस्स ज भावणो त वा दिज्जात हुसिय वा अण हुमियतर वा "इच्छ" ति - जाव से भोसो वा इत्यथ ॥६६४९॥ एव सखेवओ भणिय ।

इम वित्थरतो -

अहवा सावेक्खतरे, गिरवेक्खो गियमसा उ कयकरणा ।

इतरे कताऽकता वा, थिराऽथिरा णवरि गीयत्था ॥६६५१॥

‘इयर’ ति— गिरवेक्खा, ते एगविहा गियमा कयकरणादिगुणोवत्ता, पुणो “इयर” ति— सावेक्खा, ते तिविहा आयरियाती । तत्थ आयरियउवज्झाया कयकरण — अकयकरणा भाणियव्वा, ते चेव गियमा अभिगता थिरा य । भिवखू अभिगता अणभिगता वा । पुणो एक्केक्का थिरा अथिरा भाणियव्वा । पुणो कयकरणअकयकरणभेदेण य भिदियव्वा । एत्थ थिराथिरत्ति ज वुत्त जाव चरगादिहं दसणातो परीसहोवसग्गेहि वा चरणातो अतिकवखडपच्छित्तदाणेण वा भावतो ण चालिज्जति सो थिरो, इतरो अथिरो । एव विकप्पिअमु पच्छदभावणा आयरियादी सव्वे कयकरणअकयकरण भाणियव्वा । णवर — भिवखुपवखे थिराथिरगीतमगीयत्था य भाणियव्वा ॥६६५१॥

इम कयकरणेतराण वक्खाण -

छट्ठमादिहं, कयकरणा ते उ उभयपरियारा ।

अभिगत कयकरणत्तं, जोगा य तवारिहा केड ॥६६५२॥

छट्ठमादितवो जेहि कतो कयकरणा, ते उ “उभयपरियाए” ति— गिहत्थपरियाए सामन्नपरियाए वा, ते कयकरणा, इयरे अकयकरणा । जे ते अभिगता तेसि केड आयरिया कतकरण इच्छति । कम्हा ? जम्हा तेहि आयरियजोगा बूढा महाकप्पसुतादीण ।

सीसो चोदेति — जे ते गिरवेक्खा — तेसि एक्को चेव भेदो । जे पुण सावेक्खा तेसि कि णिमित्त तिविधो भेदो — “इमो आयरिओ” “इमो उवज्झाओ” इमो भिवखू ?

आयरियाह — जे ते आयरियउवज्झाया ते गियमा गीयत्था, जे भिवखू ते गीयत्था अगीयत्था वा, एवमादिभेददरिसण्थ भेदो कतो ॥६६५२॥

अथवा — तत्थ तिविधभेदो जो गीयभेदो सो इम जाणइ —

कारणमकारणं वा, जयणाऽजयणा य तत्थ गीयत्थे ।

एएण कारणेणं, आयरियादी भवे तिविहा ॥६६५३॥ कठ्या

अथवा सावेक्खपुरिसभेदकरणे इम कारण —

कज्जमकज्ज जताऽजत, अविजाणंतो अगीओ जं सेवे ।

सो होति तस्स दप्पो, गीते दप्पाजते दोसा ॥६६५४॥

अगीओ ण जाणति — इम कज्ज इम अकज्ज, इमा जयणा, इमा अजयणा । एव अजाणतस्स जा सेवा सा सव्वा दप्पो चेव उवलब्भति, तम्हा तस्स दप्पणिक्कण पच्छित्तं^१ दिज्जति । गीयो पुण एय सव्व जाणइ तम्हा तस्स दप्पणिक्कण अजयणणिक्कण वा दायव । अहवा — जहा लोणे जुवरायादिवत्थुविसेसे दडविसेसो भवति, तथा इड लोउत्तरे आयरियादीण आसेवणदडो अण्णणो भवति, तण तिविधभेदो कओ ॥६६५४॥

सा य वत्थुविसेसओ इमा आवत्ती — सव्वजिट्ठा आवत्ती पारविच, तत्थ गिरवेक्खपारविच-करणेऽसभवतो सुख, आयरिए कयकरणे पारविच, अकयकरणे अणवट्ट । उवज्झाए कयकरणे अकयकरणे मूल ।

१ दायव । २ सव्वेसिणि अविजिट्ठा, इत्यपि पाठ ।

भिवक्षुम्भि गीते थिरे कयकरणे अणवट्टु, अकयकरणे छेदो । अथिरे कयकरणे छेदो, अथिरे अकयकरणे छगुरु । भिवक्षुम्भि गीते थिरे कयकरणे छगुरु अकयकरणे छल्लहू अथिरे कतकरणे छल्लहू अकयकरणे चउगुरु । एस एक्को आदेसो ।

इमो बितियो - पारचियग्गावत्तीण चैव वरणे आयरिए अणवट्टु, अकयकरणे मूल, उवज्झाए कयकरणे मूल, अकयकरणे उदो । एव अट्टोवकतीण णेय व जाव भिवक्षुम्भि गीते अथिरे अकयकरणे चउलहुअ । एव अणवट्टे वि दो आदेमा भाणिव्वा । णवर - तेसि अता चउलहु मासगुरु य । एत्थ वि णिरवेक्खे अणवट्टासभवतो सुण्ण ।

इदाणि मूल -

सव्वेसिं अभिसिद्धा, आवत्ती तेण पढमता मूलं ।

सावेक्खे गुरुमूलं, कतमकते छेदमादी तु ॥६६५५॥

सव्वेसिं णिरवेक्खादीण मूल आवण्णा, तत्थ जे णिरवेक्खा ते ज चैव आवन्ना त चैव दिज्झइ, जेण कारणेण ते णिग्गुग्गहा । सावेक्खण पुण दाणे इमो विही णायव्वो -

सावेक्खस्स आयरियस्स कयकरणस्स मूल, अकयकरणस्स छेदो ।

उवज्झास्यस्स कयकरणस्स छेदो, अकयकरणे छगुरु ।

भिवक्षुस्स अभिगयस्स थिरस्स कयकरणस्स छगुरुता, अकयकरणस्स छल्लहुया ।

अथिरस्स कयकरणस्स छल्लहुआ, तस्सेवाकयकरणस्स चउगुरा ।

अणभिगयस्स थिरस्स कयकरणस्स चउगुरा अकयकरणस्स चउलहुआ ।

अथिरस्स कयकरणस्स चउलहुआ, तस्सेव अकयकरणस्स मासगुरु । मूलमावण्णे एव मासगुरु ठाति ।

छेदावण्णे छेदाओ आढत्त एतेमु चैव पुरिसठाणेसु अट्टोवकतीए मासलहुए ठाति । छगुरुगातो गुरुए भिन्नमासे ठाति ।

चउलहुआतो छल्लहुए मासे ठाति । चउगुरुआओ गुरुए वीसराइदिए ठाति । चउलहुआतो वीसराइदिए लहुए ठाति ।

मासगुरुआओ पण्णरसराइदिए गुरुए ठाति । मानलहुआओ पण्णरसराइदिए लहुए ठाति ।

भिन्नमासगुरुआतो दसराइदिए गुरुए ठाति । भिण्णमासलहुआओ दसराइदिए लहुए ठाति

वीसरायगुरुआतो पचराइदिए गुरुए ठाइ । वीसरायलहुआतो पचरायलहुए ठाति ।

पण्णरसरायगुरुआतो दममे ठाति । पण्णरसरायलहुआतो अट्टमे ठाति ।

दसराइदिएगुरुआतो छट्ठे ठाति । दसराइदियलहुआतो चउत्थे ठाति ।

पचराइदियातो आयविले ठाति । एव पचराइदियलहुआतो एक्कासणते ठाति । दसमातो पुरिमड्ढे ठाति ।

अट्टमातो निव्व तते ठाति । एव अट्टोवकतीए सव्व णेयव्व ।

एत्थ एक्के अग्यरिया - चरिमाढत्त अट्टोवकतीए लहुपणए ठाति दसमादिपदे ण थायति । अण्णे चरिमाढत्त अट्टोवकतीए पणगेवरि दसम छट्ठ-चउत्था जाव एणभत्तपुरिमड्ढ जाव णिव्वितिए थायति ॥६६५५॥

आदेशान्तरप्रदर्शनार्थमिदमाह -

पढमस्स होति मूल, वितिए मूलं च छेद छगुरुगा ।

जयणाए होति सुद्धा, अजयणं गुरुगा तिविहभेदो ॥६६५६॥

पढमो ति - जिणअओ, तस्स अववादाभावा मूल एव । “वितितो” ति - सावेक्खो कयकरणे आयरिआ, तस्स मूलावत्तीए मूल चैव । “वा” विकल्पे । छेदो वा भवति ।

अस्य व्याख्या -

सावेक्खो त्ति व काउं, गुरुस्स कडजंगिणो भवे छेदो ।

अकयकरणम्मि छग्गुरु, अड्ढोक्कतीए णेयव्वं ॥६६५७॥

एस आयरियउवज्झाएसु अववादो । जो य भिवखू गीतो थिरो कयकरणो य, अगीयपव्वे थिरो कयकरणा य, एतेमि पि एसो चेव अववादो ।

जे मेसा भिक्खुपक्खे तेसि इमो अववादो -

अकयकरणा य गीया, जे य अगीयाऽकता य अथिरा य ।

तेसावत्ति अणंतर, बहुअंतरिया व भोसो वा ॥६६५८॥

जे भिवखू गीयपव्वे दोण्णि अकयकरणा, चसद्दातो गीतो अथिरो कयकरणो य ।

जे अगीयपव्वे अकयकरणा दोण्णि, जो य अगीयो थिरो कयकरणो य । एतेसि आवत्तीतो ज अणंतर दुगादिबहुअंतर वा सव्वतमि वा दिज्जति, सव्वहा वा भोसो कज्जति । “अजयणाए” पच्छद्ध - सव्वावत्तिठाण्णेषु गीयत्थो कारणे जयणाए अरत्तो अटुट्ठो य पडिमवतो सुद्धो ।

जो पुण अजयणकारी तस्स अजयणणिप्फण्ण पुरिसभेदतो इम तिबिह, आयरियस्स चउगुरु, उवज्झायस्स चउलहु, भिवखुस्स मासगुरु । एतेण कारणेण तिविधो पुरिसभेदो कृत इत्यर्थ ॥६६५८॥

सीसो पुच्छति - “किं निमित्त एस आयरियादिभेदेण विममा सोही भणिता” ?

उच्यते -

दोसविभवाणुरुवो, लोए डंडो उ किमुत उत्तरिए ।

तित्थुच्छेदो इहरा, णिराणुकंपा ण वि य सोही ॥६६५९॥

जहा लोणे ण सव्वदोसेम् सरिसो दडो, अप्पमहतदोसाणुरुवो डडो दिज्जति किं च लोणे पुरिसा गुरुवो विभवाणुरुवो य डडो दिज्जति, जो जत्तिय खमति, एव जति लोणे अणुकपिणो होउ घरसारानुरुव डड देति, तो किमुत लोमुत्तरे वि अणुकपपरायणहि सुट्ठुतर अणुकपा कायत्वा । अण च जइ जो ज खमति तस्स त जति ण दिज्जति तो तित्थुच्छेदादिया दासा पच्छित्तकरणअसत्ता उण्णिवखमात, किं च अबल पडुच्च निग्घणता कवखडपच्छित्तकरणपराभग्गस्स चरणसुद्धी ण भवति, जम्हा एवमादिदोसा तम्हा जुत्त पुरिस-भेदओ सोही ॥६६५९॥

“अजयणाए हाति सुद्धा अजयणगुरुणा तिविहभेदो” इति एयस्स पच्छद्धस्स इम वक्खाण - तिविधभेदो त्ति आयरिय उवज्झाय भिवखूण य । उस्सग्गतो ताव सव्वसि गेलण्णे सुद्धेण कायव्व । अह सुद्ध ण लभमि तो कारणाऽवलबिणा पणगादिजयणातो असुद्धेण करता कारवेता य सुद्धा ।

“अजयणगुरु” त्ति अस्य व्याख्या -

सुद्धालंभे अगीते, अजयणकरणे भवे गुरुणा ।

कुज्जा व अतिपसंगं, असेवमाणे व अममाही ॥६६६०॥

अपरिणामगा अपरिणामगा य जे तेसि सुद्धस्स अलभे जति अजयणाए करेति, अहवा - एत्थ अजयणा - तथा असमवसतो करेति जहा ते जाणति कहति वा तसि असुद्ध ति, तो चउयुस्स पच्छित्ति । इमे य दोमा भवति, अपरिणामगो अपरिणामग करेज्ज, अपरिणामगो वा अकप्पिय ति असेवतो अणगाडाइ-परितावणा असमाहिमरण वा ॥६६६०॥

किं चान्यत् -

तिविधे तेइच्छम्मि, उज्जुगवाउल्लण साहणा चेव ।

पणवण्ण मइच्छते, दिट्ठतो भंडिपोतेहिं ॥६६६१॥

अ यरियादितिविधे पुरिसभेत्ते, अहवा - तिविधा तेइच्छा वातिया पित्तिता सिमिता, तासु सुद्धालभे अकप्पिएण कीरमाणे आयरिय-उज्जुक्काय-गीयभिक्षूण य 'उज्जुय' ति - फुडमेव सीमनि एय 'अप्पिय' ति ज वा जहा गहिय । कम्हा ? जम्हा ते उस्सग्गववादतो जोगाजोग जाणति, ज च जोग त आयरति । जे पुण अगीता अपरिणामगा अपरिणामगा य तेमि अकप्पिय ति ण काहज्जति ।

अह ते भणेज्ज - कतो एय नि ? ताहे कहिज्जति-अमुगगिहाओ ति वाकुलिज्जति, जहा से अकप्पिए वि कप्पियबुद्धी उप्पज्जतीत्यथ ।

अह तेहिं णाय - ताहे तेसि 'असुद्ध' ति फुड साहिज्जति । अहवा - तेहिं समयेव णाय तेसि इम साहिज्जति - "ज गिलाणेहिं अकप्पिय विधीए सेविज्जति त णिट्ठोस, अण च अप्पेण बहुमेसिज्जा एय पडियलस्सण । गिलाण गिलाणपडिकम्मे य अकिज्जमाणे जति मरति तो असजतो बहुतर कम्म वधति, तेगिच्छे पुण कए चिर जीवतो सामण करेतो लहु कम्म खवेति, अन्न च कताइ तेणेव भवेण सिज्जेज्ज ।"

उक्त च - "अत्थि ण भते लवसत्तमा देवा" इत्याद आलावका । एव जो तरुणो बहूण य साहुमाहुणीण उवग्गह काहिति, सो एव पणविज्जति ।

अह पणवितो वि अकप्पिय ण इच्छति, ताहे से भंडीपोतेहिं दिट्ठतो कज्जति ।

जो भंडीपोतो वा थोवसठवणाए सठवितो वहति सो सठविज्जति । अह अतीवविसण्णदार तो ण सठविज्जति ।

एव तुम पि गिलाणे अकप्पियसठवणाए सठवितो बहु सज्जम काहिति, जो पुण बुडडो तरुणो वा अतीवरोगचच्छो अतिगिच्छो सो जति अप्पणा भणाति - "अणासग करेमि" ति तस्स अणुमती कज्जति, अप्पणाऽभणतस्स "साहिज्जति" ति घम्मो कहिज्जति, पणविज्जइ य 'अणासग करेहि' ति ।

इदाणि तेणेव करणिज्ज अह णेच्छति अणासग, ताहे से भंडीपोतग दिट्ठता कज्जति, सो भणति - तुम अतो विसन्नदारुतुल्लो आरोहण करेहि ति । "जा एगदेसे भदढा तु भंडी" वृत्त कठ ॥६६६१॥

एव कारणे जयणासेवणा वणिता, अजयण करेत्तस्स आरोवणा य । अहवा - सावेक्खा दस आय रियादिपुरिसा कज्जति ।

कह ? उच्यते - जे भिक्षू गीयत्थो सो दुविहो कज्जति ।

कह ? उच्यते - कयकरणो अकयकरणो य । थिराथिरो ण कज्जति ।

एव दस काउ इमा अण्णा आरोवणा भणति -

णिच्चित्तिगितिय पुरिमड्ढे, एक्कासण अबिले अभत्तट्ठे ।

पण दस पण्णर वीसा, तत्तो य भवे पणुब्धीसा ॥६६६२॥

मासो लहुओ गुरुओ, चउरो लहुगा य होति गुरुगा य ।

छम्मासा लहुगुरुगा, छेदो मूलं तह दुगं च ॥६६६३॥

आयरियादी सब्बे पचरात्तिदिय आवण्णा, तेसि इम दाण -

आयरियस्स कयकरणस्स त चेव दाण, अकयकरणस्स अभत्तट्ठो ।

उवज्जायस्स कयकरणस्स अभत्तट्ठो, अकयकरणस्स आयबिल ।

भिवबुस्स अणभियस्स अथिरकयकरणस्स अकयकरणस्स णिव्वितिय अह्वा - अणभियतअथिरस्स

इच्छा । एव दमराइदिएसु आढत्त हेट्ठाहुत्त पुरिमड्ढे ठाइ, पण्णरससु आढत्त एक्कासणे ठाति, वीसाए आढत्त आयबिले ठाति, भिण्णमासे आढत्त अभत्तट्ठे ठाति, मासगे आरद्ध पचसु रात्तिदिएसु ठाति, एव दोमासिक तेमासिक चउमासिक पचमासिक छम्मासिक छेद मूल अणवट्ट पार/चए आरद्ध सब्बेसु हेट्ठाहुत्त ओसारेयव्व तेहि चेव पदेहि । सब्बेते तवारिहलहुगा भणिया ॥६६६३॥

एसेव गमो णियमा, मामदुमासादिए उ संजोए ।

उग्घायमणुग्घाए मीसं मीसाइरेगे य ॥६६६४॥

एव मासादिसगलसुत्तारोवणाओ भाणियव्वा, एव उग्घाइएसु सब्बहा भाणिएसु अणुग्घातिएसु वि एव भाणियव्वा, तथा उग्घायाणुग्घायमीससजोगेसु वि भाणियव्वा । एव मासादिगा जाव छम्मासा पणगसातिरेगेहि भाणियव्वा । पुणो ते चेव गुरुगा पणगमासातिरेगेहि ताहे उग्घायाणुग्घायपणगमासातिरेगेहि तो दसराय उग्घाताणुग्घायसातिरेगमीसा य भाणियव्वा । एव जाव भिण्णमासातिरेगेहि ति । एव सब्बावत्तिसु उवज्ज दाण दातव्वमिति ॥६६६४॥

एसेव गमो नियमा, समणीणं दुगविवज्जिओ होइ ।

आयरियादीण जहा, पवत्तिणिमादीण वि तहेव ॥६६६५॥

एव मज्जीण पि सब्ब भाणियव्व । णवर - तामि दुगवज्जिय ति अणवट्टपारचियदाण ग्रत्थि ।

आवत्तीओ पुण तासि ग्रत्थि, से सब्बावत्ताआ दाणाणि य ग्रत्थि । णवर - परिहारो ण किच्चि, जहा पुरिसाण आयरियादिट्ठानेसु भणिय तथा तासि पवत्तिणिमादिठाणेसु भाणियव्व ॥६६६५॥

इदाणि आयरिओ सिस्साण सिस्सिणीण च इम णिसीहज्जकयण हिययम्मि थिर भवउ ति णिकायणत्थ इम भणइ -

चउहा णिसीहकप्पो, सदहणा आयरण गहण सोही ।

सदहण बहुविहां पुण, ओहणिसीहे विभागो य ॥६६६६॥

अहवा - ज एय पचमचूलाए वुत्त मव्व एय समासतो चउव्विह ।

जतो भण्णति — “चउ०” गाहा ॥६६६६॥ चउव्विहो निसीहकप्पो त जहा — सहणकप्पो, आयणकप्पो, गहणकप्पो, सोहिकप्पो य । तन्थ जा सहणा सा दुविहा — ओहे विभागे य ॥६६६६॥

एक्केक्का अणेगविहा इमा —

ओहणिसीहं पुण, हो ति पेढिया सुत्तमो विभाओ उ ।

उस्सग्गो वा ओहो, अववाओ होति उ विभागो ॥६६६७॥

ओध समास सामान्यमित्यनर्थान्तर, त च णिसीहपेढिया णामगिप्फणो णिक्खेवो उ (ओह)गहणा दित्यर्थ । विभजन विभाग विस्तर इत्यर्थ । मवीसाए उहेसतेहि जो सुत्तमगहो सुत्तथो य । अहवा — उस्सग्गो ओहो, तस्यापवाद विभाग ॥६६६७॥

अहवा —

उस्सग्गो वा उ ओहो, आणादिपमग्गो विभागो उ ।

वत्थुं पप्प विभागो, अविमिद्धावज्जणा ओहो ॥६६६८॥

सुत्ते सुत्ते ज उस्सग्गदरिसण त ओहो, ज पुण सुत्ते सुत्ते आणाज्जवत्थमिच्छत्तविराहणा य विभाग-
दरिसण सो विभागो, अहवा — आयरियादिपुरिसवत्थुभेदेण ज भणिय सो विभागो, जो पुण अविमिद्धा
आवत्ती मो ओहो ॥ ६६६८॥

अहवा —

पडिसेहो वा ओहो, तक्करणाऽऽणाति होइ वित्थारो ।

आया मंजम भइता, तस्स य भेदा बहुविकप्पा ॥६६६९॥

“ण कप्पइ” ति काउ ज ज पडिसिद्ध सो सब्बो ओहो, तस्स पडिसिद्धस्स करणाणुणा जा
आणादिणो य भेदा । एस सब्बो वित्थरो ति विभागो सवित्थरो पुण भाणियव्वो । णिक्कारण अविधिपडिसेवण
णियमा आणाभगो अणवत्था य, मिच्छत्त च — ‘ण जहावादी तथाकारि’ ति विराहणाओ आयसजमविराह
णाओ भयणिज्जा — कयावि भवति ण वा । जहा करकम्मकरणे आयविराहणा भवति ण वा, सजमे णियमा
भवति, पमत्तस्स य पडमाणस्स आयविराहणा, तस्सेव पाणाइवायअसपत्तीए णो मजमविराहणा । एव ‘तस्स’
ति विराहणाए सप्रभेदा । एव बहुविकप्पा अणेगप्रकारा उवउज्ज भाणियव्वा । एव विभागो ॥६६६९॥

अहवा सुत्तनिबंघो, ओहो अत्थो उ होति वित्थारो ।

अविसेसो त्ति व ओहो, जो तु विसेसो स वित्थारो ॥६६७०॥

सुत्तमेत्तप्रतिबद्ध, जहा पढमसुत्ते करकम्मकरणे मासगुरु । एस ओहो । सेसो अत्थो जहा —
पढमपोग्गीए करकम्मकरणे मूल, बित्ति ए छेदो, तति ए छग्गुरु, चउत्थीए चउगुरु, पचमीए मासगुरु । एस
विभागो । एव पढमसुत्ते । एव चैव सव्वसुत्तेसु जो अणुवादी अत्थो सब्बो विभागो । अहवा — ज दवादि
पुरिस्सप्पिसेसेण अविसेसिज्जति सो ओहो । दवादिपुरिसविसिट्ठ पुण सव्व वित्थरो । एय सव्व ज वुत्त सट्ठाणसहत्तस्स
सहणकप्पो ॥६६७०॥

इदाणि इमो 'आयरणकप्पो -

जे भणिता उ पक्कप्पे, पुव्वावरवाहता भवे सुत्ता ।

सो तह ममायरतो, सव्वो सो आयरणकप्पो ॥६६७१॥

जे पक्कप्पे एगुणवीसाते उहसगेहि पुव्वावरवाहया सुत्ता अत्था वा भणिता ते तहेव ममायरतस्स आयरणकप्पो भवति । एत्थ पुव्वो उस्सग्गो, अवरो अववादो । एते परोप्परवाहता - एतेसि सट्ठाणे मेवणा कतव्वेत्यर्थ ॥६६७१॥

उस्सग्गे अववायं, आयरमाणो विराहओ होति ।

अववाए पुण पत्ते, उस्सग्गनिसेवओ भइओ ॥६६७२॥

कथ्या । भयणा कह ? उच्यते - जो धितिसघयणसपण्णो सो अववायठाणे पत्ते वि उस्सग्ग करेतो सुद्धो, जो पुण धितिसघयणहीणो अववायट्ठाणे उस्सग्ग करेइ सो विराहण पावति । एम भयणागतो आय (क) रणकप्पो ॥६६७२॥

इदाणि 'गहणकप्पो -

सुत्तत्थतदुभयाणं, गहण बहुमाणविणयमच्छेरं ।

उक्कुटु-णिसेज्ज-अंजलि-गहितागहिगम्मि य पणामो ॥६६७३॥

सुत्त अत्थ उभय वा गेह्हेण भतिबहुमाणान्भुट्ठाणातिविणयो पयुजियव्वो । "मच्छेरं" ति आश्चर्यं मन्यते - 'अहो ! इमेसु सुत्तत्थपदेसु एरिसा अविक्कला भावा णज्जति', अहवा - आश्चर्यंभूत विणय करोति तिव्वभावसपण्णे अण्णेसि पि सवेग जणतो, अत्थे णियमा सण्णिसिज्ज करेति, सुत्ते वि करेति, वायणायरियइच्छाए वा सुणेति, उक्कुटुओ ठितो रयहरणणिसेज्जाए वा णिच्चकयजली । एव पुच्छमाणे वि सुत्त पुण कयकच्छसो पढति, जया पुण आलावय मगति तथा कयजली कयप्पणामो य, किं च अग सुयक्खध अज्झयण उद्दमगा अत्थाहिगारा सुतव्वके य गुरुणा दिण्णे समत्ते वा । गहिए ति अवधारिएण अणवधारिते वा निस्सेण पणामो कायव्वो ॥६६७३॥

इदाणि "सोधिकप्पो" ति सोधि प्रायश्चित्त त द्रव्यादिपुरुषभेदेन कल्पते य स सोधिकल्प, जो आदण्णाण पच्छिणेण सोधि करोमीत्यर्थ । केरिसो सो ? उच्यते - केवल मण ओहि चोद्दम णवपुव्वी य ।

सीमो भणति - तित्थकरादिणो चोद्दसपुव्वादिया य जुत्त सोहिकरा, जम्हा ते जाणति जेण विमुज्झइ ति, तेसु वोच्छिण्णेषु सोही वि वोच्छिण्णा ? ।

आचार्याह -

का म जिणपुव्वधरा, करिमुं सोधिं तथा वि खलु एण्हि ।

चोद्दसपुव्वणिबद्धो, गणपरियट्ठी पक्कप्पधरो ॥६६७४॥

पुव्वद्ध कठ । इम पक्कप्पज्झयण चोद्दसपुव्वीहि णिबद्ध, त जो गणपरिवट्ठी सुतत्त्वे धरेति सो वि सोधिकरो भवति । अहवा - चोद्दसपुव्वेहितो णिज्झहिओ एस पक्कप्पो णिबद्धो, तद्वारी सोऽधिकारीत्यर्थ ॥६६७४॥

किं चाव्यत् -

उग्घायमणुघाया, मासचउम्मासिया उ पच्छित्ता ।

पुव्वगते च्चिय एते, णिज्जूढा जे पक्कप्पम्मि ॥६६७५॥

जे उग्घायादिया पच्छित्ता जेमु अवराहेमु पुव्वगए मुत्ते अत्थे वा भणिता ने चेव पुव्वगतसिद्धा इह पि पक्कप्पज्झयणे णिज्जूढा तेमु चेव अवराहेमु ति, जम्हा एव तम्हा पक्कप्पधारी सोहिकरो ति मिद्ध ॥६६७५॥

सो पक्कप्पधारी कतिभेदो केरिसो वा गणपरिवट्टी इच्छिज्जति ? उच्यते -

तिविहो य पक्कप्पधरो, सुत्ते अत्थे य तदुभए चेव ।

सुत्तधरवज्जियाण, तिगदुगपरियट्टणा गच्छे ॥६६७६॥

सुत्त णामेगे धरेति णो अत्थ, अत्थ णामेगे धरेति णो सुत्त ।

एगे मुत्त पि धरेति अत्थ पि, एगे णो सुत्त धरेति णो अत्थ ।

एत्थ चउत्थो पक्कप्पधरणे सुण्णोति अवत्थु चेव, सेमतिगमगे पढमभगिल्लो वि । जम्हा एते गणपरिवट्टी पच्छित्तदाणे अममत्थो ति । त सुत्तधर वज्जेत्ता तइयभगधरो गणपरिवट्टी अणुव्वानो । नस्सासति बित्तिभगिल्लो वि जम्हा एकभेदेण पच्छित्तदाणे समत्था तम्हा ण वोच्छिण्ण पच्छित्त देतगा य ६६७६॥

आह- “किं कारणं पच्छित्तं दिज्जति ?”

आचार्याह -

पच्छित्तेण विसोही, पमायवहुयस्स होइ जीवस्स ।

तेण तदकुसभूतं, चरित्तिणो चरणरक्खट्ठा ॥६६७७॥

जहा मत्तगओ अवमो उम्मग्गगामी वा ऋकुसेण धरिज्ज - एव चरित्तिणो चरण मलिण पच्छित्तेण सुज्झति इदियादिपमादमु अ पयट्टमाणो पच्छित्तेण अकुसभूतत निवारिज्जति चरणरक्खणट्ठा ॥६६७७॥

ज च भणसि “पच्छित्तं वोच्छिण्ण” ति तत्थ पच्छित्ताभावे इमे दोसा -

पायच्छित्ते अमंतम्मि, चरित्तं पि ण चिट्ठती ।

चरित्तम्मि असंतम्मि, तित्थे नो संचरित्तया ॥६६७८॥

चरित्तम्मि असंतम्मि, निव्वाणं पि ण गच्छती ।

निव्वाणम्मि असंतम्मि, सव्वा दिक्ख्वा निरत्थया ॥६६७९॥ कट्था

तम्हा पक्कप्पधारिणो देतगा अत्थि, पच्छित्तं च देयमप्यत्थि, दातुदेयसवधात् । त च पच्छित्तं दसविहं आलोयणादि सिद्धं ।

तेसि सेसं जम्मि वोच्छिण्णं, ज वा अणुसज्जति त भणामि -

दस ता अणुसज्जंती, चोदसपुव्वी य जाव संघयण ।

दोसु वि वोच्छिण्णेसुं, अट्ठविहं जाव तित्थं तु ॥६६८०॥

त दसविध ताव अणुसज्जति जाव चोदसपुव्विणो, चोदसपुव्विणो वि ताव अणुसज्जति जाव पढमसघयण, चोदसपुव्ववा य धूलभद्दे वोच्छिण्णा । अणवट्टुपारविद्यतवपच्छित्ता वि दो तत्थेव वोच्छिण्णा । तेसु य दोसु वोच्छिण्णसु सेस अलोयणादि जाव मूल, एय अट्टविह पि जाव तित्थ ताव अणुसज्जिहि । लिंग-
खेतकालअणवट्टुपरिचया य । लिंगे दव्वे भावे, दव्वेऽणला, भावे - अणवरता, खेते - जो जत्थ दूसति, कालतो जाव अणुचरतो ति ॥६६८०॥

अहवा दुविह पच्छित्त - ओहणिष्कण वित्थारणिष्कण च -

ओहेण उ सट्ठाण, सट्ठाणविभागतो य वित्थारो ।

चरणविसुद्धिनिमित्तं, पच्छित्त तू पुरिसजाते ॥६६८१॥

तत्थ ओहणिष्कण सट्ठाण, "सट्ठाण" ति ज सुत्ते णिबद्ध, त च उद्दसगस्स अतसुत्ते निदिसति ॥६६८१॥

सुत्ते सुत्ते पुण णिबवो इमो, जहा -

कम्मादीणं करणं, सयं तु सातिज्जणा भवे दुविहा ।

कारावण अणुसोयण, ठाणा ओहेण तिण्णते ॥६६८२॥

जे भिक्खु सयमेव हत्यकम्म करेइ तस्स मासगुरु । साइज्जणा य दुविहा - कारावणा अणुमती य ।
एयासु मासगुरुगा । एते तिणि वि ओहणिबद्धाओ पच्छित्त । एयाओ पर ज विभागे दसिज्जति सुतसूचित
त सम्ब वित्थारो । एव बट्टविह वणोत्ता जत्थ जत्थ सुतनिवाता सो ओहा सेस वित्थारो । त ओहविभागे
पच्छित्त पडिसेवणपगार जाणित्ता आयरियादिगुग्मिवसेस जाणित्ता मल्लिणत्रिसोधिणिमित्त च दति ॥६६८२॥

कि चान्यत् - इह णिसीहज्जयणे सुत्ते उस्सगववाया दट्टव्वा ।

तेसु इमा अणायरणविधी -

हत्थादिवायणंतं, उस्सग्गेऽववातिय करेमाणो ।

अववाते उस्सग्गं, आसायण दीहमंमारी ॥६६८३॥

हन्थकम्मकरण आदिसुत्तातो आग्म जाव एगुणवीमइमस्स चरिमस्स चरिम वायणासुत्त, एत्थ
जो उस्सग्गठाणे अववाद करेति अववादे वा जो उस्सग्ग करेति सो तित्थकरअणाणा वट्टति, दीहससारियत्त
च णिवत्तेइ । जम्हा एते दोसा तम्हा उस्सग्गे उस्सग्ग करेज्जा, अववादे अववाद ॥६६८३॥

अहवा - छेदसुत्तेसु सुत्ते सुत्ते इमो चउव्विहो अत्थोवेक्खो विधीए दसिज्जति -

पडिमेहो अववाओ, अणुणजतणा य होइ णायव्वा ।

सुत्ते सुत्ते चउहा, अणुओगविही समक्खाया ॥६६८४॥

पडिसेहो जा आणा, मिच्छऽणवत्थो विराहणाऽवातो ।

वित्तिरपदं च अणुणा, जयणा अप्पाबहूण च ॥६६८५॥

पुव्वद्वस्स जहासख इमा वक्खा - पडिसेहो णाम जा आणा उस्सग्गववायत्थाणीय च सूत्रमित्यर्थ ।
अववादो णाम दोसो, त दोसठाण पडिसेवतस्मे मिच्छत्त भवति, अणस्स जणेति, अणवत्थ च पयट्ठेति,

आयसजमविराहण च पावति । अणण्णा णाम वितियपद, अपवादपदमित्यर्थ । जयणा नाम अववादे पने मचितेउ ज ज अप्पतरदोसठाण त त णच्चा सेवति । जत्थ पुण बहुतरो दोसो त णच्चा वज्जेति । एव सव्वेमु सुत्तेसु अत्थो दसिज्जति ॥६६८५॥

आयावाए इमो विसो भण्णति -

देवतपमत्तवज्जा, आतावातो य होति भतियच्चा ।

चित्तवतिपुढविठाणादिएसु चोदेंत कलहो उ ॥६६८६॥

सव्वपमायठाणेषु पमत्तभाव देवता छलेज्ज अतो त देवयपच्चय “वज्जे ता” मोत्त इत्यय, मेसा जा आयावाया पमत्तभावस्स चित्तिज्जति । ते “भइयव्व” ति - भवति वा ण वा ति । केसुइ पमायठाणेषु भवति, केसु वि न भवति । अथवा - सव्वपमादठणसु आयावातो इमेण पगारेण वितियच्चा, जहा - चित्तमताए पुढवीए ठाणणिसीदणादि करेंतो चोदितो तत्थ कलह करेज्जा, पगेप्पर अमह्णाण जुद्धे अप्पि डिवाण आयविराहणा होज्ज, एव सव्व ॥६६८६॥

एव आयावाएण भणिए समप्पिउकामे अज्झणणे आयरितो सखेवतो उवदेसमाह -

अवराहपदा सच्चे, वज्जेयच्चा य णिच्छओ एस ।

पुरिसादिपंचगं पुण, पडुच्चऽणुणा उ केमि चि ॥६६८७॥

सुत्तभगिया अत्यभाणता वा जे अवराहपदा ते सव्वे वज्जणिज्जा । एस णिच्छयत्थो । तेसि जेव अवराहपदाण पुरिसपवग पडुच्च केमि चि अणुणा भणिता । ते इमे पच - आयरिओ उवज्झओ भिक्खू थेरो खुट्ठो य । आदिसद्दालो सजनीसु वि पवग । केति ‘पवग’ ति गणावच्छेतिए छोट्टु पच भणति, त न भवति अव्यापृतत्वात् ॥६६८७॥

किं चान्यत् -

जति वि ण होज्ज अवाओ, गेण्हणदिट्ठादिया उ अवराहा ।

परितावणमादीया, आणादि ण णिप्फला तह वि ॥६६८८॥

जइ वि अवराहपदेसु ठियस्स आतावातो ण भवेज्जा, गेण्हण - कड्डणादिया वा ण होज्ज, दिट्ठे मका धाडियभोतियादिया वा ण होज्ज, परितावमहादुक्खे एवमादिया न होज्ज । एवमादिअववादअभावे वि आणाभगणवत्तादियाण णिप्फल ति अवस्स तेसु दोसो भवति ति ॥६६८८॥

अहवा को तस्स गुणो, अवायवत्थूणि जाणि सेवंतो ।

सुच्चेज्ज अवायाओ, जतिरिच्छा मा ण तं सुकरं ॥६६८९॥

पमादिणो अववादठाणेषु पवत्तमाणस्स ज आयावायो ण भवति स तस्य गुणो न भवति, “जतिरिच्छा सा” - घुणक्खरसिद्धि व्व दट्ठुवा, सुकत त ण भवति, पुवावरगुणदोसालयणमित्यर्थ । तत्र भावप्राणा तिपात न फलवत्, ज अपायच्छित्त दट्ठव्व ॥६६८९॥

सीसो पुच्छति - भगव । पमायमूलो बधो भवति, पमतो य असजतो लब्धति ।

आचार्याह - आम ।

पुणो सीसो पुच्छति - “जइ एव तो किं दोण्ह पमादअजयत्तणतो आवण्ण अणावण्णाण तुल्लपच्छित्त ण भवति” ?

आचार्याहि -

काम पमादमूलो, बंधो दोण्ह वि तहा वि अजयाण ।

वहगस्स होति दंडो, कायगुवाया ण इतरस्स ॥६६९०॥

“काम” अणुमयत्थे, पमादमूलबधो, जति वि ने दो वि “अजयाण” ति - पमादभावे बहति तहावि जो तत्थ “वहगो” ति - पाणातिवाय आवण्णो तस्स पुढवादिपरित्ताणतकायाणुवातेण दंडो भवति, इदियअणुवादेण वा । “इयरस्स” ति - अणावण्णस्स त कायाणवायपच्छित्त ण भवति, पमायपच्चय वा भवति ॥६६९०॥

पुनरप्याह चोदक - “ततियचउत्थुद्देसगेनु सीसदुवारासिमुत्ता तुल्लाभिहाणा चरिमुद्देसगे य आवन्तिमाडया एवमादिसुत्ताण तुल्लनणनो णणु पुणरुत्तदोसो भवति ?” ।

आचार्याहि -

जति वि य तुल्लऽभिहाणा, अवराहपदा पक्कपमज्झयणे ।

तहवि पुणरुत्तदोसो, ण पावती अत्थणाणत्ता ॥६६९१॥

“अवराहपय” ति - अवराहणिबद्धमुत्तपदा अत्थणाणत्त उद्देसगाधिकारातो वत्तव्व अत्थाधिकार-वमातो वा सेस कठ ॥६६९१॥

सूत्रनिबद्धप्रदर्शनार्थमाह -

पडिसेविताणि पुव्व, जो ताणि करेति एत्थ सुत्तं तु ।

हत्थादिवायणंतं, दाणं पुण तस्स चरिमम्मि ॥६६९२॥

पुव्व जाणि आया-सूयकडादिसु पडिसिद्धाणि ताणि जो पडिसिद्धाणि करेति आयरतीत्यथ । एत्थ एगुणवीसाए उद्देसगेनु हत्थादिवायणतमुत्तेसु आवत्ति पच्छित्तनिबधो कतो, तेसि च आवत्तीण विसतिमुद्देसेण दाण भणिय ॥६६९२॥

कि च उस्सग्गववादविराहण करेतस्स दोषप्रदर्शनार्थमाह -

आणाभंगे णाणं, ण हो' ण अणवत्थमिच्छदिट्ठी उ ।

विरतीविराहणाए, तिण्णि वि जुत्तस्स तु भवंति ॥६६९३॥

नित्थकस्वदिट्ठविधिमकरेतस्स तित्थकराणाभंगो, आणाभंगे य णाणी ण भवति ति अण्णाणी भवति, “अणवत्थमिच्छतो” ति - भूयो पयट्ठे अणवत्था, अणवद्वियत त इच्छतो अभिलसतस्स दिट्ठी ति मम्मदिट्ठी ण भवति उस्सुत्तमायरतो य बट्ठति । “विरती विराहणाए”, विगती चरित त विराहेतस्स अचरित्रित्व भवतीत्यथ । जम्हा एव तम्हा मम्म चरणजुत्तस्म तित्थकराणाण वा सग्ग जुत्तस्स, तिण्णि वि णाणदमणचरणाणि भवति ॥६६९३॥

सदृशार्थस्य विशेषप्रदर्शनार्थं विसदृशार्थस्य च अविशेषप्रदर्शनार्थमिदमाह -

अविसेसे वि विसेसो, विसेसपक्खे वि होति अविसेसो ।

आवज्जणदाणाणं, पडुच्च पुरिमे य गुरुमादी ॥६६९४॥

अविसेसे वित्तसो इमो, जहा — दो जणा पुढविकायविराहगा, तेनि तुल पच्छित्त ण भवति ।

कह ? उच्यते — एकस्मिन् आवति पडुच्च चउलहु, वित्तियस्स दाण पडुच्च आया।म । अहवा — पुढविकायविराहण ति अविसेसो, इत्थ वित्तसो कज्जति — सविते चउलहु, एव दाणे वित्तसो कायव्वो ।

वित्तसपक्खे कह अविसेसो ?, उच्यते — दप्पओ एक्केण एक्को पच्छिद्विओ धातिनो, विनिएण दो तिणि वा, दोण्ह वि मूल । अहवा — एक्केण तिक्कव्वसण्णेण मूलमासवित्त, वित्तिण मज्झवसाणेण चरिम, दोण्ह वि अणव्वडु, पुरिसेसु वा गुरुप्रादिठण्णेषु वित्तिसमयणादि वा अविक्खित्त दव्वदि वा पडुच्च बहुधा गमणठाणपलबादिसुत्तेसु वित्तसविमेमा दह्ववा ॥६६६४॥

सीसो पुच्छति — “ भगव ! तुम्हे सुत्ते अवाय दरिसेह, तथ जो अवायभीतो पावोवरति करेति तस्स कि साहुत्त णिजरा वा अत्थि ?, जो वा मभाववेरग्गुत्तो पावोवरति करेति तस्स कि ततो विपुलतरा वा णिजरा भवति ? ”

आचार्याह —

जो वि य अवायसंकी, पावातो नियत्तए तहवि साह ।

कि पुण पावोवरती, निसग्गवेरग्गजुत्तस्स ॥६६६५॥

किमित्थतिशये, पुनविशेषणे, कि विशेषयति ? उच्यते — अपायासकिन् समीपान्निसर्गं स्वगाव अकृत्रिमो भाव, य एव वैराग्ययुक्त पापादुत्तरति करोति तस्स अतिशयेन महतरेण विपुलतरा णिजरा भवति । सेस कठ ॥६६६५॥

सीसो पुच्छति — “ मन्वमुत्तेसु अववादा अववादो, अववादमतरेण वा जयणाऽजयणा उ भणिता तासि कि सख्व लक्खण वा ? ”

उच्यते —

रागदोमविउत्तो, जोगो असदस्स होति जयणा उ ।

रागदोसाणुगतो, जो जोगो सा अजयणा उ ॥६६६६॥

असदभावस्स अववादपत्तस्स जो अकप्पपडिमवणे जोगो तत्थिम रागदोसविउत्तण सा जयणा जयणालक्खण च एय चेव । एयविवरीया अजयणा, अजयणालक्खण च एय चेव ॥६६६६॥

पुनरप्याह — कि कारण सुत्ते सुत्ते अवाया भणति ?, उच्यते —

पाव अवायभीतो, पादायतणाइ परिहरति लोओ ।

तेण अवातो बहुहा, पदे पदे देमितो सुत्ते ॥६६६७॥

जहा लोगो अवायभीओ पावायरणे वज्जेति तहा लोओत्तरे वि इहपरलोगावायभीतो पाव ण काहिनि, तेण सुत्ते सुत्ते बहुविधा अवाया देसिया ॥६६६७॥

शिष्याह — “ भगव ! तुम्हें चेरकप्प उस्सग्गजववाया देसिया दप्पकप्पपडिसेवणातो वि दसिता, किमेव जिणकप्पे वि भवति ? ” न, इत्युच्यते — जम्हा ते एगतेण उस्सग्गठिया तम्हा तेसि अववादो णत्थि, कप्पिया वि पडिसेवणा णत्थि, किमग पुण दप्पिया ?,

जतो भण्णति -

दुग्गविसमे चि न खलति, जो पथे सो समे कहणु खले ।

कज्जे विज्जवज्जी, स कहं सेवेज्ज दप्पेणं ॥६६६८॥

पूर्वाधे दिट्ठतो कठो, पच्छद्धे दिट्ठतियो अत्थो । “कज्ज” ति - भववादठाणपत्ते वि भववादो “अवज्ज” मिति पाव, त जो वज्जेति, स दप्पेण कह पाव सेवेज्जा ? ॥६६६८॥

इहाणि अणुओगधरो अप्पणो गारवणिरिहरणत्थ सोताराण य लज्जाणिरिहरणत्थ आह -

अम्हे वि एतधम्मा, आसी वड्ढंति जत्थ सोतारा ।

इतिगारवलहुकरणं, कहए ण य सावए लज्जा ॥६६६९॥

अणुओगकही चित्तेति भणाति वा - अम्हे वि एस एव चेव गुरुसमीवातो सोयव्वधम्मा आसि, जत्थ सपद सोतारा वट्ठति । ‘इति’ उवप्पदरिसणे एव “अणुओगधरो अह” मिति अप्पणो ज गारव त णिरिहरति । ‘ण य सावए’ ति, जे सोयारा तेहि वि सुणतेहि चित्तियव्व “एस गणधरारद्धो सोतव्वकप्पो गारपरेण आगते” ति ण उ ण लज्जा कायव्वा ॥६६६९॥

एत्थ पुणज्जयणे इमेहि पगारेहि अत्थऽधिकारा गया -

पच्छित्तऽणुवाएणं कातऽणुवातेण के ति अहिगारा ।

उवहिसरीरऽणुवाया, भावणुवादे ण य कहिं पि ॥६७००॥

पच्छित्ताणुवाते णए जहा मव्वे मासगुरुमुत्ता पढममुद्देसे अणुवत्तिया, वितियादिसु मासलह, छट्ठा-दिम् चउगुरु, बारममादिसु चउलह । अहवा - पच्छित्तणुवातो पणगादिगो जाव चरिम, जहा दगतीरे असधसधातिमेसु, एवमादि कायणुवाएण, जहा - पेढियाए पुढवादिक्काएसु भणिय । अहवा - छक्काय चउसु लहुमा ॥ गाहा ॥

एवमादिसु उवहिअणुवातो जहणमज्झिमुक्कोसो, तेसु जहा सख - पणगमासचउमासो । अहवा - अहाकडस परिकम्मा बहुकम्म ति । सरीरअणुवातो जहा - वज्जरिसभनागचसधयणातिगो ।

अहवा - वि दिव्वमणुयतिरियसरीरा सच्चित्तेतरा पडिमाजुत्ताणि मा विमियचित्ताए वा बेइदिय-सरीरादिणा । भावाणुवायतो, जहा - सप्रमेदा णाणदसणवरित्तायारा । अहवा - परितावमहादुक्खादिगा एवमादि ॥६७००॥

क्वचिदीदृशा

गेगविहकुसुमपुष्पोवयारसरिसा उ केड अहिगारा ।

सस्सवतिभूमिभावित-गुणसतिवप्पे पक्कप्पम्मि ॥६७०१॥

अणगजातिएहि अणेगवण्हि पुप्फेहि पुप्फोवयारो कअो विचित्तो दीसति, एव सुत्तत्थविकप्पिया अणेगविहा अत्थाधिकारा दट्ठव्वा । कह ? उच्यते - पक्कपो, सो केरिसो ? गुणसइ दप्रतुल्लो । वप्परूपक इम - सस्य यस्या भूमी विद्यते सा भूमी सस्यवती सम्ययुक्ता, क्वचिच्छाली क्वचिद्विधू क्वचिज्जवा क्वचिद्व्रीह्य ,

भावितो गुणेहि जो सो भावितगुण, गुणगत इत्यथ, ते च गुणा सतिमादी, सती नाम विशिष्टा सस्यवृद्धि-
निरूपहतत्व इतिवर्जितत्व बहुफल च, अभिर्गुणैरुपपेतो वप्र ।

इदाणि उवणओ - वप्पो इव पवप्पो, सालमादीण वा उद्देसत्थाधिकारा सस्यवृद्धिरिव अनेकाथ,
निरुपहतत्व दोषवर्जिता, ईतिवर्जितत्वोक्त्व पामत्थचरणादिभ्यो षवर्जिता, बहुफलत्वमिव ऐहि कपारत्रिक-
लब्धिमभवात्, ईदृशे प्रकल्पे अनेकार्थाधिकार इत्यर्थ ॥६७०१॥

एय पुण पक्कप्पऽञ्जयण कस्स ण दायव्व, केरिसगुणजुत्तस्स वा दायव्व ?

अतो भणति -

भिण्णरहस्से व नरे, निस्साकरए व मुक्कजोगी वा ।

छ्विविहगतिगुविलम्मी, सो समारे भमइ दीहे ॥६७०२॥

भिण्णरहस्सो णाम जो अववादपदे अण्णेसि सकप्पियाण साहति । गिरसाकरओ णाम जो किं चि
अववादपद लभित्ता त निस्म करेत्ता मणाति - एव चेव करणिज्ज, जहा य एय तथा अन्नपि करणिज्ज, तत्थ
दिट्ठतो - जहा कोइ सुईमुद्देत्तमच्छिद् लभित्ता मुसल पक्खिवइ । मुक्कजोगी णाम जेण मुक्को जोगो णाणदसण-
चरित्तवणियमसजमादिसु सो एस मुक्कजोगी । एरिसस्स जो देति सो ससारे चउप्पगारे वा पवप्पगारे वा
छप्पगारे वा एवमादिगतिगुविले 'गुविलो' ति गह्णो घुणावयतीति चोरो, एरिसे ससारे भमिहिति दीह
काल, एरिसेमु ण दायव्वा ॥६७०२॥

एएसि पडिवक्खा जे तेसु दायव्वा । ते य इमे -

अइरहस्सधारए पारए य अमढकरणे तुल्लोवमे समिते ।

कप्पाणुपालणा दीवणा य आराहण छिण्णसंसारे ॥६७०३॥

अतीवरहस्स अइरहस्स, त जो घरेति सो अइरहस्सधारगो । जो त अइरहस्स एक दो तिणिण वा
दिण्णा घरेति ण तेण अहिकारो, जो त गृहस्मधरण जीवियकाल पार णेति तेण अहिकारो । असढकरणो
णाम सब्वच्छादने जो अप्पाण मायाए ण ठाति, असढो होऊण करण करेति । तुल्लसमो णाम समट्ठिता
तुला जहा ण मग्गतो पुरवो वा णमति, एव जो रागदोसविमुक्को सो तुल्लसमो भणति । समितो णाम
पव्वहि समितोह समितो । एयगुणमपउत्ते य देयो, एयगुणमपउत्ते पदेतेण पक्कप्पाणुपालणा कया भवति । अह्वा-
पवप्पे ज जहा भणित तस्स अणुपालणा जो करेति तस्स देयो, पक्कप्पाणुपालणा य दीवणा कया अण्णेसि
दीविय दरिसियं ग मेय, जहा एत एव कायव्वमिति । अह्वा - दीवणा जो अरिहाण अणालस्से वक्खाण
करेति तस्सेय देय ति । दीवणाए य मोक्खमग्गस्स आराहणा कता भवति, आराहणाए य चउगतिगुविलो
दीहमणवयम्पो छिण्णो ससारे भवति, छिण्णम्मि य ससारे ज त सिवमयलमरुयमक्खयमव्वावाहमपुणरावत्तय
ठाण त पावति, त व पत्तो कम्माविमुक्को सिद्धो भवति ॥६७०३॥ अणुगमो ति दार सम्मत्त ।

इदाणि "नय" ति दार - "णीड् प्रापणे", अनेकविधमर्थं प्रापयतीति नया, अथवा - णिच्छिय-
मत्थ णयनीति, तथा जो सो अत्थो उवक्कमादीहि दारेहि वणिणो सो 'सव्वो णएहि समोघारेयव्वो, ते य
भत्तणयसत्ता दो चेव णया जाता, त जहा - णाणणयो चरणणओ य । तत्थ णाणणओ इमो - "णायम्मि"
गाहा

इदाणि चरणणओ - "सव्वेसि पि" गाहा

१ सव्वेहि इत्यपि पाठ । २ इमा, इत्यपि पाठ ।

जो गाहासुत्तत्थो, सो चेव विधिपागडो फुडपदत्थो ।
 रयितो परिभासाए, साहूण य अणुग्गहट्ठाए ॥१॥
 नि चउ पण अट्ठमवग्गे, ति पणग ति तिग अक्खरा व ते तेमि ।
 पडमततिएहि तिदुसरजुएहि णाम कय जस्स ॥२॥
 गुरुदिण्ण च गणित्त, महत्तरत्त च तस्स तुट्ठेहि ।
 तेण कएसा चुण्णी, विसेसनामा निसीहस्स ॥३॥

नमो सुयदेवयाए भगवतीए ।

॥ इति विसेस-णिसीहचुण्णीए वीसडमो उद्देशओ समत्तो ॥

॥ इति मनिर्युक्तिभाष्यचूर्ण्युपेतं निशीथसूत्रं समाप्तम् ॥

निशीथचूएर्याः सुबोधा व्याख्या

विंशतितमोद्देशकस्य विषमपदविवरणरूपा

प्रणम्यवीरं सुरवन्दितक्रमं, विशुद्धशुद्ध्याखिलनष्टकल्मषम् ।

गुरुस्तथा निर्मलशुद्धिकारिणो, विशुद्धतत्त्वान् जगते हितैषिणः ॥१॥

विंशोद्देशे श्रीनिशीथस्य चूणौ, दुर्गं वाक्यं यत् पदं वा समस्ति ।

स्वस्मृत्यर्थं तस्य वक्ष्ये सुबोधां, व्याख्यां कांचित् सद्गुरुभ्योऽवबुद्धाम् ॥२॥

आदौ मासिकपदमिह तत्प्रस्तावात् समागता मासा, तानवविकृत्यादौ व्याख्या प्रारभ्यतेऽत्र, यथा -

“नक्खत्ते” गाहा (२० उ० गा० ६२८३) “एगत्तीसं” गाहा (२० उ० गा० ६२८५-६२८६) नक्षत्रमासानां पचानामपि प्रमाणाभिधायिके एते गाथे, स्थापना -

न	चन्द्र	आ	ऋतु	अ	मा
२७	२६	३०	३०	३१	१४४
२१	३२	३		१२१	१३
६७	६०	६०	६१	१२४	

तत्र चन्द्रस्य नक्षत्रमण्डलभोगकालो नक्षत्रमासः । अत्र च सप्तविंशते सप्तषष्ठ्या गुणने जात १८०६ । एकविंशतिभागाश्च मध्ये क्षिप्यन्ते जात १८३० सप्तषष्ठिभागाः । एतावन्तो भागा नक्षत्रमण्डलभोगकाले भवन्ति, अस्य च राशे सप्तषष्ठ्या भागे हृते लब्धम् २७, २१, ६७ । “अहव त्ति तिन्नि अहोरत्त” त्ति - द्विघटिकाप्रमाणो मुहूर्तः, तीसाए मुहुत्तेहि अहोरत्त भवइ, पन्नरसहि छ गुणिया ६० होइ, तत्रो तीसमुहुत्तेहि भागे हृते लभ्यन्ते दिनानि ३, उत्तराण छण्ह नक्खत्ताण पणयालीसाए छहि गुणने २७०, ३०, ६ । तीसाए भागे हृते दिन ६ । पण्णरस तीसाए गुणिया तीसाए भागे हृते लब्धा १५, ४५०, ३०, १५ । तत्रो मिलिया सत्तावीस दणा २७, २१, ६७, चन्द्रमास उच्यते । अभिइभोगो सावणबहुलपडिवयाए एव पमाणो चदस्स वत्तइ ६, २४, ६२, ६६, ६७ । ते सह “छेएण” त्ति - इगवीसा गुणितज्जइ वासट्टीए, जाय १३०२, छेदश्च सप्तषष्ठिरूप स च द्वाषष्ठ्या गुणित ४१५४, अयं भागहारकः, भाज्यश्चायं १३०२, अयं च लघुभागहारकरा- (?) पेक्षयाऽतस्त्रिंशता गुण्यन्ते जात ३६०६०, ४१५४, ६ । भागे हृते लब्धं मुहुर्ता ६, शेष चोद्धरित १६७४ । एतच्च द्वाषष्ठ्या गुणनीयं, चतुर्विंशत्यशानां द्वाषष्ठिसप्तत्वात्परं गुण्यते अकवृद्धिभयात्

किन्त्वपवर्तन - राशेर्हस्वीकरण क्रियते, तथाहि - भाज्यस्य द्वापष्टया किल गुणनमिति द्विषष्टिस्ता वदेकाऽथस्तनराशेरपि द्वापष्टया भागो हार्य इति द्विषष्टिस्तुल्यैव पश्चाद्विषष्टेरिति गुणकारको द्वापष्टिरेक छिद्यते, द्वापष्टया एककश्च लभ्यते, तथा च तुल्येन सम्भवेन सति हर विभाज्य च राशिना छित्वा भागो हार्य, क्रमश इति न्यायोऽन्यत्रोक्त, तत ४१५४, अस्य राशे द्वापष्टया भागे हते सतषष्टिर्लभ्यते, तथा अस्य राशे १६७४, १३ भागे हते लब्ध २४, ६६, ६७। षड्वास्य १६७४, राशेर्द्वापष्टया गुणने जात १०८७८८, ४१५४। अस्य भागोऽनेन ४१५४ हार्य । लब्ध २४ शेष ६६ च, ततो द्वापष्टया अपवर्तन द्वयोरपि क्रियते अथस्तने लभ्यते ६७ उपरितने च द्वापष्टया हते ६६ लभ्यते, एव च अभीचिभोग प्राग् दर्शितरूप सर्वोप्यागत । “सवणाइया नक्खत्तभोग” त्ति मिलिताना ८१० अभीचिमुहूर्ते ६ क्षेपे ८१६ “पुणो अभीइभोगो” त्ति जम्भो एव कण ६०, २७०, ४५०। नक्खत्तमास एव भवति ।

चदमासो य नक्खत्तमामाओ अधिकतरो अओ पुण्णे नक्खत्ततिगभोगकाल क्षिप्यते समत्तुति - समस्त अभीमुहूर्त ६, २४०, ४२६। मिलिय ६५, अस्य राशे ८१६ मिलने जात ८८४, वासट्टिभागा य, अभीचि ४८, धणिट्टा ४२ सक्का मीलित ६०। अभिचिचुन्नी ६६, दुगुणिया १३२, धनिष्टया दो चुन्नीप्रक्षेपे १३४, मिलित च जात, शेष सुगम। यावच्चन्द्रमास समाप्त ।

उऊमासइ त्ति - बुद्ध्या छिन्नस्य द्विषष्टिभागतया एकाहोरात्रस्य एगपष्टिभागेहि चन्द्र गत्या तिथिसमाप्तिर्भवति - एकषष्टिभागरूपा तिथिर्भवतीत्यर्थः । अत्र त्रैराशिक कर्तव्य यथा - १८६०। १८३०। १। आद्यन्नयोस्त्रिराशावभिन्नजातीति प्रमाणमिच्छा च फलमन्यजातिमध्ये तदत्यगुणमादिमेन भजेत्, १८३०, १८६०, ३० त्रिशता भागे हतेऽथस्तनराशौ लब्ध ६२, उपरितने च लब्ध ६१, ततो न्यस्यते ६३ लब्ध। त्रिशता गुणितेऽस्मिन् ६१, जात १६३० एकषष्ट्या भागे ३ हते लब्ध ३, भागो न पूर्यते, लब्ध शून्य, तत ३०। ऋतुमासस्य च साधनमासकर्ममासाविति पर्यायौ, अत आह - “कम्ममासो सावणमासो य भन्नइ त्ति” “एस चेव” त्ति १६३०, लब्ध, तेन किल चद्रगत्या तिथिर्भवति, ततश्चन्द्रमा सोऽपि एतस्मादेव तिथिराशेरा-नीयते इत्यावेदयते। आ इव त्ति - कोऽर्थः ? अभुक्तेषु एतेषु कर्कश्येन आदित्येन तद्दिनात् प्रभृत्येव दक्षिणायनप्रवृत्तिः, किन्तु पुष्यनक्षत्रस्याष्टभिरहोरात्रैश्चतुर्विंशतिमुहूर्तैश्च मुक्तैरुत्तरायणमेवाति-क्रामति, तदूर्ध्वं चतुर्भिरहोरात्रैरष्टादशभिश्च मुहूर्तैः सावशेषैर्दक्षिणायनप्रवृत्तिरिति, सयभिसयेत्यादि षडहोरात्रा षडभिर्गुणिता ३६, मुहूर्तश्च २१, षडभिर्गुणिता १२६, अहोरात्रविंशतिश्च - षडभिर्गुणिता १२०, मुहूर्तस्थिभागाश्च त्रय षड्गुणा १८, त्रयोदशाहोरात्रा पचभिर्गुणिता १६५, भागा १२, गुणिता पचदशभि १८०, अभीचिभागा ६, सर्वभागमीलने ३३०, अत्र च विंशता भागे हते लब्धा ११ अहोरात्रा, पूर्वोक्ताना षड्विंशतादीना अहोरात्रराशीना मीलने ३५१, अभीचि-अहोरात्रचतुष्कक्षेपे मुहूर्तेषु लब्धा एकादशाहोरात्रक्षेपे च ३३६। अत्र च पुष्यभाग प्राग् दर्शितो न क्षिप्यते, पचदशगुणकारकमध्ये पुष्यस्य सद्भावात्, ये दिवस ४, ३६ मीलितो दिन १, ३, एतावत्प्रमाण क्षिप्यते तदा चतुर्विंशतिभिर्गुण्यते त्रयोदशाहोरात्रमाने राशिस्तदभागाश्च, अत एव पुष्यभक्तौ पृथग् दर्शितायामपि अवसेसा नक्खत्ता पन्नरसविस्तरसहगया “जति” त्ति पुष्य मध्ये कृत्वा पचदशेत्युक्त, तत्र चतुर्दशगुणने त्रयोदशाहोरात्रराशौ १८२, भागेषु च १६८, अयं च मील्यते उपरितनराशिरस्य राशे १६०, जात ३४२, भागराशेश्च १५०, भागराशिरय, १६८, मील्यते जात ३१८, पुष्यभागा १२, मीलने ३३०, त्रिशता भागे हते ११, पुष्यादि १३, सर्व २४,

मील्यते राशे ३४२, रित्यस्य जात ३६६, कारण तु बुच्छामि त्ति - अत्र करणराशीना मीलनमेवा-
भिप्रेत, अस्य राशे ३६६, भागे १२, हूते लब्ध ३०, ततोऽपवर्तनं द्वादशाना षड्भागे द्विक, षण्णा
षड्भागे एकक ३, इति दिनार्धे लब्ध, स्था० ३० ३ यद्वा अय ३६६, पचगुणा १८३०, तत
षड्भागे हूते लब्ध ३०, तत षण्णा तृतीयभागे द्वौ, त्रयाणा च तृतीयभागे एकैक एव,
इत्यपवर्त कार्य । एत्थ वि त्ति अत्र एतस्मिन् राशौ १८३०, अपेक्षितक्रमत्वात् सर्वमासा अपीत्यर्थ, ,
अभिवद्भुत त्ति इत्यादि ऋतुसवत्सरो हि ३६०, एतावद्दिनप्रमाणस्तदापेक्षया चन्द्रादित्यसवत्सरो-
न्यूनाधिक्य व्यवस्थापयन्नाह -

छच्चेव य (२० उ० पृष्ठ २२७)

आदित्यसवत्सर ३६६, एतावद्दिनप्रमाण, चद्रसवत्सर ३५५, ३३ एतावत्प्रमाण,
तत्रादित्यसवत्सरे षड्दिनानि ऋतुसवत्सरापेक्षयाऽधिकानि चन्द्रसवत्सरे ऋतुवर्षापेक्षयैव न्यूनानि,
ओमरत्त त्ति अवमराशे षडेव न्यूनानि दिनानीत्यर्थ । बारसवासेण ए त्ति द्वादश दिनानि, एतानि
वर्षेणाधिकानि, षडवमरात्राश्चन्द्रसवत्सरसत्का षड् वाऽऽदित्यवत्सरसत्का इति द्वादश एकस्मिन्
वर्षे दिवसा अधिका भवति, एव द्वितीयवर्षेऽपि द्वादश षडभिर्मासैस्तृतीयसवत्सरसत्कै षड्दिवसा
लभ्यते, तन्स्त्रिंशद्दिनानि भवति अर्धतृतीयवर्षेरतिक्रान्तौ, अत एवोक्त अद्वाइच्चेहि पूरमासो त्ति -

सट्टीए (२० उ० गा० ६२८७)

युग हि पचसवत्सरैरनिष्पद्यते, पचसवत्सरेषु च मासा षष्टिसंख्या, पक्षद्वयनिष्पन्नत्वाच्च
मासस्य पक्षाणां विशत्यधिक शत युगे भवति, युगस्य च मध्ये अन्ते वाधिकमासो भवति । अद् च
मध्यमेव भवति इति मध्ये अधिमासक । षष्टिपक्षाणामतिक्रान्ताना भवति-त्रिंशन्मासैरतिक्रान्तैरित्य-
र्थ । बावीसे पक्षसप्त त्ति युगान्ते हि विश शत पक्षाणा भवति । परमार्थे युगस्य पक्षद्वयं यदतिक्रान्त
तत्प्रक्षेपे द्वाविंश शत मुक्त इति द्वितीयाधिकमासक्षेपे युगान्ते - पक्षाणा १२५, भवति । युगान्ते
चाधिकमासो भवन् आषाढान्ते भवत्याषाढद्वयं भवतीत्यर्थ । अह्व त्ति प्रमाणवर्षस्य दिवसराशि
१८३०, तस्मान्नक्षत्रादिमासदिनसंख्या आनीयते, सेसा वारस त्ति अशा छेदाश्च द्वाषष्टि, ते छेदा
अशाश्चार्धेनापवर्त्यन्ते द्वाषष्टेरर्धे ३१, द्वादशानामर्धे षट्, ३३ । छेपुण भाइए लद्ध त्ति-छेद १२५,
इत्येषस्तेन भाजित इत्यय राशि १४५२ लब्धा ११, उद्धरिता ८८, एकादशसु एतस्मिन् ३२७
राशिमध्ये क्षिप्तेषु ३०३, छेदा १४४, अशा ८८, उभयोश्चतुर्भिरपवर्तनेऽष्टाशीते, २२, चतुरधि
क विंशतिशतस्य च ३१, दिवसा । दिवसेसु त्ति - चन्द्रवर्षत्रयराशि १०६२, अभिवर्धितवर्षद्वयराशिश्च
६६७, ३३ दिवसाना मीलने १८२६ । भागा भागेषु त्ति ३६, एकरूपा मिलिता ३१, एतेषामेक-
त्रिंशता भागे हूते लब्ध एककस्तस्मिन् पूर्वराशिमध्ये क्षिप्ते १८३० । ज ए तेरसेहि चदमासेहि इत्यादि
स्थापना १३ । १२ । ३१, १२१, १२४, ६२ । द्वादशाभिवर्धितमासा अन्ये द्वाषष्ट्या गुण्यन्ते
जात १४४, त्रयोदशभिश्चादिमे भागे हूते लब्ध मासा ६२, ५७-३३ एए पुणो सवन्निय त्ति त्रयोदश-
भिरेव गुण्यन्ते सप्तपचाशन्मासा, जात १४४, त्रयोदशभागत्रयप्रक्षेपे १४४, तेरसगुणियाण त्ति
लब्ध ३१ ।

२३७५० शेष ७३३ द्वयोरपि षड्भिरपवर्तनेऽधस्तनराशौ १२४, उपरितने च १२१,
दिन । एवप्रमाणो अभिवर्द्धितवरिसस्स भागरूवोऽधिकमासक, यद्वाऽनयोराश्यो २३७५० अर्धयोरपि
षड्भिरपवर्तनप्रथमतो विहिते जात ३६६५ अस्याधस्तनराशिभागे हूते लब्धैकत्रिंशद्दिनरूपोऽधि
कमासक समागच्छति, एकत्रिंशदुपरि छेदाशयोन्यस्यते ।

ससिणो य गाहा २० —

शशिनश्चन्द्रमासस्यादित्यमासस्य च य कश्चिद्विशेष उद्धरित किञ्चित्तस्य त्रिशता गुणेन द्विषष्टिभक्ते च यल्लब्ध तच्चन्द्रमासोऽभिवर्धितो भवति । एतदेव विवृणोति — एएसि विसेसे एक ति — विश्लेषेऽपसारणे कृते सति तच्चन्द्रमाससंज्ञितराशेरादित्यरागिमध्यात् आदित्यराशेश्च यद्दिनमेक तस्य मध्यात् द्वाषष्टिभागा ३२, अपसायन्ते त्रिंशच्च द्वाषष्टिभागा अवतिष्ठन्ते त्रिंशच्च स्वगता षष्टिभागा ३३, ए ए वद्विंश ति आद्यस्य दशकेनापवर्तने शून्यद्वय गत, द्वितीयस्य चाधनापवर्तने जात ३३ ।

परोप्पर छेयगुण ति कोऽर्थ १ एकत्रिंशच्छेदा षष्टित्रिंशद्भागा स्थाप्या, अपरे चैनरस्याधस्तत इत्य न्यास ३ ३३ । १५ ३३ । एकत्रिंशता च गुणेन चाद्यराशौ जात ३३ द्वितीयस्य च षड्भिर्गुणेन ६० एकत्रिंशतश्च षड्गुणेन १८६, अयं च सट्शच्छेदो नष्ट उत्सार्यो गतार्थत्वात् भ्रमा असा असेसु पक्वित्ता जात १८३, ततो अशा १८३ अशाना त्रिभिरपवर्तने लब्ध ६१, छेदाना त्रिभिरपवर्तने लब्ध ६२, न्यास ३३ । एस तीसगुण ति — एकषष्टिद्वाषष्टिभागरूप एकस्तिथि-स्त्रिंशद्गुण १८३०, द्वाषष्टिभिर्भक्त २६३३ चन्द्रमासप्रमाणोऽधिकमासको भवति । अहवे ति — १ । १ । ३० । त्रिशता मध्यभूत एकको गुणितस्त्रिंशद् भवति । एककेन वाद्येन त्रिशतो भागेहृते लब्धे त्रिशदेव लभ्यते । एसा आदुचद ति एसा एकषष्टिभागरूपा सोमतिथि मासस्यान्ते एका तिथिर्वधते, एय चैव अभिवर्द्धि पडुच्च ति — एता पूवेक्ता — त्रिशत्तिथिरूपा यद्वा २६३३ एतद्रपा अभिवर्धितवर्ष-मास ३१ ३३३ एतावत्प्रमाण । सेसम् ति — उद्धरितस्स ३४, एव रूपस्यार्थे भवति चतुर्विंशत्यधि-कशतस्य चार्धे द्वाषष्टि, स्थापना ३१, २६, १७, ६० । नक्षत्रादिमासपचकव्याख्यानमिदं समाप्तम् ।

तिपरिरयाज्ययणाजुत्तस्स जा पडिसेवणा सा कमोदयप्रत्यया न भवति, क्रोधादिभावस्थो यतोऽभावशुद्ध न गृहीतवान्, किं च म्हे भयव । न य वज्जीपावसस्सतुल्ल ति न च वर्जका विकृतेर्वयं वृषस्य तुल्यास्सन्न इति भाव । बानामोति वर्तयाम । भिन्न सत् कुडुसेस भिन्नकु डसेस छक्कायगेसु ति — कायकेषु अणिच्छिद्य ति अनिश्चिनालोचनया पण्णंसवेत्तु मासो दिज्जइ ति द्वयोरपि मासयो पचदश पचदश गृह्यन्ते, ततो माम इति उग्घाडिमाणुग्घाडिममिश्रभगकेषु इत्य विन्यस्स भगकादचारणीया १, २, ३, ४, ५, उग्घा । १, २, ३, ४, ५ । नु ६ ।

पच दश दश पच एकद्व्यादिसयोगाना सख्याना —

उभयसुहराशिदुग उवरिल्ल आइमेण गुणिऊण ।

हेट्ठिल्लभागलद्ध उवरि ठिए हु ति सजोगा ॥

इत्यनेन करणेनागच्छतस्तत एककादिसयोगत्वेनोद्घातिमाना यानि सयोगस्थानानि पचाइग ति — पचकादी तान्यनुद्घातिमाना एककादिसयोगत्वेन ये पचकादयो गुणकारकास्तैर्गुणनीयानि, नत पचविगत्यादिक सख्यान जायते । बहुसमुत्तेसु वि मीसगसुत्तसजोग ति — उग्घाड्यग्रगुग्घाड्य-मीलकेन मिश्रत्व ज्ञेय ।

ननु बहुसमुत्तावनीसु इत्यादि एकमपि मासिकयोग्यमतिचारजात यदा बन्हीवारा आसेवते तदा बाहुल्यासेवनतो बहुससूत्रविषयता तस्या च बहुवारासेवनलब्धो द्विमासाद्यापत्तिस्मभवो-ऽप्यस्तीति भाव ।

सर्वे वि हुंति लहुगा इत्यादि एकोत्तरवृद्ध्या वृद्धा एकापेक्षया द्वित्र्यादयो मासास्ते च लववो मामा सर्वेऽपि प्राप्यन्ते, अतो द्वितीयतृतीयपचममासा अनुक्ता अपि सन्तो गुरवोऽपि

द्रष्टव्या । अयमर्थ - सूत्रे किल मामलघु मासगुरु तथा इत्येवमेवोक्तं, द्वादिमासानां च न चिन्ता कृता, तथाऽपि लघवो मासा षडपि सूचिता सूत्रे, अतो गुरवोऽपि मासा द्वादिमासो द्रष्टव्या, एकोत्तरवृद्ध्या वृद्धत्वात् ।

जे भिक्खू मासिए मासियमित्यादि एव सामान्येन चतुर्भंगीय विशेषतश्च चिन्त्यमाना पञ्चदश भवन्तीत्याह - एव मासस्सेत्यादि चारणिका, यथा मासिए मासिय १ मासिए दोमासिय २ दोमासिए मासिय, दोमासिए दोमासियमित्येका ११, १२, २१, २२ ।

एव शेषा अपि अकतो दश्यन्ते, यथा - ११ ११ ११ ११

१३ १४ १५ १६

३१ ४१ ५१ ६१

३३ ४४ ५५ ६६

इत्येव मासस्य द्विदिमासै सह चतुर्भंगिकापञ्चक लब्ध । एव द्विदिमासानामपि स्वस्थानपरस्थानै सह चारणे चतुर्भंगिका भवति, तत्र द्विकचतुर्भंगिकाया द्विक स्वस्थानम् । त्रिकादिचतुर्भंगिकासु स्वस्वाकरूप स्वस्थानम्, तद्विसदृश तु परस्थानम् । अकत स्थापना चेय - २२ २२ २२ २२

२३ २४ २५ २६

३२ ४२ ५२ ६२

३३ ४४ ५५ ६६

दुमासिए दुमासिय । दुमासिए तिमासियमित्यादि चारणिका कार्या, एव द्विकचतुर्भंगिकाश्चतस्र त्रिकभंगिकास्त्रिंश - ३३ ३३ ३३

३४ ३५ ३६

४३ ५३ ६३

४४ ५५ ६६

चतुर्भंगिकाद्वितय,

४४ ४४

४५ ४६

५४ ६४

५५ ६६

पञ्चकचतुर्भंगिका ५५, ५६, ६५, ६६ । मिलिता सर्वा १५ ।

जहमन्ने २० उ० गा० (६४२३) -

“एव” ति - अमुना प्रकारेण बुद्धिहाणिनिष्पन्न, “च” ति - वाऽर्थे जे सुत्तनिबद्धा मासिय ति - प्रतिपद सूत्रेण यानि प्रायश्चित्तानि निरूपितानि जहा - सेज्जायरपिडे मासो इत्यादि,

तानि सूत्रनिबद्धानि मामिकानि, किमुक्तं भवति ? एकस्मिन् अपि बहुदोषदुष्टत्वेन यका मासिकाद्रिबहुत्वापत्ति, सा न सूत्रनिबद्धेति न तदाश्रित बहुत्व त्रेधा, किन्तु एकैकदोषदुष्टासेवनेन यद् बहुत्व तत् त्रिविधमिति । तत्थ - जहन्ममित्यादि, अयमर्थ - पढमुद्दे सए अणुग्घाइयमासपच्छित्ता २५२, । बिइयतइयचउत्थपचमुद्दे सए सु मासलहुयपच्छित्ता ३३२ । एएसि उग्घाइयाणुग्घाइयमासाण इक्कमो सखित्ताण ५८४ । एव सति मासिकपायच्छित्ततिगसेवणे जहन्मो बहुत्व तिसि मासा तु

प्रतिबहुत्व यत् शेष सुगमम् । अहवा - ठवणासेवणाहीत्यादि इदं व्यापकं लक्षणम् । सचयमासं ति - प्रायश्चित्तापत्तितो यावन्तो मासा शिष्येणासेविनास्ते सचयमासा इति तात्पर्यम् ।

च उभगविगण्णेण ति - मामिए मासिय । मासिए अणेगमासिय ।

अणेगमासिए मासिय । अणेगमासिए अणेगमासिय । उवड्डीइ ति अपवृद्ध्या ह्रासेन ।

ठवणा वीसिगपक्खिव २० उ० गा० (६४३२) -

वीसाए अट्टमासं २० उ० गा० (६४३३) -

आभ्या गाथाभ्या स्थापनारोपणाभ्या स्थानरचनाऽभिहिता, साचेय पढमा ठवणारोवण-पतीए ठवणा - २०, २५, ३०, ३५, ४०, ४५ । इत्येव पचकवृद्ध्या स्थानानि तावन्ने यानि यावदन्त्य त्रिशत्सख्यं स्थानं, पचषष्ठ्यधिकं शतमिति १५५, आरोपणास्त्वत्र पचदशाद्या १५, २०, २५, ३०, ३५, ४०, ४५, ५० ५५ । इत्येवमत्रापि पचकपचक०वृद्ध्या तावन्ने य यावत् त्रिशत्सख्यं स्थानं षष्ठ्यधिकं शतमिति १६० ।

द्वितीयास्थापनारोपणपक्तौ ठवणा पचदशाद्या १५, २०, २५, ३०, ३५ । इत्येव पचोत्तरया वृद्ध्या तावन्नेय यावत् त्रिशत्सख्यं स्थानं पचसतत्यधिकं शतमिति १७५ । आरोपणास्त्वत्र पचाद्या ५, १० १५, २०, २५, ३० । इत्येव पचोत्तरया वृद्ध्या तावन्नेय यावत् त्रयस्त्रिशत्सख्यं स्थानं पचषष्ठ्यधिकं शतमिति १६५ ।

तृतीयास्थापनारोपणपक्तौ ठवणा पचकाद्या ५, १०, १५ २०, २५, ३०, ३५ । इत्येव पचकवृद्ध्या तावन्नेय यावत् पचत्रिंशत्सख्यं स्थानं पचसतत्यधिकं शतमिति १७५, अत्रारोपणा अपि पचाद्या ५, १०, १५ इत्यादि पचसतत्यधिकशतानां ता स्थापनास्थानानामधोदृश्या ।

चतुर्थस्थापनारोपणपक्तौ ठवणा एकाद्या १, २, ३, ४, ५, ६, । इत्येवमेकोत्तरवृद्ध्या तावन्नेय यावदेकोनाशीत्यधिकशतसख्यं स्थानमेतदेव १७६, अत्रारोपणा अप्येकाद्या १, २, ३, ४, ५ । एकोत्तरवृद्ध्या तावन्नेय यावदेकोनाशीत्यधिकं शतमिति १७६ । दोहि वि पक्खे च उ पचं ति भाष्यपद द्वयोरपि स्थापनारोपणयो पचानां प्रक्षेपत उक्कृष्ट ठवणारोवणाठाण पावेयव्व । यदुपरि यस्य प्रभवति तदुक्कृष्टं, पच्छिमठवणारोवणा उ ति पश्चिमाश्चतस्रोऽपि स्थापनारोपणा उक्कृष्टा-अन्त्या इति यावत्, एव तीसियासु ति - ठवणासु इति द्रष्टव्यं वीसिया से जहन्नं ति - वीसिया ठवणा से ति - पक्खियारोपणयो जघन्या । एव बीए आरोवणा- ठाणे ति - विशतिरूपे अतिल्ल तीसइम ठाण 'फिट्टइ' ति - ठवणाया सत्कमन्य त्रिंशत्तमं स्थानं पचषष्ठ्यधिकशतरूपं न तदयोग्यं भवति, अशीत्यधिकशतस्याधिक्यात् ठवणाठाण उवड्डीए ति - अपवृद्ध्या पाश्चात्यगत्या आरोपणस्थानवृद्धौ ठवणास्थानस्य ह्रासं कार्यं । आरोवणावुड्डीए ति ठवणास्थानवृद्धौ आरोपणास्थानस्यापवृद्धिं ह्रासं । ठवणारोवणसवेहस्स ति - एगम्मि एगम्मि ठवणारोवणठाण कइ कइ आरोवणाठाणाणि भवति सवेहो, गणियकरणं व ति - सकलितगणितानयनोपायं जम्हा पढमा ठवणं ति - १६५, एतद्रूपा पढमारोवणाठाण १६०, एतद्रूपं इवकं लब्धं ति । कोर्थं ?

पचकपचकनिष्पन्न एकैकस्थानवृद्ध्या निष्पन्नत्वादनयो तदूर्ध्वं पचकपचकनिष्पन्नस्य स्थानस्याभावाच्चरिमयोरप्यनयो प्राथम्यं विवक्ष्यते, जम्हा एगुत्तरवुड्डीए ति - पचकपचकनिष्पन्न एकैकस्थानवृद्ध्या द्वितीयादीनि च तानि आरोपणास्थानानि पचदशकापेक्षया विशल्यादीनीति भावः । सन्वे ति - उत्तरतः पढमठवणा १६५ उत्तरं पि एकौ चेव ति - पचदश-

रूपस्तदूर्ध्वं उत्तरस्यापरस्याभावात् पचदशरूपमेव, यत आद्य स्थान पढमठवणाया स्थान-
वृद्धिस्तथा —

गच्छुत्तरसंवग्गे उत्तरहीणम्मि (२० उ० गा० ६४४०) —

व्याख्या — गच्छो पढमठवणाठाणे तीस, बिईए गच्छो तिच्चीस, तइए ३५, चउत्ये १७६, गच्छुम्य उत्तरेण सवग — गुणन कार्यं । अत्र चोत्तर एककरूपस्तेन हीन कार्यो राशि, तत आदि प्रक्षेप्य, स चात्रैकरूप एव, एतच्च यदागत तदन्त्यधन चतसृष्वपि पक्षितेषु प्रथमे प्रथमे ठवणा-
ठाणे एतावत्सख्यान्यारोपणस्थानानि भवति, तदप्यादियुत प्रस्तुते एककयुक्त कार्यं तस्यार्थं कार्यं, ततश्च य कश्चिद् गच्छो न्यस्तस्तस्यार्धेनार्धोक्तेन राशिना गुणन्तु ति गुणन कार्यं । तस्मिन् कृते ठवणारोवणठाणाण सवेहेण सर्वसख्यान भवति । तत्थ पढमे ठवणारोवणठाणे सवेहतो सर्वाग्र ४६५, द्वितीये ५६१, तृतीये ६३०, चतुर्थे १६११० ।

ठवणारोवणविज्जय ॥ गाहा ॥ २० —

स्थापनारोपणसख्यानेन वियुता रहिता विधेया, षण्मासदिनराशि तस्य पचभिर्भागो हार्यं, भागे हूते ये लब्धा मासास्ते रूपयुता कार्या । स चैतावान् ठवणारोवणाण गच्छो होइ पचभिर्भागो हार्यं इत्येवरूपश्च प्रकार आद्यासु तिसृषु ठवणारोवणासु विन्नेग्रो । चरिमे ठवणे एक्केण भागो हार्यं । इत्ययमादेश उपदेश इत्यर्थः ।

अयं भावार्थः — प्रथमतीर्थकरकाले उत्कृष्ट प्रायश्चित्तदान द्वादशमासा, मध्यमतीर्थ-
कृतकाले चाष्टौ मासा, चरमस्य षण्मासा इति । अतस्तीर्थमाश्रित्य षण्मासा इत्युक्तम्, तत् तिसृ-
णामपि पचकपचकनिष्पन्नस्थानवृद्ध्या निष्पन्नत्वादुक्त रूपयुतत्वं यदुक्तं तत् सर्वास्वपि स्थापना-
रोपणास्वाद्यपदस्य पचकादिवृद्ध्याऽनिष्पन्नत्वात् तस्य प्रक्षेपसूचनाथम् ।

इयाणि गणयकरणमित्यादि वीसियाए ठवणाए अतधण ति सर्वाग्र आरोपणापदाना
भवतीत्यर्थः ।

सह आइल्लेहि ति अन्त्यस्यारोपणापदस्य १६०, एतद्रूपस्यापेक्षया आदिमा पचदश-
प्रभृतय पचपचाशदधिकशतान्ता सख्याविशेषा एकोनत्रिशत्सख्यास्तै सह त्रिशत्सर्वाग्रमारोपणा-
पदानां विशेषे स्थापनापदे भवतीत्यर्थः । वीसियठवणादीना दिवसा इति विग्रहः । एव सेसासु ति
पचविमियाइसु ।

दिवसा पचहिं भइया (२० उ० गा० ६४४०) —

व्याख्या — यस्या स्थापनायामारोपणाया वा यावतो दिवसास्ते पचभिर्भजनीयास्ततो
यन्लब्धं तद् द्विरूपहीन विधेयं, स राशि मासप्रमाणं ब्रूते, तस्मिन् ठवणापदे आरोपणापदे च
अकसिणरूपणाए ओसग्ग ति भोषनिष्पन्ना अकसिणा, भोषरहिता तु कसिणारोवणा ।

जइ मासा तइएहि गुण करिज्ज २० —

व्याख्या — दिवसा पचहिं भइया इत्यादि करणतो द्विरूपहीनत्वेनारोपणाया यावन्तो
मासा लब्धास्तैर्भगिलब्धान् गुणयेत्, तत स्थापनारोपणासु यावन्तो लब्धा मासास्तत्समासा गाहा
तत्तियभागं करे ति तावत्प्रमाणैर्भागैः त पूर्वं राशि कुर्यात् । तिपचगुण ति — पचदशगुणं कार्यं
आद्यो भागसेस ति — शेषाश्च तद्व्यतिरिक्ता द्वितीयाद्या भागा एकत्र सम्मील्य पचगुणा कार्यास्ततो

गुणाकारगुणिता राशीनेकत्र सम्मील्य स्थापनारोपणदिवससमन्विता विधेयास्ततः षण्मासप्रमाणो राशि १८०, भवति । तेहि एक्कारस गुणिय त्ति - एक्कारसमासाण पन्नरसदिवसमासाओ गिज्झत्ति त्ति काउ एए मामा त्ति दमहि अद्धमासेहि पचमामाए भवति पच भोसो कओ त्ति पचाना प्रक्षिप्पाना भोषउत्सारण कर्त्तव्यम् ।

जइमि भवे आरुवणा, तइभाग तस्म पन्नरसहि गुणये ।

सेस पचहि गुणिय, ठवणदिणजुया उ छम्मासा ॥ (२० उ० गा० ६४८५)

एसा गाहा पढमठवणाए पडिममाणस्म षण्मासप्रमाणदिनराशेरानयनस्याकारणलक्षणं रुवणाए जद मासा तइ भाग त करे इत्यादि ।

का च सर्वसामान्येति पाश्चात्यगाथाया व्याख्यानमाह - आरौवणभागलद्धमास त्ति एतस्मात् १८०, राशे पचत्रिंशत् उत्सारणे १४५ पचप्रक्षेपे १५०, आरोपणा १५, अनया भागे हूते लब्धा मासा १०, एते पचदशगुणा कार्या । पुर्वकरणेण निदिवसा पच भइया इत्यादिकेन अट्टारसह मासाण सज्जाओ इत्यादि, एक्कारो अत्र दृश्यन्तो दुन्नि ठवणामासा व सोहीय त्ति योज्यम् ।

अन्नेहि सत्तगपु जेहि पचराइदिया गहिय त्ति सर्वे दिवसा ७० । तइयभागलद्ध त्ति तावत्प्रमाणैर्मासैर्भागलब्धान् गुणयेत् । अय प्राचीन वीसियाए ठवणाए पगारो भणिओ, पुण वीसियाए वि तहेव नेओ । अत एवाह - एव पुण वीसियाए इत्यादि द्वितीयवृत्तीयेत्यादि, द्वितीय वृत्तीये चतुर्थे च स्थापनारोपणस्थानेऽप्य विशेषो, यथा -

जत्थ उ दुरूवहीणा, न होज्ज भाग च पच हि न हुज्जा ।

एक्काओ मासाओ, ते दिवसा तत्थ नायव्वा ॥

व्याख्या - पचिकायामारोपणाया पचभिर्भागे हूते द्विरूपहीनत्व मामस्य न प्राप्यते खड्ग वा भवति । चतुर्थे च ठवणारोवणठाणे एकद्विकादिके आरोपणास्थाने पचभिर्भागे न घटते, ततश्च तत्राप्येको मासो द्रष्टव्यः । कुत इत्याह - यत् एकस्मान्मासात् ते ठवणारोवणदिवसा निष्पन्नास्तत्र द्वितीयादिके ठवणारोवणठाणा ज्ञातव्याः । अत एवाह - “जत्थ उ दुरूवहीण न होइ” इत्यादि, आगास वा शून्यमित्यर्थः । तथात्राम्नायात् भोष प्रक्षिप्यते यदा तदारोपणराशे भोषो हीन समो वा प्रक्षेपव्यो न त्वधिगच्छति । अत्र सर्वत्र तथा तथा कर्त्तव्यं स्थापनारोपणयोर्मौलन यथाऽशीत्यधिक शतमुत्पद्यते, सेस पन्नास मयमित्यादि आरोवणा एक्का उ त्ति मासद्वयोत्सारणे सत्येकमास एवावशिष्यते ।

क प्रत्यय ? इत्यादि एत्थ सव्वत्थे त्ति इत्थ पचदसिना ठवणारोवणाए सर्वमासेषु ठवणामासे आरोवणामासे मासदशके पक्ष पक्षो गृहीतव्यो न न्यूनमधिक वा । सव्वत्थ जइहि मामेहीत्यादि तत्र ५, १०, १५, एतास्तिस्रो मासनिष्पन्ना यतस्तिष्ठन्वपि मासो लभ्यते । पचभिर्भागे हूते सति विशतिपचविशत्यादिकाश्च आरोपणा द्विमासत्रिमासनिष्पन्ना अतस्तासु द्विमासादयो लभ्यन्ते तत् आरोपणामासैस्तावद्भिर्भागिलब्ध गुणितव्यम् । छ मय तीसुत्तर त्ति ठवणारोवणाण सवेहणसखाणमेय सभोग त्ति, वेयणाउ त्ति स्वाभाविक माम एवेत्थय ।

इयाणि चउत्थमित्यादि इक्कियाए आरोवणाए भागो त्ति एकोत्तरवृद्ध्या वृद्धत्वात् आरोपणपदानामत्रैककेन भागो हायं । तहेव काउ जावेत्यादि ठवणारोवणदिवसानुसार्य एकक भोपक्षेपेऽस्य १७७, राशेस्त्रिभिर्भागे हूते लब्ध ५६, ठवणारोवणमामद्विकप्रक्षेपे ६१ लब्धम् । एव

दुतिगाइठवणासु वि त्रिचतुर्थठवणारोवणपक्क्या द्वित्रादिस्थापनापदेष्वाप्यादय आरोपणा ज्ञेया । पुव्वकयविहिणं त्ति एकैकारोपणस्थानवृद्ध्या एकैकस्थापनापदस्य ह्रास तथा विहीए आरोपणाठाणे आढत्ते इदं १७८, ठवणाठाणं न भवइ । एव एक्के आरोपणाठाणे उवरि उवरि वड्डीए एक्किक्क ठवणाठाणं उवट्टिए हुसिज्जा इत्येव पूर्वकृते विधि । इह च एणाइसु चउदसत्तेसु एक्को चेव मासो घेतव्वो । पन्नरसोवरि विकलत्ति पन्नरस १५ १८ १९ इत्येते विगता कला पचभरुपा यत्र ते विकला ।

इक्काओ मासाओ निप्पन्नं त्ति उद्धरितायामपि कलायामेक एव लभ्यते, न त्वधिकं तद्वसेन किञ्चित्त्वन्नमत् इति भावः । एवमेकविंशत्यादिषु चतुर्विंशत्यन्तेषु केवलं त्ति केवला अनुद्धरितकलाराशयं शुद्धा पचकपचनिष्पन्ना इति यावत्, ते पचकभागविंशुद्धा द्विरूपहीनत्वकृता ये मासास्तैः प्रमाणं येषां दिवसानां ते तथा तेभ्यः दिनेभ्यः इति शेषः मासभागा यत्रानेतुमिष्यन्ते यकाभिस्नां स्थापनारोपणा, इयं च षोडशकाप्रभृत्येवाभवति, नार्वाक् इत्याह इक्कियेत्यादि, ते ठवियं त्ति एकादशस्थाप्यन्ते सकलञ्च छेदं तेन सहिता ११, एसिं त्ति मासस्स पचमो भागो स विन्नेओ । कोऽर्थः ? मासो पचगुणो सो पक्खित्तो त्ति ।

इदानीं आरोपणाभागलद्धं त्ति आरोपणायां भागस्तेन यत्त्वञ्च एकादशमासाख्यं वस्तु सेसा सेसं त्ति यदुद्धरितं प्रतिक्रियाजातं आरोपणाभागञ्च ते परावर्तितञ्च तैः, कोऽर्थः ? छेदाशयोर्विपर्ययः, कार्यं षट्कोऽपचकाश्चोपरि अत्र पचकेन गुण्यते द्वासप्ततति, जातं ३६०, षट्केन पचकगुणने ३०, त्रिशतां भागे हृतेऽस्य ३६० राशेरुलब्धा १२, यद्वा छेदाशकयोर्विपर्यये कृते द्वासप्तत्यधोवर्तिनं पंचकयं षट्कोपरिवर्तिनश्चापवर्तनं विधेयं—अपनयनं तयोः कार्यमित्यर्थः । ततः षट्केन द्वासप्तते भागे लब्धा १२ । एव सत्तरसां सु छेदाशरूपयोः पचकयोरुभयोरपि उत्सारणं कृत्वा शेषेण छेदेन इतराशे सचयमासभागाभिधायकस्य भागो हरणीय इति, यद्वा अज्ञानशैर्गुणयित्वा छेदाञ्च छेदैर्गुणयित्वा भागो हार्य इति, प्रक्रियाद्वयेऽपि न वस्तुक्षतिरिति ततो लब्धा १२, अत्र स्थानद्वये स्थाप्यन्त एको द्वादशकः पचदशगुण १८० । आरोपणाए जइ विगला दिवसं त्ति आरोपणायां पचभिर्भागे हृते शेषं यदुद्धरितमित्यर्थः । ततः द्वितीयो राशिगुणनीयः, अत्रैको विकलो दिवस उद्धरित इत्यर्थः । एक्केण गुणियं तत्तियं चेव स्थापनादिवसेन युक्तञ्च द्वादशकस्त्रयोदशकीभूतं प्रक्षिप्तं पचदशगुणकृतपूर्वराशौ स च राशि भोषरहितं सन् अशीत्यधिकं शतं भवति । एगवीसिया वी इत्यादिठवणा १ आरोपणा २१, असीयसयाओ अवणीए १५१, एसस्स एक्कवीसाए भागो, भागं सुद्धं न देइ इति दसं पक्खित्ता १६८, भागे लब्धं ८, ते ठविया सगलच्छेदसहिता, आरोपणाभागे हि ए लद्धं ४ दुरूवहीणत्वे कृते मास २, मासस्स य एक्को पचभागो मासदुगे पचगुणे असपक्खेवे कए जाता ११ एक्कियाए वि ठवणाए हेट्ठा पचगो छेओ दिन्नो, तओ आरोपणाभागलब्धं ८, त आरोपणा-मासगुणं कायव्वं त्ति काउ असो असगुणो छेओ छेयगुणो एक्कारसहि अट्ठं गुणिया पचहि एक्को गुणिओ जाया अट्ठासी पचभागा ८८ ठवणारोवणमाससहियं त्ति कायव्वं, एत्थ एक्को ठवणाभागो फेडियव्वो, एव कृते सत्याह “नवरमित्यादि — ज सेसं त्ति ९९ एतच्चारोपणभागाश्च ते परावर्तिताश्च इत्थं तैर्गुणितं कार्यं परं न गुण्यते प्रक्रियात् (?) कित्त्वपवर्तनं पचकयोर्विधेयम्, ततो भागहियलद्धं त्ति — एकादशभिर्नवनवतिभागे हृते लब्धं ९, तिसु ठाणेषु स्थाप्यं तत एकनवकं पचदशगुणं १३५, द्वितीयस्य विकला दिवसस्यात्रैकरूपत्वात् तेन गुणितो नवक एव भवति, तृतीयश्च पचगुणं (पचगुणं) सर्वे मिलिता १८९, ठवणादिगजुया दशकभोषरहिता इदं १८०, भवति ।

एगतीसेत्यादि ठवणा १, आरोवणा ३१, एतयोरेतस्मात् १८०, उस्सारणे जात १८८, सत्तज्जोषपक्खेवे १५५, आरोपणाए भागे हिते लब्धा ५, ते ठविया सगलछेयसहिता ५, आरोवणाए पचहि भागे दुरुवहीणे कए जाता ४, उद्धरितपचमासस्स एक्को पचभागो, तओ मासचउक्क पचगुणिय असजुय २१, एविकयठवणाए हेट्ठा पचको छेओ दिओ १, तओ आरोवणाभागलब्ध पचमासक आरोवणामासगुण कायव्व ति असो असगुणो छेओ छेअगुणो एकवीसाए पच ५, गुणिया पचहि एक्को गुणिय जाय १०५, पचभागण ते उ ठवणामाससहिय ति कायव्वाए छक्को ठवणापचभागो फेडिओ सेस आरीवणा पचभागो पक्खित्ता जाया सचयमासाण सत्तावीस य पचभागण १२७ ।

कत्तो कि गहिय ति एक्को ठवणाभागो फेडिओ सेस १२६, तत आरोपणाछेदाशयो ३६ इत्थ परावृत्ति कृत्वा पचकयोरपवर्तने कृते एकविशत्या भागे हूतेऽस्य १२६, राशलब्ध ६, एव कृते नवरमित्यादिकस्य चूर्णवाक्यस्यावसर । एगतीसारोवणा पचहि भागे हूते द्विषपहीन-कृतमासापेक्षया विगलदिन पचममाससत्क लब्ध वर्तते तन्श्चारोवणागै परावर्तितैर्यल्लब्ध तत् तावत् स्थानस्थ स्थाप्यमान पचपट्का न्यस्यन्त इति ।

तत्थिक्को रासी पन्नरसगुणो ६० बिइओ विगलदिवसगुणो ठवणदिवससुत्तो ७, तृतीयादय एकत्र मीलिता १८, ते पचगुणा ६०, नवतिद्वय अगीत्यधिकशत सत्तज्जोषरहितश्च कार्य, अत ऊर्ध्व सामान्यलक्षणमाह आरोवणेत्यादि, ठवणासचयभाग ति सचयमासभागान्तर्वतित्वात् स्थापनामासभागा अपि सचया भागा उच्यन्ते, स्थापनामासभागा अपनेतव्या इत्यर्थ । पक्खित्तेण-मित्यादिना च ठवणादिगजुया य छम्मासा इति यत् क्रिया तदुक्त, तेइसगल ति - परिपूर्णदिन तथा न तु खडरूपतयेति मास चेत्यादिवाक्ये नवमासा दुरुवसहिया पचगुणा ते भवे दिवसा इतीय प्रक्रिया उक्ता, उवउज्ज कायव्वाउ ति - भिन्निय ठवणारोवण इच्छतेण ति शेष ।

रासि ति हेतुसख्या, ते खडा सववहारिए इत्यादि, तउ ति तेभ्य व्यावहारिकपरमाणु-मात्रकृतखडेभ्य आनत्यादि निश्चयपरमाणुमात्राणि खडान्येकैकस्मिन् वालयेऽनन्तानि भवन्त्यसयम स्थानानामपि तत्परमाणत्वात् तावतीष्यन्ते कैश्चिदिनि पराभ्युपगमाथ, स्रहन्नमाण ति कस्मादपि मासात् पचदशपचकदशकादि-कियद्दिनग्रहणरूपतया शेषमुत्सार्यमाणमित्यर्थ । भिन्नेसु उवड्डी ति अपवृद्धि, पाश्चात्यगत्या हानिर्द्रष्टव्या, नवमपूर्वकम्यापि स्तोकेनोन अन्यस्य तदपि बहुतरेणेत्यादिना तावद् यावद् नवमपूर्वस्य तृतीयमाचाराख्य वस्तिवति भद्रबाहुकृता नियुक्तिगाथा एव सूत्र, तद्धरतीति विग्रह, निशीथकल्पव्यवहारयोरे पीठे ते एव गाथासूत्र, तद्धरन्तीति । अथवा नियुक्ति-धरा सूत्रधरा पीठिकाधराश्चेति त्रितय व्याख्येय । किंत्तया सिद्ध तीत्यत्र सिद्धशब्दो निष्पन्नार्थ, ननु ण एसेवेत्यादि प्रथमस्थापनारोपणपक्तौ एक्का जहन्न ति उत्कृष्ट स्थापनास्थान ५४(१६५)नत्प्रतीत्य जघन्यारोपणाऽय १५ द्वितीयादीना तत्र भावात् । तीस उक्कोस ति विशतिरूपस्थापनास्थानमाद्य प्रतीत्य त्रिशत् सख्या अप्यारोपणा भवन्तीति, त्रिशत उत्कृष्टत्व अतिल्ला आरोपणा । उक्कोसिय ति जाव ठवणा उद्दिट्ठा छम्मासा ऊणया भवे ताए आरोवणा उक्कोसा तीसे ठवणाए नायव्वा । इत्यनेन लक्षणेन यस्या याऽन्त्या सा तस्य उत्कृष्टा भवति, एयासि मज्जेति पच पच निष्पन्न त्रिशत् स्थानसख्याना मज्जे ति मध्ये वर्तित्य, तत्र उत्कृष्टास्त्रिशत् शेषाश्चत्वारिंशदिति सप्तति वीसिय-ठवणाए उ ति भाष्यगाथापद, अस्यार्थ - विशत्या उपलक्षित आदिभृतया यत् स्थापनारोपणस्थान तत्रैता भवन्तीत्यर्थ । अन्नोन्नवेहओ भवति ति अन्यस्यामन्यस्या वेध सम्बन्धोऽन्योऽन्यवेधस्तस्मात्

पचदशाद्यारोपणा एकैकस्मिन् स्थापने सयुज्यत इत्यर्थः । तथाहि— पचदशास्त्रिंशत् स्थापनारोपणा विशती सयुज्यन्ते, भूयोऽपि ना एवैकस्थानन्यूना पचविशत्या सह सयुज्यन्ते इत्येवमन्योऽन्यानुबोध सभाव्यते । होणं त्ति विसमग्रहणमिति काउ वि मासाओ कत्थ कय ति दिणाणि गिज्झति पच- पचदशेत्यादिकमित्यर्थः । समग्रहणं नाम सव्वमासेसु विकत्थइ तुल्यान्येव दिनानि गृह्णन्ते इत्येव- रूप एव कम्म ति एतत् कर्मठवणाठाण पक्वित्रक प्रतीत्य पचदशाद्यारोपणासु कर्तव्यम् ।

चतुर्थेऽपि विशेषमाह एगा इत्यादि यथा ठवणा १ आरो० १२, आसीयसयाओ तेरस ऊसारिऊण एककभोषप्रक्षेपे - १६८, बारसहि भागहूते लव्वमास १४, ततश्च आरोपणमासेन एकलक्षणेन गुणेन एतदेव, ततो ठवणारोवणामासद्वयप्रक्षेपे १६, एतावन्त सचया मासा ।

कतो किं गहिय ? ति पट्टवणा माससोहीए १४, तस्यो आरुवणा जइ मासा तइभाग त कारेइ त्ति क्रियते, अत्रारोपणमास १ इति चतुर्दश एवावतिष्ठन्ते, एव कृते प्रस्तुतचूर्णि वाक्यस्यावसरः, एकोऽपि सन्नय भागोनपचदशगुणं क्रियते किन्त्वारोपणाराशिदिनैरिति ततो द्वादशभिर्गुणैः १४ जात १६८, ठवणारोवणदिनत्रयोदशप्रक्षेपे एककभोषोत्सारणे च जात १८०, एवमन्या- स्वप्येकाद्यास्वारोपणासु चतुर्दशान्तासु निजनिजदिनैरेव गुणनमिति ।

जइमि भवे गाहं त्ति, प्राचीनगाथोक्त एवार्थोऽनया सामान्येनाभिहितः, जइत्थी आरोवणं त्ति पढमठवणारोवणठाणपतीए इति शेषः । अणेगं भागत्य त्ति द्वित्रयादिभागस्था इत्यर्थः । वचविदेवमिति प्रथमस्थापनारोपणस्थानपक्तावित्यर्थः । अहवा - ठवणादिणसजुत्तं त्ति अथवा- शब्द होउ त्ति पदं गृह्यते तस्योऽपि त्याज्यन्तं कृत्वा योज्यत इत्याचष्टे, यद्वा शट्ठन्तं स्वन एव गम्यते, होइऊणं त्ति क्रियापदमेव कृत्वा योज्यमिति कथयति । ठवणा- दिणसजुत्तं त्ति पदं च उभयप्रक्षेपेऽपि समानं, तदयं वाक्यार्थः येन गुणकारेणारोपणा गुणिता ठवणादिणयुता सती षण्मासप्रमाणदिनराश्यपेक्षया ऊनाधिका वा भवति स गुणकारस्तस्या- रोपणपदस्य न भवति । एएसि त्ति एतयोः विशयठवणापचदशकारोवणपदयोः एते द्वे आश्रित्येति । कोऽर्थः ? विशतिं प्रतीत्य पचदशारोपणायाः समकरणत्वमाश्रित्य दशकाख्यो गुणकारको न भवति, त्रिगदरूपं च ठवणाठाणं प्रतीत्य भवति, इह च दशकगुणकारभणनं पाक्षिकारोपणा प्रतीत्य तस्या अप्येकद्वि- त्रिगुणकारपरिहारेण यदुक्तं तद् दशस्थापना स्थानानि प्रतीत्य पाक्षिकारोपणा कृत्स्ना प्राप्यते इति ज्ञापनार्थः । किमपि स्थापनास्थानं प्रतीत्य दशगुणाकारपरिहारेण यं सती पाक्षिकारोवणा कृत्स्नोच्यते, किमपि च नवगुणा तावद् यावदेक- गुणाऽपि सती कुत्रापि कृत्स्नाऽपि भवति, स्थापनास्थानानि - १६५ । १५० । १३५ । १२० । १०५ । ९० । ७५ । ६० । ४५ । ३० । एतेषु एकद्वित्रयादिगुणा सती यथाक्रमं षण्मासप्रमाणदिनराशिपूर्वकं त्वात् पाक्षिकारोपणा कृत्स्ना भवति दशकगुणा नवगुणेत्यादि तावद् यावदेकगुणेति, यदा श्रीमत्थगपरिहाणीए त्ति पाश्चात्यगत्या योज्यते तदा पूर्वोक्तानि स्थापनास्थानान्यपि पाश्चात्यगत्या योज्यमानानि त्रिशतादीनि वेदितव्यानि तेन पाक्षिकारोपणा दश कृत्स्ना भवन्ति, नाधिक्या इत्यावेदितं भवति, एव वीसिएत्यादि विशत्यारोपणा अष्टौ स्थापनास्थानानि प्रतीत्य कृत्स्ना भवति, ग्रन्थानि वाऽऽश्रित्य विंशतेर्गुणकारेण गुणिताया अपि षण्मासराश्यपेक्षया हीनाधिकत्व- सभावान्न कृत्स्नत्वसम्भवः, तानि चाष्टौ यथा— १६० । १४० । १२० । १०० । ८० । ६० । ४० । २० । एतेषु विंशतिरेकद्वित्रयादिगुणासती यथाक्रमं अशीत्यधिकशतपूरकत्वात् कृत्स्ना भवति, वियाले यथा उ त्ति विचारयितव्या ।

अहवेत्यादि अत्र प्रथमे गाथाव्याख्यानपक्षे प्राधान्यं गुणकारगुणितस्य स्थापनापदस्य गौणता गुणकारगुणिते यत् क्षमा तस्य स्थापनास्थापनपदस्य न्यसनात्, द्वितीयव्याख्याने तु प्राधान्यं स्थापनापदस्य, गुणकारगुणितस्य च गौणत्वं स्थापनापदं नियतं कृत्वारोपणापदविषये स गुणकारः कश्चित् मृग्यो येन गुणिताऽशीत्यधिकशतपूरिका भवतीति कृत्वा तदुपरि माह त्ति तस्य द्विकस्योपरि त्रयादयो ये गुणकारास्तैः तदुपरि माई इत्यादिवाक्येन तस्मिन्नेव जेण गुणा इत्यादि गाथेत्तरार्धे व्याख्यातं । जइ गुण त्ति येन गुणनं यस्याः सा यद्गुणा, प्राचीनो गाथोक्त एवार्थोऽनया भंग्यन्तरेणीक्तः । जेण गुणा आरोवणेत्यादि षण्मासप्रमाणदिनराश्यपेक्षया येन गुणकारेण गुणितारोपणास्थापनादिनसंयुक्ता विहिता सती यावता ऊना भवत्यधिका वा सा तां व्यवस्थापनां प्रतीत्य कृत्स्ना ज्ञातव्या भोषसद्भावात् ।

कियान् पुनस्तत्र भोषः ? इत्याह - तं चेव तत्थज्भोसणं त्ति यावदूनं यावदधिकं वा तावत् प्रमाण एतत् स्थापनास्थानं प्रतीत्य तस्यां भोषो भवति । यथा वीसयं ठवणं पडुच्च पक्खियारोवणाए पंचओ ज्भोसो लब्भइ तओ तेरससंचयमासा निष्पन्ना लब्भंति । हुंति सरिसाभिलावाओ त्ति भाष्यपदं । अस्यार्थः - एकद्वित्र्यादिसंख्याभिरारोपणाः पंचदशाद्या गुणिताः सत्यः स्थापनादिनयुक्ता यावत्योऽशीत्यधिकशतपूरिका भवन्ति तावत्यस्ताः सर्वाः सदृशाभिलापा भवन्ति - कृत्स्ना भवन्तीत्यर्थः ।

किं चेत्यादि जाए ठवणाए त्ति यया स्थापनारोपणयोः स्थापनया, अट्टावीसारोवणमासस्ति व त्ति आरोपणायाः १५० पंचभिभंगे हूते लब्धा मासा ३० मासद्विकोत्सारणे सत्यष्टाविंशतिरिति जइ पुण न सुज्भइत्यादि तत्थ जावइएण चेव विणा न सुज्भइ त्ति योज्यं । ठवणारोवणमासे नाऊणमित्युक्तं प्राग् यतोऽतः स्थापनारोपणदिनैर्मासोत्पादनकारणमाह - आगासं भवतीत्यादि तत्ति या चेव ते इति यत्संख्याः पूर्वमासान् तावन्त एव दिवसास्ते इत्यर्थः । तेहिं त्ति आरोवणदिणेहिं इगाइसभावभेदभिन्नाविति ये स्वभावभिन्ना किल भवन्ति तेषु किल नानारूपमासप्रतिपत्तिः प्राप्नोतीत्यभिप्रायः । पंचदशकादिषु मासत्रयं यतः प्राप्यते ततो द्विरूपहीनत्वसंभवः ।

कहं पुणेत्यादि काओ ठवणमासाओ, कियंतो दिणा गिज्झंति, कियंतो वाऽऽरोवणमासाओ संचयमासेहितो वा, कियंतो गिज्झंति त्ति वितर्कोर्थः । दिवसमाणो समि त्ति सदृश्यां स्थापनायां सदृश्यां चारोपणायामित्यर्थः । पुव्वकरणेणं त्ति ठवणारोवणदिवसमाणाओ विसोहइत्तु इत्यादिकेन जे पुणेत्यादि आरोपणया भागे हूतेऽस्य १६६ राशेयें लब्धा २४ इत्यर्थः । अन्नासु कत्थइ त्ति पूर्वसु तिसृषु स्थापनारोपणपंक्तिषु न पुव्वकरणं कर्तव्यमित्यर्थः । समदिवसगृहणं न कर्तव्यमित्यर्थः । यथा वीसं ठ० २०, वीसं आरो० २०, इत्थ ठवणारोवणदिवसे इत्यादिना करणेन तावत् कृतं यावत् वरुणोए जइ मासा तइ भागमित्यादि करणेन षोडशसु द्विधाऽष्टाष्टतया व्यवस्थितेषु एकः पंचदशगुणः १२०, अत्यस्य पंचगुणः ४०, ठवणादिणक्षेपे भवति १८० भवति । अत्र च पठमाणो अट्टगाओ पक्खो पक्खो गहिओ, पन्नरसगुण त्ति काउं बिइयाओ अट्टगाओ पंच पंच राईदिया पंचगुणिय त्ति काउं ठवणामासेहिं दो दस दस राईदिया इत्येवमत्र समेऽपि ठवणारोवणदिवसमाणेन समदिनगृहणं दृष्टं, तह वि य पडिसेवणाओ नाऊणं हीणं वा अहियं व त्ति एकं वाक्यं यथाप्रतिसेवनमासाश्च ज्ञात्वा हीनत्वेनाधिकत्वेन वा ठवणारोवणासु तथा कथंचिद्दिनगृहणं कर्तव्यं । यथा - षण्णासा पुयन्ते, ते य जे आरोवणाए त्ति अशीत्यधिकशतात् स्थापनारोपणदिनरहितात् ययाऽऽरोपणया तद्रहितं कृतं तथैव तस्य भागे इत्यर्थः । वीसियठवणं

वीसियारोवण च पडुच्च ठवणाए दो मासा आरोवणाए वि दो, तन्नैकस्मिन् ठवणामासे ये दश दिवसा गृह्यन्ते ते पचदशदिनप्रमाणस्थापनामासापेक्षया न्यूना । पचाना दशापेक्षया हीनत्वात्, दशकस्य च पचापेक्षयाधिकत्वाद्, एतदेवाह — कथ इ ठवणाए हीणमित्यादि, आरोवणामासेसु दुहा विभत्तेसु त्ति अष्टाष्टतया द्विधा व्यवस्थापितेषु पन्नरस गहिय त्ति पचदशकेनाष्टकस्य गुणनात् तत्र चारोपणामासो वर्तते । द्वितीयश्चाष्टक पचभिगुण्यते, विशतिस्थापना प्रतीत्य पाक्षिकस्थापनारोपणाया सर्वत्र पक्ष पक्षो मासा गृह्यन्ते, तत सचयमासा दश, पचदशगुणा १५०, ठवणारोवणादिनयुता १८०, एवमित्यादि पचियठवणारोवणाए ठवणारोवणादिवसे माणाओ वि विसोहइत्तु इत्यादि करणेन षट्त्रिंशत् सचया मासा लब्धास्तत स्थापनामासोऽपनीयते ३५, तत प्रतिमासात् पचदिनग्रहणात् पचकेन गुणिते पचत्रिंशति स्थापनादिनयुताया १८० । एविकयाए वि ठवणारोवणाए असोइसचयमासेहितो ठवणामासे फेडिए मास १७६, इत्थ एक्केक्काओ मासाओ एक्केक्को दिणो गहियो । ठवणादिणजुओ १८० । एव एगियठवणा पंचियाइ आरोवणासु वि तहा हि — ठवणा १, आरो० ५, असीयसयाओ अवणीए १७४, एक्को भोसो पचभिभिगे हूते लब्धा ३५, ठवणारोवणामासयुता ३७, ठवणामासे फेडिए ३६, एक्केक्कमासाओ पच पच दिणा गहिय त्ति काउ पचभिगुणने एकभोषापनयने १८० । तहा ठवणा २, आरो० २ असीयसयाओ अवणीए १७६, दुगुणैभिगे हूते मासा लब्धा ८८, ठवणारोवणामाससहिया सचया मासा ६०, ठवणामासे फेडिए ८६, तओ मासेहितो पत्तेय दो दो दिणा गहिय त्ति काउ दुगेण गुणिए ठवणादिणजुए जात १८० ।

विसमा गाहाए पादत्रिकेण एको वाक्यार्थ । द्वितीयश्चतुर्थपादेनेन तानु(?)य मामविममत्तणओ इत्यादि यथा ठव० ३०, आरोव० १५, असियसयाओ अवणीए १३५, पचदशभिभिगे हूते लब्धा ६, ठवणाए मास ४, आरोवणा एक्को मिलिया सचया मासा १४, ठवणामासापनयने १०, एद हूते प्रस्तुतचूर्णवाक्यस्यावसरो यथा — स्थापनामासानामत्र विपमदिननिष्पन्नत्वेन मासवैपम्यम् ।

कोऽर्थो ? न पूर्णदिननिष्पन्ना मासा लभ्यन्ते किन्तु दिनाशयुक्ता इति । तथाहि — मासो दिनसप्तकेन दिनार्धेन चात्र निष्पन्न इति, स्थापनामासेषु वि दिनसप्तकस्यार्धस्य च ग्रहणमत्र शेषमासेभ्यश्च पक्षपक्षो गृह्यते इति पचदशगुणिता दश जात १५० । ठवणादिनप्रक्षेपे १८० । एवमन्यास्वपि विषमदशासु कसिणामु ठवणारोवणामु ठवणामासेसु विषमदिनग्रहण द्रष्टव्य, कृत्स्नास्वपि विषमदिवसासु यदि स्थापनामासेसु न पूर्णदिनग्रहण भवति किन्तु दिनाशयुक्तमपि भवति तथापि तत् तथा गृह्यमान तथा कार्यं यथा भोषविशुद्ध तद्गृहीत भवति, यथा ठव० २५, आरो० १५, असीयसयाओ अवणीए १४० भोषदशकक्षेपे कृते दशभिभिगे हूते लब्धा १०, ठवणारोवणामासयुता सचयमासा १४, ठवणामासोत्सारणे ११, पचदशभिगुणने १६५, ठवणादिण युते भोषविशुद्धे १८०, अत्र स्थापनामासेष्वष्टौ अष्टौ दिनानि दिनाशयुक्तानि शेषमासेभ्यश्च पक्ष पक्षो ग्रहीत इति भोषविषमार्थेति भोषात् ३ विषमार्थस्य ठवणामासेषु विषम ग्रहणस्य रूपस्य विशेषप्रदर्शनं भोषविशुद्धदिनग्रहणरूपमर्थोऽस्येति विग्रहः ।

एवं खलु० गाहा ६४६३ ।

ठवणामासैरुत्सारिते शुद्धा ये भोषमासा आरोपणाया यावन्तो मासास्तत्समैर्भागे कृता आरोवणादिणेहि व त्ति चतुर्थोत्सापनारोपणपक्तिमाश्रित्य उद्धरितविकलदिनैरित्यर्थः । यथा — शतादिप्रक्षेपेण सहस्रं पूर्यते विसेसिज्जतीत्यर्थः । इति आरोपणामासेभ्यः स्थापनामासा विश्लेष्यन्ते, विशिष्टा क्रियन्ते, पृथक् क्रियन्ते इति यावत्, षण्मासदिनराशिपूरकत्वात्तेषामिति भावः ।

एगदुतिमाइयाहि इत्यादि अनेन व्याख्यानेनारोपणाना कृत्स्नाना मध्ये एकस्या आरोपणया प्रतिनियत सख्यानमाह अहवा - जत्थ सखित्तिनरमित्यादि, ते चेव त्ति आलोचकमुखश्रुता यथा- अष्टादशमासा श्रुता तैरशीत्यधिकशताद् भागे हूते लब्धा १० सर्वविशुद्धिसद्भावात् कृत्स्न चैतत्, अत्रैकैकस्मान्मासाद्दिनदशक गृहीत, अष्टादशमासैर्दशकस्य गुणनेऽशीत्यधिकशतभवनात्, किञ्च तत्थ विकल भवइ त्ति किञ्चिदुद्धरति, परिपूर्णतया यदि स राशिर्न शुद्धचतीत्यर्थ । तदा तद्भागलब्ध भागहारकस्य यका सख्या तत्प्रमाणे स्थानैस्तावत्यो वारा न्यसनीयमित्यर्थ । जावइय त्ति विकलयुक्तभागाच्छेषा ये अन्ये भागास्ते यावत् स्थानसख्याकास्तावन्मात्रो राशिर्भाग- हारगुणो त्ति भागहारेण यो लब्धो राशि स भागहार उक्तस्तेन गुण्यते य स वा गुणो गुणकारो यस्य स तथा यद्वा साध्याहार योज्यते, यथा विकलयुक्तभागाद् येऽन्ये भागास्ते यावन्त यावत्स्थानसख्याका स गुणकारो दृश्यस्तेन भागहारलब्धो राशिर्भागहारस्तस्य गुणन गुण्यते वाऽसौ तेनेति विग्रह । यथा - सचया मासा १३ श्रुता, अशीत्यधिकशताद् भागे हूते लब्धा १३, उद्धरिता ११, लब्ध त्रयोदशभिः स्थानैर्न्यस्यते, एकश्च भागो विकलयुक्त कार्य, जात २४ । अपरे च द्वादशत्रयोदशभागास्ततो द्वादशसख्यया त्रयोदशको गुणित जात १५६, चतुर्विंशते प्रक्षेपे जात १८०, तथा सचया मासा २५, श्रुता । असीयसयाग्रो भागे हि ए लब्ध ७, उद्धरिता ५, सतक पचविंशतिस्थानेषु न्यस्यते एको विकलयुक्त १२, अपरे चतुर्विंशतिस्ततः सतकेन चतुर्विंशतिगुणिता १६८, द्वादशप्रक्षेपे १८० । एवमन्यत्रापि अघुना यदा स्थापनारोपणप्रका- रेणाशीत्यधिकशतमुत्पद्यते तदा अकसिणारोपणया सत्या भोषप्रक्षेपे कृते भागो हतंव्य इत्युक्त प्राक् इति विकलप्रस्तावादेव यस्या यावत्प्रमाणो भोषो भवति तत्परिज्ञानार्थमाह - “नायव्व तहेव भोमो य” त्ति, तथा यस्य मासस्य यद्दिनप्रमाण गृह्यते इत्येतत् ज्ञान तथा भोषो अपि यस्या यावत्प्रमाणो भोष इत्येतदपि ज्ञातव्यमित्यर्थ ।

कथ ? इत्याह - आरोवणा इत्यादि चूर्णवाक्य, यथा वीसियठवणा पणुवीसा- रोवणा तयोरशीत्यधिकशतादुत्सारणे कृते जात १३५, आरोपणया भागे हूते लब्धा ५, उद्धरिता १०, एव कृते चूर्णवाक्यस्यावसर असुज्झमाणो त्ति सवथा निर्लोपमध्याल्लघुराशौ यच्छेदा- शविशेष । छेदोऽत्र पचविंशतिरूप उद्धरितदशकस्त्वशस्तयोर्विशेषो यस्मात् पतति स तस्मात् पात्यते इत्येव न्यायेन बृहद्वाशिमध्याल्लघुराशेरुत्सारणे कृते उद्धरितरूप । अत्र हि दशकपच- विंशत्योर्मध्ये पचविंशतिर् बृहद्वाशि, दशकस्तु लघु, तस्य लघोरुत्सारणे कृते पचविंशतेर्मध्यादुद्धरिता पचदश, एतावत्प्रमाणो भोषोऽत्रारोपणया भवति, तथा ठ० २०, आरो० २५, अशीत्यधिक- शतादुत्सारणे १४५, अत्रारोपणया भागे हूते लब्धा ६, उद्धरिता दश पचदशभ्यो मध्याद्दशाना- मुत्सारणे उद्धरिता पचकपचकरूपो भोषोऽत्रेत्येवमन्यास्वपि छेदाशयोर्विशेषो भोसो विज्ञेय । ततो भोषमित्थं प्रथमत एव विज्ञाय ठवणारोवणदिवसरहितराशिमध्ये प्रक्षिप्यारोपणया भागो हतंव्यस्ततो यल्लभ्यते तदारोपणमासैर्गुण्यत इत्यादि प्रागदशितप्रकारस्तद्वर्क्य कार्य ।

कसिणा० २० गा० ६४१६ ।

तेसु भागत्येषुत्ति यथा ठव० ३०, आरो० १५, असीयमयाग्रो अवणीए १३५, पचदश- भिर्भागे हूते मास ६, ठवणामास ४, आरो० १ ठवणारोवणमाससहिंया सचया मासा १४, ठवणा- मासे फेडिए जाया १०, आरोपणया एकत्वात् एकभागस्थो दशक पचदशकेन गुणित १५०, अत्र दशस्त्रपि मासेषु पक्खो पक्खो गहिंओ, ठवणादिणजुया १८० ।

अह दुगाइभागत्थ त्ति यथा ठव० ३०, आरो० २५, असीयसयाओ अवणीए १२५, आरोवणया भागे हूते लब्धा ५, आरोवणामासा ३, तैयुणित पचक १५, ठवणामास ४, आरोवणमासयुत २२, ठवणामासोत्सारणे १८, आरोपणाया मासत्रयसद्भावात् त्रिभि स्थानै षट् स्थितान् मीलयित्वाऽष्टादश ध्रियन्तेऽत्रैकस्मिन् भागे पचदश दिवसा गृह्यन्ते, अपरयोश्च द्वयोभागयो पच पच इति प्रत्येक भागेषु समदिनग्रहण, ततो भागाना पचदशभि आरोपणामास ३ सहिया सचया मासा पचकेन गुणने ठवणादिनक्षेपे १८० ।

अह कसिणत्ति यथा ठव० २५, आरो० २०, असीयसयाओ अवणीए १३५, पच-दशभोषे कृते १५०, आरोपणया भागे हूते लब्धा ६, आरोपणास्त्रिभि षड् गुणिता १८०, ठवणामास २, आरोपणामास ३०, सहिया सचया मासा ३३ ठवणामासोत्सारणे आरोपणाया मासत्रयसद्भावात् त्रय सप्तका न्यसनीया, एक पचदशगुण, अपरौ च पचगुणाविति ७०, भोषस्य पचदशकस्योत्सारणे पचदशभिगुणिते सप्तके त्रयोदश त्रयोदश दिनानि किंचिन् न्यूनानि मासाद् गृह्यन्ते, इत्यायाता त्रयोदशसतका एकनवतिर्यत स्यात्, अत आह - ता नियमा तेसु मासेसु विसमग्राहणमिति ।

जइ इच्छसि नाऊण० गाहा [१ पृ० ३३७ चतुर्थ भाग]

कस्मात् कियन्ति कियन्ति दिनानि गृह्यन्ते ? इति दिनग्रहणगाथेय, अस्यार्थ - यदीच्छसि ज्ञातु कि तद् ? इत्याह - कि गहिय मासेहि तो त्ति सम्बन्ध, कस्मान्मासाच्च कियद् गृहीत-मित्यर्थ । तदा ठवणारुवणा जहाहि त्ति असीयसयाओ ठवणारोवणदिणा उत्सारेहि, मासेहि ति सचयामासेभ्यश्च ठवणामासानारोपणामासाश्चोरय तदूर्ध्व तु मासेहि ति विभक्तिव्यत्ययात् मासै सचयमासै ठवणारोवणामासैश्च भाग हरेदिति योग ।

केभ्य ? इत्याह - तद्विवस त्ति विभक्तिपरिणामात् तेभ्य स्थापनामासै स्थापनादिनेभ्य आरोपणामासैरारोपणादिनेभ्य सचयमासैश्च ठवणारोवणमासरहितै असीयसयाओ ठवणारोवण-दिनरहियाओ भाग हरेदित्यक्षरार्थ । यथा - ठव २०, आरो० १५, असीयसयाओ उत्सारणे १४५, एत्थ ठवणारोवणठाणे सचया मासा १३, ठवणारोवणमासतिगुत्सारणे स्थिता १०, तैर्भागो हार्य, अस्या राशेर्लब्धा दिन १४, उद्धरितदिनपचकस्य भागहारकस्य च दशका-ख्यस्यापवर्तना देशाना पचमे भागे १ न्यास ३ इति दिनार्ध लब्ध इति सचया मासेषु मासा ३२, दिन १४, दिनार्ध च गृहीत, अर्ध च दशकेन गुण्यते जाता १०, अधस्तनद्विकेन भागे हूते लब्ध दिनपचकम् ।

क प्रत्यय ? चउदसगुणिया १४०, पचकप्रक्षेपे इत्येव सचयमासैर्भागे हूते सचयदि-नप्रमाण यावद्गृह्यते तावदनया गाथायोक्त अनुना ठवणारोवणमासेहितो यावन्तो दिवसा गृह्यन्ते स्वसमासकैर्भागे हूत तत्प्रदर्शनाय गाथामाह -

ठवणारुवणा दिवसा ण० गाहा [२ पृ० ३३७ चतुर्थ भाग]

व्याख्या - ठवणारुवणादिवसाना भागो हार्य, कै ? सतमासै, स्वकीयस्वकीयमासैरित्यर्थ, तत्र च ठवणारोवणदिवसराशे पचभिर्भागे हूते यल्लब्ध तद्विरूपेन (?) तत्समासतया भवति, भागे च हूते यल्लब्ध तद्विवसान् जानीहि, शेष चोद्धरित दिनभागानेव जानीहि, न पुन पूर्णदिनानि इति, यथा ठव० २५ आरो० १५, अत्र च सचया मासा १०, तैर्भागे हूतेऽस्य १४० राशेर्लब्धदिन १४

मासान् गृह्यते, दशकेन गुणिता जात १४०, आरौपणमासैकैकेन भागे हृते आरौपणदिनराशे लब्धदिन १५, ठवणमासै त्रिभिर्भागे हृतेऽस्य २५ राशेर्लब्धदिना, मासान् गृह्यन्ते इति ०४, उद्धरितश्चैकक स चाष्टकेन गुणितो जाता ८, भागे अष्टकेन हृते लब्धदिन १, मिलित सर्व १८०, ठवणारौवणदिवसा ज्ञानसद्भावे इत्यमुक्त, यदा तु ठवणारौवणराशिर्न ज्ञायते तदा कस्मान्मासात् कियद्दिनानि गृह्यन्त इति कथनार्थमाह—

जइ नत्थि० गाहा [३ पृ० ३३७ चतुर्थ भाग]

व्याख्या — ठवणारौवणराशिर्न ज्ञायते विस्मृतत्वादिकारणतो यदा तदा शिष्यमुखात् श्रुता ये सेविता मासास्तैरशीत्यधिक शत विभजेत्, भागे हृते यल्लब्ध तत ओगहिय ति अवग्रहीतमेकैक स्मान्मासाद्दिनमानमित्यथ । इहापि यदुद्धरित तद्दिनभागा अवबोद्धव्यास्ते च लब्धदिनराशिना गुणयित्वा तेनैव लब्धदिनराशिना भाग हृत्वा दिनानि कार्याणि ।

क प्रत्यय ? सेवितमासैर्लब्धस्य गुणने तस्य च मध्ये उद्धरितस्य दिनीकृतस्य शत प्रक्षेपे अशीत्यधिकशत वि भवति, यथा श्रुतमासा १३, एभिर्गम्मात् १८०, राशेर्भागे हृते लब्ध उद्धरित ११, त्रयोदश-त्रयोदशभिर्गुणिता १६६, एकादश दिनप्रक्षेपे जात ॥१८०॥ इयाणिमित्यादि अतिक्रमादिषु यथाक्रम प्रायश्चित्त यथा — तप कालाभ्या लघु, द्वितीये तवगुरु, तृतीये कालगुरु, चतुर्थे ङ्का उभयगुरु, प्राभृतवदित्यादि, यद्वा प्राभृत अर्थाधिकारस्तथा प्राभृतच्छेदा अपि, तथा सकलबहुमसूत्रेषु ये पदविधय पच ताश्च प्रत्येक दण्डित्वा तत्रो वि गय ति तत सम्यग् ज्ञानात् ॥छ॥

गुरुय एकक ओहाडण ति लघुप्रायश्चित्ताना स्थगनकारित्वात् तस्य पिधानकल्प तत् बृहन्मध्ये लघूनि प्रतिविशती ति भाव । अहवा — साहूणमित्यादि गुरूण अणेगानि सिज्ज ति — आलोचकसाधुबहुत्वात् साहूण अणेगालोचणात् ति एणोऽप्यगीतार्थोऽपि सन् जे सेसा मास ति उद्धरितरूप पडिसेवओ चेव हाय ति प्रतिसेवनादेवेत्यर्थ ।

असच्चए तेरस पया सच्चए एगारस पया तिणिण दिणा छेओ दिज्जइ ति दिनत्रय यावदासेवने छेदोऽपि, मास ४, ६ रूपोदय आयतरपरतरपदाभ्या चतुर्भंगके चतुर्थशून्य । अन्ये अन्यतरतर चतुर्थं भ गक ब्रूवते, उभयोर्मध्येऽन्तर तु किंच न कर्तुं तरति — शक्नोति अन्यतरतर जइ इच्छिय करेइ ति ईप्सित तप प्रभृतिभेयविकल्पोवलभात् ति दोमु वि सामत्ये सतेऽन्यतरकारत्वात् पुरुषभेदविगप्प सलद्धितणत्त ति गुरुगोय भक्ताद्यानय ति पच्छित्ते निक्खिते कज्जइ ति, प्रायश्चित्त तस्य स्थाप्य क्रियत इत्यर्थ, ज वहइ ति यत् करोति तत्थ थोव पणगाइ इत्यादि लघुमासमापन्नत्वात् तस्य, तथाहि लघुमासलक्षणपन्नस्वस्थानापेक्षया यत् तदवोर्वाति य पचकादिभिन्नमामान्त तत् स्तोके, तदुपरि च लघुद्विमासादिपारचिकान्त यत् तपस्वत् बहुलघुमासापेक्षया तस्य वृद्धत्वात् एव लघुद्विमासादिष्वपि हिट्ठिल्लठाणा थोव ति पणगादि लघुमासात् थोव तिगमासियाइ पारचियत्त बहू एस अविसिद्धो ति लघुपणगादिमासादिसकीर्णतया प्रात अविशिष्ट लघुपचकच्छेदो लघुमासादि छेद इति प्रतिनियतविशेषविशिष्ट प्राप्तो विशिष्टच्छेद । अहवेत्यादि यन्नामकैर्मासैस्तप आपन्न छेदोऽपि तन्नामक मासप्रमाण आपद्यते । तवतिय पि तपस्विक, तदेव दर्शयति — मासम्भतरमित्यादिना मासान्तर्बतिलघुपचकादिभिन्नमास लघुमास इति ज्ञेयमित्येक तप, द्वित्रिमासचतुर्मासरूप तप सर्व चतुर्मासान्तर्बतित्वाच्चतुर्मासाभ्यन्तरमिति द्वितीय, पचमास-

पण्मासरूपं षण्मासाभ्यन्तरं तृतीय, एव छेदोऽपि योज्यमानोऽत्र पक्षे इत्थं योज्य - यथा पचमासियाग्नौ उवरि छरुह्य एङ्गवारा दिन्न, तग्नौ उवरि जइ इक्क वार आवज्जइ पुणो वि वीय वार, एव ताव जाव वीसवारा, ताव भिन्नमासछेग्नौ पणमाइ पचविंशतिपर्यन्तरूपो दातव्य, भूयोऽपि वीसाग्नौ परेण आवज्जमाणे जाव सत्तरसवारा ताव लघुमासछेग्नौ कज्जइ, लघुमासप्रमाणपर्यायोऽपनीयत इत्यर्थः । सत्तरसलहमासियाण उवरि पुणो एकैकवारासेवनेन आवन्ने जाव सत्तरस वारा ताव लघुद्विमासद्विक छेदो दातव्य, पुणो वि आवन्ने तदुवरि जाव सत्तरसवारा ताव चउलहुच्छेद कर्तव्य । तदुवरि आवन्ने जाव पचवारा ताव लहुपचमासिग्नौ छेद कार्यः । तदुवरि एक वार लेविण् छरुह्य छेदो दिज्जइ, एव सति तप समाननामक मासाभ्यन्तरादिरूप छेदत्रिक प्रदर्शितरीत्याऽतिक्रान्तं भवति, एतदेवाह - जम्हा एवमित्यादि सुगम, एतच्च प्राचीनग्रन्थानुसारेण अत्रैव निगमनवाक्ये भिन्नमासाइ छम्मासतेसु ति भणनाच्च सेवना-वारासख्यानमनुक्तमपि दृश्यमिति सभाव्यते । तत्त्वं तु बहुश्रुता विदति । उद्धातानुद्धातयोरापत्ति-स्थानानि, तेषां लक्षणम् ।

अहवा छहिं गाहा ।

छण् मासाण आरोवियाण छद्विंसा गया, ताहे अग्नौ छम्मासो आवन्नो, ताहे ज तेण ग्रद्धवूढ त सेमिज्जइ, ज पच्छा आवन्नं छम्मासिय त वहइ, इत्थंभूतेन पचमासा चउवीस च दिवसा सोसिज्जति त पि ति नूतन अहं छसु इत्यादि अन्नं छम्मासिय परिपूर्णं यदि वह-तीत्यर्थः, आइमने वा नत्थि ति मासचउमासलक्षणा अधरोत्तराभ्यां काष्ठाभ्यां पातितो जइ तस्मिं नि अग्नौ, डहिउ ति दग्ध, सहिण ति श्लेष्मगानि, अप्पाण न सवारेइ ति असमर्थं स्यात् उग्घायाणुग्घाए पटुविए ति वहत सत नत्थि एगखमाइ ति भाष्यपद एकस्कन्धेन कपोतिद्वय-मुद्रोदु न शक्यते - यप्पेवेत्यर्थः (?) । अणवट्टगारचिउतवाणि वत्ति अनवस्थाप्य तप पारचिक वाऽतिक्रान्तं समाप्त इति, ते यदा ये न विहिते भवन इत्यर्थः । छम्मासिग्नौ छेग्नौ छम्मासिग्नौ वि जस्स परियाग्नौ अग्नौ तस्म वि मूल दिज्जइ ।

जहमन्नें गाहा ।

पर आह - अह एव मन्ये यथा यदुतमासं सेवित्ता मासप्रायश्चित्तेनैव शुद्ध्यति तथा मासं सेवित्वैव द्विमासादि पारचिकान्तप्रायश्चित्तेनाप्यग्नौ शुद्ध्यतीति तदप्यहं मन्ये । आचार्योऽप्याह - ग्रामं नि एतद्भ्युपगम्यत एवास्माभिर्नात्र काचिन्नो बाधाकं व्येति (?) । यदुक्तं चूर्णीं तत् पराभिप्रायः सुगम एवेत्यपेक्षया आचार्याभिप्राययोजना तु दर्शयति - एस मासिय पडुच्चेत्वादिना भाष्यगाथया हि मासोपेक्षयैव द्विमासादिपारचिकं ताव सा न शुद्धिरुक्ता, एतेन सेसा वि गमा सूइय ति द्विमासं सेवित्वा द्विमासादिना शुद्ध्यतीत्याद्यपि पापं द्विमासादिकदृश्यतम् एव चूर्णी कृता दर्शितः । थोवे वा बहु चेव ति अपराधे इति शेषः आवत्ति सुत्ता नाम शिष्यगतप्रति-मवनाद्वारेणापन्नप्रायश्चित्ताभिधायीनि, आलोचनाविधिसुत्ता नाम गुरुशिष्ययोर्मध्ये शिष्येण गुरोर्निवेदिते गुरुणा प्रायश्चित्तपर्यालोचनविषयाणि प्रायश्चित्तारोपणं गुरुणा यत् क्रियते एनावत् त्वशा कतव्यमित्येव दानरूपाण्यारोपणासूत्राणि, च उरो सूत्रेणैव भणियंति यथा - प्रत्येकसगल-सुत प्रत्येकबहुसमुत्तं सगलमजोगमुत्तं बहुमसजोगमुत्तमिति, तत्थ जे भिक्खू मासिय परिहारट्ठाण पडिसेवित्ता आलोएज्जा, जे दोमासिय, तेमामिय चाउम्मासिय पचमासिय पडिसेवित्ता आलोएज्जा इति प्रत्येकं सूत्रं प्रतिसेवनाया मत्या प्रायश्चित्तापत्तिः स्यात् इत्यापत्तिसूत्राण्युच्यन्ते ।

जे भिक्खू बहुसो मासिय पडिसेवित्ता आलोइज्जा, बहुसो दोमासिय,० बहुसो तेमासिय०, बहुसो चउम्मासिय,० बहुसो पचमासिय पडिसेवित्ता आलोइज्जा इति प्रत्येकबहुससूत्र, जे मासिय च दोमासिय च तेमासिय च इत्यादि सगलमजोगसूत्र, जे बहुसो मामिय बहुसो दोमासिय तेमासिय-मित्यादि बहुसयोगसूत्र, एतत् सूत्रचतुष्टयमेतावना ग्रथेन सूत्रोपात्त व्याख्यात, इमे अत्यगो त्ति अर्थो व्याख्यान भाष्यादिक, तस्मात् षड् बोद्धव्यानि, त जहेत्यादि जे भिक्खू मासाइरेग-दोमासियमित्यादि बहुससातिरेगसूत्र ।

जे भिक्खू साइरेगमासिय च साइरेगदोमासिय च एव सातिरेगमामिय सातिरेगमा-साइणा सह धारेयव्वमित्यादि सातिरेगसजोगसूत्र ।

जे बहुसो सातिरेगदोमासिय बहुसो साइरेगदोमासिय चेत्यादि बहुससातिरेकसयोगसूत्र मासिय सातिरेकमासिय ।

जे भिक्खू दुमासिय सातिरेकदुमामिय चेत्यादि सकलस्य सातिरेकस्य च सजोगसूत्र ।

जे भिक्खू बहुसो मासिय बहुसो सातिरेकमासिय च ।

जे भिक्खू बहुसो दुमासिय बहुसो सातिरेगदुमामिय चेत्यादि बहुसस्स सातिरेगस्स य सजोगसुत्त, इत्येवमापत्तिस्सूत्राणि दस कथितानि, आलोचनासूत्राण्यपि इत्थं वास्यानि, इमं नवमे सुत्ते इति इदमिति सूत्रादर्शोपात्त पचम सूत्र, आलोचना नवमसूत्र च, बहुभगसकुलमिति नवमसूत्रस्य चतुष्कसयोगेनान्त्य चतुष्कसजोगरूप पचम सूत्र षष्ठं च सूत्र बहुसरूप सूत्रोपात्तेनालोचनादशमसूत्रेऽन्यचतुष्कसयोगरूप तदनेन त्रिशन्सूत्रेषु मध्येऽष्टादशसूत्रेष्वतिक्वातेष्वेकोनविंशतितमे च सूत्रे षष्ठं सूत्रोपात्त सूत्रमिति कथित, न पुनर्नाममात्रेण कथनात् गतार्थममीषा दृश्य, किन्तु पचमषष्ठसूत्रयोरान्तर्यदशनाथमेवमेतेषु गतेष्वित्युक्त, तथा चाग्रे आलोचनासूत्राणि व्याख्या स्यति, तद्व्याख्याते च सर्वेषां सदृशत्वात् सर्वाण्यपि व्याख्यातान्येव भवति, तत्राप्याद्य आपत्ति-सूत्रचतुष्कभङ्गेनालोचनासूत्रचतुष्क आरोपणासूत्रचतुष्क सूत्रेणैवोक्त व्याख्यात च द्रष्टव्यम् साति-रेकसूत्रादीनि च षड् व्याख्यास्याति, तत्राप्यालोचनाविषयपचमषष्ठसतमाष्टमसूत्रव्याख्याने आपात्त-सूत्रारोपणासूत्रयोरप्येतानि भवति, आलोचना नवमदशमसूत्रयोर्व्याख्याने आपत्त्यारोपणासूत्र-योरपि द्विक व्याख्यान भवतीत्यारोपणासूत्रद्विके च नवमदशमे यथाक्रम सूत्रादर्शापत्ते सूत्रे सतमाष्टमे भविष्यत इत्यालोचनासूत्राणि षड् व्याख्यास्यति चूर्णिकृत । इह चालोचनासूत्र-योर्नवमदशमयोरेते पचपष्ठे सूत्रोपात्ते सूत्रे इति कुतो लभ्यते इति न वाच्य । भाष्ये हीत्यमेवाऽनयो सूचितत्वात्, इयाणि छट्टमित्यादि इदं पचमषष्ठसख्यान सूत्रोपात्तमात्रापेक्षया द्रष्टव्यम्, न तु प्राग् दर्शितप्रत्येकसगलसूत्रमित्यादि, नाममेदेन सूत्रदशकापेक्षया नवमदशमसूत्रयोर्न चतुष्कसयोगास्तेष्वन्तचतुष्कसयोगसूत्रे इमे, एएसि अत्थो पूर्ववदिति, पचमषष्ठसूत्रोपात्तसूत्रयो रित्यर्थ । अहवा - त मासादीत्यादि त मासाइपडिसेविय आलोयणविहीए गुरवो नाउ ज मासाइ आरोवणाए आरोवयति त ति काइय भन्नइ इति योग, आरोवणाए वि आरोप्यमान यन्मासादि हीनाधिकतया यथारुहपरे यदारोप्यते तदित्यर्थ । भावगो वा निष्पन्न त्ति रागद्वेषादिना तत्रो मासिय गुरुपणग वा मुचत्तेण लघुदशक चेत्यादि ताव भाणियव्व जाव गुरु भिण्णमामो त्ति पणगाइयाण सव्वे दुगसजोग त्ति ५॥५॥१०॥१०॥१५॥१५॥२०॥२०॥२५॥२५॥

जाड कुल० गाहा ॥ सा चैयम् -

जाडकुलविणयनाणे दंसणचरणे य खंतिदमजुत्ते ।

मायारहिए पच्छा-णुतावि इय दसगुणोगाही ॥

अमुगसुएण त्ति अमुकश्रुतेन कल्पनिशीयादिकेन दसणेण नि सम्यक्त्वेन मायारहिए इत्यस्य व्याख्यामाह - अपलिउचमाणो इत्यादि अपच्छाणतावीत्यस्यार्थमाह आलोएत्ता नो पच्छेत्यादि केनापि किंचिदकथनीयमालोचिन, तत् पश्चाद् यो न खेद याति स इत्यर्थः । सुहुमे आलोएइ नो बायरे एव कुर्वन् शिष्यस्य गुरोरेवम्भूत प्रत्ययो जायते, तमेवदर्शयितुमाह - जो य इत्यादिना, इयरठवियव त्ति अणतरठविय इयाणि एएसि चैव दोण्ह वीत्यादि आलोचनासूत्र-दशकसंख्यानमध्ये ये पचमषष्ठसूत्रे तयोरित्यर्थः । जहा पढमबिनियसुत्तेसु त्ति यथाद्यसूत्रचतुष्टयमध्ये आद्यसूत्रपदसयोगैस्तुनीय सकलसयोगसूत्र निष्पद्यते यथा च द्वितीयबहुसूत्रपदसयोगैश्चतुर्थं बहुसम-योगसूत्र निष्पद्यते तथालोचनाविषयसातिरेकपचमसूत्रपदसयोगै सतम सातिरेकसयोगसूत्राणां संख्यानमाह - नवसया एगसट्ट त्ति उद्धातिमानुद्धातिमाभ्या मिश्रसयोगसूत्रसंख्यानमिदं, इम चेत्थ यथा - उग्घाइयसजोगाणा ५॥१०॥१०॥५॥१ गुण्या, एते पच वि अणुग्घाइयसजोगेण गुणिया, जहासख इमे जाया २५॥५०॥५०॥२५॥५॥ एव उग्घाइयाण एगदुत्तिचउपचसयोगो अणुग्घाइय-दुगसजोगेहि दसहि गुणिए जहासख इमे जाया - ५०॥१००॥१००॥५०॥१०॥ उग्घाइयाण मव्व-सजोगा अणुग्घाइयदुगसजोगेहि मिलिया ३१०, पुणो उग्घाइयाण मव्वसजोगा अणुग्घाइयतिय-सजोगेहि गुणिया जहासख जाया ५०॥१००॥१००॥५०॥१०॥ एए सव्व ३१० पुणो उग्घाइयमव्व-मजोगा अणुग्घाइयचउक्कसजोगेहि पचहि गुणिया जहासख जाया ॥२५॥५०॥५०॥२५॥५॥ एए सव्वे मिलिया १५५, पुणो उग्घाइयसव्वमजोगा अणुग्घाइयपचसजोगेहि एक्केण गुणिया जहामख जाया ५॥१०॥१०॥५॥१॥ एए सव्वे एक्कचीम ३१, एव उग्घाइयाणुग्घाइएहि सव्वसजोग-मुत्ताण सखेवो ६६१, सातिरेकाणि सति मगलसूत्राणि नेषा, तानि च त्रिनवतिसंख्यानि, सा च एगतीसत्तिभागेण भवइ, तत्थ एगा एगतीसा य वासातिरेगसगलसुत्ता ॥५॥ उग्घातिमादिविशेष-विकलसामान्यसयोगसूत्राणि २६ । सर्वाणि ३१ । द्वितीया च उद्धातिमसातिरेगसूत्र ५ । अनुद्धा-तिमसातिरेकसयोगसूत्र २६ । षड्विंशतिश्च द्विकमयोगा १० । चतुष्कयो ५ । पचकयो १ । एनन्मीलने निष्पद्यते, इय च त्रिनवति पूर्वराशे सयोगसूत्ररूपस्येत्यस्य ६६१ । मीलिता सजायते । १०५४ । बहुसमुत्ते वि एव तत्रो दुगुणिए जात २१०८, पुणो मूलुत्तरदुगेण जाय ४२१६ । दप्पकप्प-द्विकेन गुणेन जात ८४३२ । एव एय सखाण पचमच्छट्ठसतमअट्ठमआलोचनाविषयमुत्तचउक्कस्स आइममुत्तचउक्के वि प्रत्येकसूत्रादिरूपे एतदेव संख्यान, तत्रो पुणो वि दुगुणिए जात १६८६४ । एवमालोचना सूत्राष्टके एतावत् सूत्रसंख्यान जात, अत एवाह - अट्ठसु वि सुत्तेसु इत्यादि आलो-चनासूत्राणां प्रस्तुतत्वात् कथमुक्त एत्ति या आवात्तसुत्त त्ति, सत्त सट्ठशत्वाद् येन केनापि अपदेशो न दोषायेति सभाव्यते, आपत्तिसूत्राष्टके आरोपणासूत्राष्टके च एतावत्येव संख्या इति त्रिगुणिते पूर्वराशौ त्रिशतसूत्रमध्ये चतुर्विंशतिसूत्राणामेतत् सूत्रसंख्यान जायते ५५०५६२० । एगाइय त्ति एकादि दशान्ता दशपदा कर्त्तव्या, ताग्येव दशपदान्याह -

त जहेत्त्यादि एगादेमुत्तग्णि इत्यादि, एकाद्या एकोत्तरवृद्ध्या पदसंख्याप्रमाणेन स्थाप-नीया, कोऽर्थः ? यावति पदान्यभिलषितानि तावत्प्रमाणा गणय एकोत्तरवृद्ध्या व्यवस्थाप्या,

गुणकारं त्ति दशकादिभिरेककान्तैरधोवर्तिभिः भागहारे लब्धस्य उपरितनैरेककादिभिर्दशकान्तैर्गुण-
नात् गुणकारा एते उच्यन्ते, तथा ह्युपरितनपक्षौ व्यवस्थितेन दशकेनापरस्य रूपस्य सकलस्य गुणे
जाता १०। एककेन भागे हृते भागलब्धा १०। एककसंयोगा इत्यर्थः। तत्र दशकेन रूपस्य
गुणनादशको गुणकारो जातः, एककश्चाधोवर्तिभागहारकः, तथाय दशको नवकेन गुणनाद्
गुण्यनवकश्च गुणकारनवकाधोवर्ती द्विको भागहारकः, इत्येवमन्यत्रापि गुण्यगुणकारभागहार कल्पना
कार्या, तथापि शिष्यहितार्थं सप्रपञ्चं दृश्यते तत्र दशकस्य गुण्य रूपं जातः १५०। भाग एकेन १
लब्ध १०, नवकस्य गुण्य १०। जाताऽस्य ६०, भागो द्वाभ्यां २ लब्ध ४५। अष्टकगुण्य ४५, जातः
३६०, भाग ३ लब्ध १२०, सप्तकस्य गुण्य १२० गुणिते जातः ८४०, भाग ४ लब्ध २१०, षट्कस्य
गुण्य २१०, गुणिते जातः १२६०, भाग ५ लब्ध २५२, पञ्चकस्य गुण्य २५२ गुणिते १२६०, भाग
६ लब्ध २१०, चतुष्कस्य गुण्य २१०, गुणिते ८४०, भाग ७ लब्ध १२०, त्रिकस्य गुण्य १२० गुणिते
३६०, भाग ८ लब्ध ४५, द्विकस्य गुण्य ४५, गुणिते ६० भाग ९ लब्ध १०, एककस्य गुण्य १० दशैव
च, ते दशानां दशभिर्भागे हृते लब्ध एकक दशयोग एक एव, अत्र चोभयमुखराशिद्वयापेक्षया
पक्विरपरा आगतफलानामुत्तिष्ठते यथा १।१०।४५।१२०।२५२।२१०।१२०।४५।१०। तथा च पडिराशिये
त्ति द्वितीयस्थाने धृत्वा गुणियं त्ति यदागतफलं तस्य पाश्चात्याकेन तथा च नवकादशकं पाश्चात्यो
भवति, तस्माच्च सप्तक इत्यादि येन गुणितस्तदधस्तनेन भागे हृते यद् लब्धं तत् फलं, आगत-
फलानां मीलने २०३३, प्रतिसेवनाशब्देन हि नवममापत्तिसूत्रं सूच्यते, आदिग्रहणालोचनारोपणा-
सूत्रस्यापि नवमस्य भेदा ज्ञातव्या, एष चैवोग्धायेत्यादि तत्रोद्धातिमानुद्धातिमाभ्यां मिश्रयोगे
यावन्त उद्धातिमाना दशभिरेकयोगैः पञ्चचत्वारिंशदादिद्विकादियोगैश्चानुद्धातिमाना दशापि
दश पञ्चचत्वारिंशदाद्यराशयो गुणिता यत्सख्या प्रपद्यन्ते तदुत्तरत्र चूर्णिकृत् दशयिष्यति, अत्रताव-
दन्यदपि करणं पाश्चात्यभगकानयनविषयं व्याख्यायते -

उभयमुहं रासिदुगं, हेड्विल्लाणतरेण भय पदमं ।

लद्ध हरामि विभक्ते तस्सुवरि गुणतु संयोगा ॥

आद्यपादं प्रतीतं अघस्तनादन्त्याद् योऽनतरस्तेन प्रथममघस्तनादुपरिवर्तिनं भज,
नाम तस्य हारः, अघोराशिना अनतरेण विभक्ते सति उपरितनराशौ यल्लब्धं तेन लब्धेन तस्य
भागहारकानन्तरराशेरुपरि योऽघस्तदगुणनं कार्यं, गुणिकोऽनन्तरस्तेन भागे हृते प्रथमस्य
पञ्चचत्वारिंशदरूपस्य लब्धा १५, तेनाष्टकस्य त्रिकस्योपरिवर्तिनो गुणे जातः १२०, एवमन्यत्रापि
द्रष्टव्यं, द्वितीयं च करणं यथा -

उभयमुहं रासिदुगं, उवरिल्लं आइलेण गुणिऊण ।

हेड्विल्लभायलद्धे उवरि ठिए हुंति संयोगा ॥

व्याख्या - आद्यपादं प्रतीतं, उपरितनमादिमेन गुणयित्वा हिट्विल्लं त्ति आदिमात्
गुणकाररूपादधोवर्तिकोऽघस्तनस्तेन भागे हृते यल्लब्धं तस्मिन् भागहारकादुपरिस्थिते संयोगमानं
भवति ३३१, अत्र ह्यकानां वामगत्या नवनाऽशकस्यादावपरागो नास्तीत्यादित्वं, तदपेक्षया
नवकस्य कल्पते, तदपेक्षया चाष्टकस्यादित्वमिति एव तावद् यावदैककस्यादिमत्वं द्विकापेक्षयति,
तत्र ह्युपरितनो दशकस्य गुण्यते, आदिमे नवके जातः ६०, नवकादधोवर्ती द्विकस्तेन भागे हृते नवत्या
लब्ध ४५, नवकादुत्सार्यं द्विकाद्युपरिन्यस्ता सा एतावन्ते द्विकयोगा उपरितना पञ्चचत्वारिंशत्तमा-

दिमेनाष्टकेन गुणयेत् जात ३६०, अष्टकादधोवर्ती त्रिकस्तेन भागे हृते लब्ध १२०, अष्टकमुत्सार्य न्यस्यते १२०, इत्येवमन्यत्राप्युपरित्वादिमत्वाधस्तनादिक स्वबुद्ध्या परिभाष्य सर्वं करणीय, यत्र च करणे द्विकादिसंयोगपरिसंख्यानमेवागच्छति, एककसंख्यानं क्वतो दृश्य, सामर्थ्यलब्धत्वात्तस्य वोच्छेददेशकस्य शेष परमेक सकल न्यस्यते, तदपेक्षया दशक आदिमस्तेन तद्गुण्यते जाता १०, दशकाध एकस्तेन भागे हृते लब्ध १०, ते उपरिभागहारका न्यस्यन्ते, एवमन्यत्राप्येकोनर बुद्ध्या व्यो पदसंख्याया अग्रेऽपरमेक रूप सर्वत्र न्यसनीय तस्य च पूर्वप्रदर्शितप्रक्रियाविधाने कृते एगसंयोगे संख्यानं लभ्यते । अहवा - तीसपयाणेणेत्यादि नवमालोचनासूत्रविषयाणामित्यर्थ, न केवलं दशपदेष्टेष्टवपि करणमिति । उभयमुहं रासिदुगमित्यादिक पूर्ववदित्यर्थ, स्थापना कार्या एककादारभ्य एकोत्तरबुद्ध्या अकास्तावद् न्यसनीया यावत् त्रिशत्संख्य - स्थान, नवर त्रिशतोऽग्रे रूप न्यसनीय, त्रिशतोऽधस्तु एककादारभ्य तावद् नेय अका यावदुपरितनैककादारभ्य त्रिशक नत उवरिल्ल आइमेण गुणिक्रण इत्यादिश्रमेण कृते एककयोगा ३०, द्विकयोगा ४३५ इत्याद्यक स्थानानि भवन्ति, सर्वाग्र त्रिगुणदाना सूत्रसंख्यायाम् १०७३७४१८२३ । नवर - जत्थेत्यादि एककादिसंयोगेन निष्पन्नान् आगतफलरूपान् त्रिशत् पञ्चत्रिशदधिकचतु शताद्यान् भागहारकान् विन्यस्या नुद्धातिमैककद्विकादिसंयोगफल त्रिशदादिक तैर्गुणयेत्, त्रिशतो त्रिशत्स्थानेष्वेकैकस्थानगत फल गुणयेत्, एव त्रिकयोगादिकलेन च गुणयेत् तावद् यावत् त्रिशद्योगफलेन त्रिशत्स्थानगत फलमिति । इमं निदरिसणं ति निदर्शनमेतत्, सामान्ये य (?) मिश्रसंयोगफलगुणनताया न तु त्रिशत्पदागतमिश्रसंयोगफलगुणनविषये तत्रोद्धातिमानामैककयोगा दशपञ्चचत्वारिंशदादयश्च द्व्यादिसंयोगविषया, एते गुणकारा, एतेषु च गुणकारेण दशाप्यनुद्धातिमसंयोगफलान्येककबुद्ध्यादिसंयोगविषयाणि गुण्यन्ते, तत्र दशकेन दशादी यथाक्रमगुणने जात १०० । ४५० । १२०० । २१०० । २५२० । २१०० १२०० । ४५० । १०० । १० । एते उग्घाइय चैककसंयोगेर्दशभिर्दश पणयाला इत्यादिकस्य गुणने सपन्ना, एकत्र मीलने जात १०३३० । अघुना उग्घातिमद्विकसंयोगै पञ्चचत्वारिंशत्संख्यैरनुद्धातिमानामैकबुद्ध्यादिसंयोगफलानि गुण्यन्ते । जात ४५० । २० । २५ । ५४०० । ६४५० । ११३४० ।

सेसा उवरिभुहुत्तति शेषाणि षट्कसप्तमाष्टमनवमसंयोगफलानि पाश्चात्यगत्या यथाक्रम पञ्चचत्वारिंशता गुणितानि चतुर्थद्वितीयप्रथमसंयोगगुणितफलसंख्यानं भवति, दशकसंयोगे चैकस्मिन् पञ्चचत्वारिंशदेव एककेन गुणने तदेवेति न्यायात् तदत्र पञ्चकदशकसंयोगफल ११३८५, एतद्रूप पृथगुत्सार्य प्रथमसंयोगादिकल चतुष्क सम्मील्यते जात १७३२५, अस्य द्विगुणने ३४६५० । पञ्चकाद्युत्सारितफलमीलने जात ४६०३५ । एवमुद्धातिमत्रिकयोगै १२० एतावद्भिर्गुणने दशाना जात १२०० । ५४०० । १४४०० । २५०० । एकत्र मीलने ४६२०० । द्विगुणने ६२४०० । पञ्चकसंयोगे ३०२४० । दशकयोगश्च १२० । एतद्रूपमुभयो पूर्वराशौ मीलने १२२७६० । उद्धातिमचतुष्कयोगफलेन २१० गुणने दशादीना जात २१०० । ६४५० । २५२०० । ४४१०० । चतुर्णामेकत्र मीलने जात ८०८५० । द्विराहते १६१७०० । पञ्चकयोगफल ५२६२० । दशकयोगफल च २१० । एतद्रूपमुभयो पूर्वराशौ प्रक्षेपे आगत २१८८३० । अनुद्धातिमपञ्चकसंयोगफलान्यपि दशादीन्युद्धातिमपञ्चकसंयोगफलेन २५२ । एतावदरूपेण गुणनीयानि ततो जात २५२० । ११३४० । ५२६२० । ६३५०४ । अयं पञ्चकयोगो विभिन्न उत्सारणीय । षष्ठसप्तमाष्टमनवमफलानि च यथाक्रम पञ्चकसंयोगगुणितानि चतुर्थद्वितीयप्रथमसंयोगगुणितफलसंख्या प्रपद्यन्ते, तत चतुष्कमीलने ६७८२० । द्विराहते जात १६४०४० । एतस्य मध्ये दशकयोगफल २५२ । पञ्चकयोगफल च ६३५०४ । एतद्रूपमिलितं तत पञ्चकयोगसर्वाग्रमिदं २५७७६६ । अमु विभिन्नमुत्सार्य एकद्विकत्रिकचतु-

ष्कसयोगमवाग्रफलानि १०२३० । ४६०३५ । १२२७६० । २१४८३० । अमीषा मीलने जात ३६३८५५ । षष्ठसप्तमाष्टमनवमसयोगफल सर्वाग्रमायेनावदेवानो द्विगुणिते जात ७८७७१० । पञ्चकमयोगफनोत्सारितराशे प्रक्षेपे जात १०४५५०६ । एतच्च सन्धानमेककादीना नवान्ताना संयोगाना दशकसयोगफलानि च दशादीन्येककगुणानि तावन्त्येव मिलितानि च तानि १०२३ । अस्य च पूर्वराशौ प्रक्षेपे जात १०४६५२६ । एतदेवाह – मीसगसुत्तममास इत्यादि, एव कएसु त्ति दशसु पदेषु भगकरद्वारेण विस्तारितेषु यदि सा चेवेत्यादि आरोपणासूत्रदशकस्य यद्यप्यत्र सामस्येन पूर्वमूत्रान्तिदेशो दत्तस्तथाप्युच्चारण अर्थविशेषभगकमख्यानादिक च प्रतीत्य स द्रष्टव्यो न पुन सर्वथा, तथा चारोपणासूत्रविषयेऽन्यदपि बहु वक्तव्यमस्ति । तथाहि प्रायश्चित्ते आरोपिते गुरुणा तदुद्धत् आलापसभोगादिना परिहृत्यते शेषसाधुभिरिति पारिहारिकत्व, तथा चारोपणा पञ्चविधा भवतीति, तस्या स्वरूप तथा मासादय पच्छित्त वह्नो ज अन्न अनरा आवज्जइ मामादिक तत्थ ज जम्म दिवसगहणप्पमाण कज्जइ इत्यादिकमर्थ, जातमारोपणासूत्रविषय मर्वमित ऊर्ध्व सूत्रेण भाष्येण चूर्णाय च भणिष्यते । इयाणि सुतत्थाण ति पुच्छा इति शेष ।

दाणे द्वाणे० गाहा १ ॥ (पृ० ३७६ चतुर्थ भाग)

उपहित्यति सन्तारकादेरुपढौकनेन अग्येनास्यादानमनुपहितविधि जत्तिय चेव भणइ करेइ व त्ति सतसु भगकेषु वक्रत्वव्यवस्थापितपदेषु च विधिर्भवति ततश्चाष्टमभगे सर्वजुत्वादनु-
धास्त्यादीना त्रयाणा करणमेव सतसु च मध्ये यस्मिन् यावन्ति वक्राणि तावन्त सर्वे निषेदा
शेषाच्च तद्व्यतिरिक्ता ये ऋजवस्तेषु यदाचार्य उपग्रहादिक कुरुने वृत्तीयादिप्लपलादिक यद्भणति-
तत् सर्वं भुक्तलमिति सूचित इत्य गमनिकामात्रमिदमन्यथा वाऽभ्युह्य आवकपे इत्यादि
अपवादपदे छद्दिणज्भोसो कज्जइ इति भाव पूर्वश्च अन्यापेक्षया आद्यश्च अहवेत्यादि अत्र पक्षे
पूर्वस्मिन्नाद्ये सति अनु-पश्चाद्भावी अनुपूर्वद्विक तत पूर्व आद्यत्रिकापेक्षया अनुपूर्वो द्विको यस्या
परिपाट्या ता सार्वानुपूर्वीति विग्रह, यद्वा पूर्वस्मिन् अनु – पूर्व तत स एवेति पूर्वक एव स मास
कार्य, यथा पूर्वस्याद्यस्य त्रिकापेक्षया द्विकस्यानुपूर्वद्विको यस्यामिति विग्रह, मत्वर्थीयो वा इन्,
नवर तदाक्रम इति इत्य पुव्वपच्छुत्थरणविकप्पेण च उभगो कायव्वो त्ति ।

पुव्व पडिसेविय पुव्व आलोइय । पुव्व पडिसेविय पच्छा आलोइय ।

पच्छा पडिसेविय पुव्व आलोइय । पच्छा पडिसेविय पच्छा आलोइय ।

वित्तियततियभगा मायाविणो नरस्स ह्ति मायासद्भाव च स्वत एवाग्रे भावयिष्यति
किमर्थं पुनरसौ प्रथमन एवानुज्ञा याचते यावता यत्रासौ यास्यति स्थास्यति वा तत्रैवासावनुज्ञा
लप्स्यते इत्याह – एव तत्थ गीयत्था सभवाउ त्ति वृत्तीयभगशून्य इति तथा ह्याचार्यसद्भावे सति
यथा प्रथमालोचते तथा विकृत्यादिक गृहीत्वा गत सन् पश्चादपि तदन्तिके आलोचिते मायार-
हितश्च पश्चात् प्रतिसेवते इति शून्यता, पश्चादप्यालोचनसम्भवात् पूर्वमेवालोचते इत्यवधारण-
पश्य पदस्याघटनात्, अपलिउच्चि वा भावे त्ति मायारहितत्वसद्भावे इत्यर्थ, द्वितीयवृत्तीयौ च
मायासद्भावे स्त, भावशब्दात् पाश्चात्यान्त्यवर्णस्य दीर्घता वाक्यद्वयेऽपि प्राकृतत्वात् ।

अपलिउच्चि अपलिउच्चिय, अपलिउच्चि पलिउच्चिय, ।

पलिउच्चि अपलिउच्चिय, पलिउच्चिय पलिउच्चिय चतुर्थभग ।

अपलिउंच० गाहा ॥६६२४॥

भाष्ये यद्यप्यपलिउचणमिति नोक्त तथापि पलिउचण माया, तन्निषेधपरो निदेशो द्रष्टव्य, सूत्रे अकारयुक्तपदसदभावदित्याह, पलिउचणमित्ययं प्रतिषेधदर्शनादिति, पलिमत्ताए निउत्त त्ति गोभस्ते नियोजिता क्वचित् सूत्रादर्शे आदिचरिमावेव भगौ निर्दिष्टौ, द्वितीयतृतीयौ चार्थलभ्याविति, यदुक्तं प्राक् चूर्णौ, तदधुना सूत्रकार स्पष्टीकुर्वन्नाह - अपलिउचिय इत्यादि, अस्यार्थ इति त असणादिगहणेति त सामाचारीभासणाभिगह्णेणानिश्चानत प्रायश्चित्त भवतीति विशेषयति तथाह्यासन गुरोर्नीचमात्मीयासनसम वा यदि ददाति तदा सामाचार्युल्लघनमेव कृतं भवति, एवमित्यादि, वृषभशब्देनेहोपाध्यायो ग्राह्यो, भिक्षुश्च सामान्ययतिरेव, आलोचनाहं इति शेषः । नवर - कोल्हुगाणुगे विशेष इत्यादि आलोचकस्य कोल्हुगाणुगस्याचायदिरालोचनाग्रहणकाले आसन प्रतीत्य विशेषो भवति, निषद्या चेहौपग्रहिनी पादप्रौछनकल्पैव दृश्या, तत्र कोल्हुगाणुगो कोल्हुगाणुगसमीवे उक्कुडुग्रो आलोइतो सुद्धो, पायपु छणणिजिज्जोवविट्ठो पुण आलोइतो असुद्धो, सीहवसभाणुग वाऽऽलोचनाहं प्रतीत्य सो निषद्यापायपु छणोवविट्ठो वि सुद्धो इत्येषा भजना । अथ मिहाणुगतम् वृषभस्य, मिहानुगत्वं वृषभाणुगत्वे भिक्षोश्च कथं घटते अनुचितत्वात् ? इति चेद्, उच्यते, आलोचकेन ह्याचार्येणापि निषद्यादिविनयप्रतिपत्ति कृत्वैवालोचना ग्राह्या नान्यथेति, भिक्षुवृषभयोरपि मिहाणुगत्वादिव्यपदेशस्तत्काल प्रतीत्य सगच्छते । अत एवाह - जो होइ सो होउ इत्यादि सिहाणुगत्वादिका च पारिभाषिकी सज्जा, वसभस्स वसभाणुगस्स त्ति एक कप्पे उवट्ठि-नस्येत्यर्थः । भिक्खुस्स कोल्हुगाणुगस्स त्ति पायपु छगे उवविट्ठस्म भिक्षुपादनिषद्यात्वासनग्रहेण द्वाभ्या तप कालाभ्या प्रायश्चित्तं गुरुकं भवति ।

दोहि वि० गाहा ॥६६३१॥

एतस्या पूर्वार्धमाचार्यं प्रतीत्य सुगमम् । उत्तरार्धव्याख्यामाह - वसभाणवीत्यादिना । अथ दोहि वीत्यादिगाथाया वृषभमालोचनाहं प्रतीत्य प्रायश्चित्तनिरूपणपरताया भणिताया प्राग् अपर यथा द्वय भाष्ये दृश्यते तत् किमिति नामग्राहं न व्याख्यात - यावता तत्परिहारेण दोहि वीत्यादिगाथैव निर्दिष्टा ।

उच्यते - क्वचिद् भाष्ये गाथाद्वयं भवति क्वचिच्च नेति ततश्च यत्र तन्न भवति तत्प्रतीत्य तदर्थो मुक्तल एव चूर्णिकृता स्वतन्त्रतया कथितं तमभिवायं दोहि वीत्यादि भाष्यदृष्ट्या गाथापत्तौ यत्र च तद्भवति तत्र पाठान्तरत्वान्नामग्राहं ता गाथा गृहीत्वा विवरीषुरिदमाह, क्वचित् पाठान्तर एवमेव य गाहेत्यादि, तच्चेद -

एमेव य वसभस्स त्रि आयरियाईसु नवसु ठाणेसु ।

नवरं पुण चउलहुगा, तस्साई चउलहु अंतं ॥६६३२॥

उत्तरार्धव्याख्या यथा - तस्य सिहाणुगवृषभस्यालोचनाहंस्यालोचके आदिभूते सिहाणुगे आयरिए ४, वसभाणुगवसभस्स मध्यमस्थाने सिहाणुगपदभूते आचार्ये ४, कोल्हुगाणु वसभस्स अन्त्यस्थाने आदिभूता सिहाणुगा आचार्यं ६, द्वितीयगाथा यथा -

लहु लहुओ सुद्धो, गुरु लहुगो य अंतिमो सुद्धो ।

छल्लहु चउलहु लहुओ, वसभस्स उ नवसु ठाणसु ॥६६३३॥

भिक्षुमप्यालोचनाहं प्रतीत्य -

एमेव य भिक्षुस्स वि, आलोएंतस्म नवसु ठाणेषु ।

चउगुरुगा पुण आई, छगुरुगा तस्स अंतस्मि ॥६६३४॥

इत्यस्या नामग्रहणेनार्थम् -

एमेव य भिक्षुस्स वि, आलोईतस्स नवसु ठाणेषु ।

चउगुरुगा पुण आई, छगुरुगा तस्स अंतस्मि ॥६६३५॥

इत्यस्या नामग्रहणेनाथमेव मुत्कल चूर्णिकृत् कथितवान्, क्वचित् पुस्तकेऽस्या दर्शनात्, अत एव पाठान्तरत्वेन एनामपि गृहीत्वा व्याख्यातवान् । एव विभागयो एक्कासीत्यादि, सीहाणुग आयरिय पडुच्च आलोयणागाही आयरिओ तिहा - सी० व० को० ३ ।

वसभाणुग सूरि पडुच्च आयरिओ आलोयणो तिहा - सी० व० को० ३ ।

कोलुगाणुग पडुच्च सूरि आलोयणा आयरिओ तिहा सी० व० को० ३ सर्वे ६ । आयरिय आलोचनाहं प्रतीत्य आलोचकवृषभोऽपीत्य नवविधो वाच्य, ततो भिक्षुरप्येव नवविधो वाच्य । प्रत्येका सप्तविशतिर्नवरमाचार्यस्यालोचकस्य प्रायश्चित्त उभयगुरु, वृषभस्यालोचकस्य तपोगुरु, भिक्षोरालोचकस्य कालगुर्विति वाच्यम् । एव वृषभो आलोयणाहं सिद्धा सी० व० को० । एतदधो आलोचनागाही सूरि पूर्ववद् नववा वाच्य, वृषभोऽप्यालोचनागाही नववा वाच्य, भिक्षुरपि नवविध इति द्वितीया सप्तविशति, तृतीया तु भिक्षुमालोचनाहं प्रतीत्य आचार्यवृषभभिक्षूणा नव नव पदै सप्तविशतिरिति ।

जे त्ति य साहु त्ति जे इति निर्देश साधुसूचक । जाणि य तेरसपयाणि एसा पारचियवज्जिय त्ति पारचिकमेकवारैव दीयते इति तस्यैकविधत्वात् तद्वर्जनं, शेषपदानि बाधित्यानेकविधा प्रस्थापना भवति, तेषामनेकवार प्रदानात् । त कसिण ति तत् सर्वमारोप्यते । अणुगहेण वि त्ति तत्थाणुग्गह छण्ह मासानमारोवियाण छद्विसा गया, ताहे अन्नो छम्मासो आवन्नो, ताहे ज जेण अद्धवूढ त भोसिज्जइ, ज पच्छा आवन्न छम्मासिय त वह्ति, एत्त पचमामा चउवीस च दिवसा जेण भोसिया एय अणुग्गहकसिण, णिरणुग्गहेण व त्ति जहा छम्मासिए पट्टविए पचमासा चनुवीस च दिवसा वूढा ताहे अन्न छम्मासिय आवन्नो त वहइ, पुव्विल्लस्स छद्विणा भोसो ।

मानासानान्मास इत्यस्य वाक्यस्यान्वर्थमाह - अत्यानीत्यादिना (?) इह शून्यातावित्यस्य निपातनान्मास इति, असतीति वाक्य चूर्णिवाक्यत्वात्, यद्वा भौवादिकोऽस गत्यर्थोऽप्यनेकार्थत्वात् व्याप्त्यर्थस्तस्येद रूपमिति, मानाद्वेति स्वमानेन द्रव्यादीन् प्राप्तोतीति मास, तथाहि मासस्त्रिषन्न द्रव्य मासिकमुच्यते, इति स्वमानेन द्रव्यप्राप्ति, क्षेत्रे च तास्थ्यात् तदव्यपदेशो द्रष्टव्य । परिहार्यत इति चूर्णित्वान्, वाक्य तु - परिहृत्यत इति ज्ञेय, तिष्ठन्त्यस्मिन्निति तपोविशेषे इति - स्थान आदिकर्मण्य च उदीरणचेत्यादि द्वन्द्व, अन्त आद्यन्तरूप राति गृण्हातीति अनर मध्यमुक्त, प्रतिदानयो प्रतिसन्निधानयोरिति नावबुध्यते मूलगुणादे प्रतियोगोच्यते, आहमर्थादयाऽशुद्धनिजाभिप्रायप्रकटन सन्दर्शनम् आलोचनम् । प्ररञ्जते नमसा व्याप्नोते या सा रात्रि निपाननात्, रञ्जते वा स्यादौ प्राण्य

स्थामिति रात्रि, रात्रिशब्दस्य राग प्रवृत्तिनिमित्त, रागश्च दिवसोऽपि भवतीति रात्रिशब्दोपादानेन तदपि ग्राह्यम्, उभयोऽपीति दिने रात्रौ च इह छम्मासिय परिहारद्वान् पटुविण् - अतरा दो मासा पडि वीसइराइया आरोवणा इत्येक वाक्यम् । द्वितीय च आइ मज्जे अवमाणे य सट्ठ इत्यादि तावद् यावत् सवीसतिराइया दो मास त्ति तत् आदिवाक्येन सामान्यतः विशत्यारोपणाऽऽरोप्यते विशेषतश्च प्रायश्चित्तनिमित्तकवस्तुनो विवक्षायामनूनातिरिक्तमारोप्यते यदि तदा द्वौ मासौ विशतिरात्रिन्दिवाभ्याधिकावारोप्यौ, प्रथमासेवनाया तदुपरि वा सेवने त्रिशतिवृद्धिरेव प्रतिपद कार्या इति । प्रतिसूत्र मामान्यारोपणा च प्रथमासेवनवारा प्रतीत्य द्रष्टव्या ।

तेण मूल वत्थुणा सहेत्वादि यस्मिन् शय्यतरपिडादावाहनादिदोषदुष्टे द्विमासिकापत्तिस्तन्मूल वस्तु, तथाचोक्तं प्राक् सागारियपिडाहडे दोमासिय त्ति प्रायश्चित्तनिमित्तक वस्तुद्विस्वान्यूनातिरिक्तद्वे नारोपणयो परमाण भवतीत्यस्यैवार्थमाह - न आवत्तिमाणमित्यादि, आपत्तिर्मासिकद्वयरूपतद्रूप मान न ।

कोऽर्थः ? मासिकद्वय शुद्ध, न केवला विशत्यारोपणा, किन्तु परमन्यदेवारोप्यते, विशत्यधिकमासद्वयमित्यर्थः । अहवा - इमो अनो वि आदेशो इत्यादि अत्र व्याख्यानेन प्रायश्चित्तनिष्पत्तिकारण वस्तुत्पत्तेश्चशब्देन किन्त्वर्थं प्रयोजनं तच्चात्मन परस्य वा वैयावृत्यादिकरणरूप तस्मिन् हि क्रियमाणे न प्रायश्चित्ततप उद्बोद्धुं शक्यते, अत उभयतरगादिक कारण प्रतीत्य प्रथमवारासेवने विशत्यारोपणान्यूनातिरिक्ता रोपणीया, एषा च ठवियगा कज्जइ ।

उभयतरागादिगो त्ति काउ पुणो पडिसेविण् शठ इति कृत्वा मासद्वय दीयते, पाश्चात्यया विशत्या युक्त एगम्मि प्रायश्चित्ते बुज्झमाणे अतरा अन्नमावज्जइ, त मज्जवत्तिय ठविय कज्जइ त्ति काउ ठवियसन्न लभइ तत्प्रतिपादका सुत्ता ठवियसुत्ता, त पि य बुज्झमाणे पटुवियसन्न पि लभइ, एव च बुज्झमाणपच्छित्तवत्तव्वयाभिहाइणो सुत्ता पटुवियसुत्ता भन्नन्ति, अतरा आवत्ताना तेसि चैव बुज्झमाणवत्तव्वया प्रतिपादनपरा सुत्ता ठवियसुत्ता । सवीसतिराइय दोमासिय परिहारद्वान्मित्यारभ्य ठवियसुत्ता तावत् यावद् दसरायपचमासिय परिहारद्वान् पटुविण् अणगारे जाव तेण पर छम्मासा इत्येतदन्तम् । एतावता च षण्णामिण् पटुविण् द्विमासापत्तिलक्षणसूत्रमाश्रित्य ठवियसूत्राण्युक्तानि, इत ऊर्ध्वं शेषमासविषये चूर्णिसूत्राणि वाच्यानि, तान्येव भणितुमुपक्रमते ।

इयारिण् अत्यवसओ इत्यादिना, एतानि वाच्यत्वादियारिण् मासियसजोगसुत्ता लक्षणपत्तेरित्यादिवाक्यमिति स्थापनासूत्रादर्शसूत्रसत्कार्यत अत्र च षण्मासिकादिपदमध्ये चूर्णो द्विमासिकपद न भवति । षण्मासिक प्रस्थापितप्रतीत्य द्विमासिकस्य सूत्रैवाभिहितत्वात्, सव्वाओ लक्खणाओ पत्ताओ त्ति सर्वा सयोगसूत्रजानयो लक्षणात् प्राप्ता सामर्थ्याल्लभ्या इत्यर्थः । षण्मासिके प्रस्थापिते द्विमासिकलक्षणसूत्रोक्तद्विकस्थानव्यतिरिक्ता त्रिकादिसयोगा अन्त्या आद्याश्च द्विकान्यास्यान्त्या एकरूपा, तथा एसि पि सव्वासि ति एतासा मामिकादिषण्मासान्ता सर्वासो सूत्रजानीना स्थापना १ २ ३ ४ ५ ६

१ २ ३ ४ ५ ६

१५, २०, २५, ३०, ३५, ४० ।

आद्य प्रस्थापितपत्ति, द्वितीया आपत्तिपत्ति, तृतीया आरोपणापत्ति । मासिण् पटुविण् चाउम्मासिण् पडिसेविण् तीमडमा आरोवणा से अद्धा दिज्जमागा मामचउवक तीसारोवणाय मिलिय पचमासा भवति । एतदेव ठविया सुत्तमित्थ पदे भवति । एय ठवियसुत्त पटुवणासुत्त किच्चा भणइ - पचमामियमित्यादि, तेण पर पच्चाणा चत्ताग्गि माम् त्ति जओ आगेवणा पणुवीसिया

मट्टा दिज्जमाणा चत्तारि मामा तहाहि सट्ठी इत्यादिन्यायेन मासा ३ आरोवणा २५ पचदिणा हीणचत्तारिमासा ।

इयाणि मासिय सजोगे सुत्तेत्यादि सूत्रादर्शसूत्राणि छम्मासिय परिहारदुण पटुविए अतरा मासिय परिहारदुण सेवित्ता इत्याद्यारभ्य तावद् यावद् अट्ठ मासिय जाव तेण पर छम्मासा इत्येतदन्तानि वाच्यानि, एनान्येव चूर्णिकारो व्यलीलित्त् पटुविया सुत्त त्ति एतानि प्रदर्शितरूपाणि प्रस्थापिनसूत्रा ण गतानि । अधुना पटुवियमुत्तेसु जे ठवियसुत्ता आसी ते भन्नति- दिवड्डुमासियमित्यादि, अत्र क्वचित् ठवियसुत्ता इति पाठ क्वचिन् पटुवियसुत्त त्ति, तत्राद्य उत्तरसूत्रपातनापेक्षया योज्य, यत्र त्विनरसूत्रपादवान्निगमनतायती एव छम्मासाइपटुविए इत्यादिक षण्मासान्ते यथाक्रमेण ॥१५॥२०॥२५॥३०॥३५॥४०॥ इत्येवरूपा विकला स्थापिता सती स्वस्थानवृद्ध्या षण्मासावसाना यका भवन्ति, सो उक्तेनि तथाहि षण्मासे प्रस्थापिते यदारोपणा पाक्षिकी आरोप्यमाण सट्ठ इत्यादि न्यायेन दिवड्डो मासो आरोविज्जइ, इतीय विकला परिपूर्ण- मासानामभावान् यद्यपर पक्ष स्यात् तदा परिपूर्णमासद्वय किं भवे, स च नास्त्यतो विकलत्व तथा स्थापिता चेय, तथाहि जो सो दिवड्डो मासो ठवियपटुविओ यश्च मास प्रतिमेविन जाया दो मासा । दोमासिए पटुविए पुणो वि मासिग सेवइ, इत्येव पाक्षिकारोपणेन तावद्वाच्य यावदपरे षण्मासा पूर्यन्ते इति स्वस्थानेन मासिकलक्षणेन वृद्धिरिति । यद्यपीहापरा मामामेवनेन द्विमासादि विजातीय जायते तथाप्येकदोपटुष्ट मासिकयोग्य किंचिदसेवित येन माम एव भवन्ति, ननु दोषद्वयदुष्ट सेविन गय्यानरिण्ड सोऽप्यद्वयदोषदुष्ट इति, येन युगपदेव स मासिकद्वयमा- पद्यते ततो मासस्य प्रस्थापितत्वाद् मासस्यैव च सेवनात् स्वस्थानवृद्धित्वणापरापरमासेवनेन प्रायश्चित्तवृद्ध्या षण्मासावसाना वृद्धिरुक्ता, अधुना तु परिपूर्णमासाना प्रस्थापनद्वारेण रोपणा स्वस्थानवृद्ध्या परस्थानवृद्ध्या सा प्रोच्यते विरुद्धमासप्रस्थापनाकृत सकलमासप्रस्थापनकृतश्च पातनिकाया विशेष, तत्र मासे प्रस्थापिते परमासाना प्रतिसेवने पक्ष पक्ष आरोपणेन यत्र षण्मासा पूर्यन्ते सा स्वस्थाने वृद्धि । एव द्विमासादिष्वपि योज्यम् । यथा मासिके प्रस्थापिते द्विमासिके वा सेविते विशत्यारोपणेन यत्र षण्मासा पूर्यन्ते सा परस्थाने वृद्धि । एव त्रिमासा दिसेवनेन षण्मासे पूरणमपि परस्थानवृद्धि ।

मामियठविए इत्यादि प्रायश्चित्तमवहत् सत स्वतन्त्र एव शय्यातरपिडादिपरिभोगतो यो मास आपन्न स वैयावृत्त्यकरणादौ साधोव्यापृतत्वात् स्थाप्य कृत आसीत् । तत कार्ये समर्थिते मास उद्वोढुमारब्ध इति स्थापितत्वं, एव दोमासिग्रामु वि पटुविएसु त्ति दोमासिए ठवियपटुविए दोमासिय पडिसेवइ इत्येव तावद्वाच्य बीयारोवणा तेण पर सबीसइराइया दो मासा सबीस- इरायदोमासिए ठवियपटुविए दोमासिय बीसियारोवणा इत्येव तावद्वाच्य यावत् षण्मासा इति स्वस्थानवृद्धि ।

दोमासिए पटुविए तेमासिए पडिसेविए पणुवीसारोवणा दोमासा । पणुवीसतिराय दोमासिए पटुविए तेमासिए पडिसेविए पणुवीसारोवणा, तेण पर पणुवीसतिराया दोमासिय पटुविए तेमासिए सेविए पणुवीसारोवणा, इत्येव तावद् यावत् षण्मासा इति परस्थानवृद्धि ।

इयाणि दुगसजोगे इत्यादि मासे प्रस्थापिते मास द्विमासयो सेवनेन षण्मासपूरण विधीयते, एव मासे प्रस्थापिते मासियतेमासियप्रतिसेवनेनद्विक्वशोगे षण्मासा पूरयितव्या इत्येवमन्येष्वपि । कारण त चेवत्यादि छम्मासाइरित्तो तवो न दिज्जइ इत्येव रूप । नाहेत्यादि

दुविहं त्ति सट्ठाणपरट्ठाणे हिट्ठे विध्यमित्थर्थं । एव एयस्स वीत्यादि एतस्यापि द्वौ मासिकस्य प्रस्थापितस्य सर्वे द्विकसयोगादयः सयोगा वाच्या, यथा मासद्विमासरूपो द्विकयोगस्तथा मासादिरूपोऽपि वाच्यः, अत्र स्थाने निशीथसूत्रं सर्वं समर्थितम् ।

इत ऊर्ध्वं शे चूणिंकारो भाष्यकारश्च भणिष्यति । एव तेमासिएत्यादि मासद्विमासादिप्रतिसेवनरूपो द्विकयोगः, मासद्विमासत्रिमासादिरूपस्त्रिकादियोगः, अत्र च यद्यप्येकयोगा ६, द्विकयोगा २०, चतुष्कयोगा १५ पचकयोगा ६, षड्योगश्चैकस्तथापि मासिक एव स्थापितं द्विमासिके वा प्रस्थापिते सर्वे ते सगच्छन्ते । त्रैमासिके प्रस्थापिते द्विकयोगात्रिकयोगचतुष्कयोगा एव भवन्ति, न परतः षण्मासानामाधिक्यात्, तथाहि - चाउम्मासिए ठवियपट्ठविए मासिए पडिसेविए पक्खिया आरोपणा, तेण पर अट्ठपचममासा अट्ठपचममासेसु पट्ठविएसु दोमासिए सेविए वीसियागेवणा, तेण पर सपचराया पचमामा तेसु पट्ठविएसु तेमासिए सेविए षण्णवीसारीवणा, तेण पर छम्मासा, इत्येव त्रिकयोगमेव यावच्चानुमासिकप्रस्थापनानि सगच्छन्ते, तदूर्ध्वं चतुष्कयोगानाश्रित्य चतुर्माससेवने आरोपणायास्तत्र त्रिगद्विरूपत्वात् सप्तमामा जायन्ते, षण्मासाधिक्यात् । यत्र चूर्णौ चानुमासिकपचमामिकपदे आश्रित्यैककादयः षट्कपर्यवसाना ये अत्रा निर्दिष्टास्ते न सयोगसंख्याकथनपरतया किन्तु सयोगोच्चारणार्थं स्थापनामात्रतया दणिता । एवमङ्कानुर्ध्वमश्च व्यवस्थाप्य द्विकादयः सयोगाश्चार्थन्ते, सयोगरूपास्तु यत्र पदे यावत् तत्प्रशङ्गिनरूपमेव द्रष्टव्यमित्येव गमनिकामात्रमुक्तं, तत्र तु बहुश्रुता विदन्ति । एव दोतीत्यादि इह षण्मासपदनिर्देशो सर्वत्र कारणं षण्मासाधिक्यतोऽभावरूपं द्रष्टव्यम् । एयासम्मीत्यादि, पढममुत्तमं त्ति आरोपणामूत्रदशकविस्तरस्य प्रस्तुतत्वात् प्रथमं प्रत्येकसूत्रमरोपणाविषयं तद्विषयं सर्वमेतद् द्रष्टव्यम् । द्वितीयं बहुमसूत्रं तत्रापि सर्वमिदं द्रष्टव्यं बहुसांभिलापेन । नवर - ठवणं त्ति छम्मासिए पट्ठविए इत्येव निर्देशरूपं ठवणाठाणं मामियं पडिसेवित्ता आलोएज्जा इत्येव निर्देशस्वरूपं पडिसेवणाठाणं कसिणमुत्ते सगले सुत्ते इत्यर्थः । मासियं ठवियपट्ठविए अतरा बहुसो मासियं पडिसेवइ इत्यादिकानि ठवियपट्ठवियमुत्ताणि एनेषु द्विकसयोगात्रिकसयोगादयः सयोगा बहुससूत्रेष्वपि द्रष्टव्या इत्यर्थः । जिणाडयं त्ति जिनकल्पिकादयः हुमियं च त्ति आपन्नाल्लघुतरं । पुणो इयं त्ति उत्तराध्वं व्याख्येयम् । ते चैव त्ति ते पुनरित्यर्थः तहारिहं त्ति भाष्यपदान्तस्य व्याख्यानेहि आयरिया योगा वूढं त्ति तथा तथा चरित्ता इति । सावेक्खपुरिसाणं भेदकरणं तत्र तत्थं निरविकले पारचिणं इत्यादि निरपेक्षं - जिनकल्पिकादिस्तस्य पारचिकमापन्नस्यापि पारचिकं न दीयते, गच्छन्निर्गन्तवादेव, तेषां गच्छान्निष्कासनादिकरणरूपं हि तिलं पारचिकं भवति, द्वयोः प्रायश्चित्तयोर्मैव्याद् यत्रैकमग्रेतनपदे याति सार्धेऽपक्रान्तिरुच्यते, अर्धम्यात्रक्रममुत्तरत्र गमनं यत्रेति कृत्वा, एव अणवट्ठे वीत्यादि अणवट्ठावत्तीए अणवट्ठो कज्जइ, मूलं वा दीयत, इत्येवमादेशद्वयम् । अतरा वहं त्ति अनवस्थाप्यकरणपक्षे भिक्षोरंगीनार्थेऽस्थिरे प्रकृतकरणे इत्येव-रूपास्त्यपदे चतुल्लघुर्भवति । मूलदानपक्षे द्वितीयेऽस्त्यपदे मासगुरुर्भवति । इत्थं वि त्ति अनवस्थाप्यापन्नो मूलापत्तौ आचार्यादिकं प्रतीत्य मूलं वा दीयते, छेदो वा क्रियते, इत्युत्तरत्र वक्ष्यति -

मन्वेमि० गाहा ॥

भाष्यकारेण मूलप्रायश्चित्तमादौ यदुक्तं तत्र सर्वेषां जिनकल्पिनादीनामाचार्यादीनां च मूलापत्तौ मूलं दीयते एव इत्येवमाश्रित्योक्तम् पारचिकानवस्थाप्ये च सावेक्षाणामेव जिनकल्पिकादेरपीति तच्चिन्ता चूर्णिकृताऽभिहिता, अत्र यन्त्रकमुत्तिष्ठते यथा जिनकल्पिया आयरिओ कयकरणो २, अकं क ३ उव कय ४, अकय ५ भिवख् गोओ थिगे कय ६ । भि,

गी थि ङ्क ७।मि गी थि ङ्कय ८।मि गी ङ्थि कय ९।मि ङ्गी थि ङ्कय १०।मि गी
ङ्थि ङ्क ११।मि ङ्गी ङ्थि. क १२। एतेषु यथाक्रम पारचिकापत्तौ प्रायश्चित्तम् ।

द्वितीयपत्तौ निरूप्यते यथा शून्य - ०। पार । अण । अण । मू । मू । । ।
६। ६। ६। ६। धी।

तृतीयपत्तौ पारचिकापत्तावाप्यादेशान्तरेणेत्य, यथा - शून्य अण । मूल । मू । । ही।
ही। ६। ६। धी। धी। व्व।

चतुर्थपत्तौ सवषा मूलापत्तौ यथाक्रम मू । मू । । । ही। ही। ६। ६। धी।
धी। व्व। व्व। ०।

पचमपत्तौ सर्वेषा छेदापत्तौ छे । छे । ही। ही। ६। ६। धी। धी। व्व।
व्व। ०। ०। ०।

षष्ठपत्तौ ही। ही। ६। ६। धी। धी। व्व। व्व। ०। ०। ०। २५।
सप्तमपत्तौ ६। ६। धी। धी। ४। व्व। ०। ०। ०। ०। २५। २५। २५।
अष्टमपत्तौ धी। धी। व्व। व्व। ०। ०। ०। ०। २५। २५। २५। २०। २०।
नवमपत्तौ व्व। व्व। ०। ०। ०। ०। २५। २५। २५। २५। २०। २०।
२०। २०।

दशमपत्तौ ०। ०। ०। ०। २५। २५। २५। २५। २०। २०। २०। २०। १५।
एकादशपत्तौ ०। ०। २५। २५। २५। २५। २०। २०। २०। २०। १५।
१५। १५।

द्वादशपत्तौ २५। २५। २५। २५। २०। २०। २०। २०। १५। १५।
१५। १५।

त्रयोदशपत्तौ २५। २५। २०। २०। २०। २०। १५। १५। १५। १५।
१०। १०।

चतुर्दशपत्तौ २०। २०। २०। २०। १५। १५। १५। १५। १०। १०।
१०। १०। ५।

पचदशपत्तौ २०। २०। १५। १५। १५। १५। १०। १०। ५। ५। ५।
षोडशपत्तौ १५। १५। १५। १५। १०। १०। १०। १०। ५। ५। ५। दशम।
सप्तदशपत्तौ १५। १५। १०। १०। १०। १०। ५। ५। ५। ५। दशम।
दशम। अट्टम।

अष्टादशपत्तौ १०। १०। १०। १०। ५। ५। ५। ५। दशम। दशम अट्टम।
अट्टम। छट्टु।

एकोनविंशतिपत्तौ १०। १०। ५। ५। ५। ५। दशम। दशम। दशम। अट्टम।
छट्टु। छट्टु। चउत्थ।

विंशतिपत्तौ ५। ५। ५। ५। ५। दशम। दशम। अट्टम। अट्टम। छट्टु। छट्टु।
चउत्थ। चउत्थ। अबिला।

एकविंशतितमपक्तौ । ५ । ५ । दशम । दशम । अट्ट । अट्ट । छट्ट । छट्ट । चउ । चउ ।
अबि । अबि । एकासणा ।

द्वाविंशतितमपक्तौ । दशम । दशम । अट्ट । अट्ट । छ । छ । चउ । चउ । आयाम ।
प्रायाम । एगा० । एगा० । पुरिम० ।

त्रयोविंशतितमपक्तौ अट्ट । अट्ट । छ । छ । च । च । आया० । आया । एगा ।
एगा । पुरि । पुरि । निव्वीय ति । एत्थ एक्केत्यादि चरिम पारचिक द्वितीयपक्त्यादौ निर्दिष्ट
तस्मादारभ्य तृतीयाश्रयाश्चित्तपक्तीक्रमेण तावन्नयन्ति यावत् पचदशीकपक्तीरिति पोडशाद्या
पक्ती नेच्छन्ति, अन्ये तु पचकादुपर्यपि दशमादिष्वपि पदेष्ववस्थान मन्यन्ते ।

चतुर्विंशत्यादिका पक्तीराश्रत्य यन्त्रक यथा छ । छ । चउ । चउ । आया । आया ।
एगा । एगा । पुरि । पुरि । निव्वीय ति ।

पचविंशतितमपक्तौ चउ । चउ । आ । आ । एगा आ । एगा । पुरि । पुरि । निव्वीय ति ।

षड्विंशतितमपक्तौ आ । आ । एगा, । एगा । पुरि । पुरि० निव्वी० ।

सप्तविंशतिपक्तौ एगा । एगा । पुरि । पुरि । निव्वी ।

अष्टाविंशतिपक्तौ पुरि । पुरि । निव्वी ।

एकोनविंशतपक्तौ निर्विकृतकमादिपद एव ।

पढमस्स० गाहा ॥

जिनकालिकस्य पारचिकापक्तौ मूलापक्तौ वा मूलमेवेत्यर्थं । आचार्यादिस्तु मूलापक्तौ मूलं
वा दीयते छेदो वा विधीयते इत्ययं विकल्पः । जे सेसे त्ति अस्थिरा कृतकरणा दोन्नि अकयकरणत्ती
त्यादि सप्तमाष्टमनवमा दशमपदविहारेण एकादशद्वादशत्रयोदशपदवाच्याश्च ये तेषामित्यर्थः,
द्विकाद्यन्तरितं बहु तरितं चेत्यर्थः । अजयणं करेतस्सावणाय त्ति तत्राचार्यस्य ४, उपाधायं व्वं भि
थिगथिरो न कज्जइ त्ति गीतार्थस्य स्थिरस्यैव भावादित्यर्थः । आयरियं कय १ अकय २, ठव क ३,
अकय व्व, ४ भिक्खु गीओ कय ५, भिक्खु गी अक ६, भि गी थि कय ७, भि अगी
थि ङक ८, भिङ्गी ङथि क ९, भि गी ङथि क १०, एतेषु दशसु पदेषु प्रायश्चित्तं
यथा आयरिए कयकरणे पचराइदिय आवन्ने त चेव ५, अकृतकरणादिषु द्वितीयादिषु यथाक्रम
अभत्तट्ठो २।अ ३, अबि व्व अबि ५, एगासणा ६, एगा ७, पुरि ८, पुरि ९, अते निव्वीय १० ।

द्वितीयं प्रायश्चित्तपक्तौ यथाक्रमं दसराइदिएसु आढत्त १० । ५ । ५ । अभ व्व अभ
५ । अ ६ । अ ६ । अ ७ । एगा ८, एगा ९ । पुरि १० ।

तृतीयपक्तौ पचदशसु आढत्त १२ । १० । १० । ५ । ५ । अभ । अभ । अ । अ ।
का ॥१०॥

चतुर्थपक्तौ यथाक्रमं २० । १५ । १५ । १० । १० । ५ । ५ । अभ । अभ । अबि ॥१०॥

पचमपक्तौ २५ । २० । २० । १५ । १५ । १० । १० । ५ । ५ । अभ । १० ।

षष्ठपक्तौ मासलहुगाओ आढत्त ० । २५ । २५ । २० । २० । १५ । १५ । १० । १० ।

सप्तमपक्तौ द्विमासिकादारद्ध ० । ० । ० । ० । २५ । २५ । २० । २० । १५ ।

अष्टमपक्तौ त्रिमासिकादारद्ध ००।००।०।०।२५।२५।२०।२०।१५।
 नवमपक्तौ चतुर्मासिकादारद्ध ० ०।तेमा०।तेमा०।दोमा०।दोमा०।०।०।२५।२५।
 दशमपक्तौ लघुपचमादारद्ध १५।व्व।व्व।३।३।२।२।०।०।२५।
 एकादशपक्तौ ६।६।५।व्व।व्व।३।३।२।२।०।
 द्वादशपक्तौ छेद ६।६।५।५।व्व।व्व।३।३।२।
 त्रयोदशपक्तौ मूलाग्नौ आढन मू०।छे०।छे०।६।६।५।५।व्व।व्व।३।
 चतुर्दशपक्तौ अणवट्टाग्नौ आढत्त अण।मू०।मू०।छे०।छे०।६।६।५।५।व्व।
 पचदशपक्तौ पारचिकादारद्ध पार०।अण०।अण०।मू०।मू०।छे०।छे०।६।
 ६।लघुपचमासि ए ठाड, अत्र च नगोरूपाणि प्रायश्चित्तानि सर्वाण्यपि लघूनि वाच्यानि, गुरूणि न।

एमेव गमो० गाहा ॥

अनया गाथयाऽऽरोपणामूत्रदृग्कविषयमुपयुज्य सर्वं वाच्यमित्याचष्टे तत्र सकलसूत्रविषय उक्ते प्राक् शेषे तु वाच्यमित्याह एवमित्यादि, एव प्रदर्शितरीत्या उद्घातिममासादिसकलसूत्रारोपणा पुनस्तावद् भणिता। उद्घातिममास्यारोपणासु च भणितासु अनुद्घातिमविशेषितास्ताएव भणनीया, उद्घातिमानुद्घातिममिश्रयोगारोपणा अपि वाच्या, मासद्विमासाद्यापन्ते तदुपयुज्यवाच्यमित्यर्थः। एव सानिरेकमासिकाद्यापत्तौ नदारोपणा वाच्या लघुपचकमातिरेकमासिकाद्यापत्तौ नदारोपणा वाच्या। इत्यादि एतास्वापत्तिषूपयुज्यमानं दातव्यम्। नवर—परिहारो न इति, सयतीना पाणिहारिकतपो न दीयते, शेषसाधुभिः साध्वीभिश्च परिहृत्य इत्युक्तं भवति, तस्सेव पाणाश्वायस्सेत्ति तस्मिन् त्ति पठमशान्ते पठमपोरूपा ए इत्यादि करकर्मकरणोत्पन्नाभिन्नापापेक्षया प्रथमपोरूपीप्रमाणकालमात्रमध्ये तत्करणे मूल, प्रथमपोरूपीमुत्पन्नापेक्षया प्रतीक्ष्य द्वितीयपोरूपाकरणे छेद इत्यादि वाच्यं, न पुनः सूर्योद्गमापेक्षया प्रतीक्ष्य पोरूपाकरणे छेद इत्यादि वाच्यम्, न पुनः सूर्योद्गमापेक्षया प्रथमपोरूपादि कालमानं ज्ञेयम्। अर्थः गृहं निपद्या निश्चयेन करोत्येव सूत्राऽपि करोतीति वाचनाचार्येच्छया वा।

कोऽर्थः ? न करोतीत्यपि कदा च नेति अथे च शृणोति शिष्य उत्कटुकं सन् कथं कच्छति उति उत्कृतकश्च विहितममस्तवमतिप्रमार्जनादिव्यापारं सन् अथ च सूत्रार्थग्रहणादिविग्रिन्नेव प्रागेकोनविगर्तनमे उद्देशकं “जे भिक्खू अप्पत्तं वाएह्” इत्यत्र सूत्रे विस्तरेणोक्तस्तस्माद् बोद्धव्यं, गणपरिपालकं पूर्वगते श्रुते तद्गते अर्थे च लिगेत्यादि लिगक्षेत्रकालानाश्रित्यानवस्थाप्यपारचिको यते अद्यापि प्रवर्तते न तु व्यवच्छिन्न इत्यर्थः। द्रव्यालग्नाह्यं नपुंसकाशकारं दृष्ट्वा पारचिको विधीयते, असौ सयतो न क्रियते परिहृत्यते इत्यर्थः। कृतो वा कारणे गच्छान्निसारणेन परिहृत्यते इति पारचिकता, भावतस्त्वनुपरतमोहोदयभावो परिहार्या, एतेऽनलादयो ब्रूते नावस्थाप्यन्ते इत्यनवस्थाप्यताऽपि घटते, मलिनविसोहिं व त्ति मलिनत्वविशुद्धिप्राशस्त्यदानं निमित्तं च पाणिहारिकत्वशुद्धनपोदानरूपमिति सभाव्यते।

देव्य० गाहा —

अल्पधिको देवताविशेषोऽन्यत्रग्रमादेऽपि वर्तमानं शुद्धचारित्रिणं छलयेत् किं पुनः सर्वप्रमादस्थानवर्तिनम् अवश्यं तस्य देवतापायः स्यादेव, इति तं मुक्त्वेत्युक्तं, तथा चोक्तम् —

“अतयरपमायनुअ, छलिज्ज अप्पिडुओ न उण जुत्तमि” ति —

घाडिय त्ति मित्त जइरि त्ति भाष्यपद यदृच्छा सेत्यर्थ । कायणुवाइ त्ति भाष्यपदं पृथिव्यादीना यत् काय शरीर तस्यानुपातेन विनाशेन बधकस्य बन्धो भवति, पृथिव्यादीना द्वीन्द्रियादीना च बध्याना यानीन्द्रियाणि तदनुपातेन च वीसइमे उद्देशे भणिय त्ति प्रभूततरेण्यापत्त षण्मासनया कृत्वेत्यर्थ । अववायमनरेणेत्यादि अपवादचिन्ताव्यतिरेकेणैव यतना अयतनाश्च उक्त । कहए न य सावए लज्जि त्ति भाष्यपद - कथके श्रावके च श्रोतरि कथकश्रोतृभ्या लज्जा न विधेया इत्युक्त भवति । वपरूवग इम त्ति वप्र केदारो जलभृतस्तेन रूप्यते उपमीयत इति वप्ररूपण, भाविता सजाता गुणा सत्यादयो यस्य तत सस्यवद्भूमौ सजातगुणे सति को यो वप्रस्नस्मिन्नीवेति अकृपियाण त्ति अयोग्याना समारश्चतूरूपो गति चतुष्कभेदात् पच-प्रकारश्च एकेन्द्रियद्वीन्द्रियत्रीन्द्रियादिभेदात् । षट्प्रकारश्च पृथिव्यप्प्रभृतिभिर्भेदात् इति सम्भाव्यते । (मभाव्यन्) घोर त्ति क्वचिन् पाठो भाष्ये क्वचिच्च दीहे त्ति नतो द्वितीयपाठ-मप्यर्थनो व्याख्यातवान्, दीह कालमित्यनेन, अनवदग्रोऽपरिमित ।

इदानी चूर्णिकारो यदर्थ मया चूर्णि कृता इत्येनदाविष्करोति -

जो गाहेत्यादि गाथा शब्देन भाष्यगाथा निबद्धत्वादिभिधीयते, ततो गाथा च सूत्र च नयार्थ इति विग्रह । पागडो त्ति प्राकृत प्रगटो वा पदार्थो वस्तुभावो यत्र स, तथा परिभाष्यतेऽर्थोऽनयेति परिभाषा चूर्णिरुच्यते ।

अधुना चूर्णिकार स्वनामकथनार्थं गाथायुग्ममाह -

अतिथि चेत्यादि वर्गा इह अ,क,च,ट,त,प,य,श, वर्गा इति वचनात् स्वरादयो हकारान्ता ग्राह्या । तदिह प्रथमगाथया जिणदाम इत्येवरूप नामाभिहित द्वितीयगाथया तदेव विशेषयितुमाह - जिणदाम महत्तर इति तेन रचिता चूर्णिरियम् ।

सम्यग् तथाऽऽम्नायाभावादत्रोक्तं यदुत्सूत्रम् (?) ।

मतिमान्धाद्वा किञ्चित्च्छोद्धय श्रुतधरै कृपाकलितै ।

श्रीशालिभद्रसूरीणा, गिण्यै श्रीचन्द्रसूरिभि ।

विशकोद्देशके व्याख्या, दृढा स्वपरहेतवे ॥१॥

वेदाश्वरुद्रयुक्ते, विक्रमसवत्सरे तु मृगशीर्षे ।

माघमितद्वादश्या समथितेय रवौ वारे ॥२॥

परिशिष्टानि

प्रथमं परिशिष्टम्

निशीथ-भाष्यगाथानामकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमशः

बृहत्कल्पभाष्यस्य समानगाथानामङ्कनिर्देशश्च ।



अ	नि भा ग	ब भा ग	नि भा ग	ब भा ग
अइयाश् रिज्जाण	१२८		अगहण जग रिज्जि	११५६ ३५३७
अइयाश् रिज्जु चरणे	१४३१		अगहणे कप्पस्म उ	५६८३ ३०६२
अइयस्स धागा पारग	१७०३		अगहणे उरत्तग	५८८८ ४०६४
अइयेगवविगहरा	२८४		अग्गिकुमारववाणी	५७४३ ३२७४
अइयेम इच्छि धम्मपक्कि	२३		अग्गीतम्म रा न-पति	५२५१ ३३३२
अउगासीन टवणारा मत्त	६४५८			५३७४
अकयकण्णाय गीया	६६५८		अग्गीतसु विगिचे	१६६४
अकयकरणा वि दुविहा	६६५०		अग्गीया खलु साहू	५२५२
अकरडगम्भि भारो	५८८५	४०६०	अग्गीया खलु साहू	५३७६
अकसिगमट्टारसग	६४२	३८७३	अचित्तमसबद्ध	६१८
अकसिगमगलगाहरो	६४०		अचियत्त-कुलपवसे	२८३८ ५५६८
अककतिता य तेगो	३६५०		अचियत्तमतराय	४५०७
अककुट्टा गान्ति वा	२७८६	२७१०	अच्चावेदण मरणताय	३६८१
अकखलभेण समा	४८२५		अच्चित्तमोत्त पुण	६०१
अकखरवज्जसुद्ध	५४ ८	५३७३	अच्चित्ता एमहिज्जा २	६२७६
अकखारा चदणस्स वा	५१२	४६०६	अच्चित्ते वि विडसणा	४८४४ ६८४
अकवातिगा उ अकवाणगाणि	५२११		अच्चोकरग रण्णो	१५६६
अकवादी टागा खलु	२३०१		अक्खुसिण चिककरो वा	८०६५ १८२५
अकवा सया रो य	१४१६	४०६६	अच्छताण वि गुत्ता	२१७६
अकवी बाहू फुरणादि	४२६६		अच्छतु ताव मयत्ता	६०२७ १६७६
अकखुण्णेषु पहेसू	३१२१	२७३७	अच्छिज्ज पि यानावद	४१०६
अगडे भातुए तिल	२११०		अच्छेज्जजिण्णमदुग	४५२३
अगणि गिलाणुच्चार	४१४३	५२६५	अच्छे ससित्य चक्खिय	२६६० ५८५५
अगणि व गणि बूया	२६२०		अजन्तग वार्त्तिमेव	४४८
अगदोसहसजोगो	३२८२		अजरादु तिण्णि पोरिम्भि	६१०७
अगमकरणादणर	११४१	३१२२	अजिण सलोम जतिग	८६०६
अगमेहि कल्मसार	१४४०		अजिणादी वन्था खलु	५६१६
अगुत्ति य बभवेरे	५३२	२५६७	अज्ज अतियानि सीति व	१२६
अगघातो हरो मूल	६५३१		अज्जमुत्तथाऽऽगमण	५७४६ ३२७७
			अज्जमुत्तथिय ममत्ते	५७५१ ३२८२

१ आगम प्रभाकर श्री पुण्यविजय जी द्वारा सम्पादित ।

अज्ज जक्खल्लु	१७१०	२७३२	अणुगुणान्तराद्गुण	६५७	
अज्जगल्ल नेयवण्ण	१३६	३७५८	अणत्थगय मत्त	२६००	५७९
अज्जगल्ल पडिक्खु	१७०२	३७२४	अणत्थ मोय गुहा	१६६५	
अज्जव पाडिपुच्छ	८५८३		अणपज्ज अणार ता	१७०१	७३ -
अभुमिरम वेदमकुडित	१३३		अणभिययपुण वात	२०५५	
अभुमिरमोणित	१२५४		अणभुट्ठाणे	३०३८	१६३१
अज्जगल्लमि पक्क	१३८६		अणभोगा अनित्त	४८१	
अज्जगल्लमि त्रोटिज्जति	५४६८	५४००	अणभोगा मत्तप्ये	२८१	
अज्जगल्लमि पत्तति चैव	३६१७	५१८४		८२	
अज्जगल्लमि कुमिरे लहुआ	५०३	४६५			
अज्जगल्लमिराणतरे लहु	५०५	४६८३		४१	
अज्जगल्लमि चउक्क दुग	४७३४	८७४	अणगय निवमरग	३६३	२७६४
अज्जगल्लमि सत्तग दन	२५२		अणराया जुगराग	१६७	२७६२
अज्जगल्लमि उ प्रवणना	६५४८		अणलपपज्जत यत्तु	१६८६	
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	२२१७		अणवन्था पमगा	५१०	८८१
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणहार मोय उन्ती	५७६४	६१०४
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणहारो वि म कल्ल	३८८८	२०१०
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणिकचित्त लहुमआ	२१७	
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणिगुहियबलविरिओ	८३	
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०			५८४३	८०१८
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणिसत्त पडिक्खु	४५०८	
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०			४५१६	
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणिसत्त पुण कप्पनि	४५११	
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणिसेज्जा अणुओग	२१२७	
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणुअत्तरा गिलाओ	२६६७	
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणुओगो पट्टविओ	३२६०	
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणुक्क भगिगिगेहे	४४६५	
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणुकपा पडिणीया	४२१२	५६२२
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणुकपिता व चत्ता	६६०२	
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणुग्घाडपमासाण	६४६६	
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणुग्घातिय वहने	२८६६	
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणुहुओ गिहिमत्ते	३४६७	
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणुग्घावरा अजयणा	५२५७	३३३८
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणुग्घावित्तउग्घाहारा	११४८	३१२७
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणुग्घावित्ते दोसा	२५७३	
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०		अणुद्वित्तद्वियो किह शु	२६१६	५८१६
अज्जगल्लमि उउ चउ थ	५४०				

अणु देवमराभकप्ये	२८६१		अण्ण अभिघारेतुं	५८७३	
अणुदियमगसकप्ये	२८८६	५७६०	अण्ण च उड्ढिमावे	७७३६	
"	२८८४	५७६१		५५७७	
अणुशालग-सभोगो	२१३६		अण्ण पि ताव तेण्ण	१३०१	
अणुभूता उदगरमा	५२६१	३४२१	अण्णारो गारवे लुद्धे	८४०	४०७४
अणुमोदण क राव	५-८		"	५८६८	
अणुशतगा तु एसा	१०७३	६७७२	अण्णाले तुसिगीता	१७७६	
अणुयारो अणुयाती	५७५४	३२८५	"	५४०६	
अणुरगादी जारो	५६६३	३०७१	अण्णाले परल्लिग	२०८८	
अणुलोपो पडितीमो	२६५०		अण्णालदयिदियसु	५७०५	
अणुमट्टो धम्मकहा	२५८६		अण्ण वि प्रप्पसत्था	२३४४	
	३४४५	२८६८	अण्ण वि ह पडिसवा	६२०७	
अणुसट्ठीय सुभहा	६६०६		अण्णोण अणुण्णविते	१०६८	
अणुमान्ण सजाती	८६४		अण्णोण पडिच्छाव	०७६६	
अण्णउवस्मयगसरो	१२८६		"	६३७४	
अण्ण कल-गोत्त कइग	१३५१		अण्णोण मल्लिगम्मि	२२३७	
अण्णारो भिक्खुप्प	२८२३	५७५८	अण्णो नो प्रायरिया	२८०८	
अण्णभगइण तु दुविह	४७२५	८६४	अण्णो पारो भेमज्ज	६६५	
अण्णकुवराट्ट जुण्ण	५०८०		अण्णो अय- नइगो	२०६५	
अण्णतरपमादेण	६६		अण्ण वि अउएनाम	३५१६	
अण्णतर तेदुद्ध	२२१४		"	२५००	
अण्णतराग धातु	४२१२		अण्णो वि तस्म रागिया	१२००	
अण्णत्थ अपसत्था	१७०१		अण्णो दीस सिक्खे	७४०५	
अण्णत्थ एत्थि दुल्लभ	०५०६		अण्णो वि होति दोमा	१२८४	
अण्णत्थ ठवावेउ	५७६४		"	२५०६	
अण्णत्थ तत्थ सहरो	४७२४		"	२५१७	
अण्णत्थ तत्थ चकमनी	५३२०		अण्णोपि जिज्जमारो	४८४१	
अण्णत्थ वणीउण	११४६		अण्णो चमट्ठगदीमा	१६०५	
अण्णत्थ ता वि गिज्जति	६०४६		अण्णोण कइग मज्जा	००८	
अण्णत्थ वि जय भवे	८६००		अण्णोणोण विद्ध तु	१५८३	
अण्णत्थ सतिगो	०२०५		अण्णो वा आ-दु	१०६	
अण्णपडिच्छो लइगा	६३६६		अण्णो वि य आ-	१०७	
अण्णपासडी य गिती	०२५८		"	५६६	
अण्णम्मि व क तम्मि	२०६०		"		
अण्णया विरत	१७		"		
अण्णवमनीग अमनी	१००		"		
अण्णस्म व अनतीण	०		"		
अण्णस्म व दातामी	१		"		

प्रातरन्म तु जोगावनी	१५५२	१६२०	अद्ध गुना परेग	६८७	
अत्रवस्मिन् तवस्मि	३२४७		,	७०१	
अतमि हिरिमथ त्रिपुड	१०००		,	७१२	
त्रिभानरो स दीमति	४८८७			७२०	
अनिक्रमे वनिक्रमे	६०८७		अद्ध तेरम पक्खे	२८३२	
अतिग अमिन्ना जट्ठणा	५१८१		अद्धाग ओम अतिवे	४६२०	
अतिभगिय अमगिते वा	१८१६		अद्धाग ओम बुद्धे	१६८६	
,	७७८८	५७४२	अद्धाग कज्ज ममम	१६२	
पनिभुत्ते उग्गालो	७६५७	५८४७	,	२५३	
अतिभित्ताग डिनाण	५५२		,	१८८	
अतिरग उवविअधि	२१७६		अद्धागणिमपट्टा	३२४२	
अतिरेगट्टिनामा	४५२६		अद्धागणिमताणी	५२४	३३६३
अतिरेग दुविट्ठ कारग	४५४६		,	१५३२	
अतिमि जगमि वण्णो	१७३६		,	१६६७	
अतेगाड्डाण-गयगो	१२६६	७०१४	,	१६८५	
अत्तट्ट परट्टा वा	३२३३	४२५८	,	२१६२	
अत्तट्टा परस्स व	४६००		,	३२३१	४२५६
अत्ताग चोरमया	३३६५	७६६	,	५३८८	३३५३
अत्तागमादिणु	३३६६	२७६७	अद्धागणिगतादीणमदेते	३२३२	
,	३३६७	७७६८	अद्धागणिगयादी	२२१	
अत्तागमादियारा	३३६८	२७६९	,	२१६१	
अत्तीकरण रण्णा	१५५६		,	४८८१	
अत्तीकरणगीमु	१८५४			५१६४	२५४८
अयत्तरो तु पमारा	२२		,	५१६५	२५५०
अथयन अन्धी वा	१५७६		,	५२८५	
अथयण वि विन्धि	३६८६	४६६१	,	५३४६	२४२३
अत्तगय मक्कपे	२८६२	५७८७	अद्ध एणिगयादीण	४६१२	
,	२८६८		अद्धागणिगया वा	३२५४	
अथडिलमेमनर	११०१		अद्धाग दुम्भ सज्जा	७४२०	
अथि ति ङाड तहुपो	१८४५		अद्धाग पविममाणा	४८८२	१०२१
अथि मि धरे वि वन्था	५०३७	६३६	अद्धागबालवुट्टा	४६१८	
अथि य मे जागवाडी	२६७८	१८८०	अद्धाग बालवुट्ट	४५६७	
अथि ट्ट वमभग्गमा	५६४०	४८५१	अद्धागममथरणो	४५१	
अत्तिपस्सुत्तमु	६०४८		अद्धागममि विविता	१०००	
अत्तिट्टापो ट्टि	११३४		अद्धागममि ङाट्ठन	३४०५	७८७७
अत्तिट्टाट्टामा	७८१६		अद्धागविविता व	२८	५४५७
अत्तिट्टामा पक्खे	७८२८	५७५८	,	१००	
,	२८३०		अद्धाग-मन्देसा	७८५	

अद्वाण पि य दुविह	५६३५	३०४१	अपरिवृत्तमायव	४७१	
अद्वाणमि विविता	२३४		अपरिगृह्णमि बार्हि	१६२१	
अद्वाणादी अणले	४६२६		अपरिगृहित पलवे	४७८०	६९१
अद्वाणादी अतिणिद्ध	२२७		अपरिगृहिते बार्हि	१६०८	
अद्वाणा मथडि	२६२५	५८२२	अपरिणामगमरण	५६५१	
अद्वाणासथरणे	३४५६	२६११	अपरिमितरोहबुद्धी	४४८८	
अद्वाणे उच्चाता	१०५८	२७५५	अपरिमिते अरिण वि	१६५५	१६१३
अद्वाणे ओमऽसिने	४५६८		अपरिहरतस्सेते	३६७	४२६८
अद्वाणे ओमे वा	३४७३		अपहुचवत्ते काले	४६०८	
अद्वाणे गेलणो	८६०		अपुहत्ते वि हु चरण	६१६१	
”	६३०		अपुहुने अणुओमो	६१८५	
”	१६६३		अपुहुत्ते य कहेते	६१६५	
’	४५३३		अपुहुत्ते व कहेते	६१८६	
अद्वाणे जयगाए	४८८५	१०२३	अप्यगय महत्त्व च	३६२१	
अद्वाणे पलिमथो	३६३०		अप्यञ्चओ अकिली	१३५७	
अद्वाणे वत्त्यवा	२६३८	५८३४	”	६२२४	७८५
’	२६४६		अप्यञ्चओ अवणो	३६८८	
अद्वाणे सथरणे	३४६१	२६१३	अप्यञ्चओ य गरहा	६०३८	
अदिट्टाभट्टासु थीसु	५७७६		अप्यञ्चय वीनत्तण	२८१५	५७८१
अद्वितिकरणे पुच्छा	२४४१		अप्यच्छित्ते उ पच्छित्त	२८६४	६४२२
अद्विति दिट्ठी पण्हय	१०४३		अप्यडिलेहुऽपमञ्जरण	२७०	
अद्दे समत्त खल्लय	६२१	३८५४	अप्यडिलेहियदूसे	४००१	
अधवा गुरुस्स ओसा	२०६५		अप्यतरमञ्चियतर	६३	
अधवा पायावञ्ची	२२३६		अप्यत्तमइक्कते	१०७७	
अधवा पुरिसाइण्णा	२०६६		अप्यत्त उ सुतेरा	७५३	
अधवा वि समासेण	६८६		अप्यत्ताण णिमित्त	३४४२	२८६५
अधवा सो तु विगडण	१२५६		अप्यत्तिअ असखड	१०५	
अधिकरणमताराए	१०८६		अप्यत्तियादि पच य	११३	
अत्रि फरणमारणाणी	१३२४		अप्यत्ते अकहिता	३७५२	
अधिकरण रायदुट्ठे	१०५१		अप्यत्ते जो उ गमो	४७७२	६१८
अधिकरण कायवहो	४१५		अप्यपरअणावासो	४३३८	
अधुवम्मि भिक्खकाले	४८३०		अप्यपर-परिञ्चाओ	५८३४	४०१०
अन्नतरपमादजुत्त	६०६६		अप्य विति अप्य तत्तिआ	१७२२	५७१४
अन्नागकुनितियमते	३७०१		अप्यभुणा तु विदिणो	११८०	५६१
अन्नो पुण पल्लातो	३३२४		अप्यभु लहुओ दियगिमि	११७८	३५५६
अपडिक्कमसोहम्मे	३१६६		अप्यमलो होति सुची	६५६४	
अपडिहणता सोउ	३०२६		अप्या असथरतो	५८०८	
अपडुप्पणो बालो	३७२८				

अपरा सूत्रगणेश	३१६		अभिज्ञाना पुष्पा भक्तिगो	३६४४	
अपरा हनि पुष्पागानिनाग	३२८७		अभिज्ञानो मम्ममुज्झति	३६६८	५२१८
अप्यगहन रई ल	२१८१		अभिज्ञानमुद्र पुच्छा	५४६७	५३७२
अप्युत्तमनिद्रिकरगो	१३४२	५६८	अभिज्ञाने वयतो	२७०५	
अप्युत्तम विवित्त-वहुस्मृता	१०५६	२७५३	अमगण्णाण्डवहार	२३१६	
अप्य मत्तमि य	१५४८		अमराणां धणारासी	६३८१	
अप्योल मिउपम्ह	५८०१	३६७८	अमिला अभिरुचिष्णु	४६६३	
अप्यका माराग दम	२०४६	५८५	अमिला उभयसुहा	११६१	२५५५
अवलकर चकुरुत्त	३३६२		अमुगत्यमुश्रो वचति	५१६६	५३७१
अप्यमुग अगोयत्ये	५४४८		अमुग कालमरागत	५०३१	६३०
अवहस्मृता यऽमद्धा	२७२२		अमुग च एगिस वा	५००६	
अवहृ वन च पुंसि	४८५		अमुगापरियमरिच्छाड	५६८२	
अवशान बुद्धारागो	४६१०		अमुगिचवय ग भुजे	५०१२	६१२
अवभक्ताराग रिगस्मकया	५६१५		अमुग, अमुग काल	४३७	
अव, रहियम्ह हरगो	३१८६		अम्मा विजुमादी उ	१०७०	
अवन चि वास महिगा	२६१४	५८११	अम्मापियरो कस्सति	३७३१	
अम्भ गेय म्वाहिय	४३८८		अम्भ ए वि जाणामो	४२८	१८८१
अम्भान मललित्तो	६१७३		अम्भ ए ममारद्धे	४०८८	
अम्भान च वाहि	७६४		अम्भ एति करेति अरती	२४८२	
अम्भान गत्तग	८६३		अम्भ खमणा ए गणी	२६१६	
अम्भास व वमज्जा	१७५८	१७१	अम्भवाणी विमहिमो	५५६	४८५
अम्भुज्जन आहारागो	५४६५		अम्भ मो अकनमुहा	२६१३	
अम्भुज्जाभेगतर	२४१५		अम्भ मा आएमा	५६०	
अम्भुगो आनग	२०३२	१६३३	अम्भे मा आदमा	५५४	
"	२१११		अम्भ मो कुतहीणा	२६११	
अम्भुगो गुरुगा	२०३३	१६३६	अम्भ मो जातिहीणा	२६१०	
अम्भुवगता य लाओ	२१०५		अम्भे मो गिज्जरुदी	२६८८	१८६
अम्भुगयवेरा	३२०१		अम्भे मो धणहीणा	२६१५	
अम्भगिता काइ ग इच्छति	२६८१	५८८८	अम्भे मो खवहीणा	२६१२	
अम्भयागी पहनु	४६२७		अम्भे वि एतधम्मा	६६६६	
अम्भोगविमकए वा	४६४६		अम्भेहि तदि गगहि	६८७	१८८६
अम्भिगो कालिजो	५६६३		अम्भे-एलि गावि महिसी	४००३	
अम्भिगो मभोगो पुग	२१८		अम्भे पफोत्त	५६२४	
अम्भिगवपुराणगहित	४६११		अम्भेपणो उ विगप्पो	२२०८	
"	४६१६		अम्भेपरा उ विगप्पो	६३८०	
अम्भिगववामिद्धामति	४१६६	१०४५	अम्भे ड पाया त्वलु	३०७	
अम्भिगो महवयपुच्छा	४८०८	५३८१	अम्भेड आगगा खलु	२००८	
अम्भिघारेन वामत्यमादिणो	५४७६		अम्भेमाणी आगगा खलु	५६१०	

अयमादौ लोहा खलु	२२६२	अधिकठिकिलमत	६३६७	
अयमो पवयशहागी	१६२१	अवि केवलमुपडे	१४२	५०२४
,	१८७८	अविकोविता तु पुटठा	१७७०	३७८६
”	४९४४	अविगाम त्रोति सुलभो	४४२६	
”	५७६२	अविहकणो सुडा	६२१९	७८०
”	६२३३	अविदिणग पाडिहारिय	३३१	
अयसो य अक्किं य	३६७९	अविदिणगोवडि णग्गा	३६६८	३८११
अयमो य अकिती या	३५८६	अविधि अणुया चेते	२१४४	
	३६४९	अविमायर पि मडि	१३४४	
”	३६६८	अवि य हु कम्मदण्णा	५१६२	८५३२
”	३७०४	अवि य हु जुत्तो दडो	२१८	
अरिमिलस्स व अरिसा	६३२	अवि य हु वनीसण	८५१८	
अलभता पवियर	२५०८	अवि य हु विमोहितो ते	६६ ८	
अलम धमिर सुच्चिर	१६४०	अवि य हु स वलगा	४८५५	६६५
अलम भरणि बाहि	६३५६	अवि य हु मुले भगिय	६४०३	
अवन गगदि सिग्लोम	४०१७	अविरुद्धा णियग	३३५४	२७६५
अवरगह गिम्हकरणे	२०३९	अविरुद्धा मवपदा	२१०६	
अवराहपदा मव्वे	१६८७	अविसिट्ठा आवत्ता	२८७५	
अवराहे लहुगतरो	१७८२	,	६५८९	
,	५१३८	अविसद्ध ठाणे काया	१६२६	
अवरोप्प सज्जिलिय मत्तुता	४४६४	अविसुद्धर तु गहणे	१८०	
अवरो फम्मगु डो	१२८	अविसद्ध पलव वा	४४४	
अवरो वि णिज्जो	१३९	अविमस दवत-गिमित्तमावी	२ ५९	
अवरा वि य गगमो	५७९२	अविमिनमविट्ठे	८२२२	
अवलकणोपगणित	७६२	अविमो व विमो	६६६४	
अवलकणोपगणिते	७६५	अविमि वमचारी	६ ७६	
अवलकणोपगवधे	७५६	अवन्ने य अरत्ते	६२२९	७८८
अवलकणोपग वध	७५०	अवन्त गजानो गलु	६२३७	
अवलकणो उ उववी	७६४	अवाउताग गिच्छोउयाग	६१६५	
अवस्मगमरा दिम्सामू	२९९	अवोच्चित्त गिमित्त	१५०१	
,	८८३	,	१५०९	
अवसा वसांम कीरति	१५३०	,	१५१३	
अवसेसा अगगाग	३९१७	,	४३१४	
अवसेम पुग अगला	३७३९	,	४१६८	
अवसो व रयदो	६६०१	,	४२०३	
अवहन गाग मरु	३१८३	असज्जमाय व दुरिह	६०७४	
अवि अवखुञ्ज पाण्णि	६२८	असज्जमाय व दुरिहो	२७२९	
अवि आयियमि लङ्गा	२८४३	असज्जमाय व दुरिहो	२५००	६३८६

अमरादि दण्डमाशे	१६५४	१६१२	,	५६८०	
अमरादी वाऽऽशर	२३४७		असिवादीकारिगता	४५७७	
अमरादी वाहारे	२५५८		असिवादी मुक्-वाराणम्	४८१२	६५३
अमरो पाणे वत्य	११५३		असिवादि गथा पुग	५५४१	५४४२
अमति गिहि एालियाए	१६८		असिवा अगम्ममाणे	१६५६	३०६८
,	४२५३	५६६२	असिवा आमोदरिए	३४२	
अमति तिगे पुग	५८७८	४०५३	"	४५८	
अमति वमयीए वीम	१६६०	१६१८	"	१४५४	
"	११५०	३५३१	असिवा आमोदरिए	७२६	४०५७
अमति विहि गिगता	१६८३		"	७४७	
अमति समगाग चोदग	५०७६	२८२१	"	७७३	४०५७
अमती अवाकडाग	५११	४६०८	"	७७८	
अमती एव दग्गम् तु	१६६३	१६२१	"	८१२	
अमती गवत्तिमज्जग	३७३		"	८१४	
अमती न गम्ममाणे	३४५३		"	८१५	
अमती य परिग्यसा	१६४		"	८८४	
अमती य भद्दो पुग	४ ७६		"	१००७	
अमती य भेमण वा	१३७२	४६३६	"	१०२१	१०१६
अमती य मत्तगसा	५४१		"	१४३७	
अमती य लिगकरणा	१६६१		"	१४६२	
,	५१२२		"	१४८१	
अमता य सत्रयाण	५६२७		"	१४६०	
अमती विगिचमाणे	४६८६		"	१८६७	
अमताण खोम रज्जू	६५३	२३७६	"	१८५३	
अमरोणे पभुविड	११८४	३५६५	"	२००७	
अमताही ठाणा खलु	६४६३		"	२०१२	
अमरीरतेगभगे	१६५०	५७६	"	२०२४	
अमहायो पगिल्लत्तण	५४७६	५३८४	"	२०४४	
अमथर अत्रोगावा	३८५१		"	२०६१	१०१६
अमपति अहालदे	५३२६	२४०५	"	२६६०	
अमिदी जति एाएण	४८६७	१००६	"	२६८४	
अमिवगत्ति ति काउ	३४४		"	२६६७	
अमिवगहिता तरादी	३४३		"	२६६८	
असिवादि कारणेहि	३१५२	४२८३	"	२६६८	
असिवादि कारणेण	५०३०		"	३१०४	२००५
असिवादि कारणगता	१२२५		"	५१२७	२७४१
असिवादि कारणगता	२८११		"	३१५६	
असिवादि कारणेहि	३८४७		"	३१६१	

गमिन्ने ओमोयगिग	३-०६			५६६३	
"	३२६६	४०५५		५६६३	४०५७
"	३३४२			५६५३	
"	३३५५	२००२	,	५६५७	
"	४६७		"	५६६२	
"	३४६१		,	५६६७	
"	५६०५	१०१६	"	५६७६	
"	४०५६		"	६०२६	
"	४१११		"	६०७०	
"	४११८		"	७३४	
"	४२०७	असिबोम-दुहु-रोधग		१६१२	
"	४२८१	असिबोमाईकाले		६२३६	
"	४३०१	असिबोमावयरोसु		६११४	
"	४३१७	असिकटकविसमादिमु		१००	
"	४३६५	अस्सजतमतरते		१०१	
"	४४०३	अस्सजमजोगाण		४४३७	
"	४४०६	अस्सजय-लिगीहि तु		४७४५	८८७
"	४४१७	अस्सजयारग भिक्खू		४३६१	
"	४४३१	अह अत्थिपदवियाग		३२५७	४२८७
"	४४३८	अह उगहणतग		१४००	
"	४४४३	अह जारिसओ दमो		४३६०	
"	४४५४	अह जे य धोयमइल		००७८	
"	४४६७	अह निरिय-उडढलोगा प		६५	
"	४४८१	६०५५ अह दूर गतव्व		४४१	
"	४५१३	अह पुग गिवाघाय		६१२१	
"	४६३१	अह मागमिगी गरहा		२७२५	४७३७
"	४६५४	अह वायगाति भणगति		२६३०	
"	४६५८	१०५७ अह सउदगा उ सेज्जा		५२२८	
"	४६७१	अह सिक्खयतय पुग		६४५	
"	४६८२	६०५७ गह मा विवायपत्तो		३६६६	
"	४६८८	अहग सिक्खिम्मामी		६७८	
"	४६९१	१०१६ अहभावदरिसगम्मि वि		२२५३	
"	४७०८	अहभावमागतेरा		४०३२	
"	४८६६	अहमेगकुल गच्छ		३१५	६०८६
"	५४१६	अहय च मावराही		६३१०	
"	५६०	अहव अबभ जत्तो		५११४	२४६६
"	५८५८	०६५ अहव जति अत्थि थेरग		२७४४	

अहव यदि अयि यथा	१४८०		अहवा 'भक्तुस्सव	५२३१	२४०५
अहव ग कत्ता मत्था	८८१८	८६०	अहवा महानिर्मि	६१२६	
अहव ग पुट्टा पुव्वग	०६	८००	अहवा र ग हसता	६६८	८८६८
अहव ग मेत्ती पुव्व	०७-४		अहवा उगिगसग्ग ग	६५२२	
अहव ग मद्धा विभव	१६५०	६५०	अहवा वाता निविहा	११६	
अहव ग हट्ट गान	८१५		अहवा मि अयिअथा	४८००	६४१
अहवा जत पत्तिमी	०६२		अहवा मि अमिदुम्मि य	१०६	२०४०
अहवा अमुमिरगहण	१२३१		अहवा मि अग्गोरा	१८८०	४०५५
अहवा उ तुमट्टु रात भुवग्ग	६६१०		अहवा मि गालवट्ट	५७७४	
अहवा अवीभूत	३२२६	१११	अहवा मन्तिक्कम्मे	२५६०	
अहवा आगादिग्गि हग्गगा	११५१	४८५	अहवासमग्गाऽमजय	४७४७	८८६१
अहवा आह रानी	४१५६	१०७	अहवा मय गिलाग्गा	६२४८	
अहवा उहाये पूत	८०३		अहवा मार्वावतर	६६५१	
अहवा उम्मग्ग उगिय	२१		अहवा मिक्कासिक्क	२१०७	
अहवा उग्गग्गग्गो	४७०६	८११	अहवा मुत्तनिबरो	६८७०	
अहवा उग्ग उगिग	८०१		अहवा भट्टपता	४३७६	
अहवा उम्मग्गमुद्ध	०७७७		अहवा उग्गमहाकरग	२७७०	
अहवा उम्मग्गग्गो	५००		अहवा उग्गमतराग	१३१२	२३८७
अहवा उम्मग्ग तवो	१०२		अहवा उग्गमि जाग	६३२७	
अहवा उम्मग्गहउ	४०५०	१११८	अहवा उग्गमि जाग	३३०४	
अहवा उम्मग्गग्गो	६६८६		अहवा उग्गमि जाग	०३५	१५६६
अहवा उग्गग्गग्गो	१८०	८४	अहवा उग्गमि जाग	०३५	१५६६
अहवा उग्गग्गग्गो	००८८		अहवा उग्गमि जाग	०३५	१५६६
अहवा उग्गग्गग्गो	८५११		अहवा उग्गमि जाग	६६	
अहवा उग्गग्गग्गो	४६६४		अहवा उग्गमि जाग	५८६६	४०७८
अहवा उग्गग्गग्गो	७६०	८००५	अहवा उग्गमि जाग	६११६	
अहवा उग्गग्गग्गो	०१		अहवा उग्गमि जाग	३०४३	५६४४
अहवा उग्गग्गग्गो	०६		अहवा उग्गमि जाग	४०१०	३८५
अहवा उग्गग्गग्गो	८०	११००	अहवा उग्गमि जाग	४२८२	
अहवा उग्गग्गग्गो	८०६१		अहवा उग्गमि जाग	६२८४	
अहवा उग्गग्गग्गो	८०८०	१८५०	अहवा उग्गमि जाग	१२७	
अहवा उग्गग्गग्गो	१०६०		अहवा उग्गमि जाग	२३१०	
अहवा उग्गग्गग्गो	२१०		अहवा उग्गमि जाग	५६५	
अहवा उग्गग्गग्गो	२१०		अहवा उग्गमि जाग	१०२७	
अहवा उग्गग्गग्गो	१७७		अहवा उग्गमि जाग	१२१	८५
अहवा उग्गग्गग्गो	१	०४०६	अहवा उग्गमि जाग	१८	
अहवा उग्गग्गग्गो	१	०४७	अहवा उग्गमि जाग	१८०७	४८

अत्राग १-द्विमुखाग	१२			१०७	
अत्रयमुज्जिम वप्प	५१०६			१०५	
अत्रागगा अमती	१४७	७७६		२५१०	६३१४
अत्रमि व मउमि व	५७८	६८१		१०२	
अत्रागि मतिओ वा	१४७			१४४०	२४१५
अत्रपनीगहित	४१६३	१२१२		५१८५	
अत्रपनी नहुगा	५२८७			५२२	२५६०
अत्ररहितागत	४२५८			१००७	२५८७
अत न हाइ देय	५८४४	४०२०		१४४	२०१८
अनेउर च तिविघ	२५१३			६१७४	
अतो अलम्भमाराममातीसु	५३६१	४८२८		५१३३	
अतो अहारत्तस उ	५०७०			२११७	
अतो आवसामादी	४७३१	८७१		३३६५	
अता गिह खलु गिह	१५३०			२४०५	
अता गियमपी पुग	१४०	४०८७		३१३०	२७१८
अता इर-भक्खीय	५८४८			२६६२	
अता बहि वउ-पुडाद	११६१	२५७५		६०१	
अता बहि च धोत	६१०२			२६६१	
अता बहि च भिण्ण	५१०५			४४०६	
अता बहि च लब्धमि	६६५	१८६५		४५६०	
"	६६५	१८६५		६३६३	
"	६६५	१८६५		४७८६	६२७
अता बाह व दड्ड	१८५०			५८५६	४०३४
अतो मरो किरिसिया	१६६८			५८६०	४०३५
अतावस्मय बाहि	१०८५			२३१२	
अता बहि सजोयग	५०१८			४६५२	
अकारा पदीवेरा	१८६८	११८७		१०६६	
अव केग निउग	५०८			१४५८	
अवगमादी पक्क	४७१५			२३४२	
अ				१४३२	
आइणपिसित मणिग	११८०			५५६५	
आइणमराण्डण	१४८५			१८६२	
आइणमराण्डण	८६८			५२४४	६२५६
"	४७१			१८५५	
"	४६६			४८११	
आइण लहुसण	६५			५४८५	
"	६५			१८८	१८८
"	६०६				
आइणग बहागग				१०५	
आइणगे रयगगड				२५१०	६३१४
आइणगे लहमकारग				१०२	
आउक्काग नहुगा				१४४०	२४१५
आउगहमेत्ताआ				५१८५	
आउ उजायग वा.गा				५२२	२५६०
आउ उजायग वा.गा				१००७	२५८७
आउ उजायग वा.गा				१४४	२०१८
आउट्ट नरो मरुगाग				६१७४	
आउट्टियावराह				५१३३	
आउत्तपुव्वमणिग				२११७	
आउत्तपाउगम्मी				३३६५	
आउ बल च वड्डति				२४०५	
आऊ अग पी वाऊ				३१३०	२७१८
आऊ नऊ वाऊ				२६६२	
आगम विसवाद				६०१	
आकड्डगमारसण				२६६१	
आकपिता गिमित्त ग				४४०६	
आकपिया गिमित्तेरा				४५६०	
आगम गम कालगते				६३६३	
आगमसुयवहारी				४७८६	६२७
आगमिय परिहरता				५८५६	४०३४
आगरगादी कुडगे				५८६०	४०३५
आगर पल्लीसदी				२३१२	
आगतागारादिमु				४६५२	
आगतागारादा				१०६६	
आगतागारेसु				१४५८	
"				२३४२	
आगतागारागे				१४३२	
आगतागारादा				५५६५	
आगतु अहाकडय				१८६२	
आगतु एतरो वा				५२४४	६२५६
आगतु एसु पुव्व				१८५५	
आगतुग तज्जाता				४८११	
आगतुग तज्जाया				५४८५	
आगतुग तु वज्ज				१८८	१८८
आगतुगारागि गाए य					

आगतु तदुत्थेण व	२१५१		आतविपुद्गीर्ण जनी	११३२	
आगतु पउग जायग	०६६	१८६४	आतममुत्थमसज्जभाडय	६१६२	
आगाढ फलममीसग	४२८२		गत कविष्णुमुक्ता	११७८	
"	४६६१		आतावग तह चव उ	५३४२	
आगाढमगागाढ	४८८८	१०२६	आतावग साहुस्सा	५२४५	
आगाढमगागाढे	४२१		आनियणे मात्तूण	५६७०	
"	१५६४		आदरिसपडिहता	४३२१	
"	३१०७		आदाणे चलहत्थो	४८६	
आगाढ पि य दुविह	२६०७		आदिगहणेण उग्गमो	४३५	
अगाढे अणालिग	५७२४	२१३६	आदिभयराण तिण्ह	१६६७	३६६१
आगाढे अहिगरणे	२७६१	२७१३	आदीअदिट्ठभावे	६२१३	७६५
आगारमिदिण	२३३५		आदेमग पच्चगुलादि	५३	
आगारिय विट्ठ तो	६५११		आधाकम्मादी रिण्काण	१०८१	
आगारेहि सरेहि य	६३६८		आयारोवधि दुविधो	११५२	
आभातादी ठाणा	४१३५		आपुच्छण आवस्सग	५२५	२५६०
आचडाला पढमा	१४७३	३१८५	आपुच्छणकितिकम्मे	६१२७	
आचेलक्कुदेसिय	५६३२	६३६४	आपुच्छित उग्गाहित	११५५	३५३६
आगयणे जा भयगा	१३०६	८६०६	आपुच्छिय आरक्खिय	२३६२	४८२६
आणद अपडिहय	२६६०		"	३३८५	२७८६
आगाइणे य दोसा	२८३६		आभरणणिण जाणसु	५२१०	२५६५
आणाग जि गवराण	५४७०	५३७७	अभिग्गहिउत्ति कए	१५४६	
आणाए ऽ मुक्कधुरा	१०२३		आभिग्गहि यस्सासात्ति	१०४८	
आणाए वोच्छेदे	६७०		आभोएत्ताण विट्ठ	२५७४	
आशादिणे य दोसा	५७४०	३२७१	आभोगिणीय पमिणेण	१३६६	४६३३
आशादिया य दोसा	२३५८		आमज्जगा पमज्जगा	१५१६	
"	२७३५		आमफलाइ न कप्पति	४७५७	८६६
आणादि रसपसगा	४६०४	१०३७	आमति अनुवगए	५२८८	३४११
आगाभगे णाण	६६६३		आमे घडे निहित	६२४३	
आणुगदेसे वासेण विणा	४६२४		आयपरउभयदोसा	३७८२	
अन्नर परतर वा	६५४०		आयपर-पडिक्कम्म	३८१७	
आततरमादियाण	६५५६		"	३६३७	
गात्तर मोहुदीरण	१४६८		आयपर-मोहुदीरण	१२१	
"	१५१७		आयपराभयदोसो	५३०	२५६५
आतपरे वाक्की	५६०४		आयरिआ अभिसेओ	८७१	६११०
आतरोभावराता	१४५२		आयि ए अभिसेए	२६८१	६३७७
आतवय च परवय	१०४२		आयणिग अभिसेगे	६०२०	४३३६

आयसि उवज्जाय	५५७४	५८७	आयारे अगहीग	२१६६	
आयसि उउज्जाय	७७७१	५८७८	आयारे चउसु य	७१	
आयसि व्ह मोही	६६७८		आयारे गिक्खेवो	४	
आयसि कालगते	१५०२	५८०६	आयारे अग चिय	३	
आयसि गालतो	८२	६१०७	आयुह तुगिगामुम्म	४८७०	१००६
आयसि दोणि अगत	१८८७	५८६२	आरतिगते तिमज्जति	३३८६	२७८७
आयसि भग्गाहि तुम	४५१२		आरभउ मम्महा	१८७८	
आयसि य पिलाणे	३०	५८७	आर भनियत्ताग	१०६५	२८०६
,	११०६	,	आर भानिती	८७६४	६०६
"	११०६		आरिय-आरियमक्क	५७३०	
"	१६८५	५०८७	आरियमगागिसु	५७२६	
आयसिओ आयसि	८८		आरवगा जति मासा	६८८४	
आयसिओ गग भणे	७७६४	५८८	आरवगे आरुणे	८८३५	६७५
आयसिओ तिमओ	६८३३		आरावगा उद्धा	६८३८	
आयसिओ चउमास	२८०३	५७६८	आरोवगा जह्मगा	६४५	
आयसिओ वि हु तिहि	१५७१		आरोव परोगाहो	७८१०	७०११
आयसिओ कु डिपद	८३३२		आरने वाहि	८६२	
आयसिओ पवत्तिगीय	८६०७		आलाग पण्णुच्छा	१८८७	
आयसिओ अभावित	११०८		आलवगा तु दुविह	६२२	
आयसिओ उवज्जाए	३३७६		आलवगे विस्स	२०६२	
"	५५७८	५४७६	,	३२६२	
आयसिओ उवज्जाया	२७३५	७७८०	"	५८१२	३६८६
आयसिओपादमूल	२८५६		आलावगा पण्णुच्छा	२८८१	५१२७
आयसिओ बालबुद्धा	१६२४		"	६५६६	"
	५८६६		आलावा देवदत्तादि	८६४	
आयसिओ वसभ-अभिसेग	४६३३	१०७०	आलिहगा-मिच-तावगा	२८२४	
आयसिओसाधुवदगा	१०५५	२७५२	आनिगगावतासगा	५८	
आयसिओदीगा भया	५४५५		आलिगते हत्थादिभजगे	५१७६	१५२६
आयसिओदी वत्थु	४८१४	६५५	आलीढ पच्चनीढे	६३००	
आयसिओ भिक्खुग य	३४१७		आलोयम्म चित्तिगी	६१६२	
आय कारणमागढ	४८१०	६५१	आलोयगा तह चत्तु	६२३६	
आयबिलणिव्वितिय	६८८७		आलोयगा तिय पुग्गा	६६२७	
आयबिलस्स लभे	१६०७		आलोयगाविहाग	६१७८	
आय तु हत्थ पाद	६३५		आलोयगापण्णिआ	६११२	
आय सजम पवयण	१४४१		आवडणमादिणसु	३०२१	१६२४
आयपरकप्पस्स उ	२		आवणगे इ दिणहि	६५५८	
आयारविगय गुक्कप्पमादीवगा	३८६५		आवरिलो कम्महि	५६१	८८२७

आवरिसायग उर्वलिप १	२०१६		आमि नदा समगुगगा	१८४६	
आवस्सिया रिमीहिय	२११	३४०८	आमिना उमिना	१८४	११११
,	५३८	२४०८	आमग य न्दिता	९६	
"	६१३६		आहन्नुयानिगावत	११६०	५०८१
आवहति महादोम	३८७५		आह जति गमेव	१६१४	
आवात तघ चेव य	८२१		आहा अव य रम्मे	०६६	२७१
आवाय गिग्वाव	१०२		आहारम्म मड घ तो	५६६५	
आवासग कातुग	६१२४		आहाकम्मिय प गग	०८०५	
आवायग छवराया	३५५०		आहाकम्मिय	०५०	४०७५
आवासग परिन्ता	४३०		आहाकम्मि निविट	१६६०	
आवायममादीय	६१८०		आहातच्च-पदागो	४०००	
आवासगमादीया	५२१७	६७६	आहारउ भवो पुग	५७०	
आवासग सज्जाए	४३४६	३१६०	आहार उवहि दह	५७८१	
"	६३७३		आहार उवहि दहे	४३५६	
आवासग अणियत	४३४७		आहार उवहि विभत्ता	०११८	
आवास बाहि असनी	२२४	३४३४	आहार उवहि सेज्जा	५७७६	
"	५१६१	,	"	५६३४	
आवास-सोहि अवलत	५०१६	६१६	"	६०८८	
आवाचित व वूढ	६११३		आहारदीराज्मती	६२३५	
आवासियमज्जणया	६०३२		आहारमगाहारम्म	१२३५	
आसकरणादि ठाणा	४१३०		आहारमनभूमा	०२८७	
आसगतो हत्थिगतो	६०५	३८५७	आहारमनरेगाति	१२४	
आसज्जगिणीहियावम्मिय	५२३	५५८८	आहारविहारादिमु	११	
आसणगतो भयमायती	६७६		आहारादीराज्जा	४३५३	
आसणमुक्का उट्टिय	२५५२		आहारदुपादण	०४१२	
आसणमुक्का मोलु	११३५		आहारा दुवमोगो	२४०१	
आसणो परमगतो	४५५४		आहारे जो उ भणे	५६९४	
आसणो साहति	१७६६		आहारे ताव छिदाहि	३८६८	
आसणो य छरूसवो	५२७६	३३५५	आहारो व दव वा	५१६६	
आसक-वेरजगग	१८२६		आहारोवहिमादी	४५०६	
आसद-कट्टमओ	१७२३	३७४५	आहिडए विवित्ते	२११५	
आसद पीठ मच्चग	५६५१		आहिडति सो रिण्च	२७१६	
आसद-मुष्णिमाए	३१४६	४०८०	आहेण दाग्गइत्तगण	२४८०	
आसादी उदमहो	०६५				
आसाण य हत्थीण य	२६०१				
आसासो वीसासो	१७४८	३७७१	दग्ग अणुलोमण तेसि	५५७	
आना हाथी खरियाति	३६६४		इच्छा-गुलोमभाव	३०२६	१६२६

इच्छामि कारणेण	१६१३		इस्सरसरिसो उ गुरु	६६२६	
इट्टग-द्ध गम्मि परिपिडताण	४४४६		इस्सालुए वि वेदुक्कडया १	३५६३	
इट्ट-कलत्त-विश्रोगे	१६८७	३७११	इह परलोए य फल	४८१६	६५७
इतरह वि ताव गरुय	८४०		इहलोइयाए परलोइयाग	३११२	
इतरेसि गहणम्मी	२४८५		इहलोए फलमेय	६१७८	
इतरेसु होति लहुगा	२१०५		इह लोगादी ठाणा	४१४०	
इत्तरोवि य पतावे	४४६६		इह वि गिही अविसहणा	२८४४	
इत्तरिओ पुण उवधी	१८३५		इहरह वि ता न कप्पइ	६०३०	
इत्तरिय पि आहार	३२१५		इहरह वि ताव अम्ह	५२६८	३४०१
इति एस अगुणवणा	११८१		इहरह वि ताव गघो	६०५०	
इति चोदगदिट्ठ त	१३८०		इहरह वि ताव लोए	३३११	
इति दप्पनो अणाइप्पण	४८६३		इहरा कहासु सुणिमो	५२६३	३४२३
इनि दोसा उ अगीते	४८०६		इहरा परिट्ठवणिया	५०६७	२८१२
इति सउदगा तु एसा	५३०६		इहरा वि मरति एसो	५६६६	३११४
इति सदसण-सभासरो ह	१६८६		इगाल-खार-डाहो	१५३७	
इत्थि-परियार-सद्	२०१५		इ दमहादीएसु	२४८०	
इत्थि पडुच्च सुत्त	२४६६		इदमहादीसु समागएसु	३१३३	२७४५
इत्थिकह भत्तकह	११		इदियपडिसचारो	३८७८	
इत्थिकहाओ कहेति	३५८३	५१५६	इदियमाउत्तारा	६१४६	
इत्थी जूय मज्ज	४७६६	६४०	इदिय सल्लिग एाते	४३६	
इत्थी एणुसको वा	१६१४		इदियाणि कमाये य	३८५८	
इत्थी पुरिस नपुसग	५०३८	६३७	इदेण बभवज्झा	४१०१	१८५८
इत्थीण मज्जम्मी	२४३०		इच्चणधुमे गवे	८०५	
इत्थीणात्तिमुहीण	२४३३		,	४७१०	८४१
इत्थीमादी ठाणा	४१३७		इच्चणसाला गुरुगा	५३६१	३४४७
इत्थी सागारिण	५१६६	२५५२			
इत्थीहि एाल-बद्धाहि	१७६४		ईसर-तलवर-भाडबिएहि	२५०२	६३८६
इधरध वि ताव सद्दे	१७७२		ईसर भोइयमादी	२५०३	६३८७
इधरह वि ताव गरुय	८२८		ईसरियत्ता रज्जा	५१६०	२५१०
इम इति पच्चक्खम्मी	२५८६		ईसि अधोणुता वा	३७७१	
इय सत्तरी जहण्णा	३१५४	८२८५	ईसि भूमिमपत्त	३४७८	
इय विभण्णिओ उ भयव	१७८०				
इयरह वि ता ए कप्पति	५०६२				
इरिएमण-भासाण	३१७६		उउबद्धपीढफलग	४३४८	
इरिय ए सोघयिस्स	४८८		उक्कोसओ जिगाण	१४१०	४०६३
इरियावहिया हत्थतरे	६१४१		उक्कोसगा तु दुविहा	८०	
इरियासमिति भासेसणा	३६३३		उक्कोसतिसामासे	६६०	
इस्सरनिकत्ततो वा	५८४२			५८३८	४०१४

उक्कोस माउ-भज्जा	५१६७	२५१७	उच्चतभसिए वा	६००२	
उक्कोसं विगतीओ	३४६०	२६१२	उच्चताए दाणं	४४६२	
उक्कोसाउ पयाओ	६५४६		उच्चसर-सरोमुत्तं	२८१८	
उक्कोसेण दुवालस	६०६२		उच्चारपासवरुखेल मत्तए	३१७२	
उक्कोसो अट्टविघो	१४१२	४०६५	उच्चारमायरित्ता	१८७३	
उक्कोसो थेराणं	१४११	४०६४	"	१८८०	
उक्कोसो दट्टाणं	३५१२		उच्चारं पासवरुणं	१७३२	३७५३
"	३५४७		उच्चारं वोसरित्ता	१८७७	
उक्कं.सोवधिफलए	१०१६		उच्चारति अर्थडिल	३७५१	
उक्खिप्पत्तगिलाणो	३०७६	१६७८	उच्चारि पासवरुणं	१७५४	३६७७
उग्गम उप्पादण	२०७३		उच्छवद्यणेषु संभारितं	५२७७	
उग्गम उप्पायण	१८३३		उच्छाहितो परेण व	४४४५	
"	४६७२		उच्छाहो विसीदते	२६६१	
"	२०६७		उच्छुद्धसरीरे वा	४०५१	
"	४६६३		उच्छोलणुप्पिलावरुण	१८८१	
उग्गमदोसादीया	४७१६	८४६	उच्छोल दोमु आभंस	४६४१	
"	४६७४		उज्जाणट्टाणादिसु	४६५८	
"	४६६५		उज्जाणउट्टालदणे	२४२६	
उग्गमविसुद्धिमादिसु	५६३५		उज्जाणरुक्खमूले	३८७६	
उग्गममादिसु दोसेसु	४११०		उज्जाणा आरेणं	४१७०	५२८६
उग्गममादी सुद्धो	१२७५		उज्जाणाऽऽउहणुमेण	५७४२	३२७३
उग्गयमणसंकण्णे	२८६६	५७६३	उज्जाणातो परेणं	४१८२	५३०२
उग्गयमणुग्गए वा	२६२६	५८२३	उज्जालज्झंयमाणं	२१६	
उग्गयवित्ती मुत्ती	२८६३	५७८८	उज्जुत्तणं से आलोयणाए	२६८०	५३५६
उग्गहणंतणपट्टे	१३६८	४०८२	"	२६८१	५३५७
उग्गाधारणकुसले	३०१६	१६१६	उज्जोयफुडम्मि तु	४३२०	
उग्गातिकुलेसु वि	४४१५		उट्ट-णिवेसुल्लंघण	५६६	
उग्गिणादिण्ण अमाये	२८४६		उट्टज्ज णिसीएज्जा	२८८५	५६०८
उग्घाताणुच्चाते	६४२१		"	६६००	"
उग्घातियमासाणं	६५४४		उट्टेतं निवेसंते	३५५२	
उग्घातियं वहंते	२८६८		उट्टुबद्धिगमेगतरं	१२३८	
उग्घातिया परित्ते	४७२३	८६२	उट्टुबद्धे रयहरणं	७०६	
उग्घायमणुग्घातो	३५३४		उट्टुमासो तीसदिणो	६२८५	
उग्घायमणुग्घायं	२८६१		उट्टुवास सुद्धो कालो	८६०	
"	३५३३		उट्टाहारक्खणट्ठा	३२१	
"	३५५४		उट्टाहं व करेज्जा	५२६६	३३४५
उग्घायमणुग्घाया	६६७५		उट्टाहं व कुसीला	४०२	
उग्घायमणुग्घायो	६६४५		उट्टमहे तिरियम्मि य	३१६३	४८४१

उड्डस्सासो अपरिक्कमो य	३६३१		उद्वावण णिक्खिसए	४७६३	२५०१
उड्ड थिर अतुरित	१४३१		"	५१५१	"
उड्डे केण कतमिण	१२६६		"	३३७६	
उड्डे वि तदुभए	१६५८		उड्ढि तिगेगतर	५०१०	६१०
उण्णातिरित्तमासा	३१४८		उड्ढिमणुड्ढि	४५६३	
उण्णियवासाकप्पा	३२०६		उड्ढिआओ नईओ	४२०८	
उण्णिय उट्टिय वावि	५८०२		उड्ढिसिय मेह अतर	५००८	६०६
उण्णोट्ट मियलोमे	७६०		उड्ढिसेस बाहि	३४६३	२६१६
उण्होद-च्छरण-मट्टिय	४६३४		उड्ढेसगा समुड्ढेसगा	२०१६	
उत्तर सत्तावयाणि य	३१३६	२७४७	उड्ढेसम्मि चउत्थे	२३५०	
उत्तादिए सेसकाले	६३८८		उड्ढेसियम्मि लहुगो	२०२२	
उत्तरकरण एगगया	३२१६		उड्ड सिता य तेण	१७८१	३८००
उत्तरगुणातिचारा	६५२६		उड्डसियाओ लोगसि	१५६५	
उत्तरएम्मि पक्खिते	४२२५	५६३५	उड्डियदडो गिहत्थो	६४१७	
उत्तरमाणस्स णदि	८४६		उड्डियदडो साहू	६४१७	
उत्तरमूले सुद्धे	१६६०	२६६४	उपचारेण तु पगत	५८	
उत्तर-साला उत्तर-गिहा	२४८८		उप्पक्कमे गत	२२७२	
उत्तिगो पुरा छिहु	६०१८		उप्पणकारणे गतु	३२७१	४३०३
उत्थाणो सहयाणे	१८७६		उप्पणारुप्पण्णा	३८६४	
उदउल्ल मट्टिया वा	१८४८		उप्पणो अघिकरणे	१७०८	३७३०
उदउल्लादीएसु	१८५१		उप्पणो उवसन्ने	३६४५	
उदए कप्पूरादी	३७६१	६००१	उप्पणो गारावरे	५७३६	३२६७
उदए चिक्खल्लपरित्त	४२३१	५६४१	उप्पत्ती रोगाण	६५०४	
उदएण वातिगस्स	३५८६	५१६५	उप्परिवाडी गुरुगा	५६६०	३०६८
उदग-गि-तेणसावयभएसु	४६२		उप्पल-पउमाड पुरा	४८३८	६७८
उदगसरिच्छा पक्खेणउवेति	३१८६		उप्पात अणिच्छप्पितु	३५६	
उदगतेण चिलिमिणी	५३४८	२४२२	उप्पादगमुप्पणो	१८१६	६११६
उदगागए तेणोमे	५६३८		उप्पायोसरासु वि	२०८४	
उदगागएवातासि	३१३२	२७४४	उब्बड पवाहेती	६०११	
उदरियमओ चउसु वि	५७४८		उब्भामगअणुब्भामग	४०८२	१८३६
उदाहाड जे हरियाहडीए	५८१६	३६६३	उब्भामग वडसालेण	१४०	५०२२
उविण्णजोहाउलसिद्धसेणो	५७५८	३२८६	उभओ वि अद्धजोयण	३१६२	
उदुवड मास वा	४६८६		उभयगणी पेहेतु	४६२७	१०६४
उद्दरे वमिस्ता	२६८४	५८३०	उभयट्ठातिणिविट्ठ	२४६६	२०७१
उद्दरे सुभिक्खे	१६६८	१०१८	उभयधरणम्मि दोसा	४३३२	
"	३४२६	"	उभयम्मि व आगाडे	१६०१	
"	४८८०	"	उभयस्स निसिरणद्धा	१२२६	
उद्वाण परिट्ठविया	५४४	२६०६	उभयो पडिबद्धाए	५४८	२६१४

„	५४६	२६१५	उवरि तु पचमइते	६४६०	
उभयो सह-कज्जे वा	६५७	२३८०	उवरि तु मु जयस्सा	८२२	
उम्मत्तवायसरिस	५२४७	३३२६	उवरिसते लहुग	१२८२	
„	५३७०	३३२६	उवलक्खिया य उदगा	५२६१	
उम्मर कोट्टिवेसु य	५७१६		उवलजलेण तु पुब्ब	४२३७	५६४७
उम्मादो खलु उविघो	३६७०		उवसग-गणित विभावित	८६७५	
उम्माय च लभेज्जा	६१७७		उवसगगवहिट्ठाण	४३६४	
उम्माय पावेज्जा	३३४१		उवसमणद्ध पउट्टे	११७३	३५५४
उल्लम्मि य पारिच्छा	३७५६		उवसते वि महाकुले	३५३७	
उल्लाव तु असत्तो	२६५५		„	३५५७	
उल्लोम लहु दिय रिणसि	११६८	३५७८	उवसतो रायमच्चो	३६७७	
उल्लोमारुणवराणा	११६७	३५७७	उवसपयावराहे	२७६१	
उल्लोयरा गिगमरणे	५३५०		उवसामितो गिहत्थो	२८४६	५५८०
उवएसो सघ.डग	१६८८	२६६२	उवस्सए य सथारे	१७००	३७२२
„	१६८६	२६६३	उवस्सग रिगवेसरा	३०६८	१६६६
उवकरणपूतिय पुण	८१८		उवहत उट्ठिय रायणो	३६७३	
उवकरणो पडिलेहा	२०८	३४६२	उवहत उवकरणम्मि	३५७६	५१५४
„	५३८०	३४३४	उवहम्मति विण्णारो	६२२६	
उवगरण-गेण्हरो भार	५६४६	३०५७	उवहयउगहलभे	४६०७	
उवगरणा पुव्वभणित	५६५७	३०६५	उवहयमणुवहते वा	४६०५	
उवगाहिता सूयादिया	६६३		उवहिम्मि पडग साडग	३०६८	१६६७
उवचरग अहिमरे वा	२७६६		उवहि सुत्त भत्त पारो	२०७१	
उवचरति को गिलाण	२६७४		उवही आहाकम्म	२६६४	
उवजु जिउ रिणमित्ते	३५५६		उवही य पूतिय पुण	८१०	
उवदेस-अणुवदेसा	२६२८	५८२५	उवेहउपत्तियपरितावण	३०८५	१६८४
उवधिममत्ते लहुगा	३६०		उवेहोभासणकरणो	३०८६	१६८७
उवधी पडिलेहेता	१४३८		उवेहोभासण उवरणा	३०८७	१६८६
उवधी लोभ-भया वा	१३३३		उवेहोभासण परितावण	३०८६	१६८५
उवधी मरीर चारित्त	२४४६		उवेहोभासण वारण	३०८८	
उवधी सरीरमलाघव	११६५		उव्वत्त खेल सथार	२६८४	१८८६
उवधीहरणो गुरुगा	१११		उव्वत्तराणीहरण	३६०६	
उवभुत्त थेरसद्धि	२२३१		उव्वत्तरा परियत्तरा	१७५६	३७८२
उवभुत्तभोगधेरेहि	६११		उव्वत्तरागमप्पत्ते	५४६५	५३७०
उवरिमसिण्हा कप्पो	१६०		उव्वत्तराइ सथार	३८८४	
उवरि सुयमसद्दहण	६१८२		उव्वताए पुव्व	१६४६	
उवग्गि पच्च अपुण्णो	३२६६	४३००	„	१६५५	
उवरि तु अप्पजीवा	१५७		उव्वरगस्स तु असत्ती	३००२	१६०५
उवार तु अगुलीओ	६१८	३८५०	उव्वरगे कोणो वा	१३४४	५७०

उसिणो ससट्टे वा	३०५२	१६५१	एएसामण्णतर	२७२६	
उसुकाटिण्हि मडेहि	४३८६		"	३७७४	
उस्सग्गटिई सुद्ध	५२३६	३३१८	"	४३६३	
"	५३५६	"	"	४४८४	
उस्सग्गलक्खण खलु	३५७१	५१४८	"	४६५३	
उस्सग्गसुत किंची	५३५७	३३१६	"	४६५७	
उस्सग्गसुय किंची	५२३४	"	"	६०३१	
उस्सग्गाती वितहे	५०२१	६२१	एएसामण्णतरे	४३२५	
उस्सगा पइन्न-कह्म य	२१३१		एएसामण्णयर	२६२६	
उस्सग्गित-वाघात	८३८		एएसि तिण्ह पो	५२१२	२५६५
उस्सग्गियवाघाते	८४१		एएसि तु पक्खण	५६२५	
उस्सग्गियस्स पुण्व	८३३		एएहि कारणेहि	३२६१	
"	८४७		"	३६०८	५१७५
उस्सगे अब्बाय	६६७२		"	३७६६	
उस्सगे गोयरम्मी	५२३७	३३१६	"	३७७६	
"	५३६०	"	"	४६१४	
उस्सग्गेरा गिसिद्धाणि	५२४५	३३०७	"	४८८२	१०२०
"	५३६८	"	"	५६५५	"
उस्सग्गेण भणितारिण	५०४४	३३२६	"	३१३५	२७५७
"	५३६७	"	"	४०५३	
उस्सग्गे वा उ ओहो	६६६८		एएहि तु उववेय	२७३३	
उस्सीसग-गहणेण	२१६५		एएहि य अण्णेहि य	२३६२	४८००
उस्सुत्तनणुवइट्ठ	३४६२		एएहि सपउत्तो	६२६३	
उस्सेतिम पिट्ठादी	४७०६	८८०	एक्कत्तीम च दिणा	६२८६	
उस्सेतिममादीण	४७१३		एक्कतो हिमवता	१५७१	
उस्सेतिममादीया	५६६६		एक्कल्ल मोत्तुण	६३३६	
उहाए पण्णात	५६१०		एक्कल्लेण ए लब्भा	६३५५	
ऊ			एक्कस्स दोण्ह वा	६१४४	
			एक्कस्स व एक्कस व	५०६२	२८०६
ऊणाट्टे एण्थि चरण	३५३२		एक्कहि विदिण्ण रज्जे	२५८१	
ऊणाहिय दुब्बल वा	४४६७		एक्क दुग चउक्क	३०१८	
ऊणातिरित्तमासे	३१४४		एक्क पाजरमारो	७६५	
ऊणाहिय मण्णतो	३६६७	५२१७	एक्क भरेमि भाण	३४३८	२८६०
ऊणेग न पूरिस्स	५८२६	४००६	एक्कार-तेर-सत्तर	२३२५	
ऊसत्थारो गाओ	१५३८		एक्कुत्तरिया घडछक्कएण	६५६३	
ए			एक्कूणवीसति विभासियम्मि	६६४८	
			एक्केक्कपदा आणा	१६०३	
एएण सुत्त ए कय	२६५१	५८४६	एक्केक्कम्मि उ सुत्ते	६१६२	
एए सव्वे दोसा	३२५२				

एकैकम्मि य ठारो	५१०२	२४५४	एग ठवे रिण्वित्तए	१२०२	३५८२
”	५२०५		एग व दो व तिणिए व	२०७५	
एकैक त दुविह	५०४		एग सच्चिकाए	६२४४	
,	१८६८		एगगि उणिएय खलु	८२६	
एकैकका उ पदाओ	५१०	४६०७	एगगितो उ दुविधो	१२२०	
एकैकका ते तिविहा	५२१३	२५६६	एगगिय चल थिर	४२३२	५६४२
एकैकका सा तिविधा	७११		एगगियस्स भ्रसती	१२७४	
”	७१६		एगतरीगज्जरा से	३६५२	
एकैकका सा दुविहा	२६१७		”	३६६३	
एकैकको तिणिए वारा	६१५७		एगतररिण्विगती	६३३०	
एकैकको वि य तिविधो	२१६६		एगतरिय रिण्विविल्ल	३८२५	
एकैकको सो दुविहो	५६६७	३०७६	एगगियस्स सुवरो	४५६०	
एककोमहेण छिज्जति	६५०६		एगापण्ण व सत्तावीस	५७२६	३१३८
एगवखेत्तरिण्णवासी	१०२२		एगा मूलगुरोहि	२०६३	
एगचरि मन्नता	५४४३		एगावराहुड्डे	६५१३	
एगट्टा सभोगो	५६४०		एगासति लभे वा	१२६६	
			एगाह पराण पक्खे	२७३८	५४७६
एगतरभाभिण उवस्सयम्मि	२४०७		”	५५७६	”
एगतररिण्णगतो वा	५००७		एगिदियमादीसु तु	१८०८	
एगत्ते जो तु गमो	१४५६		एगिदि-विगल-पच्चिदिएहि	५००३	
एगत्थ वसताण	२३७७	४८१४	एगुरावीस जहण्णे	३५२६	
एगत्थ रधणे भु जरो य	११८५	३५६६	एगुत्तरिया घडछक्कएण	६५६६	
एगत्थ होति भत्त	४१६०	५३०६	एगुएतीस दिवसे	३५१८	
एग दुग तिणिए मासा	२६०१		एगुएतीस वीसा	३५१७	
एगपुड सगल कसिए	६१४	३८४७	”	३५४६	
एगवतिल्ल भडि	३१८०		एगे अपरिएण या	५४६४	५४३७
एगमखेगा दिवसेसु होति	६३२३		”	५५३६	”
एगमखेगे खेदो	५२८२	३३६०	एगे अपरिएणते या	५५४५	”
एगमरण तु लोए	५१४०	२४६०	एगे उ कज्जहाणी	३८४१	
एगम्मिअण्णगदारे	६४२६		एगे गिलाणपाहुड	५४६६	
एगम्मि दोसु तीसु व	५११२	२२७१	एगे तु पुअवभिए ते	४५७६	
एगस्स अण्णगाण व	४०३६		एगेण कयमकज्ज	४७८७	६२८
एगस्स पुरेकम्म	४०७६	१८३६	एगेण तोमिततरो	६०८१	
एगस्स वितियगहणे	४०८५	१८४२	एगेण समारद्धे	४०८६	१८४३
एगस्स माराजुत्त	४४६८		”	४०८६	
एग उडुबडम्मि	२१६६		एगेण बघेण	७४३	
एग च दोव तिणिए व	३८३१		एगेखेगो छिज्जति	६५०५	
”	३८३८				

एगे तू वच्चते	५४८६	५३६१	"	५६२५
"	५४६		"	५६८६
एगे महाणसम्मी	११८२	३५६३	एतेण मज्झ भावो	४४२८
एगेमि ज भणिय	३३१६		एतेण उवातेण	१०६१
एगो इत्थिगमो	५४५६		एते तु दवावेंति	१३६६
एगो गिलाणपाहुड	६३३६		एते पदे ण रक्खति	१३३८
एगो णिद्धिसतेग	४५६४		एतेसामणएतर	६२३
एगो व होज्ज गच्छो	१६५७	१६१५	"	६३३
एगो सघाडो वा	३०३०		"	६४१
एगो सयारगतो	३८४८		"	६४६
एतणतरागाढे	४६३		"	१०७३
एतद्दोस्विमुक्क	१६४२		"	१५०२
"	५०६४		"	१५४०
"	६३४१		"	१५८६
एतविहिमागत तू	५४६३	५४३६	"	१६२१
एत खलु आइण	८६८		"	१८१४
एत चिय पच्छित्त	१६०२		"	२१५७
एत त चेव चर	१४६६		"	२१८३
एत तु परिगहित्त	१८६६		"	२२२४
एत सदेसग्गिह	१४८७		"	२४६५
एताइ सोहित्तो	१८३८		"	२५१४
एताणि वितरति	२५८४		"	२६८३
एतारिसमि देंतो	४६६		"	२७१०
एतारिसम्म बासो	५२३२		"	३७४०
एतारिस विउसज्ज	५४६५	५४३८	"	४४६६
"	६३३८	"	"	४६७०
एतारिस विओसज्ज	५५४६	"	"	५६५६
एतारिसे विओसेज्ज	५५३७	"	"	६२५६
एतारिस असतीए	१७७५		एतेसामणएतरे	६०८
एतविहिमागत तू	५५३५		"	६१६३
एते अण्णे य तहि	३८२६		"	६१७०
"	३८३६		"	७७१
एते उ अवेण्णते	५०३०		एतेसामणायर	७२७
एतेअिय पच्छित्त	३३७		"	८७३
एते चेव गिहीण	३३८		"	८८४
एते चेव दुवांस	१३८५		"	८८६
एते चेव य दोसा	४२५०		"	१२२१
"	५६२२		एतेसि अमरणादी	५६२६

एतेसि असतीए	४४६	एत्तो गिक्कायरा	६५७५	
एतेसि कारणाए	३३५०	एत्तो समारुभेज्जा	६६१८	
एतेसि च पयाए	५६७३	३०८२ एत्तो हीएतराग	१८६५	
एतेसि तु पदारए	२१३५	एत्थ उ अएभिग्गहिंय	३१५१	
"	४६२७	एत्थ उ पएग पएग	३१५३	४२८४
एतेसि तु पयाण	५६७५	३०८२ एत्थ किर सत्ति मावग	५७३८	३२७०
एतेसि पढमपदा	१४६६	एत्थ पडिसेवराओ	६४२२	
एतेसि पळ्वएणता	३१०६	"	६५८१	
एतेसु उ गेण्हते	४७६५	एत्थ पुए एवकेके	६१६४	
एतेसु चिअ खमणादिणसु	२८	एमादि अएगाय दोसरज्ज गट्ठा	३४४१	२८६४
एतेह सथरत्तो	२६६८	एमादिकारणेहि	२४५४	
एतेहि कारणेहि	८६१	एमेव अगहितम्मि वि	११३३	
"	१०६७	एमेव अछिण्णोसु वि	४५५६	
"	११२७	एमेव अट्टजात	३६८	
"	१२१६	४६०८ एमेव अतिक्कते	१०७६	
"	१३०८	एमेव असण्णिहिने	२२२६	
"	१५५०	एमेव अहाळदे	५५६७	५४६६
"	१५६८	एमेव इत्थवग्गे	४५६५	
"	१५७५	एमेव उगमादी	२६७७	५३५३
"	१५८२	एमेव उत्तमट्ठे	३४२४	२८७६
"	१७४६	एमेव उवहिसेज्जा	६२०१	७६६
एत्ते होति अपत्ता	६२२८	एमेव उवज्झाए	२८२१	
एत्तो एगतरीए	७८३	एमेव कतिवियाए	१३२६	
एत्तो एगत्तरेण	१६२	एमेव कागमादिसु	४४२६	
"	७३६	एमेव गगायरि	२८०८	५७७५
"	६८०	"	२६०७	५८०४
"	१०८४	एमेव गगावच्छे	५५५०	
"	१०६१	एमेव गिलारो वी	१३३६	५६५
"	१०६७	एमेव गिहत्थेसु वि	३४७	
"	१३५६	एमेव चरिमभगे	३७८४	
"	१४५१	एमेव चरिमभगो	२६३२	
"	१५५६	एमेव चाउलोदे	५६७५	
"	१५७०	एमेव चारगभडे	१३२२	
"	१५७८	एमेव चिएट्ठादिसु	१३३७	
"	१८५०	एमेव चेइयाण	४५८०	
"	२१६०	एमेव एव विकप्पा	१८३६	
"	३३४०	एमेव तनियभगे	३७८३	
"	६०२५	एमेव ततियभगो	३४०२	२८४४

एमेव तिविहकरण	६०३६		एमेव य सच्चित्तं	४७६७	६०७
एमेव तिविहपात	४४६०		एमेव य समशीण	६१६६	
एमेव तु मजोगा	४२४१		एमेव विहारम्मी	१०६५	
एमेव तेल्लनोलिय	५७५०	३२८१	एमेव सम ावगे	२६७१	५३४७
एमेव थभकेयरा	३१६०		एमेव सजईरा वि	४६०१	
एमेव दसगम्मि वि	३८७०		एमेव सजतीण	४६३६	१०७३
एमेव दसणे वी	६३६५		एमेव सजतीण वि	२०७६	१०८५
एमेव देहवातो	२४२		"	४६४८	
एमेव पउत्थे भोइयम्भि	५०५५	२८००	एमेव मेसएसु वि	५०७	४६०४
एमेव पउलिताऽपलिते	४६४३	१०८०	"	२६१६	
एमेव बारसविहो	५२१४		"	२६३६	
एमेव वितियभगे	३७८०		"	२७१७	
एमेव विनियमुत्ते	५४४२		"	२७६२	
एमेव भावतो वि य	४६०३	१०४०	"	३३७७	
एमेव भिक्खगहणे	२६०६	६००६	"	४१४५	५२६७
एमेव मज्जणादिसु	५०४८	६४७	"	६००४	
एमेव मामगस्स वि	५०२६	६२८	एमेव सेसएहि वि	४२३८	
एमेव य अरावे वी	४६४०		एमेव सेसगम्मि वि	३२३०	
एमेव य अवरारहे	६३७७		एमेव सेसगाग वि	२०८२	
एमेव थ भोममि वि	३४८		एमेव सेमियासु वि	४३८६	
एमेव य इत्थीए	२७०२	५०८०	एमेव हाइ इत्थी	५२६१	२५७६
एमेव य उदितो त्ति य	२६१२	५८०६	एमेव होति उवरि	२५७	२६१६
एमेव य उवगरणे	५०६३		"	३४६८	"
एमेव य कम्मेण वि	४३६		"	५७०२	"
एमेव य गेलण्णे	२६२४	५८२१	एमेव होति नियमा	४४८३	
एमेव य जतम्मि वि	४५०१		एमेवोवाधमेज्जा	१८३७	
एमेव य छेदादी	३५२१		एयगुणत्रिप्पमुक्के	३०१७	
एमेव य ण्णागान्ति	२०२०	४६७६	एयगुणदिप्पण	३१०८	
एमेव य गिगज्जीवे	४८५६	६६८	एयगुणसमगस्स तु	३११३	
एमेव य पडिबिम्ब	४३०४		एयविहिमागय त्	५५४४	५३६८
एमेव य पण्डाग	१६६		एयस्स गात्थि दोसो	२८३८	५५७२
एमेव य परिमुत्ते	४१०६	१८६७	"	५१५२	२५०२
एमेव य पासवरो	६१२०		एयस्स गाम दाहिह	३०३८	१६३६
एमेव य पुरिसारा वि	५०४०	६३६	एव चैव पपाण	५८३६	४०१५
एमेव य भयणादी	४६०४	१०७१	एय तु भगवत्तिण	६२६	
एमेव य भिक्खुस्स वि	६६३५		एय मुत्त अपल	१५४६	
एमेव य वसभस्स वि	६६३२		एयाइ अणुव्वतो	४३७४	
एमेव य विज्जाए	३७१५		एयागि य अण्णाणि य	२७२८	

एयाणि सोह्यतो	४६७३		एव जायगवत्थ	५०५०	
एयारिमिम् वासो	४६६४	२३१४	एव गाम कप्पनी	३२४८	
एयारिसे विहारे	३३८१	२७८२	एव ता असहाए	४७४३	८८५
एरवति कुणालाए	४२२६	५६३६	एव ता उडुवढे	१२३२	
एरवति जत्थ चक्किय	४२४३	५६५३	एव ता गिह्वाम	३०४६	१६४७
एरवति जम्मि चक्किय	४२२८	५६३८	एव ता गेण्हने	१०५७	२८०२
एरिसओ उवभोगो	५१०५	२४५७	एव ता जिगक्कप्प	४१४८	५२७०
एरिसय वा दुक्ख	४४३५		एव ता गीहरण	१२८६	
एरिससेवी एयारिसा	३५८७		एव ता पच्छित्त	३१११	
एवइय मे जम्म	१०३६		एव ता सच्चित्ते	१५३	
एवमपि तस्स एियय	२६५८		एव ता सब्वादिमु	३३५८	
एवममखडे वी	११०		एव ता सबिगारे	१२०६	२५५६
एवमुवत्सय पुरिमे	२६७३	५६४८	एव ताव अभिण्णे	४६६८	
एव अट्ठोक्कती	३५२८		एव ताव दिवसआ	२६३६	५८३२
एव अट्ठाणादिमु	४८७६		एव तावउट्टुगु ङे	४७२८	
एव अलम्भमाणे	१२३७		एव ताव विहारे	४५८६	
एव अवयदसी	४१५४	५२७६	एव तियागा गहणे	६४५	
एव आम ग कप्पति	४८६७		एव तु अगीयन्थे	२८०१	५७६७
एव आलोएति	३८७४		एव तु अणसओइग्ग	१६५६	१६१७
एव उग्गमदोसा	४१८५		एव तु अलम्भते	१०१७	
एव उभयावराधे	११२५		एव तु असदभावो	१८६४	५६१०
एव एकक्क तिग	५२२२	२५६६	एव तु अहाछे	३५०१	
एव एकक्कदिण	२८०५	५७७१	एव तु कइ पुरिमा	३५७६	५१५६
एव एत्ता गमिया	२८२५		एव तु गावट्टेसु	१०४६	६४८
एव एत्ता गमिया	६०५२		एव तु दिया गहण	१६८०	२६८४
एव एया गमिया	६४५७		एव तु पयतमाणस्म	५७५	
एव एसा जयणा	६४४६		एव तु पाउम्भो	३१२८	
एव खलु उक्कोसा	४६३१	१०६८	एव तु भु जमाण	५७७८	
एव खलु उक्कोसा	३८८६		एव तुमपि चोदग	६४१४	
एव खलु गमिताण	६४६२		एव तु समालेण	६४६५	
एव खलु जिणक्कप्पे	१४४४		एव तु सो अवहिता	१७०७	५०८१
एव खलु ठवणाआ	६४६३		एव तेसि ठिताण	४६३७	१०७४
एव खलु सविग्गे	५५६४	५४६३	एव दव्वतो छण्ह	६७७३	६१४
एव गिलाणलक्खेण	२६८६	१८६१	एव दिवसे दिवमे	२८००	२७६६
एव च पुणो ठवित्ते	१६३६	१५६१	एव पराप्परस्मा	१७६३	
एव च भणित्तेतम्मि	५२६०	३०६८	एव पाओवगम	३६२२	
एव चिय पिसितेण	४३८		एव पाउसकाल	२२६५	
एव चैव पमाण	६६१		एव पादोवगम	३६७५	
			एव पि अठायेते	५५८१	५४८१

एव पि अठायतो	२७४३	५४८१	एमा सुत्त अदत्ता	६२५२	
एव पि वीरमारो	३००७	१६१०	एमेव कमो गियमा	५८७	
एव पि परिच्छत्ता	४१८८	५३०७	"	५६०	४६४०
एव पीतिविबड्डी	४१७१	१२६८	एमेव गमो गियमा	६००	
एव पुच्छासुद्धे	५०४४	६४३	"	६१३	
एव फासुमफासु	४०६१	१८१८	"	८३५	
एव बारसमासा	६५५२		"	८४४	
एव बारसमासे	२८०४	५७७०	"	६६८	
एव भगतो दोसो	२६५०		"	१००८	
एव वित्तिगिच्छे वी	२६१८	५८१५	"	१२६७	
एव वि मग्गमारो	७५८		"	१३०६	४६०६
"	७६७		"	१४८८	
"	८४३		"	१७७७	३७६६
एव सडडकुलाइ	१६३४	१५८६	"	१६६५	
एव सगा वच्च मु ज चिप्पिने	८२७		"	२०२८	
एव सण्णितराग वि	३५३६		"	२३०७	
एव सिद्ध गह्ण	४५४०		"	२५२५	
एव सुत्तगिबधो	१२२३		"	२६४०	
एव सुत्त अफल	४१७१	५२६०	"	३०६४	
"	५२०८	२५६१	"	३२६८	
एस गमो वजग्गमीसएग	४२८		"	४६६४	
एस तव पडिवज्जति	१८८६	५५६७	"	४६६७	
"	२८८०	"	"	४८६०	१०००
"	६५६५	"	"	४८६६	१०३३
एस तु पलबहारी	४७८२	६२३	"	५१६३	
एस पसत्थो जोगो	५६६१		"	५२२३	
एसमगाइप्पगा खलु	१४७८		"	५८७१	
एस विही नु विसज्जिते	५४६०	५४३४	"	५६३१	
एसणा दोसे व कते	१६४४	१६०३	"	५६४८	
एसणामादी भिण्णो	४३२		एसेव गमो नियमा	६६६४	
एसणामादी रद्दादि	४४३		"	१७८२	३८०३
एसा अविही भणित्ता	४०८४	१८४१	"	२८५४	५५८७
एसा आइप्पणा खलु	१४६२		"	३३१०	
एसा उ अगीयत्थे	६३५८		"	५५५१	५४५१
एसा उ दप्पिया	४६४		"	६६६५	
एसा खलु ओहेणा	५१६७		एसेव चतुह पडिसेवणातु	६१	
एसा विही विसज्जिते	५५३३		एसेव य, दिट्ठ तो	४८६६	१००८
			"	६५०८	

एसेव य विवरीओ	४२३
एसो उ असज्माओ	६११७
एसो उ आमविही	४७१७
एसो वि ताव दमयउ	२७८३
एहि भगितो त्ति वच्चति	६२११

ओ

ओकच्छय-वेकच्छय	१३६६
ओगास सथारो	३८६
ओगाहण्ण सासतण्णा ए	५१
ओदइयादीयाए	३१४१
ओदण-ओरसभादी	२४६३
ओदण मीसे णिम्मिसुवववटे	४६३८
ओदरिए पत्थयणा	५६६७
ओधोवधी जिणारा	१३८६
ओबद्धपीढकलय	५७८८
ओभामिओ मि	१५६४
ओभावणा पवयणे	१०८५
ओभासणा य पुच्छा	५८६४
ओभासिय "डिसिद्धो	४४४८
ओमम्म तासलीए	४६२३
ओम ति-भागमद्ध	२६६१
ओमथ पाणमादी	५८६५
ओमाणस्स व दोसा	१६८४
ओमादिकारणेहि व	५५१६
ओमे एणण सोही	५७०६
ओमे तिभागमद्धे	४२६
"	३६६५
ओमे वि गम्ममाणे	१७६
ओमे सगमथेरा	४३६३
ओमोयरियागमणे	५७०७
ओमोयरिया य जहिं	४७६७
ओयम्भूता खेत	४८१८
ओरोहधरिसणाए	५७०८
ओलग्गणमणुवयण	१४५६
ओलबिऊण समपाइत्त	३८०४
ओलोगम्मि चिलिमिली	६१६२
ओवट्टिया पदीस	४३८५

ओवामाविसु सेहो	४००
ओवासे सथारे	१०१५
"	१०१७
ओसवण अहिसक्का	१००६
ओसट्टे उज्जिम्य-धम्मिए	२४६४
ओसवण अधिकरणे	२११६
ओसण्णमलक्खणसजुयाओ	४२६७
ओसण्णापरिभोगा	४९ २
ओसण्णे दट्ठूण	०८ ६०७६
ओसण्णे वि विहारे	५४३६
ओह अभिग्गह दारा	२०७०
ओहण्णिमीह पुरा	६६६७
ओहारा ता अज्जो	३६७८
ओहारागामिमुहीण	१७०४
ओहातिय-कालगते	२७५१
ओहादीया भोगिणि	२५७२
ओहारमगरादीया	४२२३
ओहावता दुविहा	४५७८
ओहावित-उस्सण्णे	५५६२
ओहावित ओसण्णे	२७५५
ओहावित-कालगते	५५८६
ओहमणा उवउज्जिय	३५६०
ओहीमाती णाणु	२५८३
ओहे उवग्गहम्मि य	१३८७
ओहे एगद्विसिया	६३१५
ओहे वत्त अयत्ते	५५२८
ओह सव्वणिसेहो	५२०२
ओहेण उ सट्ठारा	६६८१
ओहेण विभागेरा य	२०१७

क

कक्खत्तकक्खवग्गच्छिताइसु	४६३०
कच्छादी ठाणा खलु	४१२७
कज्जकारणमवधो	६६७
कज्जमक ज जनाज्जत	६६५४
कज्जविर्वत्ति दट्ठ ण	६२०५
कज्ज णाणादीय	५२४६
"	५२७०

कज्जे भत्तपरिण्णा	२७६८	कमढगमादी लहुगो	२४०
”	६३७३	कमरेणु अब्रहुमाणो	५७८३
कटुकम्मादि ठाणा	४१३६	कम्मचउक्क दब्बे	५००
वट्ठण किलिचेण व	१८७५	कम्मपसगऽणवत्था	२०६४
कट्ठेण व सुत्तण व	४६१६	कम्मपसत्थपसत्थे	४१२०
कट्ठ पोत्ते चित्त	५११८	कम्मसखेज्जभव	३६०२
”	५१५४	”	३६०३
कडमो व चिलिमिली वा	२२२	,	३६०४
”	५३६६	”	३६०५
कडगाई आभरणा	२२६५	कम्मस्स भोग्गस्स य	४४०
कडगादी आभरणा	५६१४	कम्म कीत पामिच्चिय च	५४१७
कडजोगि एक्कगो वा	१६६३	कम्मादीण करण	६६८२
कडजोगि मीहपरिमा	३४४३	कम्मे आदेसदुग	४६४७
कडिपट्टे य छिहली	३६१०	कम्मे सिप्पे विज्जा	३७१२
कडिपट्टमो अभिणवे	३६११	”	३७१३
कण्णा हणति काल	६१४७	कयकरणा इतरे या	६६४६
कण्णतेपुरभोलोअरोग	४८५१	कयम्मि मोहभेसज्जे	३८०६
कण्ण सोधिस्सामि	६८३	कयमुह अकयमुहे वा	४६६८
कतक्कजे तु मा होज्जा	६२७	कयवर-रेणुच्चार	२३१८
कतवेण सभावेण व	१३३०	करइयभत्तमलद्ध	४४४२
कतजत्तगहियमोल्ल	३७२१	करणे भए य सक्क	४७३
कतर दिस गमिस्ससि	३१४	कर पाद डडमाविहि	४७६०
कत्तरि पयोग्गपेक्ख	४४१६	कर-मत्ते सजोगो	१४६
कत्तो ति पल्लिगादी	३४४७	कलमत्तातो अहामल	१५८
कत्थइ देसग्गहण	५२३६	कलमादहामलगा	१५६
कत्थति देसग्गहण	५३६२	”	१८६
कप्पट्ट खेल्लण	१३०३	कलमेत्त रावर्णि रोम्म	४०३५
कप्पट्ट दिट्ठ लहुओ	४७२६	कलमोदराणि भणिते	३८५३
कापट्ठिओ अह ते	२८७६	कलमोदराणि य पयसा	३८५४
”	६५६४	कलमोयणो य खीर	३०२५
कप्पडियादीहि सम	३४५८	कवडगमादी तवे	३०७०
कप्पति ताहे गारत्थिएण	८०३	कव्वाल उडुमादी	३६२०
कप्पति तु गिलाणट्ठा	५६४४	कसाय-विकहा-वियडे	१०४
कप्पति समेसु नह	४०६६	कसिएत्तमोसहीण	१५८३
कप्प-पक्का तु सुते	६३६५	कसिए पि गेण्हमाणो	६३६
कप्पम्मि अकप्पम्मि अ	४८६६	कसिएण खवणाए	६४६८
कप्पा आतपमाराणा	५७६४	कसिएण्णवणा पडमे	६४१८
कप्पामियस्स असती	७६३	”	६४१६
		कसिएणाऽविहिभिण्णम्मि य	४६१५

१०८४

६००

१६२८

१६६६

३८६८

१०५२

कसिणो चतुर्विधम्मी	६७२	काम आउयवज्जा	३३२३
कमिणा कसिणा एता	६४६६	काम उदुविबरीता	२०५८
कस्स घर पुच्छिऊण	४४४६	काम कम्मगिगमित्त	५१५
कस्स त्ति पुच्छियम्मी	५०२४	वाम कम्म पि मो कप्पो	५६६० ३१००
कस्स त्ति पुरकम्म	४०६४	काम खलु अणुगुरुगो	४८५६ ६६६
कस्सेते तणफलगा	१०६०	काम खलु थलसद्दो	३५०४
कस्सेयति य पुच्छा	१७८८	काम खलु नेतण्ण	५६७४
कस्सेय पच्छित्त	४७६५	काम खलु धम्मकहा	४०५४
कहिता खलु आगारा	२३४१	काम खलु परकरणे	१६२३
कहितो तेसि धम्मो	५७५३	काम खलु पुरसद्दो	४०६२ १८१६
कचरणपुर इह सण्णा	३८४६	काम खलु सवण्णू	४८२२ ६६३
कजियआयामासति	२००	काम जिणपच्चक्खो	५४३४
कजिय चाउलउदए	३०५६	काम जिणपुव्वधरा	६६७४
कटगमादी दब्बे	६२६३	काम तु सव्वकाल	३१७७
कटगमादीसु जहा	१८८३	काम देहावयवा	६१७२
कटट्ठि खारु विज्जल	४७३६	काम पमादमूलो	६६६०
कटट्ठि मच्छि विच्छुग	४१७	काम पातधिकारो	४५२२
कटट्ठिमातिएहि	४७४१	काम ममेत कज्ज	६४०६
कटाइ-साहण्डा	०६५३	काम विभूसा खलु लोभ-दोसो	५८१८ ३६६७
कटादी पेहत्तो	६२६	काम विसमा वत्थू	६४०४
कटाइहितीतरक्खट्ठता	६३१	काम सत्तविकप्प	३३१५
कडादि लोभ्र णिसिरग	१८०७	काम सभावसिद्ध	३१
कहूसग-बवेण	२१७५	काम सव्वपदेसु	३६४ ४६४४
कतार-णिग्गताण	०५२८	काम सुओवओगो	६०६७
कदप्पा-परवत्थ	३१८	कामी सघरज्जणओ	४६८७
कदादि अभु जते	५६६८	कामी सघरज्जणतो	४६६५
काइयभूमी सयारए य	३१५६	कयकरणा इतरे या	६६४६
काउस्सगमकातु	१५६६	कायल्लीण कातु	२८५
काउ सय ग कप्पति	८३६	काय परिच्चयतो	४७६१ ६३१
काऊण अकाऊण व	२८५६	कायाग वि उवओगो	३६५
काऊण मासकप्प	२०३८	काया वया य तच्चिय	३३०८ ४६७६
"	३१४५	कायी सुहवीसत्ता	१६७१
"	३१५६	कायेहविमुद्धपहा	१४७६
काएण व वायाए	२२५८	कारण अणुण्ण विहिगा	५८१५ ३६६२
काओवचिओ बलव	३६१०	कारण एग मडबे	२४१०
काकिणवारणे लहुओ	३८४	कारणओ सग्गामे	६०४२
काणच्छि रोमहरिसो	२३३६	कारणगहणे जयणा	६०५३
काणच्छिमाइएहि	५१४५	कारणगहिव्वरिय	३३६६ २८५१
कातूण य पग्गाम	५५२६		

कारणजाए अबहडो	२७०६	५०८४	काला समयादीयो	३१६३	
कारणतो अबिधीए	१६६८	३७२०	कालो सभा य तहा	६१३२	
वारणपडिसेवा वि य	४५६		कावालिए य भिक्खू	५०७७	२८२२
कारणमकारण वा	२६१०		कावालिए सरक्ख	३६२२	५१८७
कारणमकारणो वा	२०८७		कासानिमातिज पुव्वकाले	५०१३	६१३
"	३५०६		काहीया तरुणोसु	५२२५	२५८०
कारणमगुण्य-विधिणा	२०८६	३६६२	काहीता तरुणीसु	५२१६	२५७६
कारणलिगे उड्ढोरगतता	४६६७		"	५२२४	२५७६
कारणगुणपालगाण	३२६८		काहीया तरुणोसु	५२१५	२५६७
कारणिए वि य दुविधे	१०६१		किड्ड तुयट्ठ अणाचार	१३११	
कारणो उडुगहिते	२१७१		कितिकम्म च पडिच्छति	२८८४	
कारणो विलगियव्व	६००६		कितिकम्म तु पडिच्छति	६५६६	
कारणो सपाहुडि ठित्ता	१३४३	५६६	कितिकम्मस्स य करणे	२०७२	
कारणो हिसित मा	४६३६		किमणाऽऽभव्व गिण्हसि	२७७५	
कारावणमभियोगो	५८६		किरियातीय गातु	१७५६	३७७८
कालग सव्वद्धा	५४		किवणोसु दुव्वलेसु य	४४२४	
कालगतम्म सहाये	६५६२		किह उप्पण्णो गिलाणो	३००५	
कालचउवक उवकोमएण	६१५२		किह भिक्खू जयमाणो	६३०४	
कालचउवके गाणसग	६१४५		किह भूताणुवघातो	६२६	३८६१
कालदुगातीतादीणि	१०१४		कि आगतस्थ ते बिति	३३८०	२७८१
कालमभ'वारुमतो	३८८८		कि उवघातो धोए	४१०७	१८६५
कालातिक्कमदारो	१६७१	२६६६	कि उवघातो हत्थे	४१०५	१८६३
वालादीते काले	२८७		कि कारण चकमण	३८०	
कालियपुव्वगते वा	५५२३	५४२५	कि कारण चमढणा	१६३२	१५८४
कालियमुय च इसिभासियागि	६१८८		कि काहामि वराओ	२६८३	१८८५
कालुट्ठाई कालनिवेसी	५६७४	३०८३	कि काहि ति ममेते	१७४१	३७६४
कालुट्ठादीमादिसु	५६६२	३१०२	कि काहिति मे वेज्जो	३०७६	१६७५
कालेण अपत्ताण	३२३७	४२६२	कि गीयत्थो केवलि	४८२०	६६१
कालेण पुण कप्पति	५६७३		कि च मए अट्ठो भे ?	१७८६	
कालेणोवतिएण	३२३५	४२६०	कि दमओ ह भते	५०३४	६३३
काले अपट्ठपत्ते	२३६७	४८०५	कि पत्तो गो भुत्त	३८६०	
काले उ अणुण्णते	४१६०	५२८२	कि पुण अणगासहायएण	३६१३	
काले उ सुयमाणो	२६४३		कि पुण जगजीवसुहावहेण	५६४२	
काले गिलाणवावड	२६५४		कि पेच्छह ? सारिच्छ	१६८८	३७१२
काले तिपोरिसट्ठ व	६१०१		कि मण्णे गिसिगमण	५६३८	३०४४
काले वा वेच्छामो	१२६०		कि वच्चसि वासते	३०२	
काले विणये बहुमाने	८		कि वा कहेज्ज छारा	४४८२	
काले सिहि-णदिकरे	२१६३		किचण ऋट्ठा एण्हि	२४७२	
कालो दव्वऽवतरती	१०१२				

कीयकड पि य दुविह	८४७५	केव न मगोहि-चोदस	५४२४
कीय किराविय अगुमोदित	४४७४	केवलवज्जेसु तु अतिसणसु	५६६२
,	६०३०	केवलविण्णे अत्थे	४८२६ ६६६
कीवस्स गोणरागाम	३५८८	केसव-अद्भवत्त पण एवति	१४१ ५०२३
कीवे दुट्ठे तेरो	३७४२	केसि चि अभिग्गहिता	१६७७ १६०६
कीस रा राहिह तुम्भे	५०२५	केसि चि एव वाती	३५४६
कुच्छरादोसा उल्लेण	८५०	केसि चि होतमोहा	६०६०
कुच्छित्तलिंग कुलिगी	६६	को आउरस्स कालो	१०
कुज्जा व पच्छकम्म	४६५०	कोई तत्थ भरोज्जा	३२४७ ४२७२
कुज्जा वा अभियोग	४०२८	कोउग-भूतीकम्म	४२८७
कुट्टिस्स सक्करादीहि	६३३	कोउय-भूतीकम्मे	४३४५
कुड्डतरिया असती	१७२८	कोउहल च गमरा	५६३
कुतित्थ-कुसत्थेसु	३३५३	को गेण्ठति गीयत्थो	५८५४ ४०२६
कुत्तीय-सिद्धाणिहग	५८५८	को जाग्गति केरिसओ	५१०३ २४५५
कुलमादिकज्ज दडिय	६३४	कोट्टगमादिसु रन्ने	४७३० ८७०
कुलवमम्मि पहीरो	२२४२	कोट्टागारा य तथा	२५३४
,	२३५१	कोट्टिय छण्णे उविट्ठ	४०४७
कुलसथवो तु तेमि	१०६६	कोट्टियमादीएसु	५६५१
कुलियं तु होइ कुड	४२७३	कोणयमादी भेदो	५०८
कुलियादि ठाणा खलु	४२७२	कोणामेकमरोगा	१२०८
कुवणय पत्थर लेट्ठ	४७७४	को दोसो को दोसो	३४१६ २८७१
कुसमादि अभुसिराइ	१०२६	को दोसो दोहि भिण्णे	४८४६ ६८६
कुसलविभागसरिसओ	६४०६	कोद्वपलालमादी	४७११ ८४२
कु चित सल्ले मालागारे	६३६६	कोधम्मि पिता पुत्ता	२६२
कु भार-लोहकारहि	४०१५	को पोरिसीए काले	५८२३ ४०००
कूपति अदिज्जमारो	३८४३	को भत्ते परियाओ	२८७०
कूपरदसमसोमसीता	५६३६	"	६५८४
कूरो रासिइ खुध	३७८६	कोमुति गिणसा य पवरा	२२६४
केइत्थ भुत्तभोई	५१०४	कोयी मज्जगगविही	३०३७ १६३८
केइत्थ भुत्तभोगी	२५४७	कोला उ घुगा तेमि	४२६०
केई परिसर्होहि	३६२३	कोलालिपावगा खलु	५३६० ३४४५
केई पुव्वणिंसिद्धा	६३४४	कोललतिरे वत्थव्वो	४३६२
केण पुण कारणेण	६४२५	कोल्लपरपरसकलिया	१३४६ ५७५
केणुवसमिओ सद्धो	८८०	को वा तथा समत्थो	५४२७
केयि अहाभावेण	१४५०	को दोच्छिनि गेलण्णे	३०६५ १६६४
केलासभवरो एते	४४२७	कोसग राहरक्खट्ठा	३४३३ २८८५
केवइय आस-हत्थी	२३६६	कोसबाऽऽहरकए	५७४४ ३२७५
केवल मगाप्पज्जवरागारो	६४६७		

कोसाऽहि-सल्ल-कटग	३४३७		खागू कटग-विसमे	५८३०	४००७
कोहा गोगादीण	३२८		खामित विसवित्ताइ	१८१८	६११८
कोहा बलवागम्भ	४४०८		खित्तम्मि खेत्तिवेस्सा	५४८६	
कोहाई परिणामा	४१६५		खिप्प मरेज्ज मारेज्ज	४२८६	
कोहातिसमभिभूयो	३५६		खिवरो वि अपावतो	४७७५	६१६
कोहादी मच्छरता	३५५		खिसा खलु भोमम्मी	२६३८	
कोहेण ग एस पिया	२६३		खीर-दधिमादीहि	२२८३	
कोहेण व माणेण व	३४०		खीर-दहीमादीण य	४१८१	५३००
”	३१६		खीर-दुम-हेट्ट पथे	१५१	
कोहो बलवा गम्भ	२६६६		खीराहारो रोवति	४३७७	
ख			खीरुण्होद विलेवी	२३१	
खग्गुडेग उवहते	४५८१		खीरोदरो य दब्बे	३८५२	
खण्णमाणे कायवधो	६२४		खुज्जाई ठाणा खलु	२६०४	
खत्तियमादी ठाणा	२५६७		खुट्ठग । जण्णो ते मता	३०७	६०७५
खट्ठादाणि य गेहे	३१८६		खुट्ठागसमोमरणेसु	४५७५	
खमआसि आममोण	६२५४		खुट्ठी येराणप्पे	१६८४	२६८८
खमण मोहतिगिच्छा	३३६८	२८५०	खेतस्स उ पडिलेहा	२४५१	
खमण्णेण खामिय वा	३६६०		खेत्तबहिता व आणे	३००१	
खमण्णे वेयावच्चे	२७		खेत्तमहायणजोग्ग	८५६	
खय उवमम मीस पि य	५४३०		खेत्त गतो य अडवि	३४६६	
खरए खरिया मुण्हा	४०५०	४५५७	खेत्त ज बालादी	५६६६	३०७५
खर-फरुम-गिट्ठर ण	२६१४		खेत्ततो खेत्तबहिया	२६४२	५८३८
खर-फरुम-गिट्ठराइ	२८१७	५७५०	खेत्ततो णिवेसणादी	४७२६	
खरटणभीओ रुट्ठो	६६२५		खेत्ता जोयण-बुट्ठी	२६६२	
खरिया महिड्डिमणिआ	५१७८	२५२८	खेत्तारक्खिनिवेयण	५५३१	
खलुगे एक्को बधो	६३८		खेत्तोऽय कालोऽय	४८१७	६५८
खल्लाडगम्मि खड्डगा	६४१३		खेत्तोवसपयाए	५५०५	५४०८
खडे पत्ते तह् दब्भ	१६८२	२६८६	खेल-पवात-णिवाते	१२७३	
खतादिसिट्ठदेते	१३६५	४६२६	खेवे खेवेलहुगा	४०४०	
खत्तिखम महुविय	३१०५		खोडादिभग-खुग्गह	६२६५	
खते व भूणते वा	१३६२	४६२६	ग		
खधकरणी चउहत्य वित्थरा	१४०७	४०६१	ममारग दडिबलित्तग	७८२	
खघादी ठाणा खलु	४२७५		गच्छगहणे गच्छो	३४१३	२८६५
खघारभया णासति	१३३२	५५६	गच्छपरिरक्खणद्धा	४३६६	४५४२
खघारातो गानु	१३५३	५७६	गच्छम्मि एस कप्पो	१६२७	१५८३
खधे दुवार सजति	१५२५	६३७३	गच्छम्मि य पट्टविते	२८१६	५७८२
खधो खलु पायारो	८२७६		गच्छसि ण ताव कालो	८५७	
खागुगमादी मूल	३१०		गच्छसि ण ताव गच्छ	३१३	६०८४

गच्छती तु दिवसतो	१६५		गहण तु अघाकडए	७८५	
गच्छा अण्णियस्सा	२७६६	५७६२	गहणमि गिण्हिऊण	६७७	
गच्छाणुकुपण्डा	४५३		गहणाईया दोसा	२५३५	
गच्छुत्तरसवणे	६४४०		गहणे पक्खेवमि य	१६०	
गच्छे अप्पाणमि य	४३१		गहिए व अगहिए वा	३२ ६	४२६१
गच्छे व करोडादी	३२८३		गहितम्मि अदरत्ते	६१५४	
गच्छो महाणुभागे	१६२६		गहित च तेहि उदग	५२७८	३४२७
गच्छो य दोणिए मासे	२८०२	५७६८	गहिते उ पगासमुहे	४५५७	
गणचित्तमस्स एत्तो	५०११	३६८८	गहिते व अगहिते वा	३७२४	
गणराए पमाणेण थ	२१६५		गहितेहि दोहि गुरुणा	४५५८	
"	५७८५		गगाती सक्कमया	३३५४	
गणराते पमाणेण व	५८२५	४००२	गठीछेदगपहियजणदब्बहारी	३६५५	
गणभत्त समवाभो	२४७६		गडघोसिते बहुएहि	६१३०	
गणि आयरिए सपय	२६३५	५८३१	गड च अरतियसि	१५०५	
गणिएसिरसो उ बेरो	५३३६	२४११	गडादिएसु किमिए	१५१०	
गणिए गिएसिरणे परगणे	३८१४		गडी कच्छवि मुदी	४०००	३८२२
गणिए गिएसिरुम्मि उवही	३८१६		गडी-कोठ-खयादी	४८८६	१०२४
गणिए-वसन्ध-गीय-	४८६२	१०३०	गतब्बदेसरागी	५६५६	३०६७
गणिएवायते बहुसुते	२६१८	६०६०	गतब्बस्स न कालो	८५५	
गणिएसहमाइमहितो	६१७६		गतब्बोसह-पडिलेह	८५६	
गति ठाण भासभावे	६२०२		गतु विज्जामतरा	४४५८	
गति-भास-अग-कडि-पट्टि	३५६६		गतूण पडिनियत्ते	४०६३	१८५०
गती भवे पच्चवलोइय च	३५६८	५१४५	गतूण परविदेस	२२८८	
गब्भे कीते अणए	३६७६		गधब्बण्डाउज्जस्स	३८७५	
गमणादि अणपडिलेहा	२५२२		गधब्ब दिसा विज्जुग	६०८८	
गमणादि एत-मुम्मुर	२३२		गघारगिरी देवय	३१८४	
गमणादी ह्वमरूवव	४३२६		गभीरविसदफुडमधुरगाहओ	५३६	२६०१
गमणे जो जुत्तगती	५६६६	३०७८	गभीरे तसपाणा	४०२३	
गम्भीरविसदफुडमधुरगाहओ	५३६		गाउय दुगुगादुगुण	१५२	३४६६
गम्मति कारणजाते	१६६६	३७२१	"	१७६	"
गल-कूड-पासमादी	१८०५		"	२१४	
गविमण गहिए आलोय	२६०५		"	५३८५	३४४०
गविय कोहे/विसएसु	३११०		"	५३८७	"
गव्वेण ते उद्दिण्णा	५६२८		गाहुत्त गूहराकर	२६०८	
गव्वो णिम्मद्वता	६२४	३८५६	गामपहादी ठाणा	४१३१	
गहण गवेसण भोयण	४१३		गामब्भासे बदरी	४१७६	५२६८
गहण च जाणएण	१२४७		गाममहादी ठाणा	४१०६	
गहण च सजयस्स	३५८१		गामवहादी ठाणा	४१३०	

गामाइ-सम्प्लवेसा	२००४		गीयत्यग्गहरोए	४०७०	
गामाए दोण्ह वेर	४४०१		"	४१०८	"
गामादी ठाणा खलु	४१२८		गीयत्यकुल्लम खलु	३८३२	
गामेय कुच्छियमकुच्छित्ते	४३१७	२३६१	गीयत्यमगीयत्य	३६२४	
गारवकारणखेत्ताइसो	४६८३		गीयत्यविहारतो	४५५६	
गावी उट्टी महिसी	१०३४		गीयत्यस्स वि एव	४२८३	
गावी पीता वासी	६५१४		गीयत्ये आणयरा	३०३५	१६३६
गाह गिह तस्स पती	१०८२		गीयत्ये रा मेलिज्जति	४५६३	५४६२
गाहेइ जलाओ थल	६०१०		गीयत्येरा सय वा	४८८४	१०२२
गिण्हति एिसीतितु वा	४६६८		गीयत्येसु वि भयरा	४०६०	१८४७
गिण्हते चिट्ठ ते	३६६७		गीयत्यो जतराए	४६६	४६४६
गिण्हामो अतिरेग	४५५५		गीयमगीओ गीओ	२८७१	
गिण्हतिकालपाराग	२४१३		"	६५८५	
गिण्हामु चउ पडला	५७६८	३६७५	गीयमगीतागीते	५५६०	५४५६
गिण्हामु तिण्णि पडला	५७६७	३६७४	गीयाए व मीसाए व	५५६१	५४६०
गिण्हामु पच पडला	५७६६	३६७६	गुज्झग-वयरा-कक्खोरु	१७५३	३७७६
गिरिजप्पगममादीसु य	३४०३	२८५५	गुणनिप्फत्ती वहुगी य	४५३८	
गिरिजत्तपट्टियाए	२५६५		गुणपरितुङ्गिणिमित्त	१०२४	
गिरिजत्ता गयगहणी	२५६६		गुणसयसहस्सकलिय	५४३८	
गिरिरादि पुण्णा वाला	४२३६	५६४६	गुणसथरेरा पच्छा	१०४८	
गिरिपडणादी मरणा	३८०१		गुणसथवेरा पुण्वि	१०४६	
गिह वच्च पेरता	१५३५		गुत्ता गुत्तुवारा	७४५७	२०५८
गिहि अण्णतित्थि	३२१६		गुत्तो पुण जो साम्म	३६	
गिहि-अण्णतित्थिएहि व	५७७१		गुरुओ चउलहु चउगुरु	२७०४	५०७७
गिहि-अण्णतित्थियाए व	४११२		गुरु गरिणिपादमूल	२४१४	
"	४२८८		गुरु पाउराए दुवल	५८३२	४००८
"	४३०८		गुरुवच्चइया आसायरा	२६४४	
गिहिअण्णतित्थियाए	६२६१		गुरुसज्झित्तए सज्झतिए	५५१८	५४२१
गिहि-कुल-पारागागारे	६०४७		गुरुगा आणालोवे	५७१०	३१२२
गिहिण मूलगुणोसू	३३०५		गुरुगा उ समोसरणे	३३५	
गिहिरात पिसीय लिने	४४७		गुरुगा पुण कोडु वे	४७५२	८६४
गिहिरिण्णक्खमरागवेसे	४३६२		गुरुगा य गुरु-गिलाणे	५८३३	४००६
गिहिराणोऽवरज्झमाणे	३८३		गुरुगो जावज्जीव	२६८६	
गिहिमत्ते जो उ गमो	४०४६		गुरुणो व अण्णराओ वा	३६०७	५१७४
गिहिसहितो वा सका	२४७७		गुण्विरा बालवच्छा य	३५०८	
गिहिसजयअहिकरणे	६३२८		गुढसिराग पत्त	४८२७	६६७
गीओ विकोवितो खलु	६५२५		गेण्हरा कड्डणववहारो	४५२०	
गीतारिण य पडितारिण अ	५३५		गेण्हरो गुरुगा छम्मासा	३३७५	६०४
गीयत्यग्गहरोए	३४५५	१८२७	गेण्हरो गुरुगा छम्मास	४७६२	"

गेण्हणे गुरुगा छम्हाम	५१५०	"	गोवालवच्छवाला	३२७०	४३०१
गेण्ह वीस पात्रे	४५५०				
गेण्हति वारण	१००४				
गेण्हतेसु य दोसु वि	५२६६	३३७८	घणकुडा सकवाडा	२४५५	२०५६
गेरुय वणिणाय सेडिय	१८४६		घण-मसिण निरुवहत	६४६	३८८२
गेलण्णतुल्ल गुरुगा	६३७१		घण मूले थिर मज्जे	५८००	३६७७
गेलण्णज्झाणो मे	४६२१	१०५८	घट्टण-रेणुविणामो	२६४६	
गेलण्णमरणमाती	४७७७		घट्टितसठविताए	७१५	
गेसण्णमुत्तमट्ट	१५४७		"	७२३	
गेलण्ण रायदुट्टे	१४४५		घट्टितसठविते वा	६६६	
"	१५६६		"	७०५	
"	१५७४		घट्टेउ सच्चित	१४७५	५३८०
"	१५८१		घट्टितसठविताण	६७६	
"	१८५६		घतसत्तुदिट्ट तो	४५१५	
"	१८६३		घयकुडवो य जिणस्सा	६५०३	
गेलण्ण-रोह-मसिवे	२३६१	४७६६	घरधूमोसहकज्जे	७६८	
गेलण्ण वास महिता	१६५१		घरसत्ताण्ण-पण्णे	१४३६	
गेलण्ण वास महिया	१६५६		घसणे हत्थुवधातो	४६३६	
गेलण्ण सुत्त जोए	४६८६		"	४६४४	
गेलण्ण पि य दुविह	४८८७	१०२५	वेत्तु समयसमत्थो	३७२६	
गेलण्ण मे कीरति	५६३१		वेत्तूणज्जारलिग	४५६५	
गेलण्णमणागाडे	१६०४		वेत्तूण णिसि पलायण	२६६३	५८५८
गोच्छयपादट्टवरण	५८०६		वेत्तूण दोण्णि वि दवे	११०५	
गोणादि कालभूमो	६१४०		वेत्तूण भोयण्डुग	१११४	
गोणादी व अभिहरणे	४१६		वेत्तूण य आगमण	४६०१	
गोणादीवाचाते	२३७०	४८०८	वेप्पति च-सट्ठेण	६४६८	
गोणे य साण्णमाती	५२७३	३३५२	घोडेहि व भुत्तेहि व	१७१३	३७३५
"	५३८६				
"	४६५१				
गोविन्दज्जो णाणो	३६१६		चउकण्णम्मि रहस्से	३६६१	
गोमडलवन्नादी	४८०२	६४३	चउगुरुग छच्च लहु	६६५	३८६८
गोमियगहण अण्णो	६७१		चउ गुरुग छच्च लहु गुरु	२२१०	२४७८
गोयरमगोयरे वा	४०४८		"	५१२८	"
गोयरमचित्तभोयण	३७४६		चउ गुरुग मासो या	६६४०	
गोर पभावियपोत्त	३४४०	२८६२	चउगुरुगा छग्गुरुगा	२२१४	२५२१
गोवय उच्छेत्तु भति	४५०२		चउगुरु चउलहु सुद्धो	६६३६	
गोवाइत्तुण वसवि	११४३	३५२३	चउत्थपद तु विदिण्ण	५२०	२५८६
गोवाल ए भतए	४५०१		चउपादा तेइच्छा	३०३६	१६३७
			उफल पोत्ति सीसे	१५२७	

चउभगो गहणपक्खेवए	४८४१	६८१	चत्तारि अहाकडए	७६६	४०३१
चउभगो दाएगहणे	२१४३		"	५८५६	"
चउभगो रातिभोयणे	३३६७		चत्तारि उ उक्कोसा	५७८६	३६६६
चउभागवसेसाए	१४२६		चत्तारि छच्च लहु गुरु	६६१	३८६४
चउभागसेसाए	१८५८		"	२२०६	२४७७
चउमूल पचमूला	५२८६	३४२६	"	३०६६	
चउरगवगुरापरिबुद्धो	४००५	३८२८	"	५१२७	२४७७
चउरगुल वितत्थी	५८०५	३६८२	चत्तारि य उग्घाया	५१२०	२४७१
चउरो मरुग विदेस	४८७४		"	५१२२	२४७३
चउरो य जु गिया खलु	३७०७		"	५१८२	२४३६
चउरो लहुगा गुरुगा	३०६३	१६६१	चत्तारि विचित्ताइ	३८२४	
"	३०६५	"	चत्तारि समोसरणे	३२३६	४२६४
"	३०६७	"	चम्मकरग सत्थादी	५६५०	३०५८
"	५१८४	२५३८	चम्मतिग पट्टुग	१४१५	४०६८
"	३१२०	१६६१	चम्मम्मि सलोमम्मी	३६६६	
चउ लहुगा चउ गुरुगा	२२१६		चम्मदि लोहगहण	३४३०	२८८२
चउलहुगादी मूल	६०६		चरगादिगियट्टेसु	१०८३	
"	२२०३		चरण-करण-परिहीरो	५५६६	५४६५
चउवग्गो वि हु अच्छउ	४६३५	१०७२	चरित्तु देस दुविहा	५५३६	५४४०
चउसट्ठीपगारेण	१०३६		चरित्तम्मि असतम्मि	६६७६	
चउसु कसातेसु गती	३१६२		चरिमे वि होइ जयणा	२०४२	१६६१
चउहा गिसीहकप्पो	६६६६		चरिमो परिणत कड-	८६	
चक्काग भज्जमाणस्स	४८२८	६६८	चरु करेमि इहरा	३४६०	
चक्की वीसतिभाग	२३५५		चक्रमणमावडणे	१५१६	
चहुग सराव कसिय	३०६०	१६५६	चक्रमण गिल्लेवण	५३२१	२३६५
चतुगुरुगा छग्गुरुगा	५१७१	२५२१	चक्रमणादी उट्टण	६३३१	
चतुगुरुगादी छेदो	२२०४		चकम्मिय ठिय जपिय	५३३	२५६८
चतुपाया तेइच्छा	३०७५	१६७४	चदगुत्तपपुत्तो य	५७४५	२६४
चतुभगे चतुगुरुगा	१६३७		चदिससूखरागे	६०६१	
चतुरगुलप्पमाण	१६३२		चदुज्जोए को दोमो	३४०६	२८६१
चतुरगुलप्पमाणा	१५६		चपा अणगसेणो	३१८२	
चतुरेते करणेण	१८१२		चपा महुग वाणारसी	२५६०	
चतुरो य दिव्विया भागा	५०८८	२८३३	चाउम्मासातीत	१०१६	
चतुसु महामहेसु	६०६४		चाउम्मासुक्कोसे	६५५	३८८८
चत्तकलहो वि ण पढति	२७६०		"	१४३४	"
चत्ताए बीस परातीस	६४७६		"	४०७३	१८३०
चत्तारि अघाकडए	७५७	४०३१	"	५००५	६०६
"	८४२		चाउल उण्होदग तुवर	५८६२	४०३७

चारणकपुच्छ इट्टालक्षुण्ण	४४६५		चोय तु होति हीरो	५४१२	
चार भड धोड मेठा	२४६१	२०६६	चोरभया गावीभो	२६५	
चारिय-चोराभिमरा	२५११	६३६५	चोरो ति कडु दुब्बोडिभो	५२७१	३३५०
चारिय चोराहिमरा	१३०				
चारे वेरज्जे वा	३४६८				
चिक्खल वास असिवातिण्णु	३२६१	४२६१	छक्काए ण सद्दहति	३६७१	
चिट्ठण्णिणसिय तुयट्ठे	५३२५	२३६६	छक्काय-अगड विसमे	३६८२	
चित्तंतो वड्ढादी	५४६०		छक्काय-गहण-कड्डण	३३६६	२७७०
चित्त जीवो भणितो	४२५६		छक्काय चउमु लहुगा	५३४१	२७७१
चित्त य विचित्ते य	२००१		,	११७	४६१
चिवेहि आगमेत्तु	१३३७	५६३	"	३३७०	"
चीयत्त कक्कडी कोउ	४६१४	१०५१	"	४७३७	२७७१
चुण्णल्लउरादि दाउ	५४१८		छक्कायविराहणता	३६७४	
चुल्लुकल्लिय डोए	८०८		छक्कायसमारभो	३६४८	
चेइय-भावग पव्वति	२५७८		छक्कायाए विराघण	६११	
चेयणमचित्तदब्बे	६३६०		"	१६७४	३६६८
चेयणमचेयण दा	३३४६		"	१८५७	
चोएति रागदोसे	२८३३	५७६१	,	१८६७	
चोदग एताएच्चिय	५८७६	४०५४	छक्कायाए विराहण	१८६२	
चोदग कण्णसुहेसु	४७०५	८५४	"	३१२५	२७३६
चोदग दुविधा असतो	५८७६	४०५१	"	४३१०	
चोदग पुरिसा दुविहा	६५१८		"	५६४८	३०५६
चोदग मा गद्दमत्ति	६४००		छच्च सया चोयाला	६४७१	
चोदग माणुसरिण्डु	६१५८		छट्ठमादिएहि	६६५२	
चोदग वयण अप्पाणुकपितो	४१८७	५३०६	छट्ठवत्त-विराघणता	१६४०	
चोदावेति गुरुण व	५५५६	५४५५	छट्ठाणविराह्य वा	२७४६	५४८७
चोदेति अजीवत्ते	४८४६	६८६	"	५५८७	"
चोदेति धरिज्जते	४१५३	५२७५	छट्ठाणा जा णित्तभो	२७५०	५४८८
चोदेति रागदोसे	६५५३		"	५५८८	"
चोदेति से परिवार	६२७०		छट्ठो य सत्तमो या	५८२	४६३५
चोदेती वणकाए	४८३६	६७६	छट्ठो काउट्ठाहो	१३२३	
चोद्दसग पणुवीसा	५६०१	४०७६	छट्ठावण पत्तावण	१५४२	
चोद्दसमे उद्दसे	६०२७		छट्ठावित्त-कत्तदडे	४८५०	६६०
चोद्दस वासाणि तया	५६११		छट्ठेअण जति गता	१३२५	
चोद्दस सोलस वासा	५६१८		छट्ठेति तो य दोण	५६७८	
चोद्दा दो वाससया	५६१३		छट्ठायाज्वसेसएण	६०६८	
चोयग गुरुपडिसिद्धे	५०६८	२८, ३	छप्पण-वह-णट्ठ-भरणो	६५५	
चोयग गिहयन चिय	४८४३	६८३	छप्पणे उट्ठो व कतो	१२६५	
चोयगपुच्छा गमणे	३०११	१६१४	छप्पणेतरे च लेहो	२२६१	

छण्ड एक पात	४५३०	कुम्भण जने थलातो	४२१३	५६२३	
छतीसगुणसमण्यावएण	३८६२	कुहमारो पचकिरिया	४७६६	६१०	
छदोसायतरो पुरा	२५३३	छेदणपत्तच्छेजे	२५१		
छपइयपणगरक्खा	७६६	३६६७	छेदरो मेदरो वेव	५०२	४८६६
छपति दोसा जग्गण	२६५		छेदतिग मूलतिग	६५३६	
छपुरिसा मज्झ पुरे	४७८५	६२६	छेदसुतणिसीहादी	५६४७	
छन्नागकए हत्थे	५८६६	४०४४	छेदादी आरोवण	२६२१	
छन्नागकर काउ	४६६२		छेदो छगुरु अहवा	२२४१	
छम्मासकरणजहु	३६३५		छेदो छगुरु छल्लहु	३४६२	२६१४
छम्मासा आयरिओ	३१०३	२००१	छेदो मूल च तथा	७२१५	२५२२
छम्मासादि वहते	६६४६		"	२२१७	,
छम्मासियपारणए	४२६		"	५१७२	२५३६
छम्मासे अपूरेतो	५४५३		"	५१८५	"
छम्मासे अपूरेता	६२०७		छेयसुयमुत्तमसुय	६१८४	
छम्मासे आयरियो	३१००	१६६८			
छम्मासे उवसपद	५४५२				
छल्लहुगादी चरिम	२२०५		जइ अत्थि पयविहारो	३१५७	
छल्लहुगा य शियत्ते	३०६	६०७७	जइ अतो वाघातो	२४६३	२०६८
छल्लहुगे ठाति थेरी	५३३५	२४१०	जइउमलाभे गहण	१६३	
छन्नाससयाइ नउत्तराइ	५६१७		जइ उस्सग्गे रा कुणइ	२१०	३४३७
छहि रिणप्पज्जति सो ऊ	४८३७	६७७	जइ ताव पलबाण	४६१६	१०५३
छहि दिवेसेहि गतेहि	६५४६		जइ ताव सावताकुल	३६१२	
छदणिरुत्त सद्	४३५८		जइ देतज्जाइया जा	१६७२	२६७६
छद विधी विकप्प	१२५		जइ पुरा आयरिएहि	४५५३	
छदिय गहिय गुरूण	३५८२	५१५८	जइ पुरा पुरिम सध	२६७०	५३४६
छदिय सइगयाण व	३४०४	२८५६	जइ भणति ोइय तू	१०३८	
छदो गम्मागम	१२६		जइ वि य ता पज्जत्ता	४४४७	
छादेतो अणुकुइए	१४०४	४०८८	जइ सव्वसो अभावो	३६७	
छायस्स पिवासस्स व	५७१		जहु खग्गे महिसे	२०२	२६२३
छारो तु अपु जकडो	१५३६		"	३४७१	७
छिण्णमछिण्णा काले	२०३४	१६८३	जइडे महिसे चारी	१६३७	१५८६
छिण्णमछिण्णे दुविहे	४५०६		जइडो ज वा त वा	१६३८	१५६०
छिण्णमछिण्णे व घरो	३७२२		जणपुरतो फासुपण	५६३२	
छिण्ण परिकम्मित खलु	४०२६		जण रहिते वुज्जाओ	५२६	२५६१
छिण्णोरा अछिण्णोरा व	५६४६	३०५२	जणलावो परणामे	४१७६	५२६१
छिण्णो दिट्ठमदिट्ठो	४५१०		जण सावगाण खिसण	४४७१	
छिहली तु अणिच्छतो	३६१२	५१७६	जणोव छिदियव्व	७६६	
छिदतमछिदता	३५१३		जति अकसिरास्स गहण	६४३	३८७३
कुम्भण मिचरा बोलण	४२१७		जति अगणिराणा तु दड्ढा	१७११	३७३

ज

जति अच्छती तुसिणिमो	१८३१	जति रण्यो भञ्जाए	५०३५	६३४
जति उस्सणे ए कुणति	५३८२	जति रिक्को तो दवमतगम्मि	४१६१	५३१०
जति एकभाणजिमित्ता	५६४१	जति वा णिरतीचारा	५४२६	
जति एते एव दोसा	४५३५	जति वा बज्झति सात	३३२६	
जति एयविप्पहूणा	४१८४	जति वि ण होज्ज अवाभो	६६८८	
जति एव ससट्ठ	४१८६	जति वि णिबधो सुत्ते	४८६१	१००१
जति कालगता गरिणणी	१७०६	जति वि य तुल्लभिमघाणा	६६६१	
जति कुसलकप्पियातो	४८७२	जति वि य पिवीसगादी	३४१२	२८६४
जति गहणा तति मासा	१८७	जति वि य फासुगदव्व	३४११	२८६३
जति छिद्वा तति मासा	२३६	जति वि य विसोधिकोडी	४४२	
जति जग्गति सुविहिता	११४८	जति वि य समगुग्गाता	४६०	
जति ज पुरतो कीरति	४०६०	जति सव्वे गीतत्था	१४६३	२६३७
जति जीविहति जत्ति वा	४५६६	जति सव्वे व य इत्थी	५२००	
जति णाम पुव्व सुद्धे	४६७२	जति ससिज ए कप्पति	३६७६	
जति णिक्खिवती दिवसे	१६०३	जति सि कज्जसमती	१३६७	४६३१
जति रोनु एतुमाणा	५४८४	जतिहि-गुणा आरोवणा	६४८७	
जति ताव पिहुगमादी	४०४५	जत्तियमिता वारा	६२२	३८५५
जति ताव मम्मपरिघट्टियस्स	४२८५	जत्तियमेत्ता वारा	४००८	३८३१
जति ताव लोतियगुस्स	४१८६			
जति ता सणप्फतीसू	५१६२	”	४५४१	
जति तूण मासिएहि	४६७६	जत्तियमेत्ते दिवसे	१६०२	
जति ते जणणे मूल	२१७	जत्तुग्गतारादीण	२५६३	
जति तेसि जीवारा	४००७	जत्तो जुतो विहारो	५४४६	
जति दिट्ठ ता सिद्धी	४८६५	जत्तो दुस्सीला खलु	२४६०	२०६५
जति दोण्ह चेव गहण	४५४५	जत्थ अचित्ता पुढवी	४२४०	५६५०
जति पत्ता तु निसीवे	२४७०	जत्थ उ ण होज्ज सका	४६८५	
जति परो पडिसेविज्जा	२७८२	जत्थ उ दुरूवहीणा	६४८६	
जति पुण गच्छताण	६१२८	जत्थ उ देसग्गहण	५३६६	३३२५
जति पुण तेण ण दिट्ठा	२७१६	जत्थ तु ण वि लग्गति	२७६	
जति पुण पन्वावेति	४६२६	जत्थ तु देसग्गहण	५२४३	३३२५
जति पुण पुव्व सुद्ध	४६५६	जत्थ पवातो दीसति	३८०२	
जति पुण सव्वो वि ठितो	५१३३	जत्थ पुण अहाकडए	४६६१	
जति पोरिसिद्धता त	४१४०	जत्थ पुण होति छिन्न	३७२५	
जति फुसति तहि तु ड	६१०८	जत्थ वि य गतुकामा	३३८७	२७८८
जति भागगया मत्ता	५१६४	जत्थ विसेस जाणति	३४५७	२६१०
जतिभि (मि) भवे आरुवणा	६४८५	जत्थाङ्गण सव्व	६०१	
जति भोगणमावहती	५८६७	जदि एगस्स उ दोसा	४०८३	१८४०
जति म जणह्ण सामि	५७५५	जदि एतविप्पहूणा	४१५८	
जति मूलगणनवा	४७०४	जदि तेसि तेण विणा	११३०	
जति रज्जातो भट्ठो	५०३६			

जदि दोसा भवतेते	६४१		जह जह पएसिणि	४४६०	
जदि सव्व उद्दिसिउ	२६६६	५३४५	जह एगम असीकोसी	३६४६	
जघ आतरो से दीसइ	१४४२		जह ते गोठुट्टाणे	३६७३	
जम्मण-णिक्खमणोसु य	५७३५	३२६६	जह पढमपाउसम्मी	३५७८	५१५५
जम्हा तु हत्थमत्तेहि	४१०६	१८६४	जह पारमो तह गणी	४८७८	१०१७
जम्हा घरेति सेज्ज	११४२	३५२४	जह बालो जपतो	२८६३	
जम्हा पढमे मूल	५१३१	२४८१	”	६३६२	
”	५१७३	”	जह भणितो तह उट्ठितो	३५४८	
”	५१८६	”	जह भणितो तह चिट्ठइ	३५१६	
जयमारणपरिह्वेते	६३४६		जह भणिय चउत्थस्सा	२६५०	५८४५
जरजज्जरो उ थेरो	५६६१		जह भमर-महुयर-गणा	२६७१	१८७३
जर सास-कास-डाहे	३६४७		जह मण्णे एगमासिय	६५६१	
जलजाओ अनप तिम	५३२८	२४०२	जह मण्णे दसम	६५६७	
जल-थल पहे य ग्याता	२६६२	५८५७	जह मण्णे बहुमो	६४२३	
जलदोणमढभार	४०६५		”	६५६८	
जलमूए एलमूए	३६२६		जह मोहप्पगडीण	३३२०	
जलसभमे थलाविसु	२४०६		जहज्वती सुकुमालो	३६७२	
जल्लमलपक्किताण	५३४	२५६६	जह सपरिकम्मलभे	५८८१	४०५६
जल्लो तु होति कमढ	१५२२		जह सरणमुवगयाण	६६१५	
जवमज्ज मुरियवमो	५७४७	३२७८	जह सा बत्तीसघडा	३६७४	
जस्स मूलस्स भग्गस्स	४८२६	६६६	जह सुकुसलो वि वेज्जो	३८६०	
”	४८३०	६७०	जह सो कालासगवेसिउ	३६७०	
जस्स मूलस्स सारातो	४८३१	६७१	जह सो वसिपदेसे	३६७१	
”	४८३२	६७२	जह हास-खेडु आकार	५१८६	२५४३
जस्सेते सभोगा	२१४६		जह हेमो तु कुमारो	३५७५	५१५३
जह कारणम्मि पुण्णे	४२४५	५६५५	जहि अप्पतरा दोसा	५१६६	२५४६
जह कारणम्मि पुरिसे	५२१८	२५७३	जहिय एसणदोसा	५५४०	५४४१
जह कारणो अणाहारो	३७६६	६०११	जहि लहुगा तहि गुरुगा	४७३८	
जह कारणो सलोम	४०१६	३८४१	ज अज्जिय चरित्त	२७६३	२७१५
जह चेव अण्णागहणे	४७४८	८६०	ज अज्जिय समीखल्लएहि	२७६२	२७१४
जह चेवज्जुट्टाणे	२११७		ज एत्थ सव्व अम्हे	३०३६	१६४०
जह चेव पुढविमादी	२७५		ज कट्ठकम्मादिसु	५१००	२४५२
जह चेव य भट्ठाणे	१६८		ज कि चि भवे वत्थ	५०६०	२८३५
जह चेव य आहच्चा	४६६०		ज गहित त गहित	४७५५	८६७
जह चेव य इत्थीसु	५२२०	२५७५	ज गघरमोवेत्त	११०४	
जह चेव य कितिकम्मे	२११२		जज्जारणगारत्ते	२६४६	
जह चेव य पुढवीए	२०३		ज च बीएसु पचाहो	१५८८	
जह चेव य पुरिसेसु	५२१७	२५७२	ज च महाकप्पसुय	६१६०	

ज चैव परद्वारो	२६२५	ज हिङता काए	४५७१
ज चैव सुम्भिसुत्ते	११२२	ज होज्ज अभोज्ज ज	११२१
ज चोद्दसपुव्वघरा	४८२४	ज होति अपेज्ज ज	११११
ज छेदेरोगेण	७६८	ज होनि अप्पगास	६६
ज जमि होइ काले	६	जगिय-भगिय-मणाय	७५६
ज ज सुयमत्थो वा	६२०६	जघट्ठा सघट्ठो	१६५
ज जारिमय वत्थ	७६०	”	४२२६
ज जस्स जिय सागारियम्मि	६०५७	जघातारिम कत्थइ	१६१
ज जस्स गात्थि वत्थ	५०१५	जघाहीणे ओमे	४४६३
ज जह सुत्ते भणिय	५२३३	जा इतवत्था दमुए	३२७
”	५३५६	”	४८६३
ज ए सरति पडिबुद्धो	४३०३	जा एगदमेण दढा उ भट्टी	२३४३
ज त णिव्वाघात	८२०	जा वामकहा सा	२६४
”	८२३	जा चिट्ठा सा सव्वा	२४२३
ज त तु सकलिट्ठ	५१४	जा जेण व तेण जघा	४३८४
ज ते अस्यरता	४६१६	जा जेण होति वण्णेण	५३०३
ज तेण कतेण व	३६६६	जागरह गुरा णिच्च	३३८२
ज पज्जत्त तमस	२१५६	जागरतमजीरादी	१५६८
ज पुण खुहापसमणे	३७६०	जारिता घम्मीण	५३०६
ज पुण पढम वत्थ	५०८५	जारह जेण हडो मो	३३८६
ज पुण सच्चित्तादी	५४७७	जाणति एसण वा	४६३५
ज पुव्वकतमुह वा	६८८	जाणतेण वि एव	४६०४
ज पुव्व णितिय खलु	४३५२	जाणतो अणुजाणति	३८६१
ज पुव्व पडिसिद्ध	५२४६	जाणतो अणुजाणति	२५७५
”	५३६६	जाणामि णाम एत	१७७१
ज बहुधा छिज्जत	७६७	जाणति इति तावज्जणो	२५०४
ज भिक्खु वत्थादि	४६६०	जाता अणाहसाला	३६४६
ज मायति त छुम्भति	६५८८	जा ताव ठवेमि वए य	१३५२
ज मायति त छुम्भति	२८७४	जाति कुल ख्व भासा	५७८
ज लहुसग तु फस	२६३६	”	२६०६
ज वच्चता काए	४६२३	”	२७३२
ज वत्थ जमि कालम्मि	६५२	जाति-कुलस्स सरिसय	४२८४
ज वत्थ जमि देसम्मि	६५१	जाति-कुलस्स सरिसय	२६२८
ज वा असहीण त	११७१	जाती कम्मे सिप्पे	३७०६
ज वा भुक्खत्तस्स उ	३७६३	जाती कह कुलकह	११६
ज वेल ससज्जति	२७३	जाती-कुलस्स सरिस	२६३१
ज सम्महम्मि कीरइ	६३८६	जाती कुलगरा कम्मे	४४११
ज सेवित तु वितिय	४६८	जाती कुले विभासा	४४१२
		जाती य जु गितो खलु	४६२२
		जाती य जु गितो पुण	४५७०
		जा तु अकारण सेवा	४८३

जावे वि य कालगता	१७२१		जीवति मञ्जोति वा	२६८६	
जा पुव्ववड्ढिता वा	७१३		जीवरहिओ उ देहो	३५४	
"	७२१		जीवरहिते व पेहा	३३०७	
जामातिपुत्तपतिमारण	४४०२		जीवा पोग्गलसमया	५६	२७२५
जामातिय-मडवओ	२०१८		जीहाए विलिहत्तो	६६१४	
जायग्गहणे फासु	३११८		जुग-छिड्ड-एालिया	६०४	
जायण-णिमतण्णाए	५०२३		जुज्जति हु पगासफुडे	४३२२	
जायसु ण एरिसो ह	४४५२		जुत्तपमाणस्सज्जती	५८४५	४००१
जायते तु अपत्थ	२६६८	१६०१	जुत्तपमाण अतिरेग	५५०	
जारिमदब्बे इच्छह	३०८१	१६८०	जुत्तमदारणमसीले	४६६१	
जारिमय मेलण	३०२८	१६३२	"	४६८३	
जाव ठवग उद्धिद्धा	६४३७		जुत्त णाम तुमे वायएण	२६३२	
जाव ग मडलिबेला	२०३२	१६८२	जुत्त सय ण दाउ	३०४०	१६४१
जाव ग मुक्को ताव	३००६		जे आदरिसत्ततो	४३२३	
जावतिएणट्टो भे	१००२		जे कुज्जा बूया वा	२२५१	
जावतिय उवयुज्जति	११२३		जे केइ अणल दोसा	३७३७	
जावतिय वा लब्भति	४६४०		जे चेव कारणा सिक्कगस्स	३४३५	२८८७
जावतिया उवउज्जति	१६७		जे चेव सक्कदारो	४६१५	
जावतिगाए लहुगा	१४७४	३१८६	जे जतिया उ—	६४६४	
जावतियमुट्ठेयो	२०२०		जे जहि असोयवादी	२३८३	४८२०
जावति वा पगणिया	१४७२	३१८४	जे जे दोसायतरा	४१०३	१८६०
जा समण सजयाण	५६१८		जे जे सरिसा वम्मा	३२५७	
जा सजमता जीवेसु	६५३२		जेट्ठा सुदसा जमालि—	५५६७	
जाहे पराइया सा	३६६२		जेरा ण पावति मूल	४८२	
जाहे य माहणेहि	३७११		जेरा तु पदेण गुणिता	६४८६	
जिइदियो विणी दक्खो	६२६		जेराउहिय ऊण वा	२८५८	
जिएकप्पिया उ दुविघा	१३६०		जे ते भोसियसेसा	६५५०	५५६१
जिएकप्पे सुत्ते त	५८८७		जे त्ति य खलु एिहसे	४६७	
जिए चोइस जातीए	६५०२		जे त्ति व से त्ति व केत्ति व	६२७३	
जिएणिल्लेवणकुडण	६५६२		जे पुरा ठिता पक्कमे	८१	
"	६५७०		जे पुरा सखडिपेही	२६४७	
जिएपण्णत्ते भावे	६५७४		जे पुव्ववड्ढिता वा	७०२	
जिएणिमपण्हित	२३७२	४८०६	जे पुव्व उवगरणा	५६८८	३०६८
जिएवयण पडिक्कुट्ठे	३७४५		जे भण्णिता उ पक्कमे	६६७१	
जिएवयणभासितेण	५४३६		जे भिक्खाज्जिवपिड	४४१०	
जिएवयणमप्यमेय	३६१४		जे भिक्खु अजोगी तु	१६१०	
जिएा बारसरूवाइ	१४०६	३६६५	जे भिक्खु अरोगत्ते	४३३५	
जियसत्तु-एवररिदस्स	२३५२	५२५५	जे भिक्खू असणादी	२३२६	
			"	२६५८	
			"	३४७२	

	३६६१	जे सुत्ते अवराराहा	४६१	
”	४६५६	जसि एसुवदेसो	४०८०	१८३७
”	५६६५	,	४५३२	
, इत्थियाए	२५४५	,	४५४२	
” उवगरण	४२०८	जो उ उाह कुज्जा	३०८४	१६८३
” कोवपिड	४४३६	जा उ रिमज्जा व ततो	२१२८	
” गाएज्जा	५६८७	जागमकाउमहाकड	५००६	६०७
” गिलागास्मा	३११४	जो गवो जीवजडो	८५१	
”	६०३७	जा गवो जीवजुए	६१४	
, गिहयनिकुन	१४६५	जोगे करणे मरभमादी	१८१०	
” गिहिमत्ते	४०४०	जागे गेगम्मि य	१६००	
, चुणगपिड	८४६२	जो चेय वलियगमो	१३३१	५५८
, जोगपिड	४४६८	जो चेव य उवधिमि	२०६८	
” गह-सिहाओ	१५१४	जो जत्तिएण रोगो	६४०२	
, रात्तगाइ	४६८१	जो जत्थ अचित्तो खलु	६८६	
, रायगाइ	४६७३	जो जत्थ होइ कुमलो	३६००	
” रिमित्तपिड	४४०४	जो जत्थ होइ भग्गो	५४४६	
” तिगिच्छपिड	४४३२	जो जस्म उ उवसमती	२७७६	५७३३
” तुयट्टेते	२१६२	जो जत्सुवर्ग तु पभू	६६१	
” तेगिच्छ	४०५४	जो ज काउ समत्थो	६६०३	
” दीहाइ	१६३०	जो जारिसओ कालो	३८८५	
” दूतिपिड	४३६६	जो जेण अकयपुब्बो	३३३८	
” धातिपिड	४३७५	जो जेण जम्मि ठाणम्मि	२७५६	५४६१
” पुढविकाय	४०३३	”	५५६३	”
” बहुभो मासियाइ	६४२०	जो जेण पगारेण	३३४५	
” माणपिड	४४४४	जोण्हा मणी पतीवे	३४०५	२८५८
” रातीण	२५३६	जो एी वीए य तहि	२२३६	
” वएज्जाहिं	२५२१	जो तस्म सरिसगस्म तु	५६३७	
” वणियपिड	४४१८	जो त सबद्ध वा	६१५	
” वत्थाइ	४६८०	जो त तु सय गेनी	३७३०	
” वत्थादी	२३३१	जातिसनिमित्तमादी	५२५६	३३३७
”	४६६०	जो तु अमज्जाइल्ले	४०३	
” वियड तू	६०४६	जो तु गुणो दोसकरो	५८७७	
” सचेवो तू	३७७७	जो पुण अणुवगहरो	४३३६	
” सच्चित्त	४०३८	जो पुण उभयावत्तो	२७४६	५४८४
” सुद्धमाइ	२१७३	”	५५८४	”
जे मे जाणति जिणा	३८७३	जो पुण करणे जड्डो	३६३६	
जे विज्जमत दोसा	४४६६	जो पुण चोइज्जतो	६३४६	
जे सुत्तगुणा वुत्ता	३६१६	जो पुण तट्ठाणाओ	४०८	
		जो पुण त अत्थ वा	२६५६	५८५४

जो मागह्मो पत्थो	६६२B		ठाण वा ठायती	५२६४	३३७३
”	५८६१	४०६७	ठाणे नियमा रूब	५२६	२५६४
जो मुद्धा अभिसित्तो	२४६७		ठितकप्पम्मि दसविहे	५६३२	६४४१
जोयणसय तु गता	४८३३	६७३	ठितकप्पम्मि दसविहे	२१४६	”
जो वच्चतम्मि विधी	६१३८		ठितो जदा खेतबाहि सगारो	११८६	३५७०
जो वा वि पेल्लिओ त	५६७६	३०८८	ठियकप्पे पडिसेहो	४३६५	
जो वि दुवत्थ तिवत्थो	५८०७	३६८४			
जो वि य अवायसक्की	६६६५		ड		
जो वि यऽणुवायिद्धिण्णो	४८०५		डगलग-सपरक्ख कुडमुह	३२३८	४२६३
जो वि य होतऽक्कनो	४२३५	५६४५	डगलच्छारे लेवे	३१७५	
जो सो उवगरणगणो	३४५२	२६०५	डहरगामम्मि मते	६११५	
जो हट्ठसाहारो	१६३६		डहरस्स एते दोसा	५८६४	४०७०
जो होज्ज उ असमत्थो	६१२३		डहरो अकुलीणो त्ति य	२७६०	७७२
			”	६२१०	”
झ			डहरो एस तव गुरू	२७६१	
झिज्झिरसुरहिपलवे	४७०३	८५१	डडग विडडए वा	६६६	
			”	६७७	
ठ			डडतिग तु पुरतिगे	६४०८	
ठवण-कुलाइ ठवेउ	१७०६	३७२८	डडिय खोभादीओ	१३३४	
ठवणाए णिवखेवो	३१४०				
ठवणाकुला तु दुविधा	१६१७		ढ		
ठवणाकुले व मु चति	२०६६		ढडडसर पुण्णमुहो	४३६०	
ठवणा तू पच्छित्त	१८८५		ढिकुण-पिसुगादि तहि	५४७१	५३७६
ठवणामेत्त आरोवण	६४३१		ण		
ठवणारोवणदिवसे	६४८८		ण करेति भु जितूण	१५६७	
ठवणा वीसिग पक्खिग	६४३२		ण णिरत्थयमोवसिया	४६६०	
ठवणा सचयरासी	६४२७		ण तस्स वत्थादिसु कोइ सगो	५८१६	
ठवणा होति जहण्णा	६४३४		ण पमाण गणो एत्थ	११३६	
ठागासति अभियत्त	२२३		ण पमादो कातव्वो	६५	
ठागासति बिद्वसु व	६१५०		ण य वज्जिया य देहो	६३२६	
ठाण-णिसीयण-नुयट्टण	२६३		ण य सब्बो वि पमत्तो	६२	
ठाण णिसीयण-नुयट्टण	३६३८		ण वि किं चि अणुण्णाय	५२४८	
ठाण-णिसीय-नुयट्टण	६०६८		”	५३७१	
ठाण-णिसीय-नुयट्टण	१५५		ण वि कोइ किं चि पुच्छति	२३८६	
”	२७४		ण वि ख्वातिय ण वि वयी	४८४८	
ठाण पडिसेवणाए	५११६	२४७०	ण वि छ महव्वता खेव	४६०६	
ठाण-वसही-पसत्थे	३८१५		ण वि जाणामो णिमित्त	५०६०	
ठाणतिय भोत्तूण	१६६		ण वि य इह परियरगा	६३७८	
ठाण गमणामण	१६४५	१६०५	ण वि य समत्थो सब्बो	१७६८	

ए वि सिगपु छवाला	३२११	एयरो दिट्टे मिट्टे	१२६१
ए विविता जत्य मुगी	१६७६	एयरो पूरे दिट्टे	५३११
ए हु ते दन्वसलेह	३८५५	एयवज्जिओ वि हु अल	६१८६
ए हु होति सोयितव्वो	१७१७	एव भ.गवग वत्ये	४०८६
एउतीए पक्ख तीसा	६४७६	एव य सया य सहस्स	६४७३
एक्खे छिदिस्सामि त्ति	६८१	एवसोओ खलु पुरिमो	२३०४
एक्खेएवि हु छिज्जति	४८०४	एवकालवेलसेसे	६१५६
एक्खसण्णम्मि ठिओ	२४३५	एवबभचेरमइओ	१
एक्खुप्पइत दुक्ख	१५१२	एवमस्स तनियवत्थु	६५८७
एक्खुप्पतित दुक्ख	१५०३	एवमस्स तनियवत्थू	२८७३
"	१५०८	एवसत्तए दसमवित्थरे	३८८७
"	४१६७	एवगसोत्तपडिबोहयाए	३६५६
"	४२०२	एवाएवे विभासा तु	१६३
एक्खुप्पतिय दुक्ख	४३३३	एह-दतादि अगतर	५०६
एज्जतमएज्जते	३५६५	एहाणादि कोउकम्म	४२८६
एट्ट होति अगीय	५१०१	एदति जेए तवसजमेसु	३४८६ २६२०
एट्टा पथफिडिता	४३०६	एइणए लहुसएण	६०८
एट्ट हित विस्सरिते	६६६	एआणमगुणएवणा	२५७१
"	८१३	एआण य वोच्छेद	६१८३
"	८३२	"	६२३८
"	८४६	"	६२४१
"	१६४५	एआण य वोच्छेय	२७३०
"	१६४७	"	२७६३
"	१६५६	"	५४७८
"	४६८८	"	५४६६
एट्टे हिय विस्सरिए	१६५४	"	५५००
एत्थि अगीयत्थो वा	५२३१	"	६१६७
"	५३५४	एआगा जलवासीया	२७८५ ५७३६
एत्थि अणिदाए तो	४६१२	एआणट्ट दसएट्टा	१६६६ २८७६
एत्थि कहालद्धी मे	१३४५	"	३४२७ २६७२
एत्थि खलु अपच्छित्ती	५१३६	"	५४५८
एत्थि ए मोल्ल उवाँध	१३८२	एआणमित्त अट्टाएमेति	३८६८
एत्थि सकियसधाडमडली	६३५३	एआणमित्त आसेविय	३८६७
एत्थेय मे जमिच्छह	६३५४	एआणस्स होइ भागी	५४५७
एदिकण्हवेण्णदीवे	४४७०	एआणदट्टा विक्खा	३६२८
एदिकोप्पर चरण वा	४२३३	एआणदि तिगकडिल्ल	१८८४
एदिपूरएण वसती	१७१२	एआणदितिगस्सट्टा	४८६३ ६५४
एयरो दिट्टे गहिते	१२६४	एआणदिसवणट्टा	२२८४

शाशादो छतीसा	२१३६		शिवकारणमविधीए	१६६६	३६६०
शाशादी परिवुड्डी	४६६		शिवकारणम्मि अप्पणा	१६२१	
शासायारे पगत	४५		शिवकारणम्मि एए	४६६५	४०७७
शासायानिह उवकरण—	१०३५		शिवकारणम्मि एते	५८७२	”
शासी ए विणा शाण	७५		शिवकारणम्मि एव	५२८७	३३६६
शासुज्जोया साहू	२२५	३४५३	शिवकारणम्मि गुह्या	१६६८	३६६२
शासो चरसो परूवण	६२६२		शिवकारणम्मि लहुगो	१६२२	
शासो दसरा चरसो	४४		शिवकारणिए अणुवएसिए	४५७६	
”	२७२७	४७३३	शिवकारणियाऽणुवदेसगा	२६२६	
शासो सुपरिच्छयत्ये	४६		शिवकारसो अमणुण्यो	२०७६	
शातग कहण पदोसे	२२५२		शिवकारसो अविधि	२७१	
शातगमशातग वा	२४६७		शिवकारसो ए कप्पति	१५०७	
शातीवग्ग दुविह	५५०४		शिवकारसो विधीए वि	१६६६	३७१६
शामण-धोवण-वासण	६		”	१६६७	३७१८
शामठवण-रासीह	६७		शिवकारसो सकारसो	१५११	
शाम ठवणा हत्थो	४६६		शिवविबवणा अप्पासो	२७५७	
शाम ठवणा कप्पो	५६		शिवविबवणा अप्पासो	५५६१	
शाम ठवणा कूला	६३		शिवग्गच्छति बाहरती	२३५	
शाम ठवणा दविए	१७६७		शिवग्गच्छ फूमे हत्थे	२३८	
”	६२६२		शिवगत पुराएवि गेण्हति	४१०२	१८५६
शाम ठवणा भिक्खू	४६८		शिवग्गमण तहचेव उ	५६२	४६२८
शाम ठवणायारो	५		शिवग्गमणादि बहिठिते	११८८	३५६६
शामुदया सघयण	८५		शिवग्गमसो चउभगो	२६८०	१८८२
शालस्सेण सम सोक्ख	५३०७	३३८५	शिवग्गमसो परिसुद्धो	६३५२	
शालीत परूवणता	६५०६		शिवग्गमसुद्धमुवाए	६३५६	
शाव-थल-लेवहेट्ठा	४२४६	५६५६	शिवग्गयवट्ट ता या	६५३६	
शावाए उत्तिप्पणो	४२५६		शिवग्गथसक्कतावस	४४२०	
शावातारिम चतुरो	१८३		शिवग्गयि वत्थगहरो	५०७०	२८१५
शासण्ण-साइदूरे	२४५६	२०६०	शिवग्गथीरा गणधर	२४४८	२०४८
शासा मुहणिस्सासा	६१६		शिवग्गथीरा भिण्ण	४६२२	१०५६
शासेइ अगीयत्थो	३८२६		शिवग्गधो उग्गालो	२६५५	५८५०
शासेइ असविग्गो	३८३४		शिवच्चरिणियसणमज्जण	५०४५	६४४
शिएउणो खलु सुत्तत्थो	५२५२		शिवच्चरिणियसणिए ति य	५०४६	६४५
”	५३७५	३३३३	शिवच्चपरिगले बहिता	६३१	
शिवकारणमणम्मि	१०६८	२७५८	शिवच्चलणिएप्पडिकम्मो	३६४१	
शिवकारणणि चमदरा	१७६३	३७८६	शिवच्चलणिएप्पडिकम्मो	३८१८	
शिवकारणपडिसेवा	४६७		शिवच्च पि दव्वकरण	५१०६	२४६१
			शिवज्जत मोत्तूण	१२००	३५८०

"	६११६	गिम्दिनो व ठवेज्जा	१७८५	
गिज्जहितादि ठाणा	४१३४	गिमिपढमपोरिसुम्भव	५७६	४६३२
गिण्हयससगीए	५५३२	गिसिमादीसम्मूढो	८७६	
गिण्हवरा अरलावो	१६	गिसिह एवमा पुब्बा	६५००	
गिण्हवरो गिण्हवरो	३०१	गिसीहिमा खमाक्कारे	६१३४	
गिता रा पमज्जति	५३६७	गिसुढते आउवधो	३२१२	
गिता रा पमज्जती	२०३	गिसेज्जा य वियडरो	६५१२	
गिति उ अग्रपिडे	६८६	गिसेज्जाऽसति पडिहागिय	६३८६	
गिहिट्टस्स समीख्	४५७४	गिस्सकिय गिक्कलिय	२३	
गिहोस सारवत च	३६२०	गिस्सचया उ समणा	४१४४	५२६६
गिद्धमधुरेहि आउ	३५४१	गीरोज्ज पूय-रुधिर	१५०६	
गिद्धे दवे परीए	३७६७	गीयल्लयदुच्चरितारुक्कितण	२३३८	
गियय च अणियय वा	११८६	गीयस्स अम्ह गेहे	१२१४	
गिप्पच्चवाय-सबवि	२४६५	गीयासणजलीपग्गहादि	१३	
गिप्पत्त कटइल्ले	६३८२	गीसको व ऽपुसट्ठो	४५६८	
गिप्फणो वि स अट्ठा	१००५	गेगधुणएममु चते	१६२४	
गिप्फेडरो सेहस्स तु	३७३४	गेगविधा इड्डीओ	२६	
गिम्भए गारत्थीण	४२५१	गेगविह कुसुमपुफोवयार	६७०१	
"	१६६	गेगाण उ राणात्त	१२५०	
गिम्भए पिट्ठो गमरा	११०३	गेगासु चोरियासू	६५१५	
गियएहि ओसहेहि य	३०२७	गेगेसु एगगहण	५२३५	३३१७
गियगद्धितिमत्तकता	१५८५	"	५३५८	
गिरुअस्स गदपओगो	४८७१	गेगेसु पिता-पुत्ता	११७५	३५५६
गिरुवस्सग्गगिमित्ता	२८७८	गेहाति एव काह	४८७	
गिरुवहत जोणित्थीरा	३७०	गो कप्पति भिक्खुस्सा	१०८०	
गिल्लोम-सलोमऽजिरो	४६११	"	१०६०	
गिर्वचित विकाल पडिच्छणा	३१६५	"	१०६६	
गिवत्तण गिक्खिवरो	१७६८	"	१५४४	
गिवदिक्खितादि अरुह	४६१	गो कप्पति वाऽभिण्ण	५२३८	३३२०
गिर्वपिडो गयभत्त	४५१२	"	५३६१	
गिवमरण मूलदेवो	६५१७	गो तरती अरुत्तट्ठी	२७६८	५७६४
गिववल्लभबहुपक्खम्मि	३६२३	गोल्लेऊण रा सक्का	१६७७	३७०१
गिवित्तिगिण्णले ओमे	५७४	गोवयणाम दुविह	४७१५	८४५
गिण्वत्तणा य दुविधा	१८०१	तइया गवेसणाए	२८६६	
गिण्वाघातववादी	८२४	तक्कम्मसेवि जो ऊ	३५६५	
गिण्विगितिय पुरिमट्ठे	६६६२	तक्ककुडेणाहरण	१२	
गिण्विसओत्ति य पढमो	५७०६	तक्कतपरोप्परओ	५७६६	
गिण्वीयमायतीए	२५५१	तच्चिता तल्लेसा	५१०७	२४५६

नञ्जाननतञ्जान	६४७	- २ - २	नन्थ गिलागा एगो	६३३७	
नञ्जाननतञ्जाना	२०५५		नन्थ गिलागा व दिवम	१७३१	३७५४
नगा-कट्ट-गुप्फ-फल	१११४		नन्थ दमण्ण अवाते	३८१०	
नगाकट्टहारगादी	१४१०		नन्थ पत्रेमे लहुगा	५४७०	५३७५
नगा कबल पावारे	-६०७		नन्थ भवे राण एव	५६६०	
नगागहण अग्निसेवगा	४७७६	६०८	नन्थ भवे रा तु सुत्त	६४६८	
नगागहणे भुसिरेत्तर	४७६१	६०८	नन्थ भवे मायमोमो	६३५७	
नगा डगलग-हार मल्लग	३३०		नन्थ वि घेप्पति ज	४६४१	
नगा डगल-छार-मल्लग	११५४	- ५३१	नन्थेव अण्णगामे	२६६६	१६००
नगा विगगण मज्जट्टा	५००६	६०५	नन्थेव गतुकामा	२६४०	५८३६
नगा वेत्त-मु ज कट्टे	२०८६		नन्थेव य गिण्डुवगा	४७७६	६१७
नगा-मच्चयमादीरा	५५		नन्थेव य निम्माण	५५१५	५४१८
नगापगागमि वि दोमा	६००६	३- ०	नन्थेव य पडिबधो	५१५३	२५०३
नगामादिमानियमो	५६१०		नन्थेव य पडिबधो	११६२	
नगामालियादिया उ	२२८८		नन्थेव य पडिबधो	२८०	
नगुयमलित्त आसत्थ	६०१५		नन्थेव य पडिबधो	६०६६	
नगाग-वागर बरहिण	५६०६		नन्थेव य पडिबधो	१०७६	
नगागवत्ता केई	५१११		नन्थेव य पडिबधो	६३८७	
नगाछेदमि कत	- ८८६		नन्थेव य पडिबधो	२८४७	५५८१
नगातिओ गिलागा	५२६१	३८०५	नन्थेव य पडिबधो	११८३	३५६४
नगातते घराभुमिरे	५६६४		नन्थेव य पडिबधो	३८०६	
नतिए पतिट्टियादी	६१६		नन्थेव य पडिबधो	१२६६	
नतिए वि हाति जयगा	५२२०		नन्थेव य पडिबधो	१६७३	३६६७
नतिओ उ गुरुसगाम	१२५८		नन्थेव य पडिबधो	११०७	
नतिओ जावग्जाव	६०७७		नन्थेव य पडिबधो	- ३४	
नतिओ धिति सपण्णो	८४		नन्थेव य पडिबधो	६७६	
नतिओ लक्खणजत्त	४५५१		नन्थेव य पडिबधो	११३४	
नतिओ सजम-अट्टे	१७४२		नन्थेव य पडिबधो	३१२१	
नतियभगासथडिनिवि-	२६३०		नन्थेव य पडिबधो	४६३७	
नतियलताए गवेसी	२८६७	१८६४	नन्थेव य पडिबधो	४६४५	
नतियव्वयाडयारे	२७२७		नन्थेव य पडिबधो	३२३४	४२५६
नतियस्स जावजाव	४०७५		नन्थेव य पडिबधो	४१४७	५२६६
नतिय भावतो भिण्ण	४७२१		नन्थेव य पडिबधो	४१८३	५३०३
नतियाए दा असुद्धा	२८६५		नन्थेव य पडिबधो	१२४०	५६६
नतियादेसे भोत्तूण	३४१५		नन्थेव य पडिबधो	१२४६	
नत्तज्ज्यामते गवे	२६५२	५८८८	नन्थेव य पडिबधो	२८२६	५५७३
नत्थ गतो होज्ज पहू	४१२५		नन्थेव य पडिबधो	६०४४	
नत्थ गहण पि इविह	४७४६	८६१	नन्थेव य पडिबधो	१३५८	

तम्हा गीयत्येण	३८३३		तम्भवाः मुष्टी वा	८८०	५१७१
तम्हा ग वहेयव्व	६२२७	७६०	तह अगगनित्थिग्गदी	८२२७	६२५०
तम्हा ग तत्थ गमण	२४८६		तह इत्थि-गा नवद्धाहि	१७६५	
तम्हा ग वि सिदिज्जा	२१६३		तह चेराभहारते	८७१४	
तम्हा ग सवसेज्जा	२४७३		तह वि य ग मव्वकान	१५५	
तम्हा निपासिय खलु	५१७६		तह समगगसुविहियाण	५७७	६६३०
तम्हा पमाणगहणे	११२४		”	६३०६	”
तम्हा पमाणघरणे	४५४४		तह से कहति जह	३०५१	१६५०
तम्हा पुवादाण	१८७६		तहि सिक्कागहि हितति	३४३४	२८८६
तम्हा वसवीदाता	१२०७		तहि वच्चते गुरुणा	२८५३	५५८२
तम्हा विवीए भु जे	१११६		त अइप्सग-दोसा	७२	
तम्हा सट्ठाणगय	६६७८		त अण्णतिथिएण	७६६	
तम्हा मन्वारुण्णा	२०६७		त अम्ह सहदेसी	१०३७	
तम्हा मविग्गेण	३८६०		त काउ कोति ए तरति	४१५१	५२७३
तया दूराहड एत	१४६४		त कायपरिच्चयती	२६५६	
तया थेरा य तहा	२५८२		”	३६६२	
तरुणा वसितिय विवाह-	२५६२		”	४७६०	६३०
तरुणाइण्णे सिच्च	२३५३	५२५६	त चेव गिट्ठवेती	५१४६	५५८३
तरुणीआ पिडियाओ	६०६१	१८४८	त चेव निट्ठवेती	२८५०	”
तरुणीरा य पक्खेत्ते	२२४३	४६५०	त चेव पुव्वभणिय	२३८४	६८२१
तरुणे निष्फण्ण परिवारे	६०२१	४३३८	”	६५५६	
तत्र गालिएरि लउए	६७०२	८५२	त जे उ सजतीण	६०२७	
तनिय पुडग दद्धेया	३४१	२८८३	त जो उ परोएज्जा	१४७६	
तलिआ तु रतिभरणे	३४३२	२८८४	त ए लम खु पमादो	६३०६	
तव कप्पति ए तु पम्ह	३७६२		त तु अरुट्टियदड	३६६६	
तव छेदो लहु गुरुणा	२२११	२४७६	त दट्ठुण सय वा	६७२	
तवगेलण्णद्धारे	२६५०	५८१७	”	६७४	
तव छेदा लहु गुरुणे	५१२६	२४७६	”	१२८३	
तवनिग छेदतिग	६५३८		त दारुदडय पावपु छण	८३१	
तवतीयमसदहए	६५६०		त दुविह गातव्व	५०१	
तवबलिओ सो जम्हा	६५४२		त पडिसेवेतुण	१८६०	
तम-उदग-वरणे षट्ठण	४२२२		त पाडिहारिय पायपु छण	१६८८	
तम-पाण-बीयरहिते	३६४३		त पि य दुविह वत्थ	५००१	
तम बीयम्मि वि दिट्ठे	५८६७	४०४२	त पुण ओहविभागे	६३१४	
तमपाण तण्णगादी	३६७७		त पुण गमेज्ज दिवा	५६३६	३०४२
”	५६०५		त पुण गहण दुविघ	७८६	
तस्सट्ठगतोभासण	३८४२		त पुण पडिच्छमारो	३७३१	
तस्सज्जनि फालितम्मि	७८६		त पुण रूव तिविह	५११५	

त मूतमुवहिराण	४७७८		तिण्ह वि कनरो गुरुओ	५१५६	
त रयणि अणरात्या	३४८०			११७६	
त बल मारवती	२०८१	१६६०	तिण्ह एगेग सम	६६१	१६१६
त सच्चिचतुविह	४७६८	६०८	तिण्ह तु तडिडयाण	७३०	
त सारिसग ययण	३६०१		तिण्ह तु बवाण	७४५	
ताड तराफलगाट	१८८८	१० ७	तिण्ह तु विकप्पाण	२१८६	
ता जेहि पगारेहि	३८००		निण्हारेग समान	६०२०	७८१
नालायग य गारे	२०४३	८८ ८	तिण्हवरि कालियम्मा	६०५६	
”	३८१५		निण्हवरि फालियाण	७८७	
नावा भेदो अयमा	१८१५	५७८१	निण्हवरि बवाण	२१७८	
,	१८०१		तिण्हगनरे गमण	१७१३	३१२५
”	२७८७	२७०८	तिथकर पडिकुट्टो	११५६	३५४०
नामेतूग अत्रिणे	१ ०८	६८८	तिथकर रायागो	६४१०	
नाह चिच जनि गनु	४६८०		ति-परिगह-भीम वा	१६००	
नाह पलवभग	८ १		तिपरिरयमणागाडे	११७०	३५५१
निकखम्मि उदगवग	५७६		तिप्पमितिघरा दिट्ठे	८६७६	
”	६३०५		तिय मामिय तिग पणण	१८०६	
तिक्खुत्तो तिणिग मामा	१८४२		तिरिओ यागुज्जाणे	६००८	
तिक्खुत्तो मक्खेत्ते	११७४	५५५	तिरियनिवारण अभिहगग	५२७५	३३५४
तिग बानाला अट्ट य	६५३५		तिरियमचेत्तसचेत्ते	२२२३	
निग सवच्छग तिगदुग	८०५५	१६१४	तिरियमणुयदेवीण	६०३	
निगु गगतेहि ग दिट्ठा	१८८७		तिरियमणुस्सित्थीण	६०२	
”	१४५५		तिरियाउ असुभनामस्म	३२८७	
निगुणपयाहिरापादे	३७५१		तिरियोयामुज्जाणे	१८४	
तिट्ठाणे गवेगो	४५८२		तिविष्मि कालछेदे	५७६६	२६७३
तिग बड भुमिरट्ठाणे	२७६		तिविष्मि वि पादम्मी	७३७	
तिणिग उ हत्य डटो	७००		तिविष्मि वोस्मिओ सो	८६१	
तिणिग कमिणो जहणे	५८०६	३६-६	तिविष्मि य त्व्वचूला	६४	
तिणिग तिगगतरेत्ते	१६०५		तिविष्मि तेइच्छम्मि	६६६१	
तिणिग टुवे एक्का वा	३१६५		तिविह पग्गह दिब्बे	४७५०	८६२
तिणिगे पमनी य लहम	८६५		तिविह च होइ बहुग	६४२६	
तिणिग विह-नी चउरगुग	६८६	४ १३	तिविह च होति पाद	५८५२	४०२७
,	५८३७		तिविह पुग दव्वग	५०	
निणगव य पच्छागा	१८६४		तिविहाण वि एयांसि	५६२६	
	१३६७	४०८१	तिविहाऽऽमयभेसज्जे	५६८६	३०६५
,	५७८८	३८६३	तिविहित्थि तत्थ थेरी	५०३८	६३८
तिण्हट्टारसवीसा	३२७८		तिविहे पग्गितम्मि	५८५३	४०२८
तिण्हट्ट म्कमग	५५५८		तिविहो उ विसयदुट्ठो	३६६०	

निविहो य पकप्पयग	७२	नेगिन्टिगम्म दच्छा	३०६२	
निविहा य हाइ जट्टा	५२५	न नव तत्थ दासा	५१७५	२५२५
निविहा य हाइ धात्	६१३		५१८८	"
निविहा य होइ बुद्धो	५४२	नेगट्टम्मि पमज्जरा	३३७८	
निविहा य हाति कीव	६३७	नेरा पर गिहत्थाण	२३८६	
निविहा य होति बाला	८५१०	नेरा पर सरितादी	६५६५	
निविहा मरीरजट्टा	८६०८	नेगभय मावयभया	३२७३	४०५
निव्वारुवद्धरामा	११४	नेगभयादरकज्ज	५६५२	३०६०
निसु छल्लह्या छगुरु	२८४५	१८४१	तेगादिसु ज पावे	३२६५
निसु तिप्पिण तारगाओ	२१६६		तगारक्खिय-मावय	१५५३
निसु लहुओ गुरु एगो	२६४४	१८६०	तेरा व सजयट्टा	४५१३
निसु लहुआ तिसु लहुगा	१६४१		तेरो कीव गया	३७४१
निहि थेरेहि कय ज	२१०८	२८०	तेरो देव-मरुस्से	४७४०
निनिगिए चलचित्ते	६१६८	७६२	तेरो य तेरातेरो	३७२६
नीतम्मि य अट्टम्मी	८८१		तेरोव माइया मो	३०८३
नीमदिरो आयरिण	२८११	५७७७	तेरोसु गिज्जट्टेसु	५३०२
नीस ठवराठाणा	८६३६		तेरोहि व अगणीण व	१७२५
नीमुत्तरे पणुबीसा	६६८१		तत्तीम ठवरापदा	६४४८
नीसु वि दीवितकज्जा	२७१२	५४६२	ते तत्थ मणिणविट्ठा	५२६०
नीसु वि विज्जतीसु	५५१		ते तत्थ सन्निविट्ठा	५२६३
तुच्छेण वि लोहिज्जनि	२६५३	२०५४	"	५३६४
तुम्भट्टाए कतमिण	५८६१	४०३६	ते दोऽबुवालभित्ता	५४७४
तुम्भेवि ताव गवसह	१३८१	४६४५	ते पुण एगमणेगा-	६३५१
तुमए चेव कतमिण	६६०६		तेरप्प सय अट्टट्टा	६४७२
तुमए समग आम	३६२४	५१८६	तेरिच्छ पि य तिविह	५१८०
तुम्हे मम आयरिया	२६३५		तल्लुकदेवमहिता	१७१५
तुल्लम्मि अदत्तम्मि	३४६४	२६१७	तल्लुव्वट्टरा ण्हावरा	३०५३
तुल्ले मेहराभावे	५१६३	२५१४	तल्ल घत गावगीते	१५६२
तुल्ले वि समारभे	६८७२	१८२६	ते वि य पुरिसा दुविहा	५२०६
तुल्लेसु जो सलद्धी	६३६६		तेमि अवारणे लहुगा	५२७४
तुवरे फले य पत्ते	२०१	२६२२	तेमि अप्पा गिज्जर	३३३५
"	८४७०	"	तेमि तत्थ ठियाण	३२४०
"	५७०४	"	तसि पडिच्छरो आणा	५६२६
तुमिरणी अटति गिणि व	२२६		त नीदिउमारद्धा	५११०
तुसिरणीण हु कारे	८६६	६१०५	तेसु अगिण्हेसु	२५३१
तुह दसण-मज्जिआ	२२६६		तेसु अगेण्हेसु	२४८४
तूरपति दत्ति मा ने	१०४२	६४१	तेसु अमणवत्थादी	५७६१
तऊ-वाउविट्ठगा	१२६२	५६५२	तेसु ठितेसु पडत्थो	५२५८

नेमु तमगुण्णात	५०				
नमु प्रमहीणेषु	५२५				
नेमु दिट्ठिमवयनो	६१२६		दगकक्कादीह नवे	४६४२	
तट्ठमयदान्य पि व	६१६८		दगघट्ट तिण्णि सत्त व	३१६५	
ना कट्ट चित्तत्वा उ	६५०८		दग-रिण्णमो पुत्तुत्ता	२०५६	
ना पन्ना मथुगहि	१७५७		दगतीर ता चिट्ठ	१६७	५६६१
नामत्तिग वयनरणा	१२६१	२६४६	"	४२१२	"
			दगभागुरो दट्ठु	५२७८	३४२८
			दगमुद्देमिय चैव	६२७८	
यगुजीवि तन्नग खलु	२६८०		दग मेहुणसकाए	५३२३	२३६७
नन देउन्नियट्ठाण	११६८	३५४६	दगवाय मविकम्मे	२०५७	
यल सक्करो जयणा	६०६८	१६५८	दगवारबद्धिग्या	४११३	
मलि गोणि मय मत	६८१८	६६३	दगवीगिय दगवाहो	६३४	
यडिल निविट्ठवधाति	१५५३		दगतीरचिट्ठणादी	५३१०	
यडिल्ल असति अट्ठाण	१८६८		दट्ठु पि रो रा लज्जा (भामो)	१३६६	५७२
"	१६१८		दट्ठूण दुण्णिविट्ठ	३६५१	
थडिल्लममायारी	६०४८		दट्ठूण य राडिट्ठि	१७४०	५७६२
थडिल्ल न वि पासति	५५५१		,	२५४३	
थावरणिक्कण पुण	६४०		"	२५६६	
थी-पुरिसअगायारे	५३००	२३७४		२५६६	
थी पुरिमा जह उदय	५६००	५१६६	दट्ठूण व सतिकरण	५३३६	
थी पुरिमा पत्तेय	३६०४	५१७१	दट्ठूण व हिड्ढेण वा	१२५१	
थीसु ते च्चिय गुग्गा	५७७०		दट्ठूण वा रिण्यत्तण	५३१४	२३८८
थुल्लाण विगड्ढादा	६३६१		दड्ढे मुत्ते छगरो	१७१	
थुगाओ होति वियनी	६०६८		दत्थी हामि व रीण	१०५७	
थुगादी ठाणा खलु	६२६७		दधितक्कबिलसादी	२६२	
थुल-सुद्धमेसु वोत्तु	५८७५		दप्प-अक्कप्प-रिणालब	४६३	
थुले वा सुहमे वा	५८७४		दप्पग मणि आभरणे	४३१८	
थेरबहिट्ठा छुट्ठा	७४०६		दप्पममादागाभोगा	४७७	
थेरागेस वि दिन्नो	१५०८		"	६७८	
थेरानिनिविह अथवा	५२००	१८१	दप्पादी पडिसेवणा	१४३	
थेरिय दुण्णिवित्त	३४००		दप्पे कप्प-पमत्ताणाभागा	६०	
थेरी दुब्बलखीरा	६३८३		दप्पे सकारणमि य	८८	
थेसवमा अक्कते	४२६३		दप्पेरा होति लहुया	४७५	
थेरेण अरुण्णाण	३७६५		दमए दूभगे भट्टे	५०६३	६३०
थोव जनि आवण्णा	२८५७	५५६०	दमए पमाणापुरित्ते	४०६६	१८००
थोवाउवमेसपरिणि	६०७८		दम्मादी ठाणा खलु	२६००	
थोवावमेमियाण	६१३५		दर्राहिट्ठे व भाण	४१६४	५३१३
थोवा वि हणति खुह	५३८५	३०६४			

दवियपरिगामतो वा	२८६७		२६४१
दव्वखण पनो	१६२६	१५८८	३३४३
दव्वट्टुवगाहारे	३१६६		३६५१
दव्व-णिसीह कतगादिगमु	६८	दव्वेग य भानेग य	१०११
दव्वो चउरो मुत्ता	४७१८	,	४०६८
दव्वदिसखेतकाले	३६६४	५२१४	६६१० १८५४
दव्वपडिवद्ध एव	२०६८	• दव्वे त चिय दव्व	६०८३
दव्वप्पमाराअतिरेग	५८०२	३६६६ दव्वे पुट्टमपुट्टो	१०२६
दव्वप्पमारा गराणा	१६५३	१६११ दव्वे भविओ णिव्वित्तियो	६२८३ ११०७
दव्वप्पमारागाइरेग	५७८६	दव्वे भावेऽविमुत्ती	११६३ ३५४४
दव्वम्म दाडिमवाडिगमु	३३४४	दव्वे य भाव तित्तिण	४८०
दव्वम्म वत्थपत्तादिगमु	८५३	दव्वे य भाव भेयग	६२८०
॥	८७६	दव्वोग्गहग्गग आएस	४६
दव्वमिती भावसिती	३८२२	दव्वोयम्बररोहादियाग	३२२५ ८२५०
दव्व खेत बाल	६२३४	दम आउविवादिमा	३५४३
॥	६२३६	दम् उत्तर सतियाए	६४८०
॥	६२४२	दस एतस्स य मज्झ य	३०५ ६०७२
॥	६२४६	दम वेव य पणयाला	६५८२
दव्व जोग्ग ए लब्भ	१०६५	दस ता अगुसज्जती	६६८०
दव्व तु जाणित व	१७५५	३७७ दसउर-नगरुच्छुवरे	५६०७
दव्वाइ उज्जिय	५०११	६११ दसदुयए सजोगा	२०६२
दव्वगतपाहए ता	३७५६	दसमासा पक्वेण	२८३१
दव्वादि चतुरभिग्गह	६३७६	दमसु वि मूलायरिए	३६०१ ५१६८
दव्वादि तिविहकसियो	६५६	दमहि य रायहाणी	२५८८
दव्वादिविवच्चास	३३५१	दडधरो ण्डारक्खिओ	२५१६
दव्वादी अपसत्थे	३७५०	दड पडिहार-वज्ज	१६७३ २६७७
दव्वे आहारादिगमु	२६४२	दडमुलभम्मि लोए	६६०७
दव्वे इक्कड कठिगादिगमु	८८७	दडाग विखय दोवारोहि	०५१५
दव्वे एग पाद	५८८६	४०६१ दतच्छिण्णमलित	३४६४
दव्वे खेतो काले	८५०	दतपुरे आहरण	१२६५ २०४०
॥	८६१	दतामय दतेसु	१५२०
॥	८७५	दतिक्क-भोर तेत्ते	५६६४ २०७०
॥	८८६	दते विट्ठे विगिचरा	६११६
॥	८८८	दसगचरणा मुढस्स	४७६० ६३८
॥	९०१०	दसग-गाणा चरित्ताग	२१५६
॥	९०२५	दसग गागा चरित्त	४८४
॥	९०६४	॥	५६२७
२१८१		,	४०४१
			४०४२

दमगगारो माता	३३८३	२७८४	दिट्टमदिट्टे विदमत्य	२७१८	४७२६
दमगगारो सुत्त	६३६२		दिट्ट सलोम दोसा	६०११	३८३४
दमगगारो ग्राहक	१५३४		दिट्ट कारगगण	६०३६	
दमगगभावगण	४८६		दिट्ट च परामट्ट च	१७७६	३७६८
दमगगवाय लहुगा	१४७७	३१८६	दिट्ट त पडिहगिना	१३७६	४६४०
दाऊण अण्णदव्व	४०६७	१८२६	दिट्टा व भोइण	२२७१	
दाऊण गेह तु मपुत्तदागे	११६३		दिट्टीपडिसहारो	५७०	
दाऊण वा गच्छति	२६७६	१८८१	दिट्टीमोहे अपससरो य	३४	
दागगहरो सवासओ	१६२७		दिट्ट गिमतगा खलु	४५२६	
दागगन लवितूण	६६३		दिट्टे महस्सकारे	६८	
दागगण होति अफल	४४३०		दिट्टे सका भोतिय	४७२७	२१७५
दागगई समग्गी	१८४१		दिट्टो वण्णोणम्ह	१२५५	
दाणे अभिगमसद्धे	१६२०	१५८०	दिण्णमदिण्णो दडो	६४१५	
"	१६२८	१४८६	दिण्णो भवविषेण व	१३५६	४६२३
"	१६३०	१५७६	दियदिने वि सच्चित्ते	५६४०	३०४६
"	१६३१	१५८१	दियभत्तस्म अवण्ण	३३६३	
दाणेण तोमिनो वा	३७०५		दियराओ गोमतेरा	४१६६	
दावु वा उडु रुस्से	५०२२		दियराओ लहु गुरुगा	२६६१	५८५६
दायगगाहग-डाहो	५६६६		दियरातो उवसपय	८२२५	
दारदुगस्स तु भसती	२३७८	४८१५	दियरातो भोयणस्सा	३३६१	
दार न होति एत्ता	४२६६	३३७५	दियरातो लहु-गुरुगा	४७३६	८८८
दाराभोगण एगागि	२६६५		दियरातो लेवण	१२००	
दाराभोयण एगागि	४४०७		दिवसणिसि पढमचरिमे	१३४	
दावद्विओ गतिचवलो	६२०३	७५२	दिवसतो अण्ण गेण्णि	१६६५	
दासे दुट्ठे य मूढे य	३५०७		दिवसतो ग चैव कप्पति	३२२०	
दासो दासीवतिओ	३१८५		दिवसभयए य जन्ना	३७१८	
दाह ति तेग भगित	४४५०		दिवसभयओ उ विप्पति	३७१६	
दाहामि ति य भणिते	१०८१		दिवग्गा पचहि भसिता	८४२	
दाहामो ण कस्सयि	५०८२	२८२७	दिव्व-मरुगुय-तेरिच्छ	३३१४	
दाहामो ति व गुरुगा	३०४१	१६४२	दिव्वमरुगुया उ दुगतगस्स	३६४६	
दाहिएकरम्मि गहितो	३५१५		दिव्व कच्छेर विम्हओ	३३३६	
दाहिएकरेण कण्णे	५८६६	६६६	दिवाइतिग उक्कोसगाइ	२६१	
दिव्वेहि अच्छता	२५८५		दिव्वेसु उत्तमो लाभो	१०८६	८८३४
दिज्जते पडिसेहो	४४७६		दिसि पवण गाम सूरिय	१८७१	
दिज्जते वि तदा	१२०४	४६०१	दिसिभूओ पुब्बावर	३६८६	५२१०
दिज्जतो वि ण गहितो	१३७८	४६४२	दिसिदाहो छिण्णामूलो	६०८६	
दिट्टमरोसियगहणे	१०२		दिस्सिहिति चिर बडो	५६०७	
दिट्टमदिट्टा य पुणो	२२०१		दितेण तेसि अण्णा	४५३४	

दीह छेयरा डवको	२३०	दुविधे तेगिच्छम्मी	२२३०
दीहं च रागिसे ज्ञा	५६२१	दुविधो उ भावमंथवो	१०४०
दुक्करयं खु जहुत्तं	५४४४	दुविधो कायम्मि वरागो	१५०१
दुक्खं कप्पो वोढुं	३६६	दुविधो खलु पासत्थो	४३४०
दुक्खं खु निरणुकंपा	५६३३	दुविधो परिग्गहो पुण	३७७
दुग-तिग-चउक्क परागं	१३६१	दुविधो य मुसावातो	२६०
दुगपुड-तिगपुडादी	६१७	दुविधो य संकमो खलु	६२१
दुग्गो चउग्गुगो वा	५००४	दुविह चउव्विह छउव्विह	११५१
दुग्गविसमे वि न खलति	६६६८	दुविह ति विहेण रं भति	४६६४
दुग्गादि तोसियणिवो	६०८०	"	४६८६
दुग्गाहाणं छप्पांगदंसरो	५३१	दुविहमदत्ता उ गिरा	६२५०
दुट्ठिय भग्ग पमादे	४०२२	दुविहम्मि भेरवम्मि	५७२३
दुण्णिणय दोण्णि विट्ठा	३४८६	दुविहत्थयत्तातुराणं	४६२१
दुपदचउप्पदरासे	४६८२	दुविहं च दोसु मासेसु	६४२४
दुपदचउप्पदचउहुपद	७०३	दुविहं चैव पमाणं	५४३२
दुपय-चउप्पयमादी	३२६	दुविहा उ होइ बुद्धी	२६२३
दुपय-चउप्पदरासे	१४६७	दुविहा ति विहा य तमा	४१२३
दुप्पडिलेहियदूसं	४०२०	दुविहा दप्पे कप्पे	१४४
दुप्पडिलेहियमादीसु	२७६७	दुविहा दुग्गु छिया खलु	५७५६
दुप्पभित्ति पितापुत्ता	११७७	दुविहा पट्टवरा खलु	६६४२
दुब्बलगहणि गिलाया	४६५७	दुविहा-य लक्खणा खलु	४२६२
दुब्बलियत्तं साहु	४२०६	दुविहा य होइ दूती	४३६८
दुग्गभासियहसितादी	६३२०	दुविहा य होति जोई	५३५३
दुग्गपुप्फिपदमसुत्तं	२०	दुविहा लोउत्तरिया	१६१६
दुल्लभदव्वं दाहिति	३६७	दुविहा सामायारी	६२१५
दुल्लभदव्वेच सिया	११७२	दुविहासती य तेसि	६२७१
दुल्लभदव्वे पढमो	४५२	दुविहे गेलप्पाम्मी	२५३२
दुल्लभपवेस लज्जालुगो	१५५८	दुविहो अदंसग्गो खलु	३६७२
दुविधं तवपरुवराया	४१	दुविहो जाणमजारी	३६०६
दुविधं च भावकसिरां	६५३	दुविहो तस्स अवण्णा	३३०१
दुविधं च होई तेण्णं	३२४	दुविहो य अणभिभूतो	३६३६
दुविधं च होति मज्झं	२४३२	दुविहो य पंडतो खलु	३५७२
दुविधा छिण्णमच्छिण्णा	४५४६	दुविहो य होइ कुंभी	३५६१
दुविधा णायमराया	३६३५	दुविहो य होइ दुट्ठो	३६८१
दुविधे गेलप्पाम्मि	११६६	दुविहो य होइ धम्मो	३२६६
"	२५२४	दुविहो य होइ पंथो	५६४५
"	२५१२	दुविहो य होइ कीवो	३६३८
दुविधे तेइच्छम्मी	२२५६	दुविहो य होति कालो	६१२५

दुविहो य होति दीवो	५४०१	-४६१	दो चैव निसिज्जाआ	६२१७
दुविहोहात्रि वमभा	६५८५		दो चैव सया सोला	७१३३
दुव्वगाम्मि य प.दम्मि	७५५		दोच्चैरा आगतो	५७४१ २२७०
दुस्मिक्खिस्स वम्म	४१२२		दोच्च पि उगहो त्ति य	५०६६ २८११
दुहो गेलगम्भी	३२८६		दो जोयगाइ गतु	४२४७ ५६५७
दुहतो वाधातो पुग	२७८५		दोणिग उ पमज्जगाआ	२८२ २७४६
दुहतो वाधायम्भी	३७८६		"	३१३४ २७४६
दुइज्जता दुविहा	२८०		दोणिग तिहत्थायामा	१४०६
दत्ति खु गरहित	६८००		दोणिग वि विमीयमा	५५५७
दूमिय धूमिय वासिय	७०८८	५८५	दोणिग वि सहु भवति	१७४५ ३७६८
दूरगमणे णिगि वा	५७७०		दोणेक्कते खमणे	६३७०
दूरे चिक्खिल्लो	६५३८		दोणानरे काले	१०६०
दूमपलासनरिण	६१०		दोण्हट्टाए दाण्ह वि	२७५३
दूसियवेदो दूसी	३५७३	५१५०	दोण्ह वि उवट्टियाए	६००३
देवतपमतवज्जा	६६८६		दोण्ह वि कयरो गुरुआ	२६०४ ५८०१
देवा ह शो पमणगा	३०८२	१६८१	दोण्ह वि चियत्त गमण	५६७७ ३०८६
देविदवदिण्हि	६१८७		दोण्ह वि समागता	५६७८
देमकहा परिकहणे	२७७८	०६६७	दोण्ह जइ एक्कस्सा	३२२४
देमगहणे बीग	५३६३	३३२०	दोण्ह पि गुरूमामो	५६१
"	५२४०		दोण्ह पि जुवलयाण	५०४१ ६४०
देसच्चाई मव्वच्चाई	४८१		दोण्ह वच्च पुव्वचिय तु	६४
देसपदोसादीसु	३३०५		दो थेर खुट्टे थे	३७६६
देसम्मि बायरा ते	२०४३		दो दक्खिगापहा वा	६५६ २८६२
देस भोच्चा कोई	३८६३		दो पत्त पिया पुत्ता	२७६७
देनिय वारिय लोभा	५०८१	०८२६	दो पायाऽगुण्णाता	४५२४
देसिल्लग पम्हजुय मरुण्ण	५८२१	३६६८	दो मासे एसगाए	५५४२
देसे सव्वुवहिम्मि य	४५४८		दो रासी ठावेज्जा	६४४७
देसो नाम पमती	४६४२		"	६४४१
देसो व सोत्रमगो	४७६६	६३७	दारेहि व वज्जेहि व	६३७ २८६६
"	४८०१	६४२	दो लहुया दो गुरुया	३५२८
देसो सुत्तमहीय	६२६७		दो लहुया दोसु लहुआ	१५८६
देहजुतो वि य दुविहो	२१६७		दो वारियपुव्वुत्ता	२५२७
देहविजगा खिप्प	३६०१		दोमविभवगुरुवो	६६५६
देहविभूमा बभस्स	५०६५		दोमा जेग गिरु भनि	५०७३ ३३३१
देहस्स तु दोब्बल्ल	१८६१	५६०६	दोसा जग निरु भनि	५०५० २३३१
देहहिका गणोक्क	६५४		दोसा वा के तस्सा	११३६ ५५२०
दोग्गड पडगुपधरगा	१५		दोसाभरगा दीविच्चगाड	६५८ ३८६१
दोगच्च वड्ढा माणे	३७६		दासु वि अलद्धि कण्णावरेनि	५४७ २६१३

दोसु वि अग्वाच्छण्य	११८७	३५६८	न बि रागो न वि दोमो	४६६७	
दोहि तिहि वा दिरोहि	२७७०		नडपेच्छ ददुण	२६७६	५३५२
दोहि वि गुरुगा एते	६६३१	४४२४	नडमादी ठागा खलु	२५६८	
"	६६३४	"	नदिवेडजणवउल्लुग	५६०१	
"	६६३७	"	नयवानसुहुमयाए	६०६३	
दोहि वि गिसिज्जणहि	२१८०		नदिपडिग्गह वि पडिग्गह	४५६३	
दोही निहि वा दिणेहि	६३७५		नदीतू पुण्णस्स	३०२०	१५४६
ध			नाऊग य दोच्छेद	२७११	
			नारम्मि तिण्णि पक्खा	५४६२	५३६७
धणधूयमच्चकारिय-भट्टा	३१६४		नाराति तिबिहा मग्गो	२८६६	
धण्णतरितुल्लो जिणो	६५०७		नागिब्विदु लभति	४५०४	
धण्णाइ चउव्वीस	१०२६		नाणुज्जोया साहू	५३६६	३४२३
धण्णाइ रतणथावर	१०२८		नारो दसग-वरणे	७	
धम्मकहातोऽहिज्जति	४४८१		नारो महकप्पसुय	५५७२	५४७२
धम्मकहा पाठेति य	३६१५	५१८२	नातिक्कमते आण	२६१७	५८१४
धम्मकहि वादि खमए	४४८०		नातो मि ति पणासति	३५६६	
गतादिपिड अविमुद्ध-	४४७३		नाम ठवणा आण	४७०८	८३६
धातुनिवीग दरिखो	१५७७		नाम टण्णा दविए	३३५६	
वाग्यति गीयते वा	४३७६		"	६२८२	११२६
धारेतव्व जात	१७६१		"	६२६६	
गारोदए महासलित्तजने	५२६२	३४२२	नाम ठवणा पक्क	७८६८	१०३४
धिति बलजुत्तो वि मुग्गो	१७६०	२७८३	नाम ठवणा भिक्खू	६२७४	
गिति सारीरा सत्ती	४८१५	६५६	नाम ठवणा भिण्ण	४७१६	८५८
गीरपुग्गिप्पणत्त	३६११		नाम ठवणा वत्थ	५००२	६०३
गीरपुरिमपरिहाणी	५४२३		नायगमनायग वा	१७४७	
धीभु डिओ दुरप्पा	४७५६	८६८	नावजले पक्कले	६०२४	
धुवणाऽधुवणो दोसा	५८३६	४०१२	नावा- उग्गमउप्पायरोसणा	६००१	
धुवलभो वा दब्बे	४०५		नावाण-विवरण बाहग	६०१२	
धुवलओओ उ जिणण	३२१३		नावादोमे सव्वे	६०१६	
"	३१७३		नावासतारपहो	६००७	
धूमादी बाहिरितो	३६६५	५२१५	नाविय-साहुगदोये	४२१४	५६२४
घोतम्मि य निप्पगले	६१६७		निक्कारणग्गि दोसा	५२८४	३३६२
घोतस्स व रत्तस्स व	१६७४	२६७८	निक्खम-पवेसवज्जण	५२६२	३३७१
न			निग्गथी गमण पहे	१७८६	
			निम्मल्लगधगुलिया	४४७६	
न पगासेज्ज लहुत्त	३६३४		नियमा तिकालत्तिए	२६६३	
न वि जोइस न गरिणत्त	३६७६		"	४४०५	
न वि जोतिस न गरिणय	५२८६		नियमा पच्छाकम्म	४११४	
न वि रागा न वि दोसो	४६७६				

निरुवस्मगानिमित्त	६५६३		पञ्चाङ्गमाभिगृह्	७०८	
नीसट्टेमु उवेह	५३००	३५७६	"	७१७	
नीसकमणुदितो अतिष्ठिता	२६११	५८०८	"	७२५	
नीसकिओ वि गतूग	४५६६		"	१६२६	
नेच्छति जलूग वेज्जे	३१६६		"	४०२१	
नोइदियस्स विसओ	४२८८		पच्छाकडादिगहि	४६५२	
नोवेक्कवति अप्पाण	३३१६		पच्छाकडादि जयणा	३०४४	१६४५
			पच्छाकडे य सण्णी	३०२३	१६२६
पउगम्मि य पच्छिता	३०७२		पच्छाकम्ममतिते	५४१६	
पउमप्पल मातुलिगे	१६४२		पच्छाकम्मपवहणे	६८२	
"	४८६१	१०२६	पच्छा वि होति विगला	३७१०	
पउमुप्पले अकुमल	७५४	४००५	पच्छा सथवदोसा	१०४४	
पउमुप्पले अकुमले	५५६६	४०२५	पच्छिनऽगुपुव्वीए	६६२१	
पउरऽण्णपाणगमणे	२३६०	४८२८	पच्छित्तऽगुवाएण	६७००	
पक्क भिण्णाभिण्णे	६६००	१०३६	पच्छित्तपरुवराया	४१४६	५२६८
पक्खिय चउवरिसे वा	२१४०		पच्छित्तस्स विवड्ढी	२०८१	
पक्खिय चउ सवच्छर	६३१३		पच्छिता खु वहेज्जह	४८७७	१०१६
पत्तिय-मासिय छम्मासिण	५२१४		पच्छिता दोहि गुरु	२२०७	
पक्की-पसुमाईण	२३२३		"	२२१३	
पक्खी-पसुमादीण	२३२१		"	२२२१	
"	२३२७		पच्छित्त परा जहण्णे	५८६८	
पक्ख-पक्खे भावो	३५६७		पच्छिता बहुपारा	३२०२	
पक्खेवदमादीया	१२१२		पच्छित्तेण विसोही	६६७७	
पगतीए समतो राधु	४१०		पज्जामवराण अक्खराइ	३१३८	
पगती पेलवसत्ता	५०७३	२८१८	पज्जोसवणा ऋप्प	३२१८	
पक्कक्खाण भिक्खू	३६८६		पज्जोसवणा काले	३१३७	
पक्कक्खाते सते	१६१५		पज्जोसवणा केसे	३२१०	
पच्छण्ण असति गिण्हग	२३८१	४८१८	पट्टो वि होति एणो	१४०१	४०८५
पच्छण्ण-पुव्वभगिते	२३८७	४८२४	पट्टविओ मे अमुओ	२६८८	
पच्छण्णा सति वहिता	७३६६	४८०४	पट्टविन वदिते ताहे	६१४३	
पच्छाकड-वत-दसरा	१०६४		पट्टवितग्गि सिलोणे	६१६१	
पच्छाकड-साभिगृह्	६२६		पट्टविता ठविता या	६६४३	
"	६३८		पट्टविया य वहते	६६४४	
"	६४४		पट्टीवसो दो चारणाओ	२०४६	५८२
"	६४६		पडरा अवगुतम्मि	५८६५	
"	६६१		पडण नु उप्पतित्ता	३८०३	
"	६६७		पडिकारा य बहुविधा	२४१६	
"	६६८		पडिकुट्ट देस कारग गता	३४२८	२८८१

पडिकुट्टे ललगदिवसे	६३८३		पडिलाभित वच्चेता	४४७०
पडिगमगा अण्णतिस्थिय	५३८	०६०३	पडिलेह ाडगुण्णत्रगा	८६२
”	२५४८	१०५४	पडिलेह ग पफोडरा	१४१८
”	४६१७	१०५४	”	१४२२
पडिगमगादिपदोसे	३८२८		”	१४३३
पडिगामो पडिवसभो	४६७५		पडिलेहगामगयरा	१३५५
पडिचरणपदोयेण	४५०३		पडिनेहग-महपोत्ती	३४६३
पडिचरती आचरती	३५६६		पडिलेहग मज्जाए	६२४७
पडिजग्गति गिलाण	३२७२	४३०४	पडिलेहगमथारे	०६०८
पडिजग्गता य खिप्प	१७६२	३७८५	पडिलेहगा तु तस्सा	१४१७
पडिणीयता य केई	३६६७		पडिलेहगा दिसारा	१८७०
पडिणीयता य अण्णे	२७७०		पडिलेहगा पमज्जगा	१४२३
पडिणीय वृच्छरो को	५६८५		पडिलेहगा पमज्जगा	१४२०
पडिणीयम्मि वि भयरा	६३६०		पडिलेहगा बहुविहा	४१४६
पडिणीय-मेच्छ सावत्त	१७३४	३७५६	पडिलेहगा य पफाडरा	१४१६
पडिणीयया य केई	३६६८		पडिलेह दियतुयट्टरा	५५५५ ५४५४
पडिणीय विसक्खेवो	१४८०		पडिलेहपोरिसीओ	३००१ १६०३
पडित पम्हट्ट वा	१७०३		पडिलेहा पलमथो	६४६ ३८७७
पडिपक्खो तु पट्टो	२२५६		पडिलेहिताम्म पादे	१४२१
पडिपहगियत्तमाराम्मि	५२५५	०३८६	पडिलोह्य च खेत्त	२४६४ २०६६
पडिपुच्छ-दारा-गहरो	१७८७		पडिलेहोभयमडलि	६५६ २३७६
पडिपुच्छ अमराण्णे	२०६६		पडिलोमाराणुलामा वा	३८८२
पडिपुण्ण-हत्थ पूरिम	०१७०		पडिक्खीइ अकुसलो	१६६
पाडपोग्गले अपडिपोग्गले	२४४०		पडिविज्जथभगादो	४४५६
पडिबद्धलदि उग्गह	२१२२		पडिसिद्ध समुद्धारो	४२४
पडिबद्धा सेज्जाए	५१७		पडिसिद्ध तेगिच्छ	४८०६
पडिबद्धा सेज्जा पुग	५१८		पडिसिद्धा खलु लीला	४८४२ ६८२
पडिमत्तथभगादी	४४६१		पडिसेचे पडिमेहो	१८३६
पडिमाए भामियाए	५३७७	३४६५	पडिसेचे वाघाते	४२५
पडिमाजुत दहजुय	३६२		पडिमेवओ उ माधू	७६
पडिमाजुते वि एव	६०७		पडिसेव गाए एव	५१३२ २४८२
पडिमाभामरा ओरुभरा	५४०५	४६६	”	५१७४ ”
पडिमापडिवणारा	३१४७		”	५१८७ ”
पडिमेतर तु दुविह	५११६		पडिमेवरातियारा	३८७२
पडियरिहामि गिलाण	२६७६		पडिसेवरा तु भावो	७४
पडियारिणारि तिण्ह	७७६		पडिसेवरा य सच्च	६६१६
पडिलाभण्णट्टमम्भी	४८१	४६२४	पडिसेवरा वि कम्मादएरा	६३०८
पडिनाभणा तु सड्डी	५८४	४६३७	पडिसेवती विगतीतो	४८६६
			पडिमेततो तु पडिसेवगा	७३

पञ्चित्रयन्त्र तर्हि	३७५	४६५८	पञ्चमस्म तनियठागो	५१६६	०५१६
	२२४८	"	पञ्चमस्म होनि मूल	६६५६	
पञ्चमित्रिणि पुष्प	६६६२		पञ्चम तु भडमा ना	५३६३	३४४८
पञ्चमेहगस्म लहुगा	५४६२	१३६७	पञ्चम वितिय तनिय	५६७२	
पञ्चमेह ग गिचुभरण	५६८०	३०८६	पञ्चम राड ठवेते	२६८४	१८६६
पञ्चमेहगा वरगण	४७५४	८६६	पञ्चमा ठवगा एकको	६४५६	
पञ्चमेहे अनभे ना	३४४६	२८६६	"	६४६०	
पञ्चमेहेऽजयगाए	३०४२		"	६४६१	
पञ्चमेहे पञ्चमेहो	४६७७		पञ्चमा ठवगा पक्वो	६४४६	
"	१६६८		"	६४५०	
पञ्चमेहो अववाओ	६६८४		"	६४५१	
पञ्चमेहा जा आगा	६६८५		पञ्चमा ठवगा पच य	६४५४	
पञ्चमेहो वा ओहो	६६६६		पञ्चमा ठवगा पच	६४५५	
पञ्चमेहगिगाओ पञ्चहारिओ	१३००		"	६४५६	
पञ्चहारिए जो तु गमो	१६५२		पञ्चमा ठवगा बीमा	६४४३	
पञ्चहारिते पवेसो	१७५०	३७७३	"	६४४४	
पञ्चहारिय अदते	३३४		"	६४४५	
पञ्चपणगागते वा	२६५७		पञ्चमाए गिण्हिउण	४१६१	५०८३
पञ्चमग-भगो वज्जो	०४६६	६३८३	पञ्चमाए पोरिमीए	५७८	४६३१
पञ्चमचरमाहि तु	०४२७		पञ्चमाए वितियाए	२६०२	५७६६
पञ्च-तनिय-मुक्काण	३३७३	२७७४	पञ्चमालिन्न करणे वेला	२४६	
पञ्चमदिणवितिय-तातए	२७६५		पञ्चमासति अमराण्यो	२३८५	४८२२
पञ्चमदिगाणापुच्छे	६३७२		पञ्चमासनि सेसाण व	२३७१	
पञ्चमदिणो म विफाले	६३२६		पञ्चमित्तुगम्मि ठागो	५१०६	२४७५
पञ्चमवितिएसु कप्पे	३८७७		"	५१६८	
पञ्चमवितिएहि छड्डे	३८२७		"	५१६९	२७७५
पञ्चमवितिय दिवा बी	२६५६	५८५१	पञ्चमित्तुगम्मि तद्वारिह	५१७०	०५००
पञ्चम-वितियटो वा	४८६		पञ्चमुस्सेतिममुदय	५६७१	
पञ्चम-वितियाए करण	६६५		पञ्चमे गिलाणकारण	५०४६	०४२०
"	७०४		पञ्चमे पचविधम्मि वि	७७०	
"	७१४		पञ्चमे पच मरीरा	१७६६	
"	७२२		पञ्चमे विनिए ततिए	११४७	३५२८
पञ्चमवितियातुरस्म य	३४२३	२८७५	"	२५३६	
पञ्चमम्मि जो तु गमो	१४४८		पञ्चमे भगे गहण	४११७	१८६६
पञ्चमम्मि य चतुलहुगा	१३१५	४६१८	पञ्चमे भगे चउरो	४६२८	
पञ्चमम्मि य म्भयरो	३६४८		पञ्चमे भगिणमासो	५४६१	
पञ्चमम्मि ममोमरणो	३२२२		"	५४६८	
"	३२५३		पञ्चमे भगिण वट्ट	५४७०	

पगगातिमनिककतो	१५६७		पदमगमकमालरगो य	६१६	
पगगाति मामपत्ता	६६४२	१०७६	पदमगा मवागा	६००	
पगगातिरेग जा पग—	६३७६		पपडए मचित्ता	१५४	
पगगाति ह रनमुच्छग	६३६		पपायरिय मावी	८७०	
पगगादि असपादिम	५३३४	०४०६	पभु-अगुपभुगो आवेदण	१४८	५७४
पगगादि मगहो होति	६३५०		पमागाइरेग मरगो	५८०४	४००१
पगगास ठवगपदा	६४५३		पम्ट्टु अवहाग वा	८५५६	
पग दस पणार बीसा	५३३३	०४०८	पम्ट्टु पडिमाराग	६३६४	
पगयालदिग गगिगो	०८१०	५७७६	पयनो पुग मकलिना	४५०५	
पगयालीस दिवमे	५८५७	४०३२	पयला उल्ले महग	२६८	६०६६
पगबीसजुत पुग	२१०४			८८२	”
पगहीग तिगगद्धे	१६०८	५८०५	पगगा गिट-मुयट्टे	१६६१	३७१४
पगिधग जोगजुतो	३५		”	१६६२	
पगिया य भडमाला	५३८८	२४४४	”	१६६४	३७१५
पणनि वट-सूर	६२		पयलामि कि दिवा	३००	६०६८
पणति जडुहीवे	६१		परतिमियउवगरण	३४३६	२०६१
पणरस दस व पच व	३२६५		परतो सय र राचचा	३४४	
पणवगामेत्तामिद	२१६८		पदेसगग गातु	३२७४	४३०६
पणवगिजजा भावा	४८२३		परपक्खमि य जयगग	५०७२	३३५१
पणवगणे च उवेह	२३५६		परपक्खमि वि राग	५२६७	३३७६
पणगा पणट्टी	६४७७		परपक्ख तु सपक्खे	३६६३	
पणगासा पाडिज्जति	३१५५		परपक्खे उ सपक्खे	३६८८	
पनिदिवसमलम्भते	३४२१		परपक्खो उ सपक्खे	३६८६	
पसम्मि सा व अना	४५७२		परपक्खो परपक्खे	३६६०	
पत्ता पत्तावधो	१३६२	६०	परमद्धजायगाग्रो	३०८५	
”	१३६६	१०८५	”	३०६३	
”	५७८७	”	परमद्धचोयगातो	४१६७	
पत्ता वा उल्लेदे	१७६		”	४१६८	५०८७
पत्ताण पुप्फाण	४८४०	६८०	”	४१६५	५३१४
पत्ताणमसमत्ता	२७८		परवन्तिगग किारिय	२७८१	
पत्ताववपमाण	५७६०	३६७१	परवयगाज्जट्टेउ	१३७७	४६४१
पत्तेगे साहारण	२५४		परसक्खिय गिबधति	३०४७	
पत्तेयचट्टगामति	२३६८	४८०६	परिग्गमगमुक्कोम	६८२	
पत्तेय समग दिक्खिय	२२८०	४८१७	परिग्गमगो चउभगो	२०८५	३६६१
पत्तेय पत्तेय	६५०१		”	५८१४	”
”	६५७१		परिगलरा पवडगो वा	६०४३	
पत्थारदोसकारी	५१६१	२५११	परिचट्टग रिग्गमोयग	६६४	
पत्थिव-पिडडिकारा	२४६६		परिचट्टग तु रिग्ग	७०६	

परिद्वारग-मकामग	२६६		पनिमथो अग्राङ्गण	१५६०
परिणामग्रो उ तर्हि	६८७५		पल्हवि कोयवि पावारग —	१००२
परिणामतेसु अच्छति	३०८८		पवतिगि अभिसेगपत्त	६०२२
परिगिद्विजजीवजट	३६६६	२६२१	पवडते कायवहो	४२७०
परितावगा य पोरिमि	६७५६	६०२	पविमते गिक्खमते	५७८२
परितावमगागुकपा	८८६३		पव्वज्जणगपक्खिय	५५१७
परितावमहादुवले	३११६	१८६६	पव्वज्जाए अभिमुह	६०६४
परिपिडितमु लावो	६४५७		पव्वज्जाए सुण्ण य	१५१६
परिभायण तु दाण	८३७		पव्वज्जादी आलोयणा	३८६६
परिभोगविचचारो	१५२६		पव्वज्जादी काउ	३८१२
परिमितभन्तगदासो	४१७४	५०६३	”	३६४०
परियट्टणागुओगो	०१२५		पव्वज्जासिक्खावय	३८१३
परियट्टिए अभिहडे	०२५१	४२७६	पव्वयसी आम कस्म ति	२७२२
परियट्टिय पि दुविह	४६६५		पव्वसहित तु खड	५४११
परियाएण सुतरा य	६०४०		पव्वावगा भीयत्थे	३५६३
परियाय परिस पुरिस	४३७३		पव्वावसिज्ज-मुलणा	२४१६
परियायपूयहतु	५४३७		पव्वावसिज्ज-वाहि	२७००
परियार नट्ठयगा	१४३	०६०८	पव्वावित्रा मियति य	३७४६
परियानियमाहारस्म	३७८८		पव्वावेति जिणा खलु	३५३५
परिवमणा पञ्चुलणा	३१३६		”	३५५५
परिवार-पूयहेउ	५६६१	५३६६	पसत्थविगनिगहण	३१६६
परिवारियमज्जगते	५७७६		पसिद्धिल-पलव-गोला	१४२६
परिमतो अद्धाणे	२६४७		पसिगापसिगा सुविरो	४०६०
परिस व रायदुद्धे	४१११		पहरगममगरो छगुरु	११२
परिसाए मज्झम्म पि	४६८४		पको पुगा चिक्खल्लो	१५३६
परिसाडिमपरिसाडी	१०१३		पच उ मासा तकले	२८२८
”	१२१८		पच पक्खेज्जण	७६२
”	१२८१		”	४२१०
”	१३१०		पच व छ मन यने	३८३०
”	१२८७		”	३८३७
परिरेसु भीरु महिलासु	२५७०		पचविचल्लिमिगीग	६५६
परिहरणा वि य दुविहा	४०७४	१८३१	पचमना चुलमीता	६४७०
परिहार शुपरिहारी	६६११		पचमुलपत्तोय	६४४
परिहारतवक्खिलो	१८६५		पचण्ह वि अग्गा गा	५७
परिहारिगठवेते	०७७७	२६६६	पचण्ह अण्णतरे	७८४
परिहोण त द व	३०७८	१६७७	पचण्ह एगतरे	५५५०
परीसहचमू	०६२५		”	५५६८
पलिउचरा चउभगो	६६२४		पचण्ह गहरोण	४२११

पचण्ड परिचुड्डी	६/८६		पात्रात्म्य अत्रभ	५८४५	
पचण्ड वणगाग	८५४	८८५	पाउतमपाउता छट्टु मट्टु	१/१	
"	४६८		पाउत्राग टुविध	८/६	
पचण्डहारियाड	२६८४		"	१६४४	
पचतिरग्न दब्बे उ	१८२		"	१६१	
पचमगम्मि वि एव	११०	२/५१	पागग अहातन्त्र	१०१	
पचम-उ सत्तमियाग	१६०३	५८८	पागग दनि तागा	८१०१	
पचमहृवयभेदो	८००८	७५०	पागग वीयभाई	१७८	८३
पचमे अरोगमगादी	५६४१	१०४७	पाडज्ज व भिदेज्ज व	८२०५	
पचविधम्मि त्रि वत्थे	५८१		पागगजोगाहारे	२८८०	
पचविध सज्भाय	२३८		पागगागीगि जागगा	८५८	
पचविहमज्जायम्म	६५१८		पागगट्टा य गट्टिडा	१६६४	१६०५
पचविह-उग-कम्मिणे	६३५	८८६७	पागगदयम्ममगवरसो	८१२७	
पचसतदागगहरो	८५४	१६४६	पागगसुगगा य भु जति	६२३८	
पचममिनस्स मुगिगगो	१०३		पागगातिपानमादी	१६६६	३६६३
पचमयभोगि अगगी	५१५७	२५१०	पागगादिरहितदसे	२७२	
पचसया बुल्लमीओ	५६२१		पागगा नीतल कु हू	१०४५	
पचमया बुल्लमीया	५६१६		पागगाणिमिन्न वमिमा	४६८७	
पचमया चोयाला	५६१६		पागगच्छि-नाम-वर	४६२४	
पचमया जानेरा	३६६५		पागगप्पमज्जगादी	४६४६	
पचादिहत्थ पथे	१४७		"	५०६१	
पचादी गिम्भित्ते	२०७		पादस्स ज पमाण	६१५	३८४८
पचादी नहुगुग्गा	२४६		पादादी तु पमज्जगा	१८५१	
"	३८२		पादे पमज्जगादी	२२८१	
पचादी लहु लहुया	३४१		पादेसु जो तु गमो	१५००	
पचादी समगिद्धे	१७८		पादोवगम भगिय	३६४२	
पचासवप्पवत्तो	४३५१		पादोसिय अट्टरत्ते	६१५१	
पचूणे दोमासे	३२६४	४२६५	पाभाइतम्मि काले	६१५५	
पचेगतरे गीए	५५६६	५४६८	पमाणतिरेगधरणे	४५२७	
पचेदियाग दब्बे	६१००		पामिखित पामिखावत	४४८६	
पडए वातिण वीवे	३५६१	५१६६	पायडच्छि गगास वर	४५७२	
पड्डया मि वरासे	१६८५		पायच्छित्त असतम्मि	६८७८	
पतसुर परिग्गाहिते	१६०१		पायच्छित्तो पुच्छा	४८४५	६८५
पता उ असपत्ती	५१४७	२४६७	पायप्पमज्जगादी	२३०४	
पथसहायममट्टो	५४८८	५३६३	"	३३१२	
पथे ति एववरि रोम्म	२४४३		पायम्मि य तो उ गमो	११६४	
पसू अचित्तरया	६०८६		पायसहरण छेत्ता	३१८७	
पसू ए मम-रुहिरे	६०८५		पायावच्च कुड्डु बिय	२२००	

पायावचच परिग्रहे	५१२१	२४७२	पासे तणाण सोहण	५३६५	
"	५१२४	"	"	५४०७	
"	५१३०	२४८०	पासो त्ति बघण ति य	४३४३	
पारणग-पट्टिता-आणि त	१६७६	३७००	पाह्जिजे णाणत्त	३०४६	१६४८
पारचिओ रण दिज्ज न	१६४५		पाहुडिय त्ति य एगे	३०१२	१६१५
पारचि सतमसीत	६६१७		पाहुडिया वि ह् कुविषा	२०२५	१६७४
पारिच्छ-पुच्छमणह	२४१७		पाहुणय च पउये	११७६	३५६०
पाव अवाउडातो	५३१६		पाहुणविसेसदारो	४१७७	५२६६
पाव अवायभीतो	६६६७		पाहुण तेणण्णोण व	५०५६	२८०४
पावते पत्तम्मि य	४७७०	६११	पिप्पलग णहच्छेदण	६७६	
पासग-मट्टिगिमीयण	६६४		पिप्पलग विकरणट्ठा	३४३६	२८८८
पामत्व-अहाछदे	४५५०		पियधम्मे ददधम्मे	२३६५	४८३२
"	६६७१		"	२४४६	२०५०
पासत्वमहाछदे	४६६२		पियधम्मो ददधम्मो	१७५१	३७७४
पासत्वमादियाण	४०५७		"	६१३१	
पामत्वादि-कुसीले	१८४०		पिय-पुत्त सुहु येरे	३७६४	
पासत्वादिगयस्मा	२८२६		पियपुत्तयेरए वा	११७६	३५५७
पासत्वादिममत्त	४०६		पिसियासि पुव्व महिसि	१३६	५०१८
पासत्वादी ठाणा	४६७०		पिहितुन्निष्णाकवाडे	५६५५	
पासत्वादी पुरिसा	४६६१		पिडस्स जा विमुद्धी	६५३४	
पासत्वादी मु डिते	५५७०	१२६२	पिडस्स पक्वणता	४५७	
पामत्थि अणसभोइणीण	२०८६		पिडे उगम उप्पादरोसण	४५६	
पासत्थि पडरज्जा	३१६८		पिडो खलु भत्तट्ठो	१००६	
पासत्थोमणकुसीलठाण	३८८३		पीढग-णिसज्ज-दडग	१४१३	४०६६
पामत्वोसण्णाराण	१८२८		पीढगमादी आसण	४०२१	
"	१८३२		पीढफलणसु पुव्व	४०२५	
"	४६६६		पीतीसुण्णो पिसुणो	६२१२	७७५
पासवणट्ठाणसरूवे	५१६	८५८५	पुच्छ सह भोयपरिसे	४६२५	१०६२
पासवण-पडणणिसिकज	१५५५		पुच्छतमणक्काए	३६८४	४६८६
पासवणमत्तएग	५४५	२६११	पुच्छा कताक्तेसु	८६५	
पासवणुच्चार वा	१८६६		पुच्छा सुद्धे अट्ठा	३७४८	
"	१८६६		पुच्छाण परिमाण	६०६०	
पासवणुच्चारण	१८५६		पुच्छाहीण गहिय	५०५८	२८०३
पामवणुच्चारदीण	१८६०		पु जा पासा गहित	१३१२	
पासडिणित्थि पडे	४७४५	८८८	पुट्ठो जहा अबद्धो	५६०८	
पासडी पुरिसाण	२३८२	४८१६	पुढवि-तण-वत्थमात्तिमु	५७६५	
पासदणे पवाते	५७०५		पुढवि-दग-अगणि-मारुअ	३६११	
पासात्ता भासित्ता	१८२३		पुढवि-ससरक्ख-हरिते	२०११	

पुढवी-आउक्काए	१४५		पुरिसाण जो तु गमो	१४५७	
पुढवी-आउक्काते	१३७५	४६३६	पुरिसिस्वी आगमरो	५५३	
पुढवी-ओस सजोती	५५८		पुरिसेसु भीरु महिलासु	३५७०	५१४७
पुढवीमादीएसु	२३०८		पुरिसेहितो वत्थ	५०७१	२८१६
पुढवीमादीएसू	४६४८		पुरिसो आयरियादी	१०६६	
पुढवीमादी ठारणा	४२५७		पुरे कम्ममि कयम्मी	४०६२	
पुढवीमादी थूरादिएसु	४६४७			४०६५	
पुणरवि दव्वे तिविह	५००४	६०५	"	४०६७	
पुणरवि पडिते वासे	१२४३		पुव्वखतोवर असती	१७३	
पुणम्मि रिगयाण	३२५८	४२८८	पुव्वगते पुरओ वा	१०८६	
पुत्तो पिता व जाइतो	१२६७		पुव्वगयकालियसुए	५४४७	
पुत्तो पिया व भाया	१७१४	३७३६	पुव्वगहित च नासति	६०७१	
"	१७१६	३७४१	पुव्वघर दाऊण	२०२६	१६७८
पुप्फग गलगड वा	४३२८		पुव्वण्हमपट्टविते	२०४०	१६८६
पुयातीणि विमद्द	३०६१		पुव्वण्हे अवरण्हे	२०३६	१६८५
पुरकम्ममि य पुच्छा	४०५६	१८१६	पुव्वतव-मजमा होति	३३३०	
पुर-पच्छिमवज्जेहि	११६०	३५४१	पुव्वपयावितमुदए	१०७५	
पुरतो दुरुहराभेगते	४२५५	५६६४	पुव्वपरिगालियस्स उ	६०५२	
पुरतो य पासतो पिटुतो	३४४६	२००२	पुव्वपरिसाडितस्म	८०१	
पुरतो य वच्चति मिगा	३४४८	२६०१	पुव्वपवत्ते गहराण	२००८	
पुरतो वच्चति साधू	२४३८		पुव्वपविट्ठे गतरे	२४०६	
पुरतो व मग्गतो वा	२४३७		पुव्वभरिणत तु ज एत्थ	४२०१	२५५४
पुरतो वि ह ज धोय	४०७१	१८२८	पुव्वभरिणतो व जयणा	५६८०	
पुराण सावग-सम्मदिट्ठि	५६७१	३०८०	पुव्वभवियपेम्मेरा	३६५४	
पुराणादि पण्णवेउ	५७१८	३१३०	"	३६५५	
पुराणेषु सावतेसु	६०४६		पुव्वभवियवेरेण	३६४४	
पुरिमचरिमाण कप्पो	३२०३		"	३६५६	
पुरिमनरति भूयगिह	५६०२		पुव्वमभिण्णा भिण्णा	४८६४	१००३
पुरिसज्जाओ अमुओ	२०३७	१६८६	पुव्व अदता भूतेसु	६२७	
पुरिस-णपु सा एमेव	८७		पुव्व अपासिऊण	६७	
पुरिसम्मि इत्थिगम्मि य	२७०६		पुव्व गुरुणि पडिसेविऊण	६६२२	
पुरिसम्मि दुव्विगीए	६२२१	७८२	पुव्व चिय पडिमिद्धा	३७७२	
पुरिससागरिए उवस्सयम्मि	५२०३	२५५६	पुव्व चित्तेयव्व	५४६४	
पुरिसा उक्कोस-मज्झिम	७७		पुव्व तु असभोगी	४६१७	
पुरिसा तिविहा सघयण	७६		पुव्व दुच्चरियाण	३५७७	
पुरिसा य भुत्तभोगी	५३७	२६०२	पुव्व पच्छा कम्मे	५७७७	
पुरिसाण एगस्स वि	२६७२		पुव्व पच्छा सधुय	५७७२	
पुरिसाण जो उ गमो	२२८६		पुव्व पच्छुदिट्ठ	५५०८,	५४११

„	५५१०	५४१३	पोगल असती समित	२८८	
,	५५१२	५४१५	पोगल बेदियमादो	३४५६	
„	५५१३	५४१६	पोगल-मोयग-इते	१३५	
पुव्व पच्छुदिद्धे	५५०७	५४१०	पोडमय वागमय	१६६५	
पुव्व पि गीर सुगिया	१६३३		पोत्थगजिण्टिट्टो नो	४००४	३८२७
पुव्व भगिता जतगा	५६६३	३०६१	पोगिसिगासग परित्ताव	४७४२	८८४
पुव्व मीसपरपर	५६६३		पोसगमादी ठाणा	२५६६	
पुव्व व उवक्खडिय	५७१६		पोसग-सपर-एण्ड-लख	३७०८	
पुव्व बुग्गाहिता कती	३७००		पोसिता ताड कोती	३८६२	
पुव्वाजत्ता उवक्खल्लुल्लि	३०५७	१६५६			
पुव्वाए भत्तपाग	४१४१		फलगादीग अभिक्खरा	२८६	
पुव्वाणुपुव्व पडमो	६६२०		फासुगमफासुगे वा	२६६०	१८६२
पुव्वाणुपुव्वी दुविहा	६६१६		फासुगमफासुगेण य	३००३	१६०६
पुव्वामयप्पकोवा	१८२५		फासुग जेणिएपरित्ते	३४६७	२६१८
पुव्वामयप्पकोवो	५६८८		„	५७००	„
पुव्वावरदाहिएजत्तेरेहि	३८४७		फासुगपरित्तमूले	४४०	
पुव्वावरमजुत्त	३६१८	५१८५	फासुगजिणिएपरित्त	२५६	३११५
पुव्वावरसभाए	६०५४		फिडितम्मि अट्टरत्त	६१५३	
पुव्वाहारोसवण	३१६७		फिडित च दगट्टि वा	५२६५	३३७४
पुव्वाहीय एासत्ति	३२०७		फेडितमुद्दा तेण	५२६७	२३४६
पुव्वि पच्छाकम्मे	४०४४				
पुव्वुद्धिं तस्स उ	५५०६	५४१२			
„	५५०६	„	बत्तीमलक्खगाधरो	३६५७	
पुव्वुद्धिं तस्सा	५५११	„	बत्तीसा अट्टसय	४२६३	
पुव्वे अवरे य पदे	१०५३		बत्तीमा सामन्ने	४५१७	
पुव्वोगहिते खेत्ते	४६३२	१०६६	बत्तीमाई जा एक्कधामा	४६३६	१०७६
पुव्वोवट्टमलद्धे	६८७		बत्तीसादि जा लवणो	४२७	
पुव्वीमादी कुलिमांदासु	५८०२		बद्धट्टिए वि एव	५७०१	
पूअलिय सत्तु ओदगा	०३६५	४८०३	बद्धिय चिप्पिय अविने	२६००	
पूनीकम्म दुविध	८०४		बम्ही य मुन्दरि या	१७१६	७६८८
पेच्चह तु अणाचार	६४१८	२८७०	बलवणएव्वहतु	४६६	
पज्जाति पातरामे	२४१८		बलि धम्मकहा किड्डा	१३२८	५५४
पेसवितम्मि अदेते	३३६०	०७६१	बहि अनत्तन्नमत्तिसु	३२४६	४२७१
पह पमज्जए वासए	२०६	३४३६	बहि बुद्धी अद्धजोयण	१७७५	
„	५३८१	„	बहिता व शिग्गताण	५०६६	२८१४
पेहपमज्जरासगिय	५२६८		बहिघोतरड मुद्धो	६१०२	
पेहाअेहकता दोसा	५८१३	३६६०	बहियउणएच्छवासी	२७६४	
पेहुण तदुल पच्चय	१३७४	४६३८	बहिया वि ग्मेतूण	०३६४	४८३१

बहिया वि होति दोसा	२५१६		बासत्ताणे पणुग	१४१४	
बहुआइण्णे इतरेसु	२२४५		बाहाए अगुलीए व	१७१४	३७४६
बहुएसु एकदारे	६४०१		बाहाहि व पाएहि व	४२०६	
बहुएसु एगदारे	६४३०		बाहिठितपठिनस्स तु	११६०	३५७१
बहुएहि वि मासेहि	६४११		बाहिठिया वसभेहि	३१५०	४२८१
बहुएहि जलकुडेहि	६५६६		बाहिरकरणेण सम	५४२५	
बहुपडिसेविय सो या	६४२८		बाहिर खेतो छिण्णे	१२०१	३५८१
बहुमाणे भत्ति भइता	१४		बाहिरठवगावलिओ	६२५५	
बहुरयपदेस अक्कत्त	५५६६		बाहि आगमणपहे	४३७०	४५१०
बहुसो पुच्छिज्जतो	२६८२	१८८४	बाहि तु वसितुकाम	२४०२	४८२६
बध वह च घोर	३३८२	२७८३	बाहि दोहणवाडग	११६६	३५७६
बध वहो रोहो वा	३७१६		बाहुल्ला गच्छस्स तु	११६२	३५८३
बभवतीण पुरतो	५५६		बिइयपदमगण्णज्जे	३६८३	
बभवए विराघण	१७६४		"	३६८६	
बभस्स वतस्स फल	३५३१		"	४३११	
बभस्स होतग्गुत्ती	४०४६		बिइय पणुगिण्विसए	१३८५	
बाडग पाहि णिवेसरण	१४८५		बितिए वि समोसरणे	३२६६	४२६७
बादरपूतोय पुग	८०६		बितिए वि होति जयणा	५७१७	
बायालीस दोसे	४४५		बितिएण एतकिच्च	४८६	
बारग कादव-कल्लाग	३८७६		बितिएणोलोएति	४८५०	६६२
बारस अट्टा छळ्ळग	६४६६		बितिओ वि य आणसो	६५०	
बारस चोइस परगुवीसओ	१३८८		"	६२५३	
बारस दम नव चेव तु	६५८७		बितिय गिलाणागारे	१६१६	
बारस य चउव्वीसा	२१३२		बितियततिएसु नियमा	५८८४	४०५६
बारसअगुलदीहा	७१०		बितियपए एगागी	३७७५	
बारसमे उट्ठे	५६६८		बितियपए कालगए	३०७१	
बारसविहमि वि तवे	४२		बितियपदज्जामिते बा	१३०७	४६०७
वालमरणेण य पुणो	३८११		बितियपद तेण सावय	६००३	५६६३
वालज्जहु बुड्ढ-अतरत	३२६३	४२६४	"	६०१३	
वाल पडित उभय	४८		बितियपददोणिए वि बहू	१११०	
वाला बुड्ढा सेहा	११२८		बितियपदमण्णज्जे	५६६	
वाला मदा किड्डा	३५४५		"	६१७	
वालादि परिच्छत्ता	१६४६	१६०४	"	७६१	
"	१६४८	"	"	८७४	
वाले बुट्ठे कीव	३७४४		"	१४६४	
वाले बुड्ढे णपु से य	३५०६		"	१५२३	
वाले सुत्त सूती	३२०८		"	१५४३	
वावत्तरि पि तह चेव	२१३७		"	१७८४	
वावीसमाणुपुण्वि	३६७४		"	१८१७	
			"	१८२२	
			"	१८२७	

बितियपदमराण्यज्जे	१६६६	बितियपदमराण्यज्जे	२४३४
"	२००३	"	२४४४
"	२०१६	"	२५४४
"	२१५८	"	२५५०
"	२१७१	"	२५६२
"	२१७७	"	२५७०
"	२१८०	"	२६२७
"	२१८४	"	२७७१
"	२१८७	"	३३०६
"	२१९१	"	३३१३
"	२१९४	"	३३३६
"	२२२८	"	३३६६
"	२२५४	"	३५०२
"	२२६०	"	३७७६
"	२२६८	"	३८०८
"	२२७३	"	३८८४
"	२२७५	"	४०२४
"	२२७७	"	४०४१
"	२२८०	"	४१२४
"	२२८२	"	४३२७
"	२२८५	"	४३६७
"	२२९१	"	४३६८
"	२२९४	"	४६२५
"	२२९७	"	४६५०
"	२३००	"	४६६५
"	२३०२	"	४६६६
"	२३०५	"	४६५१
"	२३०६	"	४६५५
"	२३११	"	५०६४
"	२३१३	"	५४४१
"	२३१५	"	५४५०
"	२३२०	"	५७८४
"	२३२२	"	५९०३
"	२३२६	"	५९०८
"	२३२८	"	५९०९
"	२३३०	"	५९११
"	२३३२	"	५९१३
"	२३३४	"	५९१५
"	२३४०	"	५९१७
"	२३४६	"	५९२६

बितियपदमणपञ्चके	५६८४	बितियपद होज्जमण	११३७
”	५६९०	बितियपद अणवट्ठो	२११६
”	५६९५	बितियपद अट्ठाणो	११०२
”	६०५७	बितियपद आयरिए	२७३६
बितियपदमणगाढे	१५६६	बितियपद उट्ठाहे	८८५
बितियपदमणभोगा	१६६२	बितियपद गम्भमाणो	१६५३
”	२५२०	बितियपद गलण्णो	६१२
बितियपदमणभोगे	१०७८	,	१४६६
”	१२०६	”	१५२८
”	१४६८	”	१५६१
”	१६६५	”	१६०६
”	१७६५	”	१६४१
बितियपदमणउणो वा	६२८	”	२४७४
”	६६७	”	२४८७
”	६४३	”	३२८१
”	६४८	”	३२८८
”	६६०	”	३३५२
”	६६६	”	३४२०
”	६६७	”	३४७६
”	७०७	”	३६६४
”	७१६	”	४०४५
”	७२४	”	४७६६
”	१८२८	”	६०३४
”	४०३०	”	६०४१
बितियपदमणसयड	११३	”	६०४५
बितियपदमसति दोह	२२०	”	६०५१
बितियपदमचियगी	१०८८	”	६२३१
बितियपदममविग्गे	५६६७	”	४१६२
”	५५८८	बितियपद नयेव य	४०१३
”	५५४७	बितियपद तु गिलाणो	६१०
बितियपदवुज्जभणजतगा	५१३	बितियपद तेगिच्छ	३१२२
बितियपद वृढ-ज्झामित	६४२	बितियपद दोच्चे वा	४६६६
बितियपद वृढज्झामिय	६४७	बितियपद परलिंगे	४६८६
बितियपद वुड्डमुद्धोरणे	१६३४	”	४६८६
बितियपद समुच्छेदे	६२६५	बितियपद पारचिय	१६४४
बितियपद साहुवदण	२८८७	बितियपद सवघी	३७६०
बितियपद सेहरोषण	१८८२	बितियपद सामण्य	१५१८
बितियपद सेहसाहारणे	५७८०	बितियपदे असिवादी	२५६५
बितियपद होज्ज अमह	८०२	बितियपदे आहारी	१६१४

त्रितियपदे कालगते	३०६६	१६६८	वीयपय तेग सावय	६००६	५६६३
त्रितियपदे जावोग्गहो	६७४		वीय जोगागाढे	१६२०	
त्रितियपदे जो तु पर	४७२		वीय तु अप्पकूढ	४२६१	
त्रितियपदे दोण्णि वि बहू	११२०		बीयादि सुहुम घट्टण	०४८	
त्रितियपदे बसघीए	१२८५		बीयारभूमि असती	१०६३	
त्रितियपदे वाघातो	१६५०		बीसीयठवणाए तु	६४८२	
त्रितियपदे वासासू	८४८		बीहावेती भिक्खू	३३१८	
त्रितियपदे सागारे	१५५४		बेटियमाइणमु	०८७	
त्रितियपदे सेहादी	२४४		वेरग्गकहा विसयाण-	३६१४	
त्रितियपय तेग सावय	४२५४	५६६३	बोडिय सिवभूइओ	५६२०	
त्रितियपयमणाभोगे	३२७५		बोरीए दिट्ठ त	४१७८	५२६७
त्रितियम्मि रयण देवय	५१५८		बोहण पडिमोद्दायण	३१८३	
"	५३७८		बोहिग-मेच्छादिभए	५७०५	३१३७
त्रितियम्मि दिवसम्मि	५८०	६६३२			
त्रितिय अपहुप्पते	५४८५	५३६०	भगव ! अणुगहता	१०००	
त्रितिय उप्पाएतु	२८५६	५५६२	भगघरे कुट्टु सु य	६३८०	
त्रितिय गिहि ओमण्णा	३२२१		भगइ य राह वेज्जो	४४३३	
त्रितिय गुरूवएसा	२८६७		भगइ य दिट्ठु सियत्ते	३११	६०८०
त्रितिय च बुड्डमुड्डोर्गगे य	१६२७		भराति रहे जइ एव	०६५६	
त्रितिय पढमे ततिए	२६५१		भरमाणा भारावेतो	५५५८	५४५७
त्रितिय पढमे तितिए	४०३७		भरितो य हद गेण्हह	१७६०	
त्रितिय पभुणिव्विसए	१२४०		भरियाया तु असुग्घाया	८१६	
"	१२८०		भरणति सज्जमसज्ज	४१५७	५२७६
त्रितिय पहुणिव्विसए	१२६८		भरणति जहा तु कोती	३३३३	
त्रितियाऽऽगाढे सागारियादि	६०५६		भनट्टणमालोए	२३६८	४८३५
"	६०६२		भत्तट्ठितऽपाहाडा	२४००	४८३७
"	६०६६		भत्तपरिणग गिलाणे	४०१६	३८४२
"	६१६४		"	१२२८	
"	६१७६		भत्तमदाणमडत	५१३६	२४८६
त्रितियातो पढमपुव्वा	४१४२	५२६४	भत्तस्स व पाणस्स व	६६२	६०६६
त्रितियादेसे भिक्खू	३४१४	२८६६	"	५८६३	"
बिदू य छिय परिणय	६१३६		भत्त वा पाण वा	१८६३	५६०७
बिय तिय चउरो	२६०		भत्ताति-सकिलेसो	२६८६	१८८८
"	३७७		भत्तामासे लेवे	८६७	
बिले मूल गुरुगा वा	३४०१		भत्ते पाणे धोवण	३५४०	
वीएसु जो उ गमो	४६६७		भत्ते पाणे विस्सामणे	३४५१	२६०४
बीएह कदमादी	५२४२	३३२४	भत्ते पाणे सयणासणे	३५५८	
"	५३६५	"	भत्ते पणवग निगूहणा	२७०३	५०७६
			भत्तेग व पाणेण व	३४५४	२६०७

भक्तोवधिवोच्छेद	२४८३	भावित करण सहायो	५३५१
भक्तोवधिसजोए	१८००	भावितकुलाणि पविसति	१४७०
भक्तोवधिवोच्छेय	२५३०	भावितकुलेसु गहण	४८६५ १०३२
भङ्गवयरो गमण	५६८१ ३०६०	भावे उक्कोस-पणीत	११६४ ३५४५
भङ्गो तण्णीसाए	२४८०	भावे पाउग्गसा	८८८
भङ्गतरसुर-मणुया	४७५३ ८६५	भावे पुग कोधादी	८६२
भङ्गतरा तु दोसा	१४४१	भावेग य दब्बेण य	४७२० ८५६
भङ्गसु रायपिड	२५३८	भावो तु णिग्गए सि	३२६२ ४२६२
भङ्गो उग्गमदोसे	१४५३	भासच्च गो चउद्धा	६२०४ ७५३
भङ्गो तण्णीस्साए	२५२६ ३५८८	भासरो सपातिवहो	३१७८
भङ्गो पुण अग्गहण	१२७६ ४६४३	भा-ससि-रितु-सूरमासा	६२८७
भङ्गो सव्व वितरति	२५७७	भिक्षवचरस्सअस्स वि	४०६६ १८५२
भमुहाम्भो दतसोषण	१५१५	भिक्षणमीलो भिक्षू	६२७५
भयउत्तरपगडीए	३३२१	भिक्ष-वियार-विहारे	१५२४
भयगेलण्णाद्धारो	४१६४	भिक्षस्स व वसधीय व	२३७६ ४८१३
भयणपदारा चउण्ह	२३४६	भिक्ष चिय हिडता	५०१६ ६१६
भयणपदारा चतुण्ह	१६३८	भिक्ष पि य परिहायति	३७८ ४६५७
”	२४३६	”	२२४७ ”
भल्लायगमादीसु	२२६६	भिक्षातिगतो रोगी	४४३४
भवपच्चइया लीणा	४२६६	भिक्षाति-णिग्गएसु	६३१७
भववीरिय गुणवीरिय	४७	भिक्षातिवियारगते	४१५५ ५२७७
भवज्ज जइ वाधातो	३८४६	भिक्षादी वच्चते	४३६६
भडी वहिलग काए	१८८६	भिक्षुगमादि उवासग	३२३
भडी-वहिलग-भरवाहिएसु	५६६६ ३१११	भिक्षुणो अतिककमते	३४१६
भागुप्पमाणगहणे	५८२७ ४००४	भिक्षुदगसमारभे	४४८६
भागस्स कप्पकरण	११०६	भिक्षुवसहीसु जह चेव	३२८६
”	२३६६ ४८०७	भिक्षुसरक्खे तावस	५७३२
भायणइसा एतो	४५६१	भिक्षुसरिसो तु गरिणी	८७२ ६१११
भायणुकम्पपरिण्णा	२३५६ ५२५६	भिक्षुम्म ततियगहणे	२६२२ ५८२०
भारेण वेयणाए	४१६६ ५२८८	भिक्षुम्म दोहि लहुगा	२८५५ ५५८८
भारेण वेयणाते	५८२६	भिक्षुगा जहि देसे	५५२४ ५४२६
भारो भय परितावण	३२८० ३६००	भिक्षु जहण्यम्भी	५६५०
भारो भय परियावण	६७०	”	”
भारो विलवियमेत्त	५६७	भिक्षे परिहायते	४४६४
भावडुवार सपद	४७३० ८७०	भिण्णरहस्से व नरे	६७०२
भावम्मि उ पडिबद्ध	५२७ २५६२	भिण्णस्म पक्खणता	४६१८ १०५५
”	५२८ २५६३	भिण्ण गराणाजुत्त	६७३
भावमि ठायमाणो	५४० २६०५	”	५८१०
भावमि रागदोसा	३८८	भिण्ण समतिककतो	१४४६
भावाम पि य दुविह	४७१४ ८४४	भिण्णाणि देह भेत्तूण	४६२८ १०६५

भिण्णसनि वेलातिक्कमे	४६२६	१०६६	भोयणमापणमिट्ठ	११६६	३५७६
भिण्णे व ज्झामिते वा	७३०		भोयणे वा सक्खिते	४०६४	
"	७४८				
"	७७६		मइलकुचेलेअम्भगिए	३०१६	१६२०
"	६८५		मइल च मइलिय वा	४६८१	
भिण्णे व ज्झामिते वा	७३५		मइले अणुभड्ढेतु	२०७६	
"	४५४७		मक्कडसताणा पुण	४२६०	
भित्तु तु होइ अद्ध	४६६६		मगदतियपुष्फाड्	४८३६	६७६
भिन्ने व ज्झामिते वा	७७४		मगहा कोसबीया	५७३३	३२६०
भिनो वा वि खुध	६२८१		मग्गति धेरियाओ	५०८३	२८०८
भोतावासी रतीधम्मे	१४५४	५७१४	मग्गो खलु मगडपहा	४३०७	
भुत्तभुत्ताण तहि	२५६१		मज्जणग-गधपुष्फोवयार	१६५८	
भुत्तभोगी पुरा जो वि	३८८१		"	३६५३	
भुत्तस्स सतीकरण	४०१२	३८३५	मज्जणगतो मुक्खो	४२१५	५६२५
भुत्तर दास-कुच्छित्ते	५३१८	२३६२	मज्जणगादाच्छित्ते	३०५०	१६४६
भुज्ज ग व त्ति सेहा	३२८४		मज्जण-पहागट्ठाणोसु	५३०४	२३६८
भुज्ज-वज्ज-पदाण	२१०२		मज्जण निसेज्जअक्खा	६२१८	७७६
भुज्ज वज्जा अण्ण	२११३		मज्जति व सिचति व	५३४३	२४१७
भुज्ज पच्चक्खात	३०३	६०७१	मज्जादण्ण ठवगा	१६२८	
भुज्जित्ति चित्तकम्मट्ठिता	४४०१		मज्ज पडो णोस तुह	८७७	
भुज्जित्ति मा व समगा	११३१		मज्जमिगमण्णपारा	२७०२	५०७५
भुज्जामा कमट्ठादिसु	३२०		मज्जमि य तरणीआ	२४०३	
भुज्जिसु मए मड्ढि	३७६१		मज्ज दोण्हतयत्तो	२४३१	
भुत्तणगादी असणे	३६६३		मज्जा य वितिय नतिया	८२	
भुत्तगगहिते खत	१०६३	४६२७	मज्जिमवोस लहुगो	३५०४	
भुत्ति-धर-तरुणगादि	१०३३		मज्जेव गेण्हऊण	६८२	
भुत्तिसिलाए फलण	३६०६		मज्जे व देउलादी	५४०८	३४७०
भुत्तसणभासासट्ठ	५४२	२६०७	मगाउग्गमआहारादीया	१८३४	
भुत्तसण-विषट्ठणाणि य	२०३६		मगा उट्ठियपदभेदे	२५४१	
भेद अडयालमहे	२८५		मगा उट्ठियपयभेदे	२५४६	
भेदो य मासकप्प	१३१८	५४६	मगा एमगाए सुद्धा	२६०१	५७६८
भोइत-उत्तर-उत्तर	१३६४	४६२८	मगा परमोहिज्जिण वा	६५७२	
भोइयकुलमेविआआ	२१५२		मगा-वयण-कायगुत्तो	३१७६	
भोइय-महयणमादी	२४५८	२०६१	मगाव माओ पवत्ता	५६८०	
भोइयमाडविरोधे	२४०८		मगाण्ण भायगज्जाय	१११८	
भोइयमादीगज्जना	१०७०	४६०७	मगाण्ण अराणि दीहाउओ	४३७८	
भागत्थिगो विगन	५१४८	२४८८	मगाण्णित्तालित्तफोमित	४४६१	
भात्तूण य आगमण	३४०७	२८५६	मगाण्णगट्ठग गुरुणा	५८८६	४०६५

महवकरण गारा	६२२२	७८३	मात पिता पुव्वसथवो	१०४१	
मधुरा मगू आगम	३२००		माना पिता य भगिणी	५०७८	२८२३
मम सीस कुलिच्च—	३८६		माना भगिणी धूया	५६२८	
मयमातिवच्छग पि व	४४१६		"	५६३०	
मरुह्यि य दिट्ठ तो	४८७३	१०१२	माति-समुत्था जाती	१२०	
मरुगसमाणो उ गुरू	६५१६		मातुग्गाम हियए	२२४६	
"	६५२३		मा भुज रायपिड	२६०६	
मरेज्ज सह विज्जाण	६२३०		मायामोसमदत्त	१२३६	
मलेण धत्थ बहुणा उ वत्थ	५८१७	१६६४	"	१२७६	
महजराजाराणाता पुगा	४७८१	६२२	"	१६४६	
महतरअणुमहयरए	११६४	३५७४	"	१६५८	
महतरपगते बहुपक्खिते	६०६७		"	१६६१	
महद्धणे अप्पधणे व वत्थ	५८२०	३६६७	मायावी चडुयारो	१०४५	
महिलासहावो सरवन्नभेओ	३५६७	५१४४	मालवतेणा पडिता	१३३५	५६१
महिवा तु गम्भमास	६०८२		मालोहड पि निविह	५८४६	
महिवा य भिण्णवासे	६०७६		मा वद एव एककसि	६४१२	
महिर्साद छेत्तजाते	३२५		मासचउमासिएहि	६५१०	
महुपोगलम्मि तिण्णिग व	१५६३		मास जुयन हरिसुप्पत्ती	६५४१	
मगल-बुद्धिपवत्तरा	२००६		मामगुरूगदि छल्लहु	६०५	
मगलममगलिच्छा	२५६४		,	२२०२	
मगलममगले या	२००५		मामगुरू चउगुरूग	२२१६	
मगलममगले वा	२०१०		मामगुरू वज्जिता	१२६२	
"	२५६८		मामाई अमच्चइए	६५३७	
मडलगम्मि वि धरितो	३५१४		मामादी जा गुरूग	१०६८	
मतरिणमित्त पुगा रायवल्लभ	१३६०	६६०४	"	११००	
ममक्वाया पारद्विगिग्गया	२५५३		मासादी पट्टविते	६८४१	
मसच्छवि भक्खणट्ठा	२५५२		मा मीएज्ज पडिन्ना	३७१	४६५४
मसाई पगरणा खलु	४७६		माभ पक्खे दमरातए	२०३५	१६८४
मसाण व मच्छाण व	३४८१		मामो दोण्ण य मुद्धा	६६३०	
मसोवचया मेदो	५७३		मामो य भिण्णमामा	१४३०	
माउग्गामो तिबिहो	२१६६		मामो लहुआ गुरूओ	३१२	१५५६
मा किर पच्छाकम्म	१८५२		"	८६७	
मा ए परो हरिस्मति	४६३५		"	२७६	"
मा गीह मय दाह	२३६३		"	८६६३	,
मागुम्मागपमाणा	४२६४		मिच्छन्त गच्छेज्जा	५०५३	२७६६
मागुम्मागपमाणा	५६७७		मिच्छत्तथिरीकराग	३८०७	
मागुस्सग पि निविह	५१६६	२५१६	"	४४०२	
मागुस्सय चतुद्धा	६१०६		"	६२६०	

मिच्छत-बहुय-चारण	१३१६	५४४	”	६२०८	७६६
मिच्छत सोच्च सका	५०५२	२७६७	मूलगुण दइयसगडे	६५३३	
मिच्छता मचतिए	३७६५	६००५	मूलगुण पडमकाया	६३१८	
मिच्छते उड्डाहो	५६३७	३०८३	मूलगुणे उत्तरगुणे	३३०६	
”	५६२०	६१७०	मूलगुणे छट्ठारणा	८६	
मिच्छते सकादी	४७८८	६२६	मूलगामे तिणिण उ	३१३१	७४३
मिच्छापडिवत्तीए	२६४८		मूलतिचारेहितो	६५२७	
मिल्लक्खुज्ज्वत्तभासी	५७२८		मूलव्वयातिचारण	६५२८	
मिहिलाए लच्छिषरे	५६००		मूल छेदो छगुरु	३६६१	
मोसाओ ओदइय	६३०२		मूल तु पडिवकते	२८०६	
मुइग-उवयी-मक्कोडगा	२६१		मूल दससु असुद्धे सु	४७४	
मुइगमादी-णगरग	२८		मूल सएज्जएसु	५२७०	
मुक्कधुरा सपागडकिच्चे	४३७१	४५४४	”	५२८१	
मुक्को व मोइओ वा	३६६२		मूलादिवेदओ खलु	६२६१	
मुक्का व मोइतो वा	३७१७		मूलुत्तर पडिसेवण	६३०३	
”	३६६६		मूलुत्तर चतुभगो	२०५१	५८७
मुक्को व मोतिओ वा	३६६०		मूले रु द अकण्णा	६०१६	
मुच्छातिरित पक्कमे	६३२१		मूसादि महाकाय	६१०४	
मुच्छा विसूइगां वा	१७३३		मेच्छभयघोसराणिवे	६०७६	
मुणिसुव्वयतवासी	३६६४		मेहा धारण इदिय	२५५४	
मुदिते मुद्धभिसित्तो	२४६८	६४८२	मेहावि गीयवत्ती	४३६४	
मुय णिक्खिसते णट्ठुद्धिते	१२४१		मेहुणभावो तम्भावसेवणे	२२१८	
मुरियादी आणाए	५१३७	२४८७	मेहुणसकमसके	५०५६	२८०१
मुह-णायण-चलण-दता	८६६		मेहुण पि य तिविध	३५२	
मुहपोत्तिय-रयहरणे	१४२५		मेहुण पि य तिविह	३६०	
मुहकोरण समण्डा	४६६६		मोक्खपमाहणहेउ	४१५६	५२८१
मुहणतगस्स गहणे	३६८५	४६६०	मोत्तु गिलाणकिच्च	३६३४	
मुहपोत्ति-णिसेज्जाए	२१८८		मोत्त पुराण-भावित—	३१७४	
मुहभादि-वीणिया खलु	२०१३		मोत्तूण एत्थ एक्क	५६२४	
मु ड च घरेमाणे	६२६८		मोत्तूण रावरी बुद्ध	३७३८	
मुइगमाति-खइते	२१८६		मोत्तूण वेदमूढ	३७०२	
मुगा विसति णिति व	५४००	३४५५	मोयगभत्तमलद्ध	१३७	५०१६
मुडेमु सम्मदो	२१७४		मोरगिगवकियदीभार	४३१६	
मुढो य दिसज्जयणे	६१३७		मोरी नउली बिराली	५६०४	
मूलगिहमसबद्ध	२८६०		मोल्लजुत पुण तिविध	६५७	
मूलगुण उत्तरगुणा	६५२०		मोह-तिगिच्छा खमण	१६८३	३७०७
मूलगुण उत्तरगुणे	३३०२		मोहोदय अणुवसमे	२२२६	
”	४३६६		”	२२५५	

र		रा.रा. दोषा मोहा	
रकनन पिमाय-नगा.रागसु	३३१७	रामेग व दामग व	६१७५
रक्खा भूमगनेउ	१७०	"	२७३१
रक्खज्जनि वा पथो	३३७८	रागत गुरुनहुगा	१३२
रज्जुमादि अछिण्ण	६३०१	रातिगिआ उस्सारे	५०२०
रज्जु वेदा बवो	१२६६	रातिगियगारवेण	६२५१
रज्जे दम गामे	२८३७	रातिगिय सारिअतरण	२११६
रणगा कोवरुगामच्चा	३८५६	रातो व दिवसता वा	२६३७
रणगो ओरोहातिसु	३६६३	रायगिहे गुगमिलए	५५६८
रणगो उववृहणिया	२५५६	रायहुट्ट-भए वा	१६१३
रणगो दुवारमादी	२५२६	रायहुट्टभएसू	१६०७
रणगो पत्तग वा	२८८१	"	३६०६
रणगा महाभिससे	२५६७	रायमरगम्मि कुल-घर	१५५७
रणगो य इत्थिया म्बलु	५१६५	राया इव तित्थकरो	६०७७
रत्तक्क डाआ इत्थी	६११०	राया उ जहि उमिते	२५५७
रमणिज्जभिक्षव गामो	५२५४	राया कु थु मप्पे	३१५८
रय खात्तमादिसु मही	४७०१	रायाऽमच्च पुरोहिथ	८२६६
रयगाइ चतुक्कीम	१०३१	रायाऽमच्चे सेट्ठी	१७३५
रयत्तागपत्तबधे	२८१	राया रायमुत्ती वा	१५६०
रयत्तागपमाण	५७६१	"	१५७२
रयमाइ मच्छि विच्छ य	८१४	"	१५७६
रयहरखोगात्तण	३२२८	राया रायागा वा	३७६८
रमगध। तहि तुल्ला	८६१३	र.यादि-माहागट्टा	२५६६
रमगिद्धा य थलीए	५५२६	रानित्ति गाहा	८४६५
रसगेहि अविक्खाए	१११६	राह उ अट्टमास	२३७५
रसगही पडिबद्ध	८७८६	रिक्खम्म वा त्रि दामो	१६८६
रमालमवि दुग्गधि	१११३	रीयाति अणुवओगा	५५४६
रहवीरपुर नगर	५२०६	रीयादमाय रत्ति	५६४२
रह हत्थि जाण-तुरग	३०१४	रक्खविलगा रुधिता	३६२६
रघण किमि वागिज्ज	१६६२	रुद्ध बोच्छिण्णे वा	२४०१
"	८६८४	रुक्खमेव मरिमय	२६२६
राईग दाण्ह भडग	३३८८	रुव आभरगविहि	२५६३
राईभत्ते चउव्विह	४१२	"	५२०८
रागग्गि सज्जमवरा	६०६	रुव आभरणविही	५०६६
रागट्ठोमविउत्तो	६६६६	रुवे रुवमहगते	३५३
रागट्ठोसविमुक्का	५६५८	रोमेग व बाहीण व	३६४५
रागट्ठोसागुगता	३६३	रोमेण पडिगिवसेग वा	५८२२
रागट्ठोमुप्पत्ती	१२७	राह उ अट्टमासे	२३७५

ल

लक्ष्मणद्वि उवघायपङ्ग
 लज्जाए गोग्गेषा व
 लत्तगपहे य खलुते
 लङ्गा अपगवत्थे
 लद्धए रावे इनरे
 लङ्गा मागुसत्त
 लद्धए रा गिवेसती
 लद्धे तीरित कज्ज
 लहुओ उ उवेहाए
 लहुओ गुरुओ मासो
 लहुओ य दोसु दोसु अ
 लहुओ य दोसु य
 लहुओ य हाइ मासो
 लहुओ लहुगा गुरुगा
 लहुओ लहुगा गुरुगा
 लहुओ लहुगा दुपडादिणसु
 लहुगा अगुग्गहम्मी
 ”
 ”
 लहुगा तीसु परित्ते
 लहुगा य गिरालवे
 लहुगा य दोसु दोसु य
 लहु गुरु लहुगा गुरुगा
 लहुगो गुरुगो गुरुगो
 लहुगो य होइ मासो
 लहुगो लहुगा गुग्गा
 लहुगो वज्जभेदे
 लहुताल्हादीजणय
 लहुयादी वावारिते
 लहुया लहुओ सुद्धो
 लाउयदारुयपात्ते
 लाउयदारुयपादे
 ”
 लाभालाभपरिच्छा
 ”
 लाभालाभ-सुह-दुक्ख
 लाभालाभसुहदुह
 लाभित नितो पुट्ठो

-५८०

६८१

१२३४

१०१४

२२४५

१७१८

३३३

१३८४

२७८०

२६४६

१०६

१०८

३७२

१८२०

६६३

६१६

४७५८

५२६६

५२८०

४६०५

४७३५

४७२२

५६४

१०७

२२४६

३२०

१८

६३६१

८६६

६८५

७२६

६७५

६७८

६८४

२६८७

४२६१

४५१६

लाला तथा विसे वा

लिकखत रिणज्जमारो

लिगट्ट भिक्ख सीते

लिगत्थमादियाण

लिगत्थस्म तु वज्जा

लिगत्थसु अकप्प

लिगम्मि य चउभगो

लिगंग कालियाए

लिगेण चैव किडिया

लिगेण पिसिताहरो

लिगेण लिगिणीए

लित्थारण दवेण

लिवि भामा अत्थेण व

लुडम्मज्जभनरओ

नेवकडे वोमट्टे

नेवाडमगाभोगा

नेवाडहत्तयडिकेण

लेद्धेहि तीहि पूति

लोइय-लउत्तरिय

”

लोइयववहारेसु

लोउत्तरम्मि ठविता

लोण वि होति गरहा

लोग हवइ दुगु छा

लोकागुग्गहकारीसु

लोगच्छेरयभूय

लोगविग्ग दुपरिच्चया

लोमे जह माता ऊ

लोण वि य पोरवाओ

लोण न गिलागट्टा

लोभे एसगाघातो

”

लोभे य आभियगे

नायम्मज्जगुग्गहकरा

नालनि मही य धूनी

नोलती छग-मुत्त

नावए पवए जोह

३४७५

२२६७

१६७७

३०१३

११५८

५०२८

२२३४

४४६

२२३२

४३७

१६६०

१८७४

२२६२

२६६१

१८३५

४२०

४६०६

८०६

६६४

४३५६

१६२२

६०५५

४५४३

४४२३

५७३७

३०६३

६२६४

५५२५

१७४

२५०५

२५२३

५०७०

२८१७

३१५३

४३८७

१७४७

३६०७

व

वड्ढा अयोग-योगी

१६०६

वद्वाति भिक्खु भावित	४५५			२६४३	५८३६
वद्दयासु व पल्लीसु व	२३६४	४८०२	वत्थव्व पउण जायग	३०६७	१८६६
वक्कतजोरिण तिच्छड	३०५६	१६५५	वत्थ छिदिरसामि ति	६८०	
वक्कतजोरिण थंडिल	४८५८	६६८	वत्थ वा पाद वा	८७८	
वक्कैहि य सत्थेहि य	४१२१		वत्थ वा पाय वा	८५८	
वच्चसि णाह वच्चे	३०४	६०७२	वत्थ सिव्विस्सामी	६७१	
वच्चह एग दब्ब	३१६		वत्थादिमपस्सतो	८५४	
वच्चतस्स य भेदा	४७३३	६०८७	वत्थिगिरोहे अभिवड्डुमागो	३५६०	
वच्चतो वि य दुविहो	५४८१	५३८६	वत्थु वियाणिउण	०६०७	
वच्चामि वच्चमाणो	२८४८		वत्थेण व पाएण व	१६८१	२६८५
वच्छल्ले असितमु डो	४६०		वप्पाई ठाणा खलु	४११६	
वट्टति तु समुद्देशो	३०६	६०७४	वप्पादी जा विह लोइयादि	५६६६	
वट्ट ति अपरितती	३८६६		वमण-विरेगादीहि	२३१७	
वट्ट समचउरस	६६३	४००२	वमण-विरेयणामी	६५६०	
"	५८४६	"	वमण विरेयण वा	४३२६	
वडपादवउम्मूलण	५६५		"	४ ३०	
वणगयपाटण कु डिय	२६६		वय-गड-थुल्ल तरणुय	४३८१	
वण्णड्ड-वण्णकसिण	६१६	३८५१	वयसथवमतेण	१०५२	
वणसडसे जल थल	०७८६	२७०७	वरतर मए सि भणितो	२६३४	
वण्णउव्व साहु रयणा	२६६४		वरिसघरट्टाणादी	२६०३	
वण्णिय महिलामूढ	३६६६		वरिसा गिसासु रीयति	३३४८	
वण्णिया ण सचरती	३२२६	४२५१	वरिसेज्ज मा हु छणो	१२६४	
वण्णमविवण्णकरो	४६३८		वल्लय वल्लयममागो	३८०५	
वण्णविवच्चास पुण	४६३३		वसधी ण एरिसा खलु	१०१८	
वण्ण-सर-रुव मेहा	४३३१		वसधी य असज्झाए	१७०७	१७२६
वण्णोण य गवेण य	१११२		वसधी य असबद्धा	६३०	
वत्तियादि मल्लमादी	४४७७		वसवीपूतिय पुण	८११	
वत्तणा सधगा चेव	६३६१		वसभा सीहसु मिगेसु	३४५०	२६०५
वत्तम्मि जो गमो खलु	२७५४	५८६४	वसभे छगुरुगाई	२६२३	
"	५५६०	"	वसही आघाकम्म	२६६५	
वत्तवओ उ अग्गीओ	५५८३	५४८२	वसही दोसेण	३७६	४८५६
"	०७४५	"	वसही दुल्लभताए	६०५	
वत्तस्स वि दायव्वो	५८८२	५३८८	वसहीरक्खगावगा	५२५५	३३ ६
वत्ते खलु गीयत्ये	२७३७	५४७५	वमिक्करग सुत्तगस्सा	१५२६	
"	५५७५	"	वसुम ति ण वसिम ति व	५४२०	
वत्थत्था वसमाणो	६००८		वहरण तु गिलाणस्सा	२०००	
वत्थम्मि णीणिउत्तम्मी	५०५७	२७६८	वह्वधगा उट्ठवण	३६५८	
वत्थव्वजयणपना	२६३६		"	३२७८	
			"	३६६७	

वका उ ए साहती	२६८२	५३५८	वामावासविहारे	३१२४	७७३५
वज्रगुमभदमारो	१६		वासासु अपडिसाडी	१२४४	
वदिय पणमिय अजलि	२१०३		वासासु व तिष्ठिण दिसा	६१४८	
वमग कड गोक्कपरा	२०४७	५८३	वासासु वि गेण्हेती	३२४६	४२८६
वाउल्लादीकरणे	१६१		वासासु दगवीणिय	६३०	
वाए पराजिओ सो	५६०६		वामेण रादीपूरेण	५६६५	३०७३
वाएतस्स परिजित	६२३२		वाहि-गिदाग-विकारे	३०२४	१६२७
वाओदएहि राई	३१८८		विउसग्ग जोग सघाडए	५०५१	२७६६
वाघाते असिवाती	१०६३		विउसग्गो जाणएणट्टा	२८७७	
वाघाते ततिओ सि	६१२६		”	६५६२	
वाघातो सज्जाए	२५०७		विकट्टभमग्गरो दीह	४८५४	६६४
वाणतरिय जहण्ण	५११७	२४६८	विगतिमणट्टा भु जति	१५६५	
वात खउ वात कटग	५६४७	३०५५	विगति विगतिव्भीओ	१६१२	
वातातवपरितावरण	३०१५	१६१८	विगति विगतीभीतो	३१६८	
वादपरायणकुबिया	१५२७		विगतीए गहग्गम्मि वि	३१७०	
वाद जप्प वितड	२१३०		विगतीक्यागुवयो	३८६६	
वादो जप्प वितडा	२१२६		विगयम्मि कोउहल्ले	५२६४	३३४३
वायण पडिपुच्छण	२०६४		विग्गहगये य सिद्धे	३६२०	
वायाण गमोक्कारो	४३७२	६५४५	विग्गहमग्गुप्पवेसिय	३५६६	
वायाण हत्थेहि	२७८४	२७०५	विच्चामेलण सुत्ते	२७७६	२६८५
वायामवग्गणादी	६६४		विच्छु य सप्पे मूसग	५६०३	
वायायवेहि सूमति	३३६४		विज्ज-दवियट्टाए	५३४७	२४२१
वारगमारणि अण्णावणम	३२६		विज्जस्स य पुप्फादी	३०३१	
वारत्तग पव्वज्जा	५८६०	४०६६	विज्जा ओरस्सबली	२८६०	५३६३
वारम य चउव्वीमा	२१३४		विज्जा नवप्पभाव	४४४०	
वाग्गे एम एय	२७६५	२७१७	विज्जा मत-गिमित्त	५५७३	५४७३
वाले तेरो नह सावाण	५६४३	३०४६	विज्जाए मतेरा व	४४५५	
वागारे कान गणे	३७२३		विज्जादसती भोयादि	१३७०	४६२४
वास उडु अहानदे	२१२०		विज्जादीहि गवेमरा	१३६८	४६३२
”	२१२१		विज्जा मत-परुवरा	४३०४	
वाम-सिसिरेसु वातो	२४१		”	४४५६	
वामत्ताग्गाऽऽवरिया	८०८४		विरिउत्तभड भडग	६४०५	
वास न उवरमती	३१६०		वित्तिगिच्छ अम्भसथड	२६३१	५८२८
वाभावेत्तालभे	३१६६		वित्थारायामेण	६५०	३८८३
वासण एगतर	१२७८		”	१८६४	
वासाण एस कप्पो	३२४१	४२६६	विंदु कुच्छत्ति व भण्णति	२५	
वासादिसु वा ठाओसि	३७६३		विद्धसग्ग छावरा लेवरो य	२०२६	१६७५
वासा पयरणगहणे	११६७		विधिपरिहररो नुद्धो	२०६०	

विबुवण णत कुमादी	५०६		वीयारे बहि गुरुगा	२४५६	२०६४
विपुलकुले अस्थि बालो	३५३८		वीरल्लसउगि विनामिय	१६७२	२६६६
विपुल च अण्णपाण	१८६०		वीरवरस्स भगवतो	४२१८	४६८
विप्परिणतम्मि भावे	१२५७		वीसज्जिता य तेण	५७५६	२८०
विप्परिणमेव सण्णो	३७३३		वीसज्जार्गम लह गुरु	६५४२	
विप्परिणामणसेहे	२७१३		वीसत्थादी दोसा	३७७८	
विमलीकतम्ह चक्खू	१०४६		वीसत्था य गिलाग्गा	१६७०	३६६४
विम्हावगा तु दुविधा	३३३७		वीसरसहस्वते	६१५६	
वियडत्तो छक्काए	६०२३		वीस तु आउलेहा	४६६३	४०४५
वियडत्तस्स उ वाहि	६०४०		"	५८७०	
वियड गिण्हइ वियरति	१३१		वीस वीम भडी	६५२१	
वियण्णभिधारण वाते	३७५८		वीसाण अद्दमाम	६४३३	
विरए य अवरिए वा	८०५५		वीसाए त् वीस	६४७५	
विरतिमहाव चरण	४७६८	६३४	वीमा दो वाससया	५६१४	
विग्हालभे मूल—	३५८		वीसा य सण पगायालीमा	६५८३	
विरहे उ मठायत	२६५८		वीसु उवस्सते वा	२८४२	५५७६
विक्कवत्तादि ठाणा	४१३६		वीसु दिण्णे पुच्छा	६४०७	
विलउण य जायड	३४६५	२६१५	वीसु भूयो राया	१७३८	३७६०
विलियति आरुभते	४६४६		वुग्गह्वाडियमादी	६०६४	
विवरीय दव्वकहणे	२६१		वुग्गह्वक्कताण	५४६४	
विसकु भ सेय मते	२०४		वुत्त दव्वावात	२६६	
विसगरमादी लोए	१८०६		वुत्त वत्थगह्ग	३२७६	
विमसा आरोवगाण	६८६२		वुमिरातियागगातो	५४५१	
विमय कलहेतर वा	२०५७		वुसि सविग्गो भगिना	५४२१	
विमुयावरासुक्कवग	८४५		वेउव्वियलट्ठी वा	२५८७	
विहमद्धाण भगिना	५६३८		वेकच्छिता तु पट्ठा	१४०५	४०८६
विहरण वायग आवागागा	४३३६		वेजस्स पुव्वभगिय	४६६८	
विहि अविहीभिण्णम्मो	८६०२	१०८	वेज्जस्म व दव्वस्म व	३०७४	
विहिगिण्णनादि	५८०१		वेज्ज ए चैव पुच्छह	३००४	
विहिगिण्णतो तु जतिनु	५०६		वेज्जेट्ठग एगडुगादि	४८६०	१०२८
विहिबधो वि ग कपति	७४०		वेज्जे पुच्छग जयग्गा	४८८६	
विहिभिण्णम्मि ग कप्पति	८६२०	१०५७	वेण्डियगह्गिगवसेवे	२६८	
विहिसुत्ते जो उ गमो	३१२५		वेयावक्के चस्सट्ठा	५६६	
वीमसा पडिणीता	५१४६	२८६६	वेयावक्के अगला	३७७३	
वीमसा पडिणीयट्ठया	५१४८	२८६८	वेयावक्के तिविहे	६९०५	
वीयरग समीवारास	५०७४		वेरगकर ज वा वि	५८६	२६१५
वीयार गोयरे थेरसजुआ	२६१३	५१८	वेरगक्का विमयाग	३६१४	५१८१
वीयारभूमि अमती	१०६३		वेरगिनो विविस्तो य	३५००	
वीयारभूमि-दोसा	१०६२				

वेर जत्य उ रज्जे	३३६०	२७६०	सगराग्निं पञ्च राइदियाइ	२८२०	५७५३
वेलातिक्कमपत्ता	१०६०		"	२८२२	५७५५
वेलुमयो वेत्तामयो	८३०		सगरिच्चया स मिस्मिणि	२४३६	
वेलुमयी लोहमयी	७१८		सगदेस परदेम विदेसे	३६५३	
ववग्गि पणु वडभ	३६४६		सग-पायग्निं य रातो	१५५१	
वेहाएस ओहाए	३०६०	१६८८	सगला-सगलाइन्ने	४६४४	१०८१
वेहाएगाए मण्णे	४५३१		सगुरुकुल सदेसे वा	३४२८	२८८०
वाच्चत्ये चउलहुया	३०१०	१६१३	सगहणिण्डु एव	६०६३	
पोच्छिण्णमडवे	४२२		सग्गाम परग्गामे	१४८४	
पोच्छिण्णग्निं मडवे	३८००		"	३६६०	
पोच्छेदे तस्सेव उ	६०५८		"	४३६७	
वोसट्ठकायअसिवे	४२६६		"	५०४३	६४२
"	४२७१		सग्गामे सउवस्सए	२६६६	१८७०
"	४२७४		सच्चित्त-णतर-परपरे य	१५०	
"	४२७७		सच्चित्तोए उ धुवणे	१८२	
वोमट्ठ पि ठु कप्पति	४६६६		सच्चित्तो लहुमादी	१८१	
"	५८७३		सच्चित्तखट्ठकारग	२६४५	
			सच्चित्तसच्चित्तमीसो	२७७४	५७२७
			सच्चित्तमीस अगणी	२१३	
			सच्चित्तमीसएसु	५६५८	
			सच्चित्तमीमगे वा	१६६६	
			सच्चित्त-रक्खमूल	१८६६	
			सच्चित्त-रक्खमूले	१६०६	
			"	१६१६	
			"	१६१७	
			"	१६१६	
			सच्चित्त अच्चित्त	३६५७	
			"	४६६२	
			सच्चित्तानफलेहि	५४१०	
			"	४७०१	
			सच्चित्त वा अब	४६६२	
		३०६३	सच्चित्ताति हरति रा	२७४२	५४८०
			सच्चित्तादि हरति रो	५५८०	
			सच्चित्तादी तिनिध	३३६	
		४०६०	सच्चित्तादी दब्बे	३७८	
			"	६२६७	
			सच्चित्तो अच्चित्तो	३६६४	
			"	३६५२	
			सच्चित्तमग्निद्विष्टे	४५६६	

स

। मइ लाभग्निं अणियता	१३४१
सउएग-पाय-सरिच्छा	१६३३
सउणी उक्कडवेदो	३५६४
सयरीए पणपण्णा	६४७८
सकडक्खपेहण बाल—	२३३७
सकड हह समभोम्मे	४८५७
सकल-प्पमाणा-वण्ण	६१३
स किमवि कातूणाधवा	२०८३
सकि भजणग्निं लहुओ	३६८७
सक्कमहादीणसु	१६०८
सक्कयमत्ताविदू	१७
सक्कर-धय-गुलमीमा	५६८४
सक्का अपसत्थाण	३३२८
सक्खेने जइ रा लडभति	४१७२
सक्खेत्ते परखेत्ते	३२६०
सक्खेत्ते सउवस्सए	१२०५
सग-जवगादि विरूवा	५७२७
सगराग्निं एण्णिय पुच्छा	६५८६
"	२८७०

सच्छद परिणता	४५५६	सण्णी सण्णाता वा	१६६४	
सच्छदेण उ एक्क	५७१४	सण्णीसु असण्णीसु	५२२७	
सच्छदेण य गमण	५७११	३१०३ सण्णीसु पढमवग्गे	५२१५	
सच्छदेण सय वा	५७१२	सण्णे करेति थुल्ल	२१७२	
सजियपतिट्ठिए लहुओ	४७६६	६०६ सति कान्हू रणातु	१६५६	१६५५
सज्जग्गहणातीत	३३६१	२७६१ सति कालकेडरो	१६०८	
सज्झाएण गु खिण्णो	१६६३	३७१६ सति कोउएण दोण्ह वि	५१०६	२४५८
सज्झाए पल्लिमथो	१२२२	सति दो तिमिय अमादी	१८४३	
सज्झाए वाघाओ	१६७६	३७०३ सतुसा सचेतणा वि य	१५८४	
सज्झायट्ठा दप्पेण	३२५६	४२७६ सत्तचउक्का उग्घाड्यारा	६५४५	
सज्झायमचित्तेता	६१२६	"	६५५८	
सज्झायमातिएहि	२८१३	५७७६ सत्त तु वासासु भवे	४२४४	५६५४
सज्झायवज्जमसिवे	६०७३	सत्त दिवसे ठवेत्ता	५०७५	२८२०
सज्झाय काऊण	१२७१	"	५०८४	२८२८
सज्झा-लेवण-सिञ्चण	४१६३	५२८४ सत्त य मासा उग्घाड्यारा	६५५७	
सट्ठाएणुग केई	६६२६	सत्तट्ठगमुक्कोमो	३५११	
सट्ठाए अणुकपा	१६७५	२६७६ सत्तट्ठि राक्खत्त	६२८८	
सडित-पडिताए करण	२०२१	सत्तण्ह वसगारा	४७६८	६३८
"	२०५४	सत्तरत्त तवो होइ	२७४८	४६८०
सडिड गिही अण्णतित्थो	१४४३	सत्तरत्त तवो होति	५५८६	"
सड्ढी गिहि अण्णतित्थो	१०७४	"	६२५६	"
सड्ढेहि वा वि भणित्ता	१२०३	३५८३ सत्तमया चोयाला	६२८६	
सरणमाई वागविही	७६१	सत्ता अदीएता खलु	५६८१	
सरणसत्तरसा घण्णा	४६५६	सत्तारस पण्णारस	६५५५	
सरणसेज्जो व गतो पुग	२१२६	सत्तोया दिट्ठीओ	५६२३	
मण्णातगा वि उज्जुत्तखोग	२६७८	५३५४ सत्थपणए य सुद्धे	५६७२	३०८१
मण्णातगिह अण्णो	१२६३	सत्थपरिणगा उक्कम	५३६८	३२२५
मण्णातग वि तथ चेव	१२६१	सत्थपरिणगा उक्कमा	५२८८	"
मण्णाततेहि एते	१३३६	सत्थवाहादि ठारा	२६००	
मण्णातपल्लि रोहिण	५८५	सत्थहताऽमति	१७२	
मण्णातसखडीसू	१२१३	सत्थ च सत्थवाह	५६६१	३०६८
मण्णायग आगमरो	३४१०	सत्थाए अइमुत्तो	३५३६	
मण्णा सिगगमादी	२४७	सत्थाए पुव्वपिता	३११६	
मण्णिअमिअग्गिचयाना	२४६२	सत्थाहट्ठगगुणिता	५६७६	२०८५
मण्णिहित जह स-जिय	२२०६	सत्थ ति पचभेदा	५६६२	२०७०
मण्णिहिय-भट्ठियासु	२०२५	सत्थ वि वच्चमाणा	१६७०	२६७८
मण्णिहिय जह सजिय	२०१२	सद्धिमि हत्थवत्थादिएहि	१७७६	३७८५
"	२२२०	सद्धणा खलु मूल	२१५५	

सद् च हेउमत्थ	५५३०	५४३१	समगुण्येसु विदेस	१८४४	
मद् वा मोऊण	५१६		समरो ग समणि सावग	५०२७	६२६
महाइ इदियत्थोवओग-	२५१८		ममरोहि य अमणतो	४०८७	१८४४
मद् पुण मारेउ	५६६७		समणो उ वरो व भगदले	६१६८	
मद् से सिस्सिणि सज्ज	२२३३		समत ति होति चरण	६१६३	
मत्तामिगतो अट्ठागिओ	२७०१		समवायाई तु पदा	२४७८	
मत्तामुत्ता सागारिय	५०६६		समवायादि ठाणा	४१३८	
मत्ति खरकम्मिओ वा	३६१६	५१८३	समारो वुड्ढवासी	१०५४	
मत्तिहिताग वडारो	६१४२		समि चिचिणियादीण	२६१३	५८१०
मपरक्कमे जो उ गमो	३६३६		समितीण य गुत्तीण य	३६	
मपरिकम्मा सेज्जा	२०४५		ममिती पयारूवा	३८	
सपरिगह अपरिगह	१८६७		समितीसु य गुत्तीसु य	४०	
मपरिगहेतरो वि य	४३१४		समिनो नियमा गुत्तो	३७	४४५१
मपरिपक्खो विसयदुट्ठो	३६६२		ममुच्छति तहि वा	३४७४	
मप्पडियरो परिणो	४०६		ममुदाण पारियाण व	४५६७	
मवितिज्जण व मु चति	५७१५	३१२७	ममुदाण पयो वा	४२४६	५६५६
सबीयम्मि अतो मूल	२२४०		समुदाणि ओयणो	३०५४	१६५३
सबेटप्पमुहे वा	३४७७		सम्मज्जण वरितीयण	२०३१	१६८१
मभमादुज्जाणगिहा	२४२७		सम्ममसम्मा किरिया	४४१४	
मभए सरमेदादी	५६८७	३०६७	सम्मेयर सम्म दुहा	४७५१	८६३
ममग तु अणोणसू	७७०		सम्मेलो घडा भोज्ज	३४८३	
समएगुण विदुज्जणणो	१७३४	३२६६	सयकरणे चउलहुया	६३६	३८७१
समएअधिकरणे पडिणीय	६३३४		सयगुणसहस्सपाग	३१६७	
समएअभभावितेसु	१७५७	३२८८	सयणो तस्स सरिसओ	१०२७	
समएणा सजतीहि	५६१६		सयमेव कोइ साहति	३५६४	५१४१
समएणा इत्थीसु	११६८		सयमेव छेदगम्मी	१६६७	
समएणा जो उ गमो	३७८७		सयमेव दिट्ठपादी	१७५७	३७८०
समएण समणि सपक्खो	५६६८	३०७७	सयमेव य अवहारो	२७५८	
समणि मगुण्यो छेदो	२१००		सयसिन्वणम्मि विद्धे	१६२५	
समणी उ देति उभय	२१०६		सय चैव चिर वासो	३८४४	
समणी जणो पविट्ठे	१७३०		सरतिमिगा वा विप्पिय	६०१७	
समगुण्यदुगणिमिक्का	६३२४		सरिकप्पे सरिच्छदे	२१४७	२४४४
समगुण्यमगुण्यो वा	२१२४		सरिकप्पे मरिच्छदे	२१४८	६४६६
समगुण्य-सजतीण	२०८८		सरिसावगहदडो	२८१४	५७८०
समगुण्यस विधीए	२१०१		सरीरमुज्जम्य जेण	६३०	
समगुण्य परिसकी	४१०४	१८६२	सरीरे उवकरणम्मि य	३६३३	
समगुण्येण मगुण्यो	२०७४		मविकारो मोहुदीरण	२२६०	
समगुण्येतर गिहि-	१६७६	२६८३	सविगार अमज्जत्थे	२०१४	

सविगारो मोहुदीरणा	२२६३		सव्वेसि तेमि आरणा	११६१	३५४२
”	२२६६		सव्वेसि सजयाणा	२६७६	
”	२२६६		सव्वेसि अविमिट्ठा	६६५५	
सव्वत्थ पुच्छणिज्जो	११६५	३५७५	सव्वेसु वि गहिणसु	१०७२	
सव्वत्थ वि आयरिओ	६०२३	४३४६	सम्-एलामाढ	२६४	
सव्वत्थ वि सट्ठारा	६६३८		समगिद्ध दुहारुम्भे	१८८	
”	६६३६		समगिद्ध बीयघट्टे	६५७६	
सव्वपदाणाभोगा	३६३		समगिद्ध-सुहुम	४३३	
सव्वममव्वरतरिणओ	२०६		समगिद्धे उदउल्ले	१८६	
सव्वम्मि उ चउलहुगा	२०३३	१६८०	समरक्खाइहत्थ पथे	१४६	
सव्वम्मि तु सुयराणे	३३०४		ससहायअवत्तेरा	५५०१	५४०५
सव्वस्स छड्डरा विगिचरणा	२६१६	५८१३	समिगिद्धमादि ग्रहिय	६५८०	
सव्वस्स पुच्छणिज्जा	२४२२		समिगिद्धमानि मिण्हो-	१७७	
सव्वस्स वि कातव्व	५५२०	५४२४	सहजेरागतूग व	२०००	
सव्वसहप्पभावातो	३६१६		सहमा व पमादेरा	१०६	
सव्व तेय चउहा	४८०१	६६२	सहमुपइयम्मि जरे	८८०७	८८
सव्व पि य त दुविह	४७०७		सहिगानी वत्ता यल्लु	२२६८	
सव्व भोच्चा कोई	३८६५		सक्कुट्टियपदभिदरो	२५४०	
सव्व भोच्चा कोती	३८६४		सक्के पदभिदरा	२५६	५८६७
सव्वगिया उ मेज्जा	१२१७		सक्को सरभो	१८१३	
सव्वाओ अज्जातो	३६१८		सक्कम-करोयो य तहा	२०४३	
सव्वाणमाइयाण	२४८६		सक्कम जूव अचने	५३८	२४१३
सव्वागि पव्वमो तद्धिण	४०७८	८८५	सक्कमथने य गो थने	४२३०	५६४०
सव्वारि ठवराणा	६४७४		सक्कमतो अप्पागारा	२८१२	
”	६४८३		सक्कलदीवे वत्ती	५४०६	३४७०
सव्वाहि व लद्धीहि	२६१६		सक्का सागारहे	१८७२	
सव्व गागपदोमादिणमु	३३२६		सक्कुचिन्त तरुण आतप्पमाग	५७६५	३८३०
सव्वे वा गीयत्था	५०१८	६८८	सक्क-तिगिसामुल्लुचदगाइ	१०३०	
सव्वे वि खलु गिहत्था	४६६०		सक्कडिगमरो विनिनो	२४०२	२८५४
”	४६८२		सक्कडिमभिधारेता	२६४१	५८३७
सव्व वि तत्थ रु भनि	१३८३		सक्कुण्णतो तवस्सी	४१६५	
सव्वे वि दिट्ठम्भे	१२७०		सक्खेज्जजीविता खल्लु	४०३६	
सव्वे वि पद महो	२८५		सक्खे मिगे करतल	२३७	
सव्वे वि य पच्छित्ता	६४६६		सगामदुगपक्कवग	३६२६	
सव्व वि लाहपादा	४०४३		सगामे साहमिता	३६२८	
सव्वे ममरा समणी	२६७४	५२५०	सघट्टगा तु वाने	१४६३	
सव्वे सव्वद्वाने	३६१५		सघट्टगा य घट्टगा	४२२१	५६३१
सव्वेसि एगचरणा	४४२८		सघट्टगा य मिचगा	४२२७	५६२७

सधट्टणादिएसु	२१५		सजमठाराणा कडगारण	३८२३	
सधट्टे मासादी	१८५		सजमतो छक्काया	१०५६	
सधयगधितो जुत्तो	३६३६		सजमदेह्विरुद्ध	४१८	
सधयण जह सगड	६५१६		सजम-महातलागस्म	१६८०	२७०४
सधयणोग तु जुत्तो	८३		सजमविश्वकरे वा	१५६१	
सधयणो सपण्णा	७८		"	१५७३	
सधस्स पुरिम-पच्छिम	२६६७	५३४३	"	१५८०	
सधस्सायरियस्स	४८५		सजम-विराहणाए	५६३६	३०४५
सध समुद्दिस्सिता	२६६८	५३४४	सजयगणो गिहगणो	२८५१	५५८४
सधाडण पविट्टे	५०६१	२८१०	सजय-गिहि-तदुभयभद्गा	३३७१	
सधाडगा उ जाव तु	६५६७		सजयगुरु तदहिवो	२८५२	
"	६५६८		सजयपदोसगहवति	१०८७	
सधाडगा उ जाव	१८८८		सजयपरे गिहिपरे	६८८	
सधाडगा उ जो वा	२८८३		सजयभद्गमुक्के	३३७२	२७७३
सधाडगाओ जाव उ	२८८२	५५६६	सजयभद्गा तेणा	४५१४	
सध डगारुवडा	३६४३		सजोए रणमादी	६००५	
सधाडणा य परिसाडणा	१८०४		सजागदिट्टपाढी	२६७७	१८७६
सधाडमादिकवणो	५८३	४६ ६	सजोय-विधि-विभागे	२०६३	
सधाड दाऊण	२०८०		सभागतम्मि कलहो	६३८५	
सधाडिओ चउरो	४०२६		सभागतम्मि रविगत	६३८४	
सधाडेगो ठवणा	४१७३	५२६२	सभा राती भणिता	२४२६	
सधातणा य पडिसाडणा	१८०२		सठावण लिपणता	२०५२	
सधाविएतरो वा	१४०८	४०६२	सठियम्मि भवे लाभो	५८४७	४०२३
सचइयमसचइते	१६५१	१६०६	सडासछिड्डेण हिमाइ एति	५७६३	३६६८
सचरिते वि ङ्ग दोसा	३७८१		सणिहिमादी पढमो	४५४	
सचालणा तु तस्सा	५६५		सतगुणणासणा खलु	५४२६	
सजतगतीए गमण	१०६६		सतविभवा जति तव	१७३७	३७५६
सजतरिणए गिहिणिणए	६७८		सतम्मि य बलवरिणए	६३२२	
सजत-भद्गा गिहि-भद्गा	१६७१		सतासतसतीए	७३३	
सजतिगमणो गुरुगा	२४५२		"	७७२	
सजतिवग्गे गुरुगा	२०६१		"	६८६	
सजतिवग्गे चैव	२०७८		"	७२८	
सजमअभिमुहस्स वि	१६८१	३७०५	"	७३१	
सजमअराविराधणा	११५		"	७३६	
सजमखेत्तुयाण	३२०५		"	७४१	
सजमखेत्तुया वा	८२६		"	७४२	
सजमघाउप्पाते	६०७५		"	७४४	
सजम-चरित्तजोगा	४८६६	१०३५	"	७४६	
सजमजीवियहेउ	३६५	४६४५	"		

,	७४६	मभोइयमणसभोइयाण	६०३५	
,	७७५	मभोगपरूवगता	२०६६	
,	७७७	मभोगमणसभोइए	२१४५	
”	७८०	सभोगा अवि हु तिहि	५५५४	५४५३
”	७८८	मरभ मणोण तू	१८११	
”	६८३	मलवमागी वि ग्रह	१७७३	३७६२
”	६६०	सलिहित पि य तिविध	१७२०	३७४२
”	६६२	सनेह पच भागे	२६०६	
”	६६७	मवच्छर गगो वा	३१०२	२०००
मनी कु षू य अरो	२५६१	मवच्छर च रुडु	२८०७	५७७३
सथडमसथडे वा	२८८८	५७८५	सवच्छराणि तिणिण उ	५५१४
सथडिओ सथरतो	२६१०	५८०७	सवच्छरा तिन्नि उ	३१०१
सथरणन्म असुद्ध	१६५०	१६०८	सवट्टणिग्गयाण	२३७३
सथरमाणमजाणत	१०७६		सवट्टम्मि तु जतरा	२३६३
सथारएहि य तहि	५२५६	३३४०	मवालादगुरागो	१७६२
सथार कुमघाडी	१७४४	३७६७	मवासे जे दोसा	२४७६
सथारगमिलाणे	४०१४	३८३७	सवासे सभोगो	२१४१
सथारविप्पणासे	१३१४		सवाहणमम्भगण	५६७
मथारविप्पणामो	१३५४	४६२०	सविग्ग णितियवासी	३०६४
मथार देहत	१२५३		मविग्ग-भाविताण	१६४६
मथारुत्तरपट्टो	५८३	२६८०	सविग्ग-भावितेसु	१६८७
”	१२३०		सविग्गमसविग्गा	४७४४
सथारेगमणो	१३०५	४६०५	सविग्गदुल्लभ खलु	३८३६
सथारो दिट्ठो ण य	१२५२		सविग्गमगीतत्थ	५५८५
मदिसह य पाउम	२५८०		सविग्गमगीयत्थ	२७४७
सपनि-रणुप्पती	२१५४		सविग्गमगुण्णाते	१६५८
मपत्तीइ वि असती	४१००	१८५७	मविग्गमणसभाइएहि	२८२४
मपत्ती व विवत्ती	४८०८	६४६	मविग्गमणसभागिएहि	२०७७
मपाइमे असपाइमे य	५३२७	२४०१	मविग्गमसविग्गे	४५८७
सपातिमादिघातो	२४३		”	४५६४
”	५६२३		”	३००६
सपातिमे वि एव	५३३०	२४०४	”	६२६६
सफाणितस्म गहण	१६४३		मविग्गमसविग्गो	४२८२
मफासमगुप्पत्तो	३६४०		सविग्गमजतीओ	३०६२
मबधभाविणसु	३२४६	४०७४	सविग्गा गीयत्था	३०६१
मबधवज्जियत्ती	१७६६		मविग्गा समगुण्णा	६२४५
मबाहणा पधोवग	१४६५		सविग्गाण सगासे	४५८८
मभिच्चेण व अच्छन्न	१३२०	५४८	मविग्गादगुमट्टो	४५८६

सविगासविग्गे	३००८		सागारियादि पत्तियक—	३४६५	
सविगेतरभावि	१६८६	२६६०	सागारिसजताण	१३२१	५४६
सविगेहज्जुसट्ठो	४५६१		साडज्जभगग उव्वलग्ग	३०२२	
सविगा सेज्जायर	३०६६	१६६४	सागादीभक्खणता	४१५	
समज्जिमेसु छुम्भति	४१५२	५२७१	सागुप्पगभक्खट्ठा	३०७७	१६७६
ससट्ठमससट्ठे	४११६	१८६८	सातिज्जसु रज्जसिरि	१५६२	
ससत्तपथ-भत्ते	२५८		साद्व जिणपडिक्कुट्ठो	४८४७	
ससत्तपोगलादी	२८६		साधम्मत्त वेधम्मत्त	२१५३	
ससत्ताति न सुज्झति	३४०६	२८५७	साधम्मियत्थलीसु	३४५	
ससत्तऽपरिभोगो	२६६		साधम्मिया य तिविधा	३३६	
ससत्तेसु तु भत्तादिएसु	२६७		साधारणा-पत्तेगो	२१२३	
ससयकरण सका	२४		साधारणे विरेग	४३५७	
ससारण्डुपडितो	४६५		साधु उवासमाणो	३५०३	
ससाहगस्स सोतु	५४६३	५३६८	"	२४६८	
समोहण ससमण	४४३६		सा पुग जहण्ण उक्कोम	६६४७	
साएताग्गाऽओज्जा	३३४७		साभावि गितिय कप्पति	१००४	
सागधत्तादावावो	१२३		साभावित च उच्चिय	१००३	
सागग्गिए णिक्खित्ते	२०५		साभाविते तिप्पिण दिग्गा	६०८७	
सागणिया तु सेज्जा	५३५२		साभावियणिसाए	१३२८	
सागारिअदिण्णेसु व	४०१		सा मग्गति साधम्मी	१७८३	३८०४
सागारिउ त्ति को पुग	११३८		सामण्णे जे पुण्वि	१०७१	
सागारिपुत्त-भाउग	११६६	३५४७	सामत्थ णिव अपुत्ते	३६८	४६४६
सागारिय-अधिकरणे	२४७१		सामाइय पारेतूण	४६६३	
सागारिय तुरियमणभोगतो	१६४		"	४६८५	
सागारिय-सज्झाए	६५५		सामाइयमाइय	३३०३	
सागारिय-सतिय त	१६५७		सामा तु दिवा छाया	४३१६	
सागारियणिक्खेवा	५०६८	२४५०	सामायांरि वितह	४३४६	
सागारियणिसाए	१२११		सामित्त-करण-अधिकरण	६०	
"	३५६०		सामित्ते करणम्मि य	३१४२	
सागारियमल्लदण	४४७८		सामी चार भडा वा	४५०५	
सागारियसण्णातग	१२१०		सारीर पि य दुविह	६०६६	
सागारियसदिट्ठे	११४५	३५२६	सारुवि सावग-गिहिगे	५८६	
सागारियस्स गध	२५६८		सारुवि सिद्धपुत्तेण वा	४६०२	
सागारियस्स णामा	११४०	३५२१	सारेउणा य कवय	३८१६	
सागारिय अपुच्छिय	१२०६		सारेहिति सीयत	४५८४	
सागारिय णिरक्खति	३५८४	५१६०	सालत्ति णवरि रोम	२४८६	
सागारिया उ सेज्जा	५०६७		सालबो सावज्ज	४७५	
सागारियादिकहण	६०६८		साला तु अहे वियडा	२४२८	

सावितेरादि ज्मुसिरो	१२१६		सिप्पाई मिस्खतो	३७१४	
साली-धय गुल-गोरस	२६६२	५३४१	मिरिगुत्तण छलुगो	५६०५	
सावगसधिण्डारो	२३६६	३८-६	सिंहिरिणि लभाऽऽलोयण	३६८७	४६६२
सावतेरा दुविधा	३२६४		सिचण बीयो पुट्टा	५३१२	२३८६
सावत्थी उसभपुर	५६२२		सिचति ते उवहि वा	४२२०	५६३०
सावय अण्णट्टकडे	५६६४		सीओदगभोईण	४११५	
सावय-तेण-परडे	५६६५	३१०४	सीत पज्जिखणता	१७५	
सावय तेणभया वा	२५५		सीतारो ज दड्ड	६११२	
मावय भय आणेति वा	२२६	२४५८	सातितरफासु चउहा	५२३०	
सावयतेरो उभय	४२२४	५६३४	सीतेण व उसिणेण व	१६३६	
मावयभए आणिति व	५४०३	३४५८	सीतोदगभावित अविगते	५८६३	
सावेक्खो ति व काउ	६६५७		सीतोदगम्मि छुम्मति	५६७०	
सासवणाले छदण	३६८३	४६८८	सीतोदगवियडेण	२२७४	
सासवणाले मुहणतए	३६८२		सीतोदे उसिणेदे	५२२६	३४२०
साहम्मि अण्णहम्मि य	३६४२		सीतोदे जो उ गमो	२२७६	
साहम्मि य उइ सो	४५२५		सीसगणम्मि विसो	२१०८	
साहम्मि य वच्छल्ल	२६		सीसगता वि ण दुक्ख	४२१६	५६२६
साहम्मियत्थलामति	३४६		सीसपडिच्छे पाहुड	६३४०	
साहारगस्स भावा	५७०३		सीस उरो य उदर	५६३	
साहारण तु पढमे	५५०३	५४०७	सीसोकपण हत्थे	२७२४	४७३६
साहारो वि एव	४६४६		सीसोकपिय गरहा	२७२१	४७३२
साहिकरणो य दुविहो	२७७३		सीहगुह वगगुह	५५६५	५४६४
साहिति य पियवम्मा	१६४३		सीहाऽऽसीविस अग्गी	५६८	
साहु उवासमारो	४६७४		सुअ अक्वत्तो अगीओ	५४८२	५३८७
साहुण देह एय	५७४६	३२८०	सुक्खोदणो समितिमा	५६८६	३०६६
साहुण वसहीए	५३०१	३३८०	सुम्बोल्ल ओदणस्सा	५८६२	४०६८
सिक्कगकरण दुविध	६३६		सुट्ठु कय आभरण	५१०८	२४६०
सिग्घयग् आगमण	४१८०	५२६६	सुट्ठु कया अह पडिमा	५१४३	२४६३
सिग्घुज्जुगती आसो	६३११		सुट्ठु लसिते भीते	१३६६	
सिज्जादिएसु उभय	४०७		”	२२४४	
सिट्ठम्मि ण सगिज्झइ	२८४५	५५७६	सुणमारो वि ण सुणिमो	२३६७	४८३४
सिरोहो पलवी होइ	३८२१		सुणए डुट्टु बड्डा	१३१६	
सिण्हा मीसग हेडोवोरि	१८०		सुणए एत पडिच्छए	१२४२	
मितिअवराणा पडिलाभग	४४५३		सुणगो जउत्थभगो	४०६६	
सिद्धत्थगजालेण व	४००६	३८२६	सुतमुह दुक्खे खेतं	२१४०	
सिद्धत्थग पुप्फे वा	३४४४	२८६७	सुतट्ठि णक्खत्ते	६२८८	
सिप्पसिलोगादीहि	४२७८		सुत्तणिवाओ इत्थ	२८८६	
सिप्पसिलोगे अट्ठावए	४२७६		सुत्तणिवाओ एत्थ	२०६०	
			सुत्तसिवातो सच्चित्त—	५६५६	

मुत्तशिवातो उक्कोसयम्मि	५६५२		मुद्धतवो अज्जाण	६५६१	
मुत्तशिवातो एत्थ	१८८६		मुद्धपडिच्छरो लहुगा	६३६३	
" "	१६६८		मुद्धममुद्ध चरण	५४३३	
" "	२२२७		मुद्ध एसित्तु ठावेति	३६३१	
" "	३७४३		मुद्ध पडिच्छऊण	६३४२	
" ओहे	२०२३		मुद्धालभे अगीते	६६६०	
" कसिणे	६६६		मुद्धे सङ्गी इच्छकार	२८७२	१८७४
" सिगतिए	१०२०		मुद्धो लहुगा तिसु दुसु	६०६	
" शियमा	१०४०		मुप्पे य तालवेटे	२३६	
" तणेसु	१२२४		मुवहूहि वि मासेहि	६५२०	
" वितिण	६१०		"	६५२४	
" सगलकम्मिण	६२३		मुम्भी दढग्गजीहो	१११७	
मुत्तत्थ अपडिवद्ध	३१०६		मुयअभिगमणायविही	४४८७	
मुत्तत्थतदुभयविसारयम्मि	३३८४	२७८४	मुय-चरणो दुहा धम्मो	२८६५	
मुत्तत्थतदुभयाइ	६२२५	७८६	मुयधम्मो खलु दुविहो	३३००	
मुत्तत्थतदुभयाण	६१८१		मुयनाणम्मि य भत्ती	६१७१	
"	६६७३		मुयवत्तो वयावत्तो	२७४०	
मुत्तत्थावम्सरिणीधियासु	५२१		मुलसा अमूढदिट्ठि	३२	
मुत्तत्थे अकहेत्ता	३७५४		मुवइ य अजगर भूतो	५३०५	३३८७
मुत्तत्थे पलिमथो	१६६६		मुवति मुवत्तस्स मुय	५३०४	३३८४
"	४२१६	४६०६	मुहपडिबोहा रिट्ठा	१३३	२४००
मुत्तनिवातो सग्गामा	१४८६		"	५३२६	"
मुत्तमयी रज्जुमयी	६५१	२३७४	मुहमवि आवेदतो	३३३०	
मुत्तम्मि णालबद्धा	५५२२		मुहविण्णप्पा सुहमोइया	५१५५	२५२७
मुत्तम्मि होति भयग्गा	६२१६	७७८	"	५१७७	२५४४
मुत्तवत्तो वयवत्तो	५५७८		"	५१६०	२५२७
मुत्तसुहदुक्खे खेत्ते	५५२१		मुहसाहग पि कज्ज	४८०३	६४४
मुत्तस्स व अत्थस्स व	५४५६		मुहसीलतेणगहिते	३५१	
मुत्तस्स विसवादो	५७३६		मुहिणो व तस्स वीरिय-	१५६३	
मुत्त कइडति वेट्ठो	२११५		मुहियामो ति य भण्णती	२६८५	१८८७
मुत्त तु कारगिय	४८६२		मुहुम च बादर वा	३३०	
मुत्त पडुच्च गहिते	२६१५		मुहुमो य बादरो य	३८०	
मुत्त व अत्थ च दुवे वि काउ	१२३६		मुहुमो य बादरो वा	२६७	
मुत्तमि एते लहुगा	२१		मुत्तिज्जति अणुरागो	४६७५	
मुत्तायामसिरोखत	२११४		"	४६६६	
मुत्ते जहा रिणबधो	३२०४		सूतीमादीयाण	६६२	
मुद्धतवे परिहारिय	६६०४		"	६६५	
मुद्धतवो अज्जाग	२८७६		सुभगवुभगकरा	४४६६	

सूयग-मतग-कुलाह	१६१८		सहादी पडिकुट्टो	३८१	
"	५७६०		महुवभामगभिच्छुलि	३५७	
सूयिमण्डाए तु	६६८		सा आगा अगन्त्य	७५१	
सूयि अविधीए तु	६७५		"	७६३	
सूरत्यमणम्मि तु णिग्गताग	११५७	३५३८	"	८३६	
सूरुगते जिगाण	१४२४	१६६१	"	११०६	
सूरे अणुगयम्मि उ	२८६०	५७८६	"	१११५	
सूवोदणस्स भरिउ	६६२ग		"	१४६६	
सेएण कक्खमाती	३६३२		"	१४६७	
सेज्जा-क्कप्प-विहिण्णू	१२४८		"	१५५०	
सेज्जा-सथारुग	१६६०		"	१६११	
सेज्जातर-रातपिडे	३४६६		"	१८२४	
सेज्जातराण धम्म	१७२६	३७४८	"	१८२६	
सेज्जातरो पभू वा	११४४	३५२५	"	१८६१	
सेज्जायरक्कप्पट्टो	५५४८	५४४६	"	२१६६	
सेज्जायरकुलनिस्सित	४३४४		"	२१६३	
सेज्जायरमादि सएण्णिक्कया	५५४३		"	२०४८	
सेज्जायरस्स पिडो	३४८५		"	२४४०	
सेज्जासथारो ऊ	१३०१		"	२८६२	
सेज्जोवहि आहारे	२१०७		"	३११५	
"	२११०		"	४०३४	
मेडगुलि वग्गुडावे	४४५१		"	४३०६	
मेडुग रुते पिजिय	१६६२	२६६६	सोआनी एव सोत्ता	३६६०	
मेरादी गम्मिहिती	२३५७	४७६६	सोउ हिङ्गण-कधण	१२५८	
मेराहिव भोइ महर	६०६५		सोऊण जो गिलाण	२६६६	१८७१
मेयविपोलासाडे	५५६६		सोऊण य घोसणाय	४७८४	६२५
मेय वा जल्ल वा	१५२१		सोऊण व पासित्ता	१७६६	३७८८
मेल्हट्टि-यभदारुपनया	३१६१		साऊण वा गिलाण	२६७०	१८७१
मेवतो तु अकिच्च	४७०		"	२६७३	१८७५
मेसा उ जहासत्ती	६१२२		"	२६७५	१८७७
मेसेसु तु सम्भाव	२७२०	४७३१	सोऊण च गिलाणि	१७४६	१८७२
मेसेसु फासुएण	२०५०		सो एसो जस्स गुला	१०४७	
मेह-गिहिणा व विट्ठे	३७६६	६००६	सोगधिण य आसित्ते	३५६२	५१६७
मेहज्वहारो दुविहो	२६६६		सोच्चा गत त्ति लहुगा	१३०२	४६००
मेहस्स विसीयणता	२१२	३४३६	सोच्चाण परसमीवे	२६६७	
मेहस्स विसीयणता	५३८४	"	सोच्चा पत्तिमपत्तिय	१३१७	५४५
मेहादीण अवण्णा	२६४७		सोच्चा व मोवसग्ग	२३६०	
मेहादीण दुगु छा	१५४५		सो णिच्छुभति साधू	२८४१	५५७५
			सो गिज्जति गिलाणो	३०८०	१६७६

सो रिणजराए वट्टनि
मोणितपूयालित्ते
मो त ताए अण्णाए
मोतु अण्णभिर्याण
मोत्थियबधो दुविधो
मो परिणामविहिण्णू
मोपारयम्मि रायरे
मो पुण आलेवो वा
मो पु ग पडिच्छगो वा
मो पुग लेवो चउहा
मो मग्गित साधम्मि
मो रायोऽवतिवती
मोलस वासागि तया
मो समग्गसुविहितेहि
मो समग्गसुविहियाण
सो होती पडिगीनो

१७६१ ३७८४
४०१८ ३८४०
४०६८ १८००
६२२३
७३८
१७५२ ३७७५
५१५६ २५०६
४८६४ १००१
८५६२
४२०१
१७७४ ३७६०
१७५२ ३०८३
५६१२
३५८५ ५१६१
५७६७
५४४०

हयगयलचिक्काइ
हयजुद्धादी ठाणा
हयमादी साला खलु
हरिण बीए चने जुत्ते
हरियाण मणोसिल
हविपुयो कम्मगरे
हाणी जा एगट्टा
हा दुट्ठु कय
हास दप्प च रतिं
हित सेसगारा असती
हिडितो वहिले काये
हीणप्पमाणाघरणे
”
हीणाऽतिरेगदोसे
हीणाधि ए पोरा
हीणाहियविवरीए
हीणे कज्जविवत्ती
हीरत रिणज्जत
हुंड सबल वाताइद्ध
हुडादि एगबधे
हुडे चरित्तभेदो
”
हुडे सबले सव्वण
हेट्ट उवासणहेउ
हेमन्तकडा गिम्हे
होक्का सन्नि सिद्धो
होज्ज गुरुओ गिलाणो
होज्ज हु वसगप्पत्तो
होति समे समगहण
होमातिवितहकरणे
होहित जुगप्पहाणो
होहित वि गियसरिय
होति उवगा कण्णा

३६५४
४१३३
०४६१
१६०० ५००
४८५४ ६७४
१८०३
२०७४ ४८११
६५७३
५६६
५७२१ ३१३३
३८५७
५८२८ ४००५
५८३१
५८४१ ४०१७
२१६८
६३५४
२१६७
३४८४
७५२
५८५५ ४०३०
७५३ ४०२४
५८४८
५८५१
२४६२ २०६७
२०५६
४६०३
२६५२
५४३५
६४६१
४४१३
३७३६
५०४७ ६४६
५६४

ह

हतविहतविप्परद्ध
हत्यद्धमत्तदारुय
हत्य-पणग तु दीहा
हत्य वा मत्त वा
हत्याइ-जाव सोत्त
हत्यादि पायघट्टण
हत्यादिपादघट्टण
हत्यादिवातणत्त
हत्यादिवायणत्त
हत्यादिवायणत्त-
हत्येग ऋदेसिते
हत्येग अपावेत्तो
हत्येग व भत्तेण व
हत्ये पाए कण्णे
हय-गय-रहसम्मद

२३५४ १२५८
३०५८ १६५७
६५२ २३ ५
४०६३ १८२०
२२५०
१६१०
१६०४
८६०
६२७२
६६८०
१४८२
८००
४०५८
३७०६
५५६४

द्वितीयं परिशिष्टम्

निशीथचूर्णौ चूर्णिकारेणोद्धृतानि गाथादिप्रमाणानि



विभाग	पृष्ठ	विभाग	पृष्ठ
अकाले चरसि भिक्षु	१	अभिति दृष्ट मुहुत्ते	४ २७७
[दश० अ० ५, उ० २, गा० ५]			
अचिरगाए य सूरिये	१ २१	अरस विरस वा वि	२ १२६
[]	[दश० अ० ५, उ० १, गा० ८८]	
अलुतधातिपारण गुणिया	४ ३६७	अरहा अत्य भासति	१ १४
[]	[वदन्कल्पभाष्य, गा० १६३]	
अट्ठविह कम्मरय	१ ५	अवसेसा एकलता	४ २७७
[]		
अट्ठारसपयसहस्सिओ वेदो	१ २	अ (आ) वतो केयावती लोगसि	१ १३
[]	[आचा० श्रु० १, अ० ५, उ० १]	
अट्ठारसपुरिसेसु	१ १३२	अससत्त	२ ४१६
[निशीथभाष्य, गा० ३५०५, तुलना]			
अत्थिणं भन्ते सवसत्तमा	४ ४००	असिवे ओमोयरिए	१ ८०
[]		
अन्न भडेहि वरण	२ १७७	अहय दुक्ख पत्तो	३ ४०५
[कल्पवृहद्भाष्य]			
अपत्य अन्न भोष्ठा	३ २५०	अहाकडेह रथति	१ १३
[उत्त० अ० ७, गा० ११]			
अपि कद् अर्पिडाना	१ ६५	आगपइत्ता अशुमारइत्ता	४ ३६३
[]		
अप्पे सिया भोयणजाए	३ ५४७	आचेसुकुद्देसिय	३ ४०१
[दश० अ० ५, उ० १, गा० ७४]			
अप्पोवही कलहविक्खणा य	४ १५७	,,	२ ३५६
[दश० अ० २, गा० ५]			
अवभतरगा खुभिया	१ २१	आदिमनुत्ते भणिते	४ ३१३
[]		
अवभुवगते खलु वासावासे	३ १२२	आराणाएणिय चरण	१ ५४
[आचा० श्रु० २, अ० ३, उ० १, सू० १११]			

आधारव आधारव	४	३६३	एगेण कयमकज्ज	१	५४
[[वृहत्कल्पभाष्य, गा० ६२८]		
इयदुद्धरातिगाढे	४	२१०	एतेसि ए भते । बालाण	३	३६३
[[भग० श० १२, उ० २ तुलना]		
इह खलु निग्गथाए	२	१८५	एस जिण्णाण आराणा	४	२१०
[वृहत्कल्प, उ० ३]			[
उक्कोस गण्णगण	१	२८	कडते य ते कु डलए य ते	१	२१
[[
उग्गसज्जपायरा	१	१५५	कण्णसोक्खेहि सद्देहि	३	४८३
[[दश० अ० ८, गा० २६]		
उग्घातित्तुगएहि	४	३६६	कति ए भते । कण्हुराईओ	१	३३
[[भग० श० ६, उ० ५]		
उग्घातियदुअएहि	४	३६७	कप्पति रिग्गथाए पक्के-	३	५३२
[[वृहत्कल्प, उ० १, सू० ३]		
उच्चात्यम्म पादे	३	५००	कप्पति रिग्गथाए वा-	४	३२
[आधनियुक्ति, गा० ७४६]			[वृहत्कल्प, उ० १, सू० ८]		
उच्चात्यम्म पादे	१	४०	कप्पति रिग्गथाए वा	४	३२
[आधनियुक्ति, गा० ७४६]			[वृहत्कल्प, उ० ३, सू० ६]		
उच्छेद्ध भोलति वइ	२	१३४	कप्पति रिग्गथाए सलोमाइ	४	३२
[वृहत्कल्प, उ० १, भा० गा० १५३६]			[वृहत्कल्प, उ० ३, सू० ४]		
[आधनियुक्ति, गा० १७०]			कप्पति रिग्गथाए अलोमाइ -	४	३२
उद्दे से णिद्दे से	२	२	[
[आवश्यकनियुक्ति, गा० १४०]			कप्पति रिग्गथाए पक्के	४	३१
उवज्झायवेयावच्च करेमाणे	४	२६६	[वृहत्कल्प, उ० १, सू० ५]		
[कप्पति से सागारकड	३	५८३
उवेहेत्ता सज्जमो बुत्तो	३	४०	[वृहत्कल्प, उ० १, सू० ३६]		
[आधनियुक्ति]			कम्मससखेज्जभव	३	२६८
उत्सप्पण सत्त्वसुय	१	५	[वृहत्कल्प, उ० १०, गा० ५१०]		
[कयरे आगच्छति दित्तरुवे	४	२७०
एक्के खउसतप्पणा	४	३६६	[उत्तगव्ययन, अ० १२, गा० ६]		
[कागसियालअखइय-	२	१०५
एग दुग तिप्पिण मासा	४	२१६	[
[काम जानामि ते भूल	२	२२
एगमेगस्स ए भते । जीवस्स	१	१०८	[महाभारत]		
[भग० श० १२, उ० ७]			कि कतिविह कस्स	२	८
एगादि अणुग्घाता	४	२६७	[आवश्यकनियुक्ति, गा० १११]		
[कि मे कड, कि च मे किस्सेस	२	६०
एगे बन्धे एगे पाए चियत्तोवकरण-	४	१५७	[महा० सू० २, गा० १२]		
[आपपातिक, तपोव्रतान सू० ४०]			कुरुतु व सपद उ बद्धो	३	११८
[स्थाना० म्था० २, उ० २]			[

कोडिसयं सत्तऽहियं	४	३६६	जाव वुत्थं सुहं वुत्थं	१	२१
[]	[]	[]	[]	[]	[]
को राजा यो न रक्षति	१	७	जीवे एं भंते ! ओरालियसरीरं	२	२८१
[]	[]	[]	[भग० श० १६, उ० १, तुलना]	[]	[]
को राया जो न रक्खइ	१	१२२	जीवेणं भंते सता समितं	२	३२०
[]	[]	[]	[भग० श० ३, उ० ३]	[]	[]
कोहो य माणो य अण्णिग्गहीया	४	३३	जे असंतएणं अब्भक्खारोणं	४	२७२
[दश० अ० ८, गा० ४०]	[]	[]	[]	[]	[]
कृत्स्नकर्मक्षयात् मोक्षः	१	१५७	जेढामूलंमि मासंमि	१	२१
[तत्त्वा० अ० १०, सू० ३, तुलना]	[]	[]	[]	[]	[]
गच्छम्मि केई पुरिसा	४	२६२	जेण रोहंति बीयाइं	१	२०
[]	[]	[]	[]	[]	[]
गञ्जित्ता एणमेगे एणे वासित्ता	४	३०७	जे भिक्खू असणं वा पाणं वा	४	३२
[स्थाना० स्था० ४]	[]	[]	[वृह०, उ० ४, सू० ११, तुलना]	[]	[]
गवाशनानां स गिरः श्रुणोति	३	५६२	जे भिक्खू उगघातियं	३	२८
[]	[]	[]	[]	[]	[]
गहणं पुराणसावग	४	२२२	जे भिक्खू तरुणे बलवं	४	१५७
[]	[]	[]	[आचा० श्रु० २, अ० ६, उ० १, सू० १५२]	[]	[]
गोयरग्गपविट्ठो उ	४	३१	जे मे जाणंति जिण्णा	३	२६६
[दशवै० अ० ५, उ० २, गा० ८]	[]	[]	[]	[]	[]
चंबुत्तपपुत्तो उ	२	३६२	जो जेण पगारेणं	१	४
[वृहत्कल्पभाष्य, गा० २६४]	[]	[]	[]	[]	[]
छच्चेव अतीरित्ता	४	२७७	जो य एण दुक्खं पत्तो	३	४०५
[]	[]	[]	[]	[]	[]
जइ इच्छसि नाऊणं	४	३३७	जं अज्जियं समीखल्लएहि	३	४३
[]	[]	[]	[]	[]	[]
जति एत्थि ठवरणआरोवणा	४	३३७	जं जाणेज्ज चिराधोतं	४	१६६
[]	[]	[]	[दश० अ० ५, उ० १, गा० ७६]	[]	[]
जतिभि भवे आरुवणा	४	३२४	जं जुज्जति उवकारे	१	६३
[निगीयभाष्य, गा० ६४८६]	[]	[]	[]	[]	[]
जत्तो भिक्खं बलिं देमि	१	२०	ठवरणारुवणादिवसाण	४	३३७
[]	[]	[]	[]	[]	[]
जत्थ राया सयं चोरो	१	२१	ए चरेज्ज वासे वासंते	१	१०६
[]	[]	[]	[दश० अ० ५, उ० १, गा० ८]	[]	[]
जमहं दिया य राओ य	१	२०	ए मत्तो सुयं तप्पुवियं	३	५१४
[]	[]	[]	[नन्दीसूत्र, तुलना]	[]	[]
जह दीवा दीवसयं	१	५	ए य तस्स तण्णिमिस्सो	१	४२
[]	[]	[]	[ओघनियुंक्ति, गा० ७४६]	[]	[]

रावमासाकुच्छिपालिए	१	२१	तहेवासजत धोरो	१	११३
[]	[दश० अ० ७ गा० ४७]		
रा वि लोरा लोरिज्जति	२	१७७	त रोच्छइय रायमए	१	२६
[कल्पवृद्धभाष्य]			[]
रा ह्व वीरियपरिहीणो	१	२७	तावदेव चलरय्यो	३	५२६
[]	[]
राणस्स दसरणस्स	१	५	तिगजोगेऽणुगयाता	४	३६७
[]	[]
रिण्हा विगहा परिवज्जिएहि	१	६	तिण्णुतरा विसाहा	४	२७६
[]	[]
राो कप्पइ रिग्गयाण इत्थिसागारिए	४	२३	तिण्हमण्णतरागस्स	४	३२
[वृह०, उ० १, सू० २७-३०]			[दशवै०, अ० ६, गा० ६०]		
राो कप्पइ रिग्गयाण वेरेज्ज—	३	२२७	तेगिच्छ राभिणदेज्ज	३	५०६
[वृह० उ० १, सू० ३८]			[उत्त० अ० २, गा० ३३]		
राो कप्पति निग्गयाण अलोमाइ	४	३२	तेजो वायू द्वीन्द्रियादयश्च	३	३१५
[]	[तत्त्वा०, अ० २, सू० १४]		
राो कप्पति रिग्गयाण वा	४	३२	तेरस य चदमासो	४	२७८
[वृह० उ० ३, सू० ५]			[सूयप्रज्ञति]		
राो कप्पति रिग्गयाण	३	१५४	तेषा कटतटभ्रष्टं	१	३०३
[कल्पसूत्र]			[]
राो कप्पति रिग्गयाण वा	४	३१	त्रय शल्या महाराज !	२	१२०
[वृह० उ० ३, सू० २२]			[अधोनिधु क्ति, गा० ६२३ समा]		
राो कप्पति रिग्गयाण वा रिग्गयोग वा	४	३२	वत्त्वा दानमनीश्वर	३	५८१
[वृह०, उ० १, सू० ४२-४४]			[]
राो कप्पति रिग्गयोग सलोमाइ	४	३२	दडक ससत्थ	१	१८
[वृह० उ० ३, सू० ३]			[]
तन्नो अरणवट्टप्पा पण्णत्ता	१	११२	दग्ग खेत्त काल	३	५३५
[स्थाना० स्था० ३]			[]
” ”	१	११६	दारा दबावण कारावरणे य	४	३७६
[स्थाना० स्था० ३]			[]
तण्णुगतिकिरियसमिती	१	२३	दत्तपुर दत्तवक्के	४	३६१
[]	[]
तमुक्काए रा भते ! कहि	१	३३	दत्तानां मजन श्रेष्ठ	२	६०
[भग० श० ६ उ० ५]			[]
तरुणो एग पाद गेण्हेज्जा	३	२०६	धमे-धमे रागतिधमे	१	८
[आचा० श्रु० २, अ० ६, उ० १, सू० १५२]			[]
तव प्रसादाद्भुतुंश्च	१	१०४	धम्मियाए किं सुत्तया	४	८६
[वृत्तस्थानप्रकरण]			[भग० श० १० उ० २]		

धम्मो मगतमुक्कटु	१	१३	सूदनइअ सुय कालिय तु	१	१
[दश० अ० १, गा० १]					
पञ्जोसवणकप्पस्स	३	१५८	रणो भत्त सिणो जत्थ	१	१३
[
पञ्च वद्धति कौत्तेय ।	१	१४	रस-हधिर-मास-मेदोऽस्थि	१	२६
[
पणुवीससहस्साइ	४	३६७	लघण-पवण-समत्थो	१	२०
[
परमाणु पोगलेण भते ।	४	२८१	वग्घस्स मए भीतेण	१	२०
[भग० अ० ८१, उ० ४]					
परिताव महादुक्खो	२	४१८	वयछक्क कायछक्क	२	३४६
[वृहत्कल्पभाष्य, गा० १८६६]					
पिंडस्स जा विसोही	१	३२	[दश० अ० ६, गा० ८]		
[वर प्रवेष्टु ज्वलित हुताशन	१	१२७
पुरेकस्मे पच्छाकम्मे	१	५८	[
[वमहि कह्णिसेज्जिदि य	१	५०
पुव्वभरिय तु ज एत्थ	१	३	[
[वसही दुल्लभताए	२	३७
बहुअट्ठिय पोगल	४	३२	[
[दश० अ० ५, उ० १, गा० ७३]			बिभूसा इत्थीससग्गी	४	१४३
बहुदोसे माणुस्से	१	१८	[दश० अ० ८, गा० ५७]		
[वीतरागो हि सवज्ञ	४	३०६
बहुमोहो वि य एण पुव्व	४	७२	[
[वैरूप्य व्याधिपिड	१	५३
बहुवित्थरमुस्सग्ग	४	२११	[
[सट्ठीए अतीताए	४	२७७
बारसविहम्मि वि तवे	४	२२७	[
[सत्तसया सट्ठहिया	४	२६७
भट्ठक भट्ठक भोच्चा	२	१२५	[
[दश० अ० ५, उ० २, गा० ३३]			समणो य सि सजतो य सि	१	२१
मद्य नाम प्रचुरकलह	१	५३	[
[सम्प्राप्तिद्व विपत्तिद्व	३	५०८
माणुसत्त सुई सद्धा	३	२६४	[
[उत्त० अ० ३, गा० १]			समितो नियमा गुत्तो	१	२३
माताप्येका पिताप्येको	३	५६१	[
[सयभिसयभरणीओ	४	२७६
मीसगमुत्तसमासे	४	३६७	[
[सयमेव उ अमए लवे	१	२१
मुत्तणिगेहे चक्खु	२	२६७	[
[

संवत्स सजम सजमाओ	१	११२
	[ओघनियुक्ति, गा० ४६]	
सवामगध परिणाय	३	८६५
	[आचा० ५० १, अ० २, उ० ५]	
सर्वेसि पि	४	४१०
	[]	
साहम्मिय वल्लल्लमि	१	७२
	[]	
सिरीए भतिम तुस्से	१	८
	[]	
सूतोपदप्पमारणाणि	१	८
	[]	
से गामसि वा	४	७२
	[दश० अ० ४]	

मेसा उवरिमुहत्ता	४	३६७
	[]	
सोलसमुगमवोसा	१	१३२
	[]	
सोही उज्जुअभूतस्स	४	२६४
	[उत्त० अ० ३, गा० १२]	
सकप्पकिरियगोवण	१	२३
	[]	
सत पि तमण्णाण	१	२६
	[]	
सहिता य पद चेव	२	२
	[]	
हा डुटठु कय	१	१५६
	[निशीथभाष्य, गा० ६५७३]	

३
तृतीयं परिशिष्टम्
चूर्णो प्रमाणत्वेन निर्दिष्टानां ग्रन्थानां नामानि

	विभाग	पृष्ठ		विभाग	पृष्ठ
अथकण्ड	(अथकाण्ड)	३	४००	उपधानश्रुत (आचाराग १ ६)	१ ०
अथस्त्य	(अथशास्त्र)	३	२६६	ग्रोहणिज्जुति (ग्रोधनियुक्ति)	२ ४३६
अशुभोगदार	(अनुयोगद्वार)	४	२३५	"	३ ४०, ४४६,
आचारप्रकल्प	(निर्णय-सूत्र)	१	२६	"	" ४५०,
आचारप्राभृत		१	३०	"	" ४६१
आचाराग		३	१२२	"	४ ६४, १०६,
आयारग (आचाराग-निर्णय)		४	२५२	"	" १२०
आयारपकल्प	(आचारप्रकल्प)	१	२, ५, ३१	कल्प (कल्प)	१ ३५
आयारपकल्प	(")	४	७३	"	३ ३६८
आयारवस्तु	(आचारवस्तु)	३	६३	"	" ५३०
आयार	(आचार)	१	७, ३, ५, ३५	"	" ५८३
"		३	२१२	"	४ ३०४
"		४	१६३	कल्पसूत्र (कल्पसूत्र)	३ ५२३
"		"	२५०	"	४ २३
"		"	२५४	कल्पपेठ (कल्पपीठ)	१ १३२
"		"	२६४	कल्प-पेठिआ (कल्पपीठिका)	१ १५५
आवश्यक		२	२०	कुडियायारकहा	४ २४३
आवश्यक	(आवश्यक)	४	२५४	(क्षलकाचारकथा, दश० अ० ३)	
आवश्यक	(आवश्यक)	१	१४६	गोविंदणिज्जुति	३ २१०
"		४	७६, १०३,	(गाविन्दनियुक्ति)	" २६०
"		"	२४०	"	४ ६६
इतिभासिय	(कृषिभाषित)	४	२५०	चदगवेज्जग (चन्द्रकवेद्यक)	४ २०५
उगहपडिमा		१	२	चेडगकहा (चेटककथा)	४ २६
(अवग्रहप्रतिमा, आचा० २ ७)				चदपण्णति (चन्द्रप्रज्ञति)	१ ३१
उत्तरज्जयण	(उत्तराध्ययन)	२	२३८	छज्जीवणिग्या (षट्जीवनिका)	३ २८०
"		४	२५०	दणवे० अ० ४	४ २६८

छेदसूत्र (छेदसूत्र)	४	८८	पण्यति (प्रज्ञति)	२	०३८
जबूदीवपण्यति (जम्बूद्वीपप्रज्ञति)	१	३१	पण्ववाकरण (प्रश्नव्याकरण)	३	३८३
जोगसगह (योगसग्रह)	३	२६६	पिण्डगिण्युक्ति (पिण्डनियुक्ति)	१	१३२
जोतिपाहुड (योनिस्रावत)	२	०८१			१५५
"	३	१११	"	२	२४६
"	४	१६०	"	४	६७,
गमोक्कारणिज्जुक्ति [नमस्कारनियुक्ति]	२	२८५	"	१	१६१
"	३	३६६	"	१	१६२
गरवाहणदत्तकथा [नरवाहनदत्तकथा]	२	८१५	"	१	१६३
गदी [नन्दी]	४	२३५	"	१	००७,
गिरीसीह [निशीथ]	८	१६०	"	१	०००
तरगवती	२	४१५	पिण्डसर्गा [पिण्डगंगा आचा० २१]	१	२
"	४	२६	"	४	१६३
तन्दुलवेयालिय [तदुलवचारिक]	४	०३५	"	१	०३८
दसवेयालिभ [दशवेकालिक]	१	२,१८	पोरिसीमडल [पौरुपीमण्डन]	४	०३५
"	२	८०	बिदुसार विन्दुसार	४	०४२
"	३	२८०	बभवेर	४	२४२
"	४	२५२	[ब्रह्मचय, आचा० शु० १]		
"	१	२५४	भगवती सुत्त [भगवती सूत्र]	१	३३,०६
"	१	२६३	"	२	०३८
दत्ता [दशाश्रुतरकन्ध]	३	७	भारह [भारत]	१	१०३
"	४	३०४	भावरण	१	०
"	४	२६४	[भावना, आचा० २२]		
द्विद्विवाय [द्विष्टवाद]	१	४	मगधसेना	२	८१५
द्विद्विवात	१	२६	मरणविभक्ति	३	२६८
"	३	६३	मलयवती	२	४१५
"	४	७३,	महाकल्पसुत्त [महाकल्पसूत्र]	२	०३८
"	१	०२६,	"	४	६६,२२४
"	१	२५३	महागिरीसीह गिण्युक्ति	४	३०४
दीवसागरपण्यति [द्वीपसागरप्रज्ञति]	१	३१	[महानिशीथनियुक्ति]		
दुमपुष्पिय [दुमपुष्पिका, दश० अ० १]	१	२४	रइवक्का	३	८५०
दुवालसग [द्वादशाग]	१	१५	[रतिवाक्या, दश० चू० १]		
"	१	१६५	रामायण	१	१०३
धुत्तस्सारण [धुत्तस्थानक]	१	१०५	रोगविधि	३	१०१
"	४	२६	लोगविजय [लोकविजय, आचा० ११२]	४	२५२
नदी [नदी]	४	२३५	वक्कसुद्धि	२	८०
पकप्प [प्रकल्प]	१	३३	[वाक्पशुद्धि, दश० अ० ७]		
"	४	२५६,	ववहार [व्यवहार]	१	३५
"	१	३०४	"	४	३०४
"	१	३३८			

वसुदेवचरित	[वसुदेवचरित]	४	२६	सामादय रिणज्जुत्ति	४	१
विम्भेत्ति		१	२	[सामायिकनियुक्ति]		
	[विमुक्ति, आचा० २-२४]			सिद्धिविणिच्छय	१	१६५
विवाहपडल	[विवाहपटल]	३	४००	[सिद्धिविनिश्चय]		
वेज्जसत्थ	[वद्यशास्त्र]	३	१०१,	सुति	१	१०
"		"	४१७	सुयकड	१	३५
वेदरहस्स	[वेदरहस्य]	३	५२७	"	४	२५२, २६४
शस्त्र परीक्षा		१	२	सुरपण्णत्ति	१	२५
	(आचा० श्रु० १, अ० १)			"	४	२५
सत्थपरिण्णा		४	३३, २५२	"	"	२७८
	[शस्त्रपरीक्षा, आचा० १-१]			सेतु	३	३६६
सद्द	[शब्दव्याकरण]	४	८८	"	४	२६
सम्मति	[सन्मति]	१	१६२	हेतुसत्थ	४	८८, ८६
सम्मदि	"	३	२०२			

चतुर्थ परिशिष्टम्

निशीथभाष्यचूर्ण्यन्तर्गता दृष्टान्ता



प्रथम भाग

विषय	दृष्टान्त	पृष्ठ संख्या
अप्रशस्त भावोपक्रम	गणिका, ब्राह्मण और अमात्य	३
अकाल स्वाध्याय	तक्र बेचने वाली अहीरी	८
"	शृंग बजानेवाला किसान	८
"	शख बजाने वाला	८
"	दो छात्राहारिका वृद्धा	८-९
विनय	श्रेणिक राजा और विद्यातिशयो चाण्डाल	९
भक्ति और बहुमान	शिवपूजक ब्राह्मण और भोल	१०
उपधान-तप	असगड पिता आभीर	११
निह्वन = अपलाप	विद्यातिशयो नापित	१२
शका और अशका	दो बालक	१५
काक्षा और अकाक्षा	राजा और अमात्य	१५
विचिकित्सा और निविचिकित्सा	विद्यासाधक श्रावक और चोर	१६
विदुगु छा = साधुओं के प्रति कुत्सा	एक श्रावक क या (श्रेणिक पत्नी)	१७
असूढदृष्टि	सुलसा आदिका और अम्मड परिव्राजक	२०
उपवृ हण	श्रेणिक राजा	२०
स्थिरीकरण	आचार्य आषाढभूति	२०-२१
वात्सल्य	बन्धुस्वामी द्वारा सघरक्षा	२१ २२
"	न दीर्घेण	२२
विद्यासिद्ध	अज्ज खउड	२२
लब्धिवीय	महावीर द्वारा गभ मे माता त्रिशला की कुक्षि का चालन	२७
स्त्यानद्धि निद्रा	पुद्गल-भक्षी श्रमण	५५
"	मोदकभक्षी श्रमण	५५
"	शिरश्छेदक कुम्भकार श्रमण	५५
"	गजदन्तोत्पाटक श्रमण	५६
"	वटशाखा-भञ्जक श्रमण	५६

प्राणानिपात-चल्पिका प्रतिसेवना
लौकिक मृषावाद
भयनिमित्तक अकृत्यमेवेन

सिंहसारक कोकराभिक्षु १००
अवती के शशकादि धृत १०२ १०५
पुत्रार्थी राजा और भीत तरुण भिक्षु १२७

द्वितीय भाग

प्रगीत आहार
निरन्तर कायसलग्नता
अग्नादान का मच लनादि
अखण्ड वस्त्र-ग्रहण की सदोषता
कलुष परिष्ठापन
रस भोजन सम्बन्धी लुब्धता अलुब्धता
साधुगुण का चिह्न रजोहरण

अविमुक्ति अथात् गृद्धि
यथावसर स्थापना-कुलो में अप्रवेश से हानि
'
निष्कारण सयती वसति में गमन
निवर्तनाधिकरण = जीवोत्पादन
"
अमृत हास्य
"
प्रलवण-भूमि का अप्रतिवेलन
असभोग सम्बन्धी पृच्छा
विमभोग का प्रारम्भ
"
अभियोग-प्रतिसेवना
लोक कथाओं का अनुपदेश
सोपमग-स्थिति में सयनी के साथ विहार

ब्रह्मवत् चक्रवर्ती का भोजन और पुरोहित २१
कुलवध का कामोपशमन २२
सिंह, सप आदि सात उदाहरण २८
कम्बलरत्नग्राही आचाय और चोर ६७
मक्खी, छिपकली आदि १२३
आयसगु और आयसमुद्र १२५
मरहट्ट देश में रसापण (मद्य की दूकान) पर
ध्वजा १३६
वीरल्लशकुनि (श्येन पक्षी) १३७
यथावसर गो-दोहन न करने वाला गृहस्थ २४८
यथावसर फूल न तोड़ने वाला माली २४८
वीरल्ल शकुनि (श्येन पक्षी) २६०
आचाय सिद्धसेन द्वारा अश्वनिर्माण २८१
महिष और दृष्टिविष सप का निर्माण २८१
श्रेष्ठी, पाँच सौ तापस २८५
भिक्षु का मृतक-हास्य २८६
चेला (चेलग) और ऊँट २९८
अगड आदि के ६ उदाहरण ३५६
आय सुहृती और आय महागिरि ३६०
सम्प्रति राजा का जन्म ३६०
पुत्रार्थी राजा और तरुण भिक्षु ३८१
भल्लीगृहोत्पत्ति कथा कहने वाला भिक्षु ४१६
दो यादव श्रमण-बन्धु और भगिनी ४१७
सुकुमालिका साध्वी

तृतीय भाग

अधिकरण का अनुपशम
'
मम सपराध म विषम दण्ड
स्वगण तथा परगण म दण्ड की अल्पाधिकता
दुष्ट राजा का शिष्या अनुशासन
"
"
"

कलहरत सरटो द्वारा जलचर-नाश ४१
क्रोधी द्रमक और कनकरस ४३
राजा द्वारा तीन पुत्रों को विभिन्न दण्ड ४८
पति द्वारा चार भार्याओं को विभिन्न दण्ड ५२
आय खण्ड ५८
बाहुबली ५८
सभूत (ब्रह्मवत्चक्रवर्ती का भ्राता) ५८
हरिकेश बल ५८

परिहार तप म भीत को आश्वामन
अतिप्रमारा भाजन
अवम भोजन
वा न भोजन का अपवाद
ग्लानमेवा और तदथ अभ्यथना
धम की आपग (दुकान)

पयु षगा काल म परिवतन
पयु षगा मे क नह व्युपशमन

क्रोध
मान
माया
नाम

भाव वैर

अतिप्रमारा भक्तग्रहण

अहाच्छद द्वारा समानता का दावा
वेदोपघात पण्डक
उपकरणोपहत पण्डक
वातिक क्लीब
स्त्री-पुरुष के परस्पर सवास-सम्बन्धी दोष

ज्ञान-स्तेन
चारित्र स्तेन

मकारण प्रव्रज्या

स्वपक्ष की स्वपक्ष मे कषाय-दुष्टता

परपक्ष की स्वपक्ष मे कषाय दुष्टता
द्रव्य-भूढ
काल भूढ

कालकाचाय और उज्जयिनी-नरेश गवभिल्ल ५८
अगड, नदी आदि ६४
अतिभोजी दरिद्र बटुक और अमात्य ८१
बटलोई ८५
रत्नवरिण् द्वारा चौराकुल अटवी की यात्रा ८७
दानार्थी, साथ ही अभिमानी मरुह ९२
सुवर्णावि का क्रय १०६
गायिक आपण मे मद्य-क्रय ११०
कालकाचाय और महाराष्ट्र-नरेश सातवाहन १३१
खलिहान जलाने वाला कुम्भकार १३८
उदायन और वण्डप्रद्योत १४०
दरिद्र कृषक और चौर-सेनापति १४७
गोघातक मरुह १५०
अच्छकारिय भट्टा १५०
पडरज्जा साध्वी १५१
रस-लोभ से आय मयु का यक्ष-जन्म, लुद्धनवी १५२
ग्राम महत्तर और चौर सेनापति १६७
मधुबिंदु २०६

पैतृक सम्पत्ति के समानाधिकारी चार कृषक पुत्र २२७
राजकुमार हेम २४३
दुराचारी कपिल भुल्लक २४३
दुराचारी तच्चनिय भिक्षु २४६
भ्रात्र लाने वाला राजा २५०
मातृवशन से वत्स को स्तनाभिलाषा २५०
भ्रात्र-वशन से लासा-स्त्राव २५०
आर्य गोविन्द २६०
उदायी नृपमारक भट्ट २६०
मधुर कोण्डइल २६०
प्रभव २६१
मेताय-ऋषि घातक २६१
मृत गुरु के दांत तोडने वाला भिक्षु २६४
गुरुगतक के लिए गुरुवत्सक भिक्षु २६५
गुरु को डाँक निकालने वाला भिक्षु २६५
गुरु को बन्धन मारने वाला भिक्षु २६५
मधुरा का जउरा (यवन) राजा २६६
दु शील भार्या और अध्यापक पति २६७
एक महिषीपालक पिडार २६७

गगना मूड	एक ऊटवाल	२६७
माहृष्य-मूड	ग्राममहत्तर और चौर-भेनापति	२६८
वद-मूड	मातृ गामो राजकुमार अनग	२६८
व्युद्ग्राह ग मूट	मातृ गामो वणिक-पुत्र	२६९
"	पक्षशैल जाने वाला जनग मेन	२६९
"	अचपुष्प और धूत	२६९
"	पशुपालक और स्वर्णकार	२६९
हन्त पादादि विवर्जित बिम्ब	मुगावती-पुत्र	२७६
अज्ञान भाव मे गभवती की प्रव्रज्या	करकण्डुमाता पद्मावती	२७७
प्रत्यनीक द्वारा साध्वी का गभवती होना	पेढाल के द्वारा गर्भवती ज्येष्ठा	२७७
पुण्यपादादि मे अतभिन्न के महाव्रत	स्थाणु पुर पुष्पमालारोहण	२८०
स्थविर से पूर्व क्षुल्लक की उपस्थापना	राजा के द्वारा पुत्र का राजसिंहासन	२८३
भाव-मलेखना	अमात्य और कोकणक	२८६
"	क्रोध मे अपनी उगली तोड़ देने वाला भिक्षु	२८६
उत्तमान प्रतिपन्न का आहार	सहस्रयोधी का कवच	२८८
प्रत्याख्यान कालीन आभोग (उपयोग)	कचनपुर मे क्षमक का पारणक	३०२
पादोगमन मे धैर्य	स्कन्दक	३१२
"	चाणक्य	३१२
"	पिपीलिकाग्रो का उपपग	३१२
"	कालासग वेलिय	३१२
"	अवति सुकुमाल	३१२
"	जल प्रवाह का उपपग	३१२
"	बत्तीस घडा	३१३
पुस्तक मे होन वाली जीव हिगा	चतुरगिणी सेना से आवेष्टित मृग	३२१
"	दुग्ध पतित मक्षिका	३२२
"	मछली पकड़ने का जाल	३२२
"	तिलपीलक चक्र (घाणो)	३२२
स्वप्नशयिन आसन का मदारना	जैन श्रमण और बौद्ध भिक्षु	३२५
पुर कमकृत कमवन्ध का अधिकारी ?	इन्द्र को ब्रह्महत्या का शाप	३४०
भिक्षा नानवृद्धि करन के गुण	कृपण वणिक की गृहचिन्तिका पत्नी	३५७
"	गाव के समीप कुबड़ी बंदरी (बेरी)	३५८
नीका नयन मन्त्र श्री अनुकम्पा	गुरु ड राजा	३६५
नीका नयन मन्त्र श्री द्वेप	कम्बल सबल नागकुमार और	
एकद्रिय जीवा की वदना	नीकारूढ भगवान् महावीर	३६६
एकन्द्रिय जीवा का उपयोग	जरा-जोर्ण स्थविर	३७७
"	रुक्ष भोजनगत स्नेह गुण	३७७
	पथवीगत स्नेह गुण	३७७

निधानदशन	मयूरनृपाकित दीनारों का निधान	३८८
अनागत रोग का परिक्रम	अकुर तथा बद्धमूल वृक्ष का अन्तर	३९४
"	अवर्द्धित तथा विवर्द्धित ऋण	३९४
लौकिक व्यवहारों का निराय	दो नारी और एक पुत्र	३९६
"	पटक	३९६
घातु-पिण्ड	रोता हुआ बालक और भिक्षु	४०४
"	आचार्य सगमस्थविर और दत्त शिष्य	४०८
निमित्त पिण्ड	भविष्यकथन से सगर्भा घोड़ी की हत्या	४११
चिकित्सा पिण्ड	दुर्बल व्याघ्र की चिकित्सा	४१८
कोप-पिण्ड	मासोपवासो धमरुचि भिक्षु	४१८
मान पिण्ड	इष्टगा-भोजनार्थी क्षुल्लक, श्वेतागुलि आदि पुरुष	४१९
विद्या-पिण्ड	विद्या द्वारा उपासक का वशीकरण	४२२
मन्त्र पिण्ड	पादलिप्ताचाय द्वारा मुरुड राजा की मन्त्र चिकित्सा	४२३
अन्तर्धान पिण्ड	चन्द्रगुप्त मौर्य के यहाँ क्षुल्लक-द्वय का अन्तर्धान-प्रयोग	४२३
योग पिण्ड	वज्रस्वामी के मातुल समिताचार्य और ५०० तापस	४२५
क्रीतकृत	शय्यातर मल	४२८
पामिच्च	तैल पामिच्च के कारण बहन का दासीत्व	४३०
परिवतन	कोद्रव क्रूर के बदले में शालि क्रूर	४३२
आच्छेद्य	दुग्ध-आच्छेद्य से रुष्ट गोपाल	४३३
"	सत्पुत्रों में स्तेनाच्छेद्य घृत	४३६
अग्नि सृष्ट	बत्तीस मोदक वाला भिक्षु	४३७
आज्ञा-भग	राजा द्वारा प्रजा को बण्ड	५०३
ज्ञानादिलाभाथ प्रलम्ब-प्रतिमेवना	लाभाथ वारिण्य-कर्म	५१०
प्रलम्ब त्रिदशना	दो अजघातक म्लेच्छ	५१८
अनवस्था प्रसंग का निवारण	कृषक के इक्षु-क्षेत्र की हानि	५१९
"	राजा की कन्याओं का अन्त पुर	५२०
"	भोलो द्वारा देवद्रोणी (गौ) की हत्या	५२१
प्रलम्ब-रम की आसक्ति	मद्यपान से मासाहार की आसक्ति	५२१
प्रलम्ब-भक्षण से आत्मविराधना	भूय की कच्ची फली खाने से स्त्री की मृत्यु	५२२
अनाचीण	अचित्त तिलो से भरी गाड़ी और भगवान् महावीर	५२३
"	अचित्त जल से भरा लूढ़ और भगवान् महावीर	५२३
यतना और अयतना	विष, शस्त्र, वेताल और औषध	५२५
परिणामक, अपरिणामक और प्रतिपरिणामक	चार मरुक और श्व-भास	५२६
अकल्प-सेवन की भूमिका	अशत भेन गाड़ी की मरम्मत	५३१

अभिन्न प्रलम्ब से मयती को मोहोदय
ममग का महत्त्व
दत्त वस्तु का पुनरादान
मयती पर कामग प्रयोग
वस्त्र-विभूषा से हानि

स्त्रीयुक्त वस्त्र से चारित्र्यहानि
आज्ञा-भंग पर गुरुतर दंड
मुल-विज्ञप्ति, मुल-माच्य आदि स्त्रा

”

”

”

”

व्युद्ग्रह अपक्रान्त
अनाय देशो मे मुनि-विहार से आत्म-विराधना
अन्ध-द्रविडादि देशो मे मुनि-विहार
मात्रक की आवश्यकता
अस्वाध्याय मे स्वाध्याय से हानि
पञ्चविध अस्वाध्याय
आचार्यादि परिशुद्धीत गच्छ
परिकु चित आलोचना
तीन बार आलोचना

द्विमासादि परिकु चित (गन्धमगापन)

”

”

”

विषम प्रतिमेवना की ममसुद्धि
अनवस्था-प्रसंग का निवारण
जानबूझकर बहु प्रतिसेवना
अनेक अपरागो का एक दण्ड
अपरिकु चितना की दृष्टि मे एक दण्ड
दुबलना की दृष्टि से एक दण्ड
आचार्य की दृष्टि मे एक दण्ड
गीताय और अमीन परिगामका का प्रायश्चित्त
अमीन अपरिगामका और अनिपरिगामको का
प्रायश्चित्त
यतना और अयतना सम्बन्धी प्रायश्चित्त

महादेवी को ककटी से विकारोत्पत्ति
दो शुक्र-बन्धु
विज्जीत वृक्ष का पुनग्रहण
विद्याभिमन्त्रित पुष्प
रत्न कम्बल के कारण तस्कारोपद्रव

चतुर्थ भाग

अग्निस्तप्त जतु	४
चन्द्रगुप्त मौय	१०
पाच सौ ध्यन्तर देवी	१४
रत्न देवता	१४
अहन्नक	२१
सिही (शेरनी)	२२
मानुषी को कुक्कुर-रति	२२
बहुरत आदि निह्व	१०१
पालक द्वारा स्कन्दक का यन्त्र पीलन	१२७
मौय नरेश सप्रति	१२८
वारत्तग मन्त्रीपुत्र का सत्रागार	१५८
म्लेच्छाक्रमण पर नृप-घोषणा	२२६
पाँच राजपुरुष	२३०
पक्षी और पिजरा	२६२
अव्यक्त शल्य से अदव-मृत्यु	३०४
यायाघोष के सम्मुख बयान की तीन बार	
आवृत्ति	३०५
मत्स्य-भक्षी तापस	३०६
सशल्य सैनिक	३०६
दो मालाकार	३०६
चार प्रकार के मेघ	३०७
पाँच बणिको मे १५ गधो का बटवारा	३०६
धान्य-ग्रहण पर विज्जेता सेनापतियो को दण्ड	३११
गजा तम्बोली और सिपाही	३१२
रथकार की भार्या	३४२
चोर	३४२
बल और गाडी	३४३
मूल देव	३४३
चतुर वसिष्ठा का मुलक	३४४
मूल ब्राह्मण का मुलक	३४४
निधि पाने वाले वसिष्ठा और ब्राह्मण	३४५

मभी आलोचनाओ मे समान विनयोपचार
मूनोत्तर गुणो की प्रति सेवना से अन्योन्यविनाश
मूल गुण प्रतिसेवना से चारित्र-नाश
उत्तर गुण प्रतिसेवना से चारित्र-नाश
प्रायश्चित्त वहन करते हुए वैयावृत्य
सानुग्रह और निरनुग्रह प्रायश्चित्त दान

प्रायश्चित्त-वृद्धि का रहस्य
आलोचनाह की गम्भीरता
परिहार तपस्वी को आश्वासन
ष-शुद्धि न करने से चारित्र नाश

”

”

”

शुद्ध नप और परिहार तप
शुद्ध आलोचक के प्रति आचार्य का सद्ब्यवहार

”

”

नियन्ता का महत्त्व
अकल्पित चाहने वाले को उद्बोधन

निधि-उत्खनन
ताल वक्ष
दृति और शकट
एरण्ड-मण्डप
पुरस्कृत राजसेवक
अग्नि
दारक
जल घट, सरितादि
बन्तपुरवासी दन्तवर्णिक का दृढ भिन्न
अगड, नदी आदि
नाली मे तृण
मण्डप पर सषप
गाडी मे पाषाण
वस्त्र पर कज्जल-विन्दु
छोटी-बडी गाडियाँ
व्याघ्र
गाय
भिक्षुगो
इमशूरहित राजा और नापित
भडी पोत

३४६

३४७

३४८

३४८

३५०

३५४

३५४

३५८

३६१

३७३

३७४

३७४

३७४

३७४

३७४

३७४

३८०

३८१

३८१

३८२

४००

पंचमं परिशिष्टम्

निशीथभाष्यचूर्ण्यन्तर्गतानां विशेषनाम्ना विभागशोऽनुक्रमणिका

	भागक	पत्राक		भागक	पत्राक
	१				
तीर्थकर			"		
अर	२	४६६	अज्जरक्खिय पिया	"	४४१
उसभ	३	१५३	अज्ज वडर	१	१६४
कु शु	२	४६६	अज्ज सुहत्थी	२	३६१, ३६२
महावीर वद्ध मानसापी	३	१४२, ३६३	"	४	१२८
महावीर	३	५२३	अण्णाय-पुत्त	२	२३१
रिसभ	२	१३६	अतिमुत्तकुमार	३	२३५
वद्धमाण	२	१३६, ३६०	अवती सोमाल	२	६०
"	३	१४२, १५३	"	३	३१२
"		१६८, ३६३	आमाड भूति	१	१६, २०, २१
"	४	४६	उदाइ-मारक	१	२
मती	२	४६६	"	३	३७
	२		"	४	६८, ७०
गणघर			करकडू	२	२३१, ४४५
गोयम	१	१०	"	३	२७७
"	३	३६३, ५२२	कविल	१	१२४
सुधम्म	३	१५३	"	३	२४३
"	४	१०६	कपिलाय	४	२००
मोहम्म	२	३६०	कालगज्ज	३	५८, १३१
	३		खदग	३	३१२
जैनाचार्य और जन अमरण			"	४	१२७
अज्ज खउड	१	२२	गोविदज्ज	३	२६०
"	२	४६५	गोविदवाचक	३	३७
अज्ज महागिरी	२	३६१	"	४	२६५
"	४	१२८	चडरुदाचाय	४	३७७
अज्ज मगू	२	१२५	जसभद्द	२	३६०
"	३	१५२	जिणदास	४	४४३
अज्जरक्खिय	३	१२३, २३६,	जवू	२	३६०
				३	२३६, ५२२

सभाष्यचूणि निशीथसूत्र

शूनभट्ट	२	३६०, ३६१	सीह	३	४०८
दत्त	३	४०८	सीहगिरी	३	२३५
दुम्बलिय	४	२५३	सुट्टिय	३	२४३, ४२३
धम्मसुद्ध	३	४१८	सेज्जभव	३	३६०
नदिशेन-शिष्य	२	२६८		३	२३५
पञ्जुण्ण खमासग	१	१	शालिभद्र सूरी	३	४०८
पसण्णचद	४	६८	श्रीचन्द्रसूरी	४	४४३
पभव	२	३६०			
"	३	२६१	अज्ज चदराणा	४	३७६
"	४	४५	पडरज्जा	३	१५१
पालित	३	४२३	बम्ही	२	२६१
पूसमित्त	४	२५३	सुकुमालिया	२	४१७
बाहुबली	३	५८	सुदरी	२	२६३
भट्टबाहु	१	१५१			
"	२	१५, ५७			
"	३	३३४			
"	४	११३, १२१	आसमित्त	४	१०२
		२४३, ३५०	आमाढ	"	"
भसअ	२	४१७	अमालि	"	१०१
मराग	३	२३५	तीसगुत्त	"	"
माष-तुष	३	२५६	पूसमित्त	"	१०२
मेयज्ज ऋषि	३	२६१	बोडिय	"	"
रोहणीस	४	२००	"	४	८७
लाटाचाय	२	१३३	रोहगुत्त	४	१०२
वइरसामी	१	२१, १६४	गोढामाहिल	३	१२३
"	३	२३५, ४२१	"	४	१०२
विण्हु	२	४५			
"	१	१६२	गोमोसदारुमय पडिमा	३	१४१
विस्सभूती	२	८३	जिय-पडिमा	३	३६२
विसाहगगी	४	३६५	जियत पडिमा	३	७६
समिय	३	४०५	नारायणादि पडिमा	४	५६
ससअ	२	४१७	पिउ-पडिमा	४	१५८
सगमथेर	३	४०८	रिसभानि काग पडिमा	३	१४४
सभूत	२	३६०	लिप्पय-पडिमा	१	१२८
सिद्धमेनाचाय	१	८८	लेपग-पडिमा	३	१६५
"	२	४, २८१			
"	३	३३४			
"	४	७५, १२१, २४३	पडिमा (अभिग्रहविशेष)	१	१६
			मायपडिमा	२	२०८

3

जैन श्रमणी

4

बैन निहलव

3

प्रतिमा

9

पडिमा (अभिग्रहविशेष)

31

अम्मड	१	१०	इद	१	२४
उडक रिमी	३	३४०	कवल-सवल	३	३६६
	१२		कामदेव	१	६
दशन और वाशनिक					
आजीविग	१	१५	"	३	१४४
ईसरमत	३	१६५	खेतदेवया	३	४०८
उलूग	१	१५	गोरी	४	१५
कपिलमत	३	१६५	गधारी	४	१५
कविल	१	१५	चद	३	१४४, २०८
कावाल	४	१२५	जकव	१	२१
कावालय	३	५८५	"	३	१४१
चरग	१	२	जोइसिय	४	५
"	४	१२५	डागिरणी	२	४१
जइगा-मासग	१	१७	गाइलदेव	३	१४१
जनतव	३	३६०	एग-कुमार	३	१४४, ३६६
तच्चत्रिय	३	२४६, २५३	देविद	१	२०
तावस	१	१५	पतदेवया	१	८
"	४	१२५	पिसाय	३	१८६
परिव्वायग	१	१७	पुण्याभद	३	२२४
पडरग	३	१२३	पुरदर	२	१३०
बोडित	१	१५	पूयणा	३	४०८
भिच्छुग	१	११३	बहस्सति	३	१४४
भिक्षू	३	५८५	भवरणवामी	२	१२५
"	४	१२५	"	४	५
रत्तपड	१	१७, ११३	भूत	१	६
वेद	१	१५	मागिभद	३	२२४
सक्क	१	१५	रक्खस	३	१८६
"	३	१६५	रयणदेवता	४	१४
सरक्ख	४	१२५	वणदेवता	४	११८
"	३	२५३	वारामत	१	८, ६
मुत्तिवादी	३	५८५	"	४	५
सेयवड	१	७८	वारामतरी	४	१३
सेयभिक्षु	४	८७	विज्जुमाली	३	१४०
"	३	४२२	वेमारिणय	४	५
शाक्यमत	३	१६५	शक्र	१	११३
हड्डसरक्ख	४	५८५	सम्मदिट्ठी देवया	१	८
	१३		"	४	११८
देव और देवी			सामारिणग	१	२४
अश्वय देव	३	१४१	सुदाढ	३	३६६

हास पहासा	३	१४०
हिरिमिक (चाण्डाल-यक्ष)	४	२३८

१४

चक्रवर्ती बलदेव और वासुदेव

अर	२	४६६
कुंथु	२	४६६
केसव	१	५६
"	२	४६६
बलदेव	३	३८३
ब्रह्मदत्त	२	२१
भरह	२	४४६, ४६५
"	४	६८
राम	१	१०४
वासुदेव	१	४३
"	२	४१६, ४१७
"	३	३८३
सती	२	४६६

१५

राजा, राजकुमार और अमात्य

अजुन	१	४३
अणकुमार	३	२६८
अणघ राजा	३	२६६
अभगसेन	४	१५८
अभयकुमार	१	६, १०, १७
"	२	२३१
"	४	१०६
असोग	२	३६१
असोगसिरी	४	१२६
उदायन	३	१४६, ५२३
कुराल	२	३६१
"	४	१२८
कोन्तेय	१	५४
बुडुगकुमार	२	२३१
"	४	१२७
खदग	४	१२७, १२८
गद्मिल्ल	३	५८
गधप्रिय कुमार	२	२८
गधार	१	१०५

पञ्जोत	३	१४६, १४७
चदगुत्त	२	३६१, ३६२
"	३	४२४
"	४	१२६
चाणक्य	२	३३
"	३	४२४
जउण राया	३	२६६
जरकुमार	२	४१६, ४१७
जराकुमार	२	२३१
जितारि	३	२६८
जियसत्त	२	४१७
"	३	१५०
"	४	२२८
डडांग	४	१२७
दडति	३	३१८
दतवक्क	२	१६६
"	४	३६१
धम्मसुत्त	१	१०५
पडु	१	१०५
पालग	१	१०
पालय	३	५६
बलभानु	३	१३१
बलमित्त	३	१३१
विदुसार	२	३६१, ३६२
"	४	१२६
भसअ	२	४१७
भासुमित्त	३	१३१
भीम	१	४३, १०५
मयूरक	३	३८८
महिडिडन	३	५२०
मुरु ड	३	४२३
मूलदेव	४	३४३
"	१	१०५
मेच्छ (म्लेच्छ)	४	२२६
वसुदेव	२	२३१
वारत्तग	४	१५८
ससअ	२	४१७
सतागित	४	४६
सपनि	४	१२६
सब	१	१०

२२	जनपद	पारस	पुर्ववदेस	३	५६
अवनी	१	१३	"	२	६४
अध	२	३६२	बब्बर	२	४७०
"	४	१२५	बहुद्रीप	३	४२५
आभीर	३	४२५	मयल (मलय)	२	३६६
उत्तरावह (उत्तरापथ)	१ २१, ५२, ६७, ८७, १५४	मरहट्ट	मरहट्ट	२	१३६
"	२	६५	"	१	५२
"	३	७६	"	२	११, ३७१
उत्तरापथ	४	१२७	"	३	१३१, १४६
कच्छ	१	१३३	मरु	४	११५, १६५
काय	२	३६६	"	३	१३१, १४६
कुडुक्क	३	१६१	मगध	४	१०६
कुणाल	४	१२५	मगह	३	५२३
कुणाला	३	३६८	"	३	१६३
"	४	१२६	मालव	४	१०५
कुरुक्षेत्र	२ १०८, ११०,	"	"	२	७६, १०८
कीरडुक	३ १६१	रिणकठ	"	३	१६३
कोणाला	४ ३६८	रोम	"	२	१५०
कोसल	१ ५१, ७४	लाड, (लाट)	"	२	३६६
कोकण	१ ५२, १००	"	"	२	६४, २२३
	१०१, १४५	"	"	३	३६, ५६६
गंधार	३ १४४	वच्छ	"	४	२२६
गोल्लय	३ १६१	सिधु	"	४	४५
चिलाइय	२ ४७०	"	"	१	१३३
चीण	२ ३६८, ३६६	"	"	४	६०
जवण	४ १२५	"	"	२	७६, १५०
टक्क	२ ७६	सैधव	"	४	६०
तोमलि	२ ३६६	"	"	१	१४५
"	३ ८१	सग	"	३	१६१
"	४ ४३, ६१	सुरट्ट (सोरट्ट)	"	४	१२५
धूणा	४ १२५	"	"	१	५८, १३३
दक्षिणावह	३ ३६, १११	"	"	२	३५७, ३६२
दक्षिणापह	२ ४१५	हिंदुदेस	"	३	३६
दमिल	४ १२५	"	"	३	५६
"	२ ३६२				
दविड	२ ३८५				

२३

ग्राम, नगर, नगरी आदि

अकथली

३ १६२

अयोष्मा	३	१६३	दारवती	२	४१६
अवती	१	१३, १०२	पतिट्टाग	३	१३१
अघपुर	३	२६६	पाडलिपुत्त	१	१०४
आणदपुर	२	३२८, १७	"	२	६५
"	३	१५८, १६०, ३४६	"	४	१२८, १२६
आमलकप्पा	४	१०१	पुलिदपल्ली	३	५२०
उज्जैणी	१	१०२, १०४	पोड्रवन	४	१४४
"	३	५६, १३१, १४५	बारवड	१	६६
"	४	२००	बीतिभय रागर	३	१४४, ५२३
उत्तर महुरा	२	२३१, २६६	भरुकछ	२	४१५, ४३६
उसभपुर	४	१०३	भिल्लपल्ली	४	१५१
कचरापुर	३	३०२	भिल्लमाल	३	१११
कचिपुरी	२	६५	मथुरा	२	१८५
कपिलपुर	२	२१, ४६६	"	३	२६६
कुसुमपुर (पाडलिपुत्त)	२	६५	मधुरा	४	२६५
कु भकारकड	३	३१२	महुरा	३	१५२, ३६६
कु भाकारकड	४	१२७	"	२	३५७, ४६६
कुणाला	३	३६८	माहण कु डगगाम	३	२३८
कोट्टग (पुलिदपल्ली)	३	५२१	मिहिला	७	४६६
कोल्लइर	३	४०८	"	४	१०२, १०३
कोसला	३	७६	मेहुणपल्ली	२	२३
कोसम्बाहार	२	३६१	रहवीरपुर	४	१०२, १०३
कोसबी	२	४६६	रायगिह	१	६, २०
"	४	४६, १२५, १२८	,	२	४६६
खितिपतिट्टिय	३	१५०	"	४	४३, १०१, १०६
"	४	२२६	लका	१	१०४, १०५
गिरकुल्लिगा	३	४१६	वाणारसी	२	४१७, ४६६
चपा रायरी	१	२०	वेण्णातड रागर	४	४२५
"	२	४६६	सविसयपुर	३	५०३
"	४	१२७, ३७५	साएअ (साकेत)	२	४६६
तुरुमिणिरागरी	२	४१७	,	३	१६३
तेयालग पट्टग	१	६६	सावत्थी	२	४६६
दसपुर	३	१४७, ४४१	"	४	१०३
"	४	१०३	सेअविआ	४	१०३
दत्तपुर	२	१६६	सोपारय	४	१४
"	४	३६१	हत्तिणपुर	२	४६६
			हेमप्ररिस नगर	३	२४३

२४			कलाद	३	२६६
उद्यान			कल्लाल	४	१३२
अरगुज्जाग	४	१२७	कम्मकार	२	२८०
असोगवगिया	३	१४०	कम्बडिय	३	१६८
गुणसिल	४	१०१	कुक्कुडपोसग	३	२७९
जिण्णुज्जाग	१	१०२	कु भकार	१	६०, १३६
तिङ्ग	४	१०१	"	२	३, २५५
दीवध	४	१०२	"	३	१६६
२५			कोलिंग	३	२७०
अरख			कोसेज्जग	३	२७१
कोसवारण्ण	२	४१६	सट्टिक	२	६
डडगारण्ण	४	१२८	"	३	१७१
२६			स्वत्तिय	१	१०४
कुल			"	२	४६७
याभोर	१	११	"	४	१३४
ज्जम्भ (महाकुल)	२	४३३	गोवाल	३	१६६
गाहावड्ढ	२	४०८	चम्मकार	३	२७१
दिवाभोजि	१	१५४	"	४	१३०
भट्ठग	२	२०६	चारण	३	१६३
भात्तिग	२	३६१	वेड	३	१६३
राज	४	३०५	चडाल	३	५२७
वरिण्य	३	४१८	जल्ल	२	४६८
सामत	२	३६१	डोव	३	२४३, २८४
मावग	२	४३५	"	३	२७०
सेज्जातर	२	२४३, ४३५	णट्ट	२	४६८
सेट्टि	१	६	णड	३	१६३, १६३,
२७			ण्हाविय	१	१२
वन्न			"	३	२७१
मोरपोसग (चन्द्रगुप्तवश)	४	१०	"	२	२४३
मोरिय	२	३६१	णिल्लेव	२	२४३
सग	३	५६	णैक्कार	३	२७०
२८			ततिवरत्त	३	२७०
ज्ञाति और शिल्पी			ततुवार	२	३
आहीर	१	८, १७	"	३	१६६
कच्छुय	२	४६८	तालायर	३	१६३
			तुन्नकार	३	२७२
			घरणिपुत्र	२	३५

तेरिमा	२	२४३	मालिय	१	१०
विज्जानि	१	१३, ११३	माहन (ब्राह्मण)	३	२०१
		१६२, १६३	"	२	११६
शियार (धीचार)	१	१८	मुट्टिय	२	४६८
"	२	८१	मेय	३	१६८, २७०
शिर	२	२४६	मोरत्तिय	२	२४३
पदकार	३	२७१	रजक	१	१०४
परीषट्	३	२७१	रयग	३	२७१
पयकर	२	२४३	रहकार	२	३, ३५
पवग	२	४६८	"	३	१६६
पारण	२	२४३	"	४	३४२
"	३	२७०	नख	३	२७१
"	४	२३७	लाजलिग	३	१६३
पारसीय	२	३६६	लासग	२	४६८
पुरोहित	१	१६४	लोदया	३	१६८
"	२	२६७, ४४८	लोहार (लोहकार)	१	७६, १३६
"	४	१२७	"	२	३, ६, २८०
पुलिनन्द	१	११, १४४	"	३	१६६, २७०
"	३	२१६, ५२१	वरिण्य	१	१३६, १५३
"	४	४६	"	२	१४२, २६६, ५१०
पोसग	३	२७१	वरुड	३	२७०
बभरा	१	१०, ११	वरुड	४	१३२
"	३	४१३	वागुरिय	३	२७१
बोहिग	१	१००	वागियग	३	५८५
भट	३	१६३	वालजुय	३	१६३
भिल्ल	१	१४४	वाह (व्याघ)	३	२७१
भोइग	२	४५४	विप्प	१	१०४
मल्लिक	३	२७१	वेलबग	३	४६८
मणियार	२	५	सबर	३	८७
मयूरपोसग	३	२७१	सत्थवाह	२	२६७, ४६८
मरुम	१	१०५	"	३	२८४
"	२	११८, २०८	सपर	३	२७१
मल्ल	२	४६८	सुवण्णगार	१	५०
महायण (महाजन)	३	२७१	"	३	२६८, २६६
मायग, (मातग)	१	६, २१	"	४	१२
"	३	५२७	सूद	२	११६
मालाकार	२	६	सोगरिग (शौकरिक)	३	२७१
"	४	३६०	सोणहिय	३	१६८

सोवाग	३	५२७	
सोहक	२	२४३	
सोघग	३	२७१	दढमित्त
हरिएस	१	१०	घणमित्त
"	३	२७०	भाकदियदारग
हेट्टण्हावित	२	२४३	सागरदत्त

२६

पशु-पक्षि आदि-पौषक

अय	पोसय	२	४६८	
आस	"	"	४६८	इ ददत्त
इत्थी	"	३	२७१	
कुक्कुड	"	२	४६८	"
चीरल्ल	"	"	"	इ दसम्म
तित्तिर	"	"	"	उसभदत्त
पोय	"	"	"	जण्णदत्त
मयूर	"	"	"	देवदत्त
महिस	"	"	"	"
मिग	"	"	"	पेढाल
मेढ	"	"	"	विण्णुदत्त
मोर	"	२	२४३	सत्यकि
लावय	"	२	४६८	सोमदेव
वग्घ	"	"	"	सोमसम्मा
वट्टय	"	"	"	सोमिल
वसह	"	"	"	
सीह	"	"	"	
सुणह	"	"	"	
सुय	"	"	"	अच्चकारियभट्टा
सूयर	"	"	"	असगडा
हत्थि	"	"	"	उमा
हस	"	"	"	कविला
	"	"	"	किण्हगुलिया

३०

बसक, मेठ और आरौह

आस दमग	२	४६८	जयती
हत्थि-दमग	"	"	जेट्टा
आस-मिठ	"	४६६	तिसला
हत्थि-मिठ	"	"	देवती
आस-रोह	"	"	घणसिरी
हत्थि-रोह	"	"	घारिणी
	"	"	पउमसिरी

३१

सायबाह

४	३६१
४	३६१
४	२१०
३	८७

३२

सामान्य व्यक्ति

२	१५, १४७,
	२४५, ३३४
२	४२०
२	१७६
३	२३६
१	३१
१	२, ३१
४	३०५
३	२७७
१	३१
३	२३६
३	२३६
२	१५
१	२३६

३३

भारी

३	१४६
१	११
१	१०४
१	१०
३	१४२
१	१०४
४	४६
३	२७७
१	२७
१	१०३
४	३६१
३	१५०
४	३६१

पउमावती	२	२३१	अट्टाहिमहिम	३	१४१
"	३	२७७	आगर	२	४४३
पभावती	३	१४२	इट्टगा	३	४१६
पुरदरजसा	३	३१२	इद	२	२३६, ४४३
"	४	१२७	"	३	१२३ २४३
भट्टा	३	१५०	"	४	२२६
भट्टा	३	१५०	कौमुदी	४	३०६
भानुसिरी	३	१३१	खद	२	४४३
मुगावती	३	२७६	"	४	२२६
मियावती	४	३७६	गिरि	२	४४३
वीसत्था	३	२६८	जेइय	"	"
सच्चवती	४	३६१	जक्ख	"	"
सीता	१	१०४	"	४	२२६
सुकुमालिया	२	४१७, ४१८	एदी	२	४४३
सुभट्टा	४	३७५	एग	"	"
सुलसा	१	१६, २०	तडाग	"	"
सुवण्णगुलिया	३	१४५	तलागजण्णग	२	१४३
हेमसभवा	३	२४३	धूम	"	४४३
	३४		दरी	२	४४३
बासी			दह	२	४४३
आलवी	२	४७०	देवउलजण्णग	२	१४३
ईसणी	"	"	भूत	"	४४३
खुज्जा	"	"	"	४	२२६
थारुगिणी	"	"	मुगु द	२	४४३
पडभी	"	"	रक्ख	"	"
परिसणी	"	"	रुद्	"	"
पल्हवी	२	४७०	लेपग	३	१४५
पाउसी	"	"	विवाह	१	१७
पुलिन्दी	"	"	"	२	३६६
बब्बरी	"	"	सक्क	२	२४१
लउसी	"	"	सर	२	४४३
लासी	"	"	सागर	"	"
वामणी	"	"		३६	
सबरी	"	"		यात्रा	
सिहली	"	"	गिरिजत्ता	२	४६०
	३५		एइ "	"	"
उत्सव			भडीर "	३	३६६
अगड	२	४४३	रह "	२	१३७, ३३४

३७	३७	मिंग	३	१७१
पूजा		मिप्पी	१	५१
षह्वरा—	२ १३७, ३२४	सुवण्णा	३	१७१
समग—	३ १३१		४०	
सुय—	४ २ ६		पानक	
३८		उदग	३	२८७
नारणक (मुद्रा)		कजिग	२	२५३
उत्तरापहक	० ६५	खीर	३	२८७
कवडुग	३ १११	खड	२	१२३
कागणी	१ "	गुल	२	"
कुसुमपुरग	२ ६५	चिचा	२	"
केवडिण	३ १११	तक्क	३	२८७
केतरात	१ "	द्राक्षापानक	२	२२३
चम्मलात	१ "	दालिम	२	१२३
खोलग्र (रूपक)	२ ६५	परिसित्तग	२	२५२
तब	३ १११	मज्ज	३	२८७
दक्खिणापहग	२ ६५	मुद्दिता	२	१२३
दीविचिचक	" "	सक्करा	२	"
दीगार (सुवण्णा)	३ १११, ३८८		४१	
पाडलीपुत्तग	२ ६५		विशिष्ट भोज्य पदार्थ	
पीय (सुवण्ण)	३ १११	इड	३	४१६
हप्प	" "	खड	२	२८२
साहरक (रूपक)	२ ६५	चयपुण्णा	२	२८०
३९		मण्डग	२	२८२
पात्र		मत्तागल	३	४१६
भय	३ १७१	हविपूय	२	२८०
कगग	" "		४२	
फुटोरग	१ ५१		वस्त्र	
करोडग	१ "	असुय	२	३६६
कस	३ १७१	आईग	२	३६६
वम्म	" "	आभरण विचित्त	२	३६६
बेल	" "	उट्टिय	२	५७
आयरूव	" "	उपिणय	२	"
तउय	" "	कराग-कत	२	३६६
तब	" "	कराग-खच्चिय	"	"
दन्त	" "	कराग चित्त	"	"
मकुय	१ ५१	कप्पामिय	"	"
हप्प	३ १७१	किट्ट	"	"
इर	" "	कुत	"	"

सभाष्यचूङ्गि निगीथसूत्र

कोयर	२	३६८	उवक्खडरा	२	४६५
कोसियार	"	५७	कम्मत	"	४५५
कवल	"	३६८	कम्म	"	४३३
लोम्म	"	३६६	कु भकार	"	६२
चीरा	"	३६६	"	"	२५५
चीरासुय	"	"	"	"	१६०
जगिय	"	५६	कुविय	"	६१
तिरीडपत्त	"	५६	कोट्टागार	"	४३२
दुगुल्ल	"	३६६	खीर	"	४५५
पट्ट	"	५७	गय	"	१५५, ६५६
पोत्त	"	५६	गज	"	४४६
पोड	"	३६६	गुज्ज	"	४५६
भगिय	"	५६	गुलजत	"	४४६
मियलोमिय	"	५७	गो	"	१५१
वाग	"	५७	गोरा	"	४३३
सराय	"	५६	घघ	"	"
	४३		"	"	२१०
	विद्या		खुस	"	२४०
अभियोग	१	१२१	जत	"	४३२
अजरा	"	"	जारा	"	१५१
अतटारा	३	४२३	जुग्ग	"	४३२
आभोगिगी	२	४६३	जोति	"	"
इ द जाल	३	१६१, १६३	तरा	"	६१
उण्णामिणी	१	६	तुस	"	४३३
ऊसोवणी	१	१२१	निज्जाग	"	४३२
ओणामिणी	१	६	परिणय	"	४३१
गह्ही	३	५६	पयण	"	४३२, ४३४
तालुग्घाडिगी	१	१२१	परिया	"	६२
थन्नगी	१	१६४	पारा	"	४३२
पडिसाहरग	३	४२२	पोसह	"	४५५
माणसी	१	१३६	भिन्न	"	५५८
मातग	४	१५	भडागार	"	४३२
	४४		भडसाला	"	४५५, ४५६
	शाला		महारास	"	६१, ६२
इ घण- माला	४	६१	मत	"	६५५, ४५६
उज्जारा	"	४३१	मेहुण	"	४४६
उत्तर	"	४४५	रहस्स	"	"
			रुक्ख	"	"
				१	१०३

सेह " "
 शम्भरणा " "
 बेज्ज " "
 सुष्णा " "
 ह्य " "

४५

मास

आसाढ

"

"

आसीय

"

कत्तिय

"

"

चेत्त

जेठु

पोस

भद्वय

मग्गसिर

"

"

वैसाह

सावण

"

४६

पवत

अजराग

इ दपय

कु डल

कैलास

गयग्ग

गौरगिरि

बुल्लि हिमवन्त

दहिमुख

१ १५ मदर, मेरु

४ ६१, ६२ " "

१ ८४ मासवग

२ ४३२ रुयग

२ ४४६ विमोगल्ल

वेयड्डु

"

हिमवन्त

२ ४७, ३३३

३ १२१, १२६

१३२, १६२

४ २२६, २७५

३ १२८

४ २२६

१ १३८

३ ६२, १२८

४ २२६, २३०

४ २२६

२ ४७, ३३३

३ १२८

३ १३०, १३१

१३२, १६३

१ १३८

३ १२६, १३२

४ २३०

२ ३३४

३ १२१, १२६

१३२

४ २२६, २७५

अरुणोदय समुद्र

लवण-समुद्र

उल्लुगा

एरवती

एरावती

कण्हवेणा

गगा

१ २७

३ १३३

१ २७

३ ४१६

३ १३३

१ १०

३ १४१

१ २७

४७

द्वीप और क्षेत्र

२ ४१७

१ ३३

३ २३६, ३११

३ ३०५

१ २७, ३१, ३३

३ १४०

१ १६

२ ६५

३ १४१

३ २३६, ३११

३ १४०

१ ३१

३ ४२५

१ १०५

३ ३०५

४ ६८

२ १३६

१ १०५

१ १०५

४८

समुद्र

१ ३३

" ३१, १६२

४९

नदी

४ १०३

३ ३६८, ३७१

३ ३६४

३ ४२५

१ ११, १०४

"	३	१६७, ३६४	फल	"	"
जडणा	३	३६४	बीय	"	"
मही	३	२६४	भिड	"	"
वेण्णा	३	४२२	मयगा	"	"
मरऊ	३	३६४	मु ज	"	"
सिधु	४	३८	मोरग	"	"
	५०		रुक्कल	"	"
उदक			वत	"	"
नालोदग	४	४३	मल	"	"
नावोदग	४	४३	सिंग	"	"
शारोदग (मत्तधारा)	४	३८	हड्ड	"	"
	५१		हरिय	"	"
लौकिक तीथ					
अवकलड	३	१६५		५४	
केयार	"	"	अड्डहार	२	३६८
गगा	"	"	उलवा	"	"
पहास	"	"	एगावली	"	"
प्रयाग	"	"	कडग	"	"
पुक्कर	३	१४७	कडीसुत्तय	"	"
सिरिमाय (ल)	"	१६५	कणगावली	"	"
	५२		कु डल	"	"
जल सतरण-साधन			केयूर	"	"
उडुप	१	७४	गलोलइया	"	"
णावा	१	७४	तिसरिय	"	"
तु ब	१	७४	तुडिय	"	"
दति	१	७४	पट्ट	"	"
	५३		पलब	"	"
माला			मउड, भुकुट	"	"
कट्ट	२	३२६	मुत्तावली	"	"
कवडग	"	"	रयणावली	"	"
गु जा	"	"	वाल्भा	"	"
तगरपत्त	"	"	मुवण्ण सु	"	"
दत	"	"	हार	"	"
पत्त	"	"		५५	
पिच्छ	"	"		गन्धद्रव्य	
मुत्तजीवग	"	"	अगर	२	४६७
प्फ	"	"	कु कुम	"	"
डिय	"	"	कप्पूर	"	"

चदरा	,	”	सट्टिया	”	”
तुलक	”	”	सरिमव	४	१५३
मिगड	”	”	मालि	२	१०६, २३७
	५६		हिरिमथ	२	१०६
	बान्य				
अणाय	२	१०६		५७	
अतसि	”	”		बाख	
अलिसिद	”	”	कच्छभी	४	२०१
कल	”	”	कसताल	”	”
”	३	३२७	कसालग	”	”
”	४	१५३	काहला	”	”
कलमसालि	२	२३३	खर मुह्री	”	”
कलाय	३	३२७	गु जापगाव	”	”
कुलत्थ	२	१०६	गोलुई	४	२००
कंगू	२	१०६, २३७	गोहिय	४	२०१
कोद्व	२	१०६, २१३	भलनरी	४	२००
”	३	५	भोडय	”	”
गोधूम	२	१०६, २३७	डमरुग	”	”
चणाय	२	२३७, २४१	ढकुरा	४	२००
”	३	३२७	गालिया	१	८४
”	४	३३, १५३	ताल	४	२०१
चवलग	२	२३७	तुण	४	२००
जव	२	१०६	तु बवीगा	४	२००
गिण्फाव	२	१०६	दु दुभी	४	२०१
”	४	३३	नदी	४	२००
तदुल	२	२३६	पएस	”	”
तिल	२	१०६, २३७	पडह	४	२००
तुवरी	”	१०६	परिलिस	४	२०१
त्रिपुड	”	”	पिरिपिरिता	४	२०१
घाणग	”	”	बब्बीसग	४	२००
पलाल	”	”	भल	४	२०१
मसूर	”	”	भभा	४	२०१
मास	”	१०६, २३७	भेरी	४	२००
		२४१	मकरिय	४	२०१
मुगा	२	१०६, २३७	महुय	४	२००
		२४१	महई	४	२०१
रालक	२	१०६	मुह ग	४	२००
वल्ल	२	२४१	मुरज	४	२०१
नीदि	२	१०६	मुरली	१	८४

मुरब	४	२००	पद्मराग	३	३८६
लित्तिय	४	२०१	मूयमगी	३	३८८
वल्लरी	४	२००	सूरकान्त	२	१०६
वलिधा	४	२०१	स्फटिक	२	१०६
बिबची	४	२००	"	३	३८६
वीणा	४	२००			
वेणु	४	२०१		६१	
वेवा	"	"	एलासाढ	१	१०२
वस	४	२०१	खडपागा	"	"
सणाति	४	२०१	मूलदेव	'	'
मदुय	४	२००	मसग	"	"
मग्व	४	२०१		६२	
मविगा	४	२०१		आपण	
अ ग	३	२०१	कलालावण	४	०२०
	५८		कुत्तियावण	४	१५१-१-२-
	आकर		मज्जावण	२	१३६
अय	२	३२६	रसावण	२	१३६
त	"	"		६३	
न	"	"		भावा	
रयग	"	"	अट्टारसदेमी	३	०५०
वडर	"	"	अद्वभागह	'	"
मीसग	"	"	पायय	'	"
सुवणण	"	"		६४	
हिरण्ण	"	"		पुरोहित	
	५९		पालग	४	१२७
	लौह			६५	
अय	२	३६७		सुवण्णगार	
वटा	१	६			
तउय	२	२६७	अणमसेग	३	१४०
तब	"	"	"	४	१२
रुप	"	"		६६	
मीसग	"	"		शोकरिक	
सुवण्ण	'	"	काल	१	१०
	६०			६७	
	मणि और रत्न			बेछ	
इ द्रनील	३	३८६	बल्ल तरी	३	५१२
चद्रकान्त	२	१०६	"	४	०४०

	दिन	मंगल	पङ्क्त		
चायर	३	१०१	पुष्पकलस	१	८८
छत	"	"	"	३	१०१
एदावत्त	१	८८	भिगार	३	१०१
एदीमुख	३	१०१	सख	३	१०१
दधि	"	"	सीहासरा		"

सुभाषित—सुधासार

ज जन्मि होइ काले, आयरियव्व स कालमायारो ।
वतिरित्तो हु अकालो, लहुगा उ अकालकारिस्स ॥

—गाथा, ६

पडिसेवणा तु भावो, सो पुण कुसलो व होज्ज अकुसलो वा ।
कुसलेण होति कप्पो, अकुसलेण पडिसेवणा दप्पो ॥

—गाथा, ७४

ए य सव्वो वि पमत्तो, आवज्जति तघ वि सो भवे वधम्भो ।
जह अप्पमादसहिम्भो, आवरणो वी अवहम्भो उ ॥

—गाथा, ६२

पचममितस्म मुणिरणो, आसज्ज विराहणा जदि हवेज्जा ।
रीयतस्म गुणवम्भो, सुव्वत्तमबन्धम्भो सो उ ॥

—गाथा, १०३

रागदोसारुगता तु, दप्पिया कप्पिया तु तदभावा ।
आराधतो तु कप्पे, विराधतो होति दप्पेण ॥

—गाथा, ३६३

काम सव्वपदेसु, विउस्सग्गववातधम्मता जुत्ता ।
मोत्तु मेहुण-धम्म, ए विणा सो रागदोसेहि ॥

—गाथा, ३६४

ससारगडडपडितो, रणणादवलबितु समारुहति ।
मोक्खतड जघ पुरिसो, वल्लिविताणेण विसमा उ ॥

—गाथा, ४६५

एच्चुप्पतित दुक्ख, अभिभूतो वेयणाए तिव्वाए ।
अहीणो अव्वहितो, त दुक्खऽहियासए सम्म ॥

—गाथा, १५०३

सोऊण च गिलारिण, पथे गामे य भिक्खचरियाए ।
जति तुरित रणगच्छति, लग्गति गुरुगे चतुम्मासे ॥

—गाथा, १७४६

रूवस्सेव परिसय, करेहि ग हु कोद्वो भवे साली ।
आमललिय वराओ, चाएति न गद्दो काउ ॥

—गाथा, २६२६

ज अज्जिय चरित्त, देसूणाए वि पुव्वकोडीए ।
त पि कसाइयमेत्तो, नासेइ नरो मुहुत्तेण ॥

—गाथा, २७६३

मपत्ती व विवत्ती व, होज्ज कज्जेमु षारग पप्प ।
अणुपायओ विवत्ती, मपत्ती कालुवाएहि ॥

—गाथा, ४८०८

—भाष्यकार, आचार्य सिद्धसेन क्षमाश्चम

गाण पि काने अहिज्जमाण गिज्जराहेऊ भवति, अकाले पुण
उवघायकर कम्मबन्धाय भवति, तम्हा काले पढियव्व

—भाग १, पृ० ७

मोक्खत्थ आहारविहागाइमु अहिगारो कीरति ।

—भाग १ पृ० ७

कुलगरणमघसमितीसु मामायारी पक्खणेसु य ।

मुत्तघराआ अत्थघरो पमाण भवति ।

- भाग १, पृ० १४

उपयोगपूर्वकरगक्रियालक्खणो अप्रमाद ।

—भाग १ पृ० ४०

हिमादिअकज्जकम्मकारिणो अणायगिया ।

—भाग ४, पृ० १२४

आवत्तीए जहा अप्प रक्खति,

तहा अण्णोवि आवत्तीए रक्खियव्वो । —भाग ४, १८६

अज्जव अकरेमाणस्स मजमसोही ग भवति ।

—भाग ४, पृ० २६४

पमाया दप्पो भवति, अप्पमाया कप्पो ।

—भाग १, पृ० ४२

कम्मबधा य ग दव्वपडिसेवगाणुरूवो, रागदोसाणुरूवो भवति ।

- भाग ४, पृ० ३५६

जहा जउ अगिग्गा गलति

एव जटुत्तसजमजोगम्म अकरणाता चरित्त गलति ।

—भाग ४, पृ० ४

जाग्मि रागभागमात्रा मदा मव्या तीव्रा

वा, ताग्मि मात्रा कर्मबधो भवति ।

- भाग ४, पृ० १६

जो जो माणुस्स दोसनिरोधकम्मखवरणो किरियाजोगो

मो मो मोक्खोवातो ।

—भाग ४ पृ० ३५

—चूर्णिकार आचार्य जिनदास महत्तर